THEOLOGICAL SEMINARY,
Princeton, N. J.

Case, Division
Shelf, Section
Book, No.

39-2

SCC
1858

✓ Bible. Hindi (Kaithi). N.T. 1846.

N. T. in Hindi.

The Kaithi character.

Presb. Mission press.

Allahabad, 1846

R.

जगतारक

परभु यसु मसीह का नया नीयम

जीसको

मंगलसमाचार कहते हैं।

हींदुइ भाष्या में कीया गया

उस मंडली की सहाय से जो

धरम पुसतकों को जगत में परचार करती है

जीसको अंगरेजी में

बैबल सुसैइटी कहते हैं।

कलकता बैबल सोसैइटी के लीऐ छापी गइ।

इलाहाबाद के

छापेष्याने में छापी गइ।

सन १८४६।

मंगल समाचार मत्ती रचीत।

---

१ पहीला परब।

दीख्याता है की मसीह इब्राहीम के और दाउद के
बंस में हुआ इब्राहीम से मसीह लों बयालीस पीढ़ी
१—१७ कन्या के गर्भ में अवतार लेने का संदेस
दूत युसफ को देता है और उसका नाम और पद
१८—२५।

१ यसु मसीह की बंसावली दाउद का पुत्र इब्राहीम का
२ पुत्र। इब्राहीम से इसहाक़ उतपंन हुआ और इसहाक़
से याक़ूब उतपंन हुआ और याक़ूब से यहूदा और उसके
३ भाई उतपंन हुए। और यहूदा और तामर से फारीज़
और ज़राह उतपंन हुए और फारीज़ से हसरुन उतपंन
४ हुआ और हसरुन से अराम उतपंन हुआ। और अराम से
अमीनादाब उतपंन हुआ और अमीनादाब से नहसुन उतपंन
५ हुआ और नहसुन से सलमन उतपंन हुआ। और सलमन
और राहाब से बोआज़ उतपंन हुआ और बोआज़ और रुत
से ओबेद उतपंन हुआ और ओबेद से यसी उतपंन हुआ।
६ और यसी से दाउद राजा उतपंन हुआ और दाउद राजा
७ और ऊरीया की पतनी से सुलेमान उतपंन हुआ। और सुले-
मान से रहबोआम उतपंन हुआ और रहबोआम से अबीया
८ उतपंन हुआ और अबीया से आसा उतपंन हुआ। और

आसा से यहूसाफरात उतपंन ऊआ और यहूसाफरात से युनाम
९ उतपंन ऊआ और युनाम से उजीयाह उतपंन ऊआ। और
उजीयाह से युताम उतपंन ऊआ और युताम से आहाज उतपंन
१० ऊआ और आहाज से हीजकीया उतपंन ऊआ। और हीज-
कीया से मनसा उतपंन ऊआ और मनसा से अमुन उतपंन
११ ऊआ और अमुन से युसीया उतपंन ऊआ। और युसीया से
युकानीया और उस के भाई उन दोनों में उतपंन ऊए जव
१२ वे वावुल को पऊंयाए गये। और वावुल को पऊंयाए जाने
के पीछे युकानीया से सलताइल उतपंन ऊआ और सलताइल
१३ से जोरवावुल उतपंन ऊआ। और जोरवावुल से अवयुद
उतपंन ऊआ और अवयुद से इलीयाकीम उतपंन ऊआ और
१४ इलीयाकीम से आजुर उतपंन ऊआ। और अजुर से सादुक
उतपंन ऊआ और सादुक से आकीम उतपंन ऊआ और
१५ आकीम से इलीयुद उतपंन ऊआ। और इलीयुद से इली-
याजर उतपंन ऊआ और इलीयाजर से मतन उतपंन ऊआ
१६ और मतन से याकुव उतपंन ऊआ। और याकुव से युसफ
उतपंन ऊआ जो मरीयम का पती था जीसके गरभ से यसु
१७ उतपंन ऊआ जो मसीह कहावता है। सो सब पीढी इवरा-
हीम से दाउद लों चौदह और दाउद से वावुल को पऊंयाये
जाने लों चौदह पीढी और वावुल को पऊंयाये जाने से मसीह
१८ लों चौदह पीढी। अव यसु मसीह का जनम युं ऊआ की
जव उसकी माता मरीयम युसफ से वयनदत ऊई उनके एकठे
१९ होने से आगे वुह धरमातमा से गरभनी पाई गई। तव उस
के पती युसफ ने धरमी होके न चाहा की उसे पनगट में
२० कलंकीनी करे उसे चुपके से छोड़ने का मन कीया। परंतु इन
वातों की चीनता करते देखो की ईसर के दुत ने सपन में उसे
दरसन देके कहा की हे दाउद के पुतर युसफ अपनी पतनी
मरीयम को अपने यहां लाने से मत डर क्योंकी जो उस में

२१ उतपंन हुै सो चनमातमा से हुै। श्रोन वृह पुतन जनेगी श्रोन
नु उसका नाम य़सु नप्पना क्य़ोंकी वुह श्रपने लोगों को उनके
२२ पापों से व्रयावेगा। श्रव्र य़ह सव्र ऊश्रा जेसतें इसन का
व्रयन, जो नवीसद्व्रकता के दुवाना से कहा गय़ा था, समपुनन
२३ होवे। की देप्पो एक कुश्रांना गनभनी होगी श्रोन एक पुतन
जनेगी श्रोन उसका नाम श्रमानुइल नप्पेंगे जीसका श्रनथ य़ह
२४ हुै की इसन हमाने संग। तव्र य़ुसफ ने नींद से उठके, जैसा
की इसन के दुत ने उसे कहा था, वैसा कीय़ा श्रोन श्रपनी पतनी
२५ को श्रपने य़हां ले श्राय़ा। श्रोन जव्र लों वुह श्रपना पहीलैाठा
लैाठा पुतन न जनी उस से श्रगय़ान नहा श्रोन उसका नाम
य़सु नप्पा।

२ दुसना पनव्र।

मसीह को गय़ानीय़ों का प्पोजना श्रोन हीनुदीस
नाजा का उनहें संदेस देना १—८ तानेका उनके
श्रागे श्रागे जाना श्रोन उनका मसीह को पुजना
श्रोन भेट देना श्रोन श्रपने देस को फीन जाना
९—१२ मीसन में मसीह का पऊंचाय़ा जाना श्रोन
हीनुदीस के छल से व्रयना १३—१५ व्रैतुलहम
श्रोन उसके श्रास पास के व्रालकों को व्रचन कनना
१६—१८ मसीह का इसनाइल के देस में फीन
पऊंचाय़ा जाना श्रोन नासन: में नहना १९—२३।

१ 　श्रव्र हीनुदीस नाजा के समय़ में जव्र य़सु का जनम य़ऊदीय़:
के व्रैतुलहम में ऊश्रा देप्पो की गय़ानीय़ों ने पुनव्र से य़नो-
२ सलीम में श्राके कहा। की य़ऊदीय़ों का नाजा, जो उतपंन
ऊश्रा सो कहां हुै? क्य़ोंकी पुनव्र में हम ने उसके तानेको
३ देप्पा हुै श्रोन उसे पुजने को श्राय़े हैं। जव्र हीनुदीस नाजा
ने य़ह सुना वृह श्रोन साने य़नोसलीम उसके संग व्रय़ाकुल

४ ऊए। और जब उस ने लोगों के सब पनधान याजकों और
अधापकों को एकठे कीया उसने उनसे पुछा की मसीह को
५ कहां उतपंन होना है?। तब उनहों ने उसे कहा की यहु-
दीयः के बैतुलहम में कयोंकी अबीसदबकता ने ऐसा लीष्पा
६ है। की हे यहुदा देस के बैतुलहम यहुदा के पनधानों में
तु सब से छोटा नहीं कयोंकी तुह से ऐक पनधान नीकलेगा जो
७ मेने इसनाइल लोगों को यनावेगा। तब हीनुदीस ने गयानी-
यों को युपके से बुला के जतन से उनहें पुछा की तारा कीस
८ समय दीष्याइ दीया। और उसने यह कहके उनहें बैतुलहम
में भेजा की जाओ और जतन से बालक को ढुंढ़ो और जब
उसे पाओ मुहे संदेस पऊंयाओ जीसतें मैं भी आके उसे
९ पननाम कनुं। नाजा की सुन के वे यले गये और देष्पो की
वुह तारा जीसे उनहों ने पुनब में देष्पा था उनके आगे आगे
गया यहां लों की जहां वुह बालक था तहां उपन आ ठहना।
१० और वे उस तारे को देष्प के अतयंत आनंद से बड़े आनंदीत
११ ऊए। और जब वे घन में आया उनहों ने उस बालक को
उसकी माता मनीयम के संग देष्पा और दंडवत कनके उसकी
पुजा की और उनहों ने अपने भंडान को ष्पोल के उसे सोना
१२ और लोबान और गंधनस यढाये। और जीसतें वे हीनुदीस
के पास फीन न जायें इसन से सपन में येताये जाके दुसने
१३ मानग से अपनेही देस को यलेगये। और उनके जाने के
पीछे देष्पो की इसन का दुत सपन में युसफ को दनसन देके
बोला की उठ और बालक को और उसकी माता को लेके
मीसन को भाग जा और वहीं नह जब लों मैं तुहे न कऊं
कयोंकी हीनुदीस इस बालक को नास कनने के लीये ढुंढ़ेगा।
१४ तब वुह उठके बालक को और उसकी माता को लेके नाते नात
१५ मीसन को यला गया। और हीनुदीस के मनने लों वहीं
नहा जीसतें इसन का बयन जो अबीसदबकता के दुवाना से

कहा गय़ा की मैं ने अपने पुतन को मीसन से वुलाय़ा पुना
१६ होवे। जव्र हीनुदीस ने देष्या की गय़ानीय़ों ने उससे ठठा
कीय़ा अती कोपीत ऊआ और उस समय़ के समान जैसा की
उसने उन गय़ानीय़ों से जतन से पुछा था उसने लोगों को भेज
के वैतुलहम के, और उसके सारे सीवानों के, समसत व्रालकों को,
१७ दो व्रनस के और उस से छोटे को, मानडाला। तव्र अनमीय़ा
१८ भवीसदव्रकता का कहा ऊआ य़ह व्रयन पुना ऊआ। की
नामा में ऐक सव्रद सुना गय़ा की हाहाकान और नोना पीटना
और अती व्रीलाप नाजील अपने पुतनों के लीय़े व्रीलाप कनती
थी और सांत न होती थी कय़ोंकी वे नहीं हैं।
१९ पनंतु जव्र हीनुदीस मन गय़ा देष्यो की इसन के दुत ने
२० मीसन में य़ुसफ को सपन में दनसन देके कहा। की उठ और
उस व्रालक को और उसकी माता को लेके इसनाइल के देस
को जा कय़ोंकी जो व्रालक के पनानके गांहक थे सो मनगय़े।
२१ तव्र वुह उठके व्रालक को और उसकी माता को लेके इसनाइल के
२२ देस में आय़ा। पनंतु जव्र उसने सुना की अनकीलाउस अपने
पीता हीनुदीस की संती य़ऊदीय़ः में नाज कनता है वुह उधन
जाने को डना तीसपन भी सपन में इसन से यीताय़ा जाके जलील
२३ की ओन यला गय़ा। और आके ऐक नगन में, जो नासनः
कहावता है, व्रास कीय़ा जीसतें जो भवीसदव्रकतों के दुवाना
से कहागय़ा था की वुह नासनी कहावेगा सो पुना होवे।

३ तीसना पनव्र।

य़होय़ा का जीवन और उपदेस १—१२ मसीह का
सनान पाना और उस के व्रीष्पय़ में आकास व्रानी
होनी १३—१७।

१ उनहीं दीनों में य़ऊदीय़ः के व्रन में य़होय़ा सनानकानक
२ आके पनयान के कहने लगा। की पछताओ इस लीय़े की सनग

३ का माज समीप है। कह्योंकी यह वुह है जीसके व्रीष्पय में
असाया नवीसदव्रकता के दुवाना से यह व्रयन कहा गया की
कीसी का सव्द व्रन में पुकानता है की इसन के मानग को
४ सुघानो ओन उसके पथों को सीधा कनो। ओन उसी यहीया
का पहीनावा उंट के नोम का था ओन चमड़े का पटुका अपनी
कट में लपेटे था ओन उसका भोजन टीडा ओन व्रन मधु थीं।
५ तव्र यनोसलीम ओन सान यहूदीयः ओन अनदन के आस
६ पास के समसत देस उस पास नीकल आये। ओन अपने अपने
पापों को मान सनान के अनदन में उस से सनान पाते थे।
७ पनंतु जव्र उसने व्रहुत से फरीसी ओन जादुकयों को अपने
सनान के लीये आते देष्पा तो उसने उनहें कहा की हे सांपों
के व्रंसो अवैया कोप से भागने को तुमहें कीसने चीताया है?
८।९ इस लीये फल जो पछताने के जोग है लाओ। ओन
अपने अपने मन में मत समझो की हमाना पीता इव्रनाहीम है
कयोंकी मैं तुमहें कहता हुं की इसन सामनथी है की इन
१० पथनों से इव्रनाहीम के लीये व्रालक उतपंन कने। ओन अभी
कुल्हाड़ी पेड़ों के जड़ पन लगी है इस लीये जो जो पेढ़ अच्छा
फल नहीं फलता काटा जाता ओन आग में झोंका जाता है।
११ नीसचय में तुमहें पछताने के लीये जल से सनान देता हुं पनंतु
जो मेने पीछे आता है सो मुझ से अधीक सामनथी है जीसका
ष्पनपा उठाने को मैं जोग नहीं हुं वुह तुमहें धननातमा से ओन
१२ आग से सनान देगा। उसके हाथ में एक सुप है ओन वुह अपने
ष्पलीहान को अच्छी नीत से झाड़ेगा ओन गोहुं को अपने ष्पते
में एकठे कनेगा पनंतु भुसी को अव्रुझा आग से जलावेगा।
१३ तव्र यसु जलील से अनदन को यहीया के पास आया की उससे
१४ सनान कीया जाय। पनंतु यहीया ने यह कहके उसे व्रनजा
की मुझे आप से सनान कीये जाने को आवसक है ओन आप
१५ मुझ पास आते हैं। तव्र यसु ने उतन देके उसे कहा की अव्र

होने दे क्योंकी हमें यूं सकल धरम पुरा करने को चाहीये
१६ तव् उसने उसे न रोका। श्रीर ग्रनान कोग्रा जाके ग्रसु जोंहीं
पानो से उपर श्राया तोंहीं देप्पो की उस पर सरग प्पुल गये
श्रीर उसने इसर के श्रातमा को कपोत के समान उतरते श्रीर
१७ अपने उपर ठहरते देप्पा। श्रीर देप्पो की ग्रह श्राकास् वानी
ऊइ की ग्रह मेरा पीग्रा पुतर है जीस में मैं अती परसंन ऊं।

४ चैाथा पर्व्।

मसीह का व्रन में जाके व्रत करना परीक्षा में पड़ना सैतान पर परवल होना १—११ कपरनाहुम में जा के उपदेस करना १२—१७ कइ जन को वुलाना १८—२२ मंडली में उपदेस करके रोगी को चंगा करना श्रीर उसकी कीरत फैलती है २३—२५।

१ तव् श्रातमा से ग्रसु व्रन में पऊंचाया गया जीसतें सैतान से
२ परप्पा जाय। श्रीर जव् वुह चालोस रात दीन उपवास कर
३ चुका उस से पोछे भुप्पा ऊश्रा। तव् परीक्षक ने उस पास श्राके
कहा की ग्रदी तु इसर का पुतर है तो अगया कर की ये पथर
४ रोटी व्रन जांयें। परंतु उसने उतर देके कहा की ग्रह लीप्पा
है की केवल रोटी से नहीं परंतु हर ग्रेक व्रचन से जो इसर के
५ मुंह से नीकलता है मनुप्प जीता रहेगा। तव् सैतान उसे
पवीतर नगर में ले गया श्रीर मंदीर के ग्रेक कलस पर व्रैठाया।
६ श्रीर उसे कहा की ग्रदी तु इसर का पुतर है तो नीचे गीर पड़
क्योंकी लीप्पा है की वुह तेरे लीये श्रपने दुतों को श्रगया
करेगा श्रीर वे हाथों में तुझे उठालेंगे न हो की तेरा पांव पथर
७ पर लगने पावे। ग्रसु ने उसे कहा की ग्रह भी लीप्पा है की तु
८ परमेसर अपने इसर की परीक्षा मत कर। फेर सैतान उसे
ग्रेक श्रती उंचे पहाड़ पर ले गया श्रीर उसे जगत का समसत

९ राज और उनका वीभव दीप्पाया। और उसे कहा की ये
१० सव मैं तुहे देउंगा यदी तु नीचे हुक के मुहे परनाम करे। तव
यसु ने उसे कहा की अरे शैतान यहां से दुर हो कयोंकी यह
लीप्पा है की परमेसर अपने ईसर की पुजा कर और केवल
११ उसी की सेवा कर। तव सैतान ने उसे छोड़ा और देप्पो की
१२ दुतों ने आके उसकी सेवा की। जव यसु ने सुना की यहोया
१३ वंधन में डाला गया वुह जलील को यलागया। और नासरः
को छोड़ के, कपरनाहुम में जो समुंदर के तीर पर जावुल और
१४ नफ्तली के सीवाने में है, आके रहा। जीसतें असाया नवीसद-
१५ वकता का कहा हुआ वचन पुरा होवे। की जावुल और
नफ्तली की भुम समुंदर के मारग में अरदन के पार अनदेस
१६ के जलील में। जो लोग अंधीयारे में वैठे थे उनहों ने वड़ी
जोत देप्पी और जो मीरतु की छाया और देस में वैठे थे उन
१७ पर उंजीयाला उदय हुआ। उस समय से यसु ने परचारना
और यह कहना आरंभ कीया की पछताओ कयोंकी सरग का
राज समीप है।

१८ और यसु जलील के समुंदर के तीर फीरते फीरते दो
भाइयों को, अरथात समउन को जो पतरस कहावता है और
उसके भाइ अंदरीयास को, समुंदर में जाल डालते देप्पा कयोंकी
१९ वे धीवर थे। और उसने उनहें कहा की मेरे पीछे यले आओ
२० और मैं तुमहें मनुष्पों का धीवर वनाउंगा। तव वे तुरंत जालों
२१ को छोड़ के उसके पीछे यले गये। और वहां से आगे वढ़ के
उसने और दो भाइयों को, अरथात जवदी के वेटे याकुव को
और उसके भाइ युहना को, अपने पीता जवदी के संग नाव पर
२२ अपने जालों को सुधारते देप्पा और उसने उनहें वुलाया। तव
वे तुरंत नाव को और अपने पीता को छोड़ के उसके पीछे यले
२३ गये। और यसु सारे जलील में फीरता और उनकी मंडली
में परचारता राज का मंगल समायार सुनावता और लोगों के

२४ सकल नोग श्रैान दुनव्रलता यंगा कनता गय़ा। श्रैान उसकी
कीनत सुनीय़ा के सनव्रतन फैल गइ श्रैान उनहों ने समसत-
नोगीय़ों को जो भांत भांत के नोग श्रैान पीड़ा से, श्रैान उनहों
को जो पीसाचों से, गनसत थे श्रैान मोनगीहों को श्रैान झनघां-
२५ गीय़ों को उस पास लाय़े श्रैान उसने उनहें यंगा कीय़ा। श्रैान
व्रड़ी व्रड़ी मंडली जलील से श्रैान दस नगनों से श्रैान य़नो
सलीम से श्रैान य़ऊदीय़ः से श्रैान अनदन पान से उसके पीछे
पीछे यली गइ।

५ पांयवां पनव्र।

मसीह का व्रताना की कैान कैान घंन हैं १—१२
अपने सीप्पों को कइ व्रसतु से दीनीसटांत देना
१३—१६ व्रैवसथा को पुना कनने आय़ा १७—२०
छठवीं आगय़ाका आतमीक अनथ २१—२६ सातवीं
का अनथ २७—३२ तीसनी का अनथ ३३—३७
उपदेस कनना की संतोस से सताय़ा जाना ३८—४२
व्रैनय़ों से पनेम कनना श्रैान सीघाइ का पीछा कनना।

१ श्रैान मंडलीय़ों को देप्प के वुह ऐक पहाड़ पन यढ़गय़ा श्रैान
२ जव्र व्रैठा उसके सीप्प उस पास आय़े। तव्र उसने अपना मुंह
३ प्पोल के उनहें उपदेस में कहा। की घंन वे जो मन में दीन हैं
४ कय़ोंकी सनग का नाज उनहीं का है। घंन वे जो सोक कनते
५ हैं कय़ोंकी वे सांत कीय़े जांय़ेंगे। कोमल घंन हैं कय़ोंकी वे
६ पीनथीवी के अघीकानी होंगे। घंन वे जो घनम के भुप्पे पीय़ासे
७ हैं कय़ोंकी वे तीनीपत होंगे। दय़ावंत घंन हैं कय़ोंकी वे दय़ा
८ पावेंगे। घंन वे जीन का अंत:कनन पवीतन है कय़ोंकी वे इसन
९ को देप्पेंगे। मेल कनवैय़े घंन हैं कय़ोंकी वे इसन के पुतन
१० कहावेंगे। घंन वे जो घनम के लीय़े सताऐ जाते हैं कय़ोंकी
११ सनग का नाज उनहीं का है। जव्र मनुप्प मेने लीय़े तुमहानी

नींनदा करें धोन तुमहें सतावें धोन तुमहाने व्रीनोघ में समसत
१२ नीत की व्रुनी व्रात ह्रुठाइ से कहें तो घंन हो। आनंदीत धोन
अती असह्रादीत होश्रो कय़ोंकी सनग में तुमहाना पनतीफरघ
है इुस लीय़े की उनहों ने तुमसे आगे भवीसदव्रकतो को इुसी
१३ नीत से सताय़ा था। तुम पीनथीवी के लोन हो पन य़दी लोन
असवादीत होय़ तो वुह कीस से लोना कीय़ा जाय़गा? वुह
फीन कीसी काम का नहीं केवल फेंके जाने के धोन मनुप्यों के
१४ पांव तले लताड़े जाने के। तुम जगत के उंजीय़ाले हो जो नगन
१५ पहाड़ पन व्रना है सो छीप नहीं सकता। दीपक को व्रान के
मनुप्य नांद तले नहीं नप्पते पनंतु दीअट पन धोन वुह सव्र को
१६ जो उस घन में हैं उंजीय़ाला कनंता है। तुमहाना उंजीय़ाला
मनुप्यों के आगे ऐसाही यमके जीसतें वे तुमहाने सुकनमों को
१७ देप्प के तुमहानें पीता को, जो सनग में है, महीमा कनें। य़ह
मत समह्रो की मैं व्रय़वसथा को अथवा भवीसदव्रकतो को उठा
देने आय़ा ह्रुं मैं उठा देने को नहीं पनंतु पुना कनने को आय़ा
१८ ह्रुं। कय़ोंकी मैं तुमहें सय कहता ह्रुं की जव्र लों सनग धोन
पीनथीवी व्रीलाय़ न जाय़ व्रय़वसथा में से ऐक व्रींदु अथवा ऐक
व्रीसनग व्रीलाय़ न जाय़गा जव्र लों सव्र व्रसतु पुनी न होजाय़ें।
१९ इुस लीय़े जो कोइ इुन आगय़ा में से सव्र से छोटी को न मान
धोन मनुप्यों को ऐसाही सीप्पावे वुह सनग के नाज में सव्र से
छोटा गीना जाय़गा पनंतु जो कोइ उनहें माने धोन सीप्पावे
२० सोइ सनग के नाज में व्रड़ा कहावेगा। कय़ोंकी मैं तुमहें
कहता ह्रुं की य़दी तुमहाना घनम फरनीसीय़ों धोन अघापकों
के घनम से अघीक न हो तो तुम कीसी नीत से सनग के नाज
२१ में पनवेस न कनोगे। तुम ने सुना है की पनायीनों को कहा
गय़ा था की हतय़ा मत कन धोन जो कोइ हतय़ा कनेगा सो
२२ नय़ाय़ में दंड के जोग होगा। पनंतु मैं तुमहें कहता ह्रुं की
जो कोइ अपने भाइ पन अकानन कनोघ कने सो नय़ाय़ में दंड

के जोग होगा चोन जो कोइ अपने भाइ का तुछ कहे सो सभा
के दंड के जोग होगा परंतु जो कोइ कहे की तु पापी है सो
२१ नरक के आग की जोग होगा। इस कारन यदी तु अपनी भेंट
को बेदी में लावे चोर वहां चेत करे की तेरे भाइ का कुछ बैर
२४ तुह पर है। तो वहां बेदी के आगे अपनी भेंट छोड़ के चला
जा पहीले अपने भाइ से मील तब आके अपनी भेंट चढा।
२५ जब लों तु अपने बैरी के संग मारग में है तुरंत उस से मीलाप
कर न हो की बैरी तुहे नयायी को सैांपे चोर नयायी तुहे
२६ दंकारी को सैांपे चोर तु बंधन में डाला जाय। मैं तुहे सत
कहता हुं की जब लों दुकरा दुकरा भर न दे तु कीसी रीत से
२७ वहां से न छुटेगा। तुम ने सुना है की पुरायोनों को कहा
२८ गया था की पर इसतीरी गमन मत कर। पर मैं तुमहें कहता
हुं की जो कोइ कुइछा से इसतरी को ताके वुह अपने मन में
२९ उस से बयभीचार करचुका। चोर यदी तेरी दहीनी आंख
तुहे ठोकर खीलावे तो उसे नीकाल के अपने पास से फेंक दे
कयोंकी तेरे अंगों में से एक का नास होना उस से भला है की
३० तेरा सरब देह नरक में डाला जाय। हां यदी तेरा दहीना
हाथ तुहे ठोकर खीलावे तो उसे काट डाल चोर अपने पास से
फेंक दे कयोंकी तेरे अंगों में से एक का नास होना तेरे लीये
३१ उस से भला है की तेरा सरब देह नरक में डाला जाय। यह
कहा गया है की जो कोइ अपनी पतनी को तयाग करे सो उसे
३२ तयाग पतर देवे। परंतु मैं तुमहें कहता हुं की जो कोइ
परगमन बीना अपनी पतनी को तयाग करे सो उस से बयभी-
चार करवाता है चोर जो कोइ उस तयकत से बीवाह करे सो
बयभीचार करता है।

३३ यह भी तुम सुन चुके हो की पुरायोनों को कहा गया था
की झुठी कीरीया मत खा परंतु परमेसर के लीये अपनी कीरी-
३४ यों को पुरा कर। पर मैं तुमहें कहता हुं की कसी रीत से

कीमीया मत प्याओ न ता सनग की कयोंकी वह इसन का सीं-
१५ हासन है। न ता पीनथीवी की कयोंकी वुह उसके यनन की
पीढ़ी है न ता यनोसलीम की कयोंकी वुह महानाज का नगन
१६ है। अपने सीन की कीनीया मत प्या कयोंकी तु पेक वाल का
१७ उजला अथवा काला नहीं कन सकता। पनंत तुमहानी वात
यीत हां हां नहीं नहीं होवे कयोंकी जा इन से अधीक है सा
दुसट से होती है।
१८ तुम सुन युके हो का कहा गया है की आंप्प की संती आंप्प
१९ औान दांत की संती दांत। पन मैं तुमहें कहता हुं की वीगाड़ का
सामना मत कनना पनंतु यदी कोइ तेने दहीने गाल पन थपेड़ा
४० माने दुसना भी उसे फेन दे। औान यदी कोइ याहे की तुहे
नयाय सथान में ले जाय औान तेना वसतन उतान लेवे ता
४१ छाढ़ना भी उसे लेने दे। औान यदी कोइ तुहे आघ कोस वन-
४२ वस ले जाय ता उसके संग कोस भन यला जा। जा तुह से मांगे
उसे दे औान जा तुह से उधान मांगे उस से मुंह मत माड़।
४३ तुम सुन युके हा की कहा गया था की अपने पनोसी का पीआन
४४ कन औान अपने वैनी से वैन। पनंतु मैं तुमहें कहता हुं की
अपने वैनी का पीआन कना जा तुमहें धीकानें उनहें आसीस
देओ जा तुम से वैन कनें उनसे भलाइ कना औान जा तुमहें
४५ सतावें औान दुप्प देवें उनके लीये पनानथना कना। जोसतें
तुम अपने सनगीय पीता के संतान हाओ कयोंकी वुह अपने
सुनज का भलों औान वुनों पन उदय कनता है औान धनमी
४६ औान अधनमी पन मेंह वनसाता है। कयोंकी यदी तुम उनसे
पनेम कना जा तुम से पनेम कनते हैं ता तुमहाना कया फल
४७ है? कया कनगनाहक भी पैसा नहीं कनते?। औान यदी
तुम केवल अपने भाइयों का नमसकान कना ता तुम ने अधीक
४८ कया कीया? कया कनगनाहक भी पैसा नहीं कनते?। इस
लीये पैसा सीध वना जैसा तुमहाना सनगीय पीता सीध है।

६ छठवां पर्ब्ब।

दान करने का उपदेस १—४ प्रार्थना की ५—८ प्रभु की प्रार्थना ९—१३ छमा करने का और ब्रत रखने का उपदेस १४—१८ स्वर्ग पर धन बटोरना १९—२१ नीरमल आंख २२—२३ ईस्वर की और धन की सेवा नहीं हो सकती २४ जगत के अती सोच का तयाग करना और ईस्वर के धर्म और राज की खोजना २५—३४

१ चौकस होओ की मनुष्यों से देखे जाने के लीये उनके आगे अपना दान मत करो नहीं तो तुमहारे स्वर्गीय पीता से तुम-
२ हारा कुछ प्रतीफल नहीं। इस लीये जब तु दान करे तब अपने आगे तुरही मत बजा जैसे की कपटी मंडलीयों में और मारगों में मनुष्यों से सतुत पाने के लीये करते है मैं तुमहें सत
३ कहता हुं की उनहों ने अपना प्रतीफल पाया है। परंतु जब तु दान करे तब तेरा बांयां हाथ न जाने जो तेरा दहीना हाथ
४ करता है। जीसतें तेरे दान गुपत में होवें और तेरा पीता जो गुपत में देखता है आपही तुझे प्रगट में प्रतीफल देगा।
५ और जब तु प्रार्थना करे कपटीयों के समान मत हो कयोंकी वे मनुष्यों से देखे जाने के लीये मंडलीयों में और मारगों के कोनों में खड़े होके प्रार्थना करने को प्रीत रखते है मैं तुमहें सत कहता हुं की उन्हों ने अपना प्रतीफल पाया है।
६ परंतु जब तु प्रार्थना करे तो अपनी कोठरी में जा और दुवारा को मुंद के अपने पीता की, जो गुपत है प्रार्थना कर और तेरा पीता जो गुपत में देखता है, सो तुझे प्रगट में प्रती-
७ फल देगा। परंतु जब तुम प्रार्थना करो तो अनदेसीयों की नाईं बृथा बक बक मत करो कयोंकी वे समझते है की
८ हमारे अधीक बोलने से हमारी सुनी जायगी। इस लीये तुम

उनके समान मत होओ क्योंकी तुमहाना पीता तुमहाने मांगने
९ से आगे जानता है की तुमहें क्या क्या अवेसक है। इस
कानन इसी नीत से पनानथना कनो की हे हमाने पीता जो
१० सनग में है तेना नाम पवीतन कीया जाय। तेना नाज आवे
११ तेनी इछा जैसी सनग में वैसी पीनथीवी में होवे। हमाने पनती
१२ दीन की नोटी आज हमें दे। औन हमाने नीनों को ऐसा छमा
१३ कन जैसे हम भी अपने नीनीयों को छमा कनते हैं। औन
हमें पनीछा में न डाल पनंतु दुसट से छुड़ा क्योंकी नाज औन
१४ पनाकनम औन महातम सदा तेने हैं आमीन। क्योंकी यदी
तुम मनुष्यों के लीये उनके अपनाध को छमा कनो तो तुमहाना
१५ सनगीय पीता भी तुमहें छमा कनेगा। पनंतु यदी तुम मनुष्यों
के लीये उनके अपनाध को छमा न कनो तो तुमहाना पीता भी
१६ तुमहाने अपनाधों को छमा न कनेगा। फेन जब तुम ब्रनत
कनो कपटीयों के समान उदास रुप मत बनो क्योंकी वे अपने
रुप को बीगाड़ते हैं जीसतें वे मनुष्यों को ब्रनती दीष्याइ देवें
मैं तुमहें सत कहता हुं की उनहों ने अपना पनतीफल पाया
१७ है। पनंतु जब तु ब्रनत कने अपने सीन को यीकना कन
१८ औन अपने मुंह को धो। जीसतें तु मनुष्यों को ब्रनती न
दीष्याइ देवे पनंतु अपने पीता को जो गुपत में है, औन तेना
पीता जो गुपत में देष्यता है पनगट में तुहे पनतीफल देगा।
१९ अपने लीये पीनथीवी पन धन मत बटोनो जहां कीड़ा औन
काइ बीगाड़ते हैं औन जहां योन सेंध देते हैं औन युनावते
२० हैं। पनंतु अपने लीये सनग पन धन बटोनो जहां कीड़ा औन
काइ नहीं बीगाड़ते औन जहां योन सेंध नहीं देसकते न
२१ युनाते हैं। क्योंकी जहां तुमहाना धन है तहां तुमहाना
२२ मन भी लगा नहेगा। सनीन का दीपक आंष्य है इस लीये
यदी तेनी आंष्य नीनमल होवे तो तेना साना सनीन जोतमय
२३ होगा। पनंतु यदी तेनी आंष्य नोगी होय तो तेना साना सनीन

अंधकारमय होगा इस लीये यदी उंजीआला जो तुझ में है
२४ अंधीयारा है जाय तो कया वुह अंधीयारा होगा। कोई
मनुष्य दो सामी की सेवा नहीं कर सकता कयोंकी वुह एक से
वैर रक्खेगा और दुसरे से प्रेम, अथवा वुह एक का पक्ष करेगा
और दुसरे की नींदा, तुम ईश्वर की और धन की सेवा नहीं
२५ कर सकते। इस लीये मैं तुम्हें कहता हुं की अपने जीवन
के नीमीत सोच मत करो की हम कया खायेंगे अथवा हम
कया पीयेंगे न अपने सरीर के लीये की हम कया पहीनेंगे
कया जीवन भोजन से और सरीर वस्त्र से अधीक नहीं?।
२६ आकास के पंछीयों को देखो कयोंकी वे न बोते हैं न लवते हैं
न बटोरते हैं तीस पर भी तुम्हारा स्वर्गीय पीता उन्हें
२७ पालता है कया तुम उन से अधीक मोल के नहीं हो?। तुम
में से सोच करके कौन अपने डील को हाथ भर बढ़ा सकता
२८ है?। और वस्त्र के लीये कयों सोच करते हो खेत के
सोसन के फूलों को सोचो वे कयोंकर बढ़ते हैं वे परीस्रम नहीं
२९ करते न कातते हैं। तीस पर भी मैं तुम्हें कहता हुं की
सुलेमान भी अपने सारे वीभव में इन में से एक के समान
३० वस्त्रभुसीत न था। इस लीये यदी ईश्वर खेत की घास को जो
आज है और कल भट्ठी में झोंकी जायगी यूं पहीनाता है तो
३१ हे अल्पवीस्वासीयो कया तुम्हें अधीक न पहीनावेगा। इस
लीये सोच से मत कहो की हम कया खायेंगे? अथवा कया
३२ पीयेंगे? अथवा कया पहीनेंगे?। कयोंकी अनदेसी इन सारी
वस्तुन की खोज करते हैं परन्तु तुम्हारा स्वर्गीय पीता जानता
३३ है की तुम्हें इन सारी वस्तुन का आवेसक है। परंत पहीले
ईश्वर के राज का और उस के धर्म का खोज करो और ये
सब वस्तें तुम्हारे लीये उबरते हुए अधीक की जायेंगी।
३४ इस कारन कल के लीये सोच मत करो कयोंकी कल अपने ही
बीषय सोच करेगा दीन का दुख दीनही के लीये बहुत है।

७ सातवां पनप्र।

दोप्प के व्रौप्पय़ में उपदेस १—५ पवीतन व्रसनु कुकन के। न देना ६ पनानथना में उभाड़ना ७—११ श्रैानें से व्रेवहान कनने का उपदेस १२ सकेत श्रैान यैाड़े फराटक श्रैान मानग १३—१४ झुठे नवीसद्‌व्रकतें से यौताना १५—२० कुकनमी न व्रचेंगे य़दपी वे श्रासयनज को सकत नप्पें २१—२३ घन का द्रानीसटांत २४—२७ मसीह समापत कनता है श्रैान लोग श्रासयनज मानते हैं २८—२९।

१ दोप्प मत लगाश्रो जीसतें तुम पन दोप्प न लगाय़ा जाय़।
२ कय़ोंकी जीस दोप्प से तुम दोप्प लगाते हो उस से तुम पन भी
दोप्प लगाय़ा जाय़गा श्रैान जीस नपुप्रे से तुम नापते हो उसी
३ से तुनहाने लीय़े फेन नापा जायगा। पनंतु उस कीनकीनी
को जो तेने भाइ की श्रांप्प में है कय़ों देप्पता है? पनंतु उस
४ लठे को जो तेनी श्रांप्प में है नहीं देप्पता?। श्रथवा श्रपने
भाइ को कय़ोंकन कह सकता है की नहजा उस कीनकीनी को
जो तेनी श्रांप्प में है नीकाल देउं श्रैान देप्प तेनीही श्रांप्प में
५ एक लठा है। श्ने कपटी पहीले श्रपनेही श्रांप्प से उस लठे को
दुन कन तव़ तु फेनकाइ से देप्पके श्रपने भाइ की श्रांप्प से उस
६ कीनकीनी को नीकाल सकेगा। पवीतन व्रसतु कुतें के मत
देश्रो श्रैान श्रपनी मोतीय़ों को सुश्रनें के श्रागे मत फेंको न
हो की वे श्रपने पांव तले उनहें नैांदें श्रैान फीनके तुमहीं को
फाड़ें।
७ मांगो श्रैान तुमहें दीय़ा जाय़गा ढुंढ़ो श्रैान तुम पाश्रोगे
८ प्पटप्पटाश्रो श्रैान तुमहाने लीय़े प्पोला जाय़गा। कय़ोंकी जो
कोइ मांगता है सो लेता है श्रैान जो ढुंढ़ता है सो पाता है श्रैान
९ जो प्पटप्पटाता है उसके लीय़े प्पोला जाय़गा। तुम में कैान

मनुष्य है यदी उसका पुत्र उस से रोटी मांगे कया वुह उसे
१० पथर देगा ? । अथवा यदी वुह मछली मांगे कया वुह उसे
११ सांप देगा ? । इस लीये यदी अधम होके तुम अपने पुत्रों
को अछा दान देने जानते हो तो तुमहारा पीता जो सरग में
है कया उन सभों को जो उस से मांगते हैं अधीक भली वसतु
१२ न देगा ? । इस लीये सब जो तुम चाहते हो की मनुष्य तुम
से करें तुम भी उन से वैसाही करो कयोंकी वयवसथा और
१३ भवीसदवकता येही हैं । सकेत फाटक से परवेस करो कयोंकी
चौड़ा है वुह फाटक और फैलाव है वुह मारग जो बीनास को
१४ पहुंचाता है और बहुत हैं जो उस से जाते हैं । इस कारन की
सकेत है वुह फाटक और प्पड़वीड़ है वुह मारग जो जीवन
१५ को पहुंचाता है और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं । झूठे भवीसद-
वकतों से चौकस रहो जो भेड़ों के भेस में तुमहारे पास आते
१६ हैं परन्तु भीतर में फड़वैये हुंडार हैं । तुम उनहें उनके
फलों से पहीचानोगे कया मनुष्य कांटों से दाख अथवा उंट-
१७ कटारो से गुलर बटोरते हैं । इसी रीत से हर एक अछा पेड़
अछा फल फलता है परंतु बुरा पेड़ बुरा फल फलता है ।
१८ अछा पेड़ बुरा फल नहीं फल सकता न बुरा पेड़ अछा फल
१९ फल सकता । जो जो पेड़ अछा फल नहीं फलता सो सो
२० काटा जाता और इंधन बनता है । सो उनहें उनके फलों से
जानोगे ।

२१ हर एक जो मुझे परभु परभु कहता है सरग के राज में
परवेस न करेगा परंतु वुह जो मेरे सरगीय पीता की इछा पर
२२ चलता है । बहुतेरे उस दीन मुझे कहेंगे की हे परभु हे परभु
कया हमने तेरे नाम से भवीस नहीं कहा और तेरे नाम से
पीसाचों को दुर नहीं कीया ? और तेरे नाम से बड़े आसचरज
२३ करम नहीं कीये ? । और तब मैं उनहें कहुंगा की मैं ने
तुमहें कभी न जाना अरे कुकरमीयो मुझ से दुर होओ ।

२४ इस लीये जो कोइ मेने ये व्रयन सुनता है और उन्हें
मानता है मैं उसे एेक वुधमान से उपमा देउंगा जीसने यटान
२५ पन अपना घन उठ या। और मेंह वनसा और वाढ़ आये
और व्रयान व्रहीं और उस घन पन वैाछाड़ लग और वह न
२६ गीना कयोंकी यटान पन उठ या गया था। पनंतु जो कोइ
मेने ये व्रयन सुनता है और उनहें नहीं पालता सो एेक वावने
मनुष्य से उपमा दीया जायगा जीसने अपना घन वालु पन
२७ उठाया। और मेंह वनसा और वाढ़ आये और व्रयान व्रहीं
और उस घन पन वै छाड़ लगा और वह गीनपड़ा और उसका
२८ गीनाव व्रड़ा ऊआ। और ऐसा ऊआ क जव्र यसु ने इन व्रातों
को समापत कीया तव्र मंडली उसके उपदेस से आसयनजीत
२९ ऊइ। कयोंकी उसने उनहें पनाकनमी के समान सीप्पाया और
अधापकों के समान नहीं।

८ आठवां पनव्र।

मसीह एेक कोढ़ी को पावन कनता है १—४ सतपती
के दास को यंगा कनके भवीस कहता है ५—१३
पतनस की सास को और अनेकों को यंगा कनता है
१४—१८ उसके पीछे कौन नीत से जाया याहीये
१९—२२ व्रदन से समुंदन और अंधी को रथान
कनता है २३—२७ पीसायों को दुन कनता है
२८—३२ लोग उसे अपने देस स नीकलते हैं
३३—३४

१ जव्र वुह उस पहाड़ से उतना व्रड़ी व्रडी मंडली उसके पीछे
२ पीछे गइ। और देप्पो की एेक कोढ़ी ने आके उसे दंडवत
कनके कहा की हे पनभु यदी आप याहें तो मुझे पवीतन कन
३ सकते हैं। यसु ने यह कहके हाथ व्रढ़ाये और उसे छुके कहा
की मैं याहता ऊं पवीतन होजा और ततकाल उसका कोढ़

४ अच्छा होगया। तब यिसू ने उसे कहा की देख कीसी से मत
कह परन्तु जाके अपने तईं याजक को दीखा और जो दान मुसा
५ ने ठहराया है सो उन के साखी के लीये दे। और जब यिसु ने
कपरनाहुम में प्रवेस कीया एक सतपती ने उस पास आके
६ बीनती की। और कहा की हे प्रभु मेरा सेवक अरधांग के
७ रोग से अती पीड़ीत घर में पड़ा है। यिसु ने उसे कहा की
८ आके मैं उसे चंगा करूंगा। उस सैकड़ापती ने उत्तर देके
कहा की हे प्रभु मैं इस जोग नहीं की आप मेरे छत तले
आवें परंतु केवल बचन कहीये और मेरा सेवक चंगा हो
९ जायगा। क्योंकी मैं एक मनुष्य दुसरे के बस में हूं और
जोधा मेरे बस में हैं और मैं एक को कहता हूं की जा और
वुह जाता है और दुसरे को की आ और वुह आता है और
१० अपने सेवक को की यह कर और वुह करता है। यिसु ने
सुन के आसचरज कीया और अपने पछुओं को कहा की मैं
तुम्हें सत कहता हूं की मैं ने ऐसा बड़ा बीसवास इसराएल
११ में भी न पाया। और मैं तुम्हें कहता हूं बहुतेरे पुरब
और पछीम से आवेंगे और इबराहीम और इसहाक और
१२ याकुब के संग स्वर्ग के राज में बैठेंगे। परन्तु इस राज के
संतान बाहर अंधियारे में डाले जायेंगे जहां रोना और दांत
१३ कीचकीचाना होगा। तब यिसू ने उस सतपती से कहा की जा
और तेरे बीसवास के समान तेरे लीये होवे और उसका
१४ सेवक उसी घड़ी चंगा होगया। और जब यिसु पतरस के घर
१५ में आया उसने उसकी सास को जर से रोगी पड़ी देखा। और
उसने उसका हाथ छूआ तब जर ने उसे छोड़ा और उसने उठके
१६ उनकी सेवा की। जब सांझ हुई वे उसके पास बहुत से पीसाच
ग्रसतों को लाये और उसने बचन से आतमों को दुर कीया
१७ और सभों को जो रोगी थे चंगा कीया। जीसतें जो आसीया
भवीसदबकता ने कहा था पुरा होवे की उसने आप हमारी

१८ दुनवृषता को से लीया और नोगों को उठा लीया। पन जव
यसु ने अपने आस पास वृडी मंडलीयों को देष्पा उसने उस
१९ पार जाने को अगया की। और कसी अधापक ने आके उसे
कहा की हे गुनु जहां कहीं आप जायेंगे मैं आपके पाछे यलूं-
२० गा। तव यसु ने उसे कहा की लोमड़ीयां के लीये मांदें हैं और
आकास के पछीयों के ष्पोंथे पनंतु मनुष्य के पुतन के सीन घनने
२१ का सथान नहीं है। और उसके सोष्पा में से येक ने उसे कहा
की हे पनभु मुझे जाने दीजये की पहीले अपने पीता को
२२ गाडुं। पनंतु ने यसु ने उसे कहा की मेन पीछे यला आ और
२३ मोनतक अपने मीनतकों को गाड़ें। और जव वुह नाव पन
२४ यढ़ा उसके सोष्प उसके पीछे होलीये। और देष्पो की समुंदन
में येक वृड़ी आंधी उठी यहां लों की लहनों से नाव ढंप गई
२५ पनंतु वुह नींद में था। तव उसके सोष्प ने आके उसे जगाके
२६ कहा की हे पनभु हमें वृयाइये हम नसट होते हैं। उसने
उनहें कहा की हे अलप वृीसवासीयो तुम कयों डनते हो तव
उसने उठके वृयान और समुदन को दपटा और वड़ा यैन हो
२७ गया। पनंतु लोग अयंभीत होके वृोले की यह कैसा नीत का
२८ मनुष्य है जीसके वस में वृयान और समुंदन भी हैं। और
जव वुह पान जनगसीन के देस में पहुंया दो पीसायग्नीसत
मनुष्य समाधीन से नीकल के उसे मीले जो यहां लों अती
२९ भयंकन थे की उस मानग से कोई जा न सकता था। और
देष्पा की उनहोंने यीला के कहा की हे ईसन के पुतन यसु
हमें तुझ से कया काम कया तु ईधन आया है की समय से
३० आगे हमें पीड़ा देवे। और उनसे दुन वृहुत से सुअनों का
३१ येक झुंड यनता था। तव पीसायों ने उसकी वीनती कनके
कहा की यदी आप हमें दुन कनें तो जाने दीजये की उन
३२ सुअनों के झुंड में पैठें। उसने उनहें कहा की जाओ तव वे
नीकल के सुअनों के झुंड में पैठे और देष्पो की सुअनों के साने

झुंड करारे पर से छूट समुंदर में जा गीरे और जल में नष्ट
३३ हुये। तब उनके चरवाहे भागे और नगर में गये और
समसत समाचारों को, जो पीसाच गरसतों पर बीता था बरनन
३४ कीया। और देखो की सारे नगर यसु की भेंट को बाहर
नीकल आये और जब उनहों ने उसे देखा तो बीनती की, की
हमारे सीवाने से बाहर जाइये।

९ नवां पत्र।

यसु कपरनाहुम में जाके एक अरधांगी को चंगा करता है १—८ पापीयों के संग भोजन करने से आप को नीरदोष ठहराता है ९—१३ ब्रत न करने से अपने सीष्यों को नीरदोष ठहराता है १४—१७ एक इसतीरी को चंगा करता है १८—२२ एक कनया को जीलाता है २३—२६ दो अंधों को चंगा करता है २७—३१ एक पीसाच को दुर करता है फरीसी उसे पीसाची करम में नापते हैं ३२—३४ यसु मंडली पर दया करके सीष्यों को आगया करता है की उपदेसकों के लीये परारथना करें ३५—३८।

१ तब वुह नाव पर चढ़ के पार पहुंचा और अपने नगर में
२ आया। और देखो की खाट पर पड़े हुये एक अरधंगी को
उस पास लाये और यसु ने उनका बीसवास देखके उस अरध-
अंगी को कहा की हे पुतर सुसथीर हो तेरे पाप छमा कीये
३ गये। और देखो की अधापकों में से कीतनों ने अपने अपने
४ मन में कहा की यह इसर की अपनीनदा करता है। यसु ने
उनकी चींतनों को जान के कहा की कीस लीये अपने अपने
५ मन में बुरी चींतना करते हो। कयोंकी कया कहना सहज
है की, पाप छमा कीये गये अथवा कहना की उठ और चल।
६ परंतु जीसतें तुम जानो की मनुष्य के पुतर को पीरथीवी पर

पाप छमा करने का सामरथ है उसने उस अरधांगी को कहा
७ की उठ अपनी खाट उठा और अपने घर को जा। तव वुह
८ उठा और अपने घर को चला गया। परंतु जब मंडली ने
देखा तब उनहों ने अ सयरज करके ईस्वर की सतुत की, की
९ उसने ऐसा सामरथ मनुष्यों को दीया है। और यसु ने वहां से
वढ़ के कर लेने के सथान में एक मनुष्य को वैठे देखा जीस का
नाम मती था और उसने उसे कहा की मेरे पीछे आ तब वुह
१० उठा और उसके पीछे हो लीया। और युं हुआ की जब यसु
घर में भोजन पर वैठा तो देखो की वहुत से करगर हक
और पापी आके उसके और उसके सीष्यों के संग वैठ गये।
११ और जब फरीसीयों ने देखा तब उनहों ने उसके सीष्यों से
कहा की तुमहारा गुरु करगर हरों और पापीयों के संग
१२ कयों भोजन करता है। परंतु जब यसु ने सुना उसने उनहें
कहा की भले चंगों को वैद का आवेसक नहीं परंतु रोगीयों
१३ को। पर जाओ और इसके अरथ को सीखो की मैं कीरपा
को चाहता हुं और वलीदान को नहीं कयोंकी मैं धरमीयों
को वुलाने नहीं आया परंतु पापीयों को जो सतें पसचाताप
१४ करें। तव यहीया के सीष्यों ने उस पास आके कहा की हम
और फरीसी कयों वारंवार व्रत करते हैं परंतु आप के
१५ सीष्य व्रत नहीं रखते। यसु ने उनहें कहा की जब लों
दुलहा संग है वर तो वीलाप करसकते हैं? परंतु वे दीन
आवेंगे जब दुलहा उनसे अलग कीया जायगा तब वे व्रत
१६ करेंगे। कोइ मनुष्य नये कपड़े का टुकड़ा पुराने वसतर पर
नहीं जोड़ता कयोंकी वुह जो उसे सुधारने के लीये उस पर
जोड़ा गया है वसतर से खींचता है और फटा अधीक होता
१७ है। मनुष्य पुराने कुपे में नया दाखरस नहीं भरता नहीं तो
कुपे फटते हैं और दाखरस वह जाता है और कुपे नसट होते
हैं परंतु नये कुपे में नया दाखरस भरते हैं और दोनों जतन

१८ से नहते हैं। जव़ वह उनहें य़ह कह नहा था देप्पो की प्रेक
अघक्ष ने आके उसको व़ीनती कनके कहा की मेनी व़टी अव्रो
मनगइ पनंतु आइय़े श्रौन अपना हाथ उस पन नप्पय़े श्रौन
१९ वुह जोय़ेगी। तव़ य़सु उठा श्रौन अपने सीप्प समेत उसके
२० पीछे हो लीय़ा। श्रौन देप्पो की प्रेक इसतीनी ने जीस को
व़ानह व़नस से नकत व़हने का नोग था पीछे आके उसके व़सतन
२१ के प्पुंट को छुआ। कय़ोंकी उसने अपने मन में कहा की य़दी
२२ मैं केवल उसका व़सतन छुउं तो यंगी होजाउंगी। पनंतु य़सु
पीछे फीना श्रौन उसे देप्प के कहा की हे पुतनी सुसथान हो
तेने व़ीसवास ने तुझे यंगा कीय़ा श्रौन वुह इसतीनी उसी घड़ी
२३ यंगी हो गइ। श्रौन जव़ य़सु उस अघक्ष के घन में आय़ा श्रौन
२४ व़जनीय़ों श्रौन लोगों को यीलाते देप्पा। उसने उनहें कहा
की अलग होश्रो कय़ोंकी कनय़ा मन नहीं गइ पन सोती है
२५ श्रौन उनहों ने उस से ठठा कीय़ा। पनंतु जव़ लोग व़ाहन
नीकाले गय़े उसने भीतन जाके उसका हाथ पकड़ा श्रौन वुह
२६ कनय़ा उठी। श्रौन य़ह कीनत उस साने देस में फैल गइ।
२७ श्रौन जव़ य़सु वहां से यला गय़ा तो दो अंधे यीलाते श्रौन
य़ह कहते उसके पीछे हो लीय़े की हे दाउद के पुतन हम पन
२८ दय़ा कनीय़े। श्रौन जव़ वुह घन में आय़ा वे अंधे उस पास
आय़े श्रौन य़सु ने उनहें कहा की तुम व़ीसवास नप्पते हो की
मैं य़ह कन सकता हूं? उनहों ने उसे कहा की हां हे पनभु।
२९ तव़ उसने उनकी आंप्पें छुके कहा की तुमहाने व़ीसवास के
३० समान तुमहाने लीय़े होवे। श्रौन उनकी आंप्पें प्पुल गइं
श्रौन य़सु ने उनहें यीता के कहा की देप्पो कोइ न जाने।
३१ पनंतु उनहों ने वहां से नीकल के उसकी कीनत उस समसत
३२ देस में फैलाइ। जव़ वे व़ाहन गय़े तो देप्पो की लोग प्रेक
३३ पीसाय गनसत गुंगे मनुप्प को उस पास लाय़े। श्रौन जव़
पीसाय नीकाला गय़ा वुह गुंगा व़ोला श्रौन मंडली आसयनज

कनके कहने लगी की ऐसा इसनाइल में कभी न देष्पा गया था।
१४ पनंतु फनीसीयों ने कहा की वुह भीसायों के नाजा की सहाय
३५ से भीसायों को दुन कनता है। श्रीन यसु समसत नगनों में
श्रीन गांश्रों में जाके उनकी मंडलीयों में नाज का मगल समा-
यान पनयानते श्रीन लोगों के हन ऐक नोग श्रीन हन ऐक
१६ दुष्प दुन कनते सनवतन फीना। पन जव उसने मंडलीयों को
देष्पा तो वुह उन पन दयाल ऊश्रा इस कानन की वे थके पड़े
थे श्रीन उन भेड़ों के समान जोनका गड़नीया नहीं है छीन
३७ भींन थे। तव उसने श्रपने सीष्पों से कहा की कटनी तो वऊत
३८ है ठीक पनंतु लवैये थोड़े। इस लीये कटनी के सामी की
वीनती कनो की वुह श्रपनी कटनी में लवेयों को वाहन कने।

दसवां पनव।

मसीह श्रपने वानह पनेनीतों को श्रासयनज की सकती देके भेजता है श्रीन उनके नाम १—४ कहां कहां जाने का श्रीन उनके सीष्पाने का उपदेस ५—१५ कसट पाने की श्रीन उनहें घीनज देने की भवीसवानी १६—३९ उनके गनहन कनवैयों के लीये श्रासीस पाने का वचन देना ४०—४२।

१ श्रीन श्रपने वानह सीष्पों को वुलाके उसने उनहें श्रपवीतन
श्रातमों को दुन कनने का श्रीन समसत पनकान के नोग श्रीन
२ हन ऐक नीत के दुष्प को चंगा कनने का सामनथ दीया। श्रव
वानह पनेनीतों के नाम ये हैं पहीला समउन जो पतनस कहा-
वता है श्रीन उसका भाइ श्रंदनीयास जवदी का वेटा याकुव
३ श्रीन उसका भाइ युहना। फैलवुस श्रीन वनतुलमा तुमा
श्रीन मती कनगनाहक श्रीन हलफा का वेटा याकुव श्रीन लवी
४ जो सदी कहावता है। समउम कीनानी श्रीन यऊदा श्रसकन-
५ युती जीसने उसे पकड़वाया भी। यसु ने इन वानहों को भेजा

और उनहें अगया कनके कहा की अनदेसीओं की और मत
६ जाओ और सामनीओं के नगन में पनवेस मत कनो। पनंतु
नीज कनके इसनाइल के घन की खोइ ऊइ भेड़ के पास जाओ।
७ और जाते ऊए पनयान कनके कहो की सनग का नाज समीप
८ है। नोगीओं को चंगा कनो कोढ़ीओं को पावन कनो मीनतकों
को जीलाओ पीसाचों को दुन कनो सेंत पाये हो सेंत देओ।
९ अपने वटुए में सोना अथवा नुपा अथवा पीतल मत सोंच कनो।
१० और जातना के लीये झोला अथवा दो वसतन अथवा जुता
अथवा लाठी मत लेओ कयोंकी वनीहान अपने भोजन के जोग
११ है। और जीस कीसी नगन अथवा गांव में पनवेस कनो वुझो
की उस में जोग कौन है और जव लों वहां से न जाओ वहीं
१२ नहो। और जव तम कीसी घन में पनवेस कनो तो उस पन
१३ आसीस देओ। यदी वुह घन जोग होय तो तुमहाना कलयान
उस पन पऊंचे पनंतु यदी वुह अजोग होय तो तुमहाना
१४ कलयान तुम पन फीन आवे। और जो कोइ तुमहें गनहन
न कने और तुमहानी वातें न सुने जव तुम उस घन से अथवा
१५ नगन से वाहन जाओ अपने पांव की धुल झाड़ो। मैं तमहें
सत कहता ऊं की उस नगन से सदुम और अमुना देस के लीये
१६ वीचान के दीन में अधीक सहज होगा। देखो मैं तुमहें भेड़ों
के समान ऊंडानों के वीच भेजता ऊं इस लीये सनप के समान
१७ वुधमान और कपोत के तुल सुधे होओ। पनंतु मनुष्यों से
चौकस नहो कयोंकी वे तुमहें सभाओं में सौंपेंगे और तुमहें
१८ अपनी मंडलीओं में कोड़े मानेंगे। और मेने कानन अधछों
और नाजाओं के आगे पकड़वाये जाओगे जीसतें उन पन और
१९ अनदेसीओं पन साखी होवे। पनंतु जव वे तुमहें सौंपें चीनता
मत कनीओ की हम कीस नीत से अथवा कया कहें कयोंकी जो
२० तुम कहोगे उसी घड़ी तुमहें दीया जायगा। कयोंकी तुम नहीं
२१ पनंतु तुमहाने पीता का आतमा जो तुम में है कहता है। तव

भाइ भाइ को ग्रोन पीता पुतन को घात के लीये सैापेंगे ग्रोन
वालक माता पीता के वीनोघ में उठेंगे ग्रोन उनहें वघन
२२ कनवावेंगे। ग्रोन मेने नाम के लीये सब तुम से वैन कनेंगे
पनंतु जा ग्रंत लों सहेगा सो मुकत पावेगा।
२३ पनंतु जब वे तुमहें इस नगन में सतावें दुसने को भाग जाग्रो
कयोंकी मैं तुमहें सय कहता ऊं की तुम इसनाइल के नगनों
२४ में सनवतन न फीनोगे जब लों मनुष्य का पुतन न ग्रावे। सीष्य
२५ गुनु से वड़ा नहीं न सेवक ग्रपने सामी से। वस है की सीष्य
गुनु के समान ग्रोन सेवक ग्रपने सामी के तुल होवे यदी उनहों
ने घन के सामी को वालजवुल कहा है तो कीतना ग्रघीक
२६ उसके पनीवानों को कहेंगे। इस लीये उनसे मत डनो कयों-
की कोइ वसतु छीपाइ नहीं जो पनगट न होगी ग्रोन न गुपत
२७ जो जानी न जायगी। जो कुछ मैं तुमहें ग्रंघयाने में कहता
ऊं उसे उंजीयाले में कहो ग्रोन जो कुछ तुम काने कान सुनो
२८ कोठों पन से पनयानो। ग्रोन उनसे मत डनो जो देह को
घात कनते हैं पनंतु ग्रातमा को घात नहीं कनसकते पनंतु
नीज कनके उस से डने जो ग्रातमा को ग्रोन देह को ननक में
२९ नास कन सकता है। कया ऐक ग्रघेले को दो यीड़ीयां नहीं
वीकतीं ग्रोन वीना तुमहाने पीता के उनमें से ऐक भी भुम
३० पन नहीं गीनेगी। पनंतु तुमहाने सीन के वाल लों सब गीने
३१ ऊऐ हैं। इस लीये मत डनो कयोंकी तुम वऊतेनी यीड़ीयों
३२ से ग्रघीक मोल के हो। इस कानन जो कोइ मनुष्यों के ग्रागे
मुहे मान लेगा उसे मैं भी ग्रपने पीता के ग्रागे, जो सनग में
३३ है मान लेउंगा। पनंतु जो कोइ मनुष्यों के ग्रागे मुहे से
मुकनेगा उस से मैं भी, ग्रपने पीता के ग्रागे जो सनग में है,
मुकनुंगा।
३४ मत समहो की मैं पीनथीवी पन मीलाप कनवाने को ग्राया
ऊं मैं मीलाप कनवाने को नहीं पनंतु तलवान यलवाने को

३५ आया ऊं। क्योंकी मैं मनुष्य को उसके पीता से औार कन्या
को उसकी माता से औार पतोह को उसकी सास से प्रुट करवाने
३६ आया ऊं। औार मनुष्य के व्रैरी उनके घरही के लोग होंगे
जो माता अथवा पीता को मुझ से अधीक पीआर करता है
सो मेरे जोग नहीं औार जो व्रेटा अथवा व्रेटी को मुझ से अधीक
३७ पीआर करता है सो मेरे जोग नहीं। औार जो अपने कुरूस
३८ को उठा न लेवे औार मेरे पीछे न आवे सो मेरे जोग नहीं। जो
अपने पराण को व्रचाता है सो उसे गंवावेगा औार जो मेरे
३९ नीमोत अपना पराण गंवाता है उसे पावेगा। जो तुमहें
गरहन करता है सो मुझे गरहन करता है औार जो मुझे
गरहन करता है जीसने मुझे भेजा उसे गरहन करता है।
४० वुह जो भवीसद्व्रकता के नाम से भवीसद्व्रकता को गरहन
करता है भवीसद्व्रकता का पर्तीफल पावेगा औार जो धरमी
के नाम से धरमी को गरहन करता है धरमी का पर्तीफल
४१ पावेगा। औार जो कोइ इन छोटों में से एक को सीष्य के
नाम से केवल एक कटोरा सीतल जल पीलावेगा मैं तुमहें सत
कहता ऊं की वुह कीसी रीत से अपना पर्तीफल न प्यावेगा।

११ गय़ारहवां पत्र।

य़सु उपदेस करता है य़हीय़ा अपने सीष्य को उस
पास भेजता है औार य़सु का उतर १—६ य़हीय़ा
पर साष्पी देता है ७—१५ य़हीय़ा के औार य़सु के
व्रीष्यय़ में लोगों का कुव्रीचार १६—१९ परभु कइ
नगरों को ओलाहना देता है २०—२४ अपना भेद
परगट करने के लीये पीता का धंन मानता है
२५—२७ थके ऊओं को अपने पास व्रुलाता है
२८—३०।

१ औार ऐसा ऊआ की जव्र य़सु अपने व्रारह सीष्यों को अगय़ा

कन युका तव्र वुह वहां से यला गया की उनके नगनों में सीप्पावे
२ श्रोन पनयाने। श्रोन जव्र यहोया ने व्रंघन में मसीह के
३ कानजों को सुना उसने अपने सीप्पों में से दो को भ्रेज के। उसे
पुछा की कया जो आवने पन थे सो आप हैं अथवा हम दुसने
४ की व्राट जोहें? यसु ने उतन देके उनहें कहा की जाश्रो श्रोन
जो कुछ की तुम सुनते श्रोन देप्पते हो सो यहोया से कहो।
५ अंघे दीनीसट पाते हैं लंगड़े यलते हैं कोढ़ी पवीतन कीये
जाते हैं व्रहीने सुनते हैं मीनतक जीलाये जाते हैं श्रोन कंगालों
६ को मंगल समायान सुनाया जाता है। श्रोन घन वुह जो मेने
७ कानन ठाेकन न प्पावे। श्रोन जव्र वे यले जाते थे यसु यहोया
के व्रीप्पय में मंडलीयों को कहने लगा की व्रन में तुम कया
देप्पने को नीकले कया पेक ननकट पवन से हीलता ऊश्रा? ।
८ फेन कया देप्पने को व्राहन नीकले कया कोमल व्रसतन पहीने
ऊपे मनुप्प को? देप्पो जो कोमल पहीनते हैं सो नाज भ्रवनों में
९ हैं। पनंतु कया देप्पने को व्रानह नीकले कया पेक भ्रवीसद-
व्रकता को? हां मैं तुमहें कहता ऊं की पेक भ्रवीसदव्रकता से
१० सनेसठ। कयोंकी यह वुह है जीसके व्रीप्पय में लीप्पा है की
देप्पो मैं अपना दुत तेने आगे भ्रेजता ऊं जो तेने मानग को
११ तेने आगे सुघानेगा। मैं तुमहें सत कहता ऊं की उन में से
जो इसतीनोयों से उतपंन ऊपे हैं यहोया सनान कानक से
पेक भी व्रड़ा पनगट नहीं ऊश्रा तीस पन भी जो सनग के नाज
१२ में अत छोटा है सो उस से व्रड़ा है। श्रोन यहोया सनान कानक
के दीनों से अव्र लों सनग का नाज व्रल सहता है श्रोन व्रलवंत
१३ उसे हूपट के लेता है। कयोंकी साने भ्रवीसदव्रकता श्रोन
१४ व्रयवसथा ने यहोया लों भ्रवीस कहा। श्रोन यदी तुम गनहन
१५ कीया याहो तो इलीयास जो आने पन था यही है। जीस
१६ कीसी के कान सुनने को होवे सो सुने। पनंतु मैं इस पीढ़ी
को कीस से उपमा देउं वे उन व्रालकों के पेसे हैं जो हाटों में

१७ व्रैठ के अपने संगीय़ों को पुकान ते हैं। औान कहते हैं की
हम तुमहाने लीय़े व्रांसली व्रजाय़े कीय़े औान तुम न नाये हम
१८ ने तुमहाने लीय़े व्रीलाप कीय़ा औान तुम न|नोए। कय़ोंकी
य़हीय़ा प्याता पीता नहीं आय़ा औान वे कहते हैं की उस में
१९ पीसाय है। मनुष्य का पुतन प्याता पीता आय़ा औान वे कहते
हैं की देप्पो एक ओाजनी औान मदय़प कनगनाहकों औान
पापीय़ों का मीतन पनंतु वुघ अपने पुतनों से नीनदोप्प ठहनाइ
२० गइ है। तव्र वुह उन नगनों को जीन में उसने सव्र से व्रऊत
पनाकनम दीप्पाय़ा था, ओानाहना देने लगा कय़ोंकी वे न पछ-
२१ ताए। हे कोनजीन हाय़ तुह पन हे व्रैत सैदा हाय़ तुह पन
कय़ोंकी जो पनाकनम तुह में पनगट ऊए य़दी सुन औान सैदा
में पनगट होते तो वे व्रऊत दीन से टाट औान नाप्प में पछताते।
२२ पनंतु मैं तुमहें कहता ऊं की व्रीयान के दीन में सुन औान सैदा
२३ के लीय़े तुम से अधीक सहज होगा। औान हे कपननाऊम
जो सनग लों व्रढाय़ा गय़ा है ननक लों गीनाय़ा जाय़गा कय़ों-
की जो पनाकनम तुह में पनगट ऊए य़दी सदुम में पनगट
२४ कीय़े जाते तो वुह आज लों व्रना नहता। पनंतु मैं तुमहें
कहता ऊं की नय़ाय़ के दीन में सदुम के देस के लीय़े तुह से
२५ अधीक सहज होगा। उस समय़ में य़सु ने उतन देके कहा की
हे पीता सनग औान पीनथीवी के पनभु मैं तेना घंन मानता ऊं
इस कानन की तुने इन व्रसतुन को व्रुधमानें औान यतुनें से
२६ गुपत नप्पा औान उनहें व्रालकों पन पनगट कीय़ा। हां हे
पीता ऐसा होने में तेनी दीनीसट में अछा लगा सव्र कुछ मेने
२७ पीता से मुहे सोंपा गय़ा। पीता को छोड़ कोइ पुतन को नहीं
जानता औान पुतन को छोड़ कोइ पीता को नहीं जानता औान
२८ वही जीस पन पुतन उसे पनगट कीय़ा याहे। हे साने लोग
जो थके औान व्रड़े व्रोहे से दव्रे हो मेने पास आओ औान मैं
२९ तुमह सुप्प देउंगा। मेना ;जुआ अपने उपन लेओ औान मुह

से सीष्यो। कय़ोंकी मैं कोमल थ्रैान मन में दोन ऊं थ्रैान तुम
३० थ्रपने थ्रपने पनानों में सुष्य पाथ्रोगें। कय़ोंकी मेना जुथ्रा
सहज थ्रैान मेना व़ोह् हलुक है।

१२ व़ानहवां पनव़।

व़ोसनाम में सीष्यों का व़ालें तोड़ना थ्रैान मसीह का उनहें नीनदोष्य ठहनाना १—८ हुनाय़े हाथ का यंगा कनना ९—१३ लोगों का व़ैन थ्रैान ज्ञवीस व़ानी पुनी होनी १४—२१ पीसाय को दुन कनता है थ्रैान व़ैनीय़ों को थ्रव़ाकय़ कनता है २२—३० घनमातमा के व़ोष्यय़ का पाप व़ताता है ३१—३७ लछन के थ्रभीलासीय़ों को दपटता है ३८—४० उस पीढ़ी की व़ुनाइ व़ताता है ४१—४५ उसके सीष्य उसके कुटुमव़ ४६—५०।

१ उस समय़ में य़सु व़ोसनाम में थ्रनाज के ष्येतों में होके यला
जाता था थ्रैान उसके सीष्य भुष्ये होके व़ालों को तोड़ तोड़
२ ष्याने लगे। पनतु जव़ फनीसोय़ों ने देष्या उनहों ने उसे कहा
की देष्योय़े जो कानज व़ोसनाम के दीन में कनना जोग नहीं
३ सो थ्राप के सीष्य कनते हैं। पनंतु उसने उनहें कहा कय़ा
तुम ने नहीं पढ़ा जो दाउद ने कीय़ा जव़ वुह भुष्या था थ्रैान
४ उसके संगीय़ों ने। वुह कय़ोंकन इसन के मंदीन में गय़ा थ्रैान
भेंट की नोटी को ष्याय़ा जो उसे थ्रैान उसके संगीय़ों को ष्याना
५ जोग न था पनंतु केवल य़ाजकों को?। थ्रथवा कय़ा तुमने व़य़-
वसथा में नहीं पढ़ा की य़ाजक व़ोसनाम में मंदीन में कय़ोंकन
६ व़ोसनाम का थ्रादन नहीं कनते थ्रैान नीनदोष्य हैं?। पनंतु
मैं तुमहें कहता ऊं की इस संथान में एक मंदीन से भी व़ड़ा
७ है। पनंतु य़दी तुम इस का थ्रनथ जाने होते की, मैं दय़ा
याहता ऊं थ्रैान व़लीदान नहीं, तो नीनदोष्यीय़ों को थ्रपनाघी

८ न ठहराते। क्योंकी मनुष्य का पुत्र बीस्राम का भी प्रभु
९ है। और वुह वहां से सीधारके उनकी मंडली में गया।
१० और देखो की वहां एक मनुष्य था जीसका हाथ सुख गया था
और उनहों ने उसे दोख देने के लीये उस से यह कह के
११ पुछा कया बीस्रामें में चंगा करना जोग है?। तब उसने
उनहें कहा की तुम में कौन ऐसा मनुष्य है जीसके एक भेड़ होय
और यदी वुह बीस्राम में गड़हे में गीर पड़े कया वुह
१२ उसे पकड़ के बाहर न नीकालेगा?। फेर मनुष्य भेड़ से
कीतना भला है इस कारन बीस्रामें में भला करना जोग है।
१३ तब उसने उस मनुष्य को कहा की अपना हाथ बढ़ा उसने बढ़ाया
१४ और वुह दुसरे के समान नीरोग हो गया। तब फरीसीयों ने
बाहर जाके उसके बीरोध में सभा की, की वे उसे कीस रीत से
१५ नास करें। परंतु जब यसु ने जाना वुह वहां से अलग हो
गया और बड़ी बड़ी मंडली उसके पीछे पीछे गई और उसने उन
१६ सभों को चंगा कीया। और उनहें आगया की, की मुझे प्रगट
१७ मत करो। जीसतें वुह बचन जो असाया भवीसदबकता के
१८ दुवारा से कहा गया था पुरा होवे। की देखो मेरा सेवक
जीसे मैं ने चुना है मेरा पीतय जीस पर मेरा मन अती प्रसंन
है जीस पर मैं अपना आतमा रख्युंगा और वुह अनदेसीयों
१९ पर नयाय प्रगट करेगा। वुह न झगड़ेगा न चीलायेगा और
२० मारगों में कोइ उसका सबद न सुनेगा। वुह कुचले हुए
नरकट को न तोड़ेगा और धुआं उठते हुए सन को न बुझा-
२१ वेगा जब लों वुह नयाय को जय लों न पहुंचावे। और उसके
२२ नाम पर अनदेसी आसरा करेंगे। तब एक अंधा गुंगा पीसाच
ग्रसत पहुंचाया गया और उसने उसे चंगा कीया यहां लों
२३ की वुह अंधा गुंगा देखा और बोला। और समसत लोग
आसचरज करके बोले की कया यह दाउद का पुत्र नहीं
२४ है?। परंतु जब फरीसीयों ने सुना वे बोले की यह पीसाचों

२५ के नाजा व्राल्जव्रुल व्रीना पीसायों को दुन नहीं कनता। औन
युस ने उनकी यीनता जान के उनहें कहा की जो जो नाज अपने
व्रीनोाघ में दो भाग होवे सो सो उजाड़ होता है और जो जो
नगन अथवा घन अपने व्रीनोाघ में दो भाग होवे सो सो सथीन
२६ न नहो।घ और यदी सैतान सैतान को दुन कने तो वुह अपने
व्रीनोाच में व्रीभाग ऊआ फेन उसका नाज कयोंकन सथीन
२७ नहेगा?। औन यदी मैं व्रालजव्रुल से पीसायों को दुन कनता
ऊं तो तुमहाने पुतन कीस से दुन कनते हैं? इस लीये वे
२८ तुमहाने नयायी होंगे। पनंतु यदी मैं इसन के आतमा से
पीसायों को दुन कनता ऊं तो इसन का नाज तुम लों पऊंया
२९ है। नहीं तो कोइ एक व्रलवंत के घन में कयोंकन पैठ सके
औन उसकी सामगनी को लुटे जव्र लों पहीले वुह उस व्रलवंत
३० को न व्रांधे? औन तव्र वुह उसके घन को लुटेगा। जो मेना
संगी नहीं सो मेना व्रैनी है औन जो मेने संग नहीं व्रटोनता
३१ सो व्रीथानता है। इस लीये मैं तुमहें कहता ऊं की मनुष्य के
लीये समसत पनकान का पाप औन अपनीनदा छमा की जायगी
पनंतु अपनीनदा जो आतमा के व्रीनोाच में है सो नहीं छमा
३२ की जायगी। औन जो कोइ मनुष्य के पुतन के व्रीनोाघ में व्रात
कहे वुह उसके लीये छमा की जायगी पनंतु जो घनमातमा के
व्रीनोाघ में कहेगा वुह उसके लीये छमा न की जायगी न इस
३३ लोक में न पन लोक में। पेड़ को अछा कनो औन उसके फल
को अछा अथवा पेड़ को व्रुना कनो औन उसके फल को व्रुना
३४ कयोंकी पेड़ फल से जाना जाता है। हे सनप व्रंसीयो तुम
व्रुने होके कयोंकन भला कह सकते हो? कयोंकी मन की भन
३५ पुनी से मुंह कहता है। उतम मनुष्य मन के उतम भंडान से
उतम व्रसतु व्राहन नीकालता है औन अघम मनुष्य मन के
३६ अघम भंडान से अघम व्रसतु व्राहन नीकालता है। पनंतु मैं
तुमहें कहता ऊं की हन एक व्रयनथ व्रयन जो मनुष्य कहते हैं

३७ वे व्रीयान के दीन में उसका लेप्पा देंगे। कयोंकी तु अपने
व्रयन से नीनदोष्प ठहनेगा श्रोन अपने व्रयन से दोप्पी ठहन
३८ जाय़गा। तव्र कइ ऐक अघापकों श्रोन फनीसीयों में से
उतन देके कहने लगे की हे गुनु हम आप से ऐक लछन देप्पा
३९ याहते हैं। पनंतु उसने उनहें उतन देके कहा की ऐक वुनी
श्रोन पन इसतीनी गामी पीढ़ी लछन ढुंढती है पनंतु युनस
नवीसदव्रकता के लछन को छोड़ उनहें कोइ लछन न दीप्पाया
४० जाय़गा। कयोंकी जीस नीत से युनस तीन नात दीन मछली
के पेट में था उसी नीत से मनुष्य का पुतन तीन नात दीन पीन-
४१ थीवी के भीतन नहेगा। नैनीवी के लोग नयाय़ के दीन में
इस पीढ़ी के संग उठेंगे श्रोन उनहें दोप्पी ठहनावेंगे कयोंकी
वे युनस के उपदेस से पछताये श्रोन देप्पो की युनस से भी व्रड़ा
४२ यहां है। दप्पीन की नानी इस पीढ़ी के संग नयाय़ के दीन
में उठेगी श्रोन उनहें दोप्पी ठहनावेगी कयोंकी वुह पीनथीवी
के अंत सीवाने से सुलेमान का गयान सुनने को आइ श्रोन देप्पो
४३ को सुलेमान से भी व्रड़ा यहां है। जव्र अपवीतन आतमा मनुष्य
से नीकल जाता है वुह सुप्पे सथान में जा जा के व्रीसनाम ढुंढता
४४ फीनता है श्रोन नहीं पाता। तव्र वुह कहता है की मैं अपने
घन में, जहां से, नीकला, फेन जाउंगा श्रोन आके उसे सुना श्रोन
४५ झाड़ा सुघाना पाता है। तव्र वुह जाता है श्रोन अपने संग
श्रोन सात आतमा को लेता है जो उस से अघीक दुसट हैं श्रोन
वे भीतन जाके व्रास कनते हैं तव्र उस मनुष्य की पीछली दसा
अगली से अघीक वुनी होती है इसी नीत से इस समय़ के दुसट
४६ पीढ़ी की भी होगी। जव्र वुह लोगों से कह नहा था देप्पो की
उसकी माता श्रोन उसके भाइ व्राहन प्पड़े ऊऐ उस से व्रानता
४७ कनने याहते थे। तव्र ऐक ने उसे कहा की देप्पीये आप की
माता श्रोन आपके भाइ व्राहन प्पड़े ऊऐ आप से व्रानता कनने
४८ याहते हैं। पनंतु उसने उसे उतन देके कहा की कौन है मेनी

४९ माता ? ग्रैान कौन हैं मेने भाइ ? । तव उसने अपने सीप्यों
की ओान अपना हाथ व़ढ़ा के कहा की देप्प मेनी माता ग्रैान
५० मेने भाइ। कयोंकी जो कोइ मेने सनगीय़ पीता की इछा पन
यलता है सोइ मेना भाइ ग्रैान व़हीन ग्रैान माता है।

१३ तेनहवां पनव़।

व़ोव़ैये़ का दीनीसटांत १—९ कीस लोये़ य़सु दीनीस-
टांतों में उपदेस कनता है १०—१७ उस दीनीस-
टांत का ग्रनथ १८—२३ व़नैला व़ीज का दीनीस-
टांत २४—३० नाइ का ग्रैान प्पमीन का दीनीस-
टांत ३१—३३ मसीह के उपदेस में भवीस व़ानी
पुनी होनी ३४—३५ व़नैले व़ीज के दीनीसटांत
का ग्रनथ ३६—४३ भंडान के ग्रैान मोती के
दीनीसटांत ४४—४६ जाल का ४७—५० गीनहसथ
का ५१—५२ मसीह के देसी उस से ठोकन प्पाते हैं
५३—५८।

१ उसी दीन य़सु घन से नीकल के समुंदन के तीन जा व़ैठा।
२ ग्रैान व़ड़ी व़ड़ी मंडली उसके पास ग्रेकठी ऊइं य़हां लों की वुह
ग्रेक नाव पन यढ़ व़ैठा ग्रैान सानी मंडली तीन पन प्पड़ी नही।
३ ग्रैान उसने उनहें व़ऊत सी व़ातें दीनीसटांतों में कहीं की देप्पो
४ ग्रेक व़ोव़ैय़ा व़ाने को नीकला। ग्रैान उसके व़ोने में कुछ मानग
५ की ग्रलंग गीने ग्रैान पंछीय़ों ने ग्राके उनहें युग लीय़ा। कुछ
पथनैली भुम पन गीने जहां उनहों ने व़ऊत मीटी न पाइ ग्रैान
उनके ग्रंकुन नीकले इस कानन की उनहों ने मीटी की
६ गहीनाइ न पाइ। ग्रैान जव़ सुनज उदय़ ऊग्रा वे हैांस गये़
७ ग्रैान जड़ न नप्पने के कानन सुनहा गये़। ग्रैान कीतने कांटों
८ में गीने ग्रैान कांटों ने व़ढ़ के उनहें घोंट डाला। पनंतु कीतने
ग्रछी भुम में गीने ग्रैान व़ालें लाय़े कीतने तो सै गुने कीतने

९ साठ कीतने तीस गुने। सुनने के लीये जो कान नप्पते हैं
से सुनें।
१० तव्र सीप्पों ने आके उसे कहा की आप उनहें दीनीसटांतों
११ में कयों कहते हैं ?। उसने उतन दे के उनहें कहा इस कानन
की तुमहें सनग के नाज का भेद जानने को दीया गया है पनंतु
१२ उनहें नहीं दीया गया। कयोंकी जीस पास है उसे दीया
जायगा बैान उसको अघीक व्रढती होगी पनंतु जीस पास नहीं
१३ है उस से वुह भी जो उस पास है लीया जायगा। इस लीये
मैं उनहें दीनीसटांतों में कहता हूं इस कानन की देप्पते हुऐ
वे नहीं देप्पते बैान सुनते हुऐ नहीं सुनते बैान नहीं समहुते
१४ हैं। बैान उन पन असाया की भवीस कही हुइ व्रातें पुनी
हुइं की सुनते हुऐ तुम सुनोगे पन न समहोगे बैान देप्पते
१५ हुऐ देप्पोगे पनंतु न सुहेगा। कयोंकी इस लोग का मन मोटा
है बैान कानों से उंया सुनते हैं बैान अपनी आंप्पें उनहों ने
मुंद लीयां हैं न हो की वे कभी आंप्पों से देप्पें बैान कानों से
सुनें बैान अंत:कनन से समहें बैान फीन जायें बैान मैं उनहें
१६ यंगा कनुं। पनंतु घंन तुमहानी आंप्पें कयोंकी वे देप्पती हैं
१७ बैान तुमहाने कान की वे सुनते हैं। कयोंकी मैं तुमसे सय
कहता हूं की जो तुम देप्पते बैान सुनते हो सो व्रहुत से भवी-
सदव्रकतों बैान घनमीयों ने देप्पने बैान सुनने याहा पन
१८ उनहों ने न देप्पा बैान न सुना। इस लीये तुम व्रोवैये का
१९ दीनीसटांत सुनो। जव्र कोइ उस नाज का व्रयन सुनता है
बैान नहीं समहुता तव्र वुह दुसट आता है बैान जो कुछ उस
के मन में व्रोया गया था छीन लेता है यह वही है जीसने मानग
२० की अलंग व्रीज को पाया। पनंतु जीसने व्रीज को पथनैली भुम
में पाया सो वही है जो व्रयन को सुनता है बैान तुनंत आनंद
२१ से गनहन कनता है। तीस पन भी उस में जड़ नहीं होती
पनंतु तनीक भन ठहनता है कयोंकी जव्र उस व्रयन के कानन

२२ ताड़ना ग्रीर कसट होता है तुरंत वुह ठोकर ष्याता है। वुह
भी जीसने व्रीज को कांटों में पाया वुह है जो व्रयन को सुनता
है ग्रीर इस संसार की चंघा ग्रीर घन का छल व्रयन को घोंट
२३ डालता है ग्रीर वुह नीसफल होता है। परंतु जीसने व्रीज
को अछी भुम में पाया सो यह है जो व्रयन को सुनता है ग्रीर
समझता है ग्रीर फलता है कीतने तो सौ गुने कीतने तो साठ
२४ कीतने तो तीस। उसने उनहें ग्रीर ऐक दृीनीसटांत कहा की
सरग का राज ऐक मनुष्य के तुल है जीसने अपने ष्येत में अछा
२५ व्रीज व्रोया। परंतु जव्र लोग सो गये उसका व्रैरी आया ग्रीर
२६ गोहूं में व्रनैला व्रीज व्रोके यला गया। पर जव्र अंकुर नीकला
२७ ग्रीर व्राल लगी तव्र व्रनैले व्रीज भी दीष्याइ दीये। तव्र उस
गरहसथ के सेवकों ने आके उसे कहा की हे सामी कया आप ने
अपने ष्येत में अछा व्रीज नहीं व्रोया था? फेर उस में व्रनैले
२८ व्रीज कहां से आये?। उसने उनहें कहा की कीसी व्रैरी ने
यह कीया है सेवकों ने उसे कहा की यदी आप की इछा होय
२९ तो हम जाके उनहें ऐकठे करें। परंतु उसने कहा की नहीं
ऐसा नहो की जव्र तुम व्रनैले व्रीज को ऐकठे करो उनके संग
३० गोहूं भी उष्याड़ लेग्रो। कटनी लों दोनों को ऐकठे व्रढ़ने देग्रो
ग्रीर कटनी में मैं लवैयों को कहूंगा की पहीले व्रनैले व्रीज को
ऐकठे करो ग्रीर जलाने के लीये उनके गठे व्रांधो परंतु गोहूं
३१ को मेरे ष्यते में व्रटोरो। उसने उनहें ऐक ग्रीर दृीनीसटांत
कहा की सरग का राज ऐक राइ के तुल है जीसे ऐक मनुष्य ने
३२ लेके अपने ष्येत में व्रोया। वुह ठीक सव्र व्रीजों से छोटा है
परंतु जव्र व्रढ़ गया तो तरकारीयों से व्रड़ा होता है ग्रीर ऐसा
पेड़ होता है की आकास के पंछी उसके डालों पर आके व्रसेरा
करते हैं।

३३ उसने उनहें ऐक ग्रीर दृीनीसटांत कहा की सरग का राज
ष्मीर के तुल है जीसे कीसी इसतीरी ने लेके तीन सेर पीसान

३४ में कीपाया ग्रहां लों की सव्र प्पमीन हो गया। ग्रह सव्र व्रातें
ग्रसु ने मंडली को दीनीसटांतें में कहीं श्रोन व्रीन दीनीसटांत
३५ से वुह उनसे न व्रोलता था। जीसतें जो व्रयन नवोसदव्रकता
के दुवाना से कहा गया था सो पुना होवे की मैं अपना मुंह
दीनीसीटांतें में प्पोलुंगा मैं उन व्रसतुन को, जो जगत के
३६ आनंभ से गुपत नप्पी गई थीं पनगट कनुंगा। तव्र ग्रसु मंडली
को व्रीदा कनके घन में गया श्रोन उसके सीप्पों ने उस पास
आके कहा की प्पेत के व्रनैले व्रीज के दीनीसटांत का अनथ हम
३७ से व्रननन कीजीये। उसने उतन देके उनहें कहा की जो
२८ अक्का व्रीज व्रोता है सो मनुप्प का पुतन है। वुह प्पेत जगत
है अक्का व्रीज उस नाज के व्रालक हैं पनंतु व्रनैले दुसट के सनतान
३९ हैं। जीस व्रैनी ने उनहें व्रोया सो सैतान है कटनी जगत
४० की समापत है श्रोन लवैये दुत हैं। सो जैसे व्रनैले व्रीज व्रटोने
जाके आग में जलाये जाते हैं ऐसाही इस जगत के अंत में
४१ होगा। मनुप्प का पुतन अपने दुतें को भेजेगा श्रोन वे उसके
नाज में से उन सभों को, जो ठोकन प्पीलाते हैं श्रोन उन
४२ लोगों को, जो वुनाइ कनते हैं व्रटोनेंगे। श्रोन उनहें आग के
४३ कुंड में डाल देंगे जहां नोना श्रोन दांत पीसना होगा। तव्र
धनमी अपने पीता के नाज में सुनज के तुल पनकास होंगे
४४ जीसके कान सुनने के लीये होवे सो सुने। फेन सनग का नाज
प्पेत में कीपे ऊए धन के तुल है जव्र मनुप्प उसे पाता है उसे
कीपाता है श्रोन उसके आनंद के माने जाता है श्रोन अपना
४५ सव्र कुछ व्रेय के उस प्पेत को मोल लेता है। फेन सनग कानाज।
एक व्रैपानी के तुल है जो यीप्पे यीप्पे मोतीयों को ढुंढता है।
४६ जीसने जव्र व्रड़े मोल के एक मोती को पाया था जाके अपना
सव्र कुछ व्रेय के उसे मोल लीया।

४७ फेन सनग का नाज एक जाल के तुल है जो समुंदन में डाला
४८ गया श्रोन हन एक नीत की मछली व्रटोनी। जव्र वुह भनगया

से तीन पन पैंय लाये और वैठ के अछी अछी को पातनों में
४९ वटोना परंतु वुनी वुनी को फेंक दीया। जगत के अंत में
ऐसाही होगा दुत नीकलेंगे और दुसटों को घनमीयों म से
५० अलग करेंगे। और उनहें आग के कुंड में डाल देंगे जहां नोना
५१ और दांत पीसना होगा। यसु ने उनहें कहा कया तुमने ये
५२ वातें समझीं? उनहों ने उसे कहा की हां हे पनभु। तव
उसने उनहें कहा इस लीये हन ऐक अधापक जीसने सनग के
नाज के लीये उपदेस पाया है ऐक गनहसथ पुनुष्य के समान
५३ है जो अपने भंडान से नइ और पुनानी नीकालता है। और
युं ऊआ की जव यसु ने इन दीनोसटांतें को समापत कीया
५४ वुह वहां से यला गया। और जव वुह अपने देस में आया
उसने उनकी मंडली में ऐसा उपदेस कीया की वे अयंभीत
होके वोले की यह गयान और आसयनज कनम इसे कहां से
५५ हैं। कया यह वढइ का वेटा नहीं? कया उसकी माता
मनीयम नहीं कहाती? और उसके भाइ याकुव और युसा
५६ और समउन और यऊदा?। और उसकी वहीनें कया
सवकी सव हमाने संग नहीं? फेन इस ने यह सव कहां से
५७ पाया?। और उनहों ने उस से ठोकन खाया तव यसु ने
उनहें कहा की भवीसदवकता आदन नहीत नहीं है पनंतु
५८ केवल अपने ही देस में और अपने ही घन में। और
उसने उनके अवीसवास के कानन वऊत आसयनज कनम
नहीं कीया।

१४ योदहवां पनव।

हीनुदीस यसु को यहीया समझता है यहीया के
माने जाने का समायान १—१२ यसु मंडलीयों को
भोजन कनाता है १३—२१ यसु पनानथना को जाता

है, समुंदर पर चलता है, पतरस को व्रचा लेता है, उसके सीष्य उसे पजते हैं २२—३३ जनेसन के नोगीयों को चंगा करता है ३४—३६।

१ उस समय में राज के चौथाइ के अधक्ष हीरुदीस ने यसु की
२ कीरत सुनी। और अपने सेवकों से कहा की यह यहीया
सनान कारक है वुह मीरतु से जी उठा है इस कारन आस-
३ चरज करम उस से परगट होते हैं। कयोंकी हीरुदीस ने
अपने भाइ फैलवुस की पतनी हीरुदीयास के कारन यहीया
४ को पकड़ के व्रंधन में डाल दीया। कयोंकी यहीया ने उसे
५ कहा की तुझे उसे रष्पना जोग नहीं है। और जव्र उसने उसे
व्रधन करने चाहा वुह मंडली से डरा इस कारन की वे उसे
६ भवीसदव्रकता जानते थे। परंतु जव्र हीरुदीस के जनम दीन
का आनंद होने लगा हीरुदीयास की पुतनी उनके मध में
७ नाची और हीरुदीस को हरसीत कीया। तीस पर उसने
कीरीया ष्पाके परन कीया की जो कुछ वुह मांगेगी उसे देउंगा।
८ और जैसा उसकी माता ने आगे से उसे कह रष्पा था वैसा वुह
व्रोली की यहीया सनान कारक का सीर प्रेक थाल में मुझे
९ दीजीये। तव्र राजा उदास हुआ तथापी कीरीया के और
१० जेवनहरीयों के कारन देने की अगया दी। और उसने भेज
११ के व्रंधन में यहीया का सीर कटवाया। और उसका सीर
प्रेक थाल में पहुंचाया जाके उस कनया को दीया और वुह
१२ अपनी माता के पास ले गइ। और उसके सीष्पों ने आके धड़
१३ को उठा के गाड़ दीया और जाके यसु से कहा। जव्र यसु ने
सुना वुह वहां से नाव पर होके प्रेक अरनय सथान में अलग
गया और जव्र लोगों ने सुना वे नगरों से नीकल के पांव पांव
१४ उसके पीछे चले गये। और यसु ने व्राहर जा के प्रेक व्रड़ी
मंडली को देष्पा और उन पर दयाल हुआ और उनके रोगीयों
१५ को चंगा कीया। और जव्र सांझ हुइ उसके सीष्पों ने उस पास

आके कहा की य़ह अननय़ सथान है समय़ भी व़ीत गय़ा
मंडली को व़ीदा कनीय़े जीसतें वे गांओं में जाके अपने लीय़े
१६ भोजन मोल लेवें। पनंतु य़सु ने उनहें कहा की उनके जाने
१७ का पनय़ोजन नहीं तुम उनहें प्पाने को देओ। तव़ उनहों ने
उसे कहा की हमाने पास य़हां केवल पांय नोटीय़ां औन दो
१८।१९ मछलीय़ां हैं। उसने कहा की उनहें मेने पास लाओ। तव़
उसने मंडली को घास पन व़ैठने की अगय़ा की औन पांय
नोटीय़ों औन दो मछलीय़ों को लेके उसने सनग की ओन
दीनोसट को औन आसीस देके नोटीय़ों को तोड़ा औन सीप्पों
२० को दीया औन सीप्पों ने मंडली को। औन सव़ प्पाके तीनपत
ऊए औन व़येऊए य़न यान से उनहों ने व़ानह टोकनीय़ां
२१ भनी उठाईं। औन जीनहों ने प्पाय़ा था सो इसतीनी औन
२२ व़ालकों को छोड़ के पांय सहसन पुनुप्प थे। तव़ य़सु ने तुनंत
अपने सीप्पों को नाव पन यढ़ाय़ा जीसतें अपने से आगे आगे
२३ पान जाय़ें जव़ लों मंडलीय़ों को व़ीदा कने। औन जव़ वुह
मंडलीय़ों को व़ीदा कन युका वुह पनानथना के लीय़े एक
पहाड़ पन अलग यढ़ गय़ा औन जव़ सांझ ऊई वुह वहां
२४ अकेला था। पनंतु नाव समुंदन के मध लहनों से डगमगाती
२५ थी कय़ोंकी व़य़ान उलटी थी। औन नात के यौथे पहन में
२६ य़सु समुंदन पन यलते यलते उन पास आय़ा। औन जव़
सीप्पों ने उसे समुंदन पन यलते देप्पा वे घव़नाके कहने लगे
२७ की पनेत है औन मानेडन के यीलाय़े। तव़ य़सु ने तुनंत
२८ उनहें कहा की सुसंधीन होओ मैं ऊं मत डनो। तव़ पतनस
ने उतन देके उसे कहा की हे पनभु य़दी आप हैं तो मुझे
२९ अगय़ा कीजीय़े की पानी पन आप पास आउं। तव़ उसने
कहा की आ औन जव़ पतनस नाव पन से उतना वुह पानी पन
३० यलने लगा की य़सु पास जाय़। पनंतु जव़ उसने देप्पा की
व़य़ान पनयंड है वुह डनगय़ा औन डुव़ते डुव़ते यीला के कहा

३१ की हे पनभु मुझे व्रयाइये। तव्र य़सु ने तुनंत हाथ व्रढ़ाय़ा
श्रौन उसे पकड़ के कहा की हे अलप व्रीसवासी तु ने कय़ों
३२ सनदेह कीय़ा?। श्रौन जव्र वे नाव पन श्राय़े व्रय़ान थम गइ।
३३ तव्र वे जो नाव पन थे श्राके उसे दंडवत कनके कहने लगे की
३४ श्राप इसन के पुतन हैं। श्रौन जव्र वे पान गय़े तव्र जनेसन के
३५ देस में पज्ञंचे। श्रौन जव्र वहां के मनुष्पों ने उसे जाना उनहों
ने उस देस की चानों श्रोन भेजा श्रौन साने नोगीय़ों को उस
३६ पास लाय़े। श्रौन उसकी व्रीनती की, की केवल उसके व्रसतन
का प्पुंट छुवें श्रौन जीतनों ने छुश्रा तीतने नीनघान चंगे हो गय़े।

१५ पंदनहवां पनव्र।

श्रघापकें श्रौन फनीसीय़ों को दपट के उनके कपट
को पनगट कनता है १—९ व्रताता है की कौन
सी व्रसतु मनुष्प को श्रपवीतन कनतीं है १०—२०
कीनानी इसतीनी की कनय़ा को चंगा कनता है
२१—२८ व्रज्ञत से लोगों को चंगा कनता है
२९—३१ मंडली को भोजन कनाता है ३२—३९।

१ तव्र य़नोसलीम के श्रघापकें श्रौन फनीसीय़ों ने य़सु पास
२ श्राके कहा। की श्राप के सीष्प पनाचीनों के व्रेवहान को कय़ों
उलंघन कनते हैं कय़ोंकी जव्र वे नोटी प्पाते हैं हाथ नहीं
३ घोते। पन उसने उनहें उतन देके कहा की तुम भी कय़ों
श्रपने व्रेवहान से इसन की श्रगय़ा को उलघन कनते हो?।
४ कय़ोंकी इसन ने य़ह कह के श्रगय़ा की, की श्रपनी माता पीता
का सनमान कन श्रौन जो माता श्रथवा पीता को घीकानें सो
५ पनान से माना जाय़। पनंतु तुम कहते हो की जो कोइ माता
पीता को कहे कीं जो कुछ तुझे मुझ से पनापत होना था सो
६ भेंट कीय़ा गय़ा। वुह श्रपनी माता श्रथवा पीता का सनमान
न कने इस नीत से तुम ने श्रपने व्रेवहान से इसन की श्रगय़ा

७ को व्रयनथ कीया। अने कपटीग्रो असाग्रा ने तुमहाने व्रीष्पय
८ में ठीक भवीस कहा। कीये लोग अपने मुंह से मेने पास आते
हैं और होंठों से मेना सनमान कनते हैं पनंतु उनका मन मुह
९ से दुन है। पन वे मेनो सेवा व्रीनया कनते हैं की मनुष्पों की
१० अगय़ा का उपदेस कनते हैं। तव्र उसने मंडली को व्रुला के
११ उनहें कहा की सुनो और समहो। जो मुंह में जाती है सो
मनुष्प को अपवीतन नहीं कनती पनंतु जो मुंह से नीकलती है
१२ सो मनुष्प को अपवीतन कनती है। तव्र उस के सीष्पों ने आके
उसे कहा की आप जानते हैं की फनीसीग्रों ने य़ह व्रयन सुन
१३ के ठोकन प्पाय़ा। पनंतु उसने उतन दीय़ा और कहा की हन
ग्रेक पैाघा जीसे मेने सनगीय़ पीता ने नहीं लगाय़ा उप्पाड़ा
१४ जाय़गा। उनहें नहने देओ वे अंघे अंघों के अगुआ हैं और
य़दी अंघा अंघे का अगुआ होवे तो दोनों गड़हे में गीनपड़ेंगे।
१५ तव्र पतनस ने उतन दीय़ा और उसे कहा की इस दीनीसटांत
१६ का अनथ हमें कहीग्रे। तव्र य़सु ने कहा की कद्दा तुम भी
१७ अव्र लों नासमह हो?। कय़ा अव्रलों नहीं व्रुहते की जो
कछ मुंह में जाता है सो उदन में पड़ता है और गड़हे में
१८ फेंका जाता है?। पनंतु जो व्रसतु मुंह से नीकलती हैं मन
से व्राहन आती हैं और वे मनुष्प को अपवीतन कनती हैं।
१९ कय़ोंकी मन से व्रुने व्रीयान हतय़ा पनइसतीनी गमन व्रय़भीयान
२० योनी कुठी साछी इसन की अप्नीनदा। य़ेही हैं जो मनुष्प
को अपवीतन कनती हैं पनंतु व्रीन घोय़े हाथ से भोजन कनना
२१ मनुष्प को अपवीतन नहीं कनता। तव्र य़सु वहां से यलके
२२ सुन और सैदा के सीवानों में गय़ा। और देष्पो की ग्रेक कीनानी
इसतीनी उन सीवानों में से नीकल कन यीलाके उसे व्रोली
की हे पनभु दाउद के पुतन मुह पन दय़ा कीजीय़े मेनी व्रेटी
२३ ग्रेक पीसाय से अती दुष्पीत है। पनंतु उसने उसे उतन में
कोइ व्रयन न कहा और उसके सीष्पों ने आके व्रीनती कनके

उसे कहा की उसे वीदा कीजीये कयोंकी वह हमारे पीछे
२४ चीलाती है। तव उसने उतर देके कहा की इसराइल के
घराने की खोई हुई भेड़ों को छोड़ मैं कीसी के पास भेजा नहीं
२५ गया। तव वुह आई और उसे दंडवत करके वोली की हे
२६ परभु मेरी सहाय कीजीये। परंतु उसने उतर देके कहा की
२७ उचीत नहीं की वालकों की रोटी लेके कुतों को दीजीये। तव
उसने कहा सत हे परभु तथापी कुते चुर चार खाते हैं जो
२८ उनके सामीयों के मंच से गीरते हैं। तव यसु ने उतर देके
उसे कहा की हे इसतीरी तेरा वड़ा वीसवास तेरी इछा के
समान तेरे लीये होवे और उसकी वेटी उसी घड़ी चंगी
हो गई।

२९ और यसु वहां से जाके जलील के समुंदर के तीर पर आया
३० और ऐक पहाड़ पर चढ़के वहां वैठा। और वड़ी वड़ी
मंडली जीनके संग लंगड़े अंधे गुंगे टुंडे और वहुत से और थे
उस पास आई और उनहें यसु के चरन पास डाल दीया और
३१ उसने उनहें चंगा कीया। यहां लों की जव मंडली ने देख्या
की गुंगे वोले टुंडे अछे हुऐ लंगड़े चले और अंधे देख्यने लगे
तो आसचरजीत होके इसराइल के इसर की वड़ाई की।
३२ तव यसु ने अपने सीख्यों को वुलाके कहा की मंडली पर मुझे
दया आती है इस कारन की वे तीन दीन से मेरे संग हैं और
ख्याने को कुछ नहीं रख्यते और मैं नहीं चाहता की उनहें
उपवासी वीदा करुं न हो की वे मारग में नीरवल हो जायें।
३३ तव उसके सीख्यों ने उसे कहा की इस वन में हम इतनी रोटी
३४ कहां से लावें की ऐसी वड़ी मंडली को तीरीपत करें। तव
यसु ने उनहें कहा की तुमहारे पास कीतनी रोटीयां हैं? वे
३५ वोले की सात और कई छोटी छोटी मछलीयां। तव उसने
३६ मंडली को भुम पर वैठ जाने की अगया की। और उसने उन
सात रोटीयों और मछलीयों को लेके सतत करके तोड़ा और

३७। ३८ अपने सीप्यों को दीया। और सीप्यों ने मंडली को। और
वे सब प्याके तीनीपत ज्ञुऐ और उनहों ने व्रयेज्ञुऐ युन यान
३९ से सात टोकनीयां भनो उठाई। और जीनहों ने भोजन
कीया सो इसतीनी और व्रालकों को छोड़ यान सहसन पुनुप्प
४० थे। तव्र वुह मंडली को व्रीदा कनके नाव पन यढ़ा और
मजदल के सीवानों में आया।

१६ सोलहवां पनव्र।

फनीसी और सादुकी के छल को यसु डपटता है
१—४ सीप्यों को उपदेस कनता है ५—१२ उसके
व्रीप्पय में लोगों की समझ और पतनस का व्रीसवास
१३—२० यसु की भवीस व्रानी २१—२८।

१ तव्र फनीसी और सादुकी आये और पनीछा कनके उस से
२ याछा की हमें स्नग से ऐक लछन दीप्पा। उसने उतन देके
उनहें कहा की जव्र सांझ होती है तुम कहते हो की फनछा
३ होगा कयोंकी आकास लाल है। और व्रीहान को की आज
गड़व्रड़ होगा कयोंकी आकास लाल और भयंकन है अने
कपटीयो आकास के सनुप का नीननय जानते हो पनंतु समयों
४ के यीनह को नहीं जानते?। ऐक दुसट और पन इसतीनी
गामी पीढ़ी लछन ढ़ुंढता है पन युनस भवीसद्व्रकता के लछन
को छोड़ उसे कोई लछन दीया न जायगा और वुह उनहें छोड़
५ के यला गया। और जव्र उसके सीप्प उस पान पज्ञंये वे नोटी
६ लेने को भुल गये थे। तव्र यसु ने उनहें कहा की सैायेत नहो
और फनासीयों और सादुकीयों के प्पमीन से यौकस नहो।
७ और वे आपुस में व्रीयान कनके कहने लगे की यह नोटी न
८ लाने के कानन है। जव्र यसु ने जाना उसने उनहें कहा की
हे अलप व्रीसवासीयो कयों आपुस में व्रीयान कनते हो की यह
९ नोटी नहीं लाने के कानन है?। कया तुम अव्र लों नहीं

समहते श्रीन येत नहीं कनते उन पांच सहसन की पांच
१० नोटीयां श्रीन तुमने कीतनी टोकनीयां उठाई ?। श्रीन यान
सहसन की सात नोटीयां श्रीन तुम ने कीतनी टोकनीयां
११ उठाइं ?। यह कयोंकन है की तुम नहीं समहते की मैं ने
तुमहें नोटी के व्रीप्पय में नहीं कहा पनंतु जीसतें तुम फरनोसी-
१२ यों श्रीन सादुकीयों के प्पमीन से यैाकस नहो ?। तव्र उनहों
ने समहा की उसने नोटी के प्पमीन से नहीं पनंतु फरनीसीयों
१३ श्रीन सादुकीयों के उपदेस से यैाकस होने के कहा। जव्र
यसु कैसनीयः फरैलव्रुस के सीवानों में श्राया उसने श्रपने सीप्पों
से यह कहके पुछा की मैं कैान ऊं लोग मुहे मनुप्प के पुतन के
१४ कया कहते हैं ?। उनहों ने कहा की कीतने ते यहीया
सनानकानक, कीतने ते इलीयास श्रीन कीतने यनमीया श्रथवा
१५ नवीसद्व्रकतों में से प्रेक। उसने उनहें कहा पनंतु तुम कया
१६ कहते हो मैं कैान ऊं ?। तव्र समउन पतनस ने उतन देके
१७ कहा की तु मसीह जीवत ईसन का पुतन है। तव्र यसु ने
उतन दीया श्रीन उसे कहा की हे समउन युनस के पुतन तु
घंन है कयोंकी मांस श्रीन लोहोन ने तुहे पन पनगट नहीं
१८ कीया पनंतु मेने पीता ने जो सनग में है। श्रीन मैं भी तुहे से
कहता ऊं की तु पतनस है श्रीन इस यटान पन मैं श्रपना मंदीन
व्रनाउंगा श्रीन ननक के फाटक उस पन पनव्रल न होंगे।
१९ श्रीन मैं सनग के नाज की कुंजीयों के तुहे देउंगा श्रीन जो
कुछ तु पीनथीवी पन व्रांघेगा सनग में व्रांघा जायगा श्रीन जो
२० कुछ तु पीनथीवी पन प्पोलेगा सनग में प्पोला जायगा। तव्र
उसने श्रपने सीप्पों के यीता दीया की कीसी मनुप्प से न कहो
की मैं यसु वुह मसीह ऊं।
२१ उस समय से यसु ने श्रपने सीप्पों के व्रताना श्रानंभ कीया
की कयोंकन मुहे श्रावेसक है की यनोसलीम में जाउं श्रीन
पनाचीनों श्रीन पनघान याजकों श्रीन श्रघापकों से व्रऊत सी

पीड़ा पाउं और मारा जाउं और तीसरे दीन फेर उठाया
२२ जाउं। तब प.त्रस उसे लेके कहने लगा की हे परभु आप पर
२३ दया करजीये आप पर यह न होगा। परंतु उसने फीर के
पतरस को कहा की अरे सैतान मेरे आगे से दुर हो तु मेरे
लीये ठोकर है कयोंकी तु इसर की बातों को नहीं देखता
२४ परंतु मनुष्यों की। तब यसु ने अपने सीष्यों को कहा की यदी
कोइ मेरे पीछे आया याहे तो अपनी इछा को तयागे और
२५ अपने कुरुस को उठाके मेरे पीछे आवे। कयोंकी जो कोइ
अपने परान को बयाने याहेगा सो उसे गंवावेगा और जो
२६ कोइ मेरे लीये अपने परान को गंवावेगा उसे पावेगा। कयोंकी
मनुष्य को कया लाभ है यदी वुह समसत जगत को परापत
करे और अपने परान को गंवावे? अथवा मनुष्य अपने परान
२७ की सनती कया देगा?। कयोंकी मनुष्य का पुतर अपने दुतों
के संग अपने पीता के प्रेसरय में आवेगा और तब वुह हर एक
२८ मनुष्य को उसकी याल के समान परतीफल देगा। मैं तुम से
सत कहता हुं की कइ एक यहां खड़े हैं जो मीरत का सवाद
न योखेंगें जब लों मनुष्य के पुतर को अपने राज में आते न
देख लेवें।

१७ सतरहवां परब।

रूसीह के रुप का बदलना और मुसा और इलीयास
से बात यीत करना १—८ सीष्यों को उपदेस करता
है ९—१३ एक मीसाय को दुर करता है १४—२१
अपने मारे जाने की और जी उठने की खबीस
बारो २२—२३ आसयरज दोखा के कर देता है
२४—२७।

१ और छः दीन के पीछे यसु पतरस और याकुब और उसके
भाइ युहना को संग लेके एक उंये पहाड़ पर अलग यढ गया।

२ और उनके आगे उसका रूप औरही होगया और उसका मुंह
सूरज के समान चमका और उस का बसतर जोत की नाईं
३ उजला हुआ। और देखो की मुसा और इलीयास उस से
४ बातता करते दीखाइ दीये। तब पतरस ने उतर देके यसु से
कहा की हे परभु हमारा यहां रहना अछा है यदी आप की
इछा होय तो हम तीन डेरे यहां बनावें एक आप के और एक
५ मुसा के और एक इलीयास के लीये। वुह कह रहा था देखो
एक उंजीयाले मेघ ने उन पर छाया की और देखो की उस
मेघ से यह कहते हुए एक सबद नीकला की यह मेरा पीआरा
६ पुतर है जीस से मैं अती परसंन हुं तुम उसकी सुनो। और जब
७ सीख्यों ने सुना वे औंधे मुंह गीरे और बहुत डर गये। तब
८ यसु ने आके उनहें छूआ और कहा की उठो मत डरो। और
जब उनहों ने अपनी आंखें उपर उठाइं यसु को छोड़ उनहों ने
९ कीसी को न देखा। और जब वे उस पहाड़ से उतरे यसु ने
उनहें अगया करके कहा की जब लों मनुष्य का पुतर मीरतकन
१० में से फेर न उठे यह दरसन कसी से न कहना। तब उसके
सीख्यों ने उसे यह कहके पुछा तो अधापक कीस लीये कहते
११ हैं की पहीले इलीयास का आना अवस है?। तब यसु ने
उतर देके उनहें कहा की इलीयास पहीले आवेगा ठीक और
१२ समसत बसतुन को सुधारेगा। परंतु मैं तुमहें कहता हुं की
इलीयास आचुका है और उनहों ने उसे नहीं जाना परंतु जो
चाहते थे सो उनहों ने उस से कीया इसी रीत से मनुष्य का
१३ पुतर भी उन से दुख पावेगा। तब सीख्यों ने समझा की उसने
यहीया सनान कारक के बीखय में उनसे कहा।
१४ और जब वे मंडली के पास आये एक मनुष्य उसके समीप
१५ आकर घुटना टेक के बोला। की हे परभु मेरे पुतर पर दया
कीजीये कयोंकी वुह बावला और बड़ा दुखी है कयोंकी वुह
१६ बारंबार आग में और पानी में गीर पड़ता है। और मैं उसे

आप के सीष्पों के पास लाया पनंतु वे उसे यंगा न कन सके।
१७ तव़ य़सु ने उतन देके कहा की हे अव़ीसवासी औन हठीली
पीढ़ी मैं कव़ लों तुमहाने संग नहूं? मैं कव़लों तुमहानी सहूं?
१८ उसे इधन मुझ पास लाओ। औन य़सु ने उस पीसाच को
दपट दीया तव़ वुह उस से नीकल गया औन वुह व़ालक उसी
१९ घड़ी यंगा हो गया। तव़ सीष्पों ने य़सु पास अलग आके कहा
२० की हम उसे दुन कय़ों न कन सके?। य़सु ने उनहें कहा की
तुमहाने अव़ीसवास के कानन कय़ोंकी मैं तुम से सत कहता
हूं की य़दी तुम एक नाइ अन व़ीसवास नष्पो तो इस पहाड़
को कहोगे की य़हां से टलके वहां जा औन वुह जाय़गा औन
२१ तुमहाने कानन कुछ भी अनहोना न होगा। तीस पन भी
इस भीत का नहीं नीकलता पनंतु केवल पनानथना औन व़नत
२२ से। औन जव़ वे जलील में थे य़सु ने उनहें कहा की मनुष्प
२३ का पुतन मनुष्पों के हाथों में सोंपा जाय़गा। औन वे उसे मान
डालेंगे औन वुह तीसने दीन फेन उठेगा तव़ वे अतय़ंत उदा-
२४ सीन हुए। औन जव़ वे कपननाहूम में आये कनगनाहकों
ने आके पतनस से कहा की तुमहाना गुनु कन नहीं देता?।
२५ उसने कहा की हां औन जव़ वुह घन में आया य़सु ने आगे
होके उसे कहा की हे समउन तु कय़ा समझता है? पीनथीवी
के नाजा कीन से सुलक अथवा कन लेते हैं अपनेही पुतनों से
२६ अथवा पनदेसीय़ों से?। पतनस ने कहा की पनदेसीय़ों से
२७ य़सु ने उसे कहा तो व़ालक नीनव़ंध हैं। तीस पन भी ऐसा न
हो की हम उसके आगे ठोकन होवें तु समुंदन को जा औन व़ंसी
डाल औन जो मछली पहीले आवे उसे ले औन उसका मुंह
ष्पोल के तु नोकड़ पावेगा उसे लेकन मेने औन अपने लीय़े
उनहें दे।

१८ अठानहवां पनव्र।

दीनताइ का औन अपने जन की नछा कनने का य़सु उपदेस कनता है १—१४ अपनाधीय़ों से कैसा व्रेवहान कीय़ा याहीय़े १५—१७ मील के पनानथना कनने का गुन १८—२० अपनाधीय़ों को छमा कनने का उपदेस २१—३५।

१ उसी समय़ में सीष्यों ने य़सु पास आके कहा की सनग के
२ नाज में कौन सव्र से व्रड़ा है ?। तव्र य़सु ने ऐक नंहें व्रालक
३ को अपने पास व्रुला के उसे उनके मघ में व्रैठाय़ा। औन कहा
की मैं तुमहें नीसयय़ कहता ऊं की य़दी तुम फीनाऐ न जाओ
औन नंहें व्रालक के समान न व्रनो तो तुम सनग के नाज में
४ पनवेस न कनोगे। इस कानन जो कोइ आप को इस नंहें
व्रालक के समान दीन कनेगा वही सनग के नाज में सव्र से व्रड़ा
५ है। औन जो कोइ ऐसे ऐक नंहें व्रालक को मेने नाम के लीय़े
६ गनहन कने मुझे गनहन कनता है। पनंतु जो कोइ इन
छोटों में से ऐक को जो मुझ पन व्रीसवास नष्पता है ठोकन
ष्पीलावे य़ह उसके कानन अती भला था की ऐक यकी का पाट
उसके गले में लटकाय़ा जाता औन वुह समुंदन के गहीने में
७ डुव्राय़ा जाता। ठोकनों के कानन जगत पन हाय़ है कय़ोंकी
ठोकन का आना अवस है पनंतु उस मनुष्य पन जीसके कानन
८ ठोकन लगता है हाय़ है। इस कानन य़दी तेना हाथ अथवा
तेना पांव तुझे ठोकन ष्पीलावे उनहें काट डाल औन अपने से
फेंक दे तेने लीय़े अती भला है की लंगड़ा अथवा टुंडा जीवन
में पनवेस कनना तेने दो हाथ अथवा दो पांव होवें औन तु
९ अनंत आग में डाला जाय़। औन य़दी तेनी आंष्प तुझे ठोकन
ष्पीलावे उसे नीकाल डाल औन अपने से फेंक दे की जीवन

में काना पनवेस कनना तेने लीये उस से भला है की दे। आंष्पें
१० नष्पतेहो तु ननक को आग में डाला जाय। यीकस नहे। की
इन छोटों में से ऐक की नीनदा न कने। कयोंकी मैं तुमहें कहता
ऊं की सनग में उनके दुत मेने सनगवासी पीता का मंह सदा
११ देष्पते हैं। कयोंकी मनुष्य का पुतन आया है की ष्पाये ऊये
१२ को वयावे। तुम कया समझते हे। यदी ऐक मनुष्य के सो भेड़
होवें औान उस में से ऐक भटक जाय कया वुह नीनानवे को
छोड़ के पहाड़ के। नहीं जाता औान उस भटकी ऊइ को नहीं
१३ ढुंढता?। औान यदी वुह उसे पा जाय मैं नीसयय तुमहें
कहता ऊं की वुह नीनानवे से जो भटक न गइ थीं उस ऐक
१४ से अधीक आनंद पावेगा। ऐसाही तुमहाने सनगीय पीता
की इछा नहीं है की इन छोटों में से ऐक का नास होवे।
१५ औान यदी तेना भाइ तेने वीनोाघ में पाप कने तो जा औान
आपुस के सुने में उसे उसका दोष्प कह यदी वुह तेनी सुने
१६ तुने अपने भाइ को पाया है। पनंतु यदी वुह न सुने तो ऐक
अथवा दो को अपने संग ले जीसतें दो अथवा तीन साष्पीयों के
१७ मुंह से हन ऐक वात ठहनाइ जाय। पनंतु यदी वुह उनकी
न माने तो मंडली से कह पनंतु यदी वुह मंडली को न माने
१८ तो वुह तेने लीये जैसे अनदेसी औान कनगनाहक होवे। मैं
तुमहें सत कहता ऊं की जो कुछ तुम पीनथीवी पन वांघोगे
सनग में वांघा जायगा औान जो कुछ पीनथीवी पन ष्पोलोगे
१९ सनग में ष्पोला जायगा। फेन मैं तुमहें कहता ऊं की यदी
तुम में से दो पीनथीवी पन मेल के कीसी वसतु के वाष्पय में
जो वे मांगे वुह मेने पीता से जो सनग में है उनके लीये कीया
२० जायगा। कयोंकी जहां दो अथवा तीन मेने नाम पन ऐकठे हैं
२१ वहां मैं उनके मघ में ऊं। तव पतनस ने उस पास आके कहा
की हे पनभु कै वेन मेना भाइ मेना अपनाघ कने औान मैं उसको
२२ छमा कनुं? कया सात वेन लों?। यसु ने उसे कहा की मैं

तुह्र से सात व्रेन लों नहीं कहता पनंतु सतन गुने सात व्रेन लों।
२३ इस कानन सनग का नाज कीसी नाजा से उपमा कीय़ा गय़ा
२४ है जीसने अपने सेवकों से लेप्पा लेने को ठाना था। श्रैान जव्
वुह लेप्पा लेने लगा प्रेक उस पास पऊंचाय़ा गय़ा जो उसके
२५ दस सहस्न तोड़े धानता था। श्रैान जैसा की देने को उस
पास कुछ न था उसके सामी ने अगय़ा की, की वुह श्रैान उसकी
पतनी श्रैान लड़के व्राले श्रैान सव् जो उसका था व्रेंया जाय़
२६ श्रैान भनदीय़ा जाय़। इस लीय़े वुह सेवक गीन के उसका
गोड़ ले पड़ा श्रैान कहा की हे पनभु मुह्र पन धीनज धनीय़े
२७ श्रैान मैं आप को सव् भन देउंगा। तव् उस सेवक के सामी का
दय़ा लगी श्रैान उसे छोड़ दीय़ा श्रैान उसका साना उधान छमा
२८ कीय़ा। पनंतु जय़ों वुह सेवक व्राहन गय़ा उसने अपने संगी
सेवकों में से प्रेक को पाय़ा जो उसकी सैा सुकी धानता था श्रैान
उसने उसको नटइ पकड़ के उसे कहा की जो तु धनाता है मुह्रे
२९ दे। तव् उसका संगी सेवक उसके गोड़ पन गीना श्रैान उस
की व्रीनती कनके व्रोला की मुह्र पन धीनज धन श्रैान मैं तुह्रे
३० सव् भन देउंगा। उसने न माना पनंतु जाके उसे व्रंधन में
३१ डाल दीय़ा जव् लों वुह उधान भन दे। श्रैान उसके संगी
सेवक व्रीते ऊप्रे को देप्प के अती दुप्पी ऊप्रे श्रैान आके सानी
३२ व्रातें के अपने सामी से कहा। तव् उसके सामी ने उसे वुलाके
कहा की हे दुसट सेवक मैं ने तुह्रे इस कानन सव् उधान छमा
३३ कीय़ा की तुने मेनी व्रीनती कीं। जैसी दय़ा मैं ने तुह्र पन की
वैसी अपने संगी सेवक पन तुह्रे कननी उचीत न थी ?।
३४ तव् उसके सामी ने नीसीय़ा के उसे पीड़ा दाय़कों को य़हां
३५ लों सैांपा की सव् जो वुह उसका धानता था भन दे। सो
मेना सनगीय़ पीता भी तुम से वैसाही कनेगा य़दी तम में
से हन प्रेक अपने अपने मन से अपने भाइय़ों का अपनाध
छमा न कने।

१९ उनीसवां पनब्र।

यसु नेगीयों को यंगा कनता है तयाग पतन का ब्रौान ब्रौवाह का उपदेस कनता है १—१२ ब्रालकों को गनहन कनके उनहें ब्रासीस देता है १३—१५ ब्रेक तनुन से ब्रनंत जीवन के ब्रौष्पय में ब्रानता कनता है १६—२२ घनमान के मुकत पाने की दुन-लभता २३—२६ संसानीक ब्रसतु के तयाग कनने का फल २७—३०।

१ ब्रौान ब्रैसा ह्रुब्रा की जब्र यसु ने ब्रे कथा समापत कीं वुह
जलील से यला गया ब्रौान ब्रनदन के उस पान यह्रुदीय: के
२ सीवानों में ब्राया। ब्रौान ब्रड़ी ब्रड़ी मंडली उसके पीछे पीछे
३ गई ब्रौान वहां उसने उनहें यगा कीया। फनीसी भी उसकी
पनीछा कनते उस पास ब्राके कहने लगे जोग है की मनुष्य हन
४ ब्रेक कानन से ब्रपनी पतनी को तयाग कने ?। उसने उतन
दीया ब्रौान उनहें कहा की तुमने नहीं पढ़ा है की जीसने
५ ब्रानंभ में उतपंन कीया उनहें नन ब्रौान नानी ब्रनाया। ब्रौान
कहा की इस कानन मनुष्य ब्रपनी माता पीता को छोड़ेगा ब्रौान
ब्रपनी पतनी से मीला नहेगा ब्रौान वे दोनो ब्रेक मांस होंगे ?।
६ इस लीये वे ब्रब्र से दो नहीं पनंतु ब्रेक हैं इस लीये जो की
७ इस्‌न ने जोड़ा है मनुष्य उसे ब्रलग न कने। उनहों ने उसे
कहा तो मुसा ने कीस लीये ब्रगया की, की तयाग पतन देके
८ उसे छोड़ देना ?। उसने उनहें कहा की मुसा ने तुमहाने मन
की कठोनता के कानन तुमहें ब्रपनी पतनीयों को तयागने दीया।
९ पनंतु ब्रानंभ से ब्रैसा न या। ब्रौान मैं तुमहें कहता ह्रुं की जो
कोइ ब्रैभीयान के कानन को छोड़ के ब्रपनी पतनी को तयागे
ब्रौान दुसनी से ब्रौवाह कने सो ब्रैभीयान कनता है ब्रौान जो

कोइ उस नय़कत से व्रीवाह कने सो व्रैभीयान कनता है।
१० उसके सीष्पों ने उसे कहा की य़दी पतनी के संग मनुष्प को य़ह
११ व्रेवहान है तो व्रीवाह कनना ठीक नहीं। पनंतु उसने उनह
कहा की सव्र इस व्रयन को गनहन नहीं कन सकते पनंतु केवल
१२ वे जीनहें दीय़ा गय़ा है। कय़ोंकी कीतने हीजड़े हैं जो माता
की कोष्प से ऐसे उतपंन ड्रुऐ श्रोन कीतने हीजड़े हैं जो
मनुष्पों से हीजड़े कीय़े गय़े श्रोन कीतने हीजड़े हैं जीनहों ने
सनग के नाज के लीय़े श्राप को हीजड़ा व्रनाय़ा है जो कोइ
१३ गनहन कन सकता है सो गनहन कने। तव्र उसके पास नंहें
व्रालक पड्रुंयाऐ गय़े जीसतें वह उन पन हाथ नष्प के पनानथना
१४ कने तव्र सीष्प उन पन हुंहलाय़े। पनंतु य़सु ने कहा की नंहें
व्रालकों को मेने पास श्राने देवो श्रोन उनहें मत नोको कय़ोंकी
१५ सनग का नाज ऐसों ही का है। श्रोन वुह हाथ उन पन नष्प
के वहां से यला गय़ा।
१६ श्रोन देष्पो की ऐक ने श्राके उसे कहा की हे उतम गुनु मैं कैानसा
१७ उतम कानज कनुं जीसतें श्रनंत जीवन पाउं?। उस ने उसे कहा
की तु मुहे कय़ों उतम कहता है? उतम तो कोइ नहीं पनंतु
केवल ऐक श्रनथात इसन पनंतु य़दी तुहे जीवन में पनवेस कनना
१८ ही है तो श्रगय़ाश्रों को पालन कन। उसने उसे कहा की कैानसी?
य़सु ने कहा की हतय़ा मत कन व्रैभीयान मत कन योनी मत
१९ कन हुठी साष्पी मत दे। श्रपनी माता पीता का सनमान कन
श्रोन श्रपने पनोसी से श्रपने समान पीनीत कन। उस तनुन
२० मनुष्प ने उसे कहा की लड़काइ से मैं ने इन सव्र व्रातों को माना
२१ है श्रव्र मुहे कय़ा याहीय़े?। य़सु ने उसे कहा की य़दी तु सीध
ड्रुश्रा याहे तो जा श्रोन जो कुछ तेना है व्रेय डाल श्रोन
कंगालों को दे श्रोन मेने पीछे यला श्रा श्रोन तु सनग में
२२ धन पावेगा। पनंतु जव्र उस तनुन मनुष्प ने य़ह व्रयन सुना
तो वुह उदासीन यला गय़ा कय़ोंकी उसकी व्रड़ी संपत थी।

२३ तव़ य़सु ने अपने सीप्पों से कहा की मैं तुमहें सत कहता
ऊं की घनमान मनुप्प कठीनता से सनग के नाज में पनवेस
२४ कनेगा। ग्रोन फेन मैं तुम से कहता ऊं की सुइ के छेद से
उंट का पैठना उस से सहज है की ग्रेक घनमान मनुप्प इसन के
२५ नाज में पनवेस कने। जव़ उसके सीप्पों ने सुना वे अतय़ंत
२६ ग्रासयनजीत होके व़ोले फेन कौन व़च सकता है?। पनंतु
य़सु ने देप्प के उनहें कहा की मनुप्पों से य़ह अन होना
२७ है पनंतु इसन से सव़ कुछ हो सकता है। तव़ पतनस ने
उतन देके उसे कहा की देप्पीय़े हम ने सव़ कुछ छोड़ा है
ग्रोन ग्राप के पीछे हो लीय़े इस कानन हमें कय़ा मीलेगा?।
२८ य़सु ने उनहें कहा की मैं तुमहें सत कहता ऊं की तुम जो
मेने पीछे ग्राय़े हो नय़े जनम में जव़ मनुप्प का पुतन अपने
ग्रेसनय़ के सींहासन पन व़ैठेगा तुम भी व़ानह सींहासन
पन व़ैठ के इसनाइल की व़ानह गोसटीय़ों का नय़ाय़ क-
२९ नोगे। ग्रोन जोस कीसी ने घन अथवा भाइ अथवा व़हीन
अथवा माता अथवा पीता अथवा पतनी अथवा लड़के व़ाले
अथवा भुम मेने नाम के लीय़े छोड़ा है सो सोगुना पावेगा ग्रोन
३० अनंत जीवन का अघीकानी होगा। पनंतु व़ऊत से पहीले
पीछले होंगे ग्रोन पीछले पहीले।

२० व़ीसवां पनव़।

य़सु व़नीहानों का दीनीसटांत देता है १—१६ अपने
मनने का ग्रोन जी उठने का भवीस कहना १७—१९
दे सीप्प की मां की इछा को टाल देना ग्रोन नहे ऊग्रे
सीप्पों की जलजलाहट को नोकना २०—२८ ग्रोन
दे अंघों को दीनीसट देना २९—३४।

१ कय़ोंकी सनग का नाज ग्रेक गनहसथ मनुप्प के समान है

जो भोर को नीकला की अपनी दाख्य की बारी में बनीहारों
२ को लगावे। और जब उस ने बनीहारों से दीन भर की सुकी
३ चुकाइ उसने उनहें अपने दाख्य की बारी में भेजा। और
पहर दीन के अटकल में वुह बाहर गया और औरों को हाट
४ में बेकाम खड़े देख्या। और उनहें कहा की तुम भी दाख्य
की बारी में जाओ और जो कुछ को ठीक है मैं तुमहें देउंगा
५ और वे चले गये। फेर उसने दो पहर और तीसरे पहर
६ के अटकल में बाहर जाके वैसाही कीया। और घंटा भर
दीन रहते हुए वुह बाहर गया और औरों को बेकाम खड़े
पाया और उनहें कहा की तुम यहां दीन भर कयों बेकाम
७ खड़े हो?। उनहों ने उसे कहा इस कारन की हमें कीसी ने
काम में न लगाया उसने उनहें कहा की तुम भी दाख्य की
८ बारी में जाओ और जो कुछ की ठीक है तुम पाओगे। और
जब सांझ हुइ दाख्य की बारी के सामी ने अपने भंडारी को
कहा की बनीहारों को बुला और पीछले से लेके पहीले लों
९ उनहें बनी दे। और जीतनों ने घंटा भर काम कीया था
१० उनहों ने आके एक एक सुकी पाइ। परंतु जब पहीले के
आये उनहों ने समझा की हम अधीक पावेंगे परंतु उनहों में से
११ भी एक एक हर एक ने सुकी पाइ। और पाके वे घर के
१२ उतम सामी के बीरोध में कुड़कुड़ा के बोले। की इन पीछलों
ने एकी घंटा काम कीया और आप ने उनहें हमारे तुल कीया
१३ जीनहों ने दीन का भार और घाम सहा। तब उसने उन में
से एक को उतर देके कहा की हे मीतर मैं तुझ से अनीती
नहीं करता कया तुने मुझ से एक सुकी पर नहीं ठहराया?।
१४ अपनी ले और चला जा कयोंकी इस पीछले को मैं तेरे ही
१५ समान देउंगा। उचीत नहीं की मैं अपने ही में से जो चाहूं
सो करूं? तेरी आंख्य इस लीये बुरी है की मैं भला हूं?।
१६ ऐसा ही पीछले अगले होंगे और अगले पीछले कयोंकी बहुतेरे

१७ बुलाये गये पनंतु थोड़े युने ऊये। श्रीन यसोसलीम को यढ़
जाते ऊये यसु बानह सीष्यों को मानग में अलग लेगया श्रीन
१८ उनहें कहा। की देष्पो हम यनोसलीम को यढ़ जाते हैं श्रीन
मनुष्य का पुतन पनधान याजकों श्रीन अधापकों को सोंपा
१९ जायगा श्रीन वे उस पन मान डालने की अगया कनेंगे। श्रीन
उसे अनदेसीयों को सोंपेंगे की ठठों में उड़ावें श्रीन कोड़े
मानें श्रीन कुनुस पन ष्वींयें श्रीन वुह तीसने दीन फेन जी
२० उठेगा। तब जबदी के बेटों की माता अपने बेटों के संग
उस पास आई श्रीन पननाम कनके उस से एक बात याही।
२१ तब उसने उसे कहा की तु कया याहती है? उसने उसे कहा
की यह कीजीये की मेने ये दो बेटे एक आप की दहीनी
२२ दुसना आप की बाई आप के नाज में बैठे। पनंतु यसु ने
उतन देके कहा की तुम नहीं जानते की कया मांगते हो कया
उस कटोने से जीस से मैं पीने पन ऊं पी सकते हो? श्रीन उस
सनान से जीस से मैं सनान पाता ऊं सनान पासकते हो? वे
२३ उसे बोले की हम सकते हैं। उस ने उनहें कहा की तुम
नीसयय मेने कटोने से पीश्रोगे श्रीन उस सनान से जीस से मैं
सनान पाता ऊं सनान पाश्रोगे पनंतु मेनी दहीनी श्रीन बाईं
श्रीन बैठना मेने देने में नहीं है पनंतु जीनके कानन मेने पीता
२४ ने ठहनाया है। श्रीन जब उन दसों ने सुना वे उन दो भाइयों
२५ पन जल उठे। पनंतु यसु ने उनहें बुला के कहा की तुम
जानते हो की अनदेसीयों के अधक्ष उन पन नाज कनते हैं
२६ श्रीन जो महान हैं सो उन पन अगया कनते हैं। पनंतु तुम
में ऐसा न होगा पन जो कोइ तुम में महान ऊआ याहे सो
२७ तुमहाना सेवक होवे। श्रीन जो कोइ तुम में स्नेसठ ऊआ
२८ याहे सो तुमहाना सेवक होवे। जैसा मनुष्य का पुतन भी
सेवा कनवाने नहीं आया पनंतु सेवा कनने श्रीन बऊतेनों के
लीये अपने पनान को मोक्ष में देने को।

२९ ग्रैान जव्र वे ग्रनीक्ष से जाने लगे ग्रेक व्रड़ी मंडली उसके
३० पीछे हो ली। ग्रैान देप्पो की दो ग्रंधे जो मानग की ग्रोन
व्रैठे थे ग्रह सन के की ग्रसु जाता है यीला के व्रोले की हे पनभु
३१ दाउद के व्रेटे हम पन दग्रा कनोग्रे। ग्रैान मंडली ने उनहें घुनक
दीग्रा जीसतें वे युप नहें पनंतु ग्रह कहके वे ग्रघीक यीलाके
३२ व्रोले की हे पनभु दाउद के व्रेटे हम पन दग्रा कनोग्रे। तव्र
ग्रसु प्पडा ऊग्रा ग्रैान उनहें व्रुलाके कहा की तुम कग्रा याहते
३३ हो की मैं तुम्हाने लीग्रे कनुं। उनहों ने उसे कहा की हे
३४ पनभु की हमानी ग्रांप्पें प्पुल जाग्रें। तव्र ग्रसु ने दग्राल होके
उनकी ग्रांप्पों को छुग्रा ग्रैान तुनंत उनकी ग्रांप्पों ने दीनीसट
पाइ ग्रैान वे उसके पीछे हो लीग्रे।

२१ इकीसवां पनव्र।

गदही के व्रछेने पन यढ के ग्रसु का ग्रनोसलीम में जाना १—११ मंदीन में से व्रैपानीग्रों को दुन कनना ग्रघे लंगड़े को यंगा कनना ग्रैान ग्राजकों को उतन देना १२—१६ गुलन पेड़ को सुप्पा देना ग्रैान व्रीसवास का ग्रैान पनानथना का पनाकनम १७—२२ व्रैनीग्रों का मुंह व्रद कनना २३—२७ दो व्रेटों के दीनीसटांत से पनधानों की दुसटता दीप्पानी २८—३२ ग्रैान दाप्प की व्रानी के दीनीसटांत से वही व्रताना ३३—४६।

१ ग्रैान जव्र वे ग्रनोसलीम के पास पऊंये ग्रैान व्रैतफ्रजा को
जलपाइ के पहाड़ लें ग्राग्रे तव्र ग्रसु ने ग्रह कहके दो सीप्पों
२ को भेजा। की ग्रपने सनमुप्प के गांव में जाग्रो ग्रैान ग्रेक
व्रंघी ऊइ गदही को ग्रैान उसके संग ग्रेक व्रछेने को तुनंत
३ पाग्रोगे प्पोल के मेने पास लाग्रो। ग्रैान ग्रदो कोइ तनह

कुछ कहे ते। कहीयो की परभु के। उनका आवसक है ग्रोन
४ वुह तुरंत उनहें भेजेगा। ग्रह सब कुछ ऊग्रा की जे। व्रयन
५ भवीसदव्रकता ने कहा था संपरन हे।वे। की सीऊन की पुतनी
से कहे। की देष्प तेना नाजा गदहो पन हां लादु के व्रछेने पन
६ यढ़के कोमलता से तेने पास ग्राता है। तव सीष्पों ने जाके
७ ग्रसु की ग्रगया के ग्रनमान कीग्रा। ग्रोन उस गदहो को
व्रछेने समेत ले ग्राये ग्रोन उन पन ग्रपना व्रसतन नष्प के
८ उन पन यढ़ाया। ग्रोन ग्रेक ग्रती व्रड़ी मंडली ने ग्रपने
व्रसतनों को मानग में व्रीछाया ग्रोनो ने पेड़ों की डालीयां
९ काटीं ग्रोन मानग में व्रीथनाई। ग्रोन मंडली जे। उसके ग्रागे
पीछे जाती थीं पुकान के कहने लगीं की दाउद के व्रेटे के।
होसाना घंन वुह जे। परमु के नाम से ग्राता है होसाना ग्रतयंत
१० उंये पन। ग्रोन जव वुह ग्रनोसलीम में पऊंया समसत नगन
११ यंयल होके कहने लगें की ग्रह कैान है। तव मंडली ने
कहा की ग्रह जलील के नासनः का भवीसदव्रकता ग्रस है।
१२ ग्रोन ग्रसु इसन के मंदीन में गया ग्रोन उन सभों को, जो
मंदीन में व्रेंयते कीनते थे व्राहन नीकाल दीग्रा ग्रोन ष्पनदीग्रों
की यैाकीग्रों के। ग्रोन कपोत के व्रेपानीग्रों के व्रैठकों को उलट
१३ दीग्रा। ग्रोन उनहें कहा की ग्रह लीष्पा है की मेना घन
पनाथना का घन कहावेगा पनंतु तुम ने उसे योनों की मांद
१४ व्रनाई। ग्रोन मंदीन में ग्रंधे ग्रोन लंगड़े उस पास ग्राये
१५ ग्रोन उसने उनहें यंगा कीग्रा। ग्रोन जव परधान याजकों
ग्रोन ग्रधापकों ने उन ग्रासयनज कानजों को, जो उसने कीये
ग्रोन लड़कों के। मंदीन में पुकानते ग्रोन दाउद के व्रेटे को
१६ होसाना कहते देष्पा वे ग्रती नीसीग्रा गये। ग्रोन उसे कहा
की तु सुनता है की ग्रे कया कहते हैं? ग्रसु ने उनहें कहा की हां,
कया तुम ने कभी नहीं पढ़ा है की व्रालकों ग्रोन दुध पीग्रों के
१७ मुंह से तुने सतुत पुनी की?। तव उसने उनहें छोड़ा ग्रोन

१८ नगन से व़ाहन व़ैतीन: में गया और वहां टीक नहा। और
१९ व़ीहान को जव़ वुह नगन में जाने लगा उसे भुप्प लगी। और
जव़ उसने गुलन के एक पेड़ को मानग में देप्पा वुह उस पास
आया़ पनतु पतों को छोड़ उस पन कुछ न पाया़ और उसे
कहा की तुझ पन अव़ से कधी फल न लगे ततकाल गुलन का
२० पेड़ सुप्प गया़। और जव़ सीप्पों ने देप्पा वे आसयनजीत
२१ हो के व़ोले की गुलन का पेड़ कैसा सीघन सुनझा गया़। य़सु
ने उतन देके उन्हें कहा की मैं तुमहें सत कहता हूं की य़दी
तुमहें व़सवास होवे और सदेह न कनो तो तुम केवल य़ही
न कनोगे जो गुलन पेड़ से कीया़ गया़ है पनतु य़दी तुम इस
पहाड़ को भी कहोगे की उठ और समुंदन में गीन पड़ तो
२२ वैसा ही होगा। और सव़ कुछ जो तुम पनानथना में पनतीत
कनके मांगोगे सो पाओगे।

२३ और जव़ वुह मंदीन में आके उपदेस कनता था तव़ पनधान
याजक और लोगों के पनाचीन उस पास आके व़ाले की तू
कीस पनाकनम से य़ह कानज कनता है? और कीसने तुझे
२४ य़ह पनाकनम दीया़ है?। य़सु ने उनहें उतन देके कहा की
मैं भी तुम से एक व़ात पुछता हूं जो तुम मुझे व़तलाओगे तो
मैं भी तुमहें व़तलाउंगा की मैं कीस पनाकनम से य़ह कानज
२५ कनता हूं। य़हीया़ का सनान कहां से था? सनग से अथवा
मनुप्पों से तव़ वे आपस में व़ीचान कनके कहने लगे की जो
हम कहें की सनग से तो वुह हमें कहेगा फेन तुम कीस लीये़
२६ उस पन व़ीसवास न लाये?। पनंतु जो हम कहें की मनुप्पों से
तो हम लोगों से डनते हैं कयोंकी सव़ य़हीया़ को भवीसद-
२७ व़कता जानते हैं। और उनहोंने य़सु को उतन देके कहा
की हम नहीं कह सकते तव़ उसने उनहें कहा की मैं भी तुमहें
नहीं व़तलाता की मैं कीस पनाकनम से य़ह कानज कनता हूं।
२८ पनंतु तुमहें कया़ व़ुझ पड़ता है एक मनुप्प के दो व़ेटे थे उसने

पहीले के पास आके कहा की व्रेटे जा आज मेने दाप्प की
२९ व्रानी में काम कन। उसने उतन देके कहा की मेनी इछा नहीं
३० पनंतु पीछे वुह पछताके गया। और उसने दुसने के पास
आके वैसाही कहा और उसने उतन देके कहा की हे पनभु मैं
३१ जाता ऊं पन न गया। उन दोनें में कीस ने पीता की इछा
मानी? उनहें ने उसे कहा की पहीले ने यसु ने उनहें कहा
की मैं तुमहें सत कहता ऊं की कनगनाह और व्रेसवा तुम
३२ से आगे इसन के नाज में जाते हैं। कयोंकी यहीया घनम
के मानग से तुमहाने पास आया और तुन ने उसकी पनतीत न
की पनंतु कनगहाहकें और व्रेसवाओं ने उसकी पनतीत की
पन तुम देप्प के पीछे भी न पछताये की उसकी पनतीत कनते।
३३ दुसना दीनीसटांत सुनो की कीसी गीनहसथ ने दाप्प की व्रानी
लगाइ और उसके यानों ओन व्राड़ा व्रांघा और उस में कोलहु
गाड़ा और ऐक गढ़ व्रनाया और उसे कीसानें का सैंप के
३४ पनदेस के यला गया। और जव्र फरलने का समय पऊंया
उसने अपने सेवकें का कीसानें पास भेजा की वे उसके फरल
३५ लेवें। पन कीसानें ने उसके सेवकें का पकड़ के ऐक का माना
३६ दुसने का व्रघन कीया और तीसने का पथनाया। फेन उसने
और सेवकें का, जा पहीले से अघीक थे, भेजा और उनहें ने
३७ उनसे भी वैसाही कीया। पनंतु सव्र के पीछ उसने यह कहके
अपने व्रेटे का उन पास भेजा की वे मेने व्रेटे का आदन कनेंगे।
३८ पनंतु कीसानें ने व्रेटे के देप्पके आपुस में व्रोले की यह अघी-
कानी है आओ इसे मान डालें और इस का अघीकान छीन
३९ लेवें। तव्र उनहें ने उसे पकड़ के दाप्प की व्रानी से व्राहन
४० नीकाल के मान डाला। अव्र यदी दाप्प की व्रानी का सामी
४१ आवे ता उन कीसानें का कया कनेगा?। उनहें ने उसे
कहा की उन दुसटें का व्रुनी नीत से नास कनेगा और दाप्प
की व्रानी और कीसानें का सैंपेगा जो फरलें का उनकी नीतुन

४२ में पहुंयावेंगे। य़सु ने उनहें कहा की तुम ने लीष्ये हुऐ में नहीं
पढ़ा की जीस पथन को थवइ़ेयों ने फेन दीया सोही कोने का
सीना हुआ य़ह पनमेसन का कानज है ग्रान हमानी दीनीसट
४३ में ग्रासयनजीत। इस लीय़े मैं तुमहें कहता हुं की इसन
का नाज तुमसे लीय़ा जाय़गा ग्रनु ग्रान देसी को दीय़ा जाय़गा
४४ जो उसके फल को लावेंगे। ग्रान जो कोइ इस पथन पन
गीनेगा टुट फुट जाय़गा पनंतु जीस पन वह गीनेगा उसे पीस
४५ डालेगा। ग्रान जव्र पनधान य़ाजकों ग्रान फनीसीय़ों ने
उसके दीनीसटांत को सुना था वे व्रुझ गय़े की उसने उनके
४६ व्रीष्यय़ में कहा था। पनंतु जव्र उनहों ने याहा की उस पन
हाथ डालें वे मंडली से डने कय़ोंकी वे उसे ग्रवीसदव्रकता
जानते थे।

२२ व्राइसवां पनव्र।

व्रीवाह की व्रीग्रानी ग्रान व्रीवाह व्रसतन का दीनीस-
टांत १—१४ फनीसीय़ों को ग्रान होनुदीसीय़ों
को कन व्रीष्यय़ में पनभु उतन देता है १५—२२
सादुकीय़ों को जी उठने का उतन देता है २३—३३
स्नेसठ ग्रगय़ा का उतन व्रैवसथा के गय़ाता को देता
है ३४—४० उनसे ग्रपने व्रीष्यय़ में पनसन कनता
है ४१—४६।

१ ग्रान य़सु ने उतन दीय़ा ग्रान दीनीसटांतों में उनहें फेन
२ कहके व्रोला। की सनग का नाज कीस नाजा जन के तुल है
३ जीसने ग्रपने व्रेटे के व्रीवाह के लीय़े भोज कीय़ा। ग्रान
ग्रपने सेवकों का भेजा की नेउतहनीय़ों को व्रीवाह के भोज में
४ व्रुलावें पनंतु उनहों ने ग्राने न याहा। फेन उस ने ग्रान
सेवकों को य़ह कहके भेजा की नेउतहनीय़ों को कहो की

देष्पो मैं ने अपना भोजन सीध कीया है मेने वैल और मोटे
पसु माने गये और समसत वसतु सध हैं वीवाह के भोज में
५ आओ। परंतु वे सुनत न करके चले गये ऐक अपने ष्पेत को
६ और दुसना अपने वैपान को। और उवने ऊओं ने उसके
सेवकों को पकड़ के दुनदसा की और उनहें वधन कीया।
७ परंतु जव नाजा ने सुना उसने क्रोध करके अपने सेनाओं
को भेजा और उन हतयानों का नास कीया और उनके नगन
८ को फूंक दीया। तव उसने अपने सेवकों से कहा की वीवाह
का भोज सीध है परंतु जो हें नेउता दीया गया वे अजोग
९ थे। इस लीये नाज मनगों में जाओ और जीतने तुमहें
१० मीलें वीवाह के भोज में नेउता देओ। तव वे सेवक नीकल
के मानगों में गये और कया वुने कया भने जीतनों को पाया
११ ऐकठे कीया और भोज में नेउतहना भन गये। परंतु नाजा
नेउतहनायों को भीतन देष्पने अकं कया देष्पता है की ऐक
१२ मनुष्प वहां वीवाह के वसतन वीना था। और उसने उसे कहा की
हे मीतन तु कीस नीत से वीवाह क वसतन वीना यहां आया
१३ परंतु उसका मुंह वंद होगया। तव नाजा ने अपने सेवकों
से कहा की उसके हाथ पांव वांध के उसे ले जाओ और
वाहन अंधयाने में डाल देओ जहां नोना और दांत पीसना
१४ होगा। कयोंकी व ऊतेने वुलाये गये परंतु थोड़े चुने ऊऐ हैं।
१५ तव परनसीयों ने जाके परामनस कीया की उसे कीस नीत से
१६ उस की वातों में परसावें। और उनहों ने अपने सीष्पों को हीनु-
दासीयों के संग उस पास यह कहला भेजा की हे गुनु हम
जानते हैं की आप सत हैं और सचाइ से ईसन का मानग
सीष्पाते हैं और कीसी का ष्पटका नहीं नष्पते कयोंकी आप
१७ कीसी की मनुसत पन दीसट नहीं कनते। इस लीये हमें
कहीये आप कया समझते हैं? कैसन को कन देना जोग है
१८ अथवा नहीं?। तव यसु ने उनकी दुसटता वुझ के कहा की

१८ अने कपटीयो तुम कयों मेनी पनीछा कनते हो। मुहे कन
२० का नोकड़ दीप्पाओ तब वे उस पास एक सुकी लाये। ओान
उसने उनहें कहा की यह मुनत ओान लीप्पीत कीसका ?।
२१ उनहों ने उसे कहा की कैसन का तब उसने उनहें कहा इस
लीये जो कैसन की हैं कैसन को देओ ओान जो इसन की हैं
२२ इसन को। तब वे सुन के आसयनजीत ऊऐ ओान उसे छोड़
२३ के यले गये। उसी दीन सादुकी जो कहते हैं की फरेन उठना
२४ नहीं है उस पास आये ओान उसे यह कहके पुछा। की हे गुनु
मुसा ने कहा की जब कोइ पनुप्प नीनबंस मने तब उसका भाइ
उसकी पतनी से बीवाह कने ओान अपने भाइ के नीमीत
२५ बंस यलावे। अब हमाने संग सात भाइ थे ओान पहीला
बीवाह कनके मन गया ओान नीनबंस था अपनी पतनी को
२६ अपने भाइ के लीये छोड़ गया। इसी नीत से दुसना भी ओान
२७ तीसना सातवें लों। ओान सब से पीछे वुह इसतीनी भी मन
२८ गइ। इस कानन फरेन उठने में उन सातों में से वुह कीस की
२९ पतनी होगी कयोंकी उन सभों ने उसे नप्पा था ?। यसु ने
उतन देके उनहें कहा की लीप्पे ऊऐ से ओान इसन के पना-
३० कनम से अगयान होके युक कनते हो। कयोंकी फरेन उठने
में वे बीवाह नहीं कनते न बीवाह में दीये जाते हैं पनंतु सनग
३१ में इसन के दुतों की नाइं हैं। पनंतु मीनतु से फरेन उठने के
बीप्पय में कया तुम ने नहीं पढ़ा जो इसन ने तुमहें कहा ?।
३२ की मैं इबनाहीम का इसन ओान इसहाक का इसन ओान
याकुब का इसन ऊं ? इसन मनीतकों का इसन नहीं पनंतु
३३ जीवतों का। ओान जब मंडली ने सुना वे उसके उपदेस से
३४ आसयनजीत ऊइं। पनंतु जब फनीसीयों ने सुना की उसने
३५ सादुकीयों का मुंह बंद कीया वे बटुन गये। ओान उन में से
३६ एक बेवसथा के गयाता ने उसकी पनीछा कनके पुछा। की हे
३७ गुनु बेवसथा में बड़ी अगया कैान सी है ?। यसु ने उसे कहा

की पनमेसन को जो तेना इसन है अपने साने अंतःकनन से
औान अपने साने पनान से औान अपने साने मन से पीआान
१८।३९ कन। पहीली औान वड़ी अगया यही है। औान दुसनी
उसी की नाइं है की तु अपने पनोसी को अपने तुल पीआान
४० कन। समसत वैवसथा औान भवीसदवकता इनहीं दोनों
४१ अगयाओं में से हैं। जव लों फनीसी एकठे थे यसु ने उनहें
४२ यह कहके पुछा। की मसीह को कया समझते हो वुह कीस
४३ का वेटा है? वे उसे वोले की दाउद का। उसने उनहें कहा
तो दाउद आतमा से कयों यह कह के उसे पनभु कहता है।
४४ की पनमेसन ने मेने पनभु को कहा की तु मेनी दहीनी औान
वैठ जव लों मैं तेने सतनुन को तेने पांव की पीढ़ी कनुं?।
४५ यदी दाउद उसे पनभु कहे तो वुह कीस नीत से उसका पुतन
४६ है?। पन कोइ मनुष्य उतन में उसे एक वात न कह सका
औान उसी दीन से कीसी का हीयाव न ऊआ की उसे फेन पुछे।

२३ तेइसवां पनव।

यसु वयन पालन कनने का उपदेस कनता है
१—१२ उनकी अंधापन औान कपट औान वुनाइ
के लीये अनेक संताप उयानन कनता है १३—३३
यनोसलीम के वीनास होने की औान यहुदीयों की
वीपत की भवीस वानी ३४—३९

१ तव यसु मंडली को औान अपने सीष्यों को कह के वोला।
२ की अधापक औान फनीसी मुसा के आसन पन वैठते हैं।
३ इस लीये सव कुछ जो वे तुमहें मांनने को कहें उसे मानो
औान पालन कनो पनंतु उनके समान मत कनो कयोंकी वे कहते
४ हैं औान नहीं कनते। इस लीये की वे भानी वोझे वांधते हैं
जीनका उठाना कठीन है औान मनुष्यों के कंधे पन नखते हैं

५ पनंतु आप उनहें प्रेक अंगुली से हीलाने नहीं याहते। पन वे
अपने साने कामजों को मनुप्पन को दीप्पाने के लीये कनते
हैं वे अपने जंतनों को योड़ा कनते हैं ओान अपने व्रसतनों के
६ प्पंट को व्रढ़ाते हैं। ओान जेवनान में पनचान सथान ओान मंडली
७ में सनेसठ आसन। ओान हाट में नमसकान की ओान य्रह की
८ मनुप्प उनहें गुनु गुनु कहें इक्का नप्पते हैं। पनंतु तुम गुनु
मत कहाओ कय्रोंकी नुमहाना प्रेक गुनु मसीह है ओान तुम
९ सव्र भाइ हो। ओान पीनथीवी पन कीसी को पीता मत कहो
१० कय्रोंकी तुमहाना पीता प्रेक है जो सनग में है। ओान तुम
११ गुनु मंत कहाओ कय्रोंकी तुमहाना गुनु प्रेक मसीह है। पनंतु
१२ वुह जो तुम में सव्र से व्रड़ा है तुमहाना सेवक होगा। ओान
जो कोइ अपने को व्रढ़ावेगा घटाय़ा जाय़गा ओान जो कोइ
आप को दीन कनेगा व्रढ़ाय़ा जाय़गा।
१३ पनंतु अने कपटी अघापको ओान फनीसीय़ो तुम पन हाय़
है इस लीये की तुम मनुप्पों पन सनग का नाज व्रंद कनते हो
कय्रोंकी तुम आप भीतन नहीं जाते ओान जो भीतन जाने
१४ याहते हैं उनहें भीतन जाने नहीं देते हो। अने कपटी
अघापको ओान फनीसीय़ो तुम पन हाय़ है कय्रोंकी तुम नांडों
के घनों को नोंगलते हो ओान छल से व्रढ़ा व्रढ़ा के पनानथना
१५ कनते हो इस लीये तुमहें अती व्रड़ा दंड होगा। अने कपटी
अघापको ओान फनीसीय़ो तुम पन हाय़ है कय्रोंकी तुम प्रेक
को अपने मत में लाने को समुंदन ओान पीनथीवी की यानों
ओान फीनते हो ओान जव्र वुह आयुका तुम उसे अपने से
१६ दुना ननक का पुतन व्रनाते हो। अने अंधे अगुआ तुम पन
हाय़ है जो कहते हो की जो कोइ मंदीन की कीनीय़ा प्पाय़
सो कुछ नहीं पनंतु जो कोइ मंदीन के सोने की कीनीय़ा प्पाय़
१७ सो उघाननीक है। अने मुनप्प ओान अंधे कोन अती व्रड़ा है
१८ सोना अथवा मंदीन जो सोने को पवीतन कनता है?। ओान

जो कोइ व्रेदी की कीनय़ा प्याय़ सो कुछ नहीं पनंतु जो कोइ
उस दान की जो उस पन घना है कीनीय़ा प्याय़ सो उघाननीक
१९ है। अने मुनष्य अैान अंघे कैान व्रड़ा है दान अथवा व्रेदी जो
२० दान को पवीतन कनती है ?। इस लोय़े जो कोइ व्रेदी की
कीनीय़ा प्याय़ सो उसकी अैान उस पन की सव्र की कीनीय़ा
२१ प्याता है। अैान जो कोइ मंदीन की कीनीय़ा प्याय़ सो उसकी
२२ अैान जो उस में नहता है कीनीय़ा प्याता है। अैान वुह जो
सनग की कीय़ा प्याय़ इसन के सींहासन की अैान उसकी जो
२३ उस पन व्रैठता है कीनीय़ा प्याता है। अने कपटी अघापको
अैान फनीसीय़ो तुम पन हाय़ है कय़ोंकी तुम पुदीना अैान
सोआ अैान जीना का दसवां भाग देते हो अैान व्रैवसथा का
अती व्रड़ा नय़ाय़ अैान दय़ा अैान व्रीसवास छोड़ दीय़े हो
२४ याहता था की तुम इनहें कनते अैान उनहें न छोड़ते। अने
अंघे अगुआ जो मछड़ को छान लेते हो अैान उंट को नींगलते
२५ हो। अने कपटी अघापको अैान फनीसीय़ो तुम पन हाय़ है
कय़ोंकी तुम कटोने अैान थालो के व्राहन व्राहन मांजते हो
पनंतु भीतन भीतन व्रनव्रसती अैान कुव्रनाव से भने ऊप्रे हैं।
२६ अने अंघे फनीसीय़ो पहीले कटोने अैान थालो के भीतन
भीतन मांजो की उनके व्राहन व्राहन भी नीनमल होवे।
२७ अने कपटी अघापको अैान फनीसीय़ो तुम पन हाय़ है कय़ोंकी
तुम उजले समाघीन के समान हो जो व्राहन व्राहन नीसयय़
सुंदन दीप्याइ देते हैं पनंतु भीतन में मीनतकों के हाड़ से अैान
२८ समसत अपवीतनता से भने ऊप्रे हैं। प्रेसाही तुम भी व्राहन
व्राहन मनुप्यों को घनमी दीप्याइ देते हो पनंतु भीतन से
२९ कपटाइ अैान पाप से भने ऊप्रे हो। अने कपटी अघापको
अैान फनीसीय़ो तुम पन हाय़ है कय़ोंकी तुम भवीसदव्रकतों
के समाघीन को व्रनाते हो अैान घनमीय़ों के समाघीन को
३० सींगान कनते हो। अैान कहते हो की य़दी हम अपने पीतनों

के दीनों में होते तो भवीसदवकतों के लोऊ में उनके साथी न
३१ होते। इस कानन तुम अपने अपने साप्पी हो की तुम भवीसद-
३२ वकतों के वधीकों के लड़के हो। अछा तुम अपने पीतनों के
३३ नपुत्रों को पुना कनो। अने सांपो अने नाग वंसीयो तुम ननक
३४ के दंड से कयोंकन भागेगे?। इस कानन देप्पो मैं भवीसद-
वकतों अेान वुधमानों अेान अधापकों को तुमहाने पास भेजता
ऊं अेान उन में से तुम घात कनोगे अेान कुनुस पन मानोगे
अेान उन में से मंडलीयों में पीटोगे अेान नगन नगन ताड़ना
३५ कनोगे। जीसतें घनमीयों का लोऊ जो पीनथीवी पन वहाया
गया है घनमी हावील के लोऊ से लेके वानाप्पीयास के वेटे
जप्पनीयास के लोऊ लों जीसे तुम ने मंदीन अेान वेदी के मघ
३६ में घात कीया तुम सभों पन आवे। मैं तुम से सत कहता
३७ ऊं की ये समसत वषतें इस पीढ़ी पन आवेंगी। हे यनोसलीम
यनोसलीम जो भवीसदवकतों को घात कनती है अेान जो
तेने पास भेजे गये हैं उनहें पथनाती है मैं ने कीतने वेन याहा
की तेने वालकों को ऐसे ऐकठे कनुं जैसे कुकुटी अपने यींगनों
३८ को पंप्पों के तले वटोनती है पनंतु तुम ने न याहा। देप्पो
३९ तुमहाने लीये तुमहाना घन उजाड़ छोड़ा जाता है। कयोंकी
मैं तुमहें कहता ऊं की तुम मुहे अव से फेन न देप्पोगे
जव लों यह न कहोगे की धंन वुह जो पनमेसन के नाम से
आता है।

२४ यौवीसवां पनव।

मंदीन के नास की भवीस वानी १—२ उसके आगे
के यीनह अेान यीतावनी ३—२८ अेान पीछे का
फेन फेन अेान वीपत अेान जगत की समापत
२९—३१ गुलन पेड़ के दीनीसटांत से नीसयय

होना बतावा है ३२—३५ उस दीन औान घड़ी
को कोइ नहीं जानता ३६—४१ सब को यैाकस
होने की योतावनी ४२—५१।

१ औान यसु मंदीन से नीकल कन बाहन गया औान उसके सीष्य
२ मंदीन की बनावट दीप्पाने को उस पास आये। औान यसु ने
उनहें कहा की तुम यह सब नहीं देप्पते हो? मैं तुमहें
सत कहत ऊं की यहां एक पथन दुसने पन न छुटेगा जो
३ गीनाया न जायगा। औान जब वुह जलपाइ के पहाड़ पन
बैठा उसके सीष्य अलग उस पास आके बोले की हमें कहीये की
यह सब कब होंगी? औान आप के आवने का औान जगत के
४ अंत का कया योनह है?। तब यसु ने उतन दीया औान उनहें
५ कहा यैाकस नहो की कोइ मनुष्य तुमहें न भनमावे। कयोंकी
मेने नाम से बऊतेने यह कहते ऊऐ आवेंगे की मैं मसीह ऊं
६ औान बऊतों को भनमावेंगे। औान तुम संगनामों को औान
संगनामों की यनया सुनोगे यैाकस होओ औान मत घबनाइयो
कयोंकी इन सभों का होना आवेस है पनंतु अभी अंत नहीं
७ है। कयोंकी लोग लोग पन औान नाज नाज पन यढ़ेंगे औान
आकाल औान मनी पड़ेंगी औान अनेक सथान में भुइडोल होंगे।
८।९ यह सब दुष्पों का आनंभ है। तब वे तुमहें कसट पाने
के लीये सैापेंगे औान तुमहें घात कनेंगे औान मेने नाम के
१० लीये समसत जातगन तुम से बैन कनेंगे। औान जब बऊतेने
ठोकन प्पायेंगे औान एक दुसने को पकड़वायेगा औान एक
११ दुसने का बैन कनेगा। औान बऊत से मीथया भवीसदबकता
१२ पनगट होंगे औान बऊतेनों को भनमावेंगे। औान पाप की
१३ अधीकाइ के कानन बऊतेनों का पनेम ठंडा हो जायगा। पनंतु
१४ जो अंत लों सहेगा सोइ मुकत पावेगा। औान समसत जातगनों
के साप्पी के लीये नाज का यह मंगल समायान समसत जगत
१५ में पनयाना जायगा औान तब अंत आवेगा। इसी लीये जब

तुम बीनास की चीनीत वसतु को, जीसके बीष्पय में दानीयाल
भवीसदबकता ने कहा है पवीतन सथान में प्पड़ा ऊआ देप्पो
१६ जो कोइ पढ़ता है सो समझे। तब जो यऊदीयः में सो पहाड़ों
१७ को भागें। जो कोठे पन है सो अपने घन से कुछ लेने को न
१८ उतने। औान जो प्पेत में है सो अपना बसतन लेने को न
१९ फीने। औान हाय उन पन जो उनहीं दीनों में गनभनी औान
२० दुध पीलातीयां होंगी। पनंतु पनानथना कनो की तुमहाना
२१ भागना जाड़े में अथवा बीसनाम में न होय। कयोंकी तब
महा कसट होगा जैसा की जगत के आनंभ से अबलों न ऊआ
२२ हां औान न कधी होगा। औान यदी वे दीन घटाये न जाते
तो कोइ पनानी मुकत न पाता पनंतु युने ऊओं के कानन वे
२३ दीन घटाये जायेंगे। तब यदी कोइ तुमहें कहे की देप्पो
२४ मसीह यहां अथवा वहां पनतीत मत कनीयो। कयोंकी झुठे
मसीह औान झुठे भवीसदबकता पनगट होंगे औान ऐसे बड़े
यीनह औान आसयनज दीप्पावेंगे की यदी होनहान होता तो
२५ वे युने ऊओं को भी भनमाते। देप्पो मैं आगे से तुमहें कह
२६ युका ऊं। इस कानन यदी वे तुमहें कहें की देप्पो वुह बन
में है तो बाहन मत जाइयो अथवा की देप्पो गुपत कोठनीयों
२७ में है पनतीत मत कनीयो। कयोंकी जीस नीत से बीजुली
पुनब से नीकलती है औान पछीम लों लौकती है वैसेही मनुप्प
२८ के पुतन का भी आना होगा। कयोंकी जहां कहीं लोथ है
तहां गीध एकठे होंगे।

२९ उन दीनों के कसट के पीछे तुनंत सुनज अंधीयाना हो जायगा
औान यंदनमा अपना उंजीयाला न देगा औान तानें सनग से
३० गीनेंगे औान सनगों की दीनढ़ता हील जायेंगी। औान तब
मनुप्प के पुतन का यीनह सनग में दीप्पाइ देगा औान उस
समय में पीनथीवी के समसत लोग बीलाप कनेंगे औान मनुप्प
के पुतन को पनाकनम के साथ औान बड़े बीभव से आकास

३८ के मेघें पन आते देष्पेंगे। औान वुह अपने दुतें को तुनही
के व्रड़े सव्रद के संग भेजेगा औान वे उसके चुने ऊओं को चानें
३२ पवन से सनग के ऐक प्पुंट से दुसने लें ऐकठा कनेंगे। अव्र
गुलन पेड़ से ऐक दीनीसटांत सीष्पो जव्र उसकी डाली कोमल
होती है औान पते नीकलते हैं तुम जानते हो की गनीसम
३३ समीप है। इसी नीत से जव्र तुम ग़ह सव्र व्रसतें देष्पो तो
३४ जानीग़ो की वुह समीप अनथात दुवानें पन। मैं तुमहें सत
कहता ऊं की ग़ह पीढ़ी व्रीत न जाग़गी जव्र लें ऐ सव्र व्रातें
३५ पुनी न होलें। सनग औान पीनथीवी व्रीलाग़ जाग़ेंगी पनंत
३६ मेने व्रचन न व्रीलाग़ जाएंगे। पनंतु उस दीन औान उस घड़ी
के मेने पीता को छोड़ सनग के दुत भी कोइ नहीं जानते।
३७ पन जीस नीत से नुह के दीनें में ऊआ मनुष्य के पुतन का आना
३८ भी ऐसाही होगा। कग़ेंकी जीस नीत से जलमग़ के दीनें
के आगे वे प्पाते पीते थे वीवाह कनते थे औान व्रीवाह में दीग़े
३९ जाते थे उस दीन लें की नुह ने जहाज़ में पनवेस कीग़ा। औान
न जाना जव्र लें जलमग़ आग़ा औान उन सभें को ले लीग़ा
४० तैसे मनुष्य के पुतन का भी आना होगा। तव्र प्पेत में दो होंगे
४१ ऐक पकड़ा जाग़गा औान दुसना छुट जाग़गा। दो चकी पीस-
तीग़ां होंगी ऐक पकड़ी जाग़गी औान दुसनी छुट जाग़गी।
४२ इस लीऐ जागते नहो कग़ेंकी तुम नहीं जानते की तुमहाना
४३ पनभु कीस घड़ी आवेगा। पनंतु ग़ह जानो की ग़दी घन का
सामी जानता की चोन कीस पहन में आवेगा तो वुह जागता
४४ नहता औान अपने घन में सेंघ लगने न देता। इस लीऐ तुम
भी लैस नहो कग़ेंकी मनुष्य का पुतन ऐसी घड़ी में आवेगा
४५ की तुमहें सुनत न होगी। फेन वुह व्रीसवासमग़ औान व्रुध-
मान सेवक कौान है जीसे उसका पनभु अपने घनाने पन पनधान
४६ कनेगा की समग़ में उनहें भोजन कनावे?। धंन वुह सेवक
४७ जीसे उसका पनभु आके ऐसाही कनते ऊऐ पावे। मैं तुमहें

सत कहता ऊं की वुह उसे अपने समसत घन पन पनघान
४८ कनेगा। पनंतु यदी वुह दुसट सेवक अपने मन में कहे की
४९ मेना पनभ्र आने में व्रालंव्र कनता है। और अपने संगी सेवकों
५० को मानने और मदपों के संग प्याने पीने लगे। उस सेवक का
सामी ऐसे दीन में आवेगा की वुह व्राट न जोहता हो और
५१ जीस घड़ी वुह नीसयीनत हो। और उसे काट डालेगा और
उस का भाग कपटीयों के संग देगा जहां नोना और दांत
पीसना होगा।

२५ पचीसवां पनव्र।

व्रुघमती और मुनप्प कनयों का दीनीसटांत
१—१३ तोड़ें का दीनीसटांत १४—३० नयाय के
दीन का व्रननन और उसका भयंकन समायान
३१—४६।

१ उस समय में सनग का नाज दस कंनया के तुल होगा जो
अपने अपने दीपक को लेकन दुलहा की भेंट को व्राहन नीकलीं।
२। ३ और उन में पांय यतुनी और पांय मुनप्प थीं। जो मुनप्प
थीं उनहें ने अपने अपने दीपक को उठा लीया और तेल अपने
४ संग न लीया। पनंतु यतुनीयों ने अपने पात्नों में दीपकों
५ के संग तेल लीया। और जव्र लों दुलहा ने व्रीलंव्र कीया वे
६ सव्र उंघ गईं और सो गईं। और आघी नात को घुम मयी
७ की देप्पो दुलहा आता है उसकी भेंट को नीकलो। तव्र उन
८ सव्र कुंआनीयों ने उठ कन अपने दीपकों को सवांना। और
मुनप्पों ने यतुनीयों से कहा की अपने तेल में से हमें देओ
९ कयोंकी हमाने दीपक व्रुझते हैं। पनंतु यतुनीयों ने उतन
देके कहा न होवे की हमाने और तुमहाने लीये व्रस न
हो इस लीये भला है की तुम व्रेयवैयों पास जाओ और

१० अपने लीये मोल लेओ। औन जव वे मोल लेने गइं दुलहा
आया औन जो सोच थीं से उसके संग वीवाह भोज में गइं
११ औन दुवान बंद ऊआ। पीछे वे कनया भी यह कहती ऊइं
१२ आइं की हे पनभु हे पनभु हमाने लये खोलीये। पनंतु उस
ने उतन देके कहा मैं तुमहें सत कहता ऊं की मैं तुमहें नहीं
१३ जानता। इस लीये जागते नहो कयोंकी तुम नहीं जानते
की मनुष्य का पुतन कौन से दीन औन कौन सी घड़ी में आवेगा।
१४ कयोंकी यह उस मनुष्य के समान है जीसने पनदेस को जाते
ऊए अपने सेवकों को वुलाया औन अपनी संपत उनहें सौंप
१५ दी। औन एक को उस ने पांच तोड़े दीये दुसने को दो औन
तीसने को एक हन एक मनुष्य को उसके वीत के समान दीया
१६ औन तुनंत चला गया। तव जीसने पांच तोड़े पाये थे वुह
गया औन उन से लेन देन कीया अन औन पांच तोड़े अधीक
१७ कमाये। औन इसी नीत से जीसने दो पाये थे उस ने भी दो
१८ औन कमाये। पनंतु जीसने एक पाया था उस ने जाके भुम
१९ को खोद के अपने पनभु के नोकड़ को छीपाया। पनंतु वऊत
दीन के पीछे उन सेवकों का सामी आया औन उनसे लेखा लेने
२० लगा। औन जीसने पांच तोड़े पाये थे वुह आया औन पांच
तोड़े औन भी लाया औन कहा की हे पनभु आप ने मुझे पांच
तोड़े सौंपे थे देखीये मैं ने उन से पांच तोड़े अधीक कमाये।
२१ उसके सामी ने उसे कहा की धंन हे अछे औन वीसवासमय
सेवक तु थोड़ी सी वसतु में वीसवासमय नीकला मैं तुझे वऊत
सी वसतु पन पनधान कनुंगा तु अपने पनभु के आनंद में पनवेस
२२ कन। जीस ने दो तोड़े पाए थे वुह भी आया औन वोला
की हे पनभु आप ने मुझे दो तोड़े सौंपे थे देखीये मैं ने उनसे
२३ औन दो तोड़े अधीक कमाये। उसके सामी ने उसे कहा की
धंन हे अछे औन वीसवासमय सेवक तु थोड़ी सी वसतु में
वीसवासमय नीकला मैं तुझे वऊत सी वसतु पन पनधान कनुंगा।

२४ तु अपने प्रभु के आनंद में प्रवेस कर। तव्र जीसने प्रेक
तोड़ा पाया था वुह आया और कहा की हे प्रभु मैं आप को
जानता था की आप कठोर मनुष्य हैं और लवते हैं जहां आप
ने नहीं व्रोया और प्रेकठा करते हैं जहां आप ने नहीं व्रीथ-
२५ राया। इस लीये मैं डरा और जाके आप के तोड़े को भुम
२६ में छीपा रष्या सो अपना देष्य लीजये। उसके प्रभु ने उसे
उतर देके कहा की हे दुसट और आलसी सेवक तु ने जाना की
जहां मैं ने नहीं व्रोया तहां लवता हूं और जहां मैं ने नहीं
२७ व्रीथराया प्रेकठा करता हूं। इस लये तुहे उचीत था की
मेरा रोकड़ कोठी में रष्यता और आते हुप्रे मैं अपना व्रीआज
२८ समेत पाता। इस लीये उस से वुह तोड़ा ले लेओ और जीस
२९ पास दस तोड़े हैं उसे देओ। कयोंकी जीस पास कुछ है उसे
दीया जायगा और उसे अधीक व्रढ़ती होगी परंतु जीस पास
कुछ नहीं है उस से वुह भी जो उसके पास है लीया जायगा।
३० और उस नीकमे सेवक को व्राहर अंधीयारे में डाल देओ जहां
३१ रोना और दांत पीसना होगा। जव्र मनुष्य का पुतर सारे
पवीतर दुतों के संग अपने व्रीभव में आवेगा तव्र वुह अपने
३२ व्रीभव के सींहासन पर व्रैठेगा। और उस के आगे समसत
जातगन प्रेकठे कीये जायेंगे और वुह प्रेक को दुसरे से अलग
करेगा जीस रीत से गड़ेरीया भेड़ों को व्रकरीयों से अलग
३३ करत है। और वुह भेड़ों को अपनी दहीनी परंतु व्रकरीयों
३४ को अपनी व्राइं ओर रष्येगा। तव्र जो उसकी दहीनी ओर
हैं राजा उन्हें कहेगा की आओ मेरे पीता के धंन लोग उस
राज के अधीकारी होओ जो जगत के आरंभ से तुमहारे
३५ कारन वनाया गया है। कयोंकी मैं भुष्या था और तुमने मुहे
भोजन दीया मैं पीयासा था और तुमने मुहे पीलाया मैं परदेसी
३६ था और तुम ने मुहे उतारा। नंगा था और तुम ने मुहे
पहीनाया मैं रोगी था और तुम ने मेरी सेवा की मैं व्रंधन में

३७ था और तुम मुझ पास आये। तब धनमी उसे उतन देके कहेंगे
की हे पनभु कब हम ने आप को भुप्पा देप्पा और भोजन दीया
३८ अथवा पीयासा और पीलाया ?। अथवा हमने कब आप को
पनदेसी देप्पा और आदन कीया ? अथवा नंगा और पही-
३९ नाया ?। अथवा कब हमने आप को नोगी अथवा बंधन में
४० देप्पा और आप के पास आये ?। तब नाजा उतन देके उनहें
कहेगा की मैं तुमहें सत कहता ऊं की जैसा तुम ने मेने इन
४१ अती छोटे भाइयों से कीया तुम ने मुझ से कीया। तब जो
उसकी बांई ओन हैं वुह उनहें कहेगा की अने सनापीते मेने
आगे से, उस अनंत आग में, जो पीसाय और उसके दुतों के
४२ कानन सीध की गई है दुन होओ। कयोंकी मैं भुप्पा था और
तुम ने मुझे भोजन न दीया मैं पीयासा था और तुम ने मुझे
४३ न पीलाया। मैं पनदेसी था और तुम ने मुझे न उताना नंगा
था और तुम ने मुझे न पहीनाया नोग और बंधन में था और
४४ तुम ने मेनी सुध न ली। तब वे भी उसे उतन देके कहेंगे
की हे पनभु कब हमने आप को भुप्पा अथवा पीयासा अथवा
पनदेसी अथवा नंगा अथवा नोगी अथवा बंधन में देप्पा
४५ और आप की सेवा न की ?। तब वुह उतन देके उनहें
कहेगा की मैं तुमहें सत कहता ऊं की जैसा तुम ने इन अती
४६ छोटों में से एक से न कीया तुम ने मुझ से न कीया। और
ये सब अनंत पीड़ा में जायेंगे पनंतु धनमी अनंत जीवन में।

२६ छब्बीसवां पनब।

यसु के माने जाने की भवीस बानी १—२ अपने
बीनाध में पनधान याजकों की गुसट ३—५ सउ
के सीन पन एक इसतीनी सुगंध डालती है ६—१३
उसे पकड़वाने को यहूदा पनधान याजकों से

मोल करता है १४—१६ यसु बीतजाना प्याता
है और कलो को परगट करता है १७—२५ अपनी
बीआरी ठहराता है २६—२९ सब सीष्यों के उसे
तयाग करने की खबोस बानी ३०—३५ बाटीका
में पीड़ीत होके यसु पराराथना करता है ३६—४६
उसका पकड़वाया जाना ४७—५० सीष्य ऐक सेवक
का कान उड़ा देता है परंतु यसु रोकता है ५१—५६
कायफा के आगे यसु की दुरदसा ५७—६८ तीन बार
पतरस उस से मुकर जाता है और बीलाप करता
है ६९—७५।

१ और ऐसा ऊआ की जब यसु ये सब बातें कह चुका उसने
२ अपने सीष्यों से कहा। की तुम जानते हो कीं दो दीन के
पीछे बीत जाने का परब होगा और मनुष्य का पुत्र कुरुस पर
३ मारे जाने के लीये पकड़वाया जायगा। तब परधान याजक
और अधापक और लोगों के पराचीन कायफा नाम परधान
४ याजक के सदन में ऐकठे ऊऐ। और परामरस कीया की यसु
५ को कपट से पकड़ के मार डालें। परंतु उनहों ने कहा की
६ परब में नहीं न हो की लोगों में हौरा मचे। और जब यसु
७ बैतौना में कोढ़ी समउन के घर था। ऐक उजले पथर की
डीबीया में बऊमुल सुगंध तेल लीये ऊऐ ऐक इसतीरी उस पास
आई और उस के बैठने के समय उसके सीर पर ढाल दीया।
८ परंतु उसके सीष्यों ने देखके जलजलाहट होके कहा की यह
९ बयरथ उठान कीस कारन है?। कयोंकी यह सुगंध तेल
बऊत मोल पर बेचा जाता और कंगालों को दीया जाता।
१० जब यसु ने जाना उसने उनहें कहा की तुम इस इसतीरी को
११ कयों छेड़ते हो उसने मुझ पर उतम कारज कीया है। कयों-
१२ की कंगाल तुमहारे संग सदा हैं परंतु मैं सदा नहीं ऊं। कयों-
की उसने जो यह सुगंध तेल मेरे देह पर डाला सो उसने मेरे

१३ गाड़ने के लीये कीया। मैं तुम से सत कहता हुं की सारे जगत
में जहां कहीं यह मंगल समाचार पनचाना जायगा यह भी
जो इस इसतीनी ने कीया उसके समनन के कानन कहा
जायगा।

१४ तव उन वानह में से एक जो यहूदा असकनयुती कहाता था
१५ पनघान याजकों के पास जाके। वोला की तुम मुझे कया देउगे
यदी मैं उसे तुम्हें सोंप देउं? तव उनहों ने उस से तीस टुकड़े
१६ चांदी पन ठीक कीया। और उस समय से वुह अवसन ढुंढता
१७ था की उसे पकड़वा दे। और अप्पमीनी नेटी के पहीले सीप्पों
ने यसु पास आके उसे कहा की आप कहां चाहते हैं की हम
१८ आप के भोजन के लीये वीतजाना सीच कनें?। उसने कहा
की नगन में अमुक मनुप्प पास जाओ और उसे कहो की गुनु ने
कहा है की मेना समय आ पहुंचा मैं अपने सीप्पों के संग
१९ वीतजाना तेने घन में नप्पुंगा। और जैसा यसु ने ठहनाया
२० था सीप्पों ने वीत जाना सीच कीया। और जव सांझ हुइ वुह
२१ उन वानह के संग वैठ गया। और जव वे भोजन कन नहे थे
उसने कहा की मैं तुम से सत कहता हुं की तुम में से एक मुझे
२२ पकड़वावेगा। तव वे अती उदासीन हुए और उन में से हन
२३ एक उसे कहने लगा की हे पनभु कया मैं हुं। तव उसने
उतन दीया और कहा की जो मेने संग थाली में हाथ वोनता
२४ है सोइ मुझे पकड़वावेगा। जैसा की उसके वीप्पय में लीप्पा है
मनुप्प का पुतन जाता है पनंतु हाय उस मनुप्प पन जीस से
मनुप्प का पुतन पकड़ाया जाय उस मनुप्प के लीये भला होता
२५ जो वुह उतपन न होता। तव जीसने उसे पकड़वाया अनथात
यहूदा ने उतन देके कहा की हे गुनु कया मैं हुं? उसने उसे
कहा की तूही ने कहा।

२६ और जव वे भोजन कन नहे थे यसु ने नोटी लो और घंन
मान के तोड़ी और सीप्पों को दी और कहा की लेओ प्पाओ

२७ यह मेरा देह है। और उसने कटोरा भी लीया और धन मान
२८ के उनहें देके कहा की तुम सब इस से पीओ। कयोंकी नये
नीयम का यह मेरा लोहु है जो बहुतेरों के पाप मोचन के
२९ लीये बहाया गया है। परंतु मैं तुमहें कहता हुं की मैं दाख
का रस अब से आगे न पीउंगा उस दीन लों जब की मैं अपने
३० पीता के राज में तुमहारे संग उसे नया पीउं। और एक
भजन गा के वे बाहर जैतुन के पहाड़ को गये।
३१ तब यसु ने उनहें कहा की इसी रात तुम सब मेरे कारन
ठोकर खाओगे कयोंकी लीखा है की मैं गड़ेरीये को मारुंगा
३२ और झुंड की भेड़ छींन भींन हो जायेंगी। परंतु फेर उठाये
३३ जाने के पीछे मैं तुमहारे आगे जलील को जाउंगा। पतरस
ने उतर देके उसे कहा की यदपी आप के कारन सब ठोकर
३४ खावें मैं कभी ठोकर न खाउंगा। तब यसु ने उसे कहा की
मैं तुझे सत कहता हुं की इसी रात कुकुट के बोलने से आगे
३५ तु तीन बार मुझ से मुकरेगा। पतरस ने उसे कहा की यदपी
मेरा मरना आपके संग होवे तथापी मैं आपसे न मुकरुंगा
३६ सब सीष्यों ने भी ऐसाही कहा। तब एक स्थान में जो
जसमन कहावता है यसु उनके संग आया और सीष्यों ने कहा
३७ की यहां बैठो जब लों मैं वहां जाके परारथना करुं। और
उसने पतरस और जबदी के दो बेटों को संग लीया और
३८ उदासीन होके अती शोकीत होने लगा। तब उसने उनहें कहा
की मेरा परान मीरत लों अती उदासीन है तुम यहां ठहरो
३९ और मेरे संग चौकस रहो। और वुह थोड़ा आगे बढ़ के
औंधे मुंह गीर पड़ा और यह कहके परारथना की, की हे
मेरे पीता यदी होसके तो यह कटोरा मुझ से बीतजाय तौस
४० पर भी मेरी इछा नहीं परंतु तेरी होवे। तब सीष्य पास आया
और उनहें सोते पाया और पतरस से कहा की तुम घटे भर
४१ मेरे संग चौकस न रह सके?। चौकस होओ और परारथना

कनो जीसतें तुम पनीक्षा में न पड़ो आतमा तो लैस है ठीक
४२ पनंतु सनीन दुनवल है। वुह दुसने वान फेन गया ग्रीन
पनानथना कनके वोला की हे मेने पीता जो मेने पीने वीना
४३ यह कटोना मुहे से टल न जाय तो तेनी इछा होय। तव
उसने आके उनहें फेन सोते पाया कयोंकी उनकी आंप्पें भानी
४४ थीं। ग्रीन वुह उनहें छोड़ के फेन यला गया ग्रीन वही
४५ वयन कहके तीसने वान पनानथना की। फेन वुह अपने सीप्प
पास आया ग्रीन उनहें कहा की अव सोते नहो ग्रीन वीसनाम
कनो देप्पो घड़ी आ पहुंयी है की मनुष्य का पुतन पापीयों के
४६ हाथों में पकड़वाया जाता है। उठो यलें देप्पो वुह जो मुहे
४७ पकड़वाता है आ पहुंया। ग्रीन जव वुह कह नहा था देप्पो
को यहुदा वाहन में से एक अपने संग एक वड़ी मंडी प्पड़ग
ग्रीन लाठीयां लीये हुए पनधान याजकों ग्रीन लोगों के पना-
४८ यीनों की ग्रोन से ले के आया। अव जीस ने उसे पकड़वाया
उसने उनहें यह कहके पता दीया था की जीस कीसी को मैं
४९ यूमुं वुह वही है उसे पकड़ लेओ। ग्रीन तुनंत वुह यसु पास
५० आके वोला की हे गुनु पननाम ग्रीन उसे यूमा। ग्रीन यसु ने
उसे कहा की हे मीतन तु कीस लीये आया तव उनहों ने यसु
५१ पन हाथ डाले ग्रीन उसे पकड़ लीया। ग्रीन देप्पो की उन
में से एक ने, जो यसु के संग थे हाथ वढ़ा के अपना प्पड़ग प्पींया
ग्रीन पनधान याजक के एक सेवक को लगाया ग्रीन उसका
५२ कान उड़ा दीया। तव यसु ने उसे कहा की अपने प्पड़ग को
काठी में फेन नप्प कयोंकी सव जो प्पड़ग प्पींयते हैं प्पड़ग ही
५३ से माने जायेंगे। तू नहीं समहता की मैं अभी अपने पीता की
पनानथना कन सकता हुं ग्रीन वुह तुनंत दुतों की वानह सेना
५४ मुहे देगा ?। पनंतु तव लीप्पे हुए कयोंकन पुने होंगे की यूं
५५ होना अवस है ?। उसी घड़ी यसु ने मंडलीयों से कहा की
तुम मुहे योन की नाई पकड़ने को प्पड़ग ग्रीन लाठीयां लेके

व्राहन नीकले हो ? मैं तो पनती दीन तुमहाने संग मंदीन
में व्रैठ के उपदेस कनता था श्रौन तुम ने मुझ पन हाथ न डाला।
५६ पनंतु यह सव्र हुश्रा जीसतें नवीसद्व्रकतों के लीष्पे हुये पुने
५७ होवें तव्र साने सीष्प उसे छोड़के भागे। श्रौन जीनहों ने यसु
को पकड़ा था वे पनघान याजक काश्रा के पास ले गये जहां
५८ श्रघापक श्रौन पनाचीन येकठे थे। पनंतु पतनस दुन से उसके
पीछे पीछे पनघान याजक के सदन लों चला गया श्रौन भीतन
५९ जाके सेवकों के संग व्रैठ गया की श्रंत को देष्पे। तव्र पनघान
याजक श्रौन पनाचीन श्रौन समसत सभा यसु पन झुठी साष्पी
६० ढुंढ़ते थे की उसे मान डालें पनंतु कोइ न पाये। हां यदपी
व्रहुतेने झुठी साष्पी श्राये तथापी वे न पाये श्रंत में दो झुठे
६१ साष्पी श्राये। श्रौन व्रोले की इस ने कहा की मैं इसन के मंदीन
६२ को ढाके उसे तीन दीन में ष्पड़ा कन सकता हुं। तव्र पनघान
याजक उठा श्रौन उसे व्रोला की तु कुछ उतन नहीं देता ? ये
६३ तुझ पन कया कया साष्पी देते हैं ?। पनंतु यसु चुपका नहा
श्रौन पनघान याजक ने उतन दीया श्रौन उसे कहा मैं तुझे
जीवते इसन की कीनीया देता हुं की यदी तु वुह मसीह इसन
६४ का पुतन है तो हम से कह। यसु ने उसे कहा की तुही ने
कहा है तीस पन भी मैं तुमहें कहता हुं की इस के पीछे तुम
मनुष्प के पुतन को पनाकनम की दहोनी श्रौन व्रैठे श्रौन श्राकास
६५ के मेघों पन श्राते देष्पोगे। तव्र पनघान याजक ने श्रपने
व्रसतन को फाड़ के कहा की वुह पाष्पंडता कह चुका है श्रव्र
हमें श्रागे साष्पी का कया पनयोजन है? देष्पो श्रभी तुम ने
६६ उसकी पाष्पंडता सुनी है। तुम कया सोचते हो? उनहों ने
६७ उतन दीया श्रौन कहा की यह मीनतु के जोग है। तव्र उनहों
ने उसके मुंह पन थुका श्रौन उसे घुसे माने श्रनु श्रौनों ने
६८ थपेड़े माने। श्रौन कहा की हे मसीह हमें भवीस कह कीसने
६९ तुझे माना है ?। तव्र पतनस व्राहन सदन में व्रैठा था श्रौन

ऐक दासी उस पास आइ और बोली की तु भी यसु जलीली के
७० संग था। परंतु वुह सब के आगे मुकर गया और कहा की मैं
७१ नहीं जानता तु कया कहती है। और जब वुह बाहर ओसारे
नें आया ऐक दुसरी उसे देष्पके, जो वहां ष्पड़े थे, उनहें बोली
७२ की यह भी यसु नासरी के संग था। और फीर वुह कीरीया
७३ ष्पा के मुकर गया की मैं उस मनुष्प को नहीं जानता। और
तनीक पीछे वे जो वहां ष्पड़े थे पतरस पास आये और बोले
की नीसचय तु भी उनमें से है कयोंकी तेरी भाष्पा तुझे पंरगट
७४ करती है। तब वुह धीकार के और कीरीया ष्पाके कहने
लगा की मैं उस मनुष्प को नहीं जानता और तुरंत कुकुट
७५ बोला। तब पतरस ने यसु के बयन की सुध की जो उसे कहा था
की कुकुट के बोलने से आगे तु तीन बार मुझ से मुकर जायगा
तब वुह बाहर जाके बीलष्प बीलष्प रोया।

२७ सताइसवां परब।

यसु पीलातुस को सौंपा जाता है १—२ यहुदा यांदी फेर लाके आप को फांसी देता है ३—१० मसीह पीलातुस के आगे चुप रहता है और वुह उसे छुड़ाने चाहता है ११—१८ पीलातुस की पतनी अपने पती को चीताती है पीलातुस अपने हाथ धोता है और बरब्बास को छुड़ा के यसु को घात करने को सौंपता है १९—२५ यसु ठठों में उड़ाया जाता है और दो चोरों के मध कुरुस पर मारा जाता है २६—४४ देस अंधीयारा हो जाता है यसु मरता है कइ लछन परगट होते हैं ४५—५६ युसफ उसे गाड़ता है ५७—६१ उसकी समाध पर छाप होता है और रष्पवाल बैठाये जाते हैं ६२—६६।

१ जब बीहान हुआ सब परधान याजकों और लोगों के

पनायीनों ने ग्रसु को मान डालने के व्रीनोच में पनामनस कीया।
२ औान जव्र उनहों ने उसे व्रांचा तो ले यले औान पनतीयुस पीला·
३ तुस अचक्ष को सैांप दीया। तव्र जीसने उसे पकड़वाया था
अनथात ग्रऊदा ने जव्र देप्पा की उस पन दंड की अगया ऊइ
आप पक्षता के उन तीस टुकड़े यांदी को पनघान ग्राजकों औान
४ पनायीनों के पास प्पेन लाके कहने लगा। की मैं ने इस में
पाप कीया की नीसपापी के लोऊ व्रहाने के लीये उसे पकड़वाया
५ तव्र वे व्रोले की हमें कया? तुही जान। औान वुह यांदी
के टुकड़ों को मंदीन में प्पेंक के यल नीकला औान जाके अपने
६ को प्पांसी दी। औान पनघान ग्राजकों ने यांदी के उन टुकडों
को लेकन कहा की उनहें भंडान में नप्पना जोग नहीं कयोंकी
७ ग्रह लोऊ का मोल है। तव्र उनहों ने पनामनस कीया औान पन
देसीयों के गाड़ने को उनहें देके कुमहान का प्पेत मोललीया।
८।९ इस लीये वुह प्पेत आज लों लोऊ का प्पेत कहावता है। तव्र
वुह जो इनमी अवीसदव्रकता से कहा गया था पुना ऊआ की उनहों
ने तीस टुकड़े यांदी उसका मोल जो ठहनाया गया हां जीसका
१० मोल इसनाइल के व्रंस में से कीतनों ने ठहनाया। औान उनहें
कुमहान के प्पेत के लीये दीया जैसा पनभु ने सुह्रे अगया की।
११ औान अचक्ष के आगे ग्रसु प्पड़ा ऊआ औान अचक्ष ने उसे ग्रह
कहके पुछा की तु ग्रऊदीयों का नाजा है? ग्रसु ने उसे कहा तुही
१२ तो कहता है। औान जव्र पनघान ग्राजक औान पनायीन उस
१३ पन दोप्प देनहे थे उस ने कुछ उतन न दीया। तव्र पीलातुस
ने उसे कहा की तु नहीं सुनता की वे कया कया तुह्र पन साप्पी
१४ देते हैं?। पनंतु उसने ग्रेक व्रयन का भी उसे उतन न दीया
ग्रहां लों की अचक्ष ने व्रड़ा आसयनज माना।
१५ औान उस पनव्र में अचक्ष की नीत थी की लोगों के लीये जीसे
१६ वे याहते थे ग्रेक व्रंधुआ को छोड़ देता था। औान उस समय
१७ उनका ग्रेक पनसीघ व्रंधुआ था जो व्रनव्रास कहावता था। इस

लीये जब वे बटुने थे पीलातुस ने उनहें कहा की तुम कीसे
याहते हो की मैं तुमहाने लीये छोड़ देउं? बनबास को अथवा
१८ यसु को जो मसीह कहावता है। कयोंकी वुह जानता था की
उनहों ने उसे डाह से सैांपा था।
१९ जब वुह नयाय के आसन पन बैठा था उस की पतनी ने
उसे यह कहला भेजा की तु उस सजन से कुछ काम मत नष्प
कयोंकी उस के कानन मैं ने आज सपन में बहुत सनताप पाया
२० है। पनंतु पनघान याजकों ओान पनायीनों ने मंडली को
२१ उसकाया की बनबास को मांगें ओान यसु को नास कनें। अघक्ष
ने उतन देके उनहें कहा की तुम दोनों में से कीसे याहते हो
की मैं तुमहाने लीये छोड़ दूं? वे बोले की बनबास को।
२२ पीलातुस ने उनहें कहा की फेन यसु को जो मसीह कहावता है
मैं कया कनुं सब के सब उसे बोले की वुह कुनुस पन माना
२३ जाय। तब अघक्ष ने कहा कयों उसने कया अपनाघ कीया
है? पनंतु वे ओान भी यीलाके बोले की वुह कुनुस पन माना
२४ जाय। जब पीलातुस ने देष्पा की उसका कुछ न यला पनंतु
अघीक हुलन होता है उसने पानी ले के मंडली के आगे हाथों
को घोया ओान कहा की मैं इस सजन के लोहु से नीनदोष्प हुं
२५ तुमहीं जानो। तब साने लोगों ने उतन देके कहा की उसका
२६ लोहु हम पन ओान हमाने बंस पन होवे। तब उसने उनके
लीये बनबास को छोड़ दीया ओान यसु को कोड़े मान के कुनुस
२७ पन टांगे जाने के लीये सैांप दीया। तब अघक्ष के जोघाओं
ने यसु को बैठक में ले जाके सानी जथा को उसके पास एकठे
२८ कीया। ओान उनहों ने उसे उघान के लाल बसतन पहीनाया।
२९ ओान जब उनहों ने कांटों का मुकुट गांथा तो उसके सीन पन
नष्पा ओान उसके दहीने हाथ में एक ननकट नष्पा ओान उसके
आगे घुटना टेका ओान यह कह के ठठा कीया की हे यहुदीयों
३० के नाजा पननाम। तब उनहों ने उस पन थका ओान ननकट

३१ ले के उसके सीन पन माना। और उसे ठठा में उड़ा के उनहों
ने उस पन से व्रसतन उताना और उसका अपना व्रसतन उसे
३२ पहीनाया और उसे कुनुस पन मानने को ले यले। और
व्राहन आये उनहों ने कुनोनी के एक मनुप्य को पाया जीस
का नाम समउन था उनहों ने उस से व्रनव्रस उस का कुनुस
३३ उठवाया। और जव्र वे एक सथान में पहुंये जो जलजता
कहावता है अनथात खोंपड़ी का सथान उनहों ने सीनका में
३४ पीत मीला के उसे पीने को दीया। और जव्र उसने यीप्पा तो
३५ पीने को न याहा। और उनहों ने उसे कुनुस पन टांगा और
उसके व्रसतनों को भाग कन के यीठो डाला जीसतें भवीसद्-
व्रकता का कहा हुआ व्रयन पुना होवे की उनहों ने आपुस में
मेने व्रसतनों को व्रांट लीया और मेने व्रागे पन यीठीयां डालीं।
३६।३७ और वहां व्रैठ के उसकी नप्पवाली की। और उस का
दोप्प पतन लीप्प के उसके सीन के उपन नप्पा की यह यहुदी-
३८ यों का नाजा यसु है। तव्र वहां उसके संग दो योन भी कुनुस
३९ पन टांगे गये एक दहीने हाथ और दुसना व्राएं। और वे जो
४० उधन से जाते थे सीन धुन के उस से ठठा कनके कहते थे। की
तु जो मंदीन को ढाता और तीन दीन में उठाता है आप को
व्रया यदी तु इसन का पुतन है तो कुनुस पन से उतन आ।
४१ इसी नीत से पनधान याजकों ने भी अधापकों और पनायीनों
४२ के संग यह कहके ठठा में उड़ाया। की इसने औनों को व्रयाया
अपने को व्रया नहीं सकता यदी वुह इसनाइल का नाजा है तो
कुनुस पन से उतन आवे और हम उस पन व्रीसवास लावेंगे।
४३ उसने इसन पन भनोसा नप्पा था यदी वुह उस से पनसंन है तो
अव्र वुह उसे छुड़ावे कयोंकी उसने कहा था की मैं इसन का
४४ पुतन हुं। वे योन भी जो उसके संग कुनुस पन टांगे गये थे
४५ वही व्रात उसके मुंही पन कहते थे। तव्र दो पहन से तीसने
४६ पहन लों साने देस में अंधकान छा गया। और तीसने पहन के

अंटकल में ग़सु ने व़ड़े सव़्द से यीला के कहा की प्रेली प्रेली
लामा सव़कतानी अनथात हे मेने इसन हे मेने इसन तु ने मुझे
४७ कय़ों तय़ागा है ?। उन में से जो वहां प्पड़े थे कीतनों ने
४८ सुनके कहा की य़ह इलीय़ास को वुलाता है। और तुनंत
उन में से प्रेक ने दौड़ के व़ादल ले के सोनके से भना और नल
४९ पन नप्पके उसे पीने को दीय़ा। औनों ने कहा की नहने
देओ हम देप्पें की इलीय़ास उसे कुड़ाने को आवेगा की नहीं।
५० तव़ य़सु ने दुसने व़ान व़ड़े सव़्द से यीला के पनान सोंप दीय़ा।
५१ और देप्पो मंदीन का घुंघट उपन से नीये लों फट गय़ा और
५२ भुइंडोल ऊआ और पहाड़ तड़क गय़े। और समाघ प्पुल गइं
५३ और व़ऊत संतन के देह जो सोय़े थे उठे। और उसके जी
उठने के पीछे समाघीन से व़ाहन आय़े और पवीतन नगन में
५४ गय़े और व़ऊतों को दीप्पाइ दीय़े। और जव़ सतपती और
उनहों ने, जो उसके संग य़सु की नप्पवाली कनते थे भुइंडोल
को और जो कुछ की व़ीता था देप्पा, वे य़ह कहके व़ऊत डन
५५ गय़े की य़ह सयमुय इसन का पुतन था। और व़ऊत सी इस-
तीनी वहां थीं जो जलील से य़सु के पीछे उसकी सेवा कनती
५६ आइं दुन से देप्प नही थीं। जीन में मनीय़म मजदली और
य़ाकुव़ और य़ोसी की माता मनीय़म और ज़व़दी के व़ेटे की
५७ माता। जव़ सांझ ऊइ अनमतीय़ा का प्रेक घनमान आय़ा
५८ जीसका नाम य़ुसफ था वुह भी आप य़सु का सीप्प था। और
पीलातुस पास जा के य़सु की लोथ मांगी तव़ पीलातुस ने अगय़ा
५९ की, की उसे दी जाय़। और जव़ य़ुसफ ने लोथ को लीय़ा उसने
६० घोय़े ऊप्रे सुती कपड़े में लपेटा। और उसे अपनीही नइ समाघ
में नप्पा जो उस ने पथन में प्पोदी थी और प्रेक व़ड़ा पथन
६१ समाघ के मुंह पन ढुलका के यला गय़ा। और वहां मनीय़म
मजदली और दुसनी मनीय़म समाघ के सामने व़ैठी थीं।
६२ अव़ दुसने दीन, जो व़नावनी के पीछे था पनघान य़ाजक और

६३ फरीसी एकठे होके पीलातुस पास आये। और कहा की हे
महासय हमें येत है की वुह छली अपने जीते जी कहता था की मैं
६४ तीन दीन पीछे फीर उठुंगा। इस लीये अगया कीजीये की
तीन दीन लें समाघ की नख्वाली की जाय न हो की उसके
सीष्य रात को आके उसे युरा ले जावें और लोगों से कहें की वुह
मीरतकों में से जी उठा सो पीछली युक पहीली से अघीक होगी।
६५ पीलातुस ने उनहें कहा की नख्वाल तुमहारे पास हैं जाओ और
६६ अपने जानते भर नख्वाली करो। सो वे गये और पथर पर
छाप करके समाघ की यैाकसी की और नख्वाल वैठाये।

२८ अठाइसवां पनब्र।

यसु जी उठता है और सीष्यों पर परगट होता है
१—१० याजक जोघाओं को घुस देता है जीसतें
कहें की उसकी लोथ युराइ गइ ११—१५ यसु जलील
में परगट होता है और सीष्यों को सारे जगत में
मंगल समायार परयारने को भेजता है १६—२०।

१ वीसराम के अंत अठवारे के पहीले दीन जब पह फटने
लगा मरीयम मजदली और दुसरी मरीयम समाघ देखने को
२ आइं। और कया देखती हैं की बड़ा भुइंडोल ऊआ कयोंकी
इसर का दुत सरग से उतर आया और उस पथर को समाघ के
३ मुंह पर से ढुलका के उस पर वैठा। उस का रुप बीजली क
४ समान और उसका बसतर पाला की नाइं सेत था। और उस
के डर के मारे नख्वाल कांप गये और मीरतक समान ऊए।
५ और उस दुत ने उतर देके इसतीरीयों से कहा की मत डरो
कयोंकी मैं जानता ऊं की तुम यसु को, जो कुरुस पर मारा
६ गया, ढुंढतीयां हो। वुह यहां नहीं है परंतु अपने कहने के
समान जी उठा है आओ जहां परभु पड़ा था उस सथान को
७ देखो। और तुरंत जाओ और उसके सीष्यों से कहो की वुह

मीनतु से जीउठा है ग्रौन लो वुह तुम से ग्रागे जलील को जाता
८ है तुम उसे वहां देष्पोगे लो मैं ने तुमहें जता दीग़ा है। ग्रौन
वे समाच से तुनंत उन ग्रौन व्रड़े ग्रानंद से उसके सीष्पों को
कहने दौड़ीं।
९ ग्रौन जव्र वे उसके सीष्पों से कहने को यली जाती थीं देष्पो की
ग़सु उनहें मीला ग्रौन व्रोला की कलयान ग्रौन उनहें ने ग्राके
१० उसका यनन पकड़ के दंवत की। तव्र ग़सु ने उनहें कहा की
मत डनो, जाग्रो मेने भाइयों से कहो की वे जलील को जायें
११ ग्रौन मुझे वहां देष्पेंगे। ग्रौन जव्र वे यली जाती थीं देष्पो की
कड़ उन नष्पवालों में से नगन में ग्राये ग्रौन सव्र जो व्रीत गया था
१२ सो पनघान याजकों को सुनाया। ग्रौन जव्र उनहें ने पनायीनों
के संग ऐकठे होके पनामनस कीया तो उन जोघाग्रों को यह
१३ कहके व्रड़त नोकड़ दीये। की कहीयो की नात को जव्र हम
१४ सो गये थे उसके सीष्प ग्राके उसे युना ले गये। ग्रौन यदी यह
ग्रयक्ष के कान लों पड़ुंये तो हम उसे समझा के तुमहें व्रया लेंगे।
१५ सो उनहें ने नोकड़ लीये ग्रौन जैसा सीष्पाऐ गये थे वैसा कीया
ग्रौन यह व्रात ग्राज लों यड़दीयों में यनया कीजाती है।
१६ तव्र वे गयानह सीष्प जलील में उस पहाड़ को गये जहां ग़सु
१७ ने उनसे ठहनाया था। ग्रौन जव्र उनहें ने उसे देष्पा तो उसे
१८ दंडवत की पनंतु कीधी कीसी को संदेह था। ग्रौन ग़सु उन पास
ग्राया ग्रौन यह कहके व्रोला की सनग ग्रौन पीनथीवी पन
साना पनकनम मुझे दीया गया है।
१९ इस लीये जाग्रो ग्रौन सानी देसीयों को पीता पुतन ग्रौन धनमा-
२० तमा के नाम से सनान देके सीष्प कनो। ग्रौन सव्र जो मैं ने
तुमहें ग्रगया की है पालन कनने को उनहें सीष्पाग्रो ग्रौन देष्पो
की पनती दीन जगत की समापत लों मैं तुमहाने संग ड़ं।
ग्रामीन।

मंगल समायान मनकस नयीत ।

---

१ पहीला पनव्र ।

ग्रहीया सनान कानक का समायान ग्रैान उपदेस १—८ मसोह्व का सनान पाना ग्रैान पनीक्षा में पड़ना ९—१३ ग्रहीया का व्रंघन में पड़ना ग्रसु का उपदेस ग्रैान कड्डी सीष्यों को वुलाना १४—२० पीसायों को दुन कनना २१—२८ अनेक नोगीग्रें को यंगा कनना २९—३४ और को पनानथना को जाता है उपदेस कनता है ग्रैान कोढ़ी को यंगा कनता है ३५—४५ ।

१ इसन के पुत्तन ग्रसु मसीह के मंगल समायान का आनंभ ।
२ जैसा की नवीसद्व्रकतें ने लीष्पा की देष्पो मैं अपने दुत को
तेने आगे आगे भेजता हुं जो तेने आगे तेने मानग को सुघा-
३ नेगा । ग्रेक का सव्रद व्रन में पुकानता है की इसन के मानग
४ को सुघानो ग्रै.न उसके पंथों को सीघा कनो । ग्रहीया व्रन में
सनान देता था ग्रैान पापमोयन के लोग्रे पसयाताप के सनान
५ का पनयान कनता था । ग्रैान उसके पास ग्रऊदीग्रः के साने
देस ग्रैान ग्रनोसलीम व्रासी नाकल आग्रे ग्रैान सव्र अपने अपने
पापों को मान मान के अनदन नदी में उस से सनान कीग्रे
६ जाते थे । ग्रैान ग्रहीया का व्रसतन उंट के नोम का था ग्रैान
उसकी कनीहांव पन यमड़े का पटुका व्रंघा था ग्रैान वह टीडी

७ ओान व्रनमघु प्याता था। ओान पनयान के कहता था की मेनें
पीछे ऐक आता है जो मुह से अधीक सामनथी है मैं इस जोग
८ नहीं की उसकी जुतो का व्रंद झुक के प्पोलुं। ठीक मैं ने तुमहें
जल से सनान दीया है पनंतु वुह तुमहें घननातमा से सनान
९ देगा। उनहीं दीनें में ऐसा ऊआ की य़सु ने जलील के नासनः
१० से आके अनदन में य़हीया से सनान पाया। ओान तुनंत
जल से व्राहन आते ऊऐ उसने सनग को प्पुला ओान आतमा
११ को कपोत के समान अपने उपन उतनते देप्पा। ओान आकास
व्रानो ऊइ की तु मेना पीनय पुतन है जीस से मैं अती पनसंन
१२ ऊं। ओान तुनंत आतमा ने उसे व्रन में नीकाल दीया।
१३ ओान वुह वहां व्रन में यालीस दीन लें सैतान से पनीछा कीया
गया ओान वुह व्रन पसुन में था ओान दुत उसकी सेवा कनते थे।
१४ अव्र य़हीया के व्रंघन में डाले जाने से पीछे य़सु जलील में आके
इसन के नाज के मंगल समायान का उपदेस कनने लगा।
१५ ओान कहने लगा की समय पुना ऊआ ओान इसन का नाज आ
पऊंया है पसयाताप कनो ओान मंगल समायान पन व्रीसवास
१६ लाओ। ओान जव्र वुह जलील के समुदन के तीन फीनता था
उसने समउन ओान उसके भाइ अंदनयास को समुदन में
१७ जाल डालते देप्पा कय़ोंकी वे मछुऐ थे। ओान य़सु ने उनहें
कहा की मेने पीछे आओ ओान मैं तुमहें मनुप्पों का घीवन
१८ व्रनाउंगा। ओान वे तुनंत अपने जाल को छोड़ के उसके पीछे
१९ यले गये। ओान जव्र वुह वहां से थोड़ा आगे व्रढ़ा उसने
जव्रदी के व्रेटे य़ाकुव्र को ओान उसके भाइ य़ुहना को देप्पा वे
२० भी नाव पन अपने जाल को सुघानते थे। ओान उसने तुनंत
उनहें व्रुलाया ओान वे अपने पीता जव्रदी को सेवकों के संग
२१ नाव पन छोड़ के उसके पीछे यले गये। तव्र वे कफननाऊम
में गये ओान तुनंत व्रीसनाम में उसने मंडली में जाके उपदेस
२२ कीया। ओान वे उसके उपदेस से आसयनजीत ऊऐ कय़ोंकी

उसने उनहें ऐक सामनथी के समान उपदेस कीया औन अधा-
२३ पकों के समान नहीं। औन उनकी मंडली में ऐक मनुष्य था
२४ जीस पन अपवीतन आतमा था उसने चीलाके कहा। की नहने
दीजीऐ हमसे आप से कया काम है यसु नासनी? कया आप
हमें नास कनने को आये हैं? मैं आप को जानता हूं की आप
२५ कौन हैं ईसन का वही धानमीक। तब यसु ने उसे दपट
२६ के कहा की चुप नह औन उस से बाहन आ। तब अपवीतन
आतमा ने उसे फाड़ा औन बड़े सबद से चीला के उस से बाहन
२७ नीकल गया। औन सब के सब यहां लों बीसमीत हुऐ की वे
आपुस में यह कहके पुछ पाछ कनने लगे की यह कया है?
यह कैसा नया उपदेस है? कयोंकी वुह अपवीतन आतमाओं
को भी पनाकनम से अगया कनता है औन वे उसे मानते हैं।
२८ औन तुनंत उसकी कीनत जलील के सानेदेस में फैल गई।
२९ औन ततकाल वे मंडली से बाहन नीकल के याकुब औन युहना
३० के संग समउन औन अंदनयास के घन में गये। पनंतु समउन
की सास जन से नोगी पड़ी थी तब उनहोंने उसके बीष्यय में
३१ तुनंत उसे कहा तब उसने आके उसका हाथ। पकड़ा औन उसे
उठाया औन जन ने तुनंत उसे छोड़ दीया औन उसने उनकी
सेवा की।

३२ औन सांझ को जब सुनज असत हुआ वे समसत नोगीयों
३३ औन पीसाच गनसतों को उसके पास लाये। औन समसत
३४ नगन दुवान पन ऐकठे हुऐ। औन उसने अनेकों को, जो
नाना पनकान के दुष्य से नोगी थे, चंगा कीया औन बहुत से
पीसाचों को दुन कीया औन पीसाचों को बोलने न दीया कयों-
की वे उसे जानते थे।

३५ औन तड़के बहुत नात नहते वुह उठके बाहन नीकला औन
३६ ऐक अनन सथान में जाके उसने पनानथना की। तब समउन
३७ औन वे जो उसके संग थे उसके पीछे पीछे चले गये। औन

जव़ उनहों ने उसे पाय़ा वे उसे व़ोले की सव़ आप को ढुंढ़ते
३८ हैं। और उसने उनहें कहा की आओ हम आस पास के नगनों
में भी पनयाननें के लीय़े यलें कय़ोंकी मैं इसी कानन व़ाहन
३९ नोकला ऊं। और वुह सानें गलील में उनकी मंडलीय़ों में
४० उपदेस कनता और पीसय़ों को दुन कनता था। तव़ ऐक
कोढी ने पास आके उसको व़ीनती की और उसके आगे घुठने
टेक के व़ोला की य़दी आप याहें तो मुझे पवीतन कन सकते
४१ हैं। य़सु ने दय़ाल होके हाथ व़ढाय़ा और उसे छुके कहा
४२ की मैं याहता ऊं की तु पवीतन होजा। और व़यन कहतेही
तुनंत कोढ उस से जाता नहा और वुह पवीतन हो गय़ा।
४३।४४ और उसने उसे अगय़ा कनके तुनंत व़ीदा कीय़ा। और
उसे कहा की देप्प कीसी मनुप्य से कुछ मत कह पनंतु यला जा
और अपने तईं य़ाजक को दीप्पा और अपने पवीतन होने के
लीय़े, जो कुछ मुसा ने उनकी साप्पी के लीय़े अगय़ा की है, दान
४५ कन। पनंतु वुह व़ाहन जाके उस कनम को फैलावने और
पनगट कनने लगा य़हां लों की य़सु फेन नगन में पनगट न
जा सका पनंतु व़ाहन व़ाहन अनन सथानों में नहा और यानों
ओन से लोग उस पास आय़े।

२ दुसना पनव़।

य़सु ऐक अनधांगी को यंगा कनता है और पाप
मोयन कनने का पनाकनम दीप्पाता है १—१२ मती
को व़ुलाता है और अपने दोप्प दाय़कों को उतन
देता है १३—१७ और अपने सीप्पों को नीनदोप्प
ठहनाता है १८—२८।

१ और कइ दीन व़ीते वुह कपननाऊम में फेन गय़ा और
२ यनया ऊइ की वुह घन में है। और तुनंत व़ऊतेने व़टुन गय़े

य़हां लें की दुवान के आस पास भी समाइ न थी और उसने
३ उन पन व्रयन पनयान कीय़ा। तव्र वे याान जन से उठवाये
४ ऊपे ऐक अनघांगी के उस पास लाये। और जव्र भीड़ के
माने वे उस पास न आ सके ते उनहें ने उस छत के जीस में
वुह था उघेना और उसे तोड़ के, जीस प्पाट पन वुह अनघांगी
५ पड़ा था, उसे लटका दीय़ा। तव्र य़सु ने उनका व्रीसवास देप्प के
उस अनघांगी के कहा की पुतन तेने पाप छमा कीय़े गय़े।
६ पनंतु वहां कीतने अघापक व्रैठे अपने अपने मन में ध्रीयानते
७ थे। की य़ह कय़ें इसनापनीनदक व्रयन कहता है? इसन
८ के छोड़ कैान पाप के छमा कन सकता है?। और तुनत
य़सु ने अपने आतमा में जाना की वे अपने अपने मन में ऐसा
ध्रीयान कनते हैं तव्र उसने उनहें कहा की अपने अपने मन में
९ कय़ें ऐसा ध्रीयान कनते हे?। उस अनघांगी के कय़ा कहना
सहज है की पाप छमा कीय़े गय़े अथवा कहना की उठ और
१० अपनी प्पाट उठा ले और यल?। पनंतु जीसतें तुम जाने की
मनुप्प का पुतन पीनथीवी पन पाप छमा कनने के सामनथ
११ नप्पता है उसने उस अनघांगी के कहा। की मैं तुझे कहता ऊं
की उठ और अपनी प्पाट उठा ले और अपने घन के यला जा।
१२ और वुह तुनंत उठा और प्पाट उठाके उन सभें के आगे यल
नीकला य़हां लें की सव्र व्रीसमीत ऊपे और इसन की सतुत
१३ कनके व्रोले की हम ने इस नीत के कभी न देप्पा था। और
वुह नीकल के फेन समुदन के तीन गय़ा और सानी मंडली
१४ उस पास आइ और उसने उनहें सीप्पाय़ा। और जाते जाते
उसने हलफ़ा के व्रेटे लुइ के कन लेने के सथान में व्रैठे देप्पा
और उसे कहा की मेने पीछे आ तव्र वुह उठा और उसके
१५ पीछे हे लीय़ा। और ऐसा ऊआ की जव्र य़सु उसके घन मं
व्रैठ के भोजन कन नहा था व्रऊत से कनगनाहक और पापी
भी य़सु के और उसके सीप्पें के संग ऐकठे व्रैठे कय़ोंकी वहां

१६ व़ङत थे ग्रौन वे उसके पीछे यले ग्राये थे। ग्रौन जव़ ग्रधापकों
ग्रौन फरनीसीय़ों ने उसे कनगनाहकों ग्रौन पापीय़ों के संग
भोजन कनते देप्पा वे उसके सीप्पों से व़ोले की य़ह कैसा है
१७ की वुह कनगहकों ग्रौन पापीय़ों के संग प्पाता पीता है। तव़
य़सु ने सुन के उनहें कहा की जो जो भले यंगे हैं सो सो को
व़ैद का ग्रावसक नहीं पनंतु नोगीय़ों को, मैं घनमीय़ों को
व़ुलाने नहीं ग्राय़ा पनंतु पापीय़ों को जीसतें पसयाताप कनें।
१८ ग्रौन य़हीय़ा के ग्रौन फरनीसीय़ों के सीप्प व़नत कीय़ा कनते थे
सो उनहों ने ग्राके उसे कहा की य़हीय़ा के ग्रौन फरनीसीय़ों के
सीप्प कय़ों व़नत कनते हैं पनंतु ग्राप के सीप्प व़नत नहीं
१९ कनते?। तव़ य़सु ने उनहें कहा की जव़ लों व़नाती के संग
दुलहा है कय़ा वे व़नत कनसकते हैं? जव़ लों दुलहा उनके
२० संग है वे व़नत नहीं कन सकते। पनंतु वे दीन ग्रावेंगे जव़
की दुलहा उनसे ग्रलग कीय़ा जाय़गा ग्रौन उनहीं दीनों में
२१ वे व़नत कनेंगे। कोइ मनुप्प नय़े कपड़े का टुकड़ा पुनाने
व़सतन में नहीं जोड़ता नहीं तो वुह नय़ा टुकड़ा जो लगाय़ा
२२ गय़ा पुनाने से प्पींयता है ग्रौन वुह फटा व़ढ़ जाता है। ग्रौन
कोइ मनुप्प नय़े दाप्प नस को पुनाने कुपे में नहीं नप्पता नहीं
तो नय़े दाप्प नस से कुपे फटजाते हैं ग्रौन दाप्प नस व़ह
जाता है ग्रौन कुपे नसट होते हैं पनंतु नय़े दाप्प नस को ग्रवेस
२३ है की नय़े कुपे में नप्पें। ग्रौन ऐसा ङग्रा की व़ीसनाम में
ग्रंन के प्पेत में होके वुह यला जाता था ग्रौन उसके सीप्प जाते
२४ जाते ग्रंन की व़ालें तोड़ने लगे। तव़ फरनीसीय़ों ने उसे कहा
की देप्पीय़े जो व़ीसनाम में कनना ग्रनुयीत है वे कय़ा कनते
२५ हैं। तव़ उसने उनहें कहा कय़ा तुमने नहीं पढ़ा जो दाउद
ने ग्रौन उसके संगीय़ों ने जव़ उनहें भुप्प लगी ग्रौन सकेती में
२६ थे कीय़ा?। उसने कय़ोंकन ग्रव़ीय़ासान पनधान य़ाजक के
समय़ में इसन के मंदीन में जाके भेंट की नोटी प्पाइ जो

य़ाजकों को छोड़ कीसी को ष्याना उयीत न था श्रीन श्रपने
२७ संगीय़ों को भी दी ?। श्रीन उसने उनहें कहा की व्रीसनाम
मनुष्प के लीय़े ठहनाय़ा गय़ा पनंतु मनुष्प व्रीसनाम के लीय़े
२८ नहीं। इस लीय़े मनुष्प का पुतन व्रीसनाम का भी पनभु है।

३ तीसना पनव्र।

य़सु हुनाय़े हाथ को यंगा कनता है १—५ फनीसीय़ों की जुकत से श्रलग होता है श्रीन व्रहुतों को यंगा कनता है ६—१२ व्रानह पनेनीतों को युन लेता है १३—१९ उसके मीतन की उलटी समझ २०—२१ श्रधापकों के श्रपनीनदक व्रयन को हुठाता है २२—३० इसन के जन उसके कुटुंव्र हैं ३१—३५।

१ तव्र वुह मंडली में फेन गय़ा श्रीन वहां ऐक मनुष्प था जीस
२ का हाथ हुना गय़ा था। श्रीन वे उसे श्रगोन नहे थे की देष्पें
की वुह उसे व्रीसनाम में यंगा कनेगा श्रथवा नहीं जीसतें उसे
३ दोष्प देवें। श्रीन उसने उस मनुष्प को कहा, जीसका हाथ
४ हुनाय़ा हुश्रा था, की व्रीय में ष्पड़ा हो। श्रीन उसने उनहें
कहा की व्रीसनाम में भला कनना उयीत है की व्रुना? पनान
५ को व्रयाना श्रथवा घात कनना? पनंतु वे युपके नहे। श्रीन
जव्र उसने यानों श्रीन उन पन नीसीय़ा के देष्पा तो उनके मन
की कठोनता से ष्पेदीत होके उस मनुष्प को कहा की श्रपना
हाथ व्रढ़ा उसने व्रढ़ाय़ा श्रीन उसका हाथ दुसने के समान यंगा
६ हो गय़ा। तव्र फनीसीय़ों ने तुनंत जाके हीनुदीसीय़ों के
संग उसके व्रीनोध में पनामनस कीय़ा की उसे कीस नीत से नास
७ कनें। पनंतु य़सु श्रपने सीष्प समेत श्रलग होके समुदन के
तीन गय़ा श्रीन ऐक व्रड़ी मंडली जलील से श्रीन य़हुदीय़ः से।

८ और यरोसलीम से और अदुमीय: से और अरदन के पार से
और सुर और सैदा के आसपास से उसके बड़े बड़े कारजों
९ को, जो उसने कीये थे सुनके उसके पास आइ। तब उसने अपने
सीष्यों से कहा की मंडली के कारन से मेरे लीये एक छोटी
१० नाव धरी रहे न हो की वे मुझ पर भीड़ करें। कयोंकी उसने
बहुतों को चंगा कीया था यहां लों की जीतने रोगी थे उसे छुने
११ के लीये उस पर गीरे पड़ते थे। और जब अपवीतर आतमा
उसे देख्ते थे उसके आगे गीर के पुकार के कहते थे की तु इसर
१२ का पुतर है। तब उसने उनहें दीरढ़ता से अगया की, की
मुझे परगट न करो।
१३ और आप एक पहाड़ पर चढ़ गया और जीनहें उसने चाहा
१४ उनहें बुलाया और वे उस पास आये। तब उसने बारह को
ठीक कीया की उसके संग रहें और जीसतें वुह उनहें परचार
१५ करने को भेजे। और रोगों को दुर करने का और पीसाचों
१६ को बाहर नीकालने का सामरथ रख्खें। और उसने समउन
१७ का नाम पतरस रख्खा। और जबदी के बेटे याकुब का और
याकुब के भाइ युहना का नाम उनसे बुनरजीस रख्खा अरथात
१८ गरजन के बेटे। और अंदरयास और फीलबुस और बारतुलमा
और मती और तुमा और हलफा का बेटा याकुब और
१९ सदी और समउन कीनानी। और यहुदा असकरयुता जीसने
२० उसे पकड़वाया भी और वे एक घर में आये। और मंडली
२१ फेर एकठी हुइ ऐसा की वे रोटी भी न ख्खा सके। और जब
उसके मीतरों ने सुना वे उसे पकड़ लेने को बाहर गये कयोंकी
२२ उनहों ने कहा की वुह आप में नहीं है। तब अधापक, जो
यरोसलीम से आये थे, बोले की बालजबुल उस में है और वुह
२३ पीसाचों के राजा की सहाय से पीसाचों को दुर करता है। और
उसने उनहें बुला के दीरीसटांतों में कहा की सैतान सैतान को
२४ कयोंकर नीकाल सकता है। और यदी कोइ राज अपने

व्रीनोच में दो भाग होजाय़ तो वह राज ठहर नहीं सकता।
२५ और य़दी कोइ घर अपने व्रीनोच में दो भाग होजाय़ वुह
२६ घर सथीर नहीं रह सकता। और य़दी सैतान अपनाही
व्रीनोध कर उठे और अलग होय़ वह ठहर नहीं सकता परंतु
२७ उसका अंत होता है। कोइ मनुष्य कीसी व्रलवंत के घर में
पैठ के उसकी संपत को लुट नहीं सकता जव्र लों वुह पहीले उस
२८ व्रलवंत को व्रांधे तव्र उसके घर को लुटेगा। मैं तुमहें सत
कहता हुं की मनुष्य के पुत्रों के सारे पाप और पाष्पंडता जो
२९ वे पाष्पंड व्रकते हैं छमा कीय़े जाय़ेंगे। परंतु जो धरमातमा
के व्रीनोध में पाष्पंड व्रकता है सो कभी छमा न कीय़ा जाय़गा
३० परंतु सदा के दंड के जोग होगा। इस कारन की उनहों ने
३१ कहा की उस में अपवीतर आतमा है। तव्र उसके भाइ और
उसकी माता आइ और व्राहर षड़े होके उसे वुलवा भेजा।
३२ तव्र उसके आस पास की व्रैठी झुइ मंडली ने उसे कहा की देष्प
आप की माता और आप के भाइ व्राहर आप को ढुंढ़ते हैं।
३३ तव्र उसने उनहें उतर देके कहा की कैान है मेरी माता अथवा
३४ मेरे भाइ?। और उसने अपने आस पास के व्रैठे झुओं को
३५ देष्पके कहा की लो मेरी माता और मेरे भाइ। कय़ोंकी जो
कोइ इसर की इछा पर चलेगा सोइ मेरा भाइ और मेरी
व्रहीन और माता है।

४ चौथा पनव्र।

व्रोवैय़े का दीस्टांत १—९ दीस्टांतों में कहने
का कारन १०—१३ उस दीस्टांत का अरथ
१४—२० गय़ान, फैलाने के लीय़े दीय़ा जाता है
२१—२२ धय़ान से सुनने का उपदेस २३—२५ व्रीज
के व्रोने, उगने, और पकने का दीस्टांत २६—२९

नाइ का दीनीसटांत ३०—३२ मसीह केवल दीनीस-
टांतों में उपदेस करता है और सीष्यों को अनथ
ब़ताता है ३३—३४ ब़यन से आंधी को नोकता है
३५—४१।

१ और वुह समुद्न के तीन पन फ़ेन उपदेस कनने लगा और
प्रेक ब़ड़ी मंडली उस पास प्रेकठी ऊइ यहां लों की वुह समुद्न
में प्रेक नाव पन जा ब़ैठा और सानी मंडली समुद्न के तीन भूम
२ पन थी। और उसने उनहें अनेक ब़ात दीनीसटातें में सीष्याया
३ और अपने उपदेस में उनहें कहा। की सुनो, देष्यो प्रेक
४ ब़ोवैया ब़ोने को नीकला। और युं ऊआ की जब़ वुह ब़ोता
था कुछ मानग की ओन गीने ओन आकास के पंछी आये ओन
५ उसे युग गये। और कुछ पथनैली भुम पन गीने जहां उनहें
ब़ऊत मीटी न मीली और तुनंत उगे इस कानन की गहीनी
६ मीटी न पाइ थी। पनंतु जब़ सुनज उदय ऊआ वे झुलस गये
७ और जड़ न नष्पने के कानन हुना गये। और कुछ कांटों में
गीने और कांटों ने ब़ड़के उनहें घांट लीया और उन में कुछ
८ न फ़ला। और कुछ योष्पी भुंइ पन गीने और उगके ब़ढ़े
और फ़ल लाये कुछ तीस गुने कुछ साठ और कुछ सौ गुने।
९ और उसने उनहें कहा की जोस कीसी के कान सुनने को होवे
१० सो सुने। और जब़ वुह अकेला था तो जो उसके आस पास
थे उनहों ने उन ब़ानह के संग उस दीनीसटांत को उसे पुछा।
११ तब़ उसने उनहें कहा की इसन के नाज के भेद का गयान तुमहें
दीया गया है पनंतु उनके लीये जो ब़ाहन हैं सानी ब़सतें
१२ दीनीसटांतों में होती हैं। कीसतें देष्पते ऊप्रे देष्पें और न
सुझें और सुनते ऊप्रे सुनें और न समहें न हो की वे कभी
१३ फ़ीनाये जायें और पाप छमा कीये जायें। और उसने उनहें
कहा की तुम यह दीनीसटांत नहीं जानते ? फ़ेन साने दीनसी-

१४।१५ टांत कैसे जानेगे?। बोवैया बचन बोता है। और ये
हैं वे जो मारग की ओर हैं जहां बचन बोया जाता है परंतु
जब उनहों ने सुना सैतान तुरंत आता है और बचन को, जो
१६ उनके मन में बोया गया था लेजाता है। और वैसेही वे हैं
जो पथरैली भूम में बोये गये हैं जो बचन को सुनके तुरंत
१७ आनंदता से गरहन करते हैं। और आप में जड़ न रष्प के
तनीक ठहरते हैं और उसके पीछे, जब बचन के नीमीत दुष्प
१८ और ताड़ना होती है वे तुरंत ठोकर ष्पाते हैं। और जो
१९ कांटों में बोये गये सो वे हैं जो बचन को सुनते हैं। और
इस जगत की चीनता और धन की छलता और और बसतुन
के लोभ भीतर पैठ के बचन को घोंट डालते हैं और वुह
२० नीसफल होता है। और वे जो चोष्पी भुइं में बोये गये हैं
ये हैं जो बचन को सुन के गरहन करते हैं और फल लाते हैं
२१ कीतने तीस गुने कीतने साठ और कीतने सौ गुने। और उसने
उनहें कहा की दीपक इस लीये लाते हैं की नांद के अथवा
२२ ष्पाट के नीचे रष्पें और दीअट पर नहीं?। कयोंकी कुछ
छीपी नहीं है जो परगट न होगी और कोइ बसतु गुपत न
२३ रष्पी गइ परंतु जीसतें ष्पुल जाय। यदी कीसी के कान सुनने
२४ को होवें तो सुने। फेर उसने उनहें कहा चौकस हो की कया
सुनते हो की जीस नपुए से नापते हो तुमहारे लीये नापा
२५ जायगा और तुमहें जो सुनते हो अधीक दीया जायगा। कयोंकी
जीस पास है उसे दीया जायगा और जीस पास नहीं है उस से
२६ वुह भी जो वुह रष्पता है फेर लीया जायगा। और उसने
कहा की ईसर का राज ऐसा है जैसा की कोइ मनुष्प भुइं में
२७ बीहन बोवे। और रात दीन सोवे जागे और बीहन उग के
२८ बढ़े वुह नहीं जानता की कीस रीत से। कयोंकी पीरथीवी
आप से फल लाती है पहीले अंकुर फेर बाल उसके पीछे बाल
२९ में भर पुर अंन लगते हैं। परंतु जब वुह पका तुरंत वुह

३० हंसुश्रा लगता है इस कानन की लवनी पझ़ंयी है। श्रोन उस
ने कहा की हम इसन के नाज को कीस से उपमा देवें ? श्रोन
३१ उसके लीये कैान सा उपमा लावें ?। वुह नाइ के समान है
जो जव़ पोनथीवी में व्रोय़ा गय़ा साने व्रीहन से जो पीनथीवी में
३२ हैं छोटा है। पनंतु जव़ व्रोय़ा गय़ा है वुह उगता है श्रोन
साने तनकानीय़ों से व्रड़ा होता है श्रोन व्रड़ी व्रड़ी डालीय़ां
फुटती हैं य़हां लों की श्राकास के पंछी उसकी छाय़ा तले व्रास
३३ करें। श्रोन वुह उनहें ऐसेही व्रज़ुत से दीनीसटांटों में उनकी
३४ व्रुह के समान कहता था। पनंतु व्रीना दीनीसटांत वुह उनसे
न कहता था श्रोन जव़ वे ऐकानत में होते थे वुह श्रपने सीप्यां
३५ से सव़ का श्रनथ कनता था। श्रोन उसी दीन जव़ सांह ज़इ
३६ उसने उनहें कहा की श्राश्रो उस पान यलें। श्रोन वे उस
मंडली को व्रीदा कनके उसे जैसा था वैसा नाव पन उठालीय़ा
३७ श्रोन वहां श्रोन भी छोटीं नावें उसके संग थीं। तव़ व्रय़ान की
व्रड़ी श्रांधी यली श्रोन लहनें नाव में ऐसी लगीं की वुह भन
३८ गई। श्रोन वुह पतवान की श्रोन ऐक उसीसे पन सोश्रा था
तव़ उनहों ने उसे जगा के कहा की हे गुनु श्राप यीनता नहीं
३९ कनते की हम नसट होते हैं ?। तव़ उसने उठके व्रय़ान को
दपटा श्रोन समुदन को कहा की सथीन हो तव़ व्रय़ान थमगइ
४० श्रोन व्रड़ा यैन ज़श्रा। फरेन उसने उनहें कहा कय़ों ऐसे
भय़मान हो ? कय़ोंकन है की तुम व्रीसवास नहीं नप्पते ?।
४१ तव़ वे श्रतय़ंत डन के श्रापुस में कहने लगे की य़ह कीस नीत
का मनुप्प है की व्रय़ान श्रोन समुदन भी उसे मानते हैं।

५ पांयवां पनव़।

य़ह व्रज़ुत से देवों को दुन कनता है जो सुश्रन के
झुंडों को नास कनते हैं १—१९ उस देस के लोग

यसु को नीकास देते हैं १४—२० मसीह याइनस
की कंनया को चंगा कनने जाता है २१—२४ मानग
में उसे छुके ऐक इसतीनो चंगी होती है २५—३४
ऐक कंनया को जीलाता है ३५—४१।

१ औान वे समुदन के उस पान जदनानीयों के देस में पहुंचे।
२ औान जब वुह नाव से उतना तुनंत ऐक मनुष्य जीस पन
३ अपवीतन आतमा था समाधीन से नीकलके उसे मीला। वुह
समाधीन में नहता था औान कोइ मनुष्य उसे सीकनों से भी
४ बांध न सकता था। कयोंकी वुह कइ बेन पैकडीयां औान
सीकनों से जकड़ा गया था औान उसने सीकनों को झटके से
अलग कीया था औान पैकडीयां को तोड़के टुकडे़ टुकड़े कन
५ दीया था औान कोइ उसे बस में न कन सका था। औान वुह
नात दीन नीत पहाड़ों में औान समाधीन में नहता था औान
६ चीला चीला अपने को पथनों से काटता था। पनंतु जब उसने
७ यसु को दुन से देष्पा तो दौड़ के उसे पननाम कीया। औान
बड़े सब्द से चीला के कहा की हे अतीमहान इसन के पुतन
यसु मुझे आप से कया काम? मैं आप को पनमेसन की कीनीया
८ देता हुं की आप मुझे न सताइये। (कयोंकी उसने उसे कहा
था की अने अपवीतन आतमा इस मनुष्य से बाहन नीकल)।
९ तब उसने उसे पुछा की तेना नाम कया? उसने उतन देके
१० कहा की मेना नाम लाजउन कयोंकी हम बहुत हैं। औान
उसने उसकी अती बीनती की, की हमें इस देस से नीकाल न
११ दीजीये। औान वहीं पहाड़ों के पास सुअनों का ऐक बड़ा
१२ झुंड चनता था। तब साने पीसाचों ने उसकी बीनती कनके
कहा की हमें उन सुअनों में भेजीये की हम उन में पैठें।
१३ यसु ने तुनंत उनहें जाने दीया औान अपवीतन आतमा बाहन
जाके सुअनों में पैठ गये औान वुह झुंड कड़ाने पन से बेग दौड़

के समुदन में गीन पड़ा और समुदन में सांस नुक गये (वे दो
१४ सहसन के लगभग थे)। और सुअनों के यनवाहे भागे और
नगन में और उस देस में सदेस दीया तव जो को कीया गया
१५ था उसे देष्पने को वे नीकल आये। और उनहों ने यसु के
पास आके उस पीसाय गनसत को, जीसपन लाजउन था वैठे
१६ और वसतन पहीने सगयान देष्पा तव वे डन गये। और जो
की पीसाय गनसत पन वीतगया था और सुअनों की दसा को
१७ जीनहों ने देष्पा था उनहों ने उनहें कहा। तव वे उसकी
१८ वीनती कनने लगे की हमाने सीवाने से नीकल जाइये। और
जव वुह नाव पन आया तव जो पीसाय गनसत था उसने उसके
१९ संग नहने के लीये उसकी वीनती की। तीस पन भी यसु
ने उसे आने न दीया पनंतु कहा की अपने मीतनों के पास घन
जा और उनहें कह की पनभु ने तुझ पन दया कनके कैसे कैसे
२० वड़े अनुगीनह कीये। तव वुह यला गया और दस नगन में
उन वड़े कानजों को, जो यसु ने उसके लीये कीये थे पनगट
२१ कनने लगा और सभों ने आसयनज माना। और यसु नाव
पन यढ़के इस पान फीन आया वहुत लोग उस पास एकठे
२२ ऊए और वुह समुदन के लग था। और देष्पो की मंडली
का एक पनधान याइनस नाम आया और उसे देष्प कन उसके
२३ यनन पन गीना। और उसकी वहुत वीनती कनके कहा की
मेनी छोटी वेटी मनने पन पड़ी है आके अपने हाथों को उस
२४ पन नष्पीये जीसतें वुह यंगी होजाय और दुह जीएगी। तव
यसु उसके संग गया और वहुत से लोगों ने उसके पीछे होके
२५ उस पन भीड़ की। और एक इसतीनी जीसका वानह वनस
२६ से लोहू वहता था। और वहुत से वैदों से वड़ा वड़ा दुष्प
उठाया और अपना सव कुछ उठान कनके यंगी न ऊइ पनंतु
२७ अधीक नोगीनी ऊइ। यसु का समायान सुनके उस भीड़ में
२८ पीछे आइ और उसके वसतन को छु लीया। कयोंकी उसने

कहा की यदी मैं केवल उसके व़सतनों को छुउं तो यंगी हो
२९ जाउंगी। श्रौन तुनंत उसके लोझ का सोता सुप्प गया श्रौन
उसने अपने सनीन से जान लीया की उस नोग से मैं यंगी झइ
३० तव़ यसु ने तुनंत आप में जाना की मुझ से सकती नीकली श्रीन
की श्रौन फीन के कहा की कीसने मेने व़सतनों को छुआ।
३१ तव़ उसके सीप्पों ने उसे कहा की आप देप्पते हैं की मंडली
आप पन भीड़ कनती है श्रौन फेन कहते हैं की मुझे कीसने
३२ छुआ? । श्रौन जीसने यह कीया था उसे देप्पने को वुह यानो
३३ श्रौन दीठीसट कनने लगा। पनंतु जो की उस पन व़ीत गया
था उसे जान के वुह डुसतीनी डनती कांपती आइ श्रौन उसके
३४ आगे गीन के सय सय व़ोली। श्रौन उसने उसे कहा की हे
पुतनी तेने व़ीसवास ने तुझे यंगा कीया कुसल से जा श्रौन अपने
नोग से व़यीं नह।
३५ वुह कहताही था की मंडली के उस पनचान कने से लोगों ने
आके कहा का तेनी व़ेटी मनगइ तु गुनु को अव़ कयों कलेस
३६ देता है। यसु ने उस कहे झए व़यन को सुन के मंडली के
३७ उस पनचान से कहा की मत डन केवल व़ीसवास नप्प। तव़
उसने पतनस श्रौन याकुव़ श्रौन उसके भाइ युहना को छोड
३८ कीसी को अपने पीछे आने न दीया। श्रौन उसने मंडली के
पनचान के घन में आके लोगों को धुम कनते श्रौन नोते श्रौन
३९ अती व़ीलाप कनते देप्पा। श्रौन भीतन जाके उसने उनहें
कहा की तुम कयों धुम कनते श्रौन नोते हो? कंनया मन
४० नहीं गइ पनंतु सोती है। तव़ वे उस पन हंसे पनंतु वुह सव़
को व़ाहन कनके उस कंनया के माता पीता को श्रौन अपने
४१ संगीयों को लेके, जहां वुह कंनया पडी थी, भीतन गया। तव़
उसने उस कंनया का हाथ पकड़ के उसे कहा की तालीताकुमी
४२ अनथात कंया मैं तुझे कहता झं की उठ। श्रौन वुह कंनया
तुनंत उठी श्रौन यलने लगी कयोंकी वुह व़ानह व़नस की थी

४३ श्रीन वे वड़े श्रासयनज से श्रासयनजीत ऊये। तव उसने
उनहें दोनढ़ता से कहा की उसे कोइ न जाने श्रीन श्रगया की,
की उसे कुछ प्याने को देश्रो।

६ कठवां पनव।

श्रपने ही देस में यसु की नोनदा होती है १—६
यसु पनेनीतों को उपदेस के लीये भेजता है ७—१३
मसीह के वीप्पय में होनदीम की समझ १४—१६
वुह यहीया सनानकानक का सीन कटवाता है
१७—२९ पनेनीत यसु पास फीन श्राते हैं ३०—३३
यसु का उपदेस श्रीन मंडलीयों को भेजन कनाना
३४—४४ समुदन पन यलता है ४५—५२ जनेसन
में पक्षंय के नोगीयों को यंगा कनता है ५३—५६।

१ तव वुह वहां से यला श्रीन श्रपनेही देस में श्राया श्रीन उस
२ के सोप्प उसके पीछे हो लीये। श्रीन जय वीसनाम श्राया वुह
मंडली में उपदेस कनने लगा श्रीन वक्रतेने सुनके वीसमीत हो
कहने लगे की इसने ये सव कहां से पाये? श्रीन उसे यह कया
वुध दी गइ है की ऐसे ऐसे श्रासयनज कनम उसके हाथों से
३ कीये जाते हैं?। कया यह मनीयम का पुतन वढ़इ नहीं?
याकुव श्रीन युसा श्रीन यऊदा श्रीन समउन का भाइ नहीं?
श्रीन कया उसकी वहोनें यहां हमाने पास नहीं? श्रीन उनहों
४ ने उस से ठोकन प्याया। पनंतु यसु ने उनहें कहा की भवीसद-
वकता श्रादन नहीत नहीं केवल श्रपनेही देस में श्रीन श्रपनेही
५ कुटुंव में श्रीन श्रपनेही घन में। श्रीन वुह वहां कोइ श्रासयनज
कनम न कन सका केवल उसने हाथ नप्पके थोड़े नोगीयों को
६ यंगा कीया। श्रीन वुह उनके श्रवीसवास के कानन वीसमीत
ऊश्रा श्रीन यानों श्रोन के गांश्रों में उपदेस कनता फीना।

७ तब्र उसने उन ब्रारह को ब्रुलाया और उनहें दो दो करके
भेजने आरंभ कीया और उनहें अपवीतर आतमाओं पर
८ सामरथ दीया। और उनहें अगया की, की जातरा के लीये
एक लाठी को छोड़ कुछ न लेओ न झोली न रोटी न पटुके
९ में रोकड़। परंतु अपने पांव में पनपा पहीन लेओ और दो
१० अंगेर पहीनो। और उसने उनहें कहा की जहां कहीं कीसी
घर में जाओ जब्र लों उस सथान से न नीकलो वहीं रहो।
११ और जो कोइ तुमहें गरहन न करे और तुमहारी न सुने जब्र
तुम वहां से नीकलो तो उन पर साछी के लीये अपने चरन
की धुल झाड़ो मैं तुमहें सत कहता हुं की नयाय के दीन में
सदुम और अमुरा के लीये उस नगर से अधीक सहज होगा।
१२ और वे ब्राहर जाके परचारने लगे की लोग पसचाताप करें।
१३ और अनेक भीसायों को दुर कीया और ब्रहुत रोगीयों पर
१४ तेल लगा के चंगा कीया। और हीरुदीस राजा ने सुना
(कयोंकी उसका नाम फैल गया था) तब्र उसने कहा की यहीया
सनान कारक मीरत से जी उठा है इस लीये उस से अ सचरज
१५ करम दीखाइ देते हैं। औरों ने कहा की यह इलीयास है और
कीतनों ने कहा की एक भवीसदब्रकता है अथवा एक भवीसद-
१६ ब्रकता के समान। परंतु जब्र हीरुदीस ने सुना उसने कहा की
यह यहीया है जीसका मैं ने सीर कटवाया वही मीरत से
१७ जी उठा है। कयोंकी हीरुदीस ने अपने भाइ फैलब्रुस की
पतनी हीरुदीयास के लीये, जीसे उसने ब्रीयाहा था आपही
लोगों को भेज के यहीया को पकड़वाके ब्रंधन में डाला था।
१८ कयोंकी यहीया ने हीरुदीस से कहा था की आप को उचीत
१९ नहीं की अपने भाइ की पतनी रखें। इस लीये हीरुदीयास
उस से ब्रैर रखती थी और उसे घात कीया चाहती थी
२० परंतु न सकती थी। कयोंकी हीरुदीस यहीया को सजन
और पवीतर मनुष्य जानके उस से डरता था और उसे मानता

था और उसका उपदेस सुनके बहुत सी बातें पर चलता था
२१ और आनंद से उसे सुनता था। और जब औसर का दिन
आ पहुंचा कि हेरोदेस ने अपने जनम दिन में अपने बड़ों
और सेनापतियों और जलील के परधानों के लिये बिआरी
२२ बनाई। तब हेरोदियास की पुत्री भीतर आई और नाची
और हेरोदेस को, और उन्हें जो उसके संग बैठे थे प्रसन्न
किया तब राजा ने उस कन्या को कहा कि जो तेरी इच्छा होय
२३ मुझ से मांग और मैं तुझे देउंगा। और उसने उसके लिये
किरिया खाई कि मेरे आधा राज लों जो कुछ तू मांगेगी मैं तुझे
२४ देउंगा। और उसने जाके अपनी माता को पूछा कि मैं क्या
२५ मांगूं? उसने कहा कि योहन स्नानकारक का सिर। तब
वुह तुरंत बेग से राजा पास आई और यह कहके मांगा कि
मैं चाहती हूं कि एक थाल में योहन स्नानकारक का सिर
२६ अभी मुझे मंगवा दीजिये। तब राजा अति उदास हुआ परंतु
अपनी किरिया के और जेवनहारियों के लिये उसने न चाहा
२७ कि उसे फेरे। तब राजा ने तुरंत अपने एक पहरू को भेजके
आज्ञा की, कि उसका सिर लावे सो उसने जाके बंदी-
२८ गृह में उसका सिर काट डाला। और उसे एक थाल में
लाके उस कन्या को दिया और कन्या ने उसे अपनी माता
२९ को दिया। जब उसके सिष्यों ने सुना वे आके उसकी लोथ को
३० लेके समाध में रक्खा। और प्रेरित यिसु के पास एकठे होके
सब बातें को, जो उन्हों ने कीं और जो उन्हों ने सिखाईं
३१ उसे कहीं। तब उसने उन्हें कहा कि तुम सूने स्थान में
अलग चलो और तनिक बिस्राम करो क्योंकि वहां बहुत
आते जाते थे और उन्हें भोजन करने का भी अवकास न
३२ मिलता था। तब वे अलग नाव पर बैठके एक सूने स्थान में
३३ चले गये। और लोगों ने उन्हें जाते देखा और बहुतेरों ने
उसे चीन्हा और सारे नगरों से पांव पांव उधर दौड़े और

१४ उनसे आगे जा पऊंचे और एकठे उस पास आये। तब यसु
बाहर नीकल के बऊत से लोगों को देप्प के उन पर दयाल
ऊआ कयोंकी वे उन भेड़ों की न ई थे जीनका गड़ेरीया न होवे
१५ और वुह उनहें बऊत सा उपदेस करने लगा। और जब
दीन बऊत ढल गया उसके सीप्पों ने उस पास आके कहा की
१६ यह सुना सथान है और समय बऊत बीत गया। उनहें बीदा
कीजीये की वे चारों ओर के देसों और गाओं में जायें और
अपने लीये भोजन मोल लेवें कयोंकी उनके भोजन के लीये
१७ कुछ नहीं है। उसने उनहें उतर देके कहा की तुम उनहें
प्पाने को देउ तब वे उसे बोले की हम जायें और दो सौ सुकी
१८ की रोटी मोल लेके उनहें प्पाने को दें?। उसने उनहें कहा
की तुमहारे पास कीतनी रोटीयां हैं? जाके देप्पो और उनहों
१९ ने बुझ के कहा की पांच रोटीयां और दो मछलीयां। और
उसने उनहें अगया की, की हरी घास पर पांती पांती सभों को
४० बैठाओ। तब वे सौ सौ और पचास पचास की पांती बांध के
४१ बैठ गये। और जब उसने उन पांच रोटीयां और दो मछली-
यों को लीया तो सरग की ओर ताक के असीस दीया और
रोटीयों को तोड़ के अपने सीप्पों को दीया की उनके आगे
रप्पें और दो मछलीयों को भी भाग करके उन सभों को बांट
४२।४३ दीया। तब सब प्पाके तीरीपत ऊए। और उनहों ने
चुर चार से बारह टोकरीयां भरीं उठाई और मछलीयों से
४४ भी। और जीनहों ने रोटीयां प्पाई सो पांच सहस्र पुरुप्प
४५ के लग भग थे। और तुरंत उसने सीप्पों को दीरढ अगया की,
की नाव पर चढ़के आगे उस पार बैत सेदा को जाओ जब लों
४६ मैं लोगों को बीदा करूं। और जब उसने उनहें बीदा कीया
४७ वुह एक पहाड़ पर परारथना के लीये गया। और जब सांझ
ऊई नाव समुद्र के मध में थी और आप भुम पर अकेला था।
४८ और उसने उनहें प्पेवते प्पेवते परीसरम में देप्पा कयोंकी पवन

उनके सनमुष्प था श्रीन नात के यौथे पहन में समुदन पन यलते
यलते वुह उनके पास श्राया श्रीन उनसे श्रागे वढ़ यला था।
४९ पनंतु जव उनहें ने उसे समुदन पन यलते देष्पा तो भनम
५० समझ के यीला उठे। कयोंकी उसे देष्पके सव वयाकुल
ऊए श्रीन उसने तुनंत उन से वानता कनके कहा की सुसथीन
५१ होश्रो मत डनो मैं ऊं। श्रीन वुह उन पास नाव पन गया श्रीन
पवन थम गया श्रीन वे श्राप में वेपनीमान श्रती वीसमीत ऊए
५२ श्रीन श्रासयनज कीया। कयोंकी उनहें ने उन नोटीयों के
श्रासयनज को न सोया थ इस कीये की उनका श्रनतःकनन
५३ कठोन ऊश्रा। श्रीन जव वे पान पऊंये तो जनेसनत के देस में
५४ श्राये श्रीन तीन पन गये। श्रीन जव वे नाव से उतन श्राये
५५ तुनंत लोगों ने उसे पहीयाना। श्रीन उस देस की यानों
श्रीन दैाड़े श्रीन नोगीयों को प्पाटों पन उठा उठा के वहां लाते
५६ थे जहां उनहें ने सुना था की वुह है। श्रीन जहां कहीं गाश्रों
में श्रथवा नगनों में श्रथवा देस में वुह जाता था उनहें ने नोगी-
श्रों को मानगों में नष्पा श्रीन उसकी वीनती की, की हम केवल
श्राप के वसतन का प्पुंट लों कुवें श्रीन जीतनों ने कुश्रा यंगे
हो गये।

७ सातवां पनव।

सीष्पों पन फनीसीयों का दोष्प लगाना श्रीन यसु
का उतन १—१३ श्रसुचता के वीष्पय में यसु का
उपदेस १४—२३ ऐक कंनया को यंगा कनता है
२४—३० श्रीन ऐक गुंगे वहीने को ३१—३७।

१ तव कइ फनीसी श्रीन श्रयापक, जो यनोसलीम से श्राये थे,
२ उस पास ऐकठे ऊए। श्रीन जव उनहें ने उसके कीतने सीष्पों
को असुच अनथात वीन धोये हाथों से नोटी प्पाते देष्पा तो

३ दोष्प दीया। कयोंकी फरीसी और सारे यहूदी पुरायीनों
के ब्रेवहारों को मान मान के बार्न बार बीना हाथ धोये नहीं
४ प्याते हैं। और हाट से आके बीना सनान कीये नहीं प्याते
हैं और बहुतेरी अनेक रीत हैं जो उनहों ने गरहन करके
मान लीया है जैसा की कटोरा कटोरी और पीतल के बरतन
५ और मंच का धोना। तब फरीसीयों और अधापकों ने उसे
पुछा की आप के सीष्प पुरायीन के ब्रेवहार पर कयों नहीं
६ यलते परंतु बीन धोये हाथों से रोटी प्याते हैं?। उसने
उतर देके उनहें कहा की आसाया ने भवीस से तुम कपटीयों
के बीष्पय में भला कहा जैसा लीष्पा है की ये लोग होठों से
७ मेरा आदर करते हैं परंतु उनका मन मुह से दुर है। पथापी
वे बीरथा मेरी सेवा करते हैं की मनुष्पो की अगया को अवेस
८ ठहरा के सीष्पावते हैं। कयोंकी ईसर की अगया को टाल के
तुम मनुष्पों के ब्रेवहार को मानते हो जैसा की कटोरा कटोरी
९ का धोना और ऐसी ऐसी अनेक बात हैं जो करते हो। और
उसने उनहें कहा की तुम ईसर की अगया को भली रीत से
१० टाल देते हो जीसतें अपनेही ब्रेवहार में रहो। कयोंकी मुसा
ने कहा है की अपनी माता पीता का आदर कर और जो
कोई माता अथवा पीता को धीकारे वुह नीसयय मारा जाय।
११ परंतु तुम कहते हो की यदी मनुष्प अपनी माता अथवा पीता
को कहे की जो कुछ तुझे मुझ से लाभ मील सकता था सो कुर-
१२ बान है अरथात अरपन कीया गया। और आगे को तुम उसे
१३ माता अथवा पीता के लीये कुछ करने नहीं देते। सो अपना
ब्रेवहार ठहरा के ईसर के बयन को बयरथ करते हो और
१४ ऐसी ऐसी अनेक बात मानते हो। और उसने सब लोगों को
बुला के उनहें कहा की हर ऐक मेरी सुनो और समझो।
१५ मनुष्प के बाहर बाहर कोई बसत् नहीं जो उस में पैठ के उसे
असुध कर सके परंतु जो जो उस में से नीकलती हैं सो सो हैं

१६ जो मनुष्य को असुच कनती हैं। जो कीसी के कान सुनने के
१७ लीये होय्न तो सुने। औान जव्र वुह लोगों के पास से घन में
गय्ना उसके सीष्यों ने उस दानीसटांनत के व्रीष्यय्न में उसे पुछा।
१८ तव्र उसने उनहें कहा की तुम भी ऐसे अव्रोध हो? तुमहें नहीं
सुहता की जो व्राहन से मनुष्य में पैठती है सो उसे असुच नहीं
१९ कन सकती। इस कानन की वुह उसके मन में नहीं पैठती
पनंतु ओादन में औान साने भोजन को सुच कनके संडास में
२० नीकलती है। औान उसने कहा की जो मनुष्य से नीकलती है
२१ सो मनुष्य को असुच कनती है। कय्नोंकी मनुष्यों के मन में से
२२ वुनी चीनता, पनइसतीनी गमन, व्रेभीचान, हतय्ना,। चोनी,
लालच, दुसटता, छल, छीनालपन, कुदोनीसट, पाषंडता, अहं-
२३ कान, मुनषता। ये सव्र वुने वुने कनम भीतन से नीकल के मनुष्य
२४ को असुच कनते हैं। तव्र य्नसु वहां से उठ के सुन औान सैदा
के सीवानों में गय्ना औान उसने एक घन में जाके चाहा की कोइ
२५ न जाने पनंतु वुह छीपाय्ना न जा सकता था। कय्नोंकी एक
इसतीनी जीसकी कंनय्ना पन असुच आतमा था उसका समाचान
२६ सुन के आइ औान उसके चनन पन गीनी। वुह इसतीनी
युनानी औान सनफुनीकी के देसी थी उसने उसकी व्रीनती की,
२७ की आप पीसाच को मेनी पुतनी पन से दुन कनीये। पनंतु
य्नसु ने उसे कहा की पहीले व्रालकों को तीनीपत होने दे
कय्नोंकी उचीत नहीं की व्रालकों की नोटी लेके कुतों के आगे
२८ फेंकीये। तव्र उसने उतन देके उसे कहा की ठीक है पनभु
तथापी कुतते भी मय के नीचे व्रालकों की नोटी का चुन चान
२९ खाते हैं। तव्र उसने उसे कहा की इस कहने के लीये चली जा
३० वुह पीसाच तेनी पुतनी से उतन गय्ना। औान जव्र वुह अपने घन
पहुंची उसने देषा की पीसाच उतन गय्ना औान उसकी पुतनी
३१ खाट पन लेटी है। औान फीन वुह सुन औान सैदा के सीवानों
से नीकलके सद नगन के सीवाने के मध से जलील के समुद्दन

१२ की ग्रोन ग्राया। तव्र वे ग्रेक व्रहीने मनुप्प को जो तोतला के
व्रोलता था उस पास लाये ग्रोन उसकी व्रीनती की, की ग्रपना
१३ हाथ उस पन घनीये। ग्रोन वुह उसे उस मंडली से ग्रलग ले
गया ग्रोन ग्रपनी ग्रंगुलीयां उसके कानों में डालीं ग्रोन थुक के
१४ उसके जीम्न को छुग्रा। ग्रोन सनग की ग्रोन देप्पते ऊप्रे हाय
१५ कीया ग्रोन उसे कहा की ग्रप्फता ग्रनथात प्पुल जा। ग्रोन
तुनंत उसके कान प्पुल गये ग्रोन उसकी जीम्न का व्रंधन ढीला
१६ ऊग्रा ग्रोन वुह प्पोल के व्रोलने लगा। ग्रोन उसने उनहें
ग्रगया की, की कीसी को न कहो पनंतु जीतना उसने उनहें
१७ व्रनजा था तीतना वे उसे ग्रधीक पनयानते थे। ग्रोन
व्रेपनीमान व्रीसमीत होके कहने लगे की उसने सव्र कुछ ग्रछा
कीया है वुह व्रहीनों को सनोता ग्रोन गुंगों को व्रकता कनता है।

८ आठवां पनव्र।

यसु मंडलीयों को म्नोजन कनाता है १—९ पनीसी-
यां को लछन देने को नाह कनता है १०—१३
सीप्पों को उपदेस कनता है १४—२१ ग्रेक ग्रंधे को
यंगा कनता है २२—२६ पतनस का व्रीसवास ग्रोन
यसु के कसट पाने का आगम व्रयन २७—३३ यसु
का उपदेस ३४—३८।

१ उसी समय में, जव्र मंडली व्रऊत ऊइ ग्रोन उन पास कुछ
२ म्नोजन न या यसु ने ग्रपने सीप्पों को व्रुला के उनहें कहा। की
मंडली पन मुहे दया ग्राती है कयोंकी वे तीन दीन से मेने संग
३ हैं ग्रोन कुछ प्पाने को नहीं नप्पते। ग्रोन जो मैं ग्रपने ग्रपने
घन उनहें उपवासी म्नेजुं वे मानग में मीनव्रल हो जायेंगे कयोंकी
४ कीतने उनमें दुन से ग्राये थे। तव्र उसके सीप्पों ने उसे उतन
दीया की मनुप्प इस व्रनन में कहां से उनहें नोटी से तीनीपत

५ कन सके?। तव़ उसने उनहें पुछा की तुमहाने पास कीतनी
६ नोटीय़ां है? वे व़ोले का सात। तव़ उसने लोगों को अगय़ा
की, की भुम पन व़ैठ जाओ और उसने उन सात नोटीय़ों को
ले कन धंनव़ाद कनके तोड़ा और अपने सीष्यन को दीय़ा की
७ उनके आगे धनें और उनहों ने लोगों के आगे नष्पा। और
उन पास कइ ऐक छोटा मछलीय़ां थीं उसने धंनव़ाद कनके
८ अगय़ा की, की उनहें भी आगे धनो। सो वे भोजन कनके
तीनीपत ऊए और उनहों ने युन यान से, जो व़य नहे थे सात
९ टोकनीय़ां उठाइं। और जीनहों ने भोजन कीय़ा था सो
यान सहसन के लग भग थे तव़ उसने उनहें व़ीदा कीय़ा।
१० और तुनंत वुह अपने सीष्यों के संग नाव पन यढ़ व़ैठा और
११ दाल मनुथा के सीवाने में आय़ा। तव़ फनीसी नीकले और
उसकी पनीछा कनके उस से पनसंन कनके सनग से ऐक लछन
१२ याहा। तव़ उसने अपने मन में अती हाय़ कनके कहा की
य़ह पीढ़ी कीस कानन लछन ढुंढ़ती है मैं तुमहें सत कहता ऊं
१३ की इस पीढ़ी को कोइ लछन दीय़ा न जाय़गा। और वुह
१४ उनहें छोड़ के नाव में होके उस पान यला गय़ा। और नोटी
लेने को भुल गय़े थे और उनके संग नाव पन ऐक नोटी से
१५ अधीक न थी। तव़ उसने उनहें अगय़ा कनके कहा की देष्यो
फनीसीय़ों के ष्मीन और हीनुदीस के ष्मीन से यौकस नहो।
१६ तव़ वे आपुस में युं व़ीयानने लगे की य़ह इस कानन है की
१७ हमाने पास नोटी नहीं। और जव़ य़सु ने जाना उसने उनहें
कहा की तुम कय़ों व़ीयानते हो की य़ह इस कानन है की
हमाने पास नोटी नहीं? तुम अव़ लों नहीं जानते और नहीं
१८ व़ुझते? तुमहाना मन अव़ लों कठोन है?। आंष्य नष्पते
ऊए नहीं देष्यते? और कान नष्पते ऊए नहीं सुनते? और
१९ तुम समनन नहीं कनते?। जव़ मैं ने पांय नोटीय़ों को पांय
सहसन के कानन तोड़ा तुमने युन यान से कीतनी टोकनीय़ां

२० भनी उठाइं? उनहों ने उसे कहा की व़ानह। औान जव़
यान सहसन के कानन सात तुम ने युन यान से कीतनी टोक-
२१ नीय़ां भनी उठाइं? उनहों ने कहा की सात। औान उसने
उनहें कहा की य़ह कय़ोंकन है की तुम नहीं वुझते?।
२२ औान वुह व़ैतसैदा में आय़ा तव़ वे उसके पास ऐक अंधे
२३ मनुष्य को लाय़े औान उसकी व़ीनती की, की उसे छुवें। औान
वुह उस अंधे मनुष्य का हाथ पकड़ के नगन के व़ाहन ले गय़ा
औान उसने उसकी आंष्पों पन थुक के औान अपना हाथ उसपन
२४ नष्प के उसे पुछा की तु कुछ देष्पता है?। उसने उतन देष्प
के कहा की मैं मनुष्यों को पेड़ की नाइं यलते देष्पता ड़ं।
२५ तव़ उसने उसकी आंष्पों पन हाथ फेन नष्पा औान उसे उपन
दीष्पाय़ा तव़ वुह यंगा होगय़ा औान हन ऐक मनुष्य को
२६ फनकाइ से देष्पा। औान उसने उसे य़ह कहके अपने घन
भेजा की नगन में मत जा औान कीसी से नगन में मत कह।
२७ तव़ य़सु औान उसके सीष्य कैसनाय़ः फैलव़ुस के नगनों में
गय़े औान उसने मानग में अपने सीष्पों से पुछा की मनुष्य कय़ा
२८ कहते हैं की मैं कौान ड़ं?। उनहों ने उतन दीय़ा की य़हीय़ा
सनानकानक, पनंतु कीतने की इलीय़ास, औान कीतने की
२९ भवीसदव़कतों में से ऐक। उसने उनहें कहा पनंतु तुम कय़ा
कहते हो मैं कौान ड़ं? पतनस ने उतन देके उसे का की
३० आप मसीह हैं। तव़ उसने उनहें अगय़ा की, की मेने व़ीष्पय़
३१ में कीसी से मत कहो। फेन उसने उनहें उपदेस कनना आनंभ
कीय़ा की मनुष्य के पुतन को आवेसक है की व़ड़त दुष्प उठावे
औान पनायीनों औान पनधान य़ाजकों औान अधापकों से तय़ाग
कीय़ा जाय़ औान मान जाय़ औान तीन दीन पीछे फेन उठे।
३२ औान उसने य़ह व़यन ष्पोल के कहा तव़ पतनस उसे लेके डांटने
३३ लगा। पनंतु वुह घुम कन अपने सीष्यों की औान देष्पके पतनस
को घुनक के व़ोला की हे सैतान मेने पीछे जा कय़ोंकी वे व़सतें

जो इसन की हैं तुझे नहीं सोझातीं पनंत वे वसतें जो मनुष्य
३४ की हैं। औान जव उसने सीष्पों के संग लोगों को वुलाया उसने
उनहें कहा की जो कोइ मेने पीछे आया याहे सो अपनी
इक्षा को तयागे औान अपने कुनुस को उठा ले औान मेने पीछे
३५ आवे। कयोंकी जो कोइ अपने पनान को वयावेगा उसे गंवा-
वेगा पनंतु जो कोइ मेने औान मंगल समायान के कानन अपने
३६ पनान को गंवावेगा सोइ उसे वयावेगा। कयोंकी मनुष्य को
कया लाभ होगा यदी वुह सानें जगत को कमावे औान अपने
३७ पनान को गंवावे?। अथवा मनुष्य अपने पनान की संती
३८ कया देगा?। इस कानन जो कोइ इस पनइसतीनी गामी औान
पापमय पीढ़ी में मुझसे औान मेने वयन से लजावेगा मनुष्य का
पुतन भो, जव वुह अपने पीता के प्रेसयनय में पवीतन दुतों के
संग आवेगा उस से लजायेगा।

९ नवां पनव।

मसीह के नुप का वदलना १—१० वताना की यहीया
सनानकानक इलीयास है ११—१३ गुंगे वहीने
आतमा को दुन कनना १४—२९ अपनी मीनत
का आगम वयन ३०—३२ सीष्पों को दपटता है
३३—३७ उनहें उपदेस कनता है ३८—४२ ननक
की पीड़ा से वयने का उपदेस ४३—५०।

१ तव उसने उनहें कहा की मैं तुम से सत कहता हूं की इन में
से कीतने यहां ष्पड़े हैं जो मीनत का सवाद न यीष्पेंगे जव
२ लों इसन के नाज को पनाकनम से आते न देष्पें। औान छः
दीन वीते यसु पतनस औान याकुव औान यहना को लेके अलग
उनहें प्रेक उंय पहाड़ पन ले गया औान उनके आगे उसका नुप
३ औान ही हो गया। औान उसका वसतन यमकने लगा औान

पाला के समान बज्जत उजला हो गया। जैसा की कोइ धोबी
४ पीनथीवी पन उजला नहीं कन सकता। चैान उनहें मुसा के
संग इलीयास दीष्पाइ दीया चैान वे यसु से बात यीत कनते
५ थे। तब पतनस ने उतन देके यसु से कहा की हे गुनु हमने
ला ये यहां नहना अछा है चैान तीन तंबु बनावें ऐक आप के
६ लीये ऐक मुसा के लीये चैान ऐक इल यास के लीये। इस
लीये की वुह न जानता था की कया कहे कयोंकी वे बज्जत डन
७ गये। तब ऐक मेघ ने उन पन छाया की चैान उस मेघ से ऐक
सबद यह कहते ज्जऐ नीकला की यह मेना पीनय पुतन है
८ उसको सुनो। चैान तुनंत जब उनहों ने याने चैान दीनीसट
९ की तो केवल यसु को छोड़ कीसी मनुष्य को न देष्पा। चैान
जब वे पहाड़ स उतनते थे उसने उनहें अगया की, की ये बसतें,
जो तुमने देष्पीं, जब लों मनुष्य का पुतन मीनतकों में से न उठे,
१० कीसी से मत कहीयो। चैान वे उस बयन को अपने हीमें
नष्प के आपुस में यनया कनने लगे की मीनतु से उठने का कया
११ अनथ है। फेन उनहों ने यह कहके उस से पुछा की अधापक
कयों कहते हैं की पहीले इलीयास का आना अवेस है?।
१२ उसने उतन देके उनहें कहा की इलीयास का पहीले आना
चैान सब कुछ को सुधानना ठीक है चैान मनुष्य के पुतन की
अवसथा में कयोंकन लीष्पा है की वुह अवेस बज्जत दुष्प उठावे
१३ चैान नीनदीत कीया जाय। पनंतु मैं तुमहें कहता ज्जं की इली-
यास तो ठीक आयुका है चैान जो कुछ उनहों ने याहा उस से
१४ कीया जैसा उसके बीष्पय में लीष्पा है। चैान जब वुह सीष्पों के
पास आया उनके आस पास उसने ऐक बड़ी मंडली चैान अधापकों
१५ को उनसे पनसन कनते देष्पा। तब तुनंत सब लोग उसे देष्पके
१६ अती बीसमीत होके दैाड़े आये चैान पननाम कीया। सो उसने
१७ अधापकों से पुछा की तुम उनसे कया पुछते हो?। तब मंडली में
से ऐक ने उतन देके कहा की हे गुनु मैं अपने पुतन को आप

१८ के पास लाया हूं जीस पन प्रेक गुंगा आतमा है। श्रीन वुह
जहां कहीं उसे ले जाता है उसे पराड़ता है श्रीन वुह फेन
वुहता श्रीन श्रान दंत कीचकीचाता है श्रीन गलाजाता है
श्रीन मैं ने श्राप के सीष्पे से कहा की उसे दुन कनो पनंतु वे
१९ न सके। उसने उत्तन देके उसे कहा की हे श्रवीसवासी पीढ़ी
मैं कव लों तुमहानेसंग नहूं? श्रीन मैं कव लों तुमहानी सहूं?
२० उसे मेने पास लाश्रो। तव वे उसे उस पास लाये श्रीन जव उस
ने उसे देष्पा तुनंत उस श्रातमा ने उसे पराड़ा श्रीन वुह भुम
२१ पन गीना श्रीन फेन वहा के लोट गया। श्रीन उसने उसके
पीता से पुछा की उसे यह कीतने दीन से हुश्रा है? उसने
२२ कहा की लड़काई से। श्रीन नास कनने के लीये उसने उसे
श्राग में श्रीन जल में वानंवान फेंका पनंतु यदी श्राप कुछ
२३ कन सकें तो हम पन दयाल होके सहाय कीजीये। तव यसु ने
उसे कहा की जो तु वीसवास लासके तो सव कुछ वीसवासीयों
२४ के लीये हो सकता है। तव उस वालक का पीता तुनंत चीलाया
श्रीन श्रांसु वहाके वोला की हे पनभु मैं वीसवास लाता हूं
२५ मुह श्रवीसवासी का उपकान कीजीये। जव यसु ने देष्पा की
लोग दौड़े श्राते हैं उसने श्रपवीतन श्रातमा को घुनक के कहा
की श्रने गुंगे श्रीन वहीने श्रातमा मैं तुझे श्रगया कनता हूं की
२६ उस से वाहन नीकल श्रीन उसमें फेन मत पैठ। तव वुह
चीलाया श्रीन उसे श्रतयंत पराड़ के उस से नीकल श्राया श्रीन
वुह मीनतक समान होगया यहां लों की वहुतों ने कहा की
२७ वुह मन गया। पनंतु यसु ने उसका हाथ पकड़के उसे उठाया
२८ श्रीन वुह उठा। श्रीन जव वुह घन में श्राया उसके सीष्प ने
२९ प्रेकांत में उसे पुछा की हम उसे दुन कयों न कन सके?। उस
ने उनहें कहा की इस नीत की पनानथना श्रीन वनत को छोड़
३० कीसी भांत से नहीं नीकल सकता। फेन वे वहां से चले श्रीन
जलील से होके नीकल गये श्रीन उसने चाहा की कोई मनुष्य

३१ न जाने। इस लीये उसने अपने सीष्यों को उपदेस कीया और
उन्हें कहा की मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथों में सौंपा जाता
है और वे उसे मार डालेंगे और मारे जाने के पीछे वुह तीसरे
३२ दीन उठेगा। परंतु उन्हों ने यह कहना न समझा और उसे
३३ पुछने को डरे। फीर वुह कपरनाहूम में आया और
घर में होते हुए उसने उन्हें पुछा की मारग में तुम आपुस
३४ में कया चरचा करते थे?। परंतु वे चुप रहे कयोंकी
मारग में वे आपुस में चरचा करते थे की सब में बड़ा कौन?।
३५ और उसने बैठ के उन बारहों को बुलाया और उन्हें कहा
की यदी कोई मनुष्य अगीला हुआ चाहे तो सब से पीछे और
३६ सब का दास होगा। और उसने एक बालक को लेकर उनके
मध में बैठाया और जब उसने उसे गोद में लीया उसने उन्हें
३७ कहा। जो कोई मेरे नाम से ऐसे एक बालकों को ग्रहन करे
मुझे ग्रहन करता है और जो कोई मुझे ग्रहन करे मुझे
३८ नहीं परंतु उसे जीसने मुझे भेजा ग्रहन करता है। तब
युहन्ना उसे उत्तर देके कहने लगा की हे गुरु हमने एक को
आपके नाम से पीसाचों को दुर करते देष्पा और वुह हमारे
संग नहीं आता और हमारे संग न आने के कारन हमने उसे
३९ बरजा। तब यसु ने कहा की उसे मत बरजो कयोंकी कोई
मनुष्य नहीं है जो मेरे नाम से आसचरज करके सहज से मेरे
४० बीषय में बुरा कह सके। कयोंकी वुह जो हमसे बीरुध नहीं
४१ हमारा संगी है। इस लीये मसीह के होने के कारन मेरे
नाम पर जो कोई तुम्हें एक कटोरा जल पीने को देवे मैं तुम
४२ से सत कहता हुं की वुह अपना प्रतीफल न ष्पोवेगा। और
जो कोई छोटों में से एक को, जो मुझ पर बीसवास रष्पता है
ठोकर ष्पीलावे उसके लीये अती भला है की उसके गले में एक
चकी का पाट लटकाया जाता और वुह समुद्र में फेंका जाता।
४३ और यदी तेरा हाथ तुझे ठोकर ष्पीलावे तो उसे काट डाल

कयोंकी टुंडा जीवन में पड़ंयना तेने लीये उस से भला है की
दो हाथ नष्पते ऊये ननक की उस आग में, जो कधी नहीं
४४ वुहुती डाला जाय। जह उनका कीड़ा नहीं मनता औन
४५ आग नहीं वुहुती। औन यदी तेना पांव तुहे ठाकन ष्पीलावे
तो उसे काट डाल कयोंकी लगड़ा जीवन में पड़ंयना तेने लाये
उस से भला है की दो पांव नष्पते ऊये ननक के उस आग में,
४६ जो कधी नहीं वुहेगी डाला जाय। जहां उनका कोड़ा नहीं
४७ मनता औन आग नहीं वुहुती। औन यदी तेनी आंष्प तुहे
ठाकन ष्पीलावे तो उसे नीकाल डाल कयोंकी ईसन के नाज
में काना पड़ंयना तेने लाये उस से भला है की दो आंष्प नष्पते
४८ ऊये ननक की आग में डाला जाय। जहां उनका कीड़ा नहीं
४९ मनता औन आग नहीं वुहुती। कयोंकी आग से हन एक
लोना कीया जायगा औन हन एक जग लोन से लोना कीया
५० जाइगा। लोन अछा है पनंतु यदी लोन का सवाद जाता नहे
तो उस को कीस से सवादीत कनोगे आप में लोन नष्पो। औन
आपुस में मेल नष्पो।

१० दसवां पनव।

उपदेस कनके यसु परीसोयों को उतन देता है
१—१२ वालकों को आसीस देता है १३—१६
घनमान को उपदेस कनता है १७—३१ अपनी
मीनतु औन जी उठने का आगम वयन औन दो
सीष्पों को दपटना ३२—४५ अंधा वानतमी को यंगा
कनता है ४६—५२।

१ फीन वहां से उठके वह यनदन के उस पान यहूदीयः के
सीवानों में आया औन लोग उसके पास फेन एकठे ऊये औन
२ उसने अपने वेवहान पन फेन उनहें उपदेस कीया। तव

फरीसीयों ने परीछा करते उस पास आके उस से पुछा की
२ उचीत है की मनुष्य अपनी पतनी को तयाग करे?। उसने
उतर देके उनहें कहा की मुसा ने तुमहें कया आगया की?।
४ वे बोले की मुसा ने तयाग पतर लीष्पने औार छोड़ने को दी।
५ तब यसु ने उतर देके उनहें कहा की उसने तुमहारे मन की
६ कठोरता के लीये तुमहें यह आगया लीषी। परंतु स्रीसट
के आरंभ से इसर ने उनहें नर औार नारी उतपंन कीया।
७ इस कारन मनुष्य अपनी माता पीता को छोड़ेगा औार अपनी
८ पतनी से मीला रहेगा। औार वे दोनों एक मांस होंगे सो वे
९ दो नहीं परंतु एक मांस हैं। इस लीये जीसे इसर ने जोड़ा
१० है मनुष्य अलग न करे। औार घर में उसके सीष्यों ने वही बात
११ फेर उस से पुछी। तब उसने उनहें कहा की जो कोइ अपनी
पतनी को तयागे औार दुसरी को बीयाहे सो उसके बीरुध
१२ बीभीयार करता है। औार यदी इसतीरी अपने पती को
तयागे औार दुसरे से बीयाही जाय वुह बीभीयार करती है।
१३ फीर वे उसके पास बालकों को लाये की वुह उनहें छुवे पर
१४ जो लाते थे सीष्यों ने, उनहें घुरक दीया। परंतु यसु देष्य के
अपरसंन हुआ औार उनहें बोला की बालकों को मेरे पास
आने देओ औार उनहें मत बरजो कयोंकी इसर का राज
१५ एसों का है। मैं तुमहें सत कहता हुं की जो छोटे बालक के
समान इसर के राज को गरहन न करे सो उस में न पइंयगा।
१६ औार उसने उनहें गोद में लीया औार उन पर हाथ रष्य के
उनहें आसीरबाद दीया।

१७ औार जब वुह मारग में जाता था एक मनुष्य दौड़ा आया
औार उसके आगे घुटना टेक के उस से पुछा की हे उतम गुरु,
मैं कया करुं जीतें अनत जीवन का अधीकारी होउं?।
१८ यसु ने उसे कहा की तु मुझे कयों उतम कहता है? उतम कोइ
१९ नहीं परंतु केवल एक इसर। तु आगया को जानता है,

वैभीयार मत कर, हत्या मत कर, योरी मत कर, झुठी साक्षी
२० मत दे, छल मत दे, अपनी माता पीता का सनमान कर। तब
उसने उत्तर देके उसे कहा की हे गुरु यह सब मैं ने अपने
२१ छुटपन से माना है। यसु ने उसे देष्य के उसे पीआर कीया
और उसे कहा की तुझे एक बात घटी है जाके जो कछु तेरा
है बय डाल और कंगालों को दे और तु सरग में घन पावेगा
२२ और कुरुस उठा के मेरे पीछे यला आ। वुह उस बात से
२३ उदास होके यला गया कयोंकी उसकी बड़ी संपत थी। तब
यसु ने यारों ओर देष्य के अपने सीष्यों से कहा की घनमान
२४ को सरग के राज में पहुंयना कैसाही कठीन है। तब सीष्य
उसके बयन से वीसमीत हुए परंतु यसु ने फेर उत्तर देके
उनहें कहा की हे बालको जो घन पर आसरा रष्यते हैं उनके
२५ लीये इसर के राज में पहुंयना कैसा कठीन है। सुई के छेद
में से उंट का जाना उस से सहज है की एक घनमान इसर के
२६ राज में पहुंये। और वे बेपरीमान आसयरज करके आपुस
२७ में कहने लगे तो कौन तरान पा सकता है?। यसु ने उन
पर दीसट करके कहा की मनुष्य से अन होना है परंतु इसर
२८ से नहीं कयोंकी इसर से सब कुछ हो सकता है। तब पतरस
उसे कहने लगा की देष्यीये हमने सब कुछ छोड़ा है और आप
२९ के पीछे यले आये। तब यसु ने उत्तर देके कहा की मैं तुमहें
सत कहता हुं की ऐसा कोई मनुष्य नहीं जीसने घर अथवा
भाइ अथवा बहीन अथवा माता अथवा पीता अथवा पतनी
अथवा संतान अथवा भुम को मेरे और मंगल समायार के लीये
३० छोड़ा है। परंतु अब इस समय में वुह सौ गुना घर और
भाइ और बहीन और माता और बालक और भुम सताये
जाने के साथ पावेगा और अगले जगत में अनंत जीवन।
३१ परंतु बहुतेरे अगीले पीछले और पीछले अगीले होंगे।
३२ और वे मारग में यरोसलोम को जाते थे और यसु उनके

आगे आगे जाता था और वे बीसमीत हुए और डरते हुए
पीछे पीछे जाते थे और उसने फेर उन बारह को लीया और
३३ अपने पर जो बीतना था सो उन्हें कहने लगा। की देखो हम
यरोसलीम को जाते हैं और मनुष्य का पुत्र परधान याजकों
और अधापकों को सौंपा जायगा और वे उसे बधन करने की
३४ आग्या देंगे और उसे अनदेसीयों को सौंपेंगे। और वे उस
पर ठठा करेंगे और उसे कोड़े मारेंगे और उस पर थुकेंगे और
उसे मार डालेंगे और वुह तीसरे दीन फेर उठेगा।
३५ तब जबदी के बेटे याकुब और युहना उस पास आके कहने
लगे की हे गुरु हम चाहते हैं की जो कुछ हमारी इछा है
३६ आप हमारे लीये करीये। उसने उन्हें कहा की तुम क्या
३७ चाहते हो की मैं तुम्हारे लीये करूं। वे उसे बोले की हमारे
लीये यह कीजीये की हम एक आप के दहीने हाथ और
३८ दुसरा आप के बाएं हाथ आप के ऐसर्य में बैठें। यसु ने
उन्हें कहा की तुम नहीं जानते की क्या मांगते हो जीस कटोरे
से मैं पीता हूं तुम उस से पी सकते हो? और जीस सनान से
३९ मैं सनान पाता हूं सनान पा सकते हो?। वे उसे बोले की
हम सकते हैं तब यसु ने उन्हें कहा की तुम ठीक उस कटोरे से
जीस से मैं पीता हूं पीओगे और जीस सनान से मैं सनान पाता
४० हूं तुम सनान पाओगे। परंतु मेरे दहीने और बाएं हाथ
बैठना उन्हें छोड़ के जीनके कारन सीध कीया गया मेरे देने
४१ में नहीं है। और जब दसों ने सुना तो याकुब और युहना
४२ से अती अपरसंन हुए। तब यसु ने उन्हें पास बुलाके कहा
की तुम जानते हो की जो अनदेसीयों के परधान हैं सो उन
पर परभुता करते हैं और उनके बड़े लोग उन पर पराक्रम
४३ दीखाते हैं। पर तुम में ऐसा न होगा परंतु जो कोई तुम में
४४ बड़ा हुआ चाहे सो तुम्हारा सेवक होवेगा। और जो कोई
४५ तुम में मुखीआ हुआ चाहे सो सब का सेवक होगा। क्योंकी

मनुष्य का पुतन भी सेवा कनवाने नहीं आया पनंतु सेवा कनने
४६ ग्रैान वहुतों को छुड़ाने के लीये अपना पनान देने आया। ग्रैान
वे अनीहा में आये ग्रैान जव वुह ग्रैान उसके सीष्य ग्रैान ग्रेक
वड़ी मंडली अनीहा से नीकली तो तीमी का वेटा वनतीमी
४७ अंघा मानग की ग्रैान वैठ के भीष्य मांगता था। ग्रैान जव
उसने सुना की वुह नासनी यसु है वुह यीला के कहने लगा
४८ की हे दाउद के वेटे यसु मुह पन दया कीजीये। ग्रैान वहु-
तेनों ने उसे घुनक के कहा की यप नह पनंतु वुह अघीक
४९ यीलाया की हे दाउद के वेटे मुह पन दया कीजीये। यसु
ने खड़ा होके उसे वुलाने की अगया की तव उनहों ने यह
कह के उस अंधे मनुष्य को वुलाया की सुसथीन हो उठ वुह तुहे
५० वुलाता है। ग्रैान वुह अपने वसतन को फेंकते हुये उठा
५१ ग्रैान यसु के पास आया। तव यसु ने उतन देके उसे कहा की
तु अपने लीये मुह से कया कनवाने याहता है? उस अंघे
मनुष्य ने उसे कहा की हे पनभु मैं अपनी दीनीसट पाउं।
५२ यसु ने उसे कहा की यला जा तेने वीसवास ने तुहे यंगा कीया
है ग्रैान तनंत उसने अपनी दीनीसट पाइ ग्रैान मानग में यसु
के पीछे पीछे यला गया।

११ गयानहवां पनव।

यसु यनोसलीम में जाता है १—११ ग्रेक गुलन पेड़
को सनाप देता है १२—१४ वैपानीयों को मंदीन
से दुन कनता है १५—१९ वीसवास का पनाकनम
ग्रैान पनानयना का गुन २०—२६ याजकों ग्रैान
अघापकों का मुंह वंद कनता है २७—३३।

१ ग्रैान जव वे यनोसलीम के लग जलपाइ पहाड़ के पास
वैतफगजा ग्रैान वैतीना में आये तो उसने अपने सीष्यों में से दो

२ को भेजा। औन उनहें कहा की अपने सनमुप्प के गांव में
जाओ औन उस में पहुंचते ही ऐक वंधा हुआ वछेना पाओगे
३ जीस पन कोइ मनुप्प नहीं चढ़ा उसे प्पोल के ले आओ। औन
यदी कोइ तुमहें कहे की ऐसा कयों कनते हो? तो कहीयो
की पनभु को उसका आवेसक है औन वुह तुनंत उसे भेजेगा।
४ तव वे गये औन दुवान के पास वाहन ऐक सथान में, जहां दो
मानग मीलता था, उस वछेने को पाया औन उसे प्पोला।
५ औन उन में से कीतनों ने, जो वहां प्पड़े थे, उनहें कहा की
६ वछेने को कयों प्पोलते हो?। उनहों ने यसु की अगया के
७ समान उतन दीया तव उनहों ने उनहें जाने दीया। तव वे
उस वछेने को यसु पास लाये औन अपने वसतनों को उस पन
८ वीछाया औन वुह उस पन चढ़ वैठा। औन वहुतों ने अपने
वसतनों को मानग में वीछाया औन औनों ने पेड़ों की डालीयां
९ काटीं औन मानग में वीथनाइं। औन जो आगे पीछे जाते
थे सो पुकानने लगे की होसाना, उस पन आसीनवाद जो पन-
१० मेसन के नाम से आता है। हमाने पीता दाउद के नाज पन,
जो पनमेसन के नाम से आता है, आसीनवाद अतयंत उंचे
११ में होसाना। औन यसु यनोसलीम में औन मंदीन में गया
औन जव उसने चानों औन सव कुछ देप्पा तो वुह वानहों के
१२ संग वैतीना को गया कयोंकी सांझ का समय था। औन दुसने
१३ दीन जव वे वैतीना से नीकले उसे भुप्प लगी। औन वुह ऐक
गुलन पेड़ को पते से भना हुआ दुन से देप्प के आया कया
जाने की उस पन कुछ पावे पनंतु उसने उस पास आके केवल
१४ पतों के कुछ न पाया कयोंकी गुलन का समय न था। तव यसु
ने उसे कहा की अव से कभी तेना फल कोइ मनुप्प न प्पावे
औन उसके सीप्पों ने सुना।
१५ औन वे यनोसलीम को आये औन यसु मंदीन में गया औन
जो मंदीन में वेचते कीनते थे उनहें वाहन कीया औन

प्युनदीयों के पटनों को, श्चैान कपोत के वैपानीयों के श्चासनों
१६ को उलट दीया। श्चैान कीसी मनुष्य को मंदीन में से वनतन ले
१७ जाने न देता था। श्चैान यह कहके उनहें उपदेस कीया की
नहीं लीप्पा है? की मेना मंदीन साने जातीगनों में पनानथना
का घन कहावेगा? पनंतु तुम ने उसे योनों की मांद वनाइ।
१८ तव श्चधापकों श्चैान पनधान याजकों ने सुन के उसे नास कनने
को सोय कीया कयोंकी वे उसे डनते थे इस कानन की साने
१९ लोग उसके उपदेस से वीसमीत ज्ञुए थे। श्चैान जव सांह ज्ञइ
२० वुह नगन से वाहन गया। श्चैान वीहान को, जव वे जाते थे,
२१ उनहों ने उस गुलन पेड़ को जड़ से सुप्पा देप्पा। श्चैान पतनस
ने येत कनके उसे कहा की हे गुनु देप्पीये यह गुलन पेड़,
२२ जीसे श्चाप ने सनाप दीया, सुप्प गया है। यसु ने उतन देके
२३ कहा की इसन पन वीसवास नप्पो। कयोंकी मैं तुमहें सत
कहता ज्ञं की जो कोइ इस पहाड़ को कहे की सनक जा श्चैान
समुदन में गीन पड़ श्चैान श्चपने मन नें संदेह न कने पनंतु
पनतीत नप्पें की जो मैं कहता ज्ञं सो हो जाइगा तो जो कुछ
२४ वुह कहेगा सो पावेगा। इस लीये मैं तुमहें कहता ज्ञं की
पनानथना में जो कुछ तुम मांगोगे वीसवास कनो की हम पाते
२५ हैं श्चैान तुम पाश्चोगे। श्चैान जव तुम पनानथना कनने का
प्पड़े होश्चो तो यदी तुम कीसी पन कुछ श्चपवाद नप्पते हो तो
छमा कनो जीसतें तुमहाना पीता भी, जो सनग में है तुमहाने
२६ श्चपनाध छमा कने। पनंतु यदी तुम छमा न कनोगे तो तुम-
हाना पीता भी, जो सनग में है तुमहाने श्चपनाधों को छमा न
२७ कनेगा। श्चैान वे फेन यनोसलीम में श्चाये श्चैान जव वुह
मंदीन में फीनता था पनधान याजक श्चैान श्चधापक श्चैान
२८ पनाचीन उस पास श्चाये। श्चैान उसे कहा की तु कीस पनाकनम
से यह कानज कनता है? श्चैान तुझे यह कानज कनने का कीस
२९ ने पनाकनम दीया?। यसु ने उतन देके उनहें कहा की मैं

तुमहें भी ऐक ब्रात पुछता हुं मुझे उतन देओ तो मैं तुमहें
१० कहुंगा की कौन पनाकनम से य़ह कानज कनता हुं। य़हीय़ा
११ का सनान सनग से था की मनुष्पन से? मुझे उतन देओ। तब्र
वे य़ह कहके आपुस में ब्रीयानने लगे की जो हम कहें की
सनग से तो वुह कहेगा की फेन तुम ने उसकी पनतीत कय़ों
१२ न की?। पनंतु य़दी हम कहें की मनुष्पों से तो लोगों से
डनते हैं कय़ोंकी सब्र य़हीय़ा को नीसयय़ अवीसदब्रकता
१३ जानते थे। तब्र उनहों ने उतन देके य़सु से कहा की हम
नहीं कह सकते औन य़सु ने उतन में उनहें कहा की मैं
भी तुमहें नहीं कहता की मैं कौस पनाकनम से य़ह कानज
कनता हुं।

१२ ब्रानहवां पनब्र।

दाष्प की ब्रानी का दीनीसटांत १—१२ कन देने
का उतन १३—१७ फेन उठने के ब्रीष्पय़ का उतन
१८—२७ ब्रैवसथा की पहीली अगय़ा का ब्राष्पय़
२८—३४ मसीह कीसका पुतन है ३५—३७ अघा-
पकों के कपट से लोगों को चौकस कनता है
३८—४० कंगाल ब्रीधवा की दो अधी का ब्रष्पान
४१—४४।

१ औन वुह उनहें दीनीसटांतों में कहने लगा की कीसी मनुष्प
ने दाष्प की ऐक ब्रानी लगाई औन आस पास ब्राड़ा बांधा औन
कोल्हु प्पोदा औन गढ़ ब्रनाय़ा औन मालीय़ों को ठीका देके
२ दुन देस को यला गय़ा। औन समय़ में उसने ऐक सेवक को
मालीय़ों के पास भेजा की मालीय़ों से दाष्प की ब्रानी का फल
३ पावे। पन उनहों ने पकड़ के उसे माना औन छुछा फेन
४ दीय़ा। फेन उसने उनके पास दुसने सेवक को भेजा औन

उनहों ने उसे पथनों से माना औान सीन फोड़ा औान अपमान
५ कनके फेन दीया। फेन उसने तीसने को भेजा औान उनहों
ने उसे मान डाला अनु औान वहुतेनों को माना औान कीतनों
६ को वध कीया। अव उसका ऐकही अती पीनय पुतन नहगया
उसने अंत में यह कह के उसे भी उनके पास भेजा की वे मेने
७ पुतन का आदन कनेंगे। पनंतु उन मालीयों ने आपुस में कहा
की यह अधीकानी है आओ इसे मान डालें औान अधीकान
८ हमाना होजाएगा। औान उनहों ने उसे पकड़ के मान डाला
९ औान दाप्प को वानी के वाहन फेंक दीया। इस कानन दाप्प
की वानी का सामी कया कनेगा? वुह आवेगा औान उन
मालीयों को नास कनेगा औान दाप्प की वानी औानों को देगा।
१० औान यह जो लीप्पा है तुम ने नहीं पढ़ा की जीस पथन को
थवइयों ने नीकमा ठहनाया सो कोने का सीना हुआ?।
११ यह इसन का कानज है औान हमानी दीनीसट में आसयनजीत
१२ है। औान उनहों ने यहा की उसे पकड़ लेवें पनंतु लोगों से
डने कयोंकी वे जान गये की उसने यह दीनीसटांत उनके
१३ वीप्पय में कहा औान वे उसे छोड़ के यले गये। फेन उनहों
ने कइ फनीसीयों औान होनुदीसीयों को उसके पास भेजा की
१४ वयन में उसे वझावें। औान आके उनहों ने उसे कहा की हे
गुनु हम जानते हैं की आप सये हैं औान कीसी का प्पटका
नहीं नप्पते कयोंकी आप मनुप्पों की पनगट दसा को नहीं
मानते पनंतु इसन के मानग को सयाइ से सीप्पाते हैं कैसन को
१५ कन देना जोग है अथवा नहीं?। हम देवें अथवा न देवें?
पनंतु उसने उनके कपट को देप्प के उनहें कहा की मेनी पनीछा
१६ कयों कनते हो? मुझे दीप्पाने को ऐक सुकी लाओ। औान
वे लाये तव उसने उनहें कहा की यह कीसकी सुनत औान
१७ छाप है? उनहों ने उसे कहा की कैसन की। यसु ने उतन
देके उनहें कहा की जो वसतु कैसन की हैं कैसन को औान

जो की इसन की है इसन को देखो और वे उस से व्रीसमीत
१८ झुऐ। तव्र जादुकी, जो कहते हैं की जी उठना नहीं है, उस
१९ पास आये और यह कहके उसे पुछा। की हे गुनु, हमने लीये
मुसा ने लीप्पा है की यदी कीसी का भाइ मने और पतनी को
नीनवंस छोड़ जाय तो उसका भाइ उसकी पतनी को लेवे और
२० अपने भाइ के लीये वंस यलावे। अव्र सात भाइ थे और
२१ पहीले ने पतनी की और न नवंस मनगया। तव्र दुसने ने उसे
लीया और मनगया वह भी कोइ वंस न छोड़ गया और
२२ इसी नीत से तीसने ने भी। और सातों ने उसे लीया और
कोइ वंस न छोड़ गया सव्र के पीछे वुह इसतीनी भी मन गइ।
२३ इस लीये जी उठने में जव्र वे उठेंगे वुह उनमें से कीस की पतनी
२४ होगी? कयोंकी सातों ने उसे पतनी कीया था। यसु ने उतन
देके उनहें कहा की तुम इस कानन नहीं युक कनते की लीप्पे
२५ झुऐ को और इसन के समनथ को नहीं जानते?। कयोंकी
जव्र वे मीनतु से उठेंगे वे व्रीवाह नहीं कनते और व्रीवाह में
२६ नहीं दीये जाते हैं पनंतु सनग के दुतों के समान हैं। और
मीनतकों के जी उठने के व्रीप्पय में तुम ने मुसा की पुसतक में
नहीं पढ़ा की झाड़ी में इसन उसे कैसा यह कहके व्रोला की
मैं इव्रनाहीम का इसन और इसहाक का इसन और याकुव्र
२७ का इसन?। वुह मीनतकों का इसन नहीं पनंतु जीवतों का
२८ इसन है इस लीये तुम व्रझुत युक कनते हो। तव्र अघापकों
में से ऐक आया और उनहें आपस में यनया कनते सुनके
देप्पा की उस ने उनहें ठीक उतन दीया उसने उसे पुछा की
२९ सानी आगयाओं में स्नेसठ कौनसी है?। यसु ने उसे उतन
दीया की सव्र से सनेसठ आगया यह की सुनो हे इसनाइल पन-
३० मेसन हमाना इसन ऐक पनमेसन है। और तु अपने साने
मन से और अपने साने पनान से और अपने साने अंतःकनन
से और अपने साने व्रल से पनमेसन अपने इसन को पीआन

३१ कन य़ही पहली अगय़ा है। और दुसनी इसी के समान है
की तु अपने पनोसी को अपने समान पीआन कन इन से और
३२ कोइ वड़ी अगय़ा नहीं। तव उस अधापक ने उसे कहा की
अछा हे गुनु आप ने सत कहा है कयोंकी ऐकहो इसन है और
३३ उसे छोड़ दुसना कोइ नहीं। और उसे साने अंतःकनन से
और सानी वुध से और साने पनान से और सानी सामनथ से
पीआन कनना और पनोसीयों को अपने समान पीआन कनना
३४ य़ह साने जग और होम से अती वड़ा है। और जव य़सु
ने देष्पा की उसने वुध से उतन दीय़ा तो उसने उसे कहा की
तु इसन के नाज से दुन नहीं और उसके पीछे कोइ मनुष्प का
३५ हीय़ाव न ऊआ की उसे पुछे। और य़सु मंदीन में उपदेस
कनते ऊऐ उनहें पुछा की अधापक कयों कहते हैं की मसीह
३६ दाउद का पुतन है ?। कयोंकी दाउद ने आपही धनभातमा
में होके कहा की पनमेसन ने मेने पनभु से कहा की तु मेने
दहीने हाथ वैठ जव लों मैं तेने वैनीय़ों को तेने पांव की पीढ़ी
३७ कनुं। सो दाउद तो आपही उसे पनभु कहता है फेन वह
उसका पुतन कय़ोंकन है ? और सामानय़ लोग आनंद से उसे
३८ सुनते थे। और उसने अपने उपदेस में उनहें कहा की अधाप-
कों से चौकस नहो जो लमवे वसतन पहीन के चलने की और
३९ हाट में नमसकानों की। और मंडलीय़ों में पनधान आसनों
४० की और जेवनानों में सनेसठ सथानों की पनीत नष्पते हैं। जो
वीधवा के घनों को नीगलते हैं और छल से पनानथना को
४१ वढ़ाते हैं उनको वऊत वड़ा दंड होगा। और य़सु भंडान
के संमुष्प वैठ के देष्प नहा की लोग भंडान में नोकड़ कय़ोंकन
४२ डालते हैं और वऊतेने जो धनमान थे वऊत डालते थे। तव
ऐक कंगाल वीधवा ने दो छदाम, जो मील के ऐक अधेला होता
४३ है डाले। और उसने अपने सीष्पों को वुला के उनहें कहा की
मैं तुमहें सत कहता ऊं की औनहों ने भंडान में डाला है इस

४४ कंगाल व्रीधवा ने उन सभों से अधीक डाला। कयोंकी सभों
ने अपनी अधीकाइ से डाला पनंतु इसने अपनी कंगालपना से
जो कुछ नप्पती थी अपनी जीवका डाला।

१३ तेनहवां पनव्र।

यनोसलीम के नसट होने की खबीस व्रानी १—२
औन यीनह औन व्रीपत ३—२३ औन मसीह
के आने पन कया कया व्रीतेगा २४—२७ गुलन
पेड़ का दीनौसटांत २८—३१ उस दीन को औन
घड़ी को कोइ नहीं जानता औन यौकस होने का
उपदेस ३२—३७।

१ औन जव्र वुह मंदीन से व्राहन जाता था उसके सीप्पों में से
ऐक ने उसे कहा की हे गुनु देप्पीये कैसे कैसे पथन औन कैसी
२ जोड़ाइयां। यसु ने उतन देके उसे कहा की तू ये व्रड़ी जोड़ा-
इयां देप्पता है यहां ऐक पथन दुसने पन न छुटेगा जो गीनाया
३ न जाय। औन जव्र वुह जलपाइ के पहाड़ पन मंदीन के
संतुप्प व्रैठा था पतनस औन याकुव्र औन युहना औन अंदन-
४ यास ने ऐकानत में उसे पुछा। की हमें कहीये की ये व्रातें
कव्र होंगी? औन इन सभों के पुने होने का कया चीनह है?।
५ यसु उतन देके उनहें कहने लगा की यौकस नहो की कोइ
६ तुमहें छल न देवे। कयोंकी व्रहुतेने यह कहके मेने नाम
से आवेंगे की मैं हुं औन व्रहुतों को छलेंगे औन जव्र तुम
७ संगनाम की व्रात। औन संगनाम का ऊहा सुनो तो व्रयाकुल
मत होइयो कयोंकी उनका होना अवेस है पनंतु अभी अंत
८ नहीं है। कयोंकी लोग लोग पन औन नाज नाज पन यढेंगे
औन अनेक सथान में भुयाल होंगे औन अकाल औन कलेस
९ होंगे ये दुप्पों के आनंभ हैं। पनंतु आप आप को यौकस नप्पो।

कयोंकी वे तुमहें सभाओं में सैापेंगे औान तुम मंडलीयों में
माने जाओगे औान उनके वीनोघ साप्पी होने के लीये मेने नाम
के कानन तुम अघक्षों औान नाजाओं के आगे पहुंचाये जाओगे।
१० औान अवेस है की पहीले मंगल समाचान समसत जातगनों में
११ पनचाना जाय। पनंतु जव वे ले जायें औान तुमहें सैापें आगे
से चींतता मत कनो की हम कया कहेंगे औान आगे से सोच
मत कनो पनंतु जो कुछ तुमहें उस घड़ी दीया जाय वही
कहीयो कयोंकी तुम नहीं जो कहते हो पनंतु घनमातमा।
१२ औान भाइ भाइ को औान पीता पुतन को घात के लीये पकड़-
वायेगा औान वालक माता पीता के वीनोघ उठेंगे औान उनहें
१३ घात कनवावेंगे। औान मेने नाम के लीये सव तुमसे वैन
१४ कनेंगे पनतु जो अंत लों सहेगा सो तनान पावेगा। पनंतु जव
तुम नास की घीनीत को देप्पो जीसके वीप्पय में दानीयाल
भवीसदवकता ने कहा है जहां उसे जोग नहीं तहां प्पड़ा है
जो पढ़ता है सो समझे तव जो यहूदीयः में होंगे सो पहाड़ों को
१५ भागें। औान जो कोठे पन होगा सो घन में न उतने की पैठ के
१६ अपने घन से कोइ वसतु नीकाले। औान जो प्पेत में होवे सो
१७ अपने वसतन के उठाने के लीये पीछे न फीने। पनंतु हाय
उन पन जो उन दीनों में गनभनी औान उन पन जो दुघ पीला-
१८ तीयां होंगी। औान पनानथना कनो की तुमहाना भागना
१९ जाड़े में न हो। कयोंकी उन दीनों में ऐसा कसट होगा जैसा
की सनीसट के आनंभ से, जो इसन ने उतपंन कीया, अव लों
२० न हुआ औान न होगा। औान यदी पनमेसन उन दीनों को न
घटाता तो कोइ पनानी उघान न पाता पनंतु चुने हुओं के
हेतु जीनहें उसने छांट नप्पा है उसने उन दीनों को घटाया
२१ है। औान तव यदी कोइ तुमहें कहे की देप्पो मसीह यहां
२२ अथवा देप्पो वहां है पनतीत मत कनीयो। कयोंकी झुठे
मसीह औान झुठे भवीसदवकता नीकलेंगे औान लछन औान

आसयनज टीप्पावेंगे की यदी होनहान होता तो युने हुओं
२३ को भी भनमावते। पनंतु सीयेत नहो देप्पो मैं ने तुमहें आगे
२४ से सब्र व्रात कह दी है। पन उन दीनों में उस कसट के पीछे
सुनज अंधीयाना होगा और यंदनमा अपनी जोत न देगा।
२५ और सनग से तानें गीनेंगे और सनग की दीनढ़ता हील
२६ जायेंगी। और तव्र वे मनुप्प के पुतन को मेघों पन व्रड़े पना-
२७ कनम और प्रेसनय से आते देप्पेंगे। और तव्र वुह अपने
दुतों को भेजेगा और अपने युने हुओं को यानों पवन से पीन-
२८ थीवी के सीवाने से सनग के सीवाने लों प्रेकठे कनेगा। अब्र
गुलन पेड़ से प्रेक दीनीसटांत सीप्पो जव्र उसकी डाली अव्र लों
कोमल है और पते नीकालती हैं तुम जानते हो की गनमी
२९ नीकट है। सो इसी नीत से जव्र देप्पो की यह व्रातें आ
३० पहुंयीं जानो की वुह नीकट है अनथात दुवानों पन। मैं तुमहें
सत कहता हुं कीं यह पीढ़ी व्रीत न जायगी जव्र लों यह सानी
३१ व्रातें न होलें। सनग और पीनथीवी टल जायेंगी पनंतु मेने
व्रयन न टलेंगे।

३२ पनंतु उस दीन और उस घड़ी के व्रीप्पय को कोइ मनुप्प
नहीं जानता हां न सनगीय दुत न पुतन केवल पीता।
३३ तुम सीयेत नहो और पनानथना कनो कयोंकी तुम नहीं
३४ जानते की समय कव्र है। जैसे प्रेक मनुप्प ने दुन की जातना
कनते हुप्रे अपने घन को छोड़ा और अपने सेवकों को पना-
कनम दीया और हन प्रेक मनुप्प को उस का कानज और
३५ दुवान पाल को यौकस होने की अगया दी। इस लीये यौकस
नहो कयोंकी तुम नहीं जानते की घन का सामी कव्र आवेगा
सांझ को अथवा आधी नात को अथवा कुकुट व्रोलते हुप्रे
३६ अथवा व्रीहान को। न होवे की वुह अयानक आके तुमहें
३७ सोते पावे। और जो मैं तुमहें कहता हुं सो सव्र से कहता हुं
की यौकस नहो।

१४ चौदहवां पर्ब।

यसु के बधन करने के लीये याजकों और अधापकों का परामर्स १—२ एक इसतीरी परभु पर सुगंध डालती है ३—९ परभु को पकड़वाने के लीये यहूदा मोल करता है १०—११ पर्ब का भोज करना १२—१६ परभु अपने पकड़वैया को बताता है १७—२१ परभु की बीयारी को ठहराना २२—२५ सीष्यों के छोड़ जाने की और पतरस के मुकरने की भवीसदबानी २६—३१ बाटीका में परभु की पीड़ा और परारथना ३२—४२ परभु का पकड़वाया जाना ४३—५२ काफा के आगे सौंपा जाना और उसकी दुरदसा होनी ५३—६५ पतरस उस से तीन बार मुकरता है ६६—७२।

१ दो दीन के पीछे अख़मीरी रोटी का बीत जाना हुआ और
परधान याजक और अधापक जुगत कर रहे थे की उसे कीस
२ भांत छल से पकड़ लेवें और मार डालें। परन्तु उनहों ने कहा
३ की पर्ब में नहीं न हो की लोगों में हुलड़ होवे। और वुह
बैतइना में कोढ़ी समउन के घर में होते हुए जयों भोजन
पर बैठा था एक इसतीरी बहुत मोल का सुगंध तेल सेत पथर
की डीबीया में लाइ और उसने उस डीबीया को तोड़ा और
४ उसके सीर पर ढाल दीया। और वहां कीतने थे जो अपने
मन में करोधीत होके बोले की इस सुगंध तेल का बयरथ
५ उठान कीस लीये हुआ?। कयोंकी वुह तीन सौ सुकी से
अधीक को बेचा जाता और कंगालों को दीया जाता और वे
६ उस पर कुड़कुड़ाने लगे। पर यसु ने कहा की उसे रहने
दो उसे कयों छेड़ते हो उसने मुझ पर उतम कारज कीया।

७ है। कंगालों को सनवदा अपने संग पाओगे औान
जव कभी याहो उन पन भला कन सकोगे पनंतु मुझे सनवदा
८ न पाओगे। जो कुछ वुह कन सकी सो की, उसने मेने गाड़ने
९ के लीये अगे से आके मेने देह पन सुगंध तेल लगाया। मैं
तुमहें सत कहता ऊं की साने जगत में जहां कहीं यह मंगल
समायान पनयाना जायगा यह भी जो इसने कीया है इसके
१० समनन के लीये कहा जायगा। तव उन वानह में से एक
यऊदा असकनयुती उसे उनहें पकड़वा देने के लीये पनधान
११ याजकों के पास गया। औान जव उनहों ने सुना वे आनंदीत
ऊऐ औान उसे नोकड़ देने को ठहनाये तव वुह सोयने लगा
१२ की उसे कीस पनकान से दांव में पकड़वा दे। औान अप्प-
मीनी नोटी के पीहीले दीन, जव वे वीत जाना वल कनते थे
उसके सीष्यों ने उसे कहा की आप कहां याहते हैं की हम
१३ जाके सीध कनें जीसतें आप वीतजाना प्पायें। उसने अपने
सीष्यों में से दो को भेजा औान उनहें कहा की नगन में जाओ
औान वहां तुमहें एक मनुष्य जल का घड़ा उठाये ऊऐ मीलेगा
१४ उसके पीछे पीछे जाइयो। औान जहां कहीं वुह भीतन जाय
उस घन के सामी से कहीयो की गुनु ने कहा है की वुह पाऊन
साला कहां है जहां मैं अपने सीष्यन के संग वीतजाना प्पाउं ?।
१५ औान वुह एक वड़ी उपनौटी कोठनी संवानी सुधानी तुमहें
१६ दीप्पावेगा वहां हमाने लीये सीध कनो। तव उसके सीष्य
यले गये औान नगन में जाके जैसा उसने कह था वैसाही पाया
१७ औान उनहों ने वीतजान सीध कीया। औान सांझ को वुह उन
१८ वानह के संग आया। औान जव वे वैठके प्पाने लगे यसु ने
कहा की मैं तुमहें सत कहता ऊं की तुम में से एक, जो मेने
१९ संग प्पाता है मुझे पकड़वावेगा। तव वे कुढ़नेलगे औान एक
एक कनके उसे कहने लगा की मैं ऊं? औान दुसना वोला
२० कया मैं ऊं?। उसने उतन देके उनहें कहा की वानह में

२१ से प्रेक जो मेने संग थाली में हाथ व्रोानता है। जैसा उसक
व्रीष्पय में लीष्पा है मनुष्प का पुतन जाता है ठीक पनंतु हाय
उस मनुष्प पन जीस से मनुष्प का पुतन पकड़वाया जाय उस
मनुष्प के लीये भला होता की वुह कभी उतपंन न होता।
२२ श्रीन जव वे प्याते थे यसु ने नोटी को लीया श्रीन घनव्राद
कनके तोड़ा श्रीन यह कहके उनहें दीया की लेश्रो प्याश्रो यह
२३ मेना देह है। फेन उसने कटोना लीया श्रीन घंमान के
२४ उनहें दीया श्रीन उन सभों ने उस से पीया। तव उसने उनहें
कहा की यह नये नयम का मेना लोझ है जो व्रझतों के लीये
२५ व्रहाया जाता है। मैं तुम्हें सत कहता झं की मैं दाष्प का
नस फेन न पीउंगा जव लों मैं इसन के नाज में उसे नया
पीउं।
२६ श्रीन जव वे प्रेक भजन गा युके वे यलपाइ के पहाड़ पन
२७ गये। तव यसु ने उनहें कहा की श्राज नात तुम सव मेने
कानन ठोकन प्याश्रोगे कयोंकी लीष्पा है की मैं गड़ेनीये को
२८ मानुंगा श्रीन भेड़ें छींन भींन हो जायेंगी। पनंतु जी उठने के
२९ पीछे मैं तुम से श्रागे जलील को जाउंगा। पतनस ने उसे
३० कहा की यदपी सव ठोकन प्यायें तथापी मैं नहीं। यसु ने
उसे कहा की मैं तुझ से सत कहता झं की श्राज के दीन श्रनथात
इसी नात को कुकुट के सव्रद कनने से श्रागे तु तीन व्रान मुझ
३१ से मुकन जायगा। पनंतु वुह श्रीन श्रती घुन से कहने लगा
की यदी श्राप के संग मेना मनना होवे मैं कीसी भांत श्राप से
३२ न मुकनुंगा उन सभों ने भी इसी नीत से कहा। तव वे प्रेक
सथान में, जीस का नाम जसमन था, श्राये श्रीन उसने श्रपने
सीष्पन से कहा की जव लों मैं पनानथना कनुं तुम यहां व्रैठो।
३३ तव वुह श्रपने संग पतनस श्रीन याकुव श्रीन युहना को ले कन
३४ व्रझत घव्रनाने श्रीन श्रती कुड़ने लगा। श्रीन उनहें कहा की
मेना पनान मनने लों श्रती दुष्पीत है तुम यहां ठहनो श्रीन

३५ जागते रहो। तब वुह थोड़ा आगे बढ़के भुम पर गीरा
और प्रार्थना की, की जदी होनहार होय तो यह घड़ी
३६ मुझ से टल जाय। और कहा की हे आबा पीता सब कुछ तेरे
बस में है यह कटोरा मुझ से टाल दे तौभी मेरी चाह
३७ नहीं परंतु जो तु चाहता है। तब वुह आया और उन्हें
सोते पाया और पतरस से कहा की हे समउन तु सोता है?
३८ कया तु एक घड़ी न जाग सका?। जागते रहो और प्रार्-
थना करो न हो की परीछा में पड़ो, आतमा तो सोघ है ठीक
३९ परंतु सरीर नीरबल। और वुह फीर गया और प्रार्थना
४० में वही बचन बोला। और जब वुह फीर आया उसने उन्हें
फीर सोते पाया (कयोंकी उनकी आंखें भारी थीं) और वे
४१ न जानते थे की उसे कया उतर देवें। फीर वुह तीसरे बार
आके उनसे बोला की अब सोते रहो और बीसराम करो बस
है घड़ी आ पहुंची देखो मनुष्य का पुत्र पापीयों के हाथ में
४२ पकड़वाया जाता है। उठो हम जायें देखो जो मुझे पकड़वाता
४३ है सो नीकट है। और तुरंत जब वुह कह रहा था उन
बारह में से एक यहुदा और उसके संग प्रधान याजकों और
अधापकों और प्राचीनों की ओर से एक बड़ी मंडली खड्ग
४४ और लाठीयां लेके आई। और जीसने उसे पकड़वाया था
उसने उन्हें यह कह के पता दीया की जीस कीसी को मैं चुमुं
४५ वुह वही है उसे पकड़ लेओ और चौकसी से ले जाओ। और
जोंहीं वुह आ पहुंचा वुह तुरंत उसके पास जाके बोला की
४६ हे गुरु, हे गुरु, और उसका चुमा लीया। तब उनहों ने उस
४७ पर हाथ धर के पकड़ लीया। और उन में से एक ने, जो
वहां खड़े थे, खड्ग खींच के प्रधान याजकों के एक सेवक
४८ को मारा और उसका कान उड़ा दीया। तब यसु ने उतर
देके उन्हें कहा की जैसा चोर के लीये खड्ग और लाठीयां
४९ लेके मुझे पकड़ने को नीकले हो?। मैं तो प्रतीदीन तुमहारे

संग मंदीन में उपदेस कनता था औन तुम ने मुझे न पकड़ा
५० पनंतु अवेस है की लीखा हुआ पुना होवे। तब सब के सब
५१ उसे छोड़ के भाग गय़े। पनंतु वहां एक तनुन मनुष्य उसके
पीछे यला जाता था जो सुती बसतन से नंगाइ को ढापे था औन
५२ तनुनों ने उसे पकड़ लीय़ा। औन वुह सुती बसतन को छोड़
५३ के उन से नंगा भागा। तब वे य़सु को पनधान य़ाजक कने
ले गय़े औन उसके संग समसत पनधान य़ाजक औन पनाचीन
५४ औन ऋधापक एकठे थे। औन पतनस पनधान य़ाजक के घन
लों दुन से उसके पीछे पीछे गय़ा औन वुह सेवकों के संग बैठ के
५५ आग तापता था। तब पनधान य़ाजक औन सानी सभा य़सु
५६ पन साखी ढुंढ़ते थे को उसे मान डालें पनंतु न पाय़े। कय़ोंकी
बहुतेनों ने उस पन झुठी साखी दी तथापी उनकी साखी एक
५७ सां न मीली। औन कइ एक उठे औन य़ह कहके उस पन
५८ झुठी साखी देने लगे। को हम ने उसे कहते सुना है की मैं
इस मंदीन को, जो हाथों से बनाय़ा गय़ा है, ढाउंगा औन
५९ तीन दीन में एक दुसना बीना हाथ से बनाउंगा। पनंतु तीस
६० पन भी उनकी साखी न मीली। तब पनधान य़ाजक मध में
खड़ा हुआ औन य़ह कहके य़सु को पुछा को तु कुछ उतन
६१ नहीं देता ? य़े तुझ पन कय़ा कय़ा साखी देते हैं ?। पनंतु
वुह युपका नहा औन उतन न दीय़ा पनधान य़ाजक ने उसे
फेन पुछा औन कहा की तु मसीह उस आनंदीत का पुतन है ?।
६२ तब य़सु ने कहा की मैं हुं औन तुम मनुष्य के पुतन को पनाकनम
की दहीनी ओन बैठे औन आकास के मेघों पन आते देखोगे।
६३ तब पनधान य़ाजक ने अपने बसतनों को फाड़ा औन कहा
६४ की अब हमें औन साखीय़ों का कय़ा पनय़ोजन है ?। तुम
ने य़ह पाखंडता सुनी कय़ा सोयते हो ? उन सभों ने उस पन
६५ मान डालने के जोग अपनाध ठहनाय़ा। तब कीतने उस पन
थुकने औन उसका मुंह ढांपने औन उसे घुंसा मानने लगे औन

उसे कहने लगे की नवीस कह और सेवकों ने उसे थपेड़े माने।
६६ और जब् पतनस नीचे सदन में था पनधान य़ाजक की दासीयों
६७ में से ऐक आई। और जब उसने पतनस को तापते देष्पा
उस पन दीनीसट कन के व्रोली की तु भी य़सु नासनी के संग था।
६८ पनंतु य़ह कहके वुह मुकन गय़ा की मैं नहीं जानता और
नहीं बुझता की तु कय़ा कहती है तब् वुह व्राहन ओसाने में
६९ गय़ा और कुकुट ने सब्द कीय़ा। और ऐक दासी फेन उसे
देख के उनसे, जो ष्पड़े थे, कहने लगी की य़ह उन में से है।
७० और वुह फेन मुकन गय़ा और तनीक पीछे फेन उनहों ने,
जो वहां ष्पड़े थे, पतनस को कहा की सय्य मुय तु उन में से है
७१ कय़ोंकी तु जलीली है और तेनी व्रोली मीलती है। पनंतु
वुह सनाप देने और कीनीय़ा ष्पाने लगा की मैं इस मनष्प
७२ को, जीसकी तुम कहते हो, नहीं जानता। और दुसने व्रान
कुकुट ने सब्द कीय़ा तब् पतनस ने उस व्रयन को, जो य़सु
ने उसे कहा था, सननन कीय़ा की कुकुट के दो व्रान सब्द कनने
से आगे तु तीन व्रान मुझ से मुकन जाय़गा तब् वुह उसका सोय
कनके नोने लगा।

१५ पंद्नहवां पनव्र।

य़सु का व्राधा जाना और पीलातुस को सैांपा
जाना १—५ व्रनव्रास का छुटना और कुनुस पन
माने जाने को य़सु का सैांपा जाना ६—१५ मसीह
के सीन पन कांटों का कुमुट नष्पना और व्रधन
कनने को ले जाना १६—२४ दो योन के व्रीय
में कुनुस पन ष्पींया जाना २५—३२ सुनज का
अंधीय़ाना होना और य़सु का पनान तय़ागना

३१—३७ मंदीन के घुंघट का फटना ग्रौन सत पती का व्रोसवास ३८—३९ कीतनी इसतीनीय़ां य़सु के कसट को देप्पती हैं ४०—४१ य़ुसफ़ के लोथ का मांगना ग्रौन ग्रपनी समाघ में गाड़ना ४२—४७।

१ ग्रौन जोंहीं व्रीहान ऊग्रा पनघान य़ाजक पनायीनों ग्रौन
सानें ग्रघापकों ग्रौन सभा के पनघानों के संग पनामनस कनके
२ य़सु को व्रांघ के ले गय़े ग्रौन पीलातुस को सौंप दीय़ा। ग्रौन
पीलातुस ने उसे पुछा की तु य़ऊदीय़ों का नाजा है? उसने
३ उतन देके उसे कहा की तुहीं कहता है। तव्र पनघान य़ाजक
उस पन व्रऊत से दोप्प देने लगे पनंतु उसने कुछ उतन न दीय़ा।
४ तव्र पीलातुस ने य़ह कहके फ़ेन उसे पुछा की तु कुछ उतन
नहीं देता? देप्प वे कीतनी कुछ साप्पी तुह पन देते हैं।
५ पनंतु तोभी य़सु ने कुछ उतन न दीय़ा य़हां लों की पीलातुस
६ ने ग्रासयनज माना। ग्रव्र पनव्र में ग्रेक व्रंघुग्रा को, जीसे वे
७ याहते थे वुह छोड़ देता था। ग्रौन व्रनव्रास नाम का ग्रेक
जन था जो उनके संग, व्रंघन में था जीनहों ने उसके साथ
८ ऊलन कीय़ा था ग्रौन उस ऊलन में हतय़ा की थी। तव्र जैसा
वुह उनके लीय़े सदा कनता था मंडली यीला के वही उस से
९ मांगने लगी। पनंतु पीलातुस ने उतन में उनहें कहा की तुम
याहते हो की मैं य़ऊदीय़ों के नाजा को तुमहाने लीय़े छोड़
१० देउं?। कय़ोंकी वुह जानता था की पनघान य़ाजकों ने उसे
११ डाह से सौंप दीय़ा था। पनंतु पनघान य़ाजकों ने लोगों को
१२ उसकाय़ा की वुह उनके लीय़े व्रनव्रास ही को छोड़ देवे। तव्र
पीलातुस ने फ़ेन उतन देके उनहें कहा की जीसे तुम य़ऊदीय़ों
१३ का नाजा कहते हो मैं उसे कय़ा कनुं?। वे फ़ेन यीला के
१४ व्रोले की उसे कुनुस पन मान। तव्र पीलातुस ने उनहें कहा

की कीस लीये उसने कया बुराइ की है? वे और अतयंत
१५ चीलाये की उसे कुरुस पर मार। और लोगों को सांत
करने के लीये पीलातुस ने उनके लीये ब्ररब्रास को छोड़ दीया
और यसु को छड़ी मार के सौंप दीया की कुरुस पर मारा
१६ जाय। तब जोधा उसे भीतर परेतोरीयम नाम बैठक में ले
१७ गये और उनहों ने सारी जथा को एकठे बुलाया। और उसे
बैंगनी बसतर पहीनाया और कांटों का मुकुट सजके सीर पर
१८ रख्खा। और उसे नमसकार करने लगे की हे यहुदीयों के
१९ राजा परनाम। और उनहों ने उसके सीर पर नरकट से
मारा और उस पर थुका और घुठने टेक के उसे परनाम कीया।
२० और उनहों ने उसे चीढ़ा के उस बैंगनी को उस पर से उतारा
और उसी का बसतर उसे पहीनाया और कुरुस पर मारने
२१ के लीये उसे बाहर ले चले। और उनहों ने समउन कुरीनी
से ब्ररब्स उसका कुरुस उठवाया वुह सीकंदर और रुफस
२२ का पीता था और बाहर से आके उधर से जाता था। और वे
उसे जलजता थान में लाये जीसका अरथ खोपड़ी का सथान
२३ है। और उनहों ने दाख्खरस सुर मीला के उसे पीने को दीया
२४ परंतु उसने न लीया। और उनहों ने उसे कुरुस पर ख्खींच
के उसके बसतरों का भाग कीया और उन पर चीठी डाली
२५ की हर एक मनुष्य कौनसा लेवे। और तीसरी घड़ी थी जब
२६ उनहों ने उसे कुरुस पर ख्खींचा था। और उसके लीये यह
२७ दोष पतर उपर लीख्खा की यहुदीयों का राजा। और उन-
हों ने उसके संग दो चोरों को, एक को दहीनी और दुसरे
२८ को बाइं और कुरुस पर ख्खींचा। तब वुह लीख्खा हुआ जो
२९ कहता है की वुह पापीयों में गीना गया पुरा हुआ। और
जो उधर से जाते थे उनहों ने उस पर ठठा कीया और सीर
धुन धुन कहने लगे की "तु जो मंदीर को ढाता है और तीन
३० दीन में बनाता है। आप को बचा और कुरुस से उतर आ।"।

३१ इसी भांती से परधान याजकों ने भी आपुस में अधापकों के
संग ठठा करते कहा की "उसने औरों को व्रयाया आप को
३२ नहीं व्रया सकता। अव्र मसीह इसराइल का राजा कुरुस से
उतर आवे की हम देष्पें और व्रीसवास लावें" और उनहों ने,
३३ जो उसके संग कुरुस पर ष्पींये गये, थे उसे दुरव्रचन कहा। और
छठवीं घड़ी से नवइं घड़ी लों सारे देस में अंधीयारा छा गया।
३४ और नवइं घड़ी में यसु ने व्रड़े स्वर से कहा की "एेली एेली
लामा सव्रकतनी"? जीसका यह अरथ है की हे मेरे इसर
३५ हे मेरे इसर तु ने मुझे कयों छोड़ा है?। तव्र कइ उन में से,
जो पास ष्पड़े थे यह सुन के व्रोले की देष्पो वुह इलीयास को
३६ व्रुलाता है। और एक ने दौड़ के व्रादल के टुकड़े को सीरक
से भरा और नरकट पर धर के पीने को दीया और कहा की
रहने दे हम देष्पें यदी इलीयास उसे उतारने को आवेगा
३७।३८ तव्र यसु ने व्रड़ा सव्रद करके परान तयागा। और मंदीर
३९ का घुंघट उपर से नीचे लों फट गया। और जव्र उस सतपती
ने देष्पा, जो उसके संमुष्प ष्पड़ा था, की उसने एेसा सव्रद
करके परान तयागा तो उसने कहा की यह मनुष्प सयमुच
४० इसर का पुतर था। वहां इसतीरीयां भी दुर से देष्प रहीं
थीं जीन में मरीयम मुजदली और छोटे याकुव्र और युसा
४१ की माता मरीयम और सालुमी थीं। (जव्र वुह जलील में
था वे भी उसके पीछे पीछे जाती थीं और उसकी सेवा करती
थीं) और व्रहुत सी और इसतीरयां थीं जो उसके संग उपर
४२ यरोसलीम को आइं थीं। और जव्र सांझ हुइ (इस कारन
४३ की व्रनावरी थी अरथात व्रीसराम से पहीले दीन)। एेक
परतीसठत मंतरी, जो इसर के राज का भी व्राट जोहता था
अरथात अरमतीया का युसफ आया और उसने हीयाव
४४ से पीलातुस पास जाके यसु की लोथ मांगी। तव्र पीलातुस
अीसमीत हुआ की वुह एेसा सीघर मर गया और उस सतपती

४५ को युसा के पुछा कया उसे मरे अवेर हुइ?। तव उसने
४६ सतपती से वृह के लोथ युसफ को दी। और उसने हीना
वसतर मोल लीया और उसे उतार के कपड़े में लपेटा और
ऐक समाघ में, जो पथर में खोदा गया था रष्पा और समाघ
४७ के मुंह पर ऐक पथर ढुलका दीया। और मरीयम मुजदली
और युसा की माता मरीयम ने देष्प रष्पा की वुह कहां घरा
गया था।

१६ सोलहवां पत्र।

ग्रसु के जी उठने का संदेस दुत देता है १—८ वुह मरीयम पर परगट होता है ९—११ दो सीष्पों को और परेर गयारह को दीष्पाइ देता है और अगया करता है १२—१८ सरग को जाता है १९ मंगल समा चार का परचार होना २०।

१ और जब वीसराम बीत गया मरीयम मुजदली और
याकुब की माता मरीयम और सालमी ने सुगंघ दरब मोल
२ लीया जो सतें आके उस पर लगावें। और बड़े तड़के अठवारे
के अठवारे के पहीले दीन सुरज उदय होते वे समाघ पर
३ आइं। और आपुस में कहने लगीं की हमारे कारन समाघ
४ के मुंह से पथर कौन ढुलकावेगा?। और जब उनहों ने
दीठीसट की तो कया देष्पती हैं की पथर ढुलकाया हुआ
५ था कयोंकी वुह बहुत बड़ा था। और समाघ में पैठ के
उनहों ने ऐक तरुन मनुष्प को, उजला लंबा वसतर पहीने
६ दहीनी ओर बैठे हुऐ देष्पा और डर गइं। तब उसने
उनहें कहा की मत डरो तुम ग्रसु नासरी को, जो कुरुस पर

माना गया था, ढुंढतीयां हो वुह जी उठा है यहां नहीं है
७ उस सथान में देष्पो जहां उनहों ने उसे नष्पा था। पनंतु
जाके उसके सीष्पों से औन पतनस से कहो की वुह तुमहानें
आगे जलील को जाता है जैसा उसने तुमहें कहा था तुम उसे
८ वहां देष्पोगे। औन वे तुनंत नीकल के समाध से दौड़ीं कयों-
की वे कंपीत औन व्रीसमीत थीं औन कीसी से कुछ न कहा
९ कयोंकी वे डनगईं थीं। अव़ तड़के अठवाने के पहीले जव़
वुह उठा तो मनीयम मुजदली को पहीले दीष्पाई दीया जीस
१० से उसने सात पीसाचों को दुन कीया था। वुह जाके जो उस
के संग नहते थे औन सोक व्रीलाप कन नहे थे उसने उनहें
११ कहा। औन जव़ उनहों ने सुना की वुह जीता है औन
१२ उसे दीष्पाई दीया पनतीत न की। उसके पीछे वुह दुसने
नुप में उन में से दो को, जव़ वे व़ाहन जाते थे दीष्पाई दीया।
१३ औन उनहों ने जाके नहे हुओं को कहा उनहों ने उनकी भी
पनतीत न की।
१४ उसके पीछे वुह उन गयानहों को, जव़ वे भोजन पन व़ैठे
थे दीष्पाई दीया औन उनके अव़ीसवास औन मन की कठोनता
पन ओलाना दीया इस कानन की उनहों ने उनकी, पनतीत
१५ न की जीनहों ने उसे जी उठने के पीछे देष्पा था। तव़ उस
ने उनहें कहा की साने जगत में जाओ औन हन एक मनुष्प
१६ के पास मंगल समाचान पनचानो। जो व्रीसवास लाता है
औन सनान कीया गया है सो उघान पावेगा पनंतु जो व्रीस-
१७ वास नहीं लाता उस पन दंड की अगया की जायग। औन
वे जो व्रीसवास लाते हैं उन में यह लछन होंगे की वे मेने
नाम से पीसाचों को दुन कनेंगे औन नई नई भाष्पा व़ोलेंगे।
१८ वे सांपों को उठा लेंगे औन यदी वे कोई मानु व़ीष्प पीवेंगे
तो उनहें दुष्प न देगी वे नोगीयों पन हाथ नष्पेंगे औन वे
चंगे हो जायेंगे।

१९ सो जब परभु उनसे कह चुका वुह सरग पर उठाया
२० गया और ईसर की दहीनी ओर बैठा। तब उनहों ने
बाहर नीकल के हर एक सथान में उपदेस कीया और परभु
सहाय करता था और बचन को लछन से दीनढ करता
था आमीन॥

मंगल समाचार लुका रचीत।

१ पहीला पनव्र।

१ हे महामहीमन साउफलस जैसा की व्रऊतेनें ने कमन व्रांधी
की उन सचाइयों के समाचार के जो दीनत पनमाने से
२ हम में सधीन कीया गया व्रननन कनें। जैसा की उनहें ने
जे आनंभ से व्रचन के पनतक्ष साप्पी चौन सेवक थे हम के
३ सैांपा। आनंभ से उनका ठीक गयान नप्प के मुहे भी चछा
४ लगा की व्रीच से तुमहाने कानन लीप्पुं। की तु उन व्रातें
५ के नःसयय को जान में तु ने उपदेस पाया है जाने। यहूदीयः
के नाजा हीनुदीस के समय में आव्रीया की पानी से ज़कनीया
नाम ऐक याजक था चौन उसकी पतनी हानुन की पुतनीयें
६ में से थी चौन उसका नाम अलीसव्रा था। चौन वे देनें
इसन के संमुप्प घनमी चौन पनभु की समसत आगया। चौन
७ नीत पन नीनदोप्प चलनेवाले थे। चौन उनके व्रालक न था
इस कानन की अलीसव्रा व्रांह्य थी चौन वे देनें दीनी थे।
८ चौन ऐसा ऊआ की जव्र वुह याजक का कानज इसन के आगे
९ अपनी पानी की नीत पन कनता था। चौन याजक की नीत
के समान उसकी पानी पड़ंयी की पनभु के मंदीन में पनवेस
१० कन के सुगंध जलावे। चौन लोगें की समसत मंडली सुगंध
११ जलाने के समय में व्राहन पनानथना कनती थी। चौन इसन
का दुत सुगंध व्रेदी के दहीने चौन प्पड़ा ऊआ उसे दीप्पाइ

११ दीया। और जब ज़करीया ने देष्पा वुह ब्याकुल ज़ुआ
१२ और उसे डर लगा। परंतु दुत ने उसको कहा की हे ज़करीया
मत डर कयोंकी तेरी प्रार्थना सुनी गई और तेरी पतनी
अलीसबा तुझ से पुतर जनेगी और तु उसका नाम युहीया
१४ रष्पना। और तुझे आनंद और मंगल होगा और बज़ुतेरे
१५ उसके जनम के कारन से मगन होंगे। कयोंकी वुह परभु
की दीसट में बड़ा होगा और दाष्प का रस और मदीरा
न पीएगा और वुह अपनी माता के गरभ में से धरमातमा
१६ पुरन होगा। और वुह इसराइल के संतानों से बज़ुतों को
१७ उनके परभु इसर के ओर फेरेगा। और वुह उसके आगे
इलीयास के आतमा और सामरथ से चलेगा की पीता के मन
को पुतरों के ओर और अगया भंग करनेवालों को अधरमीयों
के सभाव के ओर फेर के परभु के लीये एक लोग को ठीक
१८ करके सुधारे। और ज़करीया ने उस दुत से कहा की
मैं इस को कैसे जानुं कयोंकी मैं पुरनीयां ज़ं और मेरी पतनी
१९ भी दीनी है। तब दुत ने उतर देके उसको कहा मैं जबर-
इल ज़ं जो इसर के पास ष्पड़ा रहता ज़ं और भेजा गया की
तुझे कज़ं और यह मंगल समाचार तेरे पास पज़ंचाउं।
२० और देष्प तु गुंगा हो जायगा और जीस दीन लों ये सब
बातें पुरी न हों बोल न सकेगा इस कारन की तुने मेरे बचन
२१ पर जो अपने समय में संपुरन होंगे बीसवास न कीया। और
लोग ज़करीया के लीये ठहर रहे थे और आसचरज करते
२२ थे की उसने मंदीर में बीलंब कीया। और वुह बाहर नीकल
के उनसे बोल न सका तब उनहों ने जाना की उसने मंदीर
में कुछ दरसन देष्पा कयोंकी वुह उनहें सैन करता था और
२३ गुंगा रह गया। और ऐसा ज़ुआ की जब उसके सेवकाई के
२४ दीन पुरन ज़ुए वुह अपने घर को चला गया। और इनहीं
दीनों के पीछे उसकी पतनी अलीसबा गरभनी ज़ुई और अपने

२५ को पांय महींने लों ग्रह कह के छोपाग्रा। की जीन दीनो
में इसन ने मुह पन दीनीसट की ग्रं वेवहान कीग्रा की लोगों
२६ के आगे मेने अपमान का मीटावे। और छठवें महीने जलील
२७ के प्रेक नगन में जो नासनः कहावता था इसन के और से
जव्रनइल दुत प्रेक कनग्रा के पास भेजा गग्रा जो दाउद के व्रंस
के प्रेक पुनुष्प ग्रुसफ से व्रयनदता ऊइ और उस कनग्रा का
२८ नाम मनीग्रम था। और उस दुत ने भीतन आके उस को
कहा हे महा अनुगीनह की गइ पननाम पनभु तेने संग है
२९ इसतीनीग्रों में तु धंन है। तव्र वुह देष्प के उसके व्रयन से
व्रग्राकुल ऊइ और सोयने लगी कीं ग्रह कैसा पननाम है।
३० तव्र दुत ने उसे कहा हे मनीग्रम मत डन कग्रोंकी तुने इसन
३१ से अनुगीनह पाग्रा। और देष्प तु गनभनी होगी और प्रेक
३२ पुतन जनेगी और उसका नाम ग्रसु नष्पेगी। वुह महान होगा
और अतग्रंत महान का पुतन कहावेगा और पनभु इसन उसे
३३ उसके पीता दाउद का सींहासन देगा। और वुह सनव्रदा
ग्राकुव्र के घनाने पन नाज कनेगा और उसके नाज का अंत न
३४ होगा। तव्र मनीग्रम ने दुत से कहा की ग्रह कग्रोंकन होगा
३५ कग्रोंकी मैं पुनुष्प को नहीं जानती। तव्र दुत ने उतन देके
उसे कहा की पनमातमा तुह पन उतनेगा और अतग्रंत महान
के सामनथ की छाग्रा तुह पन पड़ेगी इस लीग्रे वुह पवीतन व्रंस
३६ जो तुह से उतपंन होगा इसन का पुतन कहावेगा। और
देष्प तेने कुटुंव्र अलीसव्रा को भी व्रुढ़ापे में पुतन का गनभ है
और ग्रह उस का जो व्रांझ कहावती थी छठवां महीना है।
३७।३८ कग्रोंकी इसन से कोइ व्रात अनहोनी नहीं है। तव्र
मनीग्रम व्रोली की देष्प इसन की दासी तेने व्रयन के समान
३९ मेने लीग्रे होग्र तव्र दुत उस पास से जाता नहा। और उनहीं
दीनों में मनीग्रम उतावली से उठके पनव्रत देस ग्रऊदा के प्रेक
४० नगन में गइ। और जकनीग्रा के घन में जाके अलीसव्रा को

४१ पननाम कीया। औन ऐसा ऊआ की जव़ अलीसवा ने
मनीयम का पननाम सुना व़ालक उसके पेट में उछला औन
४२ अलीसवा धनमातमा से भन गई। औन वुह व़ड़े सव़द से
व़ोली की तु इसतीनीयों में धंन औन तेने गनभ का फल
४३ धंन। औन मेने लीये यह कैसे ऊआ की मेने पनभु की माता
४४ मेने पास आई। देष्प जेउं तेने पननाम का सव़द मेने कान
४५ लों पऊंया व़ालक मेने गनभ में आनंद के माने उछला। औन
धंन वुह जो व़ीसवास लाई की वे व़ातें जो इसन के औन से
४६ उसे कही गई हैं संपुनन होंगी। तव़ मनीयम ने कहा की
४७ मेना पनान इसन का महीमा कनता है। औन मेना आतमा
४८ मेने मुकत दाता इसन से आनंद ऊआ। कयोंकी उसने अपनी
दासी की छोटाई पन दीनीसट की, की देष्प इस समय से समसत
४९ लोग मुझे धंन कहेंगे। कयोंकी जो सामनथी है उसने मुझ पन
५० व़ड़ी कीनपा की। औन उसका नाम पवीतन है औन उसकी
५१ दया उन पन जो उसे डनते हैं पीढ़ी से पीढ़ी लों है। उसने
अपने व़ांह का व़ल दीष्पलाया औन अहंकानीयों को उनके
५२ मन की भावना में छीन भीन कीया। उसने व़लवंतों को
५३ आसनों से उतान दीया औन छोटों को व़ढ़ाया। उसने
भुष्पों को अछी व़सतु से संतुसट कीया औन धनी को छुछे हाथ
५४ भेजा। उसने अपनी सनव़दा की दया को समनन कनने को
५५ अपने दास इसनाईल पन सहाय कीया। जैसा उसने हमाने
५६ पीता इव़नाहीम औन उसके व़ंस को कहा। औन मनीयम
महीना तीन एक उसके संग नही फेन अपने धन को आई।
५७ अव़ अलीसवा के जंने के दीन पुने ऊये औन वुह एक पुतन
५८ जनी। तव़ उसके पनोसीयों औन उसके कुटुंव़ों ने सुना की
पनभु ने उसपन व़ड़ी कीनपा की औन उनहों ने उसे व़धाई
दी औन ऐसा ऊआ की वे आठवें दीन उस व़ालक का ष्पतनः
५९ कनने को आये। औन वे उसका नाम जकनीया जो उसके

६० पीता का था नप्पने लगे। पनंतु उसकी माता ने उतन देके कहा
६१ की नहीं उसका नाम यहीया नप्पा जाय। तव उनहों ने उसे
कहा की तेने घनाने में ऐसा कोइ नहीं जो इस नाम से कहावता
६२ है। तव उनहों ने उसके पीता के औान सैन कीया की वुह
६३ उसका नाम कया नप्पा याहता है। तव उसने पटीआ मंगा
के यह व्रात लीप्पी की उसका नाम यहीया है तव उन सभों ने
६४ आसयनज माना। और तुनंत उसका मुंह और जीभ भी
६५ प्पुल गइ और उसने वकता होके इसन की सतुत की। तव
उनपन जो उनके आस पास नहते थे डन पड़ा और इन सव
वातों की यनया यहूदीयः के पनवृत के समसत देस में हुइ।
६६ और सव जो सुनते थे अपने मन में सन्देह कनते थे की यह कौस
नीत का वालक होगा की पनभु का हाथ उस पन था।
६७ और उसका पीता जकनीया घनमातमा से भन पुन हुआ
६८ और आगम से कहने लगा। की घंन पनमेसन को जो इस-
नाइल का इसन है कयोंकी उसने अपने लोगों पन दीनीसट
६९ कनके नछा की। और हमाने कानन उघान की सींग अपने
७० दास दाउद के घनाने से उदय कीया। जैसा की उसने अपने
सुघ आगम गयानीओं के मुंह से जो जगत के आनंभ से होते
७१ आये कहा। की हम अपने सतनुन से और सवके हाथ से जो
७२ हमसे वैन नप्पते हैं उघान पावें। की अपनी दया को जो
हमाने पीतनों पन है संपुनन कने और अपने पवीतन वाया
७३ को समनन कने। उस कीनीया को जो उसने हमाने पीता
७४ इवनाहीम से की। की वुह हमें यह देगा की हम अपने
७५ सतनुन के हाथों से वयके। उसके आगे पवीतनताइ और
७६ सयाइ से अपने जीवन भन सेवा कनें। और हे वालक तु
अतयंत महान का आगम गयानी कहावेगा इस लीये की तु
७७ पनभु के आगे जाके उसके मानगों को सुघानगा। की पाप से
७८ छुटने के नीसतान का गयान उसके लोगों को देवे। यह

हमाने इसन की कोमल दया से है जीसके कानन उदय का
७९ पनकास उपन से हम पन पज़ुंया। की उनको जो अंधकान
औान मीनतु की छाया में वैठे हैं उंजोयाला कन की हमान
८० पांव को कुसल के मानग में ले जाय। औान वुह लड़का वढ़ता
गया औान आतमा में वल पाया औान वन में नहा कीया जास
दीन लों की इसनाइल को दीप्पाइ दीया।

२ दुसना पनव।

१ औान उनहीं दीनें में ऐसा ऊआ की कैसन अगसतुस की
अगया नीकली की समसत देस के लोगों के नाम लीप्पे जायें।
२ औान यह नाम लीप्पने का आनंभ तव ऊआ जव कनीनीयुस
३ सुनीया का अधक्ष था। तव सव अपने अपने नगन को नाम
४ लीप्पाने गये। औान जलील औान नासनः के नगन से यऊदीयः
में दाउद के नगन को जो वैतुलहम कहावता है युसफ भी गया
५ इस लीये की वुह दाउद के वंस औान घनाने से था। की
अपनी वयनदता इसतीनी मनीयम के संग जो गनभनी थी
६ नाम लीप्पावे। औान उनके वहां होते ऊए ऐसा ऊआ की
७ उसके जंने के दीन पुने ऊए। औान वुह अपना पहीलौंठा
पुतन जनी औान उसको वसतन में लपेट के यननी में नप्पा
८ इस कानन की उनकी समाइ सना में न थी। औान उसी
देस में गड़ेनीये प्पेत में नहते थे औान नात को अपने हूंड
९ की नप्पवाली कनते थे। औान देप्पो की इसन का दुत उन
पास आया औान इसन का तेज उनके चानों औान चमका
१० औान वे यऊत डन गये। तव दुतने उनहें कहा की मत डनो
इस लीये की देप्पो मैं तुमहाने पास मंगल समाचान लाता
११ ऊं जो सव लोगों के कानन वड़ा आनंद होगा। कयोंकी आज
दाउद के नगन में तुमहाने लीये ऐक मुकतदाता उतपंन ऊआ

१२ जो मसीह प्रभु है। और तुम्हारे लीये यही पता है की
तुम उस बालक को बसतर में लपेटा और चरनी में पड़ा हुआ
१३ पाओगे। और तुरंत उस दुत के संग सरग के सेना की ऐक
मंडली प्रगट हुइ और यह कहके इसर की सतुत करने
१४ लगी। की अतयंत उंचे पर इसर को घंन और पीरथीवी
पर कुसल और मनुष्यन में मीलाप होवे।
१५ और ऐसा हुआ की जेउं दुत उनसे सरग पर जाते रहे
गड़ेरीयों ने आपुस में कहा की आओ अब बैतुलहम को चलें
और इस बात को देष्पें जो हुइ है जीसे इसर ने हम पर
१६ प्रगट की है। तब उनहों ने उतावली से आके मरीयम और
युसफ को और उस बालक को चरनी में पड़ा हुआ पाया।
१७ और जब उनहों ने देष्पा तो उन बातों को जो बालक के
१८ बीष्य में उनसे कही गइ थीं फैलाने लगे। और सबके सब
जीनहों ने सुना था उन बातों से जो गड़ेरीयों ने उनहें कही
१९ थीं बीसमीत हुऐ। परंतु मरीयम इन सब बातों को अपने
२० मन में जोगाके सोचने लगीं। और उन सब बातों के कारन
जो उनहों ने सुनीं और वैसाही देष्पी थीं गड़रीये इसर का
घंन मानते और सतुत करते हुऐ उलटे फीरे।
२१ और बालक के षतनः करने के लीये जब आठ दीन पुरे
हुऐ उसका नाम यसु रष्पा गया जो दुत ने उसके गरभ में पड़ने
२२ से पहीले रष्पा था। और जब उनके पवीतर होने के दीन
मुसा की बेवसथा के समान पुरे हुऐ वे उसको यरोसलीम में
२३ लाये की इसर के आगे धरें। जैसा की इसर की बेवसथा में
लीषा है की हर ऐक पहीलौंठा नर जो गरभ को ष्पोलता है
२४ इसर को भेंट कीया जायगा। और जैसा की इसर की बेवसथा
में कहा गया है की घुघु के जोड़े अथवा कपोत के दो बचे को
२५ बलीदान करें। और देष्पो की यरोसलीम में समउन नाम
ऐक मनुष्य था वही सजन और घरमी पुरुष्प था और इसराइल

के कुसल का कानन तक नहा या श्रान घनमातमा उसपन था।
२६ श्रान घनमातमा से उस पन पनगट ऊश्रा की वुह जव लों इसन
के श्रभीसेक कीद्मे गये को न देप्पले मीनतु को न देप्पेगा।
२७ श्रान वुह श्रातमा की सीप्पया से मंदीन में श्राया श्रान जव
माता पीता उस वालक यसु को भोतन लाते थे की उसके लीये
२८ वैवसथा के वेवहान के समान कनें। उसने उसको श्रपने हाथों
२९ में उठा लीया श्रान इसन की सतुत कनके कहा। की हे पनभु
श्रव तु श्रपने वयन के समान श्रपने दास को कुसल से वीदा
३० कीया याहता है। कयोंकी मेनी श्रांप्पों ने तेनें नीसतान को
३१ देप्पा है। जीसे तुने सान लोगों के संमुप्प सीघ कीया है।
३२ प्रेक जोत श्रंदेसीयों के उंजीयाला कनने को श्रान तेने इसनाइल
३३ का वीभव। तव युस र श्रान उस ी माता में उन वातों से जो
३४ उसके वीप्पय में कही गइ थीं श्रासयनज माना। श्रान समउन
ने उनहें श्रासीस दीया श्रान उसकी माता मनीयम को कहा
की देप्प यही इसनाइल में वहुतेनों के गीनने श्रान फेन उठने
के कानन ठहनाया गया है श्रान वीनुघता का प्रेक यानह है।
३५ हां प्रेक भ ला तेने पन न में भी पनवेस कनेगा की वहुतेनों
३६ के मन की योंनता पनगट हो जाय। श्रान वहां हंना नाम
फानुइल की पुतनी जो श्रसन के वंस से थी श्रान श्रागम गयाननी
थी जो वहुत वीनघ थी श्रान श्रपने कुंश्रांनपन से सात
३७ वनस लों प्रेक पती के संग नही थी। श्रान वुह यौनासी
वनस प्रेक की ीघवा थी जो मंदीन से नयाना न ऊइ पनंतु
३८ वनत श्रान पनानथना से नात दीन सेवा कनती थी। श्रान
उसने उसी समय श्राके इसन की सतुत की श्रान उन सभों का
जो यनोसलीम में उधान की वाट जोहते थे उसके वीप्पय में
३९ वोला। श्रान जव वे पनभु की वैवसथा के समान समसत कानज
४० कन युके वे जलील में श्रपने नगन नासनः को फीने। श्रान
वुह वालक वढ़ता गया श्रान श्रातमा म वल पाया श्रान वुघ

४१ से मन गय़ा ग्रौन इसन का अनुगीनह उस पन था। अव्र उसके
माता पीता व्रनस व्रनस व्रीत जाने के पनव्र में य़नोसलीम को।
४२ जाते थे। ग्रौन जव्र वुह व्रानह व्रनस का ङ्ग्रा वे पनव्र के
४३ व्रेवहान पन य़नोसलीम को गय़े। ग्रौन जव्र वे उन दीनें
को पुना कनके फीनने लगें वुह व्रालक य़सु य़नोसलीम में
४४ नह गय़ा ग्रौन य़ुसफ ग्रौन उसकी माता ने न जाना। पनंतु
उनहें ने समहा की वुह जथा में है ग्रेक दीन के मानग गय़े
४५ ग्रौन उसे ग्रपने कुटुंव्रां ग्रौन यीनहानों में ढुंढा। ग्रौन जव्र
उनहें ने उसको न पाय़ा वे य़नोसलीम को फीन ग्राके उसे
४६ ढुंढ़ने लगे। ग्रौन ग्रैसा ङ्ग्रा की उनहें ने तीन दीन पीछे
मंदीन में पंडीतें के मध में व्रैठे ङ्ग्रे उनकी सुनते ग्रौन उनसे
४७ पनसन कनते उसे पाय़ा। ग्रौन सव्र जो उसकी सुनते थे
४८ उसकी समह ग्रौन उतनें से व्रीसमीत ङ्ग्रे। ग्रौन जव्र उनहें
ने उसे देष्पा तो ग्रासयनज माना ग्रौन उसकी माता ने उसे
कहा की हे पुतन कीस लीय़े तु ने हम से ग्रैसा कीय़ा देष्प तेना
४९ पीता ग्रौन मैं कुढ़ते तुहे ढुंढ़ते थे। तव्र उसने उनहें कहा
य़ह कीस कानन है की तुम मुहे ढुंढ़ते थे कय़ा तुम न जानते
५० थे की मुहे ग्रवेस है की ग्रपने पीता का कानज कनुं। पन
उनहें ने उस व्रयन को जो उसने उनहें कहा न समहा।
५१ ग्रौन वुह उन के संग यलागय़ा ग्रौन नासनः में ग्राय़ा ग्रौन
उनके व्रस में नहा पनंतु उसकी माता ने इन व्रातें को ग्रपने
५२ मन में नष्पा। ग्रौन य़सु वुध ग्रौन डील में ग्रौन इसन ग्रौन
मनुष्प की कीनपा में व्रढ़ता गय़ा।

३ तीसना व्रनव्र।

१ ग्रव्र तीव्रनय़ुस कैसन के नाज के पंदनहवें व्रनस जव्र
पंतीय़ुस पीलातुस य़ङ्दीय़ः का ग्रधक्ष था ग्रौन हीनुदीस

जलील के चैाथाइ का चैान उसका भाइ फ़ैलवुस प्रैतुनीय़ः
चैान तनष्पुनीय़ः देस की चैाथाइ का चैान लुसनीय़ः अवी-
२ लीनीय़ः के चैाथाइ का अघछ था। हंना चैान काफ़रा के
पनघान य़ाजक होते इसन का वयन जकनीय़ा के पुतन
३ यहीय़ा को वन में पड़ंया। चैान वुह अनदन के आस पास
के समसत देस में आके पाप मोय़न के कानन सनान के पसया-
४ ताप का उपदेस कनने लगा। जैसा की असीय़ा आगम गय़ानी
के वयन के पुसतक में लीष्पा है की वन में प्रैक पुकानने
वाले का सव्द है की तुम पनभु के मानग को सुघानो चैान
५ उसके मानगों को सीघा कनो। हन प्रैक नीयो भुम भनी
जाय़गी चैान समसत पनवत चैान पहाड़ी नीया कीय़ा जाय़गा
चैान टेढ़े सीघे कीये जायेंगे चैान ष्पड़वीड़ पंथ चैानस वनेंगे।
६।७ चैान हन प्रैक पनानी इसन के उघान को देष्पेगा। तव
उसने उस मंडली को कहा जो उस से सनान पाने को नीकली
की हे सनप वंसी तुमहें कीसने चेताया की आवनहान कनोघ
८ से भागो। इस लीये पसयाताप के जोग का फ़ल लाचो चैान
अपने अपने मन में मत समझो की हमाना पीता इवनाहीम
है कयोंकी मैं तुम से कहता ज़ं की इसन में सामनथ है की
९ इन पथनों से इवनाहीम के लीये वालक उतपंन कने। चैान
अव वीनछों के जड़ पन कुलहाड़ी भी घनी है इस लीये हन
प्रैक वीनछ जो अछा फ़ल नहीं लाता काटा जाता चैान आग
१० में झोका जाता है। तव लोगों ने यह कहके उसको पुछा
११ की अव हम कय़ा कनें। उसने उतन दीय़ा चैान उनहें कहा
जीसके पास दो वसतन हैं सो उस से जीसके पास कुछ नहीं
१२ है वांट लेवे चैान जीस पास भोजन है वुह भी प्रैसा कने। तव
पटवानी भी सनान पावने को आये चैान उसको वोले की हे
१३ गुनु हम कय़ा कनें। तव उसने उनहें कहा जो तुमहाने लीये
१४ ठहनाय़ा गय़ा है उस से अघीक मत लेचो। फ़ीन सीपाहीयों

ने भी यह कहके उसको पुछा की हम कया कनें तव्र उसने
उनहें कहा कीसी से पनव्रलता मत कनो मीथयापवाद मत
१४ लगाओ और अपनी महीनवानी से संतोस कनो। और
जव्र लोग दोपघा में थे और समसत जन अपने मन में यहीया
१६ के व्रपय में व्रीयानने लगे की वुह मसीह है की नहीं। यहो-
या ने उतन देके सभों को कहा ठीक मैं तो तुमहें जल से सनान
देता ऊं पनंतु मुह से एक अधीक सामनथी आता है जीसके
जुतो का व्रंद मैं पोलने के जोग नहीं वुह तुमहों को धनमातमा
१७ और अगीन से सनान देगा। उसके हाथ में सुप है और
वुह अपने पलीहानं को अछी नीत से हाड़ेगा और गोऊं
को अपने पते में एकठे कनेगा पनंतु भुसे को अवुझ अगीन
१८ से जलायेगा। और वुह अपने उपदेस में लोगों को और
१९ अनेक व्रसतु सीपाया कनता था। पनंतु हीनुदीस ने जो
चौथाइ का अधछ था अपने भाइ फीलव्रुस की पतनी हीनुदी-
यास के कानन और अपनी समसत व्रनाइ के कानन जो हीनु-
२० दीस ने की थी उस से दोष पाया था। उन सभों पन यह
अधीक कीया की उसने यहीया को व्रदीगीनह में डाला।
२१ और जव्र समसत लोग सनान पायके ऐसा ऊआ की यसु ने
भी सनान पाया और पनानथना कनते ऊए सनग पुलगया।
२२ और धनमातमा देही के सनुप कपोत के समान उस पन उतना
और आकास व्रानी ऊइ जीसने कहा की तु मेना पीनय पुतन
२३ है तुह से मैं अती पनसंन ऊं। तव्र यसु आपही व्रनस तीस एक
का होने लगा जैसा की समझा जाता था की वुह पुतन युसफ
२४ का था जो हेली का था। जो मतसा का था जो लुइ का था जो
२५ मलकी का था जो याने का था जो युसफ का था। जो मतसीयास
का था जो अमुस का था जो नाऊम का था जो हुसली का था
२६ जो नागी का था। जो मात का था जो मतसीयास का था जो
२७ समी का था जो युसफ का था जो यऊदा का था। जो युहाना

का था जो नीसा का था जो जोनवावुल का था जो सलासइल
२८ का था जो ननो का था। जो मलकी का था जो ऋद्दी का था
२९ जो कुसम का था जो अलमुद का था जो इन का था। जो युसा
का था जो इलीआज़न का था जो युनम का था जो मतसा का
३० था जो लुइ का था। जो समऊन का था जो यऊदा का था जो
३१ युसुफ का था जो यूनान का था जो इलीयाकीम का था। जो
मलीया का था जो मानान का था जो मतसीयास का था जो
३२ नातन का था जो दाऊद का था। जो यसी का था जो श्रोव्रेद का
था जो वोआज़ का था जो सलमुन का था जो नहसुन का था।
३३ जो अमीनादाव का था जो अनम का था जो असनुन का था
३४ जो फरानीज़ का था जो यऊदा का था। जो याकुव का था
जो इसहाक का था जो इवनाहीम का था जो तनह का था
३५ जो नाऊन का था। जो सीनुग का था जो नीयु का था जो
३६ फरालीग का था जो हीवन का था जो सलऊ का था। जो
कनीन का था जो अनफरकसद का था जो साम का था जो नुह
३७ का था जो लामप्प का था। जो मतुसलह का था जो प्पनुप्प
का था जो यानद का था जो महलालील का था जो कीनान का
३८ था। जो अनुस का था जो सीस का था जो आदम का था जो
इसन का था।

४ चौथा पनव।

१ और यसु धनमातमा से भनपुन होके अनदन से फीना और
२ आतमा की सीप्पया से वन में गया। और चालीस दीन लों
सैतान ने उसकी पनीछा की और उनहों दीनों में उसने कुछ
३ न प्याया और उनके वीत जाने के पीछे उसे भुप्प लगी। तव
सैतान ने उसको कहा की यदी तु इसन का पुतन है अगया
४ कन की ये पथन नोटी वन जायें। और यसु ने उतन

देके उसको कहा लीष्पा है की मनुष्य केवल नोटी से नहीं
५ पनंतु इसन की हन प्रेक व्रात से जीता नहेगा। तब्र सैतान ने
उसे प्रेक उंचे पहाड़ पन ले जाके जगत का समसत नाज प्रेक
६ छन मन में दीष्पाय्रा। श्रैान सैतान ने उसको कहा की य्रह
साना पनाकनम श्रैान उनका प्रेसनय्र मैं तुहे देउंगा कय्रोंकी
य्रह मुहे सोंपा गय्रा है श्रैान जीस कीसी को मैं याहूं उसे देउं।
७ इस कानन य्रदी तु मेनी पुजा कनें सब्र तेना हो जाय्रगा।
८ तब्र य्रसु ने उतन दीय्रा श्रैान उसको कहा की हे सैतान मेने
पीछे जा कय्रोंकी य्रह लीष्पा है की तु श्रपने पनभु इसन
९ की पुजा कन श्रैान केवल उसी की सेवा कन। तब्र वुह उसको
य्रनोसलीम में लाय्रा श्रैान मंदीन के प्रेक कलस पन ष्पड़ा कीय्रा
श्रैान उसे व्रोला य्रदी तु इसन का पुतन है तो श्राप को य्रहां
१० से नीये गीना। कय्रोंकी लीष्पा है की वुह तेने कानन श्रपने
११ दुतों को श्रगय्रा कनेगा की तेनी नछा कनें। श्रैान हाथों में वे
१२ तुहे उठालेंगे न हो की तेना पांव पथन पन लगने पावे। तब्र
य्रसु ने उतन देके उसको कहा य्रह कहा गय्रा है की तु श्रपने
१३ पनभु इसन की पनीछा मत कन। श्रैान जब्र सैतान समसत
१४ पनीछा कन युका वुह थोड़े समय्र लों उस से यला गय्रा। श्रैान
य्रसु श्रातमा के सामनथ से जलील को फनीना श्रैान उसकी
१५ कीनत समसत देस में यानों श्रोन फैल गइ। श्रैान उसने
उनकी मंडलीय्रों में उपदेस कीय्रा श्रैान सभों से सतुत पाइ।
१६ श्रैान वुह नासनः म श्राय्रा जहां उसने पनतीपाल पाय्रा था श्रैान
श्रपने व्रवहान पन व्रीसनाम के दीन मंडली में पनवेस कनके
१७ व्रांयने को ष्पड़ा हुश्रा। श्रैान श्रसीय्रा श्रागमगय्रानी का
गनंथ उसे दीय्रा गय्रा श्रैान जब्र उसने गनंथ को ष्पोला उसने उस
१८ सथल को पाय्रा जहां लीष्पा था। की पनभु का श्रातमा मुह पन
है इस कानन उसने मुहे श्रभीसेक कीय्रा की मंगल समायान
कंगालों को सुनाउं उसने मुहे भेजा की जीनके मन युन हैं उनहें

यंगा करुं और वंधुओं को छोड़ाने को और अंधों को फेर
दोनोसट पाने का संदेस सुनाउं और टुटे मनों का नीसतार
१९ करुं। और परमु के गरहन कीये ऊए वरस का उपदेस
२० करुं। तव उसने गरंथ को वंद कीया और सेवक को सैांप कर
वैठ गया और समसत मंडली की आंष्पें उसे तक रही थीं।
२१ तव उसने उनहें कहना आरंम्भ कीया की आज के दीन यही
२२ लीष्पा ऊआ तुमहारे कानों में संपुरन ऊआ। और सभों ने
उसपर साष्पी दी और उसके अनुगीरह के वचन से जो उसके
मुंह से नीकले थे वीसमीत हो रहे थे और वोले कया यह
२३ युसफ का पुतर नहीं। तव उसने उनहें कहा की तुम नीःसंदेह
मुझे यह दीसटांत कहोगे की हे वैद अपने को यंगा कर जो
कुछ हम सभों ने सुना है की कपरनाऊम में कया यहां अपने
२४ देस में भी कर। परंतु उसने कहा मैं तुमहों से सत कहता
ऊं की कोइ आगम गयानी अपने देस में गरहन नहीं कीया
२५ जाता। परंतु मैं तुमसे सत कहता ऊं की इलीयास के दीनों
में जव सरग तीन वरस छः महीने लों वंद था यहां लों की
समसत देस में काल पड़ा था वऊतेरी वीधवा इसराइल में थीं।
२६ परंतु इलीयास उनमें से कीसी के पास न भेजा गया केवल
२७ सैदा के सरफता में ऐक वीधवा इसतीरी के पास। और
अलीसा आगम गयानी के समय में इसराइल में वऊत से कोढ़ी
थे परंतु उनमें से नाआमन सुरयानी को छोड़ कोइ पावन
२८ न ऊआ। तव सवके सव जीतने मंडली में थे इन वातों को
२९ सुनतेही करोध से भर गये। और उठ कर उसको नगर से
वाहर नीकाल दीया और उस पहाड़ के छोर पर जीस पर
उनका नगर वना था ले चले की उसको औंधे मुंह गीरा देवें।
३०।३१ परंतु वह उनके मधमें से नीकल के जाता रहा। और
कपरनाऊम में आया जो जलील का ऐक नगर है और वीसराम
३२ के दीनों में उनहों को उपदेस दीया कीया। और उनहों ने

उसके उपदेस से आसयरज माना कयोंकी उसका वयन पना-
क्रम के संग था।

१३ और मंडली में एक मनुष्य था जीस में अपवीतर पीसाय का
१४ आतमा था उसने व्रड़े सव्द से योला के। कहा की हे य्रसु
नासनी नहने दे हम से तुह से कया काम कया तु हमें नास
कनने आया है मैं तुहे जानता हुं की तु कैान है इसन का
१५ घनमी। तव य्रस ने उस पन हुड्ला के कहा की युप नह और
उस से नीकल आ और जव पीसाय ने उसको मध में गीनाया
१६ वुह उसको व्रीना दुष्प दीये हुऐ नीकल आया। तव वे सव
व्रीसमीत होके आपुस में कहने लगे की यह कैसी व्रात है
कयोंकी वुह पनाक्रम और सामनथ से अपवीतर आतमाओं
१७ को आगया कनता है और वे व्राहन नीकल आते हैं। और
उस की कीनत उस देस के समसत सथान में यानों ओन
फैलगई।

१८ तव वुह मंडली में से उठा और समउन के घन में आया
और समउन की सास व्रड़े जन से पड़ी थी और उनहों ने उसके
१९ लीये उसकी व्रीनती की। तव वुह उसके सीनहाने प्पड़ा होके
जन पन हुड्लाया और जन ने उसे छोड़ा और उसने तुरंत
४० उठके उनकी सेवा की। और जव सुनज असत होता था
वे सव जीन पास नाना पनकान के नोग से नोगी थे उनहें उसके
पास लाये और उसने उनमें से हन एक पन हाथ नप्पके उनको
४१ यंगा कीया। और व्रहुतेरों से पीसाय भी यीला के व्राहन
नीकले और व्रोले की तु इसन का पुतन मसीह है और उसने
डांट के उनको व्रात कनने न दीया कयोंकी वे जानते थे की
वुह मसीह है।

४२ और जव दीन हुआ वुह नीकल कन एक सुन सथान में
गया और लोग उसे ढुंढ़ने लगे और उसके पास आये और
४३ उसे नोका की वुह उनके पास से न जाय। तव उसने उनहें

कहा की मुझे अवस है की और नगरों में भी इसर के राज
का समाचार सुनाउं कयोंकी मैं इसी कारन भेजा गया हूं।
४४ और वुह जलील की मंडलीयों में उपदेस करता रहा।

५ पांचवां परब।

१ और ऐसा हुआ की जब लोग उस पर गीरे पड़ते थे की इसर
२ का बचन सुनें वुह जनेसरत के झील पर खड़ा हुआ। और
झील पर दो नावें लगी देखीं परंतु मछुए उन पर से उतर के
३ अपने जालों को धो रहे थे। तब उसने उनमें से एक नाव पर
जो समउन की थी चढ़के उस से चाहा की तीर से थोड़ा दुर
ले जाय और वुह बैठ कर लोगों को नाव पर से उपदेस करने
४ लगा। और जब वुह बातता कह चुका वुह समउन को बोला
को गहीरे में ले जा और बझाने के लीये अपने जाल को डाल।
५ तब समउन ने उतर देके उसको कहा हे गुरु हम ने रात भर
परीसरम कीया और कुछ न पकड़ा तीस पर भी आप के कहने
६ से मैं जाल डालता हूं। और जब उनहों ने ऐसा कीया तो
मछलीयों का बड़ा झुंड घेरा और उनका जाल फटने लगा।
७ तब उनहों ने अपने साथीयों को जो दुसरी नाव पर थे सैन
कीया की आके हमारा सहाय करो तब वे आये और दोनों
८ नावें ऐसी भरीं की वे डुबने लगीं। तब समउन पतरस ने
देखकर यसु के घुटनों पर गीरके कहा की हे परभु मुझ से
९ परे रहीये कयोंकी मैं पापी जन हूं। कयोंकी वुह और सब
जो उसके संग थे और जबदी के पुतर याकुब और युहना भी
१० जो समउन के साथी थे उन मछलीयों के बझाव से जो उनहों
ने पकड़ीं बीसमीत थे तब यसु ने समउन को कहा की मत
११ डर कयोंकी इस समय से तु मनुष्यन को पकड़ेगा। और जब

वे अपनी नावें तीर पर लाये वे सब कुछ तयाग करके उसके
पीछे हो लीये।
१२ और जब वुह कीसी नगर में था ऐसा हुआ की एक मनुष्य जो
कोढ़ से भरा हुआ था यसु को देख के औंधा गीरा और उसकी
बीनती करके बोला की हे परभु यदी आप चाहें तो मुझे
१३ पवीतर कर सकते हो। तब उसने हाथ बढ़ाया और उसको
यह कहके छुआ की मैं चाहता हुं तु पवीतर हो जा और
१४ उसका कोढ तुरंत जाता रहा। और उसने उसको अगया
की, की कीसी से मत कह परंतु जा और आप को याजक को
दीखला और जैसा की मुसा ने अगया की है अपने पवीतर
१५ होने के लीये भेंट दे की उनके लीये साखी होवे। परंतु
इतनी अधीक उसकी कीरत फैल गई और बहुत सी मंडली
एकठी हुई की सुनें और अपनी दुरबलता से उस से चंगे होवें।
१६। १७ और उसने बन में अलग होके परारथना की। और एक
दीन ऐसा हुआ की जब वुह उपदेस कर रहा था की फरीसी
और बैवसथा का गयाता जो जलील के हर एक नगर से और
यहुदीयः और यरोसलीम से आये थे वहां बैठे थे और उनहें
१८ चंगा करने को ईसर का सामरथ परगट हुआ। और देखो
की लोग एक मनुष्य को जो अरधांगी था खाट पर ले आये
और चाहा की उसको भीतर लावें और उसके आगे रखें।
१९ परंतु जब मंडली के कारन उनहों ने अवसर न पाया की उसे
भीतर ले जायें वे कोठे पर चढ़गये और खपरैल को अलग
करके उसको खाट समेत मध में यसु के आगे उतार दीया।
२० और उसने उनका बीसवास देख के उनहें कहा की हे मनुष्य
२१ तेरे पाप छमा कीये गये। तब अधापक और फरीसी बीचार
करने लगे की यह कौन है जो ईसरापनींदक बचन बोलता
२२ है ईसर को छोड़ कौन पापों को छमा कर सकता है। तब
यसु ने उनके चींतों को जानके उतर दीया और उनहें कहा

२२ को तुम सव्र अपने मन में कया व्रीय्यान कनते हो। कया
कहना सहज है की तेने पाप कमा कीये गये अथवा कहना
२४ की उठ ओान यल। पनंत जीसतें तुम जानो की मनुष्य के
पुतन को पीनथीवी पन पनाकनन है की पापों को कमा कने
उसने उस अनधांगी को कहा मैं तुह्हे कहता ऊं की उठ ओान
२५ अपनी य्याट उठाके अपने घन को यला जा। ओान तुनंत
वुह उनके आगे उठा ओान जीस पन वुह पड़ा था ले कन इसन
२६ की सतुत कनते ऊऐ अपने घन को यला गया। तव्र वे सव्रके
सव्र व्रीसमय से इसन की सतुत कनने लगे ओान भय से भनके
२७ व्राले की हम ने आज अनोय्या व्रातें देय्यों। ओान इन व्रातों के
पीछे वुह व्राहन गया ओान ऐक पटवानी को जीसका नाम लोइ
था कन लेने के सथान में व्रैठे देय्या ओान उसने उसको कहा
२८ की मेने पीछे होले। तव्र वुह सव्र कुछ छोड़ कन उठ य्यड़ा
२९ ऊआ ओान उसके पीछे हो लीया। ओान लोइ ने उसके लीये
अपने घन में व्रड़ा जेवनान कीया ओान वहां व्रऊत से पटवानी
३० अनु ओान लोग थे जो उनके संग व्रैठ गये थे। पनंतु उनके
अधापक ओान फनीसी उसके सीय्यन पन कुडकुड़ा के कहने
लगे की तुम सव्र कीस कानन पटवानीयों ओान पापीयों के संग
३१ य्याते पीते हो। तव्र यसु ने उतन देके उनहें कहा जो नीनोगी
हैं सो व्रैद का पनयोजन नहीं नय्यते पनंतु वे जो नोगी हैं।
३२ मैं धनमीयों को वुलाने नहीं आया पनंतु पापीयों को की
३३ पसयाताप कनें। तव्र उनहों ने उसको कहा की यहोझा के
सीय्य कयों व्रानंव्रान व्रनत ओान पनानथना कनते हैं ओान इसी
नीत से फनीसीयों के भी कनते हैं पनंतु तेने य्याते पीते हैं।
३४ तव्र उसने उनहें कहा की जव्र लों दुलहा व्रनातीयों के संग है
३५ कया तुम उनहें व्रनत कनवा सकते हो। पनतु वे दीन आवेंगे
की जव्र दुलहा उनसे अलग कीया जायगा तव्र वे उनहीं दीनों
३६ में व्रनत कनेंगे। ओान उसने उनहें ऐक दीनीसटांत भी कहा

की कोइ मनुष्य नये थान का टुकड़ा पुराने वस्तर में नहीं
लगाता नहीं तो वुह जो उस में लगाया गया है वस्तर से
खींचता है और वुह टुकड़ा जो नये से लीया गया था पुराने
३७ में नहीं मीलता। और कोइ पुराने कुपे में नया दाख का रस
नहीं भरता नहीं तो नये दाख का रस कुपों को फाड़ेगा और
३८ वुह जायगा और कुपे नस्ट हो जायंगे। परंतु अवेस है की
नया दाख का रस नये कुपे में रखें की दोनों जतन से रहें।
३९ कोइ पुराने को भी पीके तुरंत नया नहीं चाहता क्योंकी वुह
कहता है की पुराना अती भला है।

६ छटवां पत्र।

१ और पहीले से दुसरे वीस्राम दीन को युं हुआ की वुह
खेतों में से जाने लगा और उसके सीस्य वालों को तोड़ तोड़
२ और हाथों से मल मल के खाने लगे। तब फरीसीयों में से
कीतने उनहें बोले तुम क्यों वुह काम करते हो जो वीस्राम
३ के दीनों में करना जोग नहीं। यसु ने उतर देके उनहें
कहा क्या तुम सभों ने इतना नहीं पढ़ा की दाउद ने जब वुह
४ भुखा था और उसके संगीयों ने क्या कीया। वुह क्योंकर
इस्तर के मंदीर में गया और भेंट की रोटी ली और खाइ
और उनहें भी जो उसके संग थे दी जो उनहें खाने को जोग
५ न थी परंतु केवल याजकों को। और उसने उनहों को कहा
६ की मनुष्य का पुतर वीस्राम का भी परभु है। अनु और एेक
वीस्राम दीन को भी एेसा हुआ की उसने मंडली में जाके
उपदेस कीया और वहां एेक मनुष्य था जीसका दहीना
७ हाथ सुना गया था। तब अधापक और फरीसी उसे देख
रहे थे की वुह वीस्राम के दीन में चंगा करेगा की नहीं जीसतें

८ वे उस पन दोष्प देने का कानन पावें। पनंतु उसने उनकी यींनता
को जान के उस मनुष्य को कहा जीस का हाथ सुना गया था
९ की उठ औान मध में ष्पड़ा हो तव वह उठ ष्पड़ा ङआ। फेन
य़सु ने उनहें कहा की मैं तुमहों से प्रेक व त पुछता ङं व्रीसनाम
के दीनें में भला कनना जोग है की वुना कनना पनान को
१० व्रयाना की नास कनना। और उन सभों पन यानों ओान
दोनौसट कन के उसने उस मनुष्य को कहा की अपना हाथ वढा
तव उसने वैसा कीया औान उसका हाथ दुसने की नाइं यंगा
११ हो गया। तव वे सव वौड़ाहपन से भनगये औान आपस में
१२ कहने लगे की य़सु को कया कनें। औान उनहीं दीनों में प्रैसा
ङआ की वुह प्रेक पहाड़ पन पनानथना कनने को गया औान
नात भन ईसन की पनानथना में नहा।
१३ औान जव दीन ङआ उसने अपने सोष्पन को वुलाया औान
उसने उन में से वानह को यन के पनेनीत नाम भी नष्पा।
१४ समउन जीसका नाम उसने पतनस भी नष्पा औान उसका भाइ
अंदनयास याकुव औान युहना फैलवुस औान वनसुलमी।
१५ मती औान सुमा औान हलफा का पुतन याकुव औान समउन
१६ जो जलोत कहावता है। औान याकुव का भाइ यङदा औान
यङदा असकनयुती जो उसका पकड़वाने वाला ङआ।
१७ फेन वुह उनके संग उतन के यैगान पन ष्पड़ा ङआ औान
उसके सीष्पन की मंडली औान लोगों की प्रेक वड़ी भीड़ जो उसके
सुनने औान अपने नोगों से यंगी होने को समसत यङदीय:
औान यनोसलीम औान सुन औान सैदा के सीवाने से जो
१८ समुदन के तीन पन हैं आइ थीं। औान वे भी जो अपवीतन
१९ आतमाओं से दुष्पी थे यंगे कीये गये औान समसत मंडली
याहती थीं की उसे छुवें कयोंकी सकत उस से नीकलती थी
२० औान सव को यंगा कनती थी। फेन उसने अपने सीष्पन के
औान देष्पके कहा की दनीदनो धंन हो कयोंकी ईसन का

२१ नाज तुमहाना है। घंन हो जो अब्र भुप्पे हो कय़ोंकी तृम
तीनीपत होगे घंन हो जो अब्र ब्रीलाप कनते हो कय़ोंकी
२२ तुम हंसोगे। घंन हो तृम जब्र मनुप्प तुम से ब्रैन कनें ग्रैान
जब्र वे तुम को अलग कनें ग्रैान घीकानें ग्रैान मनुप्प के पुतन
२३ के कानन तृमहाना नाम अघम के समान नीकालें। उस
दीन तुम आनंद होग्रो ग्रैान आनंद से उछलो इस लीय़े की
देप्पो तृमहाना पनतीफल सनग में ब्रड़ा है कय़ोंकी उनके
२४ पीतनों ने आगम गय़ानीय़ों से ऐसाही कीय़ा। पनंतु तुम पन
जो घनी हो सताप इस लीय़े की तुम अपनी सांत पायुके।
२५ तुम पन जो संतुसट हो संताप कय़ोंकी तुम भुप्पे होग्रोगे तृम
पन जो अब्र हसते हो संताप कय़ोंकी तुम नोग्रोगे ग्रैान ब्रीलाप
२६ कनोगे। तुम पन संताप जब्र सब्र लोग तुमहाने ब्रीप्पय़ में
भला कहें कय़ोंकी उनके पीतन हुठे आगम गय़ानीय़ों से
२७ ऐसाही कनते थे। पनंतु जो सुनते हो मैं तुमहें कहता हूं
की अपने सतनुन पन पनेम कनो जो तृम से ब्रैन कनते हैं
२८ उनका भला कनो। जो तुमको सनाप देवें उनहें आसीस देग्रो
ग्रैान उनके लीय़े जो तुमहानी दुनदसा कनें पनानथना कनो।
२९ ग्रैान य़दी कोइ तेने गाल पन थपेड़ा माने दुसना भी फेन दे
ग्रैान जो कोइ तेना ग्रोढ़ना लेवे अगा लेने से भी मत नोक।
३० जो कोइ तुझ से कुछ मांगे उसे दे ग्रैान उस से जो तेनी ब्रसतु
३१ लेता है उस से फेन मत मांग ग्रैान जैसा तुम याहते हो की
३२ लोग तुम से कनें तृम भी उनसे वैसाही कनो। कय़ोंकी य़दी
तृम उन पन जो तुम पन पनेम कनते हैं पनेम कनो तो तुम-
हानी कय़ा ब्रड़ाइ है कय़ोंकी पापी लोग भी अपने पनेमीय़ों
३३ पन पनेम कनते हैं। ग्रैान य़दी तुम उनसे जो तुम से भलाइ
कनते हैं भलाइ कनो तो तृमहानी कय़ा ब्रड़ाइ है कय़ोंकी
३४ पापी लोग भी ऐसाही कनते हैं। ग्रैान य़दी तुम फेन पाने
की आसा नप्पके कीसी को नीन देग्रो तो तुमहानी कय़ा ब्रड़ाइ

है कय़ोंकी पापी लोग भी पापीय़ों को नीन देते हैं की उतना
३५ फेन पावें। पनंतु तुम अपने सतनुन पन पनेम कनो औन
भला कनो औन फेन पाने की आसा छोड़ कन नीन देओ औन
तुमहाना फल व़ड़ा होगा औन तुम अतय़ंत महान के पुतन
होओगे कय़ोंकी वुह उन पन जो भलाइ नहीं मानते औन
३६ अधमों पन कृनपाल है। इस कानन तुम दय़ाल होओ जैसा
३७ तुमहाना पीता दय़ाल है। कुवीयान न कनो की तुमहाना
कुवीयान न कीय़ा जाय़ दोष मत लगाओ औन तुम पन दोष
न लगाय़ा जाय़गा छमा कनो औन तुमहाना छमा कीय़ा
३८ जाय़गा। देओ औन तुमहें दीय़ा जाय़गा अछा पनीमान
दाव़ दाव़ के औन एकठा हीला हीला के उव़नते हुए तुमहानी
गोद में लोग देंगे कय़ोंकी जीस नपने से तुम नापते हो उसी
३९ नपने से तुम नापा हुआ फेन पाओगे। फेन उसने उनसे
एक दीनीसटांत कहा की कय़ा अंधा अंधे का अगुआ हो
४० सकता है कय़ा वे दोनों गड़हे में न गीनेंगे। सीष्य अपने गुनु
से व़ड़ा नहीं पनंतु हन एक जो सुध है अपने गुनु के समान
४१ होगा। औन तु उस कीनकानी को जो तेने भाइ की आंष्य में
है कय़ों देष्यता है पनंतु उस लठे को जो तेनी आंष्य में है नहीं
४२ देष्यता। अथवा कय़ोंकन तु अपने भाइ को कह सकता है
की हे भाइ वुह कीनकानी जो तेनी आंष्य में है ला मैं नीकाल
देउं जव़ तु उस लठे को जो तेनी आंष्य में है नहीं देष्यता है
कपटी पहीले उस लठे को अपनी आंष्य से नीकाल औन तव़
तु उस कीनकीनी को जो तेने भाइ की आंष्य में है फनछाइ
४३ से देष्य कन नीकाल सकेगा। कय़ोंकी उतम व़ीनछ अधम
४४ फल नहीं लाता न अधम व़ीनछ उतम फल लाता है। कय़ों-
की हन एक व़ीनछ अपने फल से पहीयाना जाता है कय़ोंकी
लोग कटीलों से गुलन नहीं व़टोनते औन न भटकटैय़े से
४५ दाष्य तोड़ते। उतम मनुष्य अपने मन के अछे भंडान से अछी

व्रसतु व्राहन नीकालता है और अचम मनुष्य अपने मन के
वुने भंडान से वुनी व्रसतु व्राहन नीकालता है कयोंकी उसका
४६ मुंह मनकी भनपुनी से व्रलता है। और तुम मुहे कयों
पनभु पनभु कहते हो और जो मैं कहता ऊं नहीं कनते।
४७ जो कोइ मुहे पास आता है और मेनी व्रातें सुनता है और
उनहें मानता है मैं तुमहें व्रताउंगा की वुह कीसकी नाइं है।
४८ वुह उस मनुष्य के समान है जीसने घन व्रनाते ऊए गहीना
खोदा और पतथन पन नेउं डाली और जव्र व्राढ़ आये उस
घन पन व्रड़ी धाना लगी और उसे होला न सकी कयोंकी वुह
४९ पतथन पन उठाया गया था। पनंतु वुह जो सुनकन नहीं मानता
उस मनुष्य के समान है जीसने भुम पन व्रीना नेउं का घन उठाया
जीस पन धाना कनेन से लगी और वुह तुनंत गीनपड़ा उस
घन का व्रड़ा व्रीनास ऊआ।

७ सातवां पनव्र।

१ और जव्र वुह लोगों को अपनी समसत व्रानता सुना युका
२ तो कफनननाऊम में पनवेस कीया। और एक सेनापती का
३ दास जो उसका व्रऊत पीनय था नोग से मनने पन था। और
उसने यसु का संदेस सुनके यऊदीयों के पनायीनों को उस पास
भेजकन उसकी व्रीनती की, की वुह आवे और उसके दास को
४ यंगा कने। और वे यसु के पास आके व्रीनती कनके कहने
५ लगे की वुह जोग है की तु उस पन यह कने। कयोंकी वुह
हमाने लोगों पन पनेम कनता है और उसने हमाने कानन
६ एक मंदीन व्रनाया है। तव्र यसु उनके संग गया और जव्र
वुह उसके घन से व्रऊत दुन न था उस सेनापती ने मीतनों
को उसके पास भेज कन कहा की हे पनभु आप को कलेस न

७ दीजीये कयोंकी मैं जोग नहीं की तु मेनी छत तले आवे। इस
कानन मैं ने अपने को भी जोग न समझा की तेने पास आउं
पनंतु व्रयन कहीये औान मेना दास यंगा हो जायगा।
८ कयोंकी मैं भी औान का आधीन मनुष्य ऊं सेना मेनी अगया
में है औान मैं प्रेक को कहता ऊं की जा औान वुह जाता है
औान दुसने को की आ औान वुह आता है औान अपने दास
९ को की यह कन औान वुह कनता है। जव्र यसु ने यह सव्र
सुना उसने उस से आसयनज कीया औान पीछे फीनके उस
मंडली से कहा जो उसके पीछे आती थी की मैं तुमहों से कहता
ऊं की मैं ने इसनाइल में भी प्रेसा व्रड़ा व्रीसवास न पाया।
१० औान उनहों ने जो भेजे गये थे घन में फीन जा के उस दास को
जो नोगी था यंगा पाया।
११ औान अगीले दीन प्रेसा ऊआ की वुह प्रेक नगन को जो
नाइन कहावता था गया औान व्रऊतेने उसके सीष्यन में से
१२ औान व्रऊत लोग उसके संग थे। जव्र वुह नगन के फाटक
के पास आया देष्पो की प्रेक मीनतक को व्राहन लीये जाते
थे जो अपनी माता का प्रेकलौता पुतन था औान वुह नांड थी
१३ औान नगन के व्रऊत लोग उसके संग थे। औान पनभु ने उसको
१४ देष्पके उस पन दया की औान उसे कहा की मत नो। औान
उसने आके नथी को छुआ तव्र उठने वाले ठहन गये औान उसने
१५ कहा की हे तनुन मैं तुझे कहता ऊं की उठ। औान वुह जो
मना था उठ व्रैठा औान व्रोलने लगा औान उसने उसे उसकी
१६ माता को सौंप दीया। औान सभों पन भय पऊंया औान वे
इसन की सतुत कनके कहने लगे की प्रेक व्रड़ा आगम गयानी
हम में पनगट ऊआ औान की इसन ने अपने लोगों पन दीनीसट
१७ की। औान उसकी यह यनया सनव्रतन यऊदीयः में औान
१८ यानों औान के समसत देस में फैल गइ। यहीया के सीष्यन ने
१९ उसको इन सव्र व्रातों का संदेस पऊंयाया। तव्र यहीया ने

अपने सीष्पन में से दे को वुला के ग़सु को कहला भेजा की
वुह जो आनेवाला था तु है अथवा हम दुसने की वाट जोहें।
२० उन मनुष्पन ने उसके पास आके कहा की ग़हीय़ा सनान
कानक ने ग़ह कहके आप के पास भेजा की वुह जो आनेवाला
२१ था तु है अथवा हम दुसने की वाट जोहें। औन उसने उसी
घड़ी वुक़तें को दुनवलता और मनी और दुसट आतमाओं
२२ से चंगा कीया और वुक़त से अंधों को दीनीसट दी। तव
ग़सु ने उतन दीय़ा और उनहें कहा की जाओ और जो कुछ
तुम ने देष्पा और सुना है ग़हीय़ा से कहे की कीस नीत से
अंधे देष्पते हैं लंगड़े चलते हैं कोढ़ी पवीतन होते हैं वहीने
सुनते हैं मीनतक जीलाग़े जाते हैं कंगालें को मंगल समाचान
२३ सुनाय़ा जाता है। और धंन वुह है जो कोइ मुझ से ठोकन
न ष्पावे।

२४ और जव ग़हीय़ा के दुत चले गय़े वुह ग़हीय़ा के वीष्पय़
में लोगों से कहने लगा की तुम लोग वन में कय़ा देष्पने को
२५ गय़े कय़ा एक ननकट पवन से हीलता ऊआ। पनंतु तुम लोग
कय़ा देष्पने को वाहन नीकले कय़ा एक मनुष्प महीन वसतन
पहीने ऊए देष्पें वे जो भड़कीला वसतन पहीनते हैं और
२६ सुकुआन से नहते हैं नाज भवनें में हैं। पन तुम लोग कय़ा
देष्पने को गय़े कय़ा एक आगम गय़ानी हां मैं तुमहें से
२७ कहता ऊं की एक आगम गय़ानी से भी सनेसठ। ग़ही है
जीसके वीष्पय़ में लीष्पा है की देष्प मैं अपने दुत को तेने आगे
२८ भेजता ऊं जो तेने मानग को तेने आगे सुधानेगा। कय़ोंकी मैं
तुम से कहता ऊं उन में से जो इसतीनीय़ें से उतपंन ऊए
हैं कोइ आगम गय़ानी ग़हीय़ा सनान कानक से वड़ा नहीं है
पनंतु वुह जो इसन के नाज में सव से छोटा है उस से वड़ा है।
२९ तव सव लोगों ने और पटवानीय़ें ने जीनहें ने ग़हीय़ा से
३० सनान पाय़ा था ग़ह सुनके इसन की वड़ाइ की। पनंतु फनीसी

श्रोन ब्रैवसथा के गयानीयो ने उस से सनान न पाके इसन के
३० मत को अपने ब्रीनोघ से तयाग कीया। श्रोन पनभु ने यह
भी कहा की मैं इस समय के लोगों को कीस से उपमा देउं
३२ श्रोन वे कीसके समान हैं। वे ब्रालकों के समान हैं जो हाट
में ब्रैठ कन प्रेक दुसने को पुकान के कहते हैं की हमने तुमहाने
कानन ब्रांसली ब्रजाइ श्रोन तुम न नाये हमने तुमहाने लीये
३३ ब्रीलाप कीया श्रोन तुम न नोये। कयोंकी यहीया सनान
कानक न तो नोटी ष्याता न दाष्यनस पीता श्राया श्रोन तुम
३४ कहते हो की उस पन पीसाय है। मनुष्य का पुतन ष्याता
श्रोन पीता श्राया है श्रोन तुम कहते हो की देष्यो प्रेक ब्रड़ा
३५ ष्याउ श्रोन मदयप पटवानीयों श्रोन पापीयों का मीतन। पनंतु
३६ ब्रुघ अपने समसत पुतनों से नीनदोष्य है। फ्रेन फनीसीयों
में से प्रेक ने याहा की ब्रुह उसके संग भोजन कने श्रोन ब्रुह
३७ उस फनीसी के घन में गया श्रोन भोजन पन ब्रैठा। श्रोन
देष्यो की जब्र उस नगन की प्रेक इसतीनी ने जो पापीन थी जाना
की यसु फनीसी के घन में भोजन पन ब्रैठा है उजले पथन की
३८ डीब्रीआ में सुगंघ तेल लाइ। श्रोन उसके यनन पास पीछे
ष्यड़ी होके नोने लगी श्रोन आंसुश्रों से उसका यनन घोने लगी
श्रोन अपने सीन के ब्रालों से पोंछा श्रोन उसके यनन को युमा
३९ श्रोन सुगंघ तेल लगाया। श्रोन जब्र उस फनीसी ने जीस ने
उसका सीसटायान कीया था देष्या तो अपने मन में कहने लगा
की जदी यह पुनुष्य आगमगयानी होता तो जान जाता की यह
इसतीनी जो उसे छुती है कैान श्रोन कीस भांत की है कयोंकी
४० ब्रुह पापीन है। तब्र यसु ने उतन दीया श्रोन उसको कहा की
हे समउन मैं तुझे कुछ कहा याहता हुं ब्रुह ब्रोला की हे गुनु
४१ कहीये। कोइ घनीक था जीसके दो उघाननीक थे प्रेक पांय
४२ सहसन का श्रोन दुसना पयास का। श्रोन जब्र उन पास कुछ
देने को न था उसने दोनों को छमा कीया अब्र मुझे कह की

४३ उन में से कौन उसको अधीक पीआन कनेगा। समउन ने उतन
दीया और कहा मैं समझता हूं की वुह जीसका उसने व्रहुत
छमा कीया तव्र उसने उसको कहा तु ने ठीक व्रीयान कीया।
४४ फेन उसने उस इसतीनो के और फीन के समउन को कहा तु
इस इसतीनी को देष्पता है मैं तेने घन में आया तुने मेने
यनन के लीये जल न दीया पनंतु उसने मेने यनन को आंसु
४५ ओं से धोया और अपने सीन के व्रालों से पोंछा। तुने मेना
युमा न लीया पनंतु जव्र से मैं यहां आया यह मेने यनन
४६ युम नही है। तुने मेने सीन में तेल न लगाया पनंतु इस
४७ इसतीनो ने मेने यनन पन सुगंघ तेल लगाया। इस लीये
मैं तुझ से कहता हूं की उसके पाप जो व्रहुत हैं छमा कीये गये
कयोंकी उसका व्रड़ा पनेम है पनंतु जीसके थोड़े छमा कीये
४८ गये उसका थोड़ा पनेम है। फेन उसने उसको कहा की तेने
४९ पाप छमा कीये गये। तव्र वे जो उसके संग भोजन पन व्रैठे
थे अपने अपने मन में कहने लगे की यह कौन है जो पापों को
५० भी छमा कनता है। और उसने उस इसतीनी को कहा की
तेने व्रीसवास ने तेना उधान कीया कुसल से यली जा।

८ आठवां पनव्।

१ और उसके पीछे युं हुआ की वुह नगन नगन और गांव
गांव से फीनता हुआ उपदेस कनता और इसन के नाज का
२ मंगल समायान सुनाता था और वे व्रानह उसके संग थे। और
कीतनी इसतीनीयां जो दुसट आतमा और दुनव्रलता से यंगी
हुई थीं अनथात मनीयम जो मजदली कहावती थी जीस पन
३ से सात पीसाय उताने गये थे। और हीनुदीस का भंडानी
कुजा की पतनी युआनः और सोसन अनु और व्रहुतेनी जो
४ अपने दनव्र से उसको सेवा कनती थीं। और जव्र व्रहुत लोग
नगन नगन से एकठे होके उस पास आये उसने एक दीनीसटांत

५ में कहा। एक व्रोवैया अपना व्रीज व्रोने को नीकला और
व्रोते ऊए कीतने डांड़े के ओर गीरे और लताड़े गये और
६ आकास के पंछीयों ने उनहें यग लीया। और कीतने पथर पर
गीरे और वे उगके सुप्प गये कयोंकी सीमसीमाहट उनहें न
७ पऊंची। और कीतने कांटों में गीरे और कांटों ने संग व्रढ़के
८ उनहें घोंट डाला। अरु और उतम भुम पर गीरे और उगे
और सैागुने फल लाये और इन व्रातों को कहके उसने पुकारा
९ की जीसके कान सुनने के लीये हैं सो सुने। और उसके सीप्पन
ने यह कह के उसको पुछा की इस दीनीसटांत का कया अरथ
१० है। तव्र उसने कहा की ईसर के राज के भेद का गयान
तुमहें दीया गया है परंतु औरों को दीनीसटांतों में की वे
११ देप्पते ऊए न देप्पें और सुनते ऊए न समझें। अव्र यह
१२ दीनीसटांत ऐसा है की व्रीज ईसर का व्रचन है। डांड़े के
ओर वे हैं जो सुनते हैं तव्र सैतान आता है और व्रचन को उनके
मन से ले जाता है न हो की वे व्रीसवास लावें और उधार पावें।
१३ पथर पर के वे हैं जो व्रचन को सुनके आनंद से गरहन करते
हैं और जड़ नहीं रप्पते सो छन भर व्रीसवास रप्पते हैं परंतु
१४ परीछा के समय में फीर जाते हैं। और जो कांटों में गीरे
वे हैं की सुन के यल नीकलते हैं और यींता और धन और
इस जीवन का सुप्प उनहें दव्रालेते हैं और पके फल नहीं लाते।
१५ परंतु उतम भुम के वे हैं जो व्रचन को सुन के अछे और प्परे
मन में धारन करते हैं और संतोप्प से फल लाते हैं।

१६ कोइ मनुप्प दीपक व्रार के पातर से नहीं ढांपता अथवा
प्पाट तले नहीं रप्पता परंतु दीअट पर रप्पता है की वे जो
१७ भीतर आते हैं उंजीयाला देप्पें। कयोंकी कुछ गुपत नहीं है
जो परगट न की जाय और न छीपी जो जानी न जाय और
१८ परगट न हो। इस लीये सैांयेत रहो की तुम कीस रीत से
सुनते हो कयोंकी जीस कीसी का है उसको दीया जायगा और

जीसके कुछ नहीं उस से वुह भी जो वुह भावना से रष्पता है
फेर लीया जायगा।

१९ तब उसकी माता और भाइ आये और भीड़ के कारन उस
२० पास न आ सके। और उसको कहा गया की तेरी माता और
२१ तेरे भाइ बाहर ष्पड़े तुझे देष्पने को याहते हैं। तब उसने
उतर दीया और उन्हें कहा की मेरी माता और मेरे भाइ
ये हैं जो इसर का बयन सुनके मानते हैं।

२२ और एक दीन ऐसा हुआ की वुह अपने सीष्यन के संग एक
नाव पर यढ़ा और उन्हें बोला की हम उस झील के पार यलें
२३ तब उन्हों ने ष्पोली। परंतु जब नाव यली जाती थी वुह
सो गया और झील में एक आंधी की बयार उठी और उनकी
२४ नाव भर गइ और वे भय में थे। तब वे उसके पास आये और
उसे जगा के बोले की हे गुरु हे गुरु हम नसट होते हैं तब उसने
उठकर आंधी और जलके तरंग को डांटा और वे थम गये
२५ और बड़ा यैन हो गया। और उसने उन्हें कहा की तुमहारा
बीसवास कहां है और वे आसयरज से बोले की यह कीस रीत
का मनुष्य है की वुह पवन और जल को भी अगया करता है
और वे उसकी मानते हैं।

२६ फेर वे जदरीयों के देस में पहुंये जो जलील के सनमुष्प है।
२७ और जब वुह भुम पर उतरा उस नगर का एक मनुष्य जीस
पर बहुत दीन से पीसाय था और बसतर नहीं पहीनता था
२८ और न घर में रहता था परंतु समाधीन में। वुह यसु को
देष्प के यीलाया और उसके आगे गीर पड़ा और बड़े सबद से
बोला की हे अती महान इसर के पुतर यसु मुझे तुझ से कया
२९ काम है मैं तेरी बीनती करता हुं मुझे मत सता। कयोंकी
उसने उस अपवीतर आतमा को अगया की थी की उस मनुष्य
से बाहर नीकल जाय की वुह बारंबार उसको पकड़ता था
और वुह सीकरों और बेड़ीयों से बंधा हुआ था और उन

वंधनें को तोड़ता था श्रीन पीसाय उसको वन में दैाड़ाता था।
३० तव यसु ने उसको यह कहके पुछा की तेना नाम कया है वुह
वोला की लाजाउन इस कानन की वहुत से पीसाय उस में
३१ पैठे थे। फरेन उनहों ने उसकी वीनती की, की हमें गहीनाये
३२ में जाने की अगया मत कन। श्रीन वहां वहुत से सुअनों का
ग्रेक हुंड पहाड़ पन यनता था तव उनहों ने उसकी वीनती की
की हमें जाने दे की उन में पनवेस कनें तव उसने उनहें जाने
३३ दीया। फरेन वे पीसाय उस मनुष्य से वाहन नीकल के सुअनों
में पैठे श्रीन वुह हुंड कड़ाने पन से हट हील में जा गीना श्रीन
३४ उनका सांस नुक गया। तव यनवाहे इन वातों को देष्प के
३५ भागे श्रीन नगन में श्रीन देस में जाके वाले। तव जो की
कीया गया था वे देष्पने को वाहन नीकले श्रीन यसु के पास
श्राये श्रीन उस मनुष्य को जीस पन से पीसाय नीकल गये थे
वसतन पहीने हुये यसु के यनन पास वैठा हुश्रा सगयान पाया
३६ श्रीन डन गये। श्रीन जीनहों ने देष्पा भी था उनहों से वाले
३७ की वुह जीस पन पीसाय थे कीस नीत से यंगा हुश्रा। तव
जदनोयों के देस के श्रास पास की सानी मंडलीयों ने उसकी
वीनती की, की हमाने यहां से जा कयोंकी उन में वड़ा डन
३८ पैठ गया था श्रीन वुह नाव पन यढ़ के उलटा फरीना। श्रव
उस मनुष्य ने जीस पन से पीसाय वाहन नीकल गये थे उसकी
वीनती की, की मैं भी श्राप के संग नहुं पनतु यसु ने उसको
३९ यह कहके वीदा कीया। की श्रपने घन को फरीन जा श्रीन
दीष्पा की इसन ने तेने लीये कैसे वड़े वड़े काम कीये तव वुह
गया श्रीन साने नगन में सुनाने लगा की यसु ने उसके लीये
४० ग्रेसे वड़े वड़े काम कीये। श्रीन ग्रेसा हुश्रा की जव यसु फरीन
श्राया तो लोगों ने उसको गनहन कीया कयोंकी वे सवके सव
४१ उसकी वाट जोहते थे। श्रीन देष्पो याइनस नाम ग्रेक मनुष्य
श्राया जो मंडली का पनधान था श्रीन यसु के यनन पन गीन

४२ के व्रीनती की, को आप मेने घन यलीये। कयोंकी उसकी
प्रेकलैाती पुतनी व्रानह व्रनस प्रेक की थी जो मनने पन पड़ी थी
पनंतु उसके जाते ऊुये लोगें ने उस पन भीड़ की।
४३ ओैान प्रेक इसतीनी ने जीसका व्रानह व्रनस से नकत गीनता
था उस ने अपना समसत घन व्रैदें पन उठाया पनंतु कीसी से
४४ यंगी न हो सकी। पीछे से आके उसके व्रसतन के प्युंट को
४५ छुआ ओैान तनंत उसके नकत का व्रहना थम गया। सो यसु
ने कहा की कीसने मुहे छुआ जव्र सव्र मुकन गये तो पतनस ने
ओैान उनहों ने जो उसके संग थे कहा की हे गुनु लोग तुहे पन
ठेल मठेल कनके भीड़ कनते हैं ओैान तु कहता है की मुहे
४६ कीसने छुआ। यसु ने कहा की मुहे कीसी ने छुआ है कयोंकी
४७ मैं जानता ऊं की सकती मुह से नीकली। ओैान जव्र उस
इसतीनी ने देप्पा की वुह छीप न सकी तो कांपती ऊइ आइ
ओैान उसके आगे गीन के सव्र लोगें के आगे उस पन पनगट
कीया की मैं ने इस कानन से तुहे छुआ ओैान कैसा तुनंत यंगी
४८ हो गइ। तव्र उसने उसे कहा की हे पुतनी सुसथीन नहो
४९ तेने व्रीसवास ने तुहे यंगा कीया कुसल से यली जा। जव्र वुह
यह कह नहा था तो मंडली के पनघान के यहां से प्रेक ने आ
कन उसको कहा की तेनी पुतनी मन गइ गुनु को कलेस मत दे।
५० पनंतु जव्र यसु ने सुना उसने उतन देके उसको कहा की मत डन
५१ केवल व्रीसवास नप्प ओैान वुह यंगी हो जायगी। ओैान जव्र
वुह घन में आया तो केवल पतनस ओैान याकुव्र ओैान युहना
ओैान उस कनया के माता पीता को छोड़ कीसी को भीतन जाने
५२ न दीया। ओैान सव्र उसके कानन व्रीलाप कनके नो नहे थे
पनंतु उसने कहा की मत नोओे वुह मन नहीं गइ पनंतु नींद में
५३ है। तव्र वे यह जानके की वुह मन गइ है उस पन नींदा
५४ कनके हंसे। ओैान उसने उन सभों को व्राहन कनके उसका
५५ हाथ लीया ओैान पुकान के कहा की कनया उठ। तव्र उसका

पनान फ़ीन आया और वुह तुर्नत उठी और उसने अगया की
५६ की उसे पाने को दीया जाय। तव उसके माता पीता वीसमीत
हुपे और उसने उनहें कहा की यह जो कीया गया है कीसी
से मत कहीयो।

९ नवां पनव।

१ फ़ेन उसने अपने वानह सीष्यन को प्रेकठे वुलाके उनहें
सारे पीसाचों पन पनाकनम और नोगों को चंगा कनने को
२ सामनथ दीया। और उनहें भेजा की ईसन के नाज का
३ उपदेस कनें और नोगीयों को चंगा कनें। और उनहें कहा
की जातना के लीये कुछ मत लेओ न लाठीयां न झोली न नोटी
४ न नोकड़ न मनुष्य पीछे दो वसतन। और जीस कीसी घन में
५ तुम पनवेस कनो वहीं नहो और वहां से सीधानो। और जो
कोई तुमहाना आदन न कने जव तुम उस नगन से वाहन
नीकलो उनपन साष्मी के लीये अपने चनन की धुल झाड़ो।
६ तव वे चल नीकले और नगन नगन में से मंगल समाचान
७ सुनाते और सनवतन चंगा कनते गये। अव चौथई के अधक्ष
होनुदीस ने सव कुछ जो उस ने कीया था सुनके घवनाया इस
लीये को कीतने कहते थे की यहीया मीनतकों से जी उठा।
८ और कीतने की इलीयास पनगट हुआ और कीतने की प्रेक
९ पनाचीन आगम गयानीयों में से फ़ेन उठा है। तव होनुदीस
वोला की यहीया का तो मैं ने सीन काटा पनन्तु यह कौन है
जीसको अवसथा में मैं प्रेसी वातें सुनता हुं और चाहा की
१० उसे देखे। तव पनेनीतों ने फ़ेन आके सव कुछ जो उनहों ने
कीया था उसे कहा और वुह उनको लेके चुपके से प्रकांत वैत
११ सैदा नगन के प्रेक सुन सथान में गया। और जव लोगों ने
जाना वे उसके पीछे हो लीये और उसने उनहें गनहन कनके
उनसे ईसन के नाज की वातें कीं और उनको जीनहें चंगा

१२ होने का पनव्रोजन था यंगा कीय़ा। औान जव्र दीन ढलने
लगा उन व्रानहों ने आके उसको कहा की मंडली को व्रीदा
कनीय़े की वे नगनों में औान यानों औान की व्रसतीय़ों में जा
नहें औान भोजन पावें कय़ोंकी हम य़हां सुन सथान में हैं।
१३ पनंतु उसने उनहें कहा की तुम उनहें ख़ाने को देओ वे व्रोले
की हम पांय नोटीय़ों औान दो मछलीय़ों से अधीक कुछ नहीं
नख़ते जव्र लों हम जाके इन लोगों के लीय़े भोजन मोल लेवें।
१४ कय़ोंकी वे अटकल में पांय सहसन पुनुष्य थे तव्र उसने अपने
सीष्यन से कहा की उनहें पयास पयास की जथा कनके व्रैठाओ।
१५।१६ उनहों ने वैसाही कीय़ा औान सभों को व्रैठाय़ा। तव्र
उसने उन पांय नोटीय़ों औान दो मछलीय़ों को उठाय़ा औान
सनग पन दीनीसट कनके उनपन आसीस कीय़ा औान तोड़ा
१७ औान सीष्यन को दीय़ा की मंडली के आगे नख़ें। औान उनहों
ने ख़ाय़ा औान सव्रके सव्र तीनीपत ऊए औान उन टुकड़ों में से
१८ जो उनसे व्रय नहे थे व्रानह टोकनीय़ां भनीं उठाईं। औान
जव्र वुह अकेला पनानथना कनता था ऐसा ऊआ की उसके
सीष्य उसके संग थे तव्र उसने य़ह कहके उनहें पुछा की लोग
१९ मुझे कीसको कनके कहते हैं। वे उतन में व्रोले की य़हीय़ा
सनानकानक पनंतु कीतने की इलीय़ास अनु औान की पुनाने
२० आगम गय़ानीय़ों में से ऐक फेन उठा। उस ने उनहें कहा पनंतु
तुम मुझे कीसको कनके कहते हो पतनस ने उतन देके कहा की
२१ ईसन का वुह मसीह। तव्र उसने उनहें दीनढ़ता से येताय़ा
औान य़ह कहके अगय़ा की, की य़ह व्रात कीसी से मत कहीय़ो।
२२ अवेस है की मनुष्य का पुतन व्रऊत कसट उठावे औान पनायीनों
औान पनधान य़ाजकों औान अधापकों से तय़ाग कीय़ा जाय़
२३ औान माना जाय़ औान तीसने दीन फेन उठाय़ा जाय़। फेन
उसने सभों से कहा की य़दी कोई मेने पीछे आय़ा याहे तो
वुह अपनी इछा को तय़ाग कने औान पनतीदीन अपना

२४ कुरुस उठावे ग्रैान मेने पीछे ग्रावे। इस लीये की जो कोइ
अपना पनान व्रयाया याहे उसे प्पोवेगा पनंतु जो कोइ मेने
२५ कानन अपने पनान को प्पोवेगा सोइ उसे व्रयावेगा। कयोंकी
मनुप्प को कया लाभ ऊआ यदी वुह साने जगत को कमावे
२६ ग्रैान अपने को प्पोवे ग्रथवा तयाग कीग्रा जावे। कयोंकी
जो कोइ मुझ से ग्रैान मेने व्रयन से लजायगा मनुप्प का पुतन
भी उस से लजायगा जव्र वुह अपने ग्रैान अपने पीता के ग्रैान
२७ पवीतन दुतों के प्रेसयनय्र में ग्रावेगा। पनंतु मैं तुमहों से
सत कहता ऊं की यहां कीतेक प्पड़े हैं जो मीनतु का सवाद
२८ न योप्पेंगे जव्र लों इसन के नाज को न देप्प लें। ग्रैान उन
व्रातों से ग्राठ दीन के पीछे ऐसा ऊग्रा की वुह पतनस ग्रैान
युहना ग्रैान याकुव्र को लेके पहाड़ पन पनानथना कनने को
२९ गया। ग्रैान उसके पनानथना कनते ऊऐ उसके सनुप का डैाल
ग्रैानही हो गया ग्रैान उसका व्रसतन सेत ग्रैान यमकने लगा।
३० ग्रैान देप्पो की दो मनुप्प उस से व्रानता कनते थे जो मुसा ग्रैान
३१ इलीयास थे। वे तेज में दीप्पाइ दीये ग्रैान उसके मीनतु की
जीसको वुह यनोसलीम में संपुनन कनने पन था व्रानता कनते
३२ थे। तव्र पतनस ग्रैान वे जो उसके संग थे नींद से भानी थे
ग्रैान जव्र वे जाग उठे उनहों ने उसके प्रेसयनय को ग्रैान
३३ उन दोनों मनुप्पन को जो उसके संग प्पड़े थे देप्पा। ग्रैान जव्र
वे उस से ग्रलग होने लगे ऐसा ऊग्रा की पतनस ने यसु को
कहा की हे गुनु हमाने कानन ग्रछा है की यहां नहें ग्रैान तीन
तंव्रु व्रनावें ऐक तेने लीये ग्रैान ऐक मुसा के लीये ग्रैान ऐक
३४ इलीयास के लीये वुह न जानता था की कया कहता है। उसके
यह कहते ऐक मेघ ने ग्राके उन पन छाया की ग्रैान जव्र वे
३५ मेघ में पनवेस कनने लगे वे डन गये। ग्रैान यह कहते ऊऐ
मेघ से ऐक सव्रद नीकला की यह मेना पीनीय पुतन है उसकी
३६ सुनो। ग्रैान जव्र सव्रद हो युका यसु ग्रकेला पाया गया ग्रैान

वे चुपके हो कन उन व्रातों में से जो उनहों ने देष्पी थीं उनहों
दीनों में कीसी से कुछ न कहा।
३७ औान ऐसा ऊआ की दुसने दीन जव्र वे पहाड़ पन से उतने
३८ व्रऊत लोग उस से आ मीले। औान देष्पो की ऐक मनुष्प ने
उस मंडली से पुकान के कहा हे गुन मैं तेनी व्रीनती कनता ऊं
की मेने पुतन पन दीनीसट कन कयोंकी वुह मेना ऐकलौता है।
३९ औान देष्प उसको आतमा लेता है औान वुह तुनंत चीलाता
है औान वुह उसे ऐसा ऐंठता है की वुह फेन व्रहाता है औान
४० वुह उसको कुचल के कठीन से नीकल जाता है। औान मैं ने
तेने सीष्पन से व्रीनती की, की उसको दुन कनें औान वे न सके।
४१ तव्र यसु ने उतन दीया औान कहा हे अव्रीस्वास औान हठीली
पीढ़ी कव्र लों मैं तुमहाने संग नऊं औान तुमहानी सऊं अपने
४२ पुतन को इधन ला। औान जव्र वुह आने लगा उस पीसाच
ने उसको गीना दीया औान फाड़ा तव्र यसु ने उस अपवीतन
आतमा को डांटा औान व्रालक को चंगा कीया औान उसे उसके
४३ पीता को सौंप दीया। औान वे सव्र इसन के व्रड़े पनाकनम
से व्रीसमीत ऊऐ पनंतु जव्र वे उन कानजों से जो यसु ने कीये
४४ थे आसचनज में थे उसने अपने सीष्पन को कहा। ये व्रातें
तुमहाने कान में पैठें की मनुष्प का पुतन लोगों के हाथ में सौंपा
४५ जायगा। पनंतु उनहों ने इस कहावत को न समझा औान
यह उनसे गुपत नहा की उनको सुझ न पड़ा औान वे उस व्रात
४६ को उसे पुछने को डने। फेन उन में चनचा उठी की हमों में
४७ सव्र से व्रड़ा कौन होगा। यसु ने उनके मन की चींता जान के
४८ ऐक व्रालक को ले कन अपने पास नष्पा। औान उनहें कहा
की जो कोइ इस व्रालक को मेने नाम से गनहन कने मुझे
गनहन कनता है औान जो कोइ मुझे गनहन कने उसको जीसने
मुझे भेजा है गनहन कनता है कयोंकी वुह जो तुम सभों में
४९ अतयंत छोटा है वही व्रड़ा होगा। तव्र युहना ने उतन दीया

औान कहा की हे गुन हम ने प्रेक को तेने नाम से पीसाय को
दुन कनते देप्पा औान उसे व़नज दीया इस कानन की वुह
५० हमाने संग नहीं आता। तव़ य़सु ने उसको कहा की मत व़नज
कय़ोंकी वुह जो हमाने व़ीनुघ नहीं महाना साथी है।
५१ औान जव़ उसके लपन उठाय़े जाने का समय़ आय़ा प्रैसा
ऊआ की उसने अपनोमुंह को दीनढ़ कीय़ा की य़नोसलीम
५२ को ज़ाय़। औान अपने आगे दुतां को भेजा औान उनहों ने
जाके सामनीढ़ों के प्रेक गांव में पनवेस कीय़ा की उसके लीय़े
५३ सीघ कनें। औान उनहों ने उसको गनहन न कीय़ा इस कानन
५४ की उसका नुप्प य़नोरुसलीम को जाने पन था। औान जव़ उसके
सीप्प य़ाकुव़ औान य़हना ने देप्पा वे व़ोले की हे पनभु तेनी
इछा होय़ तो हम अगय़ा कनें की सनग से आग व़नसे औान
५५ उनहें भसम कने जैसा की इलीय़ासने कीय़ा था। पनंतु वह
फरीनके धनके दपट के व़ोला तुम नहीं जानते की तुमहाना
५६ कीस भांत का आतमा है। कय़ोंकी मनुप्प का पुतन लोगों का
पनान नास कनने नहीं आय़ा पनंतु नछा कनने को आय़ा है
५७ फेन वे दुसने गनाम को गय़े। औान प्रैसा ऊघा की जव़ वे
मानग में यले जाते थे कोसी ने उसको कहा की हे पनभु जहां
५८ कहीं तु जाय़ मैं तेने पीछे यलुंगा। तव़ य़सु ने उसे कहा की
लोमड़ीय़ों के लीय़े मांदें औान आकास के पंछीय़ों के लीय़े
प्पांते हैं पनंतु मनुप्प के पुतन के लीय़े सीन घनने का नहीं है।
५९ औान उसने दुसने को कहा की मेने पीछे यल पनंतु उसने कहा
६० हे पनभु मुहे पहीले अपने पीता को गाड़ने दे। य़सु ने उसे
कहा की मीनतक अपने मीनतक को गाड़ें पनंतु तु जाके इसन
६१ के नाज का संदेस दे। औान दुसने ने भी कहा हे पनभु मैं
तेने पीछे यलुंगा पनंतु पहीले मुहको जाने दे की अपने घन
६२ के लोगों से व़ीदा हो आउं। तव़ य़सु ने उसको कहा की जो

मनुष्य अपने हाथ को हल पन नष्पके पोछे देष्पे इसन के नाज
के जोग नहीं।

१० दसवां पनब्र।

१ इन ब्रातों के पीछे पनभु ने और सतन को भी ठहनाया और
उनहें दो दो कनके अपने आगे जीस जीस नगन और सथान
२ में जीघन वुह आप जाया याहता था भेजा। इस लीये उसने
उनहें कहा की पकी ऊइ ष्पेती ब्रङत है ठीक पनंतु ब्रनीहान
थोड़े हैं सो ष्पेती के सामी की ब्रोनतो कनो की वुह अपनी पकी
३ ष्पेतो के लीये ब्रनीहानों को भेजे। जाओ देष्पा मैं तुमहें
४ मेमना की नाइं ऊंडानों में भेजता ऊं। न डोड़ा न झोला न
५ जुता लेओ और मानग में कीसी को नमसकान मत कनो। और
जीस कीसी घन में पनवेस कनो पहीले उस घन पन कलयान
६ कहो। और ब्रदी वहां कलयान का पुतन होय तो तुमहाना
कलयान उस पन ठहनेगा नहीं तो तुमहों पन फीन आवेगा।
७ और उसी घन में नहो और जो कुछ वे तमहें देवें ष्पाओ पीओ
कयोंकी ब्रनीहान अपनी ब्रनी के जोग है घन घन मत फीनो।
८ और जीस कीसी ब्रसती में पनवेस कनो और वे तुमहाना आदन
९ कनें जो कछ तुमहाने आगे नष्पा जाय भोजन कनो। और
वहां के नोगीयों को यंगा कनो और उनहें कहो की इसन का
१० नाज तुमहाने पास पऊंया है। पनंतु जीस जीस नगन में तुम
पनवेस कनो और वे तुमहाना आदन न कनें वहां के मानगों
११ मे जाके कहो। की तुमहाने नगन की धुल लों जो हम पन
पड़ी है हम तुम पन झाड़ यले तथापी इसे नीसयय जान नष्पो
१२ की इसन का नाज तुमहाने पास पऊंया है। पनंतु मैं तुमहों
से कहता ऊं की उसी दीन में उस नगन की दसा से सदुम के
१३ लीये अधीक सहज होगी। हे कोनजीन तुझ पन हाय है हे
ब्रैतसैदा तुझ पन हाय है इस लीये की जो आसयनज कनम

तुम में दीप्पाये गये यदी सुन श्रीन सैदा में दीप्पाये जाते वे
टाट श्रोढ़ के श्रीन नाप्प पन वैठ के कवके पसयाताप कनयुकते।
१४ पनंतु वीयाव के दीन में तुमहानी दसा से सुन श्रीन सैदा के
१५ लीये श्रधीक सहज होगो। श्रीन हे कपननाऊम जो सनग
१६ लों वढ़ाइ गइ है तु लीये नास लों गीनाइ जायगी। वुह जो
तुमहानी सुनता है मेनी सुनता है श्रीन वुह जो तुमहाना
श्रनादन कनता है मेना श्रनादन कनता है श्रीन वुह जो मेना
१७ श्रनादन कनता है मेने भेजने वाले का श्रनादन कनता है। तव
वे सतन फेन श्राके श्रानंद से कहने लगे की हे पनभु तेने नाम
१८ से पीसाच भी हमाने वस में हैं। तव उसने उनहें कहा मैं ने
१९ देप्पा की सैतान वीजली की नाइं सनग से गीना। देप्पो मैं
तुनहें सांपों श्रीन वीछुश्रों को श्रीन सतनु के समसत पनाकनम
को लाताड़ने का सामनथ देता ऊं श्रीन कोइ वसतु तुमहें कीसी
२० नीत से दुप्प न देगी। तीस पन भी उस से श्रानंद मत कनो
की श्रातमा तुमहाने वस में हैं पनंतु पहीले इस लीये श्रानंद
कनो की तुमहाने नाम सनग में लीप्पे ऊए हैं।

२१ उसी घड़ी यसु ने श्रातमा में श्रानंदीत होके कहा की हे पीता
सनग श्रीन पीरथीवी के पनभु मैं तेनी सतुत कनता ऊं की तु
ने इन वातों को गयानीश्रों श्रीन वुधमानों से छीपाया श्रीन
उनहें वालकों पन पनगट कीया ऐसा होवे हे पीता कयोंकी
२२ तेनी दीसट में यही श्रछा जाना गया। सव कुछ मेने पीता
से मुझे सौंपा गया श्रीन कोइ नहीं जानता की पुतन कौन है
पनंतु पीता श्रीन न कोइ की पीता कौन है पनंतु पुतन श्रीन
२३ जीस पन पुतन पनगट कीया चाहे। तव उसने सीप्पन के श्रोन
फेन के एकांत में कहा की जो जो वसतु तुम देप्पते हो जो
२४ श्रांप्पें उनहें देप्पती हैं सो घंन हैं। की मैं तुमहें कहता ऊं
की वऊतेने श्रागम गयानीयों श्रीन नाजाश्रों ने श्रभीलाख
कीया की यह जो तुम देप्पते हो देप्पें श्रीन न देप्पा श्रीन जो

२५ बातें तुम सुनते हो सुनें और न सुना। और देखो कीसी
वैवसथा के गयाता ने उठके उसकी परीछा करने को पुछा की
हे गुरु मैं कया करुं की अनंत जीवन का अधीकारी होउं।
२६ उसने उसको कहा की वैवसथा में कया लीखा है तु कैसे पढ़ता
२७ है। तब उसने उतर देके कहा की तु अपने परमेसर पर
अपने सारे अंतःकरन से और अपने सारे मन से और अपने
सारे बल से और अपनी सारी बुध से और अपने परोसी को
२८ अपने समान प्रेम कर। तब उसने उसको कहा की तु ने
२९ ठीक उतर दीया यही कर और तु जीयेगा। परंतु उसने
अपने को नीरदोष ठहराने की इछा करके यीसु को कहा मेरा
३० मेरा परोसी कौन है। तब यीसु ने उतर देके उसको कहा की
कोई यरोसलीम से यरीहो को जाता था और चोरों में पड़ा
जीनहों ने नंगा करके उसको घायल कीया और अधमुआ
३१ छोड़ के चले गये। तब संजोग से कोई याजक उस मारग से
आया जब उसने उसे देखा वुह दुसरे ओर से चला गया।
३२ और इसी रीत से ऐक लेवी ने उस सथान में पहुंचके उसे
३३ आ देखा और दुसरे ओर से चला गया। परंतु कोई सामरी
जाते जाते जहां वुह था वहां पहुंचा और वुह उसे देखके
३४ दयामान हुआ और जाके तेल और मदीरा लगा कर उसके
घावों को बांधा और अपने पसु पर बैठा के उसे सरा में लाया
३५ और उसकी सेवा करने लगा। तब दुसरे दीन सीधारते
हुए उसने दो सुकी नीकाल कर भठीहारे को दी और उसको
कहा की उसकी टहल कर और जो कुछ तेरो अधीक उठान
३६ होगी मैं फीर आके तुझे भर देउंगा। अब तु कया बीचार
करता है सो जो चोरों में जा पड़ा उन तीनों में से कीस को
३७ उसका परोसी समझता है। उसने कहा उसको जीसने उस पर
दया की तब यीसु ने उसे कहा जा तु भी ऐसाही कर।
३८ और युं हुआ की जब वे जाते थे उसने कीसी गांव में

पनवेस कीया औान ऐक इसतोनी ने जीसका नाम मनसा था
३९ उसको अपने घन में उताना। औान मनीयम नाम उसकी ऐक
व्रहीन थी जो यसु के यनन पास वैठ के उसकी व्रानता भी
४० सुनती थी। तव्र मनसा व्रक्रत सेवा से व्रयाकुल ऊइ औान उसके
पास आके व्रोली की हे पनभु कया तु नहीं यींता कनता की
मेनी व्रहीन ने मुझे अकेली पन सेवा छोड़ दी इस लीये उसे
४१ अगया कन की मेना सहाय कने। तव्र यसु ने उतन दीया
औान उसको कहा की मनसा हे मनसा तु यीनतमान औान
४२ व्रक्रत सी व्रसतु में व्रयाकुल है। पनंतु ऐकही व्रसतु का आवसक
है औान मनीयम ने उस अछे भाग को युना है जो उस से लीया
न जायगा।

११ गयानहवां पनव्र।

१ औान ऐसा ऊआ की जव्र वह कीसी सथान में पनानथना
कनता था औान अवकास पाया उसके सीष्यन में से ऐक ने उसे
कहा की हे पनभु हम को पनानथना कनना सीष्या जैसा की
२ यहीया ने भी अपने सीष्यन को सीष्याया। उसने उनहें कहा
की जव्र तुम पनानथना कनो कहो हे हमाने पीता जो सनग में
है तेना नाम पवीतन होवे तेना नाज आवे तेनी इछा जैसी
३ सनग में है वैसी पीनथीवी पन हो जाय। हमाने दीन दीन
४ को नोटी पनतीदीन हमें दे। औान हमाने पापों को छमा कन
कयोंकी हम भी हन ऐक को जो हमाना उधानीक है छमा
कनते हैं औान हमें पनीछा में न डाल पनंतु दुसट से व्रया।
५ औान उसने उनहें कहा तुम में से कौन है जीसका ऐक मीतन
होय औान आधी नात को उस पास जाय औान उसको कहे की
६ हे मीतन तीन नोटी मुझे उधान दे। कयोंकी मेना ऐक मीतन
जातना में मुझ पास आया है औान मेने पास कुछ नहीं की उसके
७ आगे धनुं। औान वुह भीतन से उतन देवे औान कहे की मुझे

मत सता अब़ दुवान व़ंद है श्रौन मेने व़ालक मेने संग व़ीछौने
८ पन हैं मैं उठ के तुहे दे नहीं सकता। मैं तुम से कहता ऊं
की य़दपी वुह उसके मीतन होने के कानन से उसे न देगा
तथापी उसके गीड़ गीड़ाने के लीय़े वुह उठेगा श्रौन जीतना उसे
९ श्रावेसक है देगा। सो मैं तुमहें कहता ऊं की मांगो श्रौन
तुमहें दीय़ा जाय़गा ढुंढो श्रौन तुम पाश्रोगे प्पटप्पटाश्रो श्रौन
१० तुमहाने लीय़े प्पोला जाय़गा। कय़ोंकी हन प्रेक जो मांगता
है लेता है श्रौन जो कोइ की ढुंढ़ता है पाता है श्रौन जो
११ प्पटप्पटता है उसके लीय़े प्पोला जाय़गा। य़दी पुतन तुम
में से जो पीता हो नोटी मांगे कय़ा वुह उसको पथन देगा श्रथवा
१२ य़दी मछली मांगे मछली की संती उसे सनप देगा। श्रथवा
१३ य़दी वुह श्रंडा मांगे कय़ा वुह उसे व़ीछू देगा। सो य़दी तुम
वुने होके श्रछे दान श्रपने व़ालकों को देने जानते हो तो कीतना
श्रघीक तुमहाना सनग व़ासी पीता तुमहें जो उस से मांगते हैं
१४ घनमातमा देगा। फेन वुह प्रेक पीसाय को जो गुंगा था
नीकालता था श्रौन प्रैसा ऊश्रा की जब़ वुह पीसाय नीकाला
गय़ा वुह गुंगा व़ोलने लगा श्रौन लोगों ने श्रासयनज मान ।
१५ पनंतु उन में से कीतने व़ोले की वुह पीसायों के पनघान व़ाल-
१६ जव़ुल के सहाय़ से पीसायों को दुन कनता है। कीतनों ने
१७ पनीछा के लीय़े उस से सनग से प्रेक लछन याहा। पनंतु उस
ने उनकी यींता जान के उनहें कहा की जो जो नाज श्रपने
व़ीनोघ से व़ीभाग हो जाय़ उजाड़ होता है श्रौन घन घन से
१८ व़ीनुघ होके गीन जाता है। य़दी सैतान भी श्रपने व़ीनोघ
में व़ीभाग होवे तो उसका नाज कैसे ठहनेगा इस कानन की
तुम कहते हो की मैं व़ालजव़ुल के सहाय़ से पीसायों को दुन
१९ कनता ऊं। श्रौन य़दी मैं व़ालजव़ुल के सहाय़ से पीसायों को
दुन कनुं तो तुमहाने पुतन कीसके सहाय़ से दुन कनते हैं इस
२० लीय़े वे तुमहाने नय़ाय़ी होंगे। पनंतु य़दी मैं इसन के सहाय़

से पीसाचों को दुर करता ऊं तो नीसचय इसर का राज तुम
२१ पर आया है। जब बलवान मनुष्य हथीयार बांधे ऊऐ अपने
घर की रखवाली करता है उसकी संपत कुसल से रहती है।
२२ परंतु जब उस से ऐक अधीक बलवान उसपर चढ़ आवे और
उसको बस में करे वुह उसके समसत हथीयार को जीस पर
उसका आसरा था ले लेता है और उसके लुट को बांट लेता है।
२३ वुह जो मेरा संगी नहीं सो मुझ से बीरुध है वुह जो मेरे संग
२४ ऐकठा नहीं करता बीथराता है। जब अपवीतर आतमा
मनुष्यों में से नीकल गया है वुह सुखे सथान में बीसराम ढुंढता
फीरता है और नहीं पाके वुह कहता है की मैं अपने घर में
२५ जहां से नीकला ऊं फीर जाउंगा। और आके उसे झाड़ा
२६ बोहारा पाता है। तब वुह जाके और सात आतमा जो उस
से अधीक दुसट हैं लेता है और वे पैठ के वहीं रहते हैं
तब उस मनुष्य की पीछली दसा पहीली से भी अधीक बुरी
२७ होती है। और जब वुह यह बचन कह रहा था ऐसा ऊआ
की उस मंडली में से ऐक इसतीरी ने पुकार के कहा धंन वुह
२८ गरभ जीस में तु पड़ा और वे सतन जीनहें तुने चुसा है। परंतु
उसने कहा की हां अती धंन वे हैं जो इसर का बचन सुनते
२९ हैं और उसे मनन करते हैं। और जब बऊत लोग ऐकठे
होने लगे उसने कहना आरंभ कीया की इस समय के लोग
दुसट हैं वे चीनह ढुंढ़ते हैं परंतु युनस आगमगयानी के
३० चीनह से अधीक उनहें कोइ चीनह न दीया जायगा। कयों-
की जीस रीत से युनस ननीवी के लोगों पर ऐक चीनह था
वैसा मनुष्य का पुतर भी इस समय के लोगों के लीये होगा।
३१ दखीन की रानी बीचार के दीन में इस समय के मनुष्य के
संग उठेगी और उनहें दोखी ठहरावेगी कयोंकी वुह पीरथीवी
के सीवाने से सुलेमान का गयान सुनने को आइ और देख
३२ की ऐक यहां सुलेमान से महान है। ननीवी के लोग बीचार

के दीन में इस समय़ के लोगों के संग उठेंगे और उनहें दोष्पी
ठहरावेंगे इस लीय़े की उनहों ने य़ुनस के उपदेस से पसचा-
३३ ताप कीय़ा और देष्पो की ग्रेक य़हां य़ुनस से महान है। कोइ
मनुष्य दीपक ब्रार के गुपत सथान में अथवा नांद के नीचे नहीं
रष्पता परंतु दीअट पर की वे जो भीतर आवें उंजीय़ाला देष्पें।
३४ देह का उंजीय़ाला आंष्प है इस कारन जव़ तेरी आंष्प नीरमल
है तेरा समसत देह भी उंजीय़ाले से पुरन है परंतु जव़ मलीन
३५ है तो तेरा समसत देह भी अंधकार से भरा है। इस लीय़े
सैंयेत रहो की वुह उंजीय़ाला जो तुझ में है अंधीय़ारा न
३६ हो जाय़। सो य़दी तेरा समसत देह उंजीय़ाले से भरा हो
और कुछ अंधीय़ारा न हो तो समसत देह उंजीय़ाले से भरा
होगा जैसा जब़ ती परकास दीपक से तुझे उंजीय़ाला मीलता है।
३७ और जव़ वुह कह रहा था ग्रेक फरीसी ने उस से ब्रीनती
करके कहा की मेरे संग भोजन कीजीय़े और वुह भीतर जाके
३८ भोजन पर ब्रैठा। और जव़ उस फरीसी ने देष्पा की उसने
३९ भोजन से पहले न धोय़ा तो आसचरज माना। तव़ परभु
ने उसको कहा हे फरीसीय़ो कटोरे और थाली को ब्राहर से
सुध करते हो परंतु तुमहारे भीतर में कुटरता और दुसटता
४० भरी ऊइ हैं। हे मुरष्पो कय़ा जीसने ब्राहर ब्रनाय़ा उसने
४१ भीतर भी नहीं ब्रनाय़ा। परंतु अपनी ब्रीसात के समान
दान देओ और देष्पो की समसत ब्रसतें तुमहारे लीय़े पवीत्र
४२ हैं। परंतु हे फरीसीय़ो तुमहों पर संताप है कय़ोंकी तुम
पुदीना और जीरा और हर ग्रेक रीत के साग पात का दसवां
भाग देते हो और नय़ाय़ और इसर के परेम को उलंघन
करते हो तुम को अवस था की इनहें करते और उनहें न
४३ छोड़ते। हे फरीसीय़ो तुम पर संताप है कय़ोंकी तुम सभा
४४ में स्रेसठ आसन और हाटों में नमसकार चाहते हो। हे
कपटी अधापको और फरीसीय़ो तुम पर संताप है कय़ोंकी

तुम समाधीन की नाईं हो जो दीष्पाई नहीं देते श्रीर लोग
४५ जो उपर चलते हैं नहीं जानते। तब्र एक व्रेवसथा के गय़ाता
ने उतर दीय़ा श्रीर उसको कहा की हे गुरु यह कहके तु
४६ हमारी भी नींदा करता है। तब्र उसने कहा हे व्रेवसथा के
गय़ानीय़ो तुम पर भी संताप है कय़ोंकी तुम कठीन ब्रोझ
मनुष्यन पर लादते हो श्रीर तुम श्राप उन ब्रोझों को श्रपनी
४७ एक श्रंगुली से नहीं छुते। तुम पर संताप है कय़ोंकी तुम
श्रागमगय़ानीय़ों के समाधीन को ब्रनाते हो श्रीर तुमहारे
४८ पीतरों ने उनहें मार डाला। ठीक तुम साष्पी देते हो की
श्रपने पीतरों के करम को मान लेते हो कय़ोंकी उनहों ने तो
उनहें मार डाला श्रीर तुम उनके समाधीन को ब्रनाते हो।
४९ इस लीय़े ईसर के गय़ान ने भी कहा की मैं श्रागमगय़ानीय़ों
श्रीर परेरीतों को उनके पास भेजुंगा श्रीर वे उन में से कीतनों
५० को मार डालेंगे श्रीर सतावंगे। की सारे श्रागमगय़ानीय़ों का
लोहु जो जगत के श्रारंभ से ब्रहाय़ा गय़ा है इस समय़ के
५१ लोगों से लीय़ा जाय़। हाब्रील के लहु से लेके जकरीय़ा के
लोहु लों जो ब्रेदी श्रीर मंदीर के मघ में मारा गय़ा मैं तुमहों
५२ से कहता हुं की इस समय़ के लोगों से लीय़ा जाय़गा। हे
व्रेवसथा के गय़ानीय़ो तुम पर संताप है कय़ोंकी तुम ने ब्रीदय़ा
की कुंजी ले ली है तुम ने श्राप परवेस नहीं कीय़ा श्रीर जो
५३ परवेस करते थे उनहें ब्ररजा। श्रीर जब्र वुह उनहें य़े ब्रातें
कह रहा था श्रधय़ापक श्रीर फरीसी उसे ब्रहुत सी ब्रातों से
५४ ष्पीजाने श्रीर श्रतय़ंत उसकाने लगे। श्रीर उसके घात में
लगे श्रीर ढुंढते थे की उसके मुंह से कोई ब्रचन पकड़ पावें की
वे उसे दोष्पी करें।

१२ ब्रारहवां पर्व्र।

१ इतने में जब्र श्रगनीत लोगों की मंडली एकठी हुई श्रीर

ऐक दुसने को लताड़ता था उसने सब से पहले अपने सीष्यन
को कहना आनंभ कीया की तुम फनीसीयों के खमीन से जो
२ कपट है पने नहो। कयोंकी कोइ वसतु ढंपी नहीं जो पनगट
३ न होगी न छीपी जो जानी न जायेंगी। इस कानन जो कुछ
तुम ने अंधीयाने में कहा है उंजीयाले में सुना जायगा औन
जो कुछ तुम ने कोठनीयों में कान में कहा है कोठों पन
४ पनचान कीया जायगा। औन हे मीतनो मैं तुम से कहता हुं
की उनसे मत डनो जो देह को मानडालते हैं औन उसके पीछे
५ कुछ कन नहीं सकते। पनंतु मैं तुमहें चीताउंगा की तुम
कीस से डनो उस से डनो जो देह को मानके पीछे ननक में
डालने का सामनथ नखता है मैं तुम से कहता हुं की उसे डनते
६ नहो। कया दो दमड़ीयों पन पांच चीड़ीयां नहीं बीकतीं
७ औन उन में से इसन के आगे ऐक भुली हुइ नहीं है। पनंतु
तुमहाने सीन के साने बाल लों गीने हुऐ हैं इस लीये मत
८ डनो की तुम बहुत सी चीड़ीयों से अधीक मोल के हो। मैं
ये भी तुम से कहता हुं की जो कोइ मनुष्यन के आगे मुझे
मान लेगा मनुष्य का पुतन भी उसे इसन के दुतों के आगे
९ मान लेगा। पनंतु जो कोइ मनुष्यन के आगे मुझ से मुकनेंगा
१० इसन के दुतों के आगे मुकना जायगा। औन जो कोइ मनुष्य
के पुतन के बीनोध में कहेगा वुह उसको छमा कीया जायगा
पनंतु जो धनमातमा के बीनोध में अपनींनदा कनता है उसको
११ छमा नहीं कीया जायगा। औन जब वे तुमहें मंडलीयों में
औन नयायी औन पनाकनमी के आगे ले जावें चीनता मत
कनो की तुम कैसे अथवा कया उतन देओगे अथवा कया कहोगे।
१२ कयोंकी जो तुमहें कहना है धनमातमा उसी घड़ी तुम को
सीखावेगा।
१३ तब उस मंडली में से ऐक ने उसे कहा की हे गुनु मेने भाइ
१४ को कह कीं वुह अधीकान का भाग मुझे देवे। तब उसने उसे

कहा की हे मनुष्य कीस ने मुझे तुम पन नयायी अथवा भाग
१५ वानक कीया। तव उसने उनहें कहा सैायेत नहो और लोभ
से पने नहो कयोंकी कीसी का जीवन उसके घन की अघीकाइ
१६ से नहीं है। फेन उसने उनहें प्रेक द्रीनीसटांत कहा की प्रेक
१७ घनमान की भुम में वहुत कुछ उपजने लगा। तव उसने अपने
मन में यह कह के वीयान कीया की मैं कया कनुं मेने सथान
१८ नहीं जहां मैं अपनी भुम की वढती नप्पुं। तव उसने कहा
मैं यह कनुंगा मैं अपने प्पते का ढाउंगा और वडे वनाउंगा
१९ और अपनी वढती और संपत वहीं प्रेकठा कनुंगा। और
अपने पनान का कहुंगा की हे पनान तेने पास वनसों के लीये
वहुत सी संपत प्रेकठी घनी है यैनक न प्पा पी आनंद हो।
२० पनंतु इसन ने उसे कहा की हे मुनप्प इसी नात तुझ से तेना
पनान फेन लीया जायगा तव वे वसतें जा तु ने वटोनी हैं
२१ कीसकी होंगी। उसकी यह दसा है जो अपने लीये घन वटोनता
है और इसन के आेान घनी नहीं है।

२२ फेन उसने अपने सीप्पन का कहा इस लीये मैं तुमसों से
कहता हुं की अपने जीवन के लीये यीनता मत कनो की हम
कया प्पावेंगे और न देह के लीये की हम कया पहीनेंगे।
२३ जीवन प्पाने से और देह वसतन से अघीक है। कैावों का
देप्पो वे न वोते हैं न लवते हैं उनके न प्पलीहान न प्पते हैं
और इसन उनको प्पीलाता है तुम पंछीयों से कीतने भले हो।
२५ और कैान तुम में यीनता कनके अपने डील का हाथ भन
२६ वढा सके। यदी तुम अती छोटे काम नहीं कनसकते तो औनों
२७ के लीये कयों यीनता कनते हो। सुदनसन पन दीनीसट कनो
वे कैसे वढते हैं वे पनीसनम नहीं कनते न कातते हैं और मैं
तुम से कहता हुं की सुलेमान अपने समसत प्रेसनय में उन में
२८ से प्रेक के समान वीभुसीत न था। फेन यदी इसन घास का
जो आज प्पेत में है और कल भटे में होंकी जायगी यों पहीे-

जाता है तो तुमहें कीतना अधीक पहीनावेगा हे अलप बीसवा-
२९ सीयो । औन यीनता मत कनो की हम कया खायेंगे औन
३० हम कया पीयेंगे न अपने मन में संदेह कनो। कयोंकी उन
सब बसतुन की यीनता संसानीक लोग कनते हैं औन तुमहाना
३१ पीता जानता है की तुमहें इन बसतुन का आवसक है। पनंतु
पहीले ईसन के नाज को ढूंढो औन ये सब बसतें तुमहाने लीये
३२ अधीक की जायगी। हे छोटे झुंड मत डन इस लीये की तुम-
३३ हाने पीता की पनसनता है की नाज तुमहें देवे। जो कुछ तुम-
हाने हो बेंय के दान कनो औन थैली जो पुनानी नहीं होती
औन सनग में धन जो नहीं घटता जहां योन नहीं पहुंयता
३४ औन कीड़े नास नहीं कनते अपने लीये सहेजो। कयोंकी
जहां तुमहाना धन है तहां तुमहाना मन भी लगा नहेगा।
३५ तुमहानी कमनें बंधी नहें औन तुमहाना दीपक बनता नहे।
३६ औन तुम तो उन लोगों के समान जो अपने पनभु को बाट जोह-
ते हों की वुह बीवाह कनके कब फीने की जब वुह आवे औन
३७ खटखटावे वे उसके लीये तुनंत खोलें। धंन वे दास जीनहें
पनभु आकन जागते पावे मैं तुम से सत कहता हूं की वुह कमन
बांधेगा औन उनहें भोजन पन बैठावेगा औन आके उनकी
३८ सेवा कनेगा। औन यदी वुह दुसने पहन अथवा तीसने पहन
३९ में आवे औन ऐसा पावे वे दास धंन हैं। औन तुम तो जानते
हो की यदी घन का सामी जानता की योन कीस घड़ी आवेगा
तो वुह जागता नहता औन अपने घन में संघ देने न देता।
४० सो तुम भी लैस नहो कयोंकी मनुष्य का पुतन ऐसे समय में
आवेगा जब तुम बाट न जोहते नहोगे।
४१ तब पतनस ने उसको कहा की हे पनभु यह दीनीसटांत तु
४२ हम से अथवा सब से कहता है। पनभु ने कहा की वुह बीस-
वासी औन बुधमान भंडानी कौन है जीसको पनभु अपने पनी-
वानों पन पनधान कनेगा की उनहें ठीक समय में भोजन का

४३ भाग देवे। धंन वुह सेवक जीसे उसका परभु आके ऐसेही
४४ करते पावे। मैं तुम से सत कहता ऊं की वुह उसे अपनी
४५ समसत संपत पर परधान करेगा। परंतु यदी वुह सेवक
अपने मन में कहे की मेरा परभु आवने में बीलंब करता है
और दास और दासीयों को मारने और खाने पीने और
४६ मतवाले होने लगे। तो उस सेवक का परभु ऐसे दीन में
आवेगा जब वुह बाट न जोहता हो और ऐसी घड़ी में की जब
वुह अचेत हो और उसको दो टुकड़ा करेगा और उसका भाग
४७ अबीसवासीयों के संग ठहरावेगा। और वुह सेवक जो अपने
परभु की इछा जान के सैस न ऊआ न उसकी इछा के समान
४८ चला बऊत सा मार पावेगा। परंतु जीसने न जाना और
मार खाने का काम कीया वुह थोड़ा सा मार पावेगा कयोंकी
जीसको बऊत दीया गया है उस से बऊत मांगा जायगा और
जीसको लोगों ने बऊत सोंपा है उस से वे अधीक मांगेंगे।
४९ मैं पीरथीवी पर आग लगाने आया ऊं और मैं कैसाही चाहता
५० ऊं की अभी लग जाय। और मुझे ऐक सनान से सनान पावना है
५१ और मैं कैसे सकेत में ऊं जब लों वुह संपुरन न होले। तुम कया
समझते हो की मैं पीरथीवी पर कुसल देने आया ऊं मैं तुम से
५२ कहता ऊं की नहीं परंतु पहीले भाग करने को। कयोंकी
अबसे पांच ऐक घर में दो भाग होंगे तीन सतरु दो के दो
५३ सतरु तीन के। पीता पुतर के बीरोध में बीभाग होगा और
पुतर पीता के बीरोध में माता पुतरी के बीरोध में और पुतरी
माता के बीरोध में सास पतोहू के बीरोध में और पतोहू सास
५४ के बीरोध में। और उसने यह भी लोगों से कहा की जब
तुम घटा पछीम से उठती ऊई देखते हो तुरंत कहते हो की
५५ झड़ी आती है और ऐसाही होता है। और जब दखीन का
पवन चलता है तुम कहते हो की गरमी होगी और योंहीं
५६ होती है। हे कपटीयो तुम आकास और पीरथीवी के रुप

को व्रीयान कन सकते हो पन य्रह कैसे है की तुम इस समय्र
५७ को नहीं व्रीयानते। हां वुह जो ठीक है आपही कय्रों नहीं
५८ व्रीयानते। जीस समय्र में तु अपने व्रैनी के संग नय्राय्री
के पास यला जाता है मानग में जतन कन की तु उस से छुट
जावे न हो की इह तुहे नय्राय्री के समीप प्पींयवावे ग्रैान
नय्राय्री तुहे दंडकानी को सोंपे ग्रैान दंडकानी तुहे व्रंदीगीनह
५९ में डाल दे। मैं तुह से कहता हुं की तु वहां से न नीकलेगा जव्र
लों तु पीछली दमड़ी लों न ग्नन दे।

१३ तेनहवां पनव्र।

१ उस समय्र में कीतने वहां थे जो उन जलीलीय्रों के व्रीषय्र में
उस से कहने लगे जीनका लोहु पीलातुस ने उनके व्रलीदान
२ के संग मीलाय्रा। ग्रैान य्रसु ने उतन दीय्रा ग्रैान उनहें कहा
तुम कय्रा समहते हो की य्रे जलीली सव्र जलीलीय्रों से ग्रधीक
३ पापी थे की उनहों ने ऐसा ऐसा कसट पाय्रा। मैं तुमहों से
कहता हुं की नहीं पनंतु य्रदी तुम पसयाताप न कनो तो उसी
४ नीत से तुम सव्र नसट होग्रोगे। अथवा वे अठानह जीन पन
सैलुहा में गुमट गीना ग्रैान उनहें नसट कीय्रा कय्रा तुम समहते
५ हो की वे य्रनोसलीम के सव्र व्रासीय्रों से ग्रधीक पापी थे। मैं
तुमहों से कहता हुं की नहीं पनंतु य्रदी तुम पसयाताप न
६ कनो तो उसी नीत से तुम सव्र नसट होगे। उसने य्रह दीनीस-
टांत भी कहा की कीसी के दाप्प के प्पेत में गुलन का ऐक
व्रीनछ लगाय्रा गय्रा था ग्रैान उसने आके उस पन प्पल ढुंढ़ा
७ ग्रैान न पाय्रा। तव्र उसने अपने माली से कहा की देप्प तीन
व्रनस से मैं आके इस गुलन के व्रीनछ पन प्पल ढुंढ़ता हुं ग्रैान
नहीं पाता उसको काट डाल उसने भुम को कीस लीय्रे नोक
८ नप्पा है। उसने उतन देके उसको कहा हे पनभु इस व्रनस भी
उसे नहने दीजय्रे जव्र लों मैं उसका थाला प्पोदुं ग्रैान गोव्रन

९ भनुं। और यदी उस पन फरल लगे तो भला नहीं तो पीछे
१० उसे काट डालीयो। और वुह ऐक मंडली में वीसनाम के
११ दीन उपदेस कनता था। और देष्पो वहां ऐक इसतीनी थी
जीसपन अठानह वनस से दुनवलता का आतमा था और
कुवड़ी हो गइ थी और कीसी नीत से सीधी न हो सकती थी।
१२ और यसु ने उसे देष्प के वुलाया और उसे कहा की हे इसतीनी
१३ तु अपनी दुनवलता से छुट गइ। और उसने हाथों को उसपन
धना और तुनंत वुह सीधी हो गइ और इसन की सतुत की।
१४ और इस कानन की यसु ने वीसनाम के दीन में यंगा कीया
मंडली के पनधान ने कनोधीत होके कहा की छः दीन हैं जीन
में मनुष्पन को कानज कनना उयीत है इस लीये तुम उनहीं
दीनों में आ कन यंगे होओ और वीसनाम के दीन में नहीं।
१५ तव पनभु ने उतन दीया और उसको कहा की हे कपटी
वीसनाम के दीन में कया तुम में से हन ऐक अपने वैल और
गदहे को थान से नहीं ष्पोलता और पानी पीलाने नहीं ले
१६ जाता। और कया उयीत न था की इवनाहीम की पुतनी
होके यह इसतीनी जीसको देष्पो सयतान ने इन अठानह
वनसें से वांघ नष्पा है वीसनाम के दीन में इस वंधन से ष्पोली
१७ जाय। और जव उसने ये वातें कहीं उसके सव वैनी लजीत
ऊऐ और सानी मंडली उन सव भले कानजों के लीये जो उसने
कीये थे आनंद ऊइ।
१८ फेन उसने कहा की इसन के नाज की उपमा कीस से है
१९ और मैं उसको कीस से उपमा देउं। वुह नाइ के वीज के
समान है जीसे ऐक पुनुष्प ने लेके अपने ष्पेत में वोया और वुह
उगा और वड़ा वीनछ ऊआ और आकास के पंछीयों ने उसकी
२० डालीयों पन आके वास कीया। फेन उसने कहा की मैं इसन
२१ के नाज को कीस से उपमा देउं। वुह ष्पमीन की नाइं है जीसे
ऐक इसतीनी ने लेके तीन पनीमान पीसान में छीपाया जव

२१ जों सब प्मीन हो गया। फीर वुह नगर नगर और गांव
गांव में फीरता ज्ञआ और उपदेस करता ज्ञआ यरोसलीम के
२२ और यला जाता था। तब ऐक ने उसको कहा हे परभु क्या
२४ उद्धार थोड़े पाते हैं। उसने उनहें कहा सकेत दुवार से पैठने
को परीसरम करो क्योंकी मैं तुम से सत कहता ज्ञं की वज्जतेरे
२५ उस में पैठने को याहेंगे और न सकेंगे। जहां घर का सामी
उठा और दुवार को बंद कीया तुम बाहर प्पड़े होके और यह
कहके दुवार प्पटप्पटाने लगोगे की हे परभु हे परभु हमारे
लीये प्पोल तब वुह उतर देगा और तुमहें कहेगा मैं तुमहें
२६ नहीं जानता की तुम कहां के हो। तब तुम कहने लगोगे
की हम ने तेरे आगे प्पाया और पोया है और तुने हमारे
२७ मारगें में उपदेस कीया है। तब वुह कहेगा मैं तुमहें नहीं
जानता तुम कहां के हो हे कुकरमीयो मुझ से दुर होओ।
२८ वहां रोना और दांत कीयकीयाना होगा जब तुम लोग इबराहीम
और इसहाक और याकुब और सारे आगमगयानीयों
को इसर के राज में देप्पोगे और तुमहीं बाहर नीकाले गये।
२९ और वे पुरब और पछीम और उतर और दप्पीन से आवेंगे
३० और इसर के राज में बैठेंगे। और देप्पो की कीतने पीछले
हैं जो आगे होंगे और कीतने अगले हैं जो पीछे।
३१ उसी दीन फरीसीयों में से कइ ऐक ने आके उसे कहा की
३२ यहां से यला जा क्योंकी हीरुदीस तुझे मार डालेगा। तब
उसने उनहें कहा की जाके उस लोमड़ी से कहो की देप्प मैं
पीसायों को दुर करता ज्ञं और आज और कल यंगा करता ज्ञं
३३ और तीसरे दीन सीध ज्ञंगा। तीस पर भी अवस है की मैं
आज और कल और परसों फीरुं इस लीये की यह नहीं
हो सकता की आगम गयानी यरोसलीम के बाहर घात कीये
३४ जावें। हे यरोसलीम यरोसलीम जो आगमगयानीयों को
घात करती है और उन पर जो तुझ पास भेजे गये हैं पथरवाह

कनती है कइ व्रान मैं ने याहा की तेने पुतनों को जीस नीत
से कुकुटी अपने योंगनों को पनों के नीये कनती है प्रेकठा कनुं
१५ पनंतु तुम ने न याहा। देष्पो तुमहाने लीये तुमहाना घन
उजाड़ छोड़ा जाता है और मैं तुम से सत कहता ऊं की तुम
मुहे न देष्पोगे जव्र लों वुह समय न आवे की तुम कहोगे धंन
वुह जो पनभु के नाम से आता है।

१४ योदहवां पनव्र।

१ और प्रेसा ऊआ की जव्र व्रीसनाम के दीन पनधान फनी-
सीयों में से प्रेक के घन नोटी ष्पाने गया वे उस को अगोनने
२ लगे। और देष्पो की वहां उसके आगे प्रेक मनुष्प था जीसे
३ जलंधन था। तव्र यसु उतन देके व्रैवसथा के गयानीयों और
फनीसीयों से कहने लगा कया व्रीसनाम के दीन में यंगा
४ कनना जोग है। वे कुछ न व्रोले तव्र उसने उसको लीया और
५ यंगा कनके जाने दीया। और उनके ओन मुंह फेन के कहा
की तुमहों में कौन है जीस का प्रेक गदहा अथवा व्रैल गड़हे
में गीन पड़े और वुह तुनंत व्रीसनाम के दीन में उसे न
६ नीकाले। तव्र वे उसे उन व्रातों का पनतउतन न दे सके।
७ और जव्र उसने नेवतहनीयों को देष्पा की वे कयोंकन पनधान
सथानों को युनते हैं उसने उनहें यह कहके दीनीसटांत कहा।
८ जव्र तु कीसी के व्रीवाह में वुलाया जाय पनधान सथान पन
मत व्रैठ प्रेसा न हो की उसने तुहे से कीसी पनतीसठत मनुष्प को
९ नेवता दीया हो। और वुह जीसने उसका और तेना नेवता
कीया है आवे और तुहे कहे की यह सथान इस मनुष्प को
१० दे और तु लजा से सव्र से नीय सथान लेने लगे। पनंतु जव्र
तेना नेवता कीया जावे जाके सव्र से नीय सथान में व्रैठ की जव्र
वुह आवे जीसने तेना नेवता कीया है तो तुहे कहे की हे मीतन
और भी ऊंये पन जा तव्र तु उनके आगे जो तेने संग भोजन

११ पर बैठे हैं प्रतीसठा पावेगा। क्योंकी जो कोई अपने को
बढ़ाता है नीचा कीया जायगा और वृह जो अपने को दीन
१२ करता है वही बढ़ाया जायगा। तब उसने अपने नेवता कारक
से कहा की जब तु मध्यान्ह का भोजन अथवा बीआरी बनावे
अपने मीत्रों को और अपने भाइयों और अपने कुटुमबों
और धनमान परोसीयों को मत बुला न हो की वे भी फेर
१३ तेरा नेवता करें और तेरा प्रतीफल होजाय। परंतु जब
तु नेवता करे तो कंगालों को टुंडों को लंगड़ों को अंधों को
१४ बुला। और तु धंन होगा क्योंकी वे तुझे प्रतीफल नहीं
दे सकते और तु धरमीयों के फेर जी उठने में प्रतीफल
१५ पावेगा। नेवतहरीयों में से एक ने यह बचन सुनके उसको
१६ कहा धंन वुह है जो ईसर के राज में भोजन करेगा। तब
उसने उसको कहा कीसी मनुष्य ने बड़ी बीआरी बनाई और
१७ बहुतों को नेवता दीया। और बीआरी के समय में अपने
सेवक को भेजा की नेवतहरीयों से कहे की आओ क्योंकी अब
१८ सब बसतें सीध हैं। तब सबके सब एकता करके बनावट से
कहने लगे पहीले ने उसे कहा की मैं ने कुछ भुम मोल ली है
और मुझे अवेस है की जाउं और उसे देखुं मैं तेरी बीनती
१९ करता हुं की तु मुझे छमा करवा। दुसरे ने कहा मैं ने पांच
जोड़े बैल मोल लीये हैं और मैं उनहें परखने जाता हुं मैं
२० तेरी बीनती करता हुं तु मुझे छमा करवा तीसरे ने कहा
२१ मैं ने बीवाह कीया है इस लीये मैं नहीं आसकता। तब
उस सेवक ने आके अपने प्रभु को ये बातें कहीं तब घर के
सामी ने क्रोध से अपने सेवक को कहा की नगर के मारगों
और गलीयों में तुरंत जा और कंगालों और टुंडों और
२२ लंगड़ों और अंधों को यहां ले आ। फेर सेवकने कहा हे
प्रभु तेरी अगया के समान कीया गया और अब भी समाव
२३ है। तब सामी ने उस सेवक को कहा की मारग में और

बाड़े के ओर जा और उनके पीछे पड़ की आवें जीसतें मेरा
२४ घर भरजाय। क्योंकी मैं तुमसें से कहता हूं कोइ उन
लोगों में से जीनका नेवता कीया गया था मेरी बीआरी चष्पने
न पावेंगे।
२५ अब बहुत सी मंडली उसके संग चली जाती थीं तब उसने
२६ फेर के उन्हें कहा। यदी कोइ मुझ पास आवे और अपने
पीता और माता और इसतीरी और बालकों और भाइयों
और बहीनों का हां अपने पराण का भी बैरी न होवे वुह मेरा
२७ सीष्य नहीं हो सकता। और जो कोइ अपने क्रुस को नहीं
२८ उठाके मेरे पीछे आता है मेरा सीष्य नहीं हो सकता। क्यों-
की कौन है तुम में जो एक गुमट बनाने की इछा करके पहीले
बैठके उठान का लेष्या न करे की वुह उसे समापत करसके।
२९ तो ऐसा न हो की वुह नेव डाल के उसे समापत न कर सके और
३० सब देषनेवाले उसे यह कहके चीढ़ाने लगें। की इस मनुष्य
३१ ने बनाना आरंभ कीया परंतु समापत न कर सका। अथवा
कौनसा राजा दुसरे राजा से संगराम करने चले तो पहीले बैठ
के बीचार न करले की वुह दस सहसर लेके सामरथी है की
उसका जो बीस सहसर से उसके संमुष्य आता है सामना कर
३२ सके। नहीं तो जब लों दुसरा बहुत दुर हो वुह दुतों को
३३ भेज कर मीलाप चाहे। सो इसी रीत से जो कोइ तुम में से
अपना सब कुछ न छोड़े वुह मेरा सीष्य हो नहीं सकता।
३४ लोन अछा है परंतु यदी लोन का सवाद बीगड़जाय तो कीस
३५ बसतु से सवादीत कीया जायगा। वुह न पीरथीवी के और
न घुर के काम का है लोग उसे फेंक देते हैं जीस कीसी के
कान सुनने के लीये हों सो सुने।

१५ पंदरहवां परब।

१ तब सब पटवारी और पापी उसके पास आये की उसकी सुनें।

२ तब फरीसी और अध्यापक कुड़कुड़ा के कहने लगे की यह
पापीयों को गराहृ करता है और उनके संग भोजन करता है
३।४ तब उसने उनसे यह दृीसटांत कहा। की तुम में से कोन
मनुष्य है जो सौ भेड़ रप्पता हो यदी वुह उन में से एक को पोवे
कया वुह नींनानवे को बन में नहीं छोड़ता और जब लों उस
५ पोइ हुइ को नहीं पाता उसे ढुंढ़ा करता है। और जब
६ वुह पाता है आनंद से अपने कंधे पर उठा लेता है। और घर
में आकर मीतरों और परोसीयों को एकठे बुलाता है और
उनहें कहता है की मेरे संग आनंद करो कयोंकी मैं ने अपनी
७ भेड़ जो पोइ गइ थी पाइ है। मैं तुम से कहता हुं की इसी
रीत से सरग में एक पापी के कारन जो पसचाताप करता है
नीनानवे घरमीयों से जोनहें पसचाताप का परयोजन नहीं
८ अधीक आनंद होगा। अथवा कैान इसतीरी है जीस पास
दस सुकी हों यदी वुह एक पोवे कया वुह दीपक को नहीं
बारती और घर को नहीं झाड़ती है और जब लों नहीं पाती
९ ढुंढती फीरती है। और जब वुह पाती है वुह मीतरों और
परोसीयों को बुलाके कहती है की मेरे संग आनंद करो कयों-
१० की मैं ने वुह सुकी जो पो गइ थी पाइ है। इसी रीत से मैं
तुम से कहता हुं की इसर के दुतों के बीच एक पापी के कारन
जो पसचाताप करता है आनंद होता है।
११।१२ फेर उसने कहा की कीसी मनुष्य के दो पुतर थे। उन में
से छुटके ने पीता से कहा की हे पीता संपत में से जो मेरा भाग
१३ होवे दीजीये तब उसने उनहें उपजीवन बांट दीया। और
बहुत दीन न बीतने पाये छुटका पुतर सब कुछ एकठा करके
परदेस को चल नीकला और वहां कुकरम में अपनी समसत
१४ संपत नसट की। और जब वुह सब कुछ उठा चुका उस देस
१५ में बड़ा अकाल पड़ा और वुह दरीदर होने लगा। तब वुह
जाके उस देस की एक परजा का सेवक बना और उसने उसे

१६ अपने खेतों में भेजा की सुअरों को चरावे। और वुह लालसा
रखता था की उन छीलकों से जो सुअर खाते थे अपना पेट
१७ भरे और कोइ उसे न देता था। और जब वुह अपने चेत में
आया उसने कहा की मेरे पीता के कीतने बनीहार हैं जीनको
१८ रोटी बच रहती है और मैं भुख से मरता हुं। मैं उठुंगा
और अपने पीता पास जाउंगा और उसे कहुंगा की हे पीता
१९ मैं सरग के और तेरे आगे अपराधी हुं। और अब मैं
जोग नहीं की तेरा पुतर कहाउं मुझे अपने बनीहारों में
२० से एक के समान बनाइये। तब वुह उठके अपने पीता पास
आया परंतु जब वुह दुरही था उसके पीता ने उसको देखा
और दयाल हुआ और दौड़ा और उसके गले में गीरके उसे
२१ चुमने लगा। और पुतर ने उसको कहा की हे पीता मैं ने
सरग का और तेरा अपराध कीया है और अब इस जोग
२२ नहीं की तेरा पुतर कहाउं। तब पीता ने अपने सेवकों को
कहा की अच्छे से अच्छे बसतर लाओ और इसको पहीनाओ
और उसके हाथ में अंगुठी और पाओं में जुती पहीनाओ।
२३ और वुह मोटा बछड़ा इंधर लाओ और मारो की हम खावें
२४ और आनंद करें। कयोंकी मेरा यह पुतर मर गया था
और फेर जीता है वुह खोगया था और मील गया है तब
२५ वे आनंद करने लगे। अब उसका जेठा पुतर खेत में था
और जेउं वुह आया और घरके पास पहुंचा तो बाजा और
२६ नाच का सबद सुना। और सेवकों में से एक को बुला के
२७ पुछा की इन बातों का कारन कया है। तब उसने उसे कहा
की तेरा भाइ आया है और तेरे पीता ने मोटा बछड़ा मारा
२८ इस लीये की उसने उसको सुखी और कुसल से पाया। उसने
कुरुध होके न चाहा की भीतर जाए इस कारन उसके पीता
२९ ने बाहर नीकल के उसे मनाया। तब उसने उतर देके पीता
को कहा की देख मैं इतने बरस से तेरी सेवा करता हुं और

कभी भी मैं ने तेरी आग्या न टाली और तू ने मुझे एक मेमना
भी कभी न दीया की मैं अपने मीतरों के संग आनंद करता।
१० परंतु जब तेरा यह पुतर आया जीसने तेरा उपजीवन बेसवा-
ओं के संग नसट कीया तू ने उसके लीये मोटा बछड़ा मारा।
११ तब उसने उसको कहा की पुतर तु सदा मेरे संग है और जो
१२ कुछ की मेरा है तेरा है। पर आनंद और मगन होना उचीत
था क्योंकी तेरा यह भाई मर गया था और फीर के जीया
और खो गया था फीर मीला है।

१६ सोलहवां पत्र।

१ और उसने अपने सीख्यन से यह भी कहा की एक धनमान
मनुख्य था जीसका एक भंडारी था उसी पर उसके आगे दोख्य
२ लगाया गया की वुह उसकी संपत नसट करता है। तब उसने
उसको बुला के कहा की यह क्या है की मैं तेरे बीख्य में
सुनता हूं अपने भंडारपन का लेख्या दे की तु आगे को भंडारी
३ न रह सकेगा। तब भंडारी ने अपने मन में कहा की मैं क्या
करुं क्योंकी मेरा परभु भंडारपन मुझ से लेता है मैं खोद
४ नहीं सकता भीख्य मांगने में मुझे लाज आती है। मैं ने ठान रख्या
है की क्या करुं जीसतें जब मैं भंडारपन से छोड़ाया जाउं
५ वे अपने घरों में मुझे गराहन करें। सो उसने अपने परभु के
हर एक उधारनीओं को बुलाया और पहले को कहा की
६ तु मेरे परभु का कीतना धारता है। उसने कहा की तेल के
सौ परीमान फेर उसने उसे कहा की अपनी बही ले और तुरंत
७ बैठ कर पचास लीख्य। फेर उसने दुसरे से कहा और तु
कीतना धारता है उसने कहा की गोहूं के सौ परीमान उसने
८ उसको कहा की अपनी बही ले और असी लीख्य। तब परभु
ने उस अधरमी भंडारी को सराहा इस लीये की उसने चतु-
राई की क्योंकी इस संसार के संतान अपने बेवहार में परकास

९ के पुतनो से अधीक बुधमान हैं। औान मैं तुमहों से कहता
हुं की असत धन से अपने लीये मीतनता कनो की जब तुम-
हानी घटती होवे वे तुमहें अनंत नीवास में गनहन कनें।
१० जो की थोड़े में सचा है बहुत में भी सचा है औान जो की
११ थोड़े में अधनमी है बहुत में भी अधनमी है। इस लीये
यदी तुम असत धन में सचे न हो तो सचा तुमहें कौन सौंपेगा।
१२ औान यदी तुम औानों की बसत में सचाइ नहीं कनते तो तुम-
१३ हाना तुमहें कौन देगा। कोइ सेवक दो सामीयों की सेवा
नहीं कन सकता कयोंकी वुह अथवा ऐक से सतनुता नखेगा
औान दुसने से मीतनता अथवा वुह ऐक का पछ कनेगा औान
दुसने की नींनदा तुम इसन औान धन की सेवा नहीं कन
सकते।
१४ लोभी फनीसीयों ने भी सब बातें सुनके उसको ठठे में
१५ उड़ाया। तब उसने उनहें कहा तुम वे हो जो अपने को
मनुष्यन के आगे धनमी दीखावते हो पनंतु इसन तुमहाने
मन को जानता है कयोंकी जो बसतु मनुष्यन के आगे बहुत
१६ पीनीय है इसन की दीनीसट में धीनीत है। बैवसथा औान
आगमगयानी यहीया लों थे उसी समय से इसन के नाज
का मंगल समाचान सुनाया जाता है औान हन ऐक मनुष्य
१७ उस में पीला जाता है। औान सनग औान पीनथीवी का टल
जाना उस से सहज है की ऐक बींदु बैवसथा में से घट जाय।
१८ जो कोइ अपनी इसतीनी को तयागे औान दुसनी से बीवाह
कनें बैभीचान कनता है औान जो कोइ उस से जीसे उसके
पती ने तयाग कीया है बीवाह कने बैभीचान कनता है।
१९ ऐक धनमान था जो लाल औान महीन बसतन पहीनता
२० औान पनतीदीन बड़े बीभव से नहता था। औान लाजन नाम
ऐक भीखानी था जोसे घाव से भना हुआ उसके दुवान पन
२१ डाल गये थे। औान इछा नखता था की चुन चान जो उस

घनमान के मंय से गीनते थे प्यावे श्रोन कुते भी आते थे श्रोन
२२ उसके घावों को याटते थे। ऐसा ङत्रा की वुह भीप्यानी
मनगया श्रोन दुतों ने ले जाके उसको इब्रनाहीम के गोद में
२३ नाप्या वुह घननान भी मनगया श्रोन गाड़ा गया। श्रोन उसने
ननक में अपनी श्राप्यें उठा के अपने को पीड़ा में पाया श्रोन
दुन से इब्रनाहीम को देप्या श्रोन लाजन को उसकी गोद में।
२४ तब्र वुह यीला के ब्रोला की हे पीता इब्रनाहीम सुझ पन दया
कन श्रोन लाजन को भेज की वुह अपनी अंगुली की पोन को
जल में डुब्रो के मेनी जीभ को ठंढी कने कयोंकी मैं इस लवन
२५ में कलपता ङं। पनंतु इब्रनाहीम ने कहा की पुतन येत कन
की तु ने अपने जीवन में अपने सुप्य की व्रसतु पाइ श्रोन लाजन
२६ ने कसट से वुह अब्र सांत पाता है श्रोन तु पीड़ा में है। श्रोन
इन सभों से अधीक हमाने श्रोन तुमहाने मघ में ऐक ब्रड़ा
गड़हा है की वे जो इधन से तुमलों जाया याहें नहीं जा सकते
२७ न वे जो उधन हैं हम लों आ सकते हैं। तब्र उसने कहा की
हे पीता मैं तेनी ब्रीनती कनता ङं की उसको मेने पीता के
२८ घन भेज। कयोंकी मेने पांय भाइ हैं की वुह उनको यीतावे
२९ न हो की वे भी इस पीड़ा के सथान में आवें। इब्रनाहीम ने
उसको कहा की उन पास मुसा श्रोन आगम गयानी हैं याहीये
३० की वे उनकी सुनें। तब्र वुह ब्रोला नहीं हे पीता इब्रनाहीम
पनंतु यदी मीनतकों में से कोइ उनके पास जाय तो वे पस-
३१ यातापकनेंगे। तब्र उसने उसे कहा यदी वे मुसा श्रोन आगम
गयानीयों की न सुनें तो यदपी ऐक मीनतकों से उठे तथापी
वे न मानेंगे।

१७. सतनहवां पनव्र।

१ फरेन उसने सीप्यन से कहा की ठोकन का न आना अनहोना
२ है पनंतु जीसके कानन वे आवें उस पन संताप है। उसके

कारन यह अती भला होता की एक चकी का पाट उसके गले
में लटकाया जाता और वुह समुद्र में फेंका जाता की वुह
३ इन छोटों में से एक को ठोकर खीलावे। अपने से चौकस
रहो यदी तेरा भाई तेरा अपराध करे उसे घुड़क दे और
४ यदी वुह पस्चाताप करे उसको छमा कर। और यदी वुह
एक दीन में सात बार तेरा अपराध करे और सात बार एक
दीन में तेरे और फीरे और कहे की मैं पस्चाताप करता हूं
५ तू उसे छमा कर। तब प्रेरीतों ने प्रभु को कहा की हमारे
६ बीस्वास को बढ़ा। फेर प्रभु ने कहा यदी तुम में एक राई
के बीज के तुल बीस्वास होता तो तुम इस गुलर के बीरछ को
कहते की जड़ से उखड़ और समुद्र में लग जा तो वुह तुम-
७ हारी मानता। परंतु तुम में कौन है जीसका एक सेवक हल
जोतता अथवा ढोर चराता हो जोंहीं वुह खेत से आवे उसे
८ कहे की जा भोजन पर बैठ। और उसे पहीले न कहे की मेरे
लीये बीआरी बना और अपनी कमर बांध और मेरी सेवा
९ कर जब लों मैं खा पी चुकुं और पीछे तू खा और पी। क्या
वुह उस दास का धंन मानता है इस कारन की उसने वे कारज
१० जो उसे कहे गये थे कीये मैं ऐसा नहीं बुझता। सो इसी
रीत से तुम भी जब उन कारजों को जो तुम्हें आग्या कीये
गये हैं करो तो कहो की हम नीसफल सेवक हैं जो हम को
११ करना उचीत था सो हमने कीया। और ऐसा हुआ की वुह
यरोसलीम को जाते हुए सामरः और जलील के मध में से
१२ गया। और कीसी गांव में प्रवेस करते उसको दस कोढ़ी
१३ मीले जो दूर खड़े थे। और वे चीलाके बोले की हे यसु गुरु
१४ हम पर दया कर। उसने देखके उन्हें कहा की जाओ अपने
को याजकों को दीखाओ और ऐसा हुआ की वे जाते हुए
१५ पवीत्र हो गये। और उन में से जब एक ने देखा की वुह
चंगा हुआ बड़े सबद से ईस्वर की स्तुत करता हुआ पीछे फीर

१६ आया। औान उसका घंन मानते ऊप्रे उसके यनन पन औांचे
१७ मुंह गीना औान वुह प्रेक सामनी था। तव्र यसु ने उतन देके
१८ कहा कया दसें यंगे न ऊप्रे परेन वे नव कहां हैं। सो केवल
इस पनदेसी के कोइ न पाया गया जे। परीन के इसन को सतुत
१९ कने। तव्र उसने उसको कहा की उठके यला जा तेने व्रीसवास
ने तुहे यंगा कीया।
२० औान जव्र फनीसीयों ने उस से पुछा की इसन का नाज कव्र
आवेगा उसने उनहें उतन दीया औान कहा की इसन का नाज
२१ व्राहनी दीखीसट से नहीं आता। वे न कहेंगे की देप्पो यहां
अथवा देप्पो वहां इस लीये की देप्पो इसन का नाज तुमरों
२२ में है। औान उस ने सीप्पन से कहा की वे दीन आवेंगे जव्र
तुम याहोगे की मनुप्प के पुतन के दीनों में से प्रेक को देप्पो
२३ औान न देप्पोगे। औान वे तुम को कहेंगे की देप्पो यहां अथवा
२४ देप्पो वहां उनके पीछे मत ऊजीयो न जाइयो। इस लीये
जैसा की व्रीजली सनग के तले के औान से यनक के सनग के
तले के दुसने औान लों यमकती है मनुप्प का पुतन भी अपने
२५ दीन में प्रेसा होगा। पनंतु पहीले अवेस है की वुह व्रऊत दुप्प
२६ उठावे औान इस समय के लोगों से तयाग कीया जाय। औान
जैसा नुह के दीनों में था मनुप्प के पुतन के भी दीनों में वैसाही
२७ होगा। वे प्पाते थे पीते थे व्रीवाह कनते थे व्रीवाह में दीये
जाते थे जीस दीन लों की नुह नाव पन यढ़ा औान व्राढ़ आया
२८ औान उन सभों का नास कीया। औान जीस नीत से लुत के
दीनों में था वे प्पाते थे पीते थे मोल लेते थे व्रेयते थे व्रोते थे
२९ घन व्रनाते थे। पनंतु जीस दीन लुत सदुम से नीकल गया
सनग से आग औान गंधक व्रनसा औान उन सभों को नास
३० कीया। उस दीन में भी जव्र मनुप्प का पुतन दीप्पाइ देगा
३१ प्रेसाही होगा। उसी दीन में वुह जो कोठे पन होवे औान उस
की सामगनी घन में तो वुह उसे लेने को नीये न आवे औान

३२ उसी भांत से वुह जो प्येत मे होवे उलटा न फीरे। लुत की
३३ पतनी को समनन करो। जो कोइ अपना पनान व्रयाने को
याहेगा सो उसे गंवावेगा श्रोन जो कोइ अपने पनान को गवां·
३४ वेगा उसे व्रयावेगा। मैं तुमसे कहता ऊं की उस नात में दो प्रेक
३५ प्याट पन होंगे प्रेक पकड़ा जायगा दुसना छुट जायगा। दो
प्रेकठी यकी पीसतीयां होंगीं प्रेक पकड़ी जायगी श्रोन दुसनी
३६ छुट जायगी। दो प्येत में होंगे प्रेक पकड़ा जायगा श्रोन दुसना
३७ छुट जायगा। तव उनहों ने उतन दीया श्रोन उसे कहा की
कहां हे पनभु उसने उनहें कहा की जहां कहीं लोथ तहां गीध
प्रेकठे होंगे।

१८ अठानहवां पनव्र।

१ औसतें मनुष्य नीत पनानथना कनें श्रोन नीनवल न होवें
२ उसने उनहें प्रेक दीनीसटांत कहा। की कीसी नगन में प्रेक
नयाइी था जो न इसन को डनता न मनुष को मानता था।
३ श्रोन उसी नगन में प्रेक व्रीधवा थी जो उस पास कहती ऊइ
४ श्राइ की मेने व्रैनी से मेना पलटा ले। श्रोन उसने कुछ देन
न याहा पनंतु उसने पीछे अपने मन में कहा की यदपी मैं
५ इसन से नहीं डनता न मनुष्य को मानता ऊं। तथापी इस
लीये की यह व्रीधवा मुहे सताती है मैं उसका पलटा लेउंगा
६ न हो की वुह व्रानंव्रान आके मेना सीन खुआवे। फेन पनभुने
७ कहा की सुनो उस अधनमी नयायी ने कया कहा। श्रोन कया
इसन अपने युने ऊश्रों का जो नात दीन उस पास नोते हैं
८ यदपी वुह उनको अवेन लों सहता है पलटा न लेगा। मैं
तुम से कहता ऊं की वुह हट पट उनका पलटा लेगा तीसपन
भी जव मनुष्य का पुतन आवे कया वुह जगत में व्रीसवास
पावेगा।
९ फेन उसने कीतनों के लीये जो अपने में भनोसा नष्पते थे

की हम घनमी हैं ब्रैान ब्रैानों की नींदा कनते थे ग्रह दीनोस-
१० टांत कहा। दे। मनुप्प मंदीन में पनानथना कनने को गये
११ ग्रेक पनीसी ब्रैान दुसना पटवानी। पनीसी ने ग्रकेले प्पड़े
होके ग्रह पनानथना की, की हे ईसन मैं तेनी सतुत कनता ऊं
की मैं ब्रैान मनुप्पन के समान लोयोनी ब्रंनयाग्री पनइसतीनी
१२ गामी ग्रथवा ईस पटवानो के समान नहीं ऊं। मैं ग्रठवाने में
दे। व्रान व्रनत कनता ऊं मैं हन ग्रेक व्रसतु का जो मेनी है
१३ दसवां भाग देता ऊं। ब्रैान उस पटवानी ने दुन प्पड़ा होके
ईतना भी न चाहा की ब्रांप्पें उठाके सनग के ब्रैान देप्पे पनंतु
ग्रह कहके ब्रपनी छाती पीटता था की हे ईसन मुझ पातकी
१४ पन दग्राल हो मैं तुन से कहता ऊं की ग्रह मनुप्प दुसने से
ब्रती घनमी ठहन के ब्रपने घन गग्रा कग्रोंकी हन ग्रेक जो
ब्रपने को व्रढ़ाता है हेठा कीग्रा जाग्रगा ब्रैान वुह जो ब्रपने को
दीन कनता है व्रढ़ ग्रा जाग्रगा।

१५ फेन वे व्रालकों को भी उस पास लाये की वुह उनहें छुवे
१६ पनंतु सीप्पन ने देप्पके उनहें डांटा। तव्र ग्रसु ने उनहें व्रुलाके
कहा की छोटे व्रालकों को मेने पास ब्राने देब्रो ब्रैान उनहें मत
१७ व्रनजो कग्रोंकी ईसन का नाज ग्रेसोंही का है। मैं तुम से
सत कहता ऊं की जो कोई व्रालक के समान ईसन के नाज को
१८ गनहन न कने कीसी नीत से उस में पनवेस न कनेगा। ब्रैान
पनघानों में से ग्रेक ने उस से ग्रह कहके पुछा की हे उतम गुनु मैं
१९ कग्रा कनुं की ब्रनंत जीवन का ब्रधीकानी होउं। ग्रसु ने
उसको कहा तु मुझे उतम कग्रों कहता है उतम कोई नहीं
२० केवल ईसन। तु ब्रगग्रा जानता है की व्रैभीचान मत कन
हतग्रा मत कन चोनी मत कन झुठी साप्पी मत दे ब्रपने माता
२१ पीता का सनमान कन। तव्र उसने कहा की मैं ने लड़काई
२२ से ईन सभों को माना है। ब्रैान जव्र ग्रसु ने ग्रह सुना उसने
उसको कहा ब्रव्र लों तुझ में ग्रेक व्रसतु नह गई है जो कुछ तेना

है सब्र वेय डाल और कंगालों को वांट दे और तु सनग पन
२२ घन पावेगा और इचन आ मेने पीछे हो ले। वुह यह सुनके
२४ अती सोकीत ऊआ कयोंकी वुह वड़ा घनी था। यसु ने उसे
अती शोकीत देष्प के कहा की उनके लीये जो घनी हैं कीतना
२५ कठीन है की इसन के नाज में पनवेस कनें। कयोंकी सुइ के
छेद से उंट का पैठना उस से सहज है की ऐक घनमान इसन के
२६ नाज में पनवेस कने। और जीनहों ने सुना वे वाले की फरेन
२७ कौन उघान पा सकता है। तव उसने कहा की जो वसतें
२८ मनुष्पन से अनहोनी हैं इसन से होनहान हैं। तव पतनस ने
कहा देष्प हम ने सव कुछ छोड़ा और तेने पीछे हो लीये।
२९ उसने उनहें कहा मैं तुम से सत कहता ऊं की ऐसा कोइ मनुष्प
नहीं जीसने घन अथवा माता पीता अथवा भाइ अथवा इस-
३० तीनी अथवा पुतनों को इसन के नाज के लीये छोड़ा हो। जो
इस समय में कीतना अघीक और पनलोक में अनंत जीवन न
पावेगा।

३१ तव उसने वानहों को संग ले कन उनहें कहा की देषो हम
यनोसलीम को जाते हैं और सव वातें जो मनुष्प के पुतन के
वीष्पय में आगम गयानीयों से लीष्पी गइ हैं संपुनन होंगी।
३२ कयोंकी वुह अंदेसीयों को सोंपा जायगा और ठठे में उड़ाया
जायगा और वे उसकी दुनदसा कनेंगे और उस पन थुकेंगे।
३३ और वे उसको कोड़े मानके वघ कनेंगे और वुह तीसने दीन
३४ फरीन उठेगा। और उनहों ने उन वातों से कुछ न समझा
और यह वचन उनसे गुपत नहा और उनहों ने उन वातों
३५ को जो कही गइं थीं न जाना। सो ऐसा ऊआ की जव वुह
अनीहा के पास आया ऐक अंघा मनुष्प मानग के ओन वै ा
३६ भीष्य मांगता था। और मंडली को जाते सुन कन उसने पुछा
३७ की कया है। और वे उसे वोले की यसु नासनी यहा जाता
३८ है। तव वुह यह कहके चीलाया की हे दाउद के पुतन यसु

३९ मुह पन दया कन। ग्रौन उनहों ने जो ग्रागे यले जाते थे
उसको डांटा की युप नहे पनंतु वुह ग्रौन भी ग्रघीक यीलाया
४० की हे दावद के पतन मुह पन दया कन। तव्र ग्रसु प्पड़ा ऊग्रा
ग्रौन ग्रगया की, की उसको मेने पास लाग्रो ग्रौन जव्र वुह
४१ पास ग्राया उसने इसको कहके पुछा। की तु कया याहता
है मैं तुह से कया कनुं वुह व्रोला हे पनभु मैं ग्रपनी दीनीसट
४२ पाउं। तव्र ग्रसु ने उसको कहा की ग्रपनी दीनीसट पा तेने
४३ व्रीसवास ने तुहे व्रयाया। ग्रौन उसने तुनत ग्रपनी दीनीसट
पाइ ग्रौन इसन की सतुत कनता ऊग्रा उसके पीछे हो लीया
ग्रौन सव्र लोगों ने देप्प के इसन की सतुत की।

१९ उनीसवां पनव्र।

१ ग्रौन वुह ग्रनीहा में पनवेस कनके नीकल गया। ग्रौन
२ देप्पो की जकी नाम एक मनुप्प जो पटवानीयों में पनधान
३ ग्रौन घनी भी था। उसने याहा की ग्रसु को देप्पे की वुह
कौन है पनंतु भीड़ के कानन देप्प न सका कयोंकी वुह नाटा
४ था। तव्र वुह ग्रागे दौड़ के उसे देप्पने को एक गुलन के व्रीनछ
५ पन यढ़ गया कयोंकी उसको उघन से जाना था। ग्रौन जव्र
ग्रसु उस सथान नें ग्राया उसने उपन दीनीसट कनके उसको
देप्पा ग्रौन उसे कहा जकी सीघन उतन ग्रा कयोंकी ग्रवेस
६ है की मैं ग्राज तेने घन में नऊं। तव्र वुह तुनंत उतना ग्रौन
७ ग्रानंद से उसको गनहन कीया। ग्रौन जव्र उनहों ने देप्पा
वे कुड़कुड़ा के कहने लगे की वुह एक पापी मनुप्प के घन में
८ पाऊन होने जाता है। ग्रौन जकी ने प्पड़े होके पनभु से
कहा हे पनभु देप्प मैं ग्रपना ग्राघा घन कंगालों को देता ऊं
ग्रौन ग्रदी मैं ने कीसी पन झुटा दोप्प देके कुछ लीया है मैं
९ योगुना फेन देता ऊं। तव्र ग्रसु ने उसको कहा की ग्राज

इस घन में सुकात आइ इस लीये की यह भी इबनाहीम का
१० पुतन है। कयोंकी मनुप्प का पुतन आया है की प्पोये ऊओं
११ को ढुंढे औान बयावे। औान जब वे ये बातें सुन नहे थे
इस लीये की वुह यनोसलीम के नीकट था औान इस कानन
की वे समहते थे की इस्तन का नाज तुनंत दीप्पाइ देगा उसने
१२ यह दौनीसटांत भी कहा। इस लीये वुह बोला की कोइ
कुलीन मनुप्प दुन देस को गया की अपने लीये नाज लावे
१३ औान फीन आवे। तब उसने अपने दस सेवकों को बुलाया
औान उनहें दस मोहन सौंपे औान उनहें कहा की जब लों
१४ मैं आउं बैपान कनो। पनंतु उसकी पनजा उस से बैन नप्पती
थी सो उनहों ने उसके पीछे संदेस भेजा की हम नहीं याहते
१५ की यह हम पन नाज कने। औान ऐसा ऊआ की जब वुह
नाज लेके फीन आया उसने आगया कनके उन सेवकों को
जीनहें घन सौंपा था बुलाया की जाने की हन एक ने कया
१६ कमाया। तब पहीले ने आके कहा हे पनभु तेने मोहन ने
१७ दस मोहन कमाये। उसने उसको कहा धंन हे उतम सेवक
इस कानन की तु बऊत थोड़े में सया नीकला तु दस नगन पन
१८ पनधान हो। औान दुसने ने आके कहा हे पनभु तेने मोहन
१९ ने पांय मोहन कमाये। औान उसने उसको भी कहा की तु
२० भी पांय नगन पन पनभुता कन। औान तीसने ने आके कहा
हे पनभु देप्प तेना मोहन जीसे मैंने अंगछे में बांध नप्पा है।
२१ कयोंकी मैं तुह से डना इस कानन की तु कठोन मनुप्प है
जीसे तु ने नहीं नप्पा लेता है औान जो तु ने नहीं बोया लवता
२२ है। तब उसने उसे कहा हे दुसट दास मैं तेनेही मुंह से तेना
नयाय कनुंगा तु जानता था की मैं कठोन मनुप्प था जो मैं
ने नहीं नप्पा लेता ऊं औान जो मैं ने नहीं बोया लवता ऊं।
२३ फीन तुने मेना घन कोठी में कयों न सौंपा की मैं आके अपना
२४ बीआज समेत लेता। फीन जो पास प्पड़े थे उसने उनहें कहा

की उस से वुह मोहर ले लो और उसको जिस पास दस मोहर
२५ हैं देओ। तब उन्हों ने उसको कहा हे प्रभु उसके पास तो
२६ दस मोहर हैं। सो मैं तुम से कहता हूं की जिस पास है उसे
दीया जायगा और जिस पास कुछ नहीं उस से वुह भी जो
२७ वुह रखता है ले लीया जायगा। परंतु मेरे उन सत्रुन को
जो नहीं चाहते थे की मैं उनपर राज करुं इधर ले आओ
२८ और मेरे आगे मार डालो। और जब वुह यूं कह चुका तो
२९ वुह यरोसलीम के ओर जाने लगा। और ऐसा हुआ की जब
वुह बैतफगा और बैतऐना के पास पहाड़ के समीप जो
जलपाई का कहावता है पहुंचा उसने अपने सीष्यन में से दो
३० को यह कहके भेजा। की उस गांव में जो संमुख है जाओ
तुम उस में पहुंचते ही एक बछा जिस पर अब लों कोई न चढ़ा
३१ बंधा हुआ पाओगे उसको खोल के ले आओ। और यदी
कोई तुम से पुछे की तुम क्यों खोलते हो तुम उसे यूं कहीयो
३२ इस कारन की प्रभु को आवेसक है। और उन्हों ने जो
भेजे गये थे जाके जैसा उसने उनको कहा था वैसा पाया।
३३ और जेउं वे उस बछे को खोल रहे थे उसके सामीयों ने उन्हें
३४ कहा की तुम इस बछे को क्यों खोलते हो। वे बोले की
३५ प्रभु को इस का आवेसक है। और वे उसे यिसु के पास
लाये और अपने बसतरों को उस बछे पर रखके यिसु को उस
३६ पर बैठाया। और जाते जाते उन्हों ने अपने बसतरों को
३७ मारग में बीछाया। और जब वुह जलपाई के पहाड़ लों
पहुंचा उसके सीष्यन की समसत मंडली उन सब आसचरज
करम के कारन जो उन्हों ने देखे थे आनंद हुई और बड़े
३८ सबद से यह कहके ईसर की सतुत करने लगीं। की राजा
को धंन जो प्रभु के नाम से आता है सरग पर कुसल और
३९ अती ऊंचे पर महातम। तब मंडली में से कई फरीसीयों
४० ने उसको कहा की हे गुरु अपने सीष्यन को घुरक दे। तब

उसने उत्तर दीया और उनहें कहा मैं तुमहों से कहता हुं की
यदी ये चुप होवें तो पथर तुरंत पुकार उठेंगे।
४१ और जब वुह पास आया उसने उस नगर पर दीरीसट की
४२ और उस पर रोके कहा। तु हां यदी तु अपने इसी दीन लों
अपने कुसल की बसतु को जानती परंतु अब वे तेरी आंखों से
४३ गुपत हैं। कयोंकी तुझ पर वे दीन आवेंगे की तेरे बैरी तेरे
आस पास खाइं खोदेंगे और तुझे घेरलेंगे और हर एक ओर
४४ तुझे रोकेंगे। और तुझे तेरे बालकों के संग जो तुझ में हैं
भुम से मीला देंगे और वे तुझ में एक पथर दुसरे पर न छोड़ेंगे
इस कारन की तु ने अपनी कीरपा के समय को न जाना।
४५ तब वुह मंदीर में परवेस करके उनहें जो उस में कीनते
४६ और बेचते थे यह कहके बाहर नीकालने लगा। यह लीखा
है की मेरा घर परारथना का घर है परंतु तुम ने उसे चोरों
४७ की मांद बनाई। और वुह मंदीर में परतीदीन उपदेस
करता था परंतु परधान याजकों और अधापकों और लोगों
४८ के परधानों ने उसको बधन करने का सोच कीया। और
पावते न थे की कया करें कयोंकी सब लोग उसको सुनने को
लवलीन थे।

२० बीसवां परब।

१ और उन में से एक दीन ऐसा हुआ की जब वुह मंदीर में
लोगों को सीखावता और मंगलसमाचार सुनाता था परधान
२ याजक और अधापक पराचीनों के संग चढ़ आये। और
उसको यह कहके पुछा की हम से कह की तु कीस पराकरम
से ये कारज करता है अथवा वुह कौन है जीसने तुझे यह
३ पराकरम दीया है। तब उसने उत्तर दीया और उनहें कहा
४ मैं भी तुम से एक बात पुछुंगा मुझे उत्तर देओ। यहीया का

५ पनान सनग से था अथवा मनुष्पन से। तब वे अपने मन में
बीयानने लगे यदी हम कहें सनग से तो वुह कहेगा फेन तुम
६ ने उसकी पनतीत कयों न की। पनंतु यदी हम कहे मनुष्पन
से तो सब लोग हम पन पथनवाह कनेंगे कयोंकी वे नीसयय
७ जानते हैं की यहीया आगम गयानी था। तब उनहों ने
८ उतन दीया की हम नहीं कह सकते की कहां से। फेन यसु
ने उनहें कहा मैं भी तुमहें नहीं कहता की मैं कीस पनाकनम
से यह कानज कनता हूं।

९ तब वुह लोगों से यह दीनीसटांत कहने लगा की कीसी
मनुष्प ने दाप्प की बानी लगाई औन उसे मालीयों को सौंप
१० दीया औन बहुत दीन के लीये पनदेस को यला गया। तब
नीतु पन उसने एक सेवक को मालीयों के पास भेजा की वे
दाप्प की बानी का फल उसको देवें पनंतु मालीयों ने उसे
११ मानके छुछे हाथ फेना दीया। औन फेन उसने दुसना सेवक
भेजा औन उनहों ने उसे भी माना औन अपमान कनके छुछे
१२ हाथ फेन दीया। औन फेन उसने तीसने को भेजा औन
१३ उनहों ने उसे भी घायल कनके बाहन कीया। तब दाप्प की
बानी के सामी ने कहा की मैं कया कनुं मैं अपने पीआने पुतन
१४ को भेजुंगा कया जाने वे उसे देप्प के आदन कनें। पनंतु जब
मालीयों ने उसे देप्पा वे आपुस में बीयानने लगे की यह
अधीकानी है आओ इसे मान डालें जीसतें अधीकान हमाना
१५ हो जाय। सो उनहों ने उसे दाप्प की बानी से बाहन नीकाल
के मान डाला सो दाप्प की बानी का सामी उनको कया कनेगा।
१६ वह आवेगा औन वुह उन मालीओं को पनान से मानेगा
औन दाप्प की बानी औनों को सौंपेगा उनहों ने सुन के कहा
१७ की ऐसा न होवे। तब उसने उनके ओन दीनीसट कनके कहा
तो यह कया लीप्पा है की जीस पथन को थवइयों ने नीकमा
१८ जाना वही कोने का सीना हुआ। जो कोई उस पथन पन

गीनेगा यकना युन होजायगा श्रौन जीस पन वुह गीनेगा उसे
पीस डालेगा।
१९ तव पनधान याजकों श्रौन अधापकों ने याहा की उसी घड़ी
उस पन हाथ डालें पनंतु वे लोगों से डने क्योंकी जानते थे
२० की उसने यह दोनीसटांत उनके वीरोध्य में कहा था। फीन
वे अगोनने लगे श्रौन भेदीयों को भेजा की अपने को छल से
घनमी वनावें जीसतें वे उसके वयन को पकड़ें की इसी नीत
२१ से वे उसे अधक्ष के पनाक्रनम श्रौन वस में सौंप देवें। फीन
उनहों ने उसे यह कहके पुछा की हे गुनु हम जानते हैं की तु
ठीक ठीक कहता श्रौन सीष्यावता है तु कीसी के पनगट पन
दोनीसट नहीं कनता पनंतु सयाइ से इसन का मानग सीष्या-
२२ वता है। हमाने कानन जोग है की कैसन को कन देवें अथवा
२३ नहीं। पनंतु उसने उनका कपट जानके उनसे कहा तुम क्यों
२४ मुझे पनष्यते हो। एक सुकी मुझे दीष्याश्रो उस पन कीसकी
सुनत श्रौन कीसका लीका है वे उतन देके वोले की कैसन की।
२५ तव उसने उनहें कहा इस कानन जो वसतु कैसन की है कैसन
२६ को देश्रो श्रौन जो वसतु इसन की है इसन को। श्रौन वे
लोगों के आगे उसके वयन को पकड़ न सके श्रौन उसके उतन
से वीसमीत होके युप नह गये।
२७ तव सादुकीयों में से कीतने जो जी उठना नहीं मानते थे
२८ पास आये श्रौन यह कह के उस से पुछा। की हे गुनु मुसा ने
हमाने लीये लीष्या है की कीसी मनुष्य का भाइ पतनी को छोड़
के नीनवंस मन जाय तो उसका भाइ उसकी पतनी को लेवे
२९ श्रौन अपने भाइ के लीये संतान उतपंन कने। अव सात भाइ
३० थे श्रौन पहीला पतनी कनके नीनवंस मनगया। श्रौन दुसने
३१ ने उसको अपनी पतनी की वुह भी नीनवंस मनगया। श्रौन
तीसने ने उसे लीया श्रौन इसी नीत से सातों ने श्रौन वे नीनवंस
३२ ।३३ मन गये। सव से पीछे वुह इसतीनी भी मन गइ। सो

फरेन जी उठने में वुह कीसको पतनी होगी कयोंकी वुह सातों
३४ की पतनी थी। तव्र यसु ने उतन देके उनहें कहा की इस
जगत के संतान व्रीवाह कनते हैं श्रोन व्रीवाह में दीये जाते हैं।
३५ पनंतु वे जो उस जगत के श्रोन मीनतु से फरेन उठने के जोग
जाने जायेंगे न व्रीवाह कनते हैं न व्रीवाह में दीये जाते हैं।
३६ न वे फरेन मन सकते कयोंकी वे दुतों के समान हैं श्रोन फरेन
३७ जी उठने के संतान होकन ईसन के पुतन हैं। श्रव्र मीनतक
जो जी उठते हैं मुसा ने भी झाड़ी पन दीष्याया जव्र उसने
पनभु को इव्रनाहीम का ईसन श्रोन इसहाक का ईसन श्रोन
३८ याकुव्र का ईसन कहा। कयोंकी वुह मीनतकों का ईसन
नहीं पनंतु जीवतों का कयोंकी सव्र उसके लीये जीवते हैं।
३९ तव्र श्रधापकों में से कीतनों ने उतन देके उसे कहा की हे गुनु
४० तु ने श्रछा कहा। श्रोन उसके पीछे उनका हीयाव न ऊश्रा
४१ की वे उसे कुछ पुछें। श्रोन उसने उनहें कहा वे कयोंकन
४२ कहते हैं की मसीह दाउद का पुतन है। श्रोन दाउद श्रापही
भजन के पुसतक में कहता है की पनमेसन ने मेने पनभु को
४३ कहा तु मेने दहीने हाथ व्रैठ। जव्र लों मैं तेने सतनुन को
४४ तेने यनन का पीढ़ा कनुं। सो दाउद तो उसको पनभु कहता
४५ है फरेन वुह उसका पुतन कयोंकन है। तव्र सव्र लोगों के
४६ सुनते ऊए उसने श्रपने सीष्यन से कहा। श्रधापकों से चौकस
नहो जो लंव्रे व्रसतन से फीनने की इछा नष्यते हैं श्रोन हाट
में नमसकान श्रोन मंडलीयों में पनधान श्रासन जेवनान में
४७ पनधान सथान के श्रभीलासी हैं। वे नांडों के घन को नीगलते
हैं श्रोन दीष्याने के लीये लंव्री पनानथना कनते हैं उन पन श्रती
व्रड़ी व्रीपत होगी।

२१ एकीसवां पनव्र।

१ तव्र उसने दीनीसट उठाके देष्या की धनी लोग भंडान में

२ अपना दान डालते हैं। श्रीर उसने ग्रेक कंगाल वीधवा को भी
३ उस में दो अधीयां डालते देष्पा। तव उसने कहा मैं तुमहों
से सत कहता ऊं की इस कंगाल वीधवा ने उन सभों से अधीक
४ डाला। कयोंकी इन सभों ने इसर के भेंट के लीये अपने
धन की अधीकाइ से डाला परंतु उसने अपनी कंगालपन से
५ अपनी समत जीवका डाली। श्रीर जब कीतने मंदीर के
वीष्पय में कहते थे की यह कैसे सुनदन पथर श्रीर दान से
६ सींगार कीया गया है उसने कहा। जो वसतें तुम देष्पते हो वे
दीन श्रावेंगे जीन में ग्रेक पथर दुसरे पर न छुटेगा जो गीनाया
७ न जायगा। तव उनहों ने उसे यह कहके पुछा की हे गुरु यह
सव कव होगा श्रीर इन सभों के होने का कया लछन है।
८ उसने कहा सैंचेत रहो की तुम भरमाये न जाश्रो कयोंकी
वऊतेरे मेरे नाम से श्राके कहेंगे की मैं ऊं श्रीर समय पास है
९ सो तुम उनके पीछे मत जाइयो। परंतु जव तुम जुध श्रीर
दंगा की वातें सुनो मत घवराइयो कयोंकी पहीले इन सभों
१० का होना श्रवस है पर श्रभी श्रंत नहीं। फेर उसने उनहें
११ कहा की लोग पर लोग श्रीर राज पर राज चढेंगे। श्रीर
श्रनेक सथान में वड़े भुयाल श्रावेंगे श्रीर मरी श्रीर श्रकाल
पड़ेंगे श्रीर भयंकर दरसन श्रीर वड़े चीनह सरग से दीष्पाइ
१२ देंगे परंतु इन वसतुन से पहीले वे तुम पर हाथ डालेंगे श्रीर
ताड़ना करके मंडली श्रीर वदींगीरह में सौंप कर राजा
१३ श्रीर श्रधक्षों के श्रागे मेरे नाम के कारन ले जायेंगे। श्रीर
१४ यह तुमहारे लीये साष्पी ठहरेगी। श्रपने मन में ठहरा
रष्पो की श्रागे से चींतता न करो की हम कया उतर देवें।
१५ कयोंकी मैं तुमहें ग्रेसा मुंह श्रीर वुध देउंगा जो तुमहारे
१६ समसत सतरु वोलने श्रथवा सामना करने न सकेंगे। श्रीर तुम
माता पीता श्रीर भाइयों श्रीर कुटमवों श्रीर मीतरों से
पकड़वाये जाश्रोगे श्रीर तुम में से कीतनों को मार डलवावेंगे।

१७।१८ और मेरे नाम के कारन सब तुम से बैर करेंगे। परंत
१९ तुम्हारे सीर का एक बाल नसट न होगा। अपने संतोख से
२० अपने परान को लीये रहो। और जब तुम देखो की यरोस-
लीम सेनाओं से घेरा हुआ है तब जानो की उसका उजाड़
२१ होना पास है। तब वे जो यहूदीयः में हैं पहाड़ों को भागें और
वे जो उसके मध में हों बाहर नीकल जावें और जो बाहर
२२ हों सो भीतर न पैठें। कयोंकी ये पलटा लेने के दीन और
२३ समसत लीखे हुओं के पुरा होने का समय है। परंतु हाय
उन पर जो उनहीं दीनों में गरभनी हों और उन पर जो
दुध पीलातीयां हों कयोंकी भुम पर बड़ी बीपत और इन
२४ लोगों पर कोप होगा। और वे खड्ग के धार से मारे पड़ेंगे
और समसत लोगों में बंधुए होंगे और यरोसलीम अंनदेसीयों
से रोंदा जायगा जब लों अंनदेसीयों का समय पुरा न होवे।
२५ और सुरज और चंदरमा और तारों में लछन दीखाइ देंगे
और पीरथीवी में लोगों पर कलेस के संग घबराहट होगी
२६ समुदर और लहरों का बड़ा सबद होगा। मनुष्यन के मन
मारे डर के और उन लछनों की जो भुम पर आते हैं बाट
जोहने से घट जायेंगे कयोंकी सरग की दीरढता हील जायेंगी।
२७ और उस समय में वे मनुष्य के पुतर को मेघ पर परभाव और
२८ बड़े तेज से आते देखेंगे। और जब इन सभों का होना
आरंभ होय तो सीर उठाके उपर देखो कयोंकी तुम्हारा
२९ उधार समीप है। और उसने उनहें एक दीसटांत कहा
३० की गुलर के बीरछ और समसत बीरछों को देखो। जब
उन में कोंपलें नीकलती हैं तब तुम देख के आपही जानते हो
३१ की गरमीसम अब नीकट है। सो इसी रीत से तुम भी जब
उन बसतुन को परगट होते देखो जानो की इसर का राज
३२ पास है। मैं तुम से सत कहता हुं की यह पीढ़ी बीत न जाय-
३३ गी जब लों समसत संपुरन न होवें। सरग और पीरथीवी

१४ टल जायेंगी पनंतु मेने व्रयन न टलेंगे। अपने से सैायेत
नहो न होवे की तुमहाने अंतःकनन कीसी संतुसटता अैान
मदप ने से अैान इस जीवन की यीनता से भन जावें
१५ अैान वुह दीन तुम पन अयानक आ जाय। कयोंकी
वुह फंदे की नाइं उन सभों पन जो पीनथीवी के उपन
१६ व्रसते हैं आ जायगा। इस कानन यैाकस नहो अैान नीत
पनानथना कनते नहो की तुम उन सभों से जो होनहान
है व्रयन के जोग ठहनो अैान मनुष्य के पुतन के संमुष्य
ष्पड़े होअेा।

२७ अैान दीन के वुह मंदीन में उपदेस कनता था अैान
नातनो के व्राहन जाता था अैान उस पहाड़ पन जो जल-
२८ पाइ का कहावता है व्रास कनता था। अैान पनातःकाल
में तड़के सव्र लोग मंदीन में उसपास आते थे की उसकी
सुनें।

२२ व्राइसवां पनव्र।

१ अव्र व्रीन प्समीनी नोटी का पनव्र जो व्रीतजाना कहावता है पास
२ आया। अैान पनघान याजक अैान अघापक सोय में थे की
उसको कीस नीत से मानडालें पनंतु वे लोगों से डनते थे।
३ तव्र सयतान यहूदा में जीसकी पदवी असकनयती थी जो
४ उन व्रानह में गीना जाता था पैठा। अैान उसने जाके
पनघान याजकों अैान सेनापतीन से व्रात यीत कीया की
५ वुह उसको कीस नीत से उनहें सैांप देवे। तव्र वे आनंद
६ हुए अैान उसे नुपए देने को ठहनाया। अैान उसने व्राया

दीया श्रीन श्रवसन ढ़ंढता था की मंडली के व्रीयोग में
उसे उनहें सौंप देवे।

७ तव्र व्रीन प्पमीनी नोटी का दोन जीस में व्रीत जाना मानने का
८ श्रावेसक था श्रा पङ्गंया। श्रीन उसने पतनस श्रीन युहना को
यह कहके भेजा की जाश्रो श्रीन हमाने कानन व्रीतजाना सीघ
९ कनो की हम प्पावें। उनहों ने उसको कहा की तु कहां याहता
१० है की हम सीघ कनें। उसने उनहें कहा की देप्पो जव्र तुम
नगन में पङ्गंयोगे वहां श्रेक मनुप्प जल का घड़ा उठाश्रे तुम को
मीलेगा जीस घन में वुह पनवेस कने उसके पीछे पीछे यले
११ जाइयो। श्रीन उस घन के सामी से कहीयो की गुनु तुहे
कहता है की वुह पाऊन साला जहां मैं श्रपने सीप्पन के संग
१२ व्रीतजाना प्पाउं कहां है। वुह तुमहें श्रेक व्रड़ी उपनौटी
१३ कोठनी सवांनी ऊइ दीप्पावेगा वहां व्रनाश्रो। श्रीन उनहों ने
जाके जैसा उसने उनहें कहा था पाया श्रीन व्रीत जाना सीघ
१४ कीया। श्रीन जव्र समय पङ्गंया वुह व्रानह पनेनीतों को श्रपने
१५ संग लेके जा व्रैठा। श्रीन उसने उनहें कहा की मैं ने मनहों से
याहा की मैं संकट से श्रागे यह व्रीत जाना तुमहाने संग
१६ प्पाउं। कयोंकी मैं तुम से कहता ऊं की मैं उसे फ्रेन कघी
न प्पाउंगा पनंतु जव्र लों वुह ईसन के नाज में संपुनन न होवे।
१७ तव्र उसने कटोना लोया श्रीन सतुत कनके कहा की इसे लेश्रो
१८ श्रीन श्रापस में व्रांटो। की मैं तुम से कहता ऊं की जव्र लों
१९ ईसन का नाज न श्रावे मैं दाप्प का नस न पीउंगा। फ्रेन
उसने नोटी ली श्रीन सतुत कनके तोड़ी श्रीन उनहें देके यह
कहा की यह मेना देह है जो तुमहाने लीये दीया जाता है
२० मेने समनन के कानन श्रैसा कीया कनो। इसी पनकान से
व्रीश्रानी के पीछे कटोना भी देके कहा की यह कटोना मेने
नुघीन का नया नयम है जो तुमहाने कानन व्रहाया जाता है।

२१ परंतु देष्यो उसका हाथ जो मुझे पकड़वाता है मेरे संग मंच
२२ पर है। और ठीक मनुष्य का पुतर जैसा की ठहराया गया
जाता है परंतु हाय उस मनुष्य पर जीस से वुह पकड़वाया
२३ जायगा। तब वे आपुस में पुछने लगे की हम में वुह जो यह
२४ करम करेगा कौन है। और उन में यह बीवाद भी ऊआ की
२५ हम में कौन सब से बड़ा गीना जायगा। तब उसने उनहें
कहा की अंनदेसीयों के राजा उन पर परभुता करते हैं और
२६ वे जो उन पर अगया कारी हैं उपकारी कहावते हैं। पर
तुम युं न होओ परंतु तुम में जो सब से बड़ा है छोटे के समान
२७ होय और वुह जो परधान है सेवक के तुल। इस लीये की
कौन है बड़ा वुह जो भोजन पर बैठता है अथवा वुह जो सेवा
करता है कया वुह नहीं जो बैठता है परंतु मैं तुमहारे संग
२८ सेवक के समान ऊं। तुम वे हो जो मेरी परीछा में नीत मेरे
२९ संग रहे। और जीस रीत से मेरे पीता ने मेरे लीये राज
३० ठहराया है मैं तुमहारे लीये ठहराता ऊं। की तुम मेरे
राज में मेरे मंच पर खाओ और पीओ और सींहासनों पर
३१ बैठ के इसराइल की बारह गोसठी का नयाय करो। और
परभु ने कहा समउन हे समउन देष्य सैतान ने चाहा है की
३२ तुमको गेहूं के समान परटके। परंतु मैं ने तेरे कारन परार-
थना की है की तेरा बीसवास न टले और जब तु फीराया
३३ जाय अपने भाइयों को दीरढ़ कर। तब उसने उसे कहा हे
परभु मैं तेरे संग बंदीगीरह में और मीरतु में जाने को लैस
३४ ऊं। उसने कहा की हे पतरस मैं तुझे कहता ऊं की इसी दीन
कुकुट सबद न करेगा जब लों तु तीन बार मुझे जानने से न
३५ मुकरे। फीर उसने उनहें कहा की जब मैं ने तुमहें बीना
बटुआ और झोला और जुता भेजा था कया तुमहें कीसी
३६ बसतु की घटती ऊई थी वे बोले कीसी की नहीं। तब उसने
उनहें कहा परंतु अब जीस पास डोड़ा और झोला हो उसे

लेले और जीस पास प्पड़ग न हो अपना बसतन बेंचे और
१७ मोल ले। कयोंकी मैं तुम से कहता हूं अवेस है की यह जो
लीप्पा है की वुह पापीयों में गीना गया मेने बीप्पय में संपुनन
१८ होय कयोंकी वे वसतें जो मेने लीये हैं अंत को पहुंचें। तब वे
बोले हे पनभु देप्प यहां दो प्पडग हैं तब उसने उनहें
कहा बस है।

१९ फेन वुह बाहन नीकल के अपने बेवहान के समान जलपाइ
के पहाड़ पन गया और उसके सीप्प भी उसके पीछे हो लीये।
४० जब वुह उस सथान में पहुंचा उसने उनहें कहा पनानथना
४१ कनो की पनीछा में न पड़ो। फेन उसने उनसे एक ढेला
फेकने के पनमान दुन जाके घुटने टेके और पनानथना कनके
४२ कहा। की हे पीता यदी तेनी इछा होय तो इस कटोने को
मुह से टला दे तीस पन भी मेनी इछा नहीं पनंतु तेनी होवे।
४३ तब सनग से एक दुत ने दीप्पाइ देके उसको बल दीया।
४४ और उसने संकट में पड़ के अधीक बीपत से पनानथना की
और उसका पसीना ऐसा बहा जैसा लोहू के बड़े बुंद जो भुम
४५ पन गीनते हैं। और जब वुह पनानथना से उठा अपने सीप्पन
४६ के पास आया उसने उनहें सोक से सोते पाया। तब उसने
उनहें कहा की तुम कयों सोते हो उठो और पनानथना कनो
४७ नहो की तुम पनीछा में पड़ो। और जब वुह कह नहा था
एक मंडली दीप्पाइ दी और उन बानह में से एक जो यहुदा
कहावता था उनके आगे आगे जाता था वहीं यसु का युमा लेने
४८ को पास आया। पनंतु यसु ने उसको कहा हे यहुदा तु मनुप्प
४९ के पुतन को युमा से पकड़वाता है। जब उनहों ने जो उसके
आस पास थे जो कुछ की होने पन था देप्पा तो बोले हे पनभु
५० कया हम प्पड़ग से मानें। और उन में से एक ने पनधान
याजक के सेवक पन यलाया और उसका दहना कान उड़ा

५१ दीया। तव यसु ने उतन देके कहा की यहीं लों चीनज धनो
५१ ग्रीन उसने उसके कान को छुग्रा ग्रीन उसे यंगा कीया। तव
यसु ने पनधान याजकों ग्रीन मंदीन के सेनापतीन ग्रीन पना-
यीनों को जो उस पास ग्राए थे कहा की जैसे योन पकड़ने को
५२ तुम प्पड़ग ग्रीन लाठीयां लेके नीकले हो। जव मैं पनतीदीन
मंदीन में तुमहाने संग था तमहों ने मुझपन हाथ न वढ़ाया
पनंतु यह तुमहानी घड़ी ग्रीन ग्रंधकान का पनाकनम है।
५४ तव उनहों ने उसे पकड़ के ग्रागे कन लीया ग्रीन उसको पन-
धान याजकों के घन में लाए ग्रीन पतनस दुन से उसके पीछे
५५ पीछे यला गया। ग्रीन जव उनहों ने घन के मध में ग्राग
५६ सुलगाइ ग्रीन प्रेकठे वैठे पतनस भी उन में वैठ गया। तव
प्रेक दासी ने उसे ग्राग के पास वैठे देप्पा ग्रीन धयान से उस पन
५७ दनीसट कनके कहा की यह मनुप्य भी उसके संग था। तव
वुह यह कहके मुकन गया की हे इसतीनी मैं उसे नहीं जानता।
५८ ग्रीन तनीक पीछे दुसने ने उसे देप्पा ग्रीन कहा की तु भी उन में
५९ से है तव पतनस ने कहा हे मनुप्य मैं नहीं हों। ग्रीन घड़ी प्रेक
वीते ग्रीन प्रेक ने नीसयय से कहा की सयमुय यह भी उसके
६० संग था कयोंकी यह जलीली है। तव पतनस ने कहा हे मनुप्य
मैं नहीं जानता तु कया कहता है ग्रीन यों कहतेही ततकाल
६१ कुकुट ने सवद कीया। तव पनभु ने घुम के पतनस पन दनीसट
की ग्रीन पतनस को पनभु का वयन येत ग्राया की उसने उसे
योंही कहा था की कुकुट के सवद कनने से ग्रागे तु तीन वान
६२ मुझ से मुकन जायगा। तव पतनस वाहन गया ग्रीन वीलप्प
६३ वीलप्प के नोया। ग्रीन जोन मनुप्यन ने यसु को पकड़ा था
६४ उसे ठठे में उड़ाया ग्रीन माना। ग्रीन उसकी ग्रांप्पों में पटी
वांध के उसके मुंह पन थपेड़ा माना ग्रीन यह कहके उस से
६५ पुछा की ग्रागम कह कौन है जो थपेड़ा मानता है। ग्रनु ग्रीन
६६ वहुतेनों ने इसन की ग्रपनींदा से उसके वीप्पय में कहा। ग्रीन

दीन नीकलतेहो लोगें के पनायीन चैान पनधान य़ाजक
चैान ऋधापक एकठे ऋाये चैान उसे ऋपनी सभ्रा में ले जाके
६७ व्रोले। की हम से कह कय़ा तु मसीह है चैान उसने उनहें
६८ कहा य़दी मैं तुम से कऊं तम पनतीत न कनोगे। चैान
य़दी मैं पुछुं भ्री तुम मुहे उतन न देचोगे चैान न
६९ छोड़ोगे। ऋागे को मनुप्य का पुतन ईसन के पनाकनम
७० के दहीने चोन व्रैठेगा। तव् उन सभ्रें ने कहा ते कय़ा
तु ईसन का पुतन है पेन उसने उनहें कहा तुमहीं कहते
७१ हो की मैं ऊं। पेन उनहों ने कहा ऋव् हमें चैान साप्यी
का कय़ा पनजोजन है कय़ोंकी हम सभ्रें ने ऋापही उसी
मुंह से सुना है।

२३ तेइसवां पनव्।

१ तव् सानी मंडली उठके उसको पीलातुस पास ले गइ।
२ चैान वे य़ह कहके उस पन दोप्य देने लगे की हम ने इसे लोगें
को व्रीगाड़ते चैान कैसन को कन देने से व्रनजते चैान य़ह
३ कहते ऊए पाय़ा की मैं ऋापही मसीह नाजा ऊं। सो पीला-
तुस ने य़ह कहके उसे पुछा कय़ा तु य़ऊदीय़ें का नाजा है
४ तव् उसने उतन दीय़ा चैान कहा तुही ते कहता है। तव्
पीलातुस ने पनधान य़ाजकें चैान लोगें को कहा मैं इस
५ मनुप्य का कुछ दोप्य नहीं पाता। चैान उनहों ने ऋधीक
ऊलन कनके कहा की वुह जलील से लेके य़हां लें साने य़ऊ-
६ दीय़ः में उपदेस कनके लोगें को उसकाता है। जव् पीलातुस
७ ने जलील का सुना ते पुछा कय़ा वुह जलीली है। जव् उसने
जाना की वुह हीनुदीस के पनजा में से है उसने उसे हीनुदीस
८ के पास जो ऋापही य़नोसलीम में था भ्रेजा। चैान जव्

हीरुदीस ने यसु को देष्पा वुह वहुत आनंद हुआ कयोंकी वुह
वहुत दीन से उसके देष्पने की इछा रष्पता था इस लीये की
उसने उसके वीषय में वहुत कुछ सुना था और चाहता था की
९ उसके कोई आसचरज को देष्पे। तव उसने उसे वहुत कुछ
१० पुछा परंतु उसने उसको कुछ उतर न दीया। और परधान
याजकों और अधापकों ने ष्पड़े होके उस पर दीरढ़ता से
११ दोष दीया। और हीरुदीस ने अपने जोधा लोगों के संग
होके उसकी नींदा की और ठठे कीये और उसको झड़कीला
१२ वसतर पहीना के पीलातुस पास फेर भेजा। और उसी दीन
पीलातुस और हीरुदीस आपुस में मीतर हुए की उस से
१३ पहीले उन में सतरुता थी। और जव पीलातुस ने परधान
१४ याजकों और लोगों के परधानों को एकठे वुलाया। उसने
उनहें कहा की तुम लोग इस मनुष्य को यह कहते हुए मेरे
पास लाये हो की लोगों को वीगाड़ता है और देष्पो मैं ने
तुमहारे संमुष्प परीछा की और इस मनुष्य पर उन दोषों
१५ के वीषय में जो तुम ने उस पर दीये कुछ न पाया। और
न हीरुदीस ने की मैं ने तुमहें उसके पास भेजा और देष्पो
१६ की उस पर मार डालने के जोग कुछ न हुआ। सो उसको
१७ दंड देके छोड़ देता हुं। अव उसे अवस था की परव में एक
१८ को उनके लीये छोड़ देवे। तव वे सव एकठे यह कहके
चीलाए की इसको उठा डाल और वरवास को हमारे लीये
१९ छोड़ दे। वुह कोई दंगे के कारन जो नगर में कीया गया
२० था और हतया के लीये वंदीगीरह में डाला गया था। इस
लीये पीलातुस यसु के छोड़ने की इछा रष्पके उनसे फेर
२१ वोला। परंतु वे चीला उठे की वुह कुरुस पर मारा जाय
२२ कुरुस पर मारा जाय। और उसने तीसरी वार उनहें कहा
कयों उसने कया अपराध कीया है मैं ने उस पर मार डालने
का कोइ कारन न पाया इस लीये मैं उसको दंड देके छोड़

२३ देता ऊं। पनेन वे यीला के मांगने लगे की वुह कुनुस पन
मान्‍ना जाय़ तव़ उनहों के श्रोन पनधान य़ाजकों के सवद ठहन
२४ गय़े। पनेन पीलातुस ने मान लीय़ा की उनकी इछा पन
२५ नहे। श्रोन उसने उसको जो दंगा श्रोन हतय़ा के कानन
व़ंदीगीनह में डाला गय़ा था छोड़ दीय़ा पनंतु य़सु को उनकी
२६ इछा पन सोंप दीय़ा। श्रोन जों वे उसको ले यले उनहों ने
समउन कुनीनी को पकड़ा जो व़ाहन से श्राता था श्रोन उस पन
२७ कुनुस को नप्पा की इह उठा के य़सु के पीछे ले यले। श्रोन प्रेक
व़ड़ी जथा श्रोन इसतीनी भी जो उसके लीये नोतीय़ां पीट-
२८ तीय़ां थीं उसके पीछे हो लीय़ां। य़सु ने उनके श्रोन फीन के
कहा की हे य़नोसलीम की पुतनीय़ो मेने लीय़े मत नोश्रो पनंतु
२९ श्रपने श्रोन श्रपने व़ालकों के लीय़े नोश्रो। कय़ोंकी देप्पो
वे दीन श्राते हैं जीन में वे कहेंगे की व़ांझ धंन श्रोन वे गनम्भ
सथान जीन में धानन न ऊश्रा श्रोन वे सतन जीनहों ने न
३० पीलाय़ा। उस समय पहाड़ों को कहना श्रानंभ कनेंगे की
३१ हम पन गीनो श्रोन पहाड़ीय़ां को की हमें ढांपो। कय़ोंकी
य़दी हने व़ीनछ पन प्रेसा कनते हैं तो सुप्पे पन कय़ा कनेंगे।
३२ श्रोन दो मनुप्य को भी जो कुकनमी थे उसके संग मान डालने
के लीय़े ले यले।

३३ श्रोन जव़ उस सथान में जो प्पोपड़ी का कहावता है
श्राय़े वहां उनहों ने उसको श्रोन उन कुकनमीय़ों को
प्रेक को उसके दहीने श्रोन दुसने को व़ाप्रें कुनुस पन माना।
३४ तव़ य़सु ने कहा की हे पीता उन पन छमा कन कय़ोंकी वे
नहीं जानते की कय़ा कनते हैं श्रोन उनहों ने यीठी डाल के
३५ उसके व़सतन को व़ांट लीय़ा। श्रोन लोग प्पड़े देप्प नहे थे
श्रोन पनधान भी उनके संग ठठे से कहते थे की उसने श्रोनों
को छुड़ाय़ा य़दी वुह मसीह इसन का युना ऊश्रा है तो श्रपने

३६ को छुड़ावे। और जोधा लोग भी ठठा करते उसके पास आये
३७ और उसे सीरका दीया। और बोले की यदी तू यहूदीयों
३८ का राजा है तो अपने को छुड़ा। और यूनानी और लाटीनी
और इब्रानी अक्षर में ऐक पत्र पर लीख के उसके ऊपर
३९ लगाया की यह यहूदीयों का राजा है। और उन कुकरमीयों
में से ऐक ने जो फांसी गये थे उसके बीषय में पाषंड कहा की
४० यदी तू मसीह है तो आप को और हम को छुड़ा। परंतु
दूसरे ने उत्तर दे कर उसको घुड़क के कहा की तू ईसर
४१ से नहीं डरता देख तू भी इसी दंड में संगी है। और
हम तो न्याय की रीत से क्योंकी हम अपने करम का
फल पा रहे हैं पर इस मनुष्य ने कुछ चूक न कीया।
४२ और उसने यीसु को कहा हे प्रभु जब तू अपने राज
४३ में आ पहुंचे तो मुझे समरन कीजीये। यीसु ने उसको
कहा मैं तुझे सत कहता हूं की आज तू मेरे संग सरग
लोक में होगा।

४४ और दो पहर के समय में समसत भूम पर अंधकार छाके
४५ तीसरे पहर लों रहा। और सूरज अंधकार हूआ और
४६ मंदीर का घूंघट मध में फट गया। फेर यीसु बड़े सबद से
चीला के बोला की हे पीता मैं अपना आतमा तेरे हाथ में
सौंपता हूं और यह कहके अपने प्रान को सौंप दीया।
४७ तब जो की हूआ था सेनापती ने देख के ईसर की सतुत की
४८ और कहा की नीसचय यह मनुष्य धरमी था। और सब
लोग जो यह देखने को ऐकठे हूऐ थे उन बसतुन को जो
४९ बीत गया था देख के छातीयां पीटते हूऐ उलटे फीरे। और
उसके सब चीनहार और इसतीरी जो जलील से उसके पीछे
५० आई थीं दूर खड़ी होके यह सब देख रही थीं। और
देखो की ऐक मनुष्य यूसफ नाम मंतरी और सजन पुरुष

५१ और धरमी था। और उनके परामरस और कारज में
संगी न था यहूदीयों के एक नगर अरमतीया का बासी था
५२ और ईसर के राज की बाट भी जोहता था। उसने पीलातुस
५३ पास जाके यसु की लोथ मांगी। और उसने उसे उतार के
बसतर में लपेटा और एक समाध में जो पथर में खोदा गया
५४ था जीस में कभी कोई न [illegible] न गया था धरा। और वुह
बनाउनी का दीन था और बीसराम का दीन समीप था।
५५ और इसतीरी भी जो उसके संग जलील से आई थीं पीछे
हो लीं और समाध को और उसकी लोथ को की कीस
५६ रीत से रखी गई देख रखीं। और उनहों ने फीर के
सुगंध दरब और तेल तैयार कीया और आगया के समान
बीसराम के दीन में चैन कीया।

२४ चौबीसवां पर्ब।

१ अब अठवारे के पहीले दीन बड़े तड़के वे उन सुगंध दरबों
को जो उनहों ने तैयार कीये लेके समाध पर आईं और
२ उनके संग कई और भी आईं। उनहों ने उस पथर को
३ समाध से ढुलकाया हुआ पाया। और भीतर गईं और
४ परन्तु यसु के देह को न पाया। और ऐसा हुआ की जब
वे उस कारन से बहुत घबरा रही थीं तो देखो दो मनुष्य
५ चमकते बसतर पहीने हुए उनके पास खड़े हुए। और
जब वे डर गईं और अपने मुंह को भूम पर झुकाए हुए
थीं उनहों ने उनको कहा की तुम जीवते को मीरतकों में
६ कयों ढूंढतीयां हो। वुह यहां नहीं है परंतु जी उठा है चेत
७ करो की उसने जब जलील में था तुमहों से कया कहा। की
अवस है की मनुष्य का पुतर पापीयों के हाथ में सौंपा जाय

८ श्रीन कुनुस पन माना जाय श्रीन तीसने दीन फीन उठे। तव
९ उनहों ने उसकी व्रातों को येत कीया। श्रीन समाघ से
फीनीं श्रीन उन व्रातों का समायान उन गयानह को श्रनु
१० श्रीनों को सुनाया। मनीयम मजदली श्रीन युश्राना श्रीन
मनीयम याकुव्र की माता श्रनु श्रीन उनके संग थीं जीनहों ने
११ ये व्रातें पनेनीतों से कहीं। श्रीन उनकी व्रातें उनको व्रयनथ
कहानी के समान समह पड़ीं श्रीन उनकी पनतीत न की।
१२ तव पतनस उठके समाघ के श्रीन दौड़ा श्रीन नीये हुक के
सुती व्रसतन ग्रेक श्रीन पड़ा ऊश्रा देष्पा श्रीन उस व्रात से
१३ जो व्रीत गइ थी मन में श्रासयनज कनता यला गया। श्रीन
देष्पो की उसी दीन दो उन में से श्रमाश्रस नाम ग्रेक गांव
को जो यनोसलीम से पौने याान कोस पन था जाते थे।
१४ श्रीन श्रापुस में उन समसत व्रातों की जो व्रीत गइ थी यनया
१५ कनते थे। श्रीन ग्रैसा ऊश्रा की जव्र वे यनया श्रीन पुछ
पाछ कन नहे थे यसु श्राप पास श्रा कन उनके संग हो लीया।
१६ पनंतु उनकी श्रांष्पें व्रंद हो गइं थीं यहां लों की उनहों ने
१७ उसको न पहीयाना। श्रीन उसने उनहें कहा की यह कीस
नीत की व्रात यीत हैं जो तुम यलते ऊग्रे ग्रेक दुसने से कनते
१८ हो श्रीन उदास हो। तव्र उन में से ग्रेक ने जीसका नाम
कुलुपास था उतन देके उसको कहा कया तु यनोसलीम में
केवल व्रीदेसी है श्रीन इन व्रातों को जो इनहीं दीनों में
१९ व्रीती हैं नहीं जानता। उसने उन से पुछा की कौन सी व्रातें
फीन वे उसे व्रोले की यसु नासनी के व्रीष्पय में जो ईसन
के श्रीन समसत लोगों के श्रागे श्रागम गयानी था श्रीन कानज
२० श्रीन व्रयन में सामनथी था। श्रीन कयोंकन पनधान याजकों
श्रीन हमाने पनधानों ने उसे पकडवाके उसके मानडालने
२१ की श्रगया की श्रीन उसको कुनुस पन माना। श्रीन हमें
भनोसा था की यह वही इसनाइल का उधान कननेहान

था और उन सभों से अधीक आज तीसरा दीन है जब
२२ से ये बातें हुईं हैं। और हमारी जथा की कीतनी इस
तीरीयों ने भी हम बीसमीत कर दीया जो भोर को समाध
२३ पर थीं। और उसकी लोथ न पाके यह कहती आईं की
हम ने दुतों का दरसन पाया जो कहते थे की वुह जीता
२४ है। और कई उन में से जो हमारे संग थे समाध पर
गये और जैसा इसतीरीयों ने कहा था वैसाही पाया परंतु
२५ उनहों ने उसको न देष्पा। तब उसने उनहें कहा की हे
मुरष्प और आगम गयानीयों की कही हुई समसत बातों
२६ में अलप बीसवासीयो। कया उचीत न था की मसीह ये
२७ सब कसट उठा के अपने ऐसयरय में परवेस करे। और
उसने मुसा से आरंभ करके और समसत आगमगयानीयों
की वे बातें जो समसत पुसतकों में उसके बीष्पय में हैं उनके
२८ आगे बरनन कीं। फेर वे उस गांव के नीयर वे जाते थे
पास पहुंचे और उसने ऐसा कीया जैसा की वुह आगे को
२९ जाया चाहता है। परंतु उनहों ने मना के उसे रोका और
कहा की हमारे संग रह कयोंकी अब सांझ नीकट है और
दीन बहुत बीत गया तब वुह भीतर गया की उनके संग
३० रहे। और जब उनके संग भोजन पर बैठा था ऐसा हुआ
की उसने रोटी उठाके आसीरबाद कीया और तोड़ के उनहें
३१ दीं। तब उनहों की आंष्पें ष्पुल गईं और वे उसको जान
३२ गये और वुह उन की दीसीसट से अदीरीस हुआ। तब
उनहों ने आपुस में कहा जब वुह हमारे संग मारग में बात
करता था और जब वुह गरंथों का अरथ करता था कया
३३ हमारे मन हम में न तपते थे। और वे उसी घड़ी उठे और
यरोसलीम को फीरे और उन गयारह को और उनहें
३४ जो उनके संग एकठे थे यह कहते हुए पाया। की परभु
३५ सचमुच जी उठा है और समउन को दीष्पाई दीया। और

उनहें ने मारग की व्रातें व्रननन कीं श्रीर वुह कीस नीत
३६ से नोटी तोड़ने में पहीयाना गया। श्रीर जव वे युं कह
नहे थे यसु श्राप उनके मध में पड़ा ऊश्रा श्रीर उनहें कहा
३७ को तुम पन कुसल। वे भय़ कनके डन गये श्रीर समहा
३८ की हम श्रातमा देप्पते हैं। श्रीर उसने उनहें कहा तुम
कयों व्रयाकुल हो श्रीर कयों तुमहाने मन में यीनता उठती
३९ है। मेने हाथें श्रीर मेने पाश्रों को देप्पा की मैं श्राप ही
ऊं मुहे टटोलो श्रीर देप्पो कयोंकी श्रातमा में मांस श्रीर
४० हाड़ नहीं होता जैसा की तुम मुह में देप्पते हो। श्रीर
४१ यह कहके हाथ पांव उनहें दीप्पाये। श्रीर जव वे श्रव लों
श्रानंद से पनतीत न कनते थे श्रीर व्रीसमीत थे उसने उनहें
४२ कहा तुमहाने पास यहां कुछ भोजन है। तव उनहें ने उसे
४३ थोड़ी सी भुनी मछली श्रीर मधु का छता दीया। उसने
४४ लेके उनके संमुप्प प्पाया। श्रीर उनहें कहा की ये व्रातें हैं
जो मैं ने तुमहाने संग नहते ऊए तुम से कहीं की सव व्रातें
का जो मेने व्रीप्पय में मुसा की व्रेवसथा में श्रीर श्रागम
४५ गयानीयों श्रीर भजन में हैं संपुनन होना श्रवेस है। परेन
४६ उसने उनकी व्रुध को प्पोला की वे गनंथों को समहें। श्रीर
उनहें कहा की युंही लीप्पा है श्रीर ऐसा ऐसा श्रवेस था
की मसीह दुप्प उठावे श्रीर तीसने दीन मीनतकों में से जी
४७ उठे। श्रीर की यनोसलीम से लेके समसत लोगें में उसके
नाम से पसयाताप श्रीर पापें के मोयन का उपदेस कीया
४८। ४९ जाय। श्रीर तुम सव इन व्रातें के साप्पी हो। श्रीर
देप्पो की मैं श्रपने पीता के व्राया का तुम पन भेजता ऊं
परंतु जव लों तुम उपन से पनाकनम न पाश्रो यनोसलीम नगन
में व्रास कनो।

५० श्रीर वुह उनहें व्रीतानीयां लें व्राहन ले गया श्रीर श्रपना

५१ हाथ उठा के उन्हें आसीस दीया। और ऐसा हुआ कि
वुह उन्हें आसीस देते हुए उन से अलग हुआ और स्वर्ग
५२ पर जाता रहा। तब वे उस को दंडवत करके बड़े आनंद
५३ से यरोसलीम को फीरे। और नीत मंदीर में ईश्वर की
स्तुति और धंन मानते रहा कीये।

आमीन।

मंगल समाचान युहना नचीत।

---

१ पहीला पनब।

मसीह का इसनत ग्रैान ब्रोयबइ होने का पद ग्रैान ग्रवतान लेना १—१८ मसीह पन यहीया का साप्पी देना १९—२८ बताता है की वुह इसन का मेमना ग्रैान इसन का पुतन ग्रैान धनमातमा से सनान दायक २९—३४ यहीया के सीप्प मसीह का पीछा कनते हैं ३५—३९ पतनस ग्रैान नासानाइल यसु पास पहुंचाये जाते हैं ४०—४५ यसु का नासाना-इल पन साप्पी देना ग्रैान ग्रापुस का संबाद ४६—५१।

१ ग्रानंभ में सबद था ग्रैान वुह सबद इसन के संग था ग्रैान
२ वुह सबद इसन था। वही ग्रानंभ में इसन के संग था।
३ सब कुछ उस से नया गया ग्रैान नचीत में तनीक बसतु उस
४ बीना नहीं नची गइ। उस में जीवन था ग्रैान वुह जीवन
५ मनुप्पन का उंजीयाला था। ग्रैान वुह उंजीयाला ग्रंधीयाने
६ में यमकता है ग्रैान ग्रंधीयाने ने उसे न बुझा। यहीया नाम
७ का ऐक जन इसन की ग्रोन से भेजा गया था। वही साप्पी
के लीये ग्राया की उंजीयाले पन साप्पी देवे जीसतें उसके

९ परंतु उस उंजोयाले पर साप्पी देने को आया। सत उंजीयाला
वुह था जो जगत में आके हर प्रेक मनुप्प को उंजीयाला करता
१० है। वुह जगत में था और जगत उस से रचा गया और
११ जगत ने उसे नहीं पहीचाना। वुह अपने नीजों पास आया
१२ और उसके नीजों ने उसे गरहन न कीया। परंतु जीतने
उसे गरहन करके उसके नाम पर वीसवास लाये उसने उनहें
१३ इसर के पुतर होने का पद दीया। जो न तो लहु से और न
सरीर की इछा से न मनुप्प की इछा से परंतु इसर से उतपंन
१४ हुये। और सबद देही हुआ और कीरपा और सचाइ की
भरपुरी से हम में वास कीया और हम ने उसकी महीमा
१५ को पीता के प्रेकलौते की महीमा के समान देप्पा। यहीया
ने उसके लीये साप्पी दी और पुकार के कहा की यह वुह है
जीसके वीप्पय में मैं ने कहा की जो मेरे पीछे आता है सो
१६ मुझ से स्रेसठ है कयोंकी वुह मुझ से आगे था। और उसकी
भरपुरी से हम ने पाया अरथात कीरपा पर कीरपा पाइ।
१७ कयोंकी ब्रेवसथा मुसा से दी गइ कीरपा और सचाइ यसु
१८ मसीह से पहुंची। इसर को कीसी ने कभी नहीं देप्पा है
प्रेकलौते पुतर ने, जो पीता की गोद में है उसे परगट कीया।
१९ जब यहुदीयों ने याजकों और लावीयों को यरोसलीम से
उसे पुछने को भेजा की तु कौन है यहीया की साप्पी यह थी,
२० उसने मान लीया और नाह न कीया परंतु मान लीया की मैं
२१ मसीह नहीं। और उनहों ने उसे पुछा तो कया तु इलीयास
है? उसने कहा की नहीं तु वुह भवीसदवकता है? उसने
२२ उतर दीया की नहीं। तब उनहों ने उसे कहा की तु कौन
है? जीसतें जीनहों ने हमें भेजा हम उनहें कुछ उतर देवें
२३ तु अपने वीप्पय में कया कहता है?। उसने कहा की मैं प्रेक
का सबद हुं जो बन में पुकारता है की परमेसर के मारग
२४ को सीधा करो। जैसा असाया भवीसदवकता ने कहा। और

२५ जो भेजे गये सो फरीसीयों में से थे। उनहों ने उसे पुछा
और कहा की जो तु मसीह अथवा इलीयास नहीं अथवा वुह
२६ भवीसदवकता नहीं तो फरेन कयों सनान देता है?। यहीया
ने उनहें उतर देके कहा की मैं जल से सनान देता हुं परंतु
२७ तुमहारे मध में एेक खड़ा है जीसे तुम नहीं जानते। सो
वुह है जो मेरे पीछे आके मुझ से स्नेसठ है जीस की जुती का
२८ बंद खोलने के मैं जोग नहीं। ये सब बनदन पार बैतइबरः
में हुए जहां यहीया सनान देता था।

२९ दुसरे दीन यहीया ने यसु को अपनी ओर आते देख के
कहा की देखो इसर का मेमना जो जगत के पाप को ले जाता
३० है। यह वुह है जीस के बीषय में मैं ने कहा की एेक मनुष्य
मेरे पीछे आता है जो मुझ से स्नेसठ है कयोंकी वुह मुझसे
३१ आगे था। और मैं उसे न जानता था पर जीसतें वुह इस-
३२ राइल पर परगट होवे मैं जल से सनान देता आया हुं। और
यहीया ने साखी देके कहा की मैं ने आतमा को कपोत की
३३ नाईं सरग से उतरते और उस पर ठहरते देखा। और
मैं उसे न जानता था परंतु जीसने मुझे जल से सनान देने को
भेजा उसने मुझे कहा की जीस पर तु आतमा को उतरते
और ठहरते देखे सो वुह है जो धरमातमा से सनान देता
३४ है। और मैं ने देखा और साखी देता हुं की यह इसर का
३५ पुतर है। फेर दुसरे दीन यहीया और उसके सीखों में से
३६ दो खड़े थे। और यसु को चलते देख के उसने कहा की
३७ देखो इसर का मेमना। और उन दो सीखों ने उसका बचन
३८ सुना और वे यसु के पीछे हो लीये। तब यसु ने पीछे फीर
के उनहें आते देख के कहा की तुम कया ढुंढ़ते हो? उनहों
ने उसे कहा की हे रबी अरथात हे गुरु आप कहां रहते हैं?।
३९ उसने कहा की आओ, देखो, और जहां वुह रहता था उनहों

ने आके देष्पा और उस दीन उसके संग रहे कयोंकी दो
४० घंटे के अटकल दीन रहगया था। उन दोनों में से जो यहीया
की सुन के उस के पीछे गये ऐक समउन पतरस का भाइ
४१ अंदरयास था। उसने पहीले अपने सगे भाइ समउन को पाया
और उसे कहा की हम ने मसीह को पाया जीसका अरथ
४२ अभीसीकत है। तब वुह उसे यसु पास लाया और यसु ने
उसे देष्प के कहा की तु युनस का बेटा समउन है तु कीफास
४३ कहावेगा जीस का अरथ, पथर है। अगीले दीन यसु ने
जलील को जाने याहा और फैलबुस को पाके उसे कहा की
४४ मेरे पीछे हो ले। अब फैलबुस अंदरयास और पतरस के
४५ नगर बैतीसैदा का था। फैलबुस ने नासानाइल को पाया
और उसे कहा की हम ने उसे पाया जीसके बीष्पय में मुसा ने
बेवसथा में और भवीसदबकतों ने लीष्पा है की युसफ का
४६ पुतर यसु नासरी। नासानाइल ने उसे कहा की कोइ अछी
बसतु नासरः से नीकल सकती है? फैलबुस ने उसे कहा की
४७ आ और देष्प। यसु ने नासानाइल को अपनी ओर आते
देष्पा और उसके बीष्पय में कहा कीं देष्पो ऐक सचा इस-
४८ राइली जीस में कपट नहीं। नासानाइल ने उसे कहा की
आप मुझे कहां से जानते हैं? यसु ने उतर देके उसे कहा
की फैलबुस के बुलाने से आगे जब तु गुलर पेड़ तले था मैं
४९ ने तुझे देष्पा। नासानाइल ने उतर देके उसे कहा की हे
गुरु आप इसर के पुतर हैं आप इसराइल के राजा हैं।
५० यसु ने उतर देके उसे कहा की मैं ने तुझे गुलर पेड़ तले
देष्पा इस कहने के कारन तु बीसवास लाता है? तु इन से
५१ बड़े कारज देष्पेगा। फेर उसने उसे कहा की मैं तुमहें सत
सत कहता हुं की इसके पीछे तुम सरग को ष्पुला और
इसर के दुतों को उपर जाते और मनुष्य के पुतर पर उतरते
देष्पोगे।

२ दुसना पनव़।

यसु का जल को दाप्पनस व़ानाना १—११ पनव़
में जाके मंदीन को पवीतन कनना ग्रैान ग्रपनी
मीनतु ग्रैान जी उठने का मवीस कहना। १२—२२
ग्रपने तइं लोगों पन न छोड़ना २३—२५।

१ ग्रैान तीसने दीन जलील के काना में ग्रेक व़ीवाह ऊग्रा
२ ग्रैान य़सु की माता वहीं थी। य़सु ग्रैान उसके सीप्प भी उस
३ व़ीवाह में व़ुलाये गये थे। ग्रैान जव़ दाप्पनस थोड़ा ऊग्रा
४ य़सु की माता ने उसे कहा की उन पास दाप्पनस नहीं। य़सु
ने उसे कहा की हे इसतीनी तुह्म से मुझे कय़ा काम? मेना
५ समय़ ग्रव़ लों नहीं ग्राय़ा। उसकी माता ने सेवकों से कहा की
६ जो कुछ वुह तुमहें कहे सो कीजीये़ा। ग्रैान वहां पथन के छः
मटके य़ऊदीय़ों के पवीतन कनने को नीत के समान धने थे
७ हन ग्रेक में दो ग्रथवा तीन मन की समाइ थी। य़सु ने उनहें
कहा की मटकों में जल भनो सो उनहों ने मुंहेमुंह उनहें भना।
८ फेन उसने उनहें कहा की ग्रव़ नीकालो ग्रैान जेवनान के पन-
९ धान पास ले जाग्रो सो वे ले गये। जव़ जेवनान के पनधान ने
उस दाप्पनस को यीप्पा जो जल से व़ना था ग्रैान न जाना की
वुह कहां से था पनंतु जीन सेवकों ने उस जल को नीकाला था
१० सो जानते थे उसने दुलहा को व़ुलाय़ा। ग्रैान उसे कहा की
हन ग्रेक मनुप्प ग्रानंभ में ग्रछा दाप्पनस देता है ग्रैान जव़
लोग पीके छकते हैं तव़ वुह जो उस से घटती है, पन तु ने ग्रछा
११ दाप्पनस ग्रव़ लों नप्प छोड़ा है। य़ह ग्रासय़नजो का ग्रानंभ
य़सु ने जलील के काना में कीय़ा ग्रैान ग्रपनी महीमा पनगट
१२ की ग्रैान उसके सीप्प उसपन व़ीसवास लाये। उसके पीछे वुह
ग्रैान उसकी माता ग्रैान भाइ ग्रैान उसके सीप्प कपननाहम में
१३ गये पन वे वहां व़ऊत दीन न ठहने। तव़ य़ऊदीय़ों का पान

१४ जाना पनव्र समीप आया और यसु यनोसलीम को गया। और
बैल और भेड़ और कपोत के ब्रेयवैयों को और प्पुनदीयों
१५ को मंदीन में बैठे ऊए पाया। तब उसने नसी का याबुक
बनाके उन सभों को बैलों और भेड़ों समेत मंदीन से बाहन
नीकाल दीया और प्पुनदीयों के नोकड़ को बीथना दीया
१६ और मंचों को उलट दीया। और कपोत के ब्रेयवैयों से
कहा की इन वुसतुन को यहां से दुन कनो मेने पीता के घन
१७ को बैपान का घन मत बनाओ। और उसके सीप्यों ने इस
लीप्ये ऊए ब्रयन को, की तेने घन के ताप ने मुझे प्पा
लीया है।

१८ तब यऊदीयों ने उतन दीया और उसे कहा की तु हमें
कौनसा लछन दीप्पाता है जो यह कानज कनता है?।
१९ यसु ने उतन देके उनहं कहा की इस मंदीन को ढादो और
२० तीन दीन में इसे उठाउंगा। तब यऊदीयों ने कहा की इस
मंदीन के बनने में छीयालीस बनस लगे और तु उसे तीन दीन
२१ में उठावेगा?। पनंतु उसने अपने देह के मंदीन के बीप्पय में
२२ कहा। इस लीये जब वुह मीनतकों में से जी उठा उसके
सीप्यों ने येत कीया की उसने उनहें यह कहा था और वे लीप्पे
ऊए पन और यसु के कहे ऊए ब्रयन पन बीसवाव लाये।
२३ और जब वुह पान जाना पनब्र में यनोसलीम में था बऊतेने
उसके आसयनज कानजों को देप्प के उस पन बीसवास लाये।
२४ पनंतु यसु ने अपने तई उन पन न छोड़ा कयोंकी वुह सब को
२५ जानता था। और उसे आवेसक न था की मनुप्य के बीप्पय में
कोइ साप्पी देवे कयोंकी वुह जानता था की मनुप्य में कया था।

३ तीसना पनव्र।

मसीह के नये जनम की ब्रानता कनना १—१३
मसीह के जगत में आने का कानन उसका कुनुस

पर उठाया जाना और उसके बीसवासीयों की
आनंदता १४—१७ अबीसवासीयों की दुसटता
और दुरगती १८—२१ यसु के बीष्यय में यहीया
की कथा २२—३९।

१ यहूदीयों का एक परधान नीकुदीमुस नाम का एक फरी-
२ सी था। जो रात को यसु पास आया और उसे कहा की हे
गुरु हम जानते हैं की आप ईसर की ओर से उपदेसक आये
हैं कयोंकी कोई मनुष्य यह आसयरज जो आप करते हैं
३ नहीं कर सकता जब लों ईसर उसके संग न हो। यसु ने उतर
देके उसे कहा की मैं तुझे सत सत कहता हूं की जब लों मनुष्य
फेर के उतपंन न होवे वुह ईसर के राज को देष्य नहीं सकता।
४ नीकुदीमुस ने उसे कहा की जब मनुष्य बीरघ हुआ वुह कयों-
कर उतपंन हो सकता है? कया वुह दुसरी बार अपनी माता
५ के कोष्य में जाके उतपंन हो सकता है?। यसु ने उतर दीया
की मैं तुझे सत सत कहता हूं की जब लों मनुष्य जल से और
आतमा से उतपंन न होवे वुह ईसर के राज में नहीं जा सकता।
६ जो देह से उतपंन हुआ है सो देह है और जो आतमा से
७ उतपंन हुआ है सो आतमा है आसयरज मत मान की मैं
८ ने तुझे कहा की तुम्हें फेर के उतपंन होना अवेस है। पवन
जीधर याहता है उधर यलता है और तु उसका सबद सुनता
है परंतु नहीं जानता की वुह कहां से आता है और कीधर
को जाता है ऐसाही हर एक है जो आतमा से उतपंन हुआ
९ है। नीकुदीमुस ने उतर देके उसे कहा की ये बातें कयोंकर
१० हो सकती हैं?। यसु ने उतर देके उसे कहा की तु ईसराईल
११ का उपदेसक होके ये बात नहीं जानता?। मैं तुझे सत सत
कहता हूं की जो हम जानते हैं सो कहते हैं और जो हमने
देष्या है उस पर साष्यी देते हैं परंतु तुम हमारी साष्यी नहीं

१२ मानते। जो मैं ने तुमहें संसानीक व्रातें कहीं औान तुम पन-
तीत नहीं कनते तो जव्र मैं तुमहें सनगीय व्रातें कहूं तो
१३ कयोंकन पनतीत कनोगे?। कयोंकी कोइ मनुष्य सनग पन
नहीं उठ गया पनंतु केवल वुह जो सनग से उतना अनथात
१४ मनुष्य का पुतन जो सनग में है। औान जैसा मुसा ने व्रन में
सांप को उपन उठाया वैसाही अवेस है की मनुष्य का पुतन भी
१५ उठाया जाय। जीसतें जो कोइ उस पन व्रीसवास लावे सो
१६ नास न होवे पनंतु अनंत जीवन पावे। कद्योंकी इसन ने जगत
पन ऐसी पनीत की, की उसने अपना एकलैाता पुतन दीया
की जो कोइ उस पन व्रीसवास लावे सो नास न होवे पनंतु
१७ अनंत जीवन पावे। कयोंकी इसन ने अपने पुतन को जगत
में इस लीये नहीं भेजा की जगत को दोष्पी ठहनावे पनंतु
१८ जीसतें जगत उस से उधान पावे। जो उस पन व्रीसवास नष्पता
है सो दोष्पी नहीं पनंतु जो व्रीसवास नहीं नष्पता सो दोष्पी
हो युका इस लीये की वुह इसन के एकलैाते पुतन के नाम
१९ पन व्रीसवास न लाया। औान दोष्प यह है की उजीयाला
जगत में आया औान मनुष्यों ने अंधीयाने को उंजीयाले से
२० अधीक पनतीत की इस कानन की उनके कनम व्रुने थे। कयों
की जो कोइ व्रुनाइ कनता है सो उंजीयाले से व्रैन नष्पता है
औान उंजीयाले के पास नहीं आता न हो की उसके कनम
२१ पनगट होवें। पनंतु जो सत को पालन कनता है सो उंजीयाले
के पास आता है जीसतें उसके कानज पनगट होवें की वे इसन
में कीये गये हैं।

२२ इन व्रातों के पीछे यसु औान उसके सीष्य यहूदीयः की
भुम में आये औान उसने वहां उनके संग कुछ दीन ठहन के
२३ सनान दीया। औान यहीया भी सालीम के पास ऐनुन में
सनान देता था इस कानन की वहां व्रहुत जल था औान लोग
२४ आ आके सनान पाते थे। कद्योंकी यहीया अव्र लें व्रंदीगीनह

२५ में डाला न गया था। तव यहीया के सीष्यों में और यज़दीयों
२६ में पवीतर करने के वीष्यय में वीवाद ऊआ। और वे यहोया
के पास आये और उसे वोले की गुरुजी जो यरदन पार आप
पास था जीस पर आप ने साष्यी दी देष्पीये की वुह सनान देता
२७ है और सव उसके पास जाते हैं। यहीया ने उतर देके कहा
की जव लों मनुष्य को सरग से न दीया जाय वुह कुछ पा नहीं
२८ सकता। तुम आपही मुझ पर साष्यी हो की मैं ने कहा की
२९ मैं मसीह नहीं परंतु उसके आगे भेजा गया ऊं। जीसकी
दुलहीन है सो दुलहा है परंतु दुलहा का मीत जो ष्पड़ा होके
उसकी सुनता है दुलहा के सवद से वड़ा आनंदीत होता है
३० इस लीये मेरा आनंद पुरा ऊआ। अवेस है की वुह वढ़े और
३१ मैं घटुं। जो उपर से आता है सो सव से वड़ा है जो पीरथीवी
का है सो पारथीव है और पीरथीवी की कहता है जो सरग से
३२ आता है सो सव से वड़ा है। और जो कुछ उसने देष्पा और
सुना है उसकी साष्यी देता है और कोइ उसकी साष्यी गरहन
३३ नहीं करता। जीसने उसकी साष्यी गरहन की है उसने छाप
३४ कीया है की इसर सत है। क्योंकी जीसे इसर ने भेजा है सो
इसर की कहता है इस लीये इसर उसे आतमा परीमान से
३५ नहीं देता। पीता पुतर को पीआर करता है और सव कुछ
३६ उसके वस में कीया है। पुतर पर जो वीसवास रष्पता है सो
सो अनंत जीवन रष्पता है और पुतर पर जो वीसवास नहीं
रष्पता सो जीवन को न देष्पेगा परंतु इसर का कोप उस पर
घरा है।

४ चौथा परव।

यज़दीअः से इसा का सामरः में जाना १—६ सामरः
की इसतीरी से वातता करना ७—२७ उस इसतीरी
का परभु पर साष्यी देना २८—३० अपने सीष्यों से

ग्रानता कनना ११—२८ सामनीग्रों का ग्रीसबाय
लाना २९—४२ जलीन में फरीन जाके ग्रेक महत
जन को चंगा कनना ४३—५४

१ पनन्तु ने जान के की फरनीसीग्रों ने ग्रह सुना की ग्रसु ने
२ ग्रहीग्रा से सनान दे दे के ग्रधीक सीष्य कीग्रा। (ग्रदपी ग्रसु
३ ग्राप नहीं पनंतु उसके सीष्य सनान देते थे)। तव वुह
४ ग्रऊदीग्रः को छोड़ के जलील को फरीन गग्रा। चैान ग्रवेस था
५ की वुह सामनः में हो के जाग्र। तव सैकन नाम सामनः के
ग्रेक नगन में उस भुम के पास जो ग्राकुव ने ग्रपने वेटे ग्रुसफर
६ को दी थी वुह चाग्रा। चैान ग्राकुव का कुग्रा वहीं था से
ग्रसु जातना से थका होके उस कुंग्रे पन ग्रुंही वैठ गग्रा, ग्रह दे।
७ पहन के लग भग था। सामनः की ग्रेक इसतीनी पानी भनने
८ को चाइ चैान ग्रसु ने उसे कहा की मुझे पीने को दे। (कग्रें-
९ की उसके सीष्य भोजन मोल लेने नगन में गग्रे थे)। सामनः
की उस इसतीनी ने उसे कहा की ग्रह कैसा है की ग्रऊदी होके
तु मुझ सामनः की इसतीनी से पीने को मांगता है? कग्रोंकी
१० ग्रऊदी सामनीग्रों से व्रेवहान नहीं नख्ते। ग्रसु ने उतन देके
उसे कहा की जो तु इसन के दान को चैान उसे जानती जो
तुझे कहता है की मुझे पीने को दे तो तु उस से मांगती चैान
११ वुह तुझे ग्रमीनत जल देता?। इसतीनी ने उसे कहा, महासग्र
ग्राप के पास खैंचने का कुछ नहीं चैान कुंग्रा गहीना है फेन
१२ ग्राप पास ग्रह ग्रमीनत जल कहां से है। कग्रा ग्राप हमान
पीता ग्राकुव से व्रड़े हैं जीसने ग्रह कुंग्रा हमें दीग्रा चैान उसने
ग्राप चैान उसके वालक ने चैान उसके पसुन ने उस से पीग्रा?।
१३ ग्रसु ने उतन देके उसे कहा की जो कोइ ग्रह जल पीता है
१४ सो फेन पीग्रासा होगा। पनंतु जो वुह जल पीता है जो मैं
उसे देउं सो कभी पीग्रासा न होगा पनंतु जल जो मैं उसे देउंगा

से। उस में जल का सोता हे। जायगा जे। अनंत जीवन लें। व्रहता
१५ नहेगा। इसतीनो ने उसे कहा की हे पनभु ग्रह जल मुहे
१६ देकी मैं पीयासी न ऊं श्रोन यहां भनने के। न अउं। यसु
ने उसे कहा की जा अपने पती को व्रला श्रोन इधन आ।
१७ उस इसतीनी ने उतन देके कहा की मेना पती नहीं है, यसु
ने उसे कहा की तु ने अच्छा कहा है की मेना पती नहीं।
१८ कयोंकी तु पांच पती कन चुकी पन अव्र जे। तेना है से। तेना
१९ पती नहीं तु ने इस में सत कहा। इसतीनी ने उसे कहा की
हे महासय मुहे सुहे पड़ता है की आप भवीसदव्रकता हैं।
२० हमाने पीतनों ने इस पहाड़ पन सेवा की श्रोन तुम लोग कहते
हो की वुह सथान यनोसलीम है जहां उचीत है की लोग सेवा
२१ कनें। यसु ने उसे कहा की हे इसतीनी मेनी पनतीत कन
की वुह समय आता है जव्र की तुम न ते। इस पहाड़ में न
२२ यनोसलीम में पीता की सेवा कनोगे। जाेसे तुम नहीं जानते
उसकी सेवा कनते हो हम जीसे जानते हैं उसकी सेवा कनते
२३ हैं कयोंकी मुकत यऊदीयों में से है। पनंतु समय आता है
श्रोन अव्र है की सचे पुजक आतमा से श्रोन सचाइ से पीता की
२४ पुजा कनेंगे कयोंकी पीता ऐसे पुजकों को ढुंढ़ता है। इसन
आतमा है श्रोन जे। उसकी सेवा कनते हैं उनहें अवेसक है की
२५ आतमा से श्रोन सचाइ से सेवा कनें। उस इसतीनी ने उसे
कहा की मैं जानती ऊं की मसीह (जे। खनीसीकत है) आता
२६ है जव्र वुह पऊंचेगा वुह हमें सव्र कुछ व्रतावेगा। यसु ने उसे
कहा की मैं जो तुहे कहता ऊ वही ऊं।
२७ इतने में उसके सीष्य आये श्रोन आसचनज माना की वुह
ऐक इसतीनी से व्रानता कनता था पनंतु कीसी ने न कहा
की आप कया मांगते हैं अथवा कीस लीये उस से व्रोलते हैं ?।
२८ तव्र इसतीनी ने अपने जल का घड़ा छोड़ के नगन में जाके
२९ लोगों से कहा। की आश्रो ऐक मनुष्य को देखो जीसने सव्र

३० जो मैं ने कीये मुझे कहा यह वुह मसीह नहीं?। तब वे नगर
से नीकल के उस पास आये।
३१ इतने में उसके सीष्यों ने उसकी बीनती करके कहा की हे
३२ गुरु कुछ खाइये। परंतु उसने उनहें कहा की मेरे खाने को
३३ वुह भोजन है जो तुम नहीं जानते। इस लीये सीष्यों ने
आपुस में कहा की कया कोइ उसके लये भोजन लाया है?।
३४ यसु ने उनहें कहा की जीसने मुझे भेजा उसकी इछा पर चलुं
३५ और उसके कारज को पुरा करुं यही मेरा भोजन है। तुम
नहीं कहते हो की चार मास के पीछे लवने का समय है?
देखो मैं तमहें कहता हुं की अपनी आंखें उपर करो और
३६ खेतों को देखो की वे लवने के लीये पक चुके हैं। और जो
लवता है सो बनी पाता है और अनंत जीवन के लीये फल
बटोरता है जीसतें जो बोता है और जो लवता है मील के
३७ आनंद करें। और इस में यह बचन सत है की एक बोता
३८ और दुसरा लवता है। मैं ने तमहें उसे लवने को भेजा है
जीस में तुम ने परीसरम न कीया औरों ने परीसरम कीया
३९ है और तुम ने उनके परीसरम में परवेस कीया। और उस
नगर के बहुत से उस सामरी इसतीरी के कहने से उस पर
बीसवास लाये जीसने साष्टी दी की जो कुछ मैं ने कभी कीया
४० उसने मुझे कहा। और उन सामरीयों ने उस पास आके उसकी
बीनती की, की हमारे संग ठहरीये सो वुह दो दीन वहां
४१ रहा। और बहुतेरे उसी के बचन के कारन बीसवास
४२ लाये। और उस इसतीरी को कहा की अब हम केवल तेरे
कहे से बीसवास नहीं लाते कयोंकी हम ने आपही सुना और
४३ जानते हैं की यह ठीक जगत का मुकतदाता मसीह है। और
४४ दो दीन पीछे वुह वहां से गलील को गया। कयों-
की यसु ने आप साष्टी दी की भवीसदबकता अपनेही देस में
४५ आदर नहीं पाता। और जब वुह गलील में आया तो सभी

चौओं ने उसे गनहन कीया कयोंकी सब कुछ जो उसने
युनोसलीम के बीच पनब में कीया था उनहों ने देख्या था
४६ कयोंकी वे भी पनब में गये थे। औन युसु फेन जलील के
काना में आया, जहां उसने जल को दाख्नस बनाया था औन
वहां ऐक पनतीसठत मनुष्य था जीसका बेटा कपननाहम में
४७ नोगी था। जब उसने सुना की युसु युऊदीय से जलील में
आया वुह उस पास गया औन उसकी बीनती की, की आके
४८ मेने बेटे को यंगा कीजीये कयोंकी वुह मनने पन है। युसु
ने उसे कहा की जब लों तुम लछन औन आसयनज न देख्यो
४९ तुम बीसवास न लाओगे। उस पनतीसठत मनुष्य ने उसे कहा
की हे महासय मेने लड़के के मनने के आगे उतन आईये।
५० युसु ने उसे कहा की जा तेना बेटा जीता है औन उस मनुष्य
ने उस बयन पन, जो युसु ने उसे कहा था नीसयय कीया औन
५१ यला गया। वुह उतनताही था की उसके सेवक उसे मीले
५२ औन कहा की आप का बेटा जीता है। तब उसने उनहें
पुछा की वुह कीस घड़ी से यंगा होने लगा उनहों ने उसे कहा
५३ की कल सातवीं घड़ी से जन ने उसे छोड़ा। तब उसके पीता
ने जाना की उसी घड़ी में युसु ने उसे कहा था की तेना बेटा
जीता है तब वुह आप औन उसका साना घन बीसवास लाया।
५४ यह फेन दुसना आसयनज है जो युसु ने युऊदीयः से आके
जलील में कीया।

५ पांयवां पनब।

अठतीस बनस के लंगड़े को पनभु का यंगा कनना
१—९ युऊदीयों का उस से बीबाद कनना १०—१६
मसीह का अपना ईसनत औन बीयवई का पनाकनम
बताना १७—३१ पनमान ला ला के अपनी बात का

दीउ करना १२—३९ यहूदीयों के अवीस्वास और
अहंकार के कारन उन पर दोष लगाना ४०—४७।

१ इस के पीछे यहूदीयों का एक पर्व हुआ और यसु यरो-
२ सलीम को गया। अब यरोसलीम में भेड़ हाट के लग एक कुंड
है जीस के पांच ओसारे हैं जो ईब्री भाषा में बैतीहसदा
३ कहावता है। इस में दुरबल, अंधे, लंगड़े, और सुखाये हुओं
की एक बड़ी मंडली जल के डोल ने की आसा में पड़ी थी।
४ क्योंकी एक दूत कीसी समय में उस कुंड में उतर के जल को
डोलावता था और जल के डोलने के पीछे जो कोई पहीले उस
५ में उतरता था सो अपने रोग से चंगा होता था। और वहां
६ एक मनुष्य था जो अठतीस बरस से रोगी था। यसु ने उसे
पड़े देख के जाना की वुह बहुत दीन से उस दसा में है तो
७ उसे कहा की तु चंगा होने चाहता है?। उस दुरबल मनुष्य
ने उसे उतर दीया की हे प्रभु मेरे पास कोई मनुष्य नहीं की
जब जल डोले तो मुझे कुंड में डाल दे और जब लों मैं आता
८ हूं दुसरा मुझ से आगे उतर पड़ता है। यसु ने उसे कहा की
९ उठ, अपना बीछौना उठा और चला जा। और तुरंत वुह
चंगा हो गया और अपना बीछौना उठाके चल नीकला और
१० वुह बीसराम का दीन था। इस लीये यहूदीयों ने उस चंगे
कीये गये मनुष्य को कहा की यह बीसराम है बीछौना ले
११ जाना तुझे उचीत नहीं। उसने उन्हें उतर दीया की जीसने
मुझे चंगा कीया उसी ने मुझे कहा की अपना बीछौना उठाके
१२ चला जा। तब उनहों ने उसे पुछा की वुह कौन मनुष्य है
१३ जीसने तुझे कहा की अपना बीछौना उठा के चला जा। अब
उसने जो चंगा हुआ था न जाना की वुह कौन था क्योंकी
उस सथान में एक भीड़ थी और यसु वहां से हट गया था।
१४ इसके पीछें यसु ने उसे मंदीर में पाया और उसे कहा की देख

तु यंगा कीया गया फेर पाप न कनना न हो की तु अधीक
१५ बीपत में पड़े। उस मनुष्य ने जाके यहूदीयों से कहा की
१६ जीसने मुझे यंगा कीया से यसु है। इस लीये यहूदीयों ने
यसु को सताया श्रीर घात कनने को उसके पीछे पड़े कयोंकी
१७ उसने बीसनाम में यह कीया था। पनंतु यसुने उनहें उतन
दीया की मेना पीता अब लों कानज कनता है श्रीन मैं कनता
१८ हूं। इस लीये यहूदीयों ने उसे घात कनने को अधीक याहा
कयोंकी उसने केवल बीसनाम को उलंघन न कीया पनंतु इसन
१९ को अपना पीता कहके आप को इसन के तुल कीया। तब
यसु ने उतन देके उनहें कहा की मैं तुमहें सत सत कहता हूं
की जो कुछ वुह पीता को कनते देष्पता है पुतन उसे छोड़ आप
से आप कुछ नहीं कन सकता है कयोंकी जो कुछ वुह कनता
२० है सोइ पुतन भी कनता है। इस लीये की पीता पुतन को
पीआन कनता है श्रीन सब जो आप कनता है उसे देष्पाता
है श्रीन वुह उसको इनसे बड़े कानज दीष्पावेगा जीसतें तुम
२१ आसयनज मानो। कयोंकी जैसा पीता मीनतकों को उठाता
है श्रीन जीलाता है वैसे ही पुतन भी जीनहें याहेगा जीलाता
२२ है। कयोंकी पीता कीसी मनुष्य का बीयान नहीं कनता
२३ पनंतु उसने सब बीयान पुतन को सौंप दीया है। जीसतें जैसा
सब पीता का आदन कनते हैं वैसा पुतन का भी आदन कनें
जो पुतन का आदन नहीं कनता सो पीता का जीसने उसे भेजा
२४ है आदन नहीं कनता। मैं तुमहें सत सत कहता हूं की जो
मेना बयन सुनता है श्रीन जीसने मुझे भेजा है उस पन
बीसवास लाता है सो अनंत जीवन नष्पता है श्रीन दोष्प में
२५ न पड़ेगा पनंतु मीनतु से छुट के जीवन को पहुंया है। मैं
तुमहें सत सत कहता हूं की समय आता है श्रीन अब है की
मीनतक इसन के पुतन का सबद सुनेंगे श्रीन सुन सुनके जीयेंगे।
२६ कयोंकी जैसा पीता आप में जीवन नष्पता है वैसा उसने पुतन

२७ को दीया है की आप में जीवन रष्पे। और उसने नयाय
करने की सामरथ भी दी है कयोंकी वुह मनुष्य का पुत्र है।
२८ इस से आसचरज मत मानो कयोंकी वुह समय आता है जीस
२९ में सब जो समाधीन में हैं उसका सब्द सुनेंगे। और नीकल
आवेंगे जीनहें ने भलाइ की है जीवन के लीये जी उठेंगे
३० और जीनहें ने बुराइ की है दंड के लीये जी उठेंगे। आप
से आप मैं कछ नहीं कर सकता जैसा मैं सुनता हुं तैसा बीचार
करता हुं और मेरी आगया ठीक है कयोंकी मैं अपनी इछा
३१ नहीं ढुंढता परंतु पीता की इछा जीसने मुझे भेजा है। जो
३२ मैं अपने पर साष्पी देउं तो मेरी साष्पी ठीक नहीं। दुसरा
है जो मुझ पर साष्पी देता है और मैं जानता हुं की जो साष्पी
३३ वुह मेरे लीये देता है सो सत है। तुम ने यहीया पास भेजा
३४ और उसने सचाइ पर साष्पी दी। परंतु मैं मनुष्य की साष्पी
नहीं चाहता पर तुमहारी मुकती के लीये मैं ने ये बातें कहीं।
३५ वुह जलता और चमकता उजीयाला था और थोड़े दीन लों
३६ तुम उसके उंजीयाले में मगन होने चाहते थे। परंतु यहीया
की से मैं एक बड़ी साष्पी रष्पता हुं कयोंकी जो कारज पीता
ने मुझे पुरा करने को दीया है सोइ कारज जो मैं करता हुं मेरे
३७ लीये साष्पी देते हैं की पीता ने मुझे भेजा है। और पीता
जीसने मुझे भेजा है उसने मेरे लीये आप साष्पी दी है तुम ने
कभी उस का सब्द न सुना और न उस का सरुप देष्पा।
३८ और उस का बचन तुम में नहीं है इस लीये की जीसे उसने
३९ भेजा तुम उसका बीसवास नहीं करते। लीष्पे हुए में ढुंढो
कयोंकी तुम समुझते हो की उनमें तुमहारे लीये अनंत जीवन
४० है और वेही मेरे लीये साष्पी देते हैं। और जीवन पाने के
४१ लीये तुम मुझ पास नहीं आने चाहते हो। मैं मनुष्यों से
४२ महीमा नहीं चाहता। परंतु मैं तुमहें जानता हुं की इसर
४३ का प्रेम तुम में नहीं है। मैं अपने पीता के नाम से आया हुं

और तुम मुझे गरहन नहीं करते जो दुसरा अपनेही नाम से
४४ आवे तो उसे गरहन करोगे। जो आपुस में एक दुसरे की
परतीसठा गरहन करते हो और उस परतीसठा को जो केवल
ईसर से है नहीं ढुंढ़ते तुम कयोंकर ब्रीसवास ला सकते ?।
४५ मत समझो की मैं पीता के आगे तुम्हें दोष देउंगा एक मुसा
जीस पर तुम भरोसा रखते हो तुमहारा दोष दायक है।
४६ कयोंकी जो तुम लोग मुसा पर ब्रीसवास कीये होते तो तुम मुझ
पर भी ब्रीसवास करते इस लीये की उसने मेरे ब्रीषय में
४७ लीखा। परंतु जो तुम लोग उसके लीखे हुए पर ब्रीसवास न
करो तो मेरे ब्रचन पर कैसे ब्रीसवास करोगे।

६ छठवां परब्र ।

परभु का पांच सहसर को संतुसट करना १—१४
परभु का जल पर चलना १५—२१ उसके लीये
मंडली का पार जाना २२—२५ परभु का उनहें
दपटना २६—२९ जीवन का भोजन आप को ठह-
राना ३०—५९ ब्रहुत से लोग उस से उदास होके
फीर जाते हैं ६०—६६ पतरस का ब्रीसवास और
यहूदा का उसे पकड़वाने की भवीसब्रानी ६७—७१।

१ इन ब्रातों के पीछे यीसु तीब्रीरीयास के जलील के समुदर
२ पार गया। और एक ब्रड़ी मंडली उसके पीछे हो ली कयोंकी
उनहों ने उसके आसचरजों को देखा जो उसने रोगीयों पर
३ कीया था। फेर यीसु एक पहाड़ पर जाके अपने सीषों के
संग ब्रैठा और यहुदीयों का पार जाना परब्र समीप हुआ।
४ यीसु ने आंखें उपर करके देखा की ब्रड़ी मंडली मुझ पास आती
५ है। तब्र उसने फीलीपुस को कहा की इनके खाने के लीये
६ हम कहां से रोटी मोल लें। (उसने परखने के लीये यह

कहा था क्योंकी जो वुह कीया याहता था सो आप जानता
७ था)। फ़ैलवुस ने उतन दीया को उन में से हन ऐक को
टुकड़ा टुकड़ा दीया जाय तो दो सौ सुकी की नोटी उनके
८ लीये व्रस न होगी। उसके सीप्पों में से ऐक समउन पतनस
९ के भाइ अंदनयास ने उसे कहा। की यहां ऐक छोकना है
जीस पास जव की पांय नोटी श्रौन दो मछलीयां हैं पनंतु
१० वे इतनों में कया हैं। यसु ने कहा की लोगों को वैठाश्रो श्रव
उस सथान में व्रहुत घास थी सो गीनती में पांय सहसन के
११ लग भग वैठ गये। श्रौन यसु ने नोटीयों को लीया श्रौन
घन मान के सीप्पों को व्रांट दीया श्रौन सीप्पों ने वैठवैयों
१२ को दीया श्रौन मछलीयों से भी जीतना वे याहते थे। जव
वे तीनीपत हुऐ उसने श्रपने सीप्पों से कहा की व्रये हुऐ युन
१३ यान को वटोनो जीसतें कुछ प्पो न जाय। सो उनहों ने
वटोना श्रौन जव की पांय नोटीयों के युन यान में से जो
उन जेवनहनीयों से व्रय नहे थे वानह टोकनीयां भनीं।
१४ तव उन मनुप्पों ने यसु का यह श्रासयनज कनम देप्पके
कहा की सय मुय यह वही भवीसदव्रकता है जो जगत में
१५ श्राने को था। जव यसु ने जाना की वे उसे श्राके व्रनव्रस
नाजा व्रनाने याहते हैं तो श्राप श्रकेला पहाड़ को फीन
१६ गया। श्रौन जव सांझ हुइ उसके सीप्प समुदन को गये।
१७ श्रौन नाव पन यढ़के समुदन के पान कपननाहुम को यले
उस समय श्रंधीयाना हो यला था श्रौन यसु उनके पास न
१८ श्राया था। श्रौन व्रड़ी श्रांधी के माने समुदन लहनाने लगा।
१९ जव वे पयीस तीस नव के लग भग प्पे युके तो उनहों ने यसु
को समुदन पन यलते श्रौन नाव पास श्राते देप्पा श्रौन डन
२०।२१ गये। तव यसु ने उनहें कहा की मैं हुं मत डनो। फेन
उनहों ने श्रानंद से उसे नाव पन ले लीया श्रौन तुनंत जीधन
२१ वे जाते थे तीधन नाव जा पहुंयी। दुसने दीन जव समुदन

बान के लोगों ने देष्पा की उस नाव के छोड़ जीस पन उसके
सीष्प गय़े थे कोइ नाव न थी श्रैान की य़सु अपने सोष्पों के
संग उस नाव पन न गय़ा था पनंतु केवल उसके सीष्प गय़े थे।
२३ (तीस पन भी श्रैान नावें तीव्रीनय़ास से उस सथान के पास
जहां उनहों ने पनभु के धंन मानने के पीछे नोटी ष्पाइ थी
२४ आइं)। अव्र लोगों ने देष्पा की य़सु अथवा उसके सीष्प वहां
नहीं हैं ते वे भी नाव पन यढ़के य़सु को ढुंढ़ते कपननाऊम
२५ में आय़े। श्रैान उनहों ने उसे पान पाके कहा की गुनु जी
२६ आप य़हां कव्र आय़े ?। य़सु ने उनहें उतन देके कहा की
मैं तुमहें सत सत कहता ऊं की आसयनज देष्पने के कानन
तुम लोग मुझे नहीं ढुंढ़ते हो पनंतु इस लीय़े की तुम लोग
२७ नोटीय़ों को ष्पाके तीनीपत ऊए। नासमान भोजन के लीय़े
पनीसनम मत कनो पनंतु उस भोजन के लीय़े जो अनंत जीवन
लों ठहनाता है जीसे मनुष्प का पुतन तुमहें देगा कय़ोंकी
२८ इसन पीता ने उस पन छाप कीय़ा है। तव्र उनहों ने उसे
कहा की हम कय़ा कनें जीसतें इसन के कानजकानी होवें।
२९ य़सु ने उतन देके उनहें कहा की इसन का कानज य़ह है की
३० जीसे उसने भेजा है उस पन व्रीसवास लाश्रो। तव्र उनहों ने
उसे कहा फेन तु कैान सा आसयनज दीष्पाता है जो हम
देष्पके तुझ पन व्रीसवास लावें ? तु कैान सा कानज कनता
३१ है ?। हमाने पीतनों ने व्रन में मंन ष्पाय़ा जैसा लीष्पा है
३२ की उसने उनहें सनग से नोटी ष्पाने को दी। य़सु ने उनहें
कहा की मैं तुमहें सत सत कहता ऊं की मुसा ने तुमहें सनग
से वुह नोटी नहीं दी पनंतु मेना पीता तुमहें सनग से सयी
३३ नोटी देता है। कय़ोंकी इसन की नोटी वुह है जो सनग से
३४ उतनती श्रैान जगत को जीवन देती है। उनहों ने उसे कहा
३५ की हे पनभु हमें नीत नीत य़ह नोटी दीजय़े। य़सु ने उनहें
कहा की जीवन की नोटी मैं ऊं जो मेने पास आता है सो कभी

त्रुप्पा न होगा और जो मेरा बीसवास रप्पता है कभी पीयासा
३६ न होगा। परंतु मैं ने तुमहें कहा की तुम लोग मुझे देप्पके
३७ भी बीसवास नहीं लाते। सब जो पीता ने मुझे दीया है मुझ
पास आवेगा और जो मेरे पास आता है मैं उसे कीसी भांत
३८ से नीकाल न देउंगा। कयोंकी मैं सरग से इस लीये नहीं
उतरता की अपनीही इछा पालुं परंतु उसकी इछा जीसने
३९ मुझे भेजा है। और जीस पीता ने मुझे भेजा है वुह यह
याहता है की सब में से जो उसने मुझे दीया है मैं कुछ न
४० प्पोउं परंतु उसे पीछले दीन में फेर उठाउं। और जीसने
मुझे भेजा है उसकी इछा यह है की हर एक जो पुतर को
देप्पता है और उस पर बीसवास लाता है अनंत जीवन पावे
४१ और मैं उसे अंत के दीन में उठाउंगा। तब यहूदी उसपर
कुड़कुड़ाए इस कारन की उसने कहा जो रोटी सरग से उतरी
४२ सो मैं हूं। और उनहों ने कहा की कया यह यसु युसफ
का पुतर नहीं है जीसके माता पीता को हम जानते हैं? फेर
४३ वुह कैसे कहता है की मैं सरग से उतरता हूं?। तब यसु
४४ ने उतर देके उनहें कहा की आपुस में मत कुड़कुड़ाओ। जब
लों जीस पीता ने मुझे भेजा है मनुप्प को न प्पैंये कोइ मुझ
पास आ नहीं सकता और मैं उसे अंत के दीन में उठाउंगा।
४५ भवीस बानी में लीप्पा है की वे सब इसर से उपदेस पावेंगे
इस लीये हर एक मनुप्प जीसने पीता से सुना और सीप्पा है
४६ मेरे पास आता है। यह नहीं की कीसी मनुप्प ने पीता को
देप्पा है केवल वुह जो इसर से है उसने पीता को देप्पा है।
४७ मैं तुमहें सत सत कहता हूं की जो मुझ पर बीसवास लाता
४८ है सो अनंत जीवन रप्पता है। जीवन की रोटी मैं हूं।
४९ तुमहारे पीतरों ने बन में मन प्पाया और मर गये।
५० सरग से उतरती रोटी वुह है जीसे मनुप्प प्पाके न मरे।
५१ जो जीवती रोटी सरग से उतरी सो मैं हूं जो कोइ इस रोटी

से प्याय सा सदा जीवता रहेगा श्रीर वुह रोटी जो मैं देउंगा
से मेरा सरीर है जीसे मैं जगत के जीवन के लीये देउंगा।
५२ तब्र यहूदी आपुस में ब्रीवाद करने लगे की यह मनुष्य अपना
५३ सरीर हमें प्याने को कैसे दे सकता है। यसु ने उनहें कहा
की मैं तुमहें सत सत कहता हूं की जो तुम लोग मनुष्य के पुत्र
का सरीर न प्याश्रो श्रीर उसका लोहू न पीश्रो तो तुम में
५४ जीवन नहीं है। जो मेरा सरीर प्याता है श्रीर मेरा लोहू
पीता है सो अनंत जीवन रप्पता है श्रीर मैं उसे श्रंत के दीन
५५ उठाउंगा। कयोंकी मेरा सरीर ठीक भोजन है श्रीर मेरा लोहू
५६ ठीक पान है। जो मेरा सरीर प्याता है श्रीर मेरा लोहू पीता
५७ है सो मुझ में रहता है श्रीर मैं उस में। जैसा की जीवत पीता
ने मुझे भेजा है श्रीर मैं पीता से जीता हूं वैसा जो मुझे प्याता
५८ है सो मुझ से जीयेगा। यह है वुह रोटी जो स्वर्ग से उतरी
जैसा तुमहारे पीतरों ने मंन प्याया श्रीर मर गये वैसा नहीं,
५९ जो इस रोटी से प्याता है सो सदा जीता रहेगा। उसने कपरना-
हूम में उपदेस करते हुए कीसी मंडली में ये ब्रातें कहीं।
६० तब्र उसके सीप्पों में से ब्रहुतों ने सुनके कहा की यह कठीन
६१ ब्रचन है उसे कौन सुन सकता?। यसु ने आप में जानके
की मेरे सीप्प आपुस में मुझ से कुड़कुड़ाते हैं उसने उनहें कहा
६२ की कया यह तुमहें उदास करती है?। पर जो तुम लोग
मनुष्य के पुत्र को उपर जाते देप्पोगे जहां वुह आगे था तो
६३ कया होगा?। आतमा जीलाता है सरीर लाभ नहीं करता
जो ब्रातें मैं तुमहें कहता हूं सो आतमा श्रीर जीवन हैं।
६४ परंतु तुम में कीतने हैं जो ब्रीसवास नहीं लाते कयोंकी यसु
आरंभ से जानता था की वे कौन हैं जो ब्रीसवास न करते थे
६५ श्रीर कौन उसे पकड़ावेगा। उसने कहा इस लीये मैं ने
तुमहें कहा की जब्र लों कीसी मनुष्य को मेरे पीता से दीया जाय
कोई मुझ पास नहीं आ सकता।

६६ तभी से उसके सीष्यों में से व्रहुतेने उलटे फीन गये औान
६७ फीन उसके संग न गये। तव्र यसु ने उन व्रानह को कहा की
६८ कया तुम भी यले जाओगे?। समउन पतनस ने उसे उतन
दीया की हे पनभु हम कीस पास जायें अनंत जीवन के व्रयन
६९ तो आप पास हैं?। औान हम नीसयय जानते हैं की आप
७० जीवते इसन के पुतन मसीह हैं। यसु ने उनहें कहा की
कया मैं ने तुम व्रानह को नहीं युना तथापी तुम में ओक भुत
७१ है। उसने समउन के व्रटे यहुदा असकनयुती के व्रीष्यय में
कहा कयोंकी व्रानह में से वुह ओक था जो उसे पकड़वाया
याहता था।

७ सातवां पनव्र।

अपने कुटुमव्रों के साथ पनभु का पनव्र में न जाना
१—९ ओकांत में जाना १०—१३ औान पनव्र के मघ
मंदीन में पनभु का उपदेस कनना १४—३६ औान
पापीयों को धनमातमा पाने के लीये नेउता देना
३७—३९ यहुदीयों का उस से व्रीव्राद कनना
४०—४४ उसके व्रीष्यय में फनीसीयों का व्रीव्राद
४५—५२।

१ इन व्रातों के पीछे यसु जलील में फीना कीया कयोंकी
उस ने न याहा की यहुदीयः में नहे कयोंकी यहुदी उसके
२ घात में लगे थे। अव्र यहुदीयों के तंव्रुओं का पनव्र नीकट
३ हुआ। इस लीये उसके भाइयों ने उसे कहा की यहां से
यहुदीय में जा जीसतें जो कानज तु कनता है सो तेने सीष्य
४ भी देखें। कयोंकी जो कोइ आप को पनगट कनने याहता
है सो छीपके कुछ नहीं कनता सो यदी तु ये कानज कनता
५ है तो आप को जगत पन पनगट कन। कयोंकी उसके भाइ
६ भी उस पन व्रीसवास न लाये। तव्र यसु ने उनहें कहा की

मेना समय़ अभी नहीं आय़ा पनंतु तुमहाना समय़ सदा
७ घना है। जगत तुमहों से व़ैन नहीं कन सकता पनंतु मुझ से
व़ैन कनता है कय़ोंकी मैं उस पन साष्षी देता ऊं की उसके
८ कानज व़ुने हैं। तुम लोग इस पनव़ में जाओ मैं अभी इस
पनव़ में न जाउंगा कय़ोंकी मेना समय़ अभी पुना नहीं ऊआ।
९।१० वुह य़े व़ातें कहके जलील में नहा। पनंतु जव़ उसके
भाइ गय़े वुह भी पनव़ में पनगट से नहीं पनंतु गुपत से गय़ा।
११ तव़ य़ऊदी पनव़ में उसे ढुंढने ओान कहने लगे की वुह कहां
१२ है?। ओान लोग उसके व़ीष्षय़ में व़ऊत व़डव़डाने लगे
कय़ोंकी कीतने कहते थे की वुह उतम मनुष्य है ओान कीतने
१३ कहते थे की नहीं पनंतु वुह लोगों को छल देता है। तीसपन
भी य़ऊदीय़ों के उनके माने कोइ मनुष्य उसके व़ीष्षय़ में
ष्पोल के नहीं कहता था।
१४ ओान पनव़ के मध में य़सु ने मंदीन में जाके उपदेस कीय़ा।
१५ तव़ य़ऊदी आसयनज से व़ोले की इस मनुष्य को व़ीना सीष्पे
१६ व़ीदीय़ा कहां से है। य़सु ने उनहें उतन देके कहा की मेना
१७ उपदेस मेना नहीं पनंतु उसका जीसने मुझे भेजा है। य़दी
कोइ उसकी इछा पन चले तो इस उपदेस को जानेगा की
१८ इसन से है अथवा मैं आप से कहता ऊं। जो अपनी ओान से
कहता है सो अपनी व़डाइ ढुंढता है पनंतु जो अपने पनेनक
की व़डाइ ढुंढता है सो सचा है ओान उसमें कुछ अधनम नहीं
१९ है। कय़ा मुसा ने तुमहें व़ैवसथा नहीं दी ओान कोइ
तुम में से व़ैवसथा को पालन नहीं कनता तुम लोग मेने घात
२० में कय़ों लगे हो?। लोगों ने उतन देके कहा की तुझ में
२१ भुत है कौन तेने घात में लगा है। य़सु ने पनतउतन में
उनहें कहा की मैं ने एक कानज कीय़ा है ओान तुम लोग
२२ आसयनज मानते हो। (मुसा ने तुम में ष्पतनः ठहनाय़ा
२३ है य़दपी वुह मुसा से नहीं पनंतु पीतनों से)। ओान ओीसतें

मूसा की व्यवस्था भंग न होय तुम लोग विस्नाम में मनुष्य
का खतनः करते यदि विस्नाम में मनुष्य का खतनः कीया
जाय तो तुम लोग इस लीये मुझ पर रीसीयाते हो की विस्नाम
२४ में मैं ने एक मनुष्य को नीरोग चंगा कीया। पाहीक वीयार
२५ मत करो परंतु खरा वीचार करो। तब कीतने यरोसलीमीयों
ने कहा की क्या यह वुह नहीं जीसे वे घात करने को ढूंढ़ते
२६ हैं?। परंतु देखो वुह तो हीयाव से बोलता है और वे उसे
कुछ नहीं कहते क्या प्रधानों ने नीस्चय जान लीया है की
२७ ठीक यही मसीह है। परंतु यह जहां से है हम जानते हैं
पर जब मसीह आवेगा कोई न जानेगा की वुह कहां से है।
२८ तब यसु ने मंदीर में उपदेस करते हुए यूं पुकारा की तुम
लोग मुझे पहीचानते और जानते हो की मैं कहां से हूं और
मैं आप से नहीं आया परंतु जीसने मुझे भेजा है सो सत है
२९ उसे तुम लोग नहीं जानते हो। परंतु मैं उसे जानता हूं
क्योंकी मैं उसकी ओर से हूं और उसने मुझे भेजा है।
३० तब उनहों ने उसे पकड़ने को चाहा पर कीसी मनुष्य ने उसपर
हाथ न डाले क्योंकी उस का समय अबलों न पहुंचा था।
३१ और लोगों में से बहुतेरे उस पर वीस्वास लाये और बोले
की जब मसीह आवेगा तो जो यह करता है क्या वुह इस से
३२ अधीक आस्चर्ज करम करेगा। फरीसीयों ने सुना की
लोग उसके वीषय में ऐसा बड़बड़ाते हैं तब उनहों ने और
३३ प्रधान याजकों ने पयादों को भेजा की उसे पकड़ लें। तब
यसु ने उनहें कहा की अब थोड़ी बेर लों मैं तुमहारे संग
३४ हूं और जीसने मुझे भेजा है उस पास जाता हूं। तुम लोग
मुझे ढूंढ़ोगे और न पाओगे और जहां मैं हूं तुम आ नहीं
३५ सकते। यहूदीयों ने आपस में कहा की वुह कीधर जायगा
जो हम उसे न पावेंगे? क्या वुह बीथरे हुए यूनानीयों में
३६ जायगा और यूनानीयों को उपदेस करेगा?। यह क्या

व़ात कहता है की तुम लोग मुझे ढुंढ़ोगे औान न पाओगे औान
१७ जहां मैं ऊं तहां तुम लोग आ नहीं सकते। पनव़ के पीछले
औान व़ड़े दीन में ग्रसु प्पड़ा ऊआ औान ग्रह कहके पुकाना
१८ की जो पीग्रासा हो सो मुझ पास आवे औान पीग्रे। जैसा लीप्पा
ऊआ कहता है जो मुझ पन व़ीसवास नप्पता है उसके पट से
१९ अनीनत जल की नदीग्रा व़हेंगी। (उसने आतमा के व़ीप्पग्र
में ग्रह कहा जो उसके व़ीसवासी पाने पन थे कग्रोंकी धनमातमा
अव़ लों नहीं दीग्रा गग्रा इस कानन की इसा अव़ लों प्रैसनग्र
४० मान न ऊआ था)। तव़ उन लोगों में से व़ऊतेनों ने ग्रह सुन
४१ के कहा की नीसच्चग्र ग्रह वह भवीसदव़कता है। औानों ने
कहा की ग्रही मसीह है पनंतु कीतने व़ोले की कग्रा मसीह
४२ जलील से नीकलेगा ?। कग्रा लीप्पा ऊआ नहीं कहता है
की मसीह दाउद के व़ंस से औान व़ैतलहम की व़सती से आवेगा
४३ जहां दाउद था ?। सो उसके व़ीप्पग्र में लोगों में व़ीभाग
४४ ऊआ। औान कीतनों ने उसे पकड़ने को चाहा पनंतु कीसी
४५ ने उस पन हाथ न डाले। तव़ पीग्रादे पनधान ग्राजकों औान
फनीसीग्रों के पास फीन गग्रे तव़ वे उनहें व़ोले की तुम लोग
४६ उसे कग्रों न लाग्रे। पीग्रादों ने कहा की इस जन के समान
४७ कीसी ने नहीं कहा। तव़ फनीसीग्रों ने उनहें उतन दीग्रा
४८ की कग्रा तुम लोग भी भनमाग्रे गग्रे ?। कग्रा कोइ पनधान
४९ अथवा फनीसीग्रों में से उस पन व़ीसवास लाग्रा ?। पनंतु
५० ग्रे लोग जो व़ैवसथा को नहीं जानते सो सनापीत हैं। नीकुदी-
मुस ने, जो नात को ग्रसु पास आग्रा था औान प्रैक उनमें से
५१ था, उनहें कहा। की व़ीन सुने औान जाने की मनुष्प ने
कग्रा कीग्रा है कग्रा हमानी व़ैवसथा कीसी को दोप्पी ठहनाती
५२ है ?। उनहों ने उतन देके उसे कहा की कग्रा तु भी जलील का
है ? ढुंढ़ औान देप्प कग्रोंकी जलील में से कोइ भवीसदव़कता
५३ नहीं नीकलता। फेन हन प्रैक जन अपने अपने घन गग्रा।

८ आठवां पर्व।

मसीह के लीये अधापक और फरीसी का जाल फैलाना और उनका लजीत होना १—११ बीवादीयों से मसीह का बातचीत करना १२—२० उनके नसट होने का संदेस देना २१—३७ अपना और उनका ठीक भेद बताना ३८—५० उसके बीसवासीयों का अनंत जीवन पाना और आप का अनादी काल से होना ५१—५९।

१।२ तब यसु जलपाइ के पहाड़ को गया। और बीहान को
तड़के मंदीर में फेर आया और सारे लोग उस पास आये
३ और उसने बैठ के उनहें उपदेस कीया। तब बेभीचार में
पकड़ी गई एक इसतीरी को, अधापक और फरीसी उस
४ पास लाये और उसे मध में खड़ी करके। उसे बोले की हे
५ गुरु यह इसतीरी बेभीचार करतेही पकड़ी गई। अब मुसा
ने तो बेवसथा में हमें आगया की, की ऐसाही पथरवाह की
६ जाय परंतु आप कया कहते हैं?। उनहों ने उसे परखने
के लीये यह कहा जीसतें वे उस पर दोख का कारन पावें
परंतु यसु नीचे झुक के अंगुली से भूम पर लीखने लगा।
७ सो जब वे उसे पुछते गये उसने सीधे होकर उनहें कहा की
८ जो तुम में नीसपाप हो सो पहले उसे पथर मारे। और वह
९ फेर झुक के भुम पर लीखने लगा। और उनहों ने सुना
वे मनहीं मन दोखी होके बीरध से लेके पीछले लों एक एक
करके चले गये और यसु अकेला रहगया और वह इसतीरी
१० मध में खड़ी रही। जब यसु ने उठ के इसतीरी को छोड़
कीसी को न देखा तो उसने उसे कहा की हे इसतीरी तेरे
दोखदायक कहां हैं? कया कीसी ने तुझे दोखी न ठहराया?।
११ उसने कहा की हे परभु कीसी ने नहीं यसु ने उसे कहा की

मैं भी तुहे दोष्पी नहीं ठहनाता जा थ्रीन फेन पाप मत कन।
१२ यसु ने फेन उनहें कहा की मैं जगत का उंजीयाला ऊं जो
मेने पीछे आता है सो अंधीयाने में न चलेगा पनंतु जीवन का
१३ उंजीयाला पावेगा। इस लीये फनोसीयों ने उसे कहा की
१४ तु अपने लीये साष्पी देता है तेनी साष्पी ठीक नहीं। यसु
ने उतन देके कहा की यदपी मैं अपने लीये साष्पी देता
ऊं मेनी साष्पी ठीक है कयोंकी मैं जानता ऊं की मैं कहां से
आया थ्रीन कीधन जाता ऊं पनंतु तुम लोग नहीं जानते की
१५ मैं कहां से आया थ्रीन कीधन जाता ऊं। तुम सनीनीक
व्रीयान कनते हो मैं कीसी मनुष्य पन व्रीयान नहीं कनता।
१६ तथापी यदी मैं व्रीयान कनुं तो मेना व्रीयान ठीक है कयोंकी
मैं अकेला नहीं ऊं पनंतु मैं थ्रीन पीता जीसने मुहे भेजा।
१७ तुमहानी व्रीवसथा में भी लीष्पा है की दो मनुष्य की साष्पी
१८ ठीक है। एक तो मैं ऊं जो अपने लीये साष्पी देता ऊं थ्रीन
एक पीता जीसने मुहे भेजा है मेने लीये साष्पी देता है?।
१९ तव्र उनहों ने उसे कहा की तेना पीता कहां है? यसु ने उतन
दीया की तुम लोग न मुहे न मेने पीता को जानते हो जो मुहे
२० जानते होते तो मेने पीता को भी जानते। यसु ने मंदीन
में उपदेस कनते ऊए भंडान में ये व्रातें कहीं थ्रीन कीसी ने
उस पन हाथ न डाले कयोंकी उसका समय अव्र लों नहीं आया
२१ था। तव्र यसु ने फेन उनहें कहा की मैं तो जाता ऊं थ्रीन
तुम लोग मुहे ढ़ुंढ़ोगे थ्रीन अपने पापों में मनोगे जीधन मैं
२२ जाता ऊं तुम लोग आ नहीं सकते। तव्र यऊदीयों ने कहा
की कया वुह अपने को मान डालेगा? इस कानन की वुह
कहता है की जीधन मैं जाता ऊं तुम लोग नहीं आ सकते।
२३ फेन उसने उनहें कहा की तुम लोग तले से हो मैं उपन से
२४ ऊं तुम लोग इस लोक के हो मैं इस लोक का नहीं। इस
लीये मैं ने तुमहें कहा की तुम लोग अपने पापों में मनोगे

कयोंकी यदी वीसवास न लाओ की मैं ऊं तो तुम लोग अपने
२५ पापों में मनोगे। तव उनहों ने उसे कहा की तु कौन है?
यसु ने उनहें कहा की वही जो मैं ने तुमसें आनंभ से कहा।
२६ तुमहान वीष्पय में कहने को औन वीयान कनने को मुह
पास वक्ततसी वातें हैं पनंतु जीसने मुहे भेजा है वुह सत है
औन मैं जगत को वे वातें कहता ऊं जो मैं ने उस से सुनी
२७ हैं। उनहों ने न समहा की उसने उनहें पीता के वीष्पय में
२८ कहा। फेन यसु ने उनहें कहा की जव तुम लोग मनुष्य के
पुतन को उपन उठाओगे तव जानोगे की मैं ऊं औन मैं आप
से कुछ नहीं कनता पनंतु जैसा मेने पीता ने मुहे सीष्पाया
२९ है मैं ये वातें कहता ऊं। औन जीसने मुहे भेजा है सो मेने
संग है पीता ने मुहे अकेला न छोड़ा कयोंकी मैं सदा वही
३० कानज कनता ऊं जो उसे सुहाते हैं। तव वुह ये वातें कहता
३१ था वक्ततेने उस पन वीसवास लाये। तव यसु ने उन यक्तदीयों
से जो उस पन वीसवास लाये थे कहा की जो तुम लोग मेने
३२ वयन पन वने नहोगे तो मेने सीष्य ठीक होओगे। औन
३३ सत को जानोगे औन सत तुमहें नीनवंघ कनेगा। उनहों ने
उसे उतन दीया की हम इवनाहीम के वंस हैं औन कभी
कीसी के वंघन में न थे तु कैसे कहता है की तुम नीनवंघ
३४ कीये जाओगे। यसु ने उनहें उतन दीया की मैं तुमहें सत
सत कहता ऊं की जो पाप कनता है सो पाप का दास है।
३५ औन दास सदा घन में नहीं नहता पनंतु पुतन सदा नहता है।
३६ इस लीये यदी पुतन तुमहें नीनवंघ कने तो ठीक नीनवंघ
३७ होओगे। मैं जानता ऊं की तुम लोग इवनाहीम के संतान हो
पनंतु मुहे मान डालने याहते हो कयोंकी मेना वयन तुम में
३८ नहीं है। जो मैं ने अपने पीता के पास देष्पा है सोइ कहता
ऊं औन जो तुम लोगों ने अपने पीता के पास देष्पा है सो
३९ कनते हो। उनहों ने उतन देके उसे कहा की हमाना पीता

इब्राहीम है यसु ने उनहें कहा की यदी तुम लोग इब्रा-
४० हीम के संतान होते तो इब्राहीम के कारज करते। परंतु
अब तुम लोग मुझे मार डालने याहते हो और मैं एक मनुष्य
हुं जीसने तुमहें वही सत कहा जो मैं ने इसर से सुना है
४१ इब्राहीम ने यह नहीं कीया। तुम लोग अपने पीता के
कारज करते हो तब उनहों ने उसे कहा की हम लोग व्यभीयार
४२ से उतपंन नहीं हुए हमारा पीता एक इसर है। यसु ने उनहें
कहा की जो इसर तुमहारा पीता होता तो तुम लोग मुझे
पीयार करते कयोंकी मैं इसर से नीकल आया हुं मैं आप
४३ से नहीं आया परंतु उसने मुझे भेजा। तुम लोग मेरी बोली
कयों नहीं समझते ? इस कारन मेरे बयन नहीं सुन सकते ?।
४४ तुम लोग अपने पीता भुत से हो और अपने पीता की आंज्ञा
कीया याहते हो वुह तो आरंभ से घातक था और सत में
सथीर न रहा कयोंकी उस में सयाइ नहीं जब वुह झुठ कहता
है तो अपनेही का बोलता है कयोंकी वुह झुठा है और
४५ झुठ का पीता है। पर इस कारन की मैं सत कहता हुं तुम
४६ लोग मेरी परतीत नहीं करते। तुम में कौन मुझ पर पाप
ठहराता है ? और जो मैं सत कहुं तो मेरी परतीत कयों
४७ नहीं करते ?। जो इसर से है सो इसर की बातें सुनता
है तुम लोग इस लीये नहीं सुनते की इसर के नहीं हो।
४८ तब यहुदीयों ने उतर दीया और उसे कहा की हम अछा
४९ नहीं कहते की तु सामरी है और तुझ में भुत है ?। यसु
ने उतर दीया की मुझ में भुत नहीं परंतु मैं अपने पीता का
आदर करता हुं और तुम लोग मेरा अनादर करते हो।
५० और मैं अपना महीमा नहीं ढुंढ़ता एक है जो ढुंढ़ता है और
५१ बीयार करता है। मैं तुमहें सत सत कहता हुं की यदी
मनुष्य मेरा बयन पालन करे तो मीरतु को कभी न देखेगा।
५२ यहुदीयों ने उसे कहा की अब हम जानते हैं की तुझ में

भुत है, इव्रनाहीम ग्रौन भवीसद्वकता मनगये ग्रौन तु
कहता है की ग्रदी कोइ मेना व्रयन पालन कने तो कभी
५२ मोनतु का सवाद न यीख्येगा। कग्रा तु हमाने पीता इव्रना-
हीम से, जो मनगया व्रड़ा है ग्रौन भवीसद्वकता मनगये
५४ तु आप को कग्रा ठहनाता है?। ग्रसु ने उतन दीया की
जो मैं अपना आदन कनु तो मेना आदन कुछ नहीं मेना
पीता मेना आदन कनता है जीसे तुम लोग कहते हो की
५५ हमाना इसन हैं। तुमहों ने उसे नहीं जाना पनंतु मैं उसे
जानता ढुं ग्रौन ग्रदी मैं कढ़ुं की मैं उसे नहीं जानता तो
तुमहाने समान मैं झुठा होउंगा पनंतु मैं उसे जानता ढुं ग्रौन
५६ उसका व्रयन पालन कनता ढुं। तुमहाना पीता इव्रनाहीम
मेना समय देख्यने को तनसता था सो वुह देख्य के आनंदीत
५७ ढुआ। ग्रहुदीग्रों ने उसे कहा की तेना व्रय अव्र लों पयास
५८ व्रनस का नहीं ग्रौन तु ने इव्रनाहीम को देख्या?। ग्रसु ने
उनहें कहा की मैं तुमहें सत सत कहता ढुं की इव्रनाहीम
५९ के होने से आगे मैं ढुं। तव्र उनहों ने उसे मानने को
पथन उठाये पनंतु ग्रसु ने आप को छीपा लीग्रा ग्रौन मंदीन
से व्राहन नीकल के उनके मघ में होके यला गया।

९ नवा पनव्र।

पनभु का ऐक अंधे को आंख्य देना १—७ इसकी
यनया लोगों में होना ८—१२ उदास होके फनीसी
का उसे मंडली से व्राहन कनना १३—३४ मसीह
का उसे मीलना ग्रौन फनीसीग्रों को उनकी दसा
व्रताना ३५—४१।

१ ग्रौन जाते जाते उसने ऐक मनुष्य को देख्या जो जनम का
२ अंधा था। ग्रौन उसके सीख्यों ने ग्रह कहके उसे पुछा की

"हे गुरु कीसने पाप कीया इस मनुष्य ने अथवा इसके माता
३ पीता ने की यह अंधा उतपंन ऊआ?"। यसु ने उतर दीया,
न तो इस मनुष्य ने पाप कीया न इसके माता पीता ने परंतु
४ जीसतें इसन के कानज उसपन पनगट होवें। जीसने मुझे
भेजा है, अवस है की जब लों दीन है मैं उसके कानज करुं
५ नात आती है जब कोइ कानज नहीं कन सकता। जब लों
६ मैं जगत में ऊं जगत का उंजीयाला ऊं। यूं कहके उसने
भुमी पन थुका औन थुक से मीटी गुंधी औन उस मीटी से उस
७ अंधे की आंप्पों पन लगाइ। औन उसे कहा की जा सीलोआम
में अनथात भेजे ऊये कुंड में सनान कन वुह गया औन सनान
कीया औन देप्पते ऊये आया।
८ तब जीनहों ने उसे आगे अंधा देप्पा था वे औन परोसी बोले
९ की यह वुह नहीं जो बैठा भीप्प मांगता था?। कीतने बोले
की यह वही है औनों ने कहा की यह वैसाही है उसने कहा
१० की मैं वही ऊं। परेन उनहों ने उसे कहा की तेनी आंप्पें
११ कयोंकन प्पुल गइं?। उसने उतन देके कहा की ऐक मनुष्य
ने जो यसु कहावता है मीटी गुंधी औन मेनी आंप्पों पन
लगाइ औन मुझे कहा की सीलोआम के कुंड में जा औन
सनान कन औन मैं ने जाके सनान कीया औन दीनीसट पाइ।
१२ उनहों ने उसे कहा की वुह कहां है? उसने कहा की मैं
नहीं जानता।
१३ जो आगे अंधा था लोग उसे फरीसीयों के पास लाये।
१४ औन जब यसु ने मीटी गुंध के उसकी आंप्पें प्पोलीं तब
१५ बीसनाम था। फरीसीयों ने भी परेन उसे पुछा की तु ने
कयोंकन अपनी दीनीसट पाइ उसने उनहें कहा की उसने
मेनी आंप्पों पन गीली मीटी लगाइ औन मैं ने नहाया औन
१६ देप्पता ऊं। तब फरीसीयों में से कीतनें ने कहा की यह
मनुष्य इसन की औन से नहीं कयोंकी वुह बीसनाम को नहीं

मानता औरों ने कहा की पापी मनुष्य ऐसे आश्चर्ज कैसे
१७ कर सकता है? और उनमें व्रीभाग ऊआ। उनहें ने उस
अंधे मनुष्य को फेर कहा तुझे दीनीसट देने के लीये तु उसके
व्रीष्यय में कया कहता है? उसने कहा की वुह भवीसदवक्ता
१८ है। परंतु जव लों यहूदीयों ने उस मनुष्य के माता पीता
को, जीसने दीनीसट पाई थी न वुलाया उनहें ने परतीत
१९ न की वुह अंधा था। और उनहें पुछा की कया यह तुमहारा
व्रेटा है जीसे तुम कहते हो की अंधा उतपंन ऊआ था फेर
२० वुह अव कयोंकर देष्पता है?। उसके माता पीता ने उनहें
उतर देके कहा की हम जानते हैं की यह हमारा व्रेटा है
२१ और की वुह अंधा उतपंन ऊआ था। परंतु वुह अव कीस
कारन से देष्पता है हम नहीं जानते अथवा उसकी आंष्पें
कीसने ष्पोलीं हम नहीं जानते वुह सयाना है उसे पुछो वुह
२२ अपनी आप कहेगा। उसके माता पीता ने यहूदीयों के डरके
मारे कहा कयोंकी यहूदीयों ने ठहरा रष्पा था की यदी
कोई मान लेवे की वुह मसीह है तो मंडली से व्राहर नीकाला
२३ जाय। इस लीये उसके माता पीता ने कहा की वुह सयाना है
२४ उसी से पुछो। तव उनहें ने उस मनुष्य को, जो अंधा था
फेर वुलाके कहा की ईसर की सतुत कर हम जानते हैं की
२५ यह मनुष्य पापी है। उसने उतर देके कहा की यदी वुह
पापी होय मैं नहीं जानता एक व्रात मैं जानता ऊं की मैं
२६ आगे अंधा था अव देष्पता ऊं। तव उनहें ने उसे फेर
पुछा की उसने तुझे कया कीया? उसने कीस रीत से तेरी
२७ आंष्पें ष्पोलीं?। उसने उनहें उतर दीया की मैं तो तुम से
अभी कह चुका और तुमने न सुना कीस लीये फेर सुना
२८ चाहते हो? कया तुम लोग भी उसके सीष्प होओगे?। तव
वे उसे दुरवचन कहके व्रोले की तु उसका सीष्प है हम मुसा
२९ के सीष्प हैं। हम जानते हैं की ईसर ने मुसा से व्रातकी

३० फन हम नहीं जानते की यह कहां का है। उस मनुष्य ने
उतर देके उनहें कहा की उसने मेनी आंष्पें ष्पोलीं है चौर तुम
लोग नहीं जानते की वुह कहां से है यह आशचरज की बात
३१ है। हम तो जानते हैं की इसवर पापीयों की नहीं सुनता
परंतु यदी कोइ इसवर का भकत होय चौर उसकी इछा पर
३२ चलता होय तो वुह उसकी सुनता है। जगत के चारंभ से
कभी सुने में न आया था की कीसी ने ऐक की आंष्पें जो
३३ अंधा उतपंन ज़ुआ ष्पोलीं हो। जो यह मनुष्य इसवर की
३४ चोर से न होता तो कुछ न कर सकता। उनहों ने उतर
देके उसे कहा की तु तो सरवथा पाप में उतपंन ज़ुआ चौर
३५ तु हमें सीष्पाता है चौर उनहों ने उसे बाहर कीया। यसु
ने सुना की उनहों ने उसे बाहर नीकाल दीया तब उसने
उसे पाके कहा की तु इसवर के पुतर पर बीसवास रष्पता
३६ है?। उसने उतर देके कहा की हे परभु वुह कौन है
३७ जीसतें मैं उस पर बीसवास लाचों?। यसु ने उसे कहा की
तु ने उसे देष्पा है चौर जो तुझ से बोलता है वही है।
३८ उसने कहा की हे परभु मैं बीसवास लाता ज़ं चौर उसने
उसे दंडवत की।

३९ तब यसु ने कहा की मैं नयाय के लीये जगत में आया ज़ं
की जो नहीं देष्पते हैं सो देष्पें चौर जो देष्पते हैं सो चंधे
४० होवें। फरीसीयों में से कीतनों ने ये बातें सुनके उसे कहा
४१ की हम भी अंधे हैं?। यसु ने उनहें कहा की जो तुम चंधे
होते तो तुम में पाप न होता परंतु तुम लोग कहते हो की हम
देष्पते हैं, इस लीये तुमहारा पाप रहता है।

१० दसवां परब।

मसीह का आप को गड़रीये का दीसटांत देना।
१—१८ उसके बीषय में यज़दी का बीभाग होना

ग्रैान अपना इसनत व्रताना १९—१८ ग्रऊदीय़ों
के व्रन से मसीह का अनादन पान जाना ३९—४२।

१ मैं तुमहें सत सत कहता ऊं की जो दुवान से भेड़साला में
नहीं जाता पनंतु दुसनी ग्रोन से यढ़ जाता है सो योन ग्रोन
२ व्रटमान है। पनंतु जो दुवान से भीतन जाता है सो भेड़ों का
३ यनवाहा है। दुवानपाल उसके लीय़े प्पोलता है ग्रैान भेड़ें
उसका सव्रद सुनती हैं ग्रोन वुह अपनीही भेड़ों को नाम ले ले
४ व्रुलाता है ग्रैान उनहें व्राहन ले जाता है। ग्रोन वुह अपनी
भेड़ों को व्राहन ले जाके उनके ग्रागे ग्रागे यलता है ग्रोन
भेड़ें उसके पीछे पीछे जाती हैं कय़ोंकी वे उसका सव्रद पहीया-
५ नती हैं। ग्रैान वे उपनी के पीछे नहीं जातीं पनंतु उस से भाग-
६ ती हैं कय़ोंकी वे उपनी का सव्रद नहीं पहीयानतीं। य़सु ने
य़ह दीनीसटांत उनहें कहा पनंतु उनहों ने उसका कहना न
७ समहा तव्र य़सु ने फेन उनहें कहा, मैं तुमहें सत सत कहता
८ ऊं की भेड़ों का दुवान मैं ऊं। जीतने मुह से ग्रागे ग्राय़े
सव्र योन ग्रैान व्रटमान हैं पनंतु भेड़ों ने उनकी न सुनी।
९ दुवान मैं ऊं य़दी कोइ मेनी ग्रोन से भीतन जाय़ वुह मुकत
पावेगा ग्रैान व्राहन भीतन ग्राय़ा जाय़ा कनेगा ग्रैान यनाइ
१० पावेगा। योन केवल योनी ग्रैान घात ग्रोन नास कनने को
ग्राता है मैं ग्राय़ा ऊं जीसतें वे जीवन पावें ग्रैान उसे ग्रघीकाइ
११ से पावें। ग्रछा यनवाहा मैं ऊं ग्रछा यनवाहा भेड़ों के लीय़े
१२ अपना पनान देता है। पनंतु जो व्रनीहान है ग्रोन यनवाहा
नहीं भेड़ें जीसकी ग्रपनी नहीं हैं सो ऊंडान को ग्राते देप्पता
है ग्रैान भेड़ों को छोड़ भागता है ग्रैान ऊंड़ान उनहें पकड़ता
१३ है ग्रैान भेड़ों को छींन भींन कनता है। व्रनीहान इस लीय़े
भागता है की वुह व्रनीहान है ग्रैान भेड़ों के लीय़े यीनता
१४ नहीं कनता। ग्रछा यनवाहा मैं ऊं ग्रैान ग्रपनी को पहीयानता

१५ ऊं और मेरी मुझे पहीयानती हैं। जैसा पीता मुझे
जानता है तैसाही मैं पीता को जानता ऊं और मैं भेड़ों के
१६ लीये अपना पनान देता ऊं। मेरी और भी भेड़ें हैं जो
इस झुंड की नहीं अवेस है की मैं उनहें भी लाउं और वे
मेरा सब्द सुनेंगी और ऐक झुंड और ऐक यनवाहा होगा।
१७ पीता मुझे इस लीये पीआर करता है की मैं अपना पनान
१८ देता ऊं जीसतें मैं उसे फेर लेउं। कोइ उसे मुझ से नहीं
लेता पनंतु मैं आप से उसे देता ऊं मुझ में उसे देने की सामनथ
है और उसे फेर लेने की भी सामनथ है यही आगया मैं ने
१९ अपने पीता से पाइ हैं। तब यऊदीयों में इन बातों के कारन
२० फेर बीभाग ऊआ। और बऊतों ने उन में से कहा की उस
में भुत है और बौड़हा है तुम उसकी कयों सुनते हो?।
२१ औरों ने कहा की जीस में भुत है उसकी ये बातें नहीं हैं कया
२२ भुत अंधे की आंखें खोल सकता है?। और यरोसलीम में
२३ सथापीत परब ऊआ और जाड़े का समय था। और यसु
२४ मंदीर में सुलेमान के ओसारे में फीरता था। उस समय
यऊदीयों ने उसे आ घेरा और कहा की तु कब लों हमारे
मन को अधर में रखेगा यदी तु मसीह है तो हमें खोल के
२५ कह। यसु ने उनहें उतर दीया की मैं ने तो तुमहें कहा
और तुम ने बीसवास न कीया जो कारज मैं अपने पीता
२६ के नाम से करता ऊं सो मुझ पर साखी देते हैं। पनंतु तुम
लोग बीसवास नहीं लाते कयोंकी जैसा मैं ने तुमहें कहा, तुम
२७ लोग मेरी भेड़ों में से नहीं। मेरी भेड़ें मेरा सब्द सुनती
हैं और मैं उनहें जानता ऊं और वे मेरे पीछे पीछे आती हैं।
२८ और मैं उनहें अनंत जीवन देता ऊं और वे कभी नास न
२९ होंगी और कोइ उनहें मेरे हाथ से छीन न सकेगा। मेरा
पीता जीसने उनहें मुझे दीया है सब से बड़ा है और कोइ
३० उनहें मेरे पीता के हाथों से छीन नहीं सकता। मैं और

३१ पीता प्रेक हैं। तव्र य़ग्रदीय़ों ने उसे पथनवाने के लीय़े फरेन
३२ पथन उठाप्रे। य़स ने उनहें उतन दीय़ा की मैं ने ग्रपने पीता
के ग्रनेक ग्रछे कानज तुमहें दीप्पाय़े हैं उन में से कौन से
३३ कानज के लीय़े मुहे पथनवाते हो ?। य़ऊदीय़ों ने उसे उतन
देके कहा की हम तुहे ग्रछे कानज के लीय़े नहीं पथनवाते हैं
पनंतु पाप्पंडता के लीय़े ग्रैान इस लीय़े की मनुप्प होके तु ग्राप
३४ को इसन ठहनाता है। य़स ने उनहें उतन दीय़ा की तुमहानो
व्रैवसथा में नहीं लीप्पा है की मैं ने कहा की तुम इसन हो ?।
३५ उसने तो जीनके पास इसन का व्रयन ग्राय़ा उनहें इसन कहा
३६ ग्रैान लीप्पा ऊग्रा भंग नहीं हो सकता। तुम लोग उस पन
पाप्पंड लाते हो जीसे इसन ने पवीतन कनके जगत में भेजा
३७ है कय़ोंकी मैं ने कहा की मैं इसन का पुतन ऊं ?। जो मैं
ग्रपने पीता के कानज न कनुं तो मेनी पनतीत मत कनो।
३८ पनंतु जो मैं कनुं तो य़दपी मेनी पनतीत न कनो तथापी
कानजों की पनतीत कनो जीसतें जानो ग्रैान पनतीत कनो की
३९ पीता मुह में ग्रैान मैं उस में ऊं। तव्र उनहों ने फरेन उसे
४० पकड़ने याहा पनंतु वुह उनके हाथों से व्रय नीकला। ग्रैान
ग्रनदन पान उसी सथान में जहां य़हीय़ा पहीले सनान देता
४१ था फरेन गय़ा ग्रैान वहां नहा। व्रऊतेनों ने उस पास ग्राके
कहा की य़हीय़ा ने कोइ ग्रासयनज न दीप्पाय़ा पनंतु सव्र
४२ व्रातें जो य़हीय़ा ने उसके व्रीप्पय़ में कहीं सत हैं। ग्रैान वहां
व्रऊत से उस पन व्रीसवास लाय़े।

११ गय़ानहवां पनव्र।

लाजन का नोग ग्रैान मनना १—१६ यान दीन
पीछे मसीह का उसे जीलाना १७—४४ य़ऊदीय़ों
के व्रन से पनसु का ग्रलग नीकल जाना ४५—५७।

१ ग्रव्र मनीय़म ग्रैान उसकी व्रहीन मनसा के गांव व्रैतप्रेना का

२ कोइ लाज़न नोगी था। (वही मनीय़म जीसने पनभु पन
सुगंध तेल लगाय़ा और अपने व़ालों से उसके पांव को पोंछा
३ उसी का भाइ लाज़न नोगी था)। इस लीय़े उसकी व़हीनों
ने उसे कहला भेजा की हे पनभु देष्पीय़े जीस से आप से पनीत
४ है सो नोगी है। य़सु ने सुनके कहा की य़ह मौनतु का नोग
नहीं पनंतु इसन की महीमा के लीय़े जीसतें उस से इसन के
५ पुतन की महीमा होवे। अव़ मनसा और उसकी व़हीन और
६ लाज़न से य़सु पनीत नष्पता था। य़ह सुनके की वुह नोगी
७ है जहां था तहां य़सु दो दीन नहा। उसके पीछे अपने सीष्पों
८ से कहा की यलो हम पान य़ऊदीय़ः में जाय़ें। सीष्पों ने उसे
कहा की हे गुनु अभी तो य़ऊदीय़ों ने याहा था की आप को
९ पथनवावें और आप वहां फेन जाते हैं?। य़सु ने उतन
दीय़ा कय़ा दीन में व़ानह घड़ी नहीं है? य़दी कोइ मनुष्प
दीन को यले तो ठोकन नहीं ष्पाता कय़ोंकी वुह इस जगत
१० का उंजीय़ाला देष्पता है। पनंतु य़दी कोइ मनुष्प नात को
यले तो ठोकन ष्पाता है कय़ोंकी उस में उंजीय़ाला नहीं।
११ उसने य़े व़ातें कहीं और फेन उसने कहा की हमाना मीतन
१२ लाज़न नींद में है पनंतु मैं उसे जगाने को जाता हूं। तव़ उसके
सीष्पों ने कहा, हे पनभु य़दी वुह नींद में है तो यंगा होा
१३ जाय़गा। य़सु ने तो उसकी मौनतु की कही पनंतु उनहों ने
१४ समझा की उसने नींद के यैन की कही। तव़ य़सु ने उनहें
१५ ष्पोल के कहा की लाज़न मनगय़ा। और वहां न होने से मैं
तुमहाने लीय़े आनंद हूं जीसतें तुम लोग व़ीसवास लाओ तीस
१६ पन भी उसके पास यलें। तव़ सुमा ने, जो डीदीमस कहावता
है अपने गुनु भाइय़ों से कहा की यलो हम भी उसके संग मनें।
१७ सो जव़ य़सु आय़ा तो देष्पा की उसे समाधी में यान दीन होा
१८ युके। अव़ व़ैतऐना य़ीनोसलीम से कोस ऐक के टपे पन था।
१९ और व़हुत से य़ऊदी मनसा और मनीय़म को उनके भाइ के

२० बैथनी में सांत देने आये थे। जब मरथा ने सुना की यसु
आता है तो उसको भेंट को गई परंतु मरीयम घर में बैठी
२१ रही। तब मरथा ने यसु को कहा, हे प्रभु जो आप यहां
२२ होते तो मेरा भाइ न मरता। परंतु मैं जानती हूं की अब
२३ भी जो कुछ आप इसर से चाहेंगे इसर आप को देगा। यसु
२४ ने उसे कहा की तेरा भाइ फेर उठेगा। मरथा ने उसे कहा की
मैं जानती हूं की पुनरुतथान म अंत के दीन वुह फेर उठेगा।
२५ यसु ने उसे कहा की पुनरुथान और जीवन मैं हूं जो मुझ पर
२६ बीसवास रखता है यदपी वुह मरे तथापी जीयेगा। और जो
कोइ जीता है और मुझ पर बीसवास रखता है कभी न मरेगा
२७ तु इसे परतीत करती है?। उसने उसे कहा की हे प्रभु मैं
परतीत करती हूं की आप मसीह इसर के पुतर हैं जीसे जगत
में आना था। यह कहके चली गइ और चुपके से अपनी
बहीन मरीयम को बुला के बोली, गुरुजी आये हैं और तुझे
२९ बुलाते हैं। यह सुनतेही भरसा उठी और उस पास आइ।
३० अबलों यसु बसती में न आया था परंतु उसी सथान में था जहां
३१ मरथा ने उस से भेंट कीइ थी। जब उसके सांतदायक यहूदीयों
ने जो उसके घर में थे देखा की मरीयम झट से उठी और बा-
हर गइ तो यह कहके उसके पीछे पीछे गये की वुह समाध पर
३२ रोने को जाती है। और जहां यसु था मरीयम वहां आइ
और उसे देखतेही उसके चरन पर गीरके बोली, हे प्रभु
३३ जो आप यहां होते तो मेरा भाइ न मरता। जब यसु ने उसे
रोते और यहूदीयों को भी, जो उसके संग आये थे रोते देखा
३४ तो मन में बयाकुल होके हाय कीया। और कहा की तुम ने
उसे कहां धरा है? उनहों ने कहा को हे प्रभु आके देखीये।
३५।३६ यसु रोया। तब यहूदीयों ने कहा की देखो वुह उस से
३७ कैसी परीत रखता था। उन में से कीतनों ने कहा की यह पुरुष
जीसने अंधे की आंखें खोलीं न कर सका की यह मनुष्य भी न

३८ मनता? तव यसु अपने मन में फेन आह कनता ज्ञआ समाध पन
३९ आया वुह एक गुहा थी औन उस पन एक पथन धना था। यसु
ने कहा की पथन को अलग कनो उस मीननक की वहीन
मनसा ने उसे कहा की हे पनभु वुह तो अव वसाता है कयोंकी
४० यह चौथा दीन है। यसु ने उसे कहा कया मैं ने तुहे नहीं
कहा, जो तु वीसवास लावे तो ईसन की महीमा देखेगी?।
४१ तव जहां वुह मीननक पड़ा था वहां से पथन को उनहें ने
सनकाया औन यसु ने आंखें उपन कनके कहा की हे पीता
४२ मैं तेनी सतुत कनता ज्ञ की तु ने मेनी सुनी है। औन मैं ने
जाना की तु मेनी नीत सुनता है पन लोगों के कानन जो आस
पास खड़े हैं मैं ने यह कहा जीसतें वे वीसवास लावें की तु ने
४३ मुहे भेजा है। औन यह कहके वड़े सवद से पुकाना "हे
४४ लाजन वाहन नीकल"। तव जो मना था सो समाध के
वसतन समेत हाथ पांव वंधे ज्ञए वाहन नीकल आया औन
उसका मुंह अंगोछे से लपेटा था यसु ने उनहें कहा की उसे
४५ खोलो औन जाने देओ। तव वज्ञतेने यज्ञदी, जो मनीअम
कने आये थे, औन ये कानज, जो यसु ने कीये थे देखते थे,
४६ उस पन वीसवास लाये। पनंतु उन में से कीतनें ने फनीसी
पास जाके जो जो कुछ यसु ने कीया था उनहें सुनाया।

४७ तव पनधान याजकों औन फनीसीयों ने सभा एकठी की
औन कहा की हम कया कनते हैं? कयोंकी यह मनुष्य वज्ञत
४८ आसयनज दीखावता है। जो हम उसे नहने देवें तो सव
उस पन वीसवास लावेंगे औन नुमी आवेंगे औन हमाने देस
४९ औन कुल को भी लेवेंगे। औन एक उन में से कायफास नाम,
जो उस वनस पनधान याजक था उनहें वोला की तुम लोग
५० कुछ नहीं जानते। औन चीनता नहीं कनते की लोगों की
संती एक मनुष्य का मनना हमाने लीये भला है जीसतें साने
५१ देसी नास न होवें। उसने यह अपनी ओन से न कहा पनंतु

उस बरस परधान याजक होके यह भवीस कहा की यसु उस
५२ देसी के लीये मरेगा। और केवल उस देसी के लीये नहीं
परंतु जीसतें वुह ईसर के बालकों को जो छींन भींन थे ऐकठे
५३ करे। सो उसी दीन से उनहों ने उसे घात करने के लीये
५४ परामरस कीया। इस लीये यसु ने यहूदीयों में परगट में
फीरना छोड़ दीया परंतु वहां से जाके बन के पास अफराईम
५५ नाम ऐक नगर में अपने सीष्यों के संग रहने लगा। यहूदीयों
का पार जाना पर्ब नीकट हुआ और बहुतेरे पर्ब के आगे
आप को पवीतर करने को उस देस से यरोसलीम को गये।
५६ और यसु को ढुंढा और मंदीर में खड़े होके आपुस में कहने
५७ लगे की कया समझते हो? वुह पर्ब में न आवेगा?।
परधान याजकों और फरीसीयों ने आगया की थी यदी
कोई जानता हो की वुह कहां है तो बता देवे जीसतें वे उसे
पकड़ लेवें।

१२ बारहवां पर्ब।

मरीयम का मसीह के चरन पर सुगंध लगाना
१—८ याजकों का उसके बधन करने की जुगत
करना ९—११ परभु का यरोसलीम में आना
और अपनी मीरतु का संदेस देना १२—३३
यहूदीयों को उपदेस करना उनका अपने मन को
कठोर करना और कीतनों का संसार के डर के मारे
उसे गरहन न करना ३४—३९ परभु का ईसर की
ओर से होना ४४—५०।

१ पार जाना पर्ब से छः दीन आगे यसु बैतऐना में आया
जहां लाज़र रहता था जो मरा था और जीसे उसने जीलाया
२ था। वहां उनहों ने उसके लीये बीआरी बनाई और मरथा
सेवा करती थी परंतु उसके संग के जेवनहारीयों में लाज़र

३ ऐक था। तव़ मरीय़म ने आध सेर अती मोल का सुगंध
तेल लेके य़सु के चरन पर लगाय़ा और अपने व़ालों से उनहें
४ पोंछा और तेल के सुगंध से घर भर गय़ा। तव़ उसके सीष्यों
में से ऐक य़ऊदा असकरय़ुती समऊन का व़ेटा जो उसे
५ पकड़वाय़ा चाहता था व़ोला। य़ह तेल तीन सै सुकी को
६ कय़ों न व़ेयके कंगालों को दीय़ा गय़ा ?। उसने इस लीय़े
नहीं कहा की कंगालों की चीनता करता था परंतु इस लीय़े
की वुह चोर था और डोंडा रष्पता था और जो कुछ उसमें
७ पड़ता था सो ले जाता था। तव़ य़सु ने कहा की उसे मत छेड़
८ उसने मेरे गाडने के दीन के लीय़े य़ह रष्पा था। कय़ोंकी
तुम लोग कंगालों को अपने संग नीत पाओगे परंतु मुझे नीत
९ न पाओगे। य़ह जानके की वुह वहां है य़ऊदीय़ों की ऐक
व़ड़ी मंडली आइ केवल कुछ य़सु के लीय़े नहीं परंतु जीसतें
वे लाज़र को भी देष्यें जीसे उसने मीरतु से जीलाय़ा था।
१० परंतु परधान य़ाजकों ने परामरस कीय़ा की लाज़र को भी
११ मार डालें। कय़ोंकी उसके कारन से व़ऊत य़ऊदी फीर गय़े
१२ और य़सु पर व़ीसवास लाय़े। दुसरे दीन परव़ में के आय़े
ऊय़े व़ऊत लोग य़ह सुनके की य़सु य़रोसलीम में आता है।
१३ ष्पजूर की डालीय़ां लेके उस से मीलने को नीकले और पुकारा
की होसाना इसराइल के राजा को जो परमेसर के नाम से
१४ आता है धंन। और य़सु ऐक तरुन गदहा पाके उस पर चढ़
१५ व़ैठा जैसा की लीष्पा है। हे सैऊन की पुतरी मत डर, देष्प
१६ तेरा राजा गदहे के व़छेरे पर चढ़ा आता है। उसके सीष्यों
ने आरंभ में ये व़ातें न समुझीं परंतु जव़ य़सु ऐसरय़मान ऊआ
तव़ उनहों ने समरन कीय़ा की ये व़ातें उसके व़ीष्पय़ में लीष्पी
१७ थीं और उनहों ने उस से ऐसा व़वहार कीय़ा। तव़ जो लोग
वहां थें जव़ उसने लाज़र को समाध से व़ाहर व़ुलाय़ा और
१८ जीलाय़ा उनहों ने साष्पी दी। इस कारन भी मंडली उस से

मीलने को नीकली कयोंकी उनहों ने सुना था की उसने यह
१९ आसचरज कीया था। फरीसीयों ने आपुस में कहा की तुम
लोग देखते हो की तुमहों से कुछ नहीं बन पड़ता? देखो
२० संसार उसके पीछे हो चला। और उन में जो पर्ब्ब में सेवा
२१ को आये थे कीतने युनानी थे। वे जलीली बैतसैदा के फीलबुस
पास आये और उसकी बीनती को, की हे महासय हम यसु
२२ को देखने चाहते हैं। फीलबुस ने आके अंदरयास से कहा
२३ और अंदरयास और फीलबुस ने यसु को सुनाया। तब
यसु ने उतर देके कहा की घड़ी आ पहुंची है की मनुष्य का
२४ पुतर महीमा पावे। मैं तुमहें सत सत कहता हुं की जब लों
गेहुं का दाना भुम पर न गीरे और मर न जाय तब लों
अकेला रहता है परंतु जो वुह मरे तो उस से बहुत दाने
२५ होते हैं। जो अपने पराण को पीआर करता है सो उसे खोवेगा
और जो इस जगत में अपने पराण से बैर रखता है सो उसे
२६ अनंत जीवन लों रछा करेगा। यदी कोइ मेरी सेवा करे तो मेरे
पीछे चला आवे और जहां मैं हुं तहां मेरा सेवक भी होगा
यदी कोइ मेरी सेवा करे तो मेरा पीता उसका आदर करेगा।
२७ अब मेरा पराण बयाकुल है और मैं कया करुं? को हे पीता
मुझे इस घड़ी से छुड़ा? परंतु मैं तो इसी लीये इस घड़ी लों
२८ आया हुं। हे पीता अपने नाम की महीमा कर तब हीं आकास
बानी हुइ की मैं ने महीमा की है और फेर महीमा करुंगा।
२९ तब आस पास के लोगों ने यह सुनके कहा की मेघ गरजा,
३० औरों ने कहा की दुत उस से बोला। यसु ने उतर देके कहा
३१ की यह सबद मेरे लीये नहीं परंतु तुमहारे लीये आया। अब
इस जगत का बीचार है अब इस जगत का राजा दुर कीया
३२ जायगा। और जो मैं पीरथीवी पर से उपर उठाया जाउं
३३ तो सबको अपनी ओर खींचुंगा। (उसने यह कहके पता
३४ दीया की आप कौस मीरतु से मरने पर था)। लोगों ने

उतन दीग्रा की हम ने व्रैवसथा में से सुना है की मसीह नीत
नहता है परेन आप कैसे कहते हैं की मनुष्य के पुतन का
उठाय़ा जाना अवेस है? ग्रह मनुष्य का पुतन कैाम है?।
३५ ग्रसु ने उनहें कहा की थोड़ी देन उंजोय़ाला तुमहाने पास है
जव़ लों उंजीय़ाला तुमहाने पास है तव़ लों यलो न हो की
अंघीय़ाना तुम पन आ पड़े कय़ोंकी जो अंघीय़ाने में यलता
३६ है सो नहीं जानता की कीघन जाता है। जव़ लों उंजीय़ाला
तुमहाने पास है तव़ लों उंजीय़ाले पन व्रीसवास कनो जीसतें
उंजीय़ाले के पुतन होओ ग्रसु ने ग्रे व्रातें कहीं अैान जाके
३७ अपने को उनसे छीपाय़ा। पनंतु ग्रद्पी उसने उनके आगे
इतने आसयनज कीय़े तथापी वे उस पन व्रीसवास न लाय़े।
३८ जीसतें असाय़ा भवीसद्व्रकता का कहा ङुआ व्रयन पुना होवे
की हे पनभ़ु हमाने समायान पन कीसने पनतीत की है?
३९ अैान पनमेसन की भुजा कीस पन पनगट ङुइ है?। इस
लीय़े वे व्रीसवास न ला सके कय़ोंकी असाय़ा ने फेन कहा।
४० की उसने उनकी आंप्पें अंघी कीय़ा अैान उनका मन कठोन,
न होवे की आंप्पों से देप्पें अैान मन से समहें अैान फीन जाय़ें
४१ अैान मैं उनहें यंगा कनुं। जव़ असाय़ा ने उसका प्रेसनज
४२ देप्पा तव़ उसने उसके व्रीप्पै में ग्रे व्रातें कहीं। तोसपन भी
पनघानों में भी व्रङुतेने उस पन व्रीसवास लाय़े पनंतु फनीसीय़ों
के डनके माने उनहों ने मान न लीय़ा न हो की मंडली से
४३ नीकाले जाय़ें। कय़ोंकी वे लोगों के आदन इसन के आदन
४४ से अघीक याहते थे। ग्रसु ने पुकान के कहा की जो मुह
पन व्रीसवास लाता है सो मुह पन नहीं पनंतु मेने पनेनक पन
४५ व्रीसवास लाता है। अैान जो मुहे देप्पता है सो मेने पनेनक
४६ को देप्पता है। मैं जगत में उंजीय़ाला हो आय़ा ङुं जीसतें
४७ जो कोइ मुह पन व्रीसवास लावे सो अंघीय़ाने में न नहे। अैान
ग्रदी कोइ मनप्प मेना व्रयन सुने अैान व्रीसवास न कने तो

मैं उसपर दोष नहीं ठहराता क्योंकी मैं जगत को दोषी
ठहराने को नहीं आया परंतु इस लीये की जगत का उद्धार
४८ करूं। जो कोइ मेरी नीन्दा करता है और मेरे व्रचन को
नहीं मानता है एक दोष दायक उसका है जो व्रचन मैं ने
४९ कहा है सोइ अंत के दीन में उसे दोषी ठहरावेगा। क्योंकी
मैं ने तो अपनी ओर से नहीं कहा है परंतु जीस पीता ने मुझे
भेजा है उसने मुझें अगया की है की मुझे क्या कहा और क्या
५० ब्रोला याहीये। और मैं जानता हूं की उसकी अगया अनंत
जीवन है इस लीये जो कुछ मैं कहता हूं सो पीता के कहने
के समान कहता हूं।

१३ तेरहवां पर्व्व।

परमु का सीष्यों का पांव धोना १—१७ अपने पकड़ाउ का संदेस देना १८—३० अपने कसट का और आपुस के प्रेम का उपदेस करना ३१—३५ पतरस का उस से मुकरने का संदेस देना ३६—३८।

१ अब्र पार जाना पर्व्व से आगे यसु ने देख्या की मेरा समय
आ पहुंया है कीं इस जगत को छोड़ के पीता पास जाउं सो
जैसा वुह अपनेही को जो जगत में थे आगे पीआर करता था
२ वैसही उसने अंत लों उस पीआर को नीव्राह दीया। और जब
ब्रीआरी करयुके तो (सैतान ने समउन के ब्रेटे यहूदा असकर
३ युती के मन में डाला की उसे पकड़वावे)। पीता ने सब्र कुछ
मेरे व्रस में कीया और मैं इसर से आया और इसर के पास
४ जाता हूं यसु ने यह व्रात जानके। ब्रीआरी से उठा और
अपने व्रसतर को उतार रख्या और एक अंगोछा लेके अपनी
५ कट ब्रांधी। तब्र वुह एक पातर में जल डाल के सीष्यों के

६ पांव धोने लगा श्रोन कट के उस श्रंगोछे से पोछने लगा। तब्र
वुह समऊन पतनस पास आया जीसने उसे कहा की हे पनभु
७ कया आप मेना पांव धाते हैं?। यसु ने उतन देके उसे कहा
जो मैं कनता ऊं सो तु अब्र नहीं जानता पनंतु आगे का जानेगा।
८ पतनस ने उसे कहा की आप मेना पांव कधी न धाइयेगा यसु
ने उसे उतन दीया की जो मैं तुहे न धाेउं ता मेने संग तेना
९ भाग न हाेगा। समऊन पतनस ने उसे कहा की हे पनभु
१० केवल मेने पांव नहीं पनंतु हाथ श्रोन सीन भी। यसु ने उसे
कहा की जो धाेया गया है पांव धोने से अधीक उसे आवसक
नहीं पनंतु नीनधान पवीतन है श्रोन तुम लाेग पवीतन हो
११ पनंतु सब्र नहीं। कयोंकी वुह जानता था की कौन उसे
पकड़वावेगा इसी लीये उसने कहा की तुम सब्र पवीतन नहीं हो।
१२ सो जब्र वुह उनके पांव धोयुका श्रोन अपने ब्रसतन को लीया
पनन ब्रैठ के उनहें कहा की तुम लोग जानते हो मैं ने तुम से
१३ कया कीया?। तुम लोग मुहे गुनु श्रोन पनभु कहते हो श्रोन
१४ ठीक कहते हो कयोंकी मैं ऊं। सो पनभु श्रोन गुनु हाेके यदी
मैं ने तुमहाने पांव धोये हैं ता तुमहें भी एक दुसने का पांव
१५ धोने को उयीत है। कयोंकी मैं ने तुमहें एक दीनोसटांत
दीया है की जैसा मैं ने तुम से कीया है तैसा तुम भी कनो।
१६ मैं तुमहों से सत सत कहता ऊं की सेवक अपने सामी से ब्रड़ा
१७ नहीं श्रोन पनेनीत अपने पनेनक से ब्रड़ा नहीं है। यदी ये
ब्रातें जानते हो श्रोन उनहें पालन कनते हो ता धंन हो।
१८ मैं तुम सभों के ब्रीषय में नहीं कहता, मैं जानता ऊं जीनहें
मैं ने युना है पनंतु जीसतें लीषा ऊआ पुना होवे की जो मेने
१९ संग भोजन कनता है उसने मुहे पन लात उठाया है। अब्र मैं
तुमहें आगे से कहताऊं की जब्र यह पुना हो जाय तुम पनतीत
२० कनो की मैं ऊं। मैं तुमहें सत सत कहता ऊं की जो मेने
पनेनीत को गनहन कनता है सो मुहे गनहन कनता है श्रोन

जो मुझे गरहन करता है सो मेरे परेरक को गरहन करता है
२१ यूं कहके यसु मन में ब्याकुल हुआ और साक्षी देके बोला,
मैं तुम्हें सत सत कहता हूं की तुम में से एक मुझे पकड़वावेगा।
२२ तब सीष्यों ने एक दुसरे को देख देख सन्देह कीया की उसने
२३ कीसके बीषय में कहा। अब उसके सीष्यों में से एक जो यसु
२४ की छाती पर ओठंगा था जो यसु का पीरीय था। इस लीये
समउन पतरस ने उसे पुछने को सैन कीया की उसने कीसके
२५ बीषय में कहा। तो यसु की छाती पर ओठंगते हुए उसने
२६ उसे कहा की हे परभु वुह कौन है?। यसु ने उतर दीया की
जीसे मैं कौर डुबोर के देता हूं सोइ है और उसने कौर
२७ डुबोर के समउन के बेटे यहूदा असकरयुती को दीया। और
कौर के पीछे सैतान उस में पैठा तब यसु ने उसे कहा की जो
२८ कुछ तु करता है झट से कर। और भोजन पर कीसी ने न
२९ जाना की उसने कया समझ के उसे यह कहा। कयोंकी कीत
नों ने समझा की डोंड़ा रखने के कारन यसु ने यहूदा से कहा
की जो हमें परब के लीये आवसक है सो मोल ले अथवा की
३० तु कंगालों को कुछ दे। तब कौर पाके वुह तुरंत बाहर गया
३१ और रात थी। जब वुह चला गया यसु ने कहा की अब
मनुष्य के पुतर ने महीमा पाइ और उस से इसर ने महीमा
३२ पाइ। यदी इसर उस से महीमा पावे तो इसर उसे भी अपने
३३ से महीमा देगा और उसे सीघर महीमा देगा। हे बालको
अब थोड़े लों मैं तुम्हारे संग हूं तुम लोग मुझे ढुंढोगे और
जैसा मैं ने यहूदीयों से कहा की जीधर मैं जाता हूं तुम आ
३४ नहीं सकते वैसा अब मैं तुम्हें भी कहता हूं। मैं तुम्हें एक
नइ आगया देता हूं की तुम एक दुसरे से पीरीत करो जैसा मैं
ने तुम से पीरीत की वैसा तुम भी एक दुसरे से पीरीत करो।
३५ यदी तुम लोग आपुस में पीरीत रखो तो इस से सब जानेंगे की
तुम मेरे सीष्य हो

३६ समउन पतनस ने उसे कहा हे पनभु आप कीघन जाते हैं?
य़सु ने उसे उतन दीय़ा जीघन मैं जाता ऊं तू अव़ मेने पीछे
३७ आ नहीं सकता पनंतु आगे का मेने पीछे आवेगा। पतनस ने
उसे कहा की हे पनभु मैं आप के पीछे अव़ कय़ों नहीं आ
३८ सकता? मैं आप के लीय़े अपना पनान देउंगा। य़सु ने
उसे उतन दीय़ा, कय़ा तु मेने लीय़े अपना पनान देगा? मैं
तुझ से सच सच कहता ऊं की कुकुट न व़ोलेगा जव़ लों तु तीन
व़ान मुझ से न मुकने।

१४ चौदहवां पनव़।

पनभु का अपने सीष्यों को सांत का उपदेस कनना
१—१४ घनमातमा देने की व़ाचा देना १५—२६
पनभु का सीष्यों को आगे से चीताना २७—३१।

१ तुमहाना मन व़य़ाकुल न होने पावे तुम लोग ईसन पन
२ व़ीसवास नष्पते हो मुझ पन भी व़ीसवास नष्पो। मेने पीता
के घन में व़ऊत से नीवास हैं नहीं ता मैं तुमहें कहता की मैं
३ जाता ऊं जीसतें तुमहाने लीय़े सथान ठीक कनुं। और जो
मैं जाके तुमहाने लीय़े सथान ठीक कनुं ता फेन आउंगा
और तुमहें अपने पास लेउंगा जीसतें जहां मैं ऊं तहां तुम
४ भी होओ। और जहां मैं जाता ऊं तुम लोग जानते हो
५ और मानग भी जानते हो। सुमा ने उसे कहा की हे पनभु
हम नहीं जानते की आप कीघन जाते हैं और हम मानग
६ को कय़ोंकन जानें?। य़सु ने उसे कहा, मानग और सत
और जीवन मैं ऊं मुझे छोड़ के पीता पास कोइ नहीं आ सकता।
७ जो तुम लोग मुझे जानते तो मेने पीता को भी जानते और
८ अव़ से उसे जानते हो और उसे देष्पा है। फैलव़ुस ने उसे
कहा हे पनभु पीता को हमें दीष्पाइय़े जीसतें हमाना व़ाच

९ होते। ग्रसु ने उसे कहा हे फीलबुस क्या इतने दीन से मैं
तुमहारे संग हूं और तु ने अबलों मुझे न जाना? जीसने मुझे
देष्पा है उसने पीता को देष्पा है और तु कयोंकर कहता है
१० की पीता को हमें दीष्पा?। कया तुझे परतीत नहीं की मैं
पीता में और पीता मुझ में? ये बातें जो मैं तुमहें कहता हूं
मैं आप से नहीं कहता परंतु पीता जो मुझ में रहता है वही
११ ये कारज करता है। परतीत करो की मैं पीता में और
पीता मुझ में अथवा कारजों के लीये मेरी परतीत करो।
१२ मैं तुमहें सत सत कहता हूं की जो मुझ पर बीसवास रष्पता है
जो कारज मैं करता हूं सो भी करेगा और उन से बड़ा करेगा
१३ कयोंकी मैं अपने पीता पास जाता हूं। और जो कुछ तुम
लोग मेरे नाम से मांगोगे मैं वही करुंगा जीसतें पीता पुतर
१४ में महीमा पावे। यदी मेरे नाम से कुछ मांगोगे तो मैं करुंगा।
१५ जो मुझ में परीत रष्पते हो तो मेरी अगया को पालन करो।
१६ और मैं अपने पीता से परारथना करुंगा और वुह तुमहें
१७ दुसरा सांत दायक देगा जो सदा तुमहारे संग रहेगा। अरथात
सच्याइ का आतमा जीसे जगत गरहन नहीं कर सकता कयोंकी
उसे नहीं देष्पता और न उसे जानता है परंतु तुम लोग उसे
जानते हो कयोंकी वुह तुमहारे संग रहता है और तुमहों
१८ में होवेगा। मैं तुमहें अनाथ न छोडुंगा मैं तुमहारे पास
१९ आउंगा। अब थोड़े लों जगत मुझे फेर न देष्पेगा परंतु
तुम लोग मुझे देष्पते हो और इस लीये की मैं जीता हूं तुम
२० भी जीओगे। उस दीन तुम लोग जानोगे की मैं पीता में और
२१ तुम लोग मुझ में और मैं तुमहों में हूं। जो मेरी अगया
रष्पता है और उनहें पालन करता है सोइ मुझ से परीत
रष्पता है और जो मुझ से परीत रष्पता है सो मेरे पीता का
पीरय होगा और मैं उस से परीत रष्पुंगा और आप
२२ को उस पर परगट करुंगा। असकरयुती को छोड़ दुसरे

यहूदा ने उसे कहा की हे परभु यह कैसा है की आप अपने
२३ को हम पर परगट करेंगे और जगत पर नहीं ?। यसु ने
उतर देके उसे कहा यदी कोइ मुझ से परीत रष्षेगा तो मेरे
वचन को पालेगा और मेरा पीता उस से परीत रष्षेगा और
२४ हम उस पास आवेंगे और उसके संग वास करेंगे। जो मुझ से
परीत नहीं रष्पता सो मेरे वचन को पालन नहीं करता
और जो वचन तुम लोग सुनते हो सो मेरा नहीं परंतु पीता
२५ का जीसने मुझे भेजा। तुमहारे संग होते ऊए मैं ने ये बातें
२६ तुम से कहीं। परंतु सांत दायक धरमातमा जीसे पीता मेरे
नाम से भेजेगा वुह तुमहें सब बातें सीष्षावेगा और सब बात
२७ जो कुछ मैं ने तमहें कहीं हैं तुमहें समरन करावेगा। कुसल
तुमहें छोड़ जाता ऊं अपना कुसल मैं तुमहें देता ऊं जगत के
देने के समान मैं तुमहें नहीं देता ऊ अपने मन को बयाकुल
२८ मत होने देओ और डरने मत देओ। तुम ने सुना है की
मैं ने तुम से कैसा कहा है की मैं जाता ऊं और तुमहारे पास
फेर आउंगा जो तुम लोग मुझ से परीत रष्पते तो इस कारन
आनंदीत होते की मैं ने कहा की पीता पास जाता ऊं कयोंकी
२९ मेरा पीता मुझ से बड़ा है। और अब मैं ने तुमहें उसके होने
३० से आगे कहा जीसतें जब वुह हो यके तुम परतीत करो। आगे
को मैं तुम से बऊत न बोलुंगा कीयोंकी इस संसार का राजा
आता है और मुझ में उसका कुछ नहीं परंतु जीसतें संसार जाने
को मैं पीता से परीत रष्पता ऊं जैसा पीता ने मुझे आगया दी
वैसाही मैं करता ऊं उठो यहां से चलें।

१५ पंदरहवां परब।

मसीह का आप को दाष्प की लता से द्रीसटांत
देना १—७ परेम की अगया करना ८—१७ धरम
आतमा के देने की बाचा करना १८—२७।

१ दाप्प की सची लता मैं ऊं ओन मेना पीता कीसान है।
२ हन प्रेक साप्पा जो मुह में नहीं फरलती वुह उसे अलग कनता
है ओन हन प्रेक जो फरलती है वुह उसे सुच कनता है जीसतें
३ वुह अधीक फरले। अव्र व्रयन के कानन जो मैं ने तुमहें कहा
४ है तुम पवीतन हो। मुह में व्रने नहो ओन मैं तुम में जैसे
साप्पा आप से आप नहीं फरल सकती जव्र लें वुह लता में लगी
न हो वैसा जव्र लें मुह में व्रने न नहो तुम भी नहीं फरल सकते।
५ दाप्प की लता मैं ऊं तुम लेग साप्पा हो जो मुह में व्रना नहता
है ओन मैं उस में सो व्रऊत फरलता है कयोंकी मुह से अलग
६ तुम कुछ नहीं कन सकते। यदी मनुप्प मुह में व्रना न नहे
तो वुह हुनाइ ऊइ साप्पा की नाइं फेंका गया है ओन लेग
७ उनहें समेट के आग में झेंकते हैं ओन वे जलती हैं। यदी
तुम लेग मुह में व्रने नहो ओन मेने व्रयन तुम में तो जो
८ याहोगे सो मांगोगे ओन तुमहाने लीये हो जायगा। तुमहाने
व्रऊत फरल लाने में मेने पीता की महीमा है ओन तुम मेने सीप्प
९ होओगे। जैसी पीता ने मुह से पनीत की है वैसी मैं ने तुमहें
१० से पनीत की है तुम मेनी पनीत में व्रने नहो। यदी तुम मेनी
अगया को पालन कनोगे तो मेनी पनीत में व्रने नहोगे जैसा
मैं ने अपने पीता की अगया को पालन कीया है ओन उसकी
११ पनीत में व्रना ऊं। मैं ने ये व्रातें तुमहें कहीं जीसतें मेना
आनंद तुम में घना नहे ओन तुमहाना आनंद भन जाय।
१२ मेनी यही अगया है की जैसी पनीत मैं ने तुम से की है तुम
१३ प्रेक दुसने से पनीत कनो। इस से व्रडी पनीत कोइ नहीं नप्पता
१४ की अपना पनान अपने मीतनों के लीये देवे। जो तुम लेग
१५ मेनी अगयाओं को मानो तो मेने मीतन हो। अव्र से मैं
तुमहें सेवक न कऊंगा कयोंकी सामी जो कनता है सो सेवक
नहीं जानता पनंतु मैं ने तुमहें मीतन कहा है कयोंकी सव्र
व्रातें जो मैं ने अपने पीता से सुनी हें सो मैं ने तुम पन पनगट

१६ की है। तुम ने मुझे नहीं युना है परंतु मैं ने तुमहें युना है
और जाके फरल लाने की तुमहें ठहनाया है और तुमहाना
फरल वना नहे की जो कछ तुम लोग मेने नाम से पीता से मांगो
१७ वुह तुमहें देवे। ऐक दुसने से पनीत नप्पने की मैं तुमहें ग्रगया
१८ कनता ज्ञं। यदी संसान तुमहों से वैन कने तो जानते हो
१९ की तुमहों से आगे उसने मुझ से वैन कीया। जो तुम लोग
संसान के होते तो संसान अपनेही से पनीत नप्पता परंतु मैं ने
जो तुमहें संसान से युन लीया है और तुम संसान के नहीं हो
२० इस लीये संसान तुम से वैन नप्पता है। मैने तुमहें जो कहा
उसे येत कनो की सेवक अपने सामी से वड़ा नहीं जो उनहों
ने मुझे सताया तो तुमहें भी सतावेंगे जो उनहों ने मेना वयन
२१ पाला है तो तुमहाना भी पालेंगे। परंतु मेने नाम के लीये
वे तुमहों से यह वेवहान कनेंगे कयोंकी वे मेने पनेनक को नहीं
२२ जानते। जो मैं आके उनसे न कहता तो उनका पाप न होता
२३ परंतु अव उनके पाप का आड़ नहीं। जो मुझ से वैन नप्पता
२४ है सो मेने पीता से भी वैन नप्पता है। जो मैं उन में ऐसे
कानज न कीये होता जो कीसी मनुष्य ने नहीं कीये तो उनका
पाप न होता पन अव तो उनहों ने उनहें देप्पा तथापी मुझ से
२५ और मेने पीता से वैन भी कीया। परंतु जीसतें उनकी वैवसथा
का वयन पुना होवे उनहों ने मुझ से अकानथ वैन कीया।
२६ परंतु जव वुह सांत दायक आवे जीसे मैं तुमहाने पास पीता
की ओन से भेजुंगा अनथात सयाइ का आतमा जो पीता से
२७ नीकलता है तो मुझ पन साप्पी देगा। और तुम लोग भी साप्पी
देओगे कयोंकी आनंभ से मेने संग नहते हो।

१६ सोलहवां पनव।

अपने सीप्पों के सताये जाने का संदेस देना १—६
धनमआतमा देने का वयन कहना ७—१५ अपने

फेर आने का संदेस देना १९—२१ अपने नाम से
प्रार्थना करने की अग्या देना २३—३१।

१। १ मैं ने ये बातें तुम्हें कहीं जीसतें ठोकर न खाओ। वे
तुम्हें मंडलीओं से बाहर करेंगे हां वुह समय आता है की
जो कोइ तुम्हें घात करेगा सो समझेगा की मैं इस्वर की सेवा
३ करता हुं। और इस कारन वे तुम से यह ब्रेवहार करेंगे
४ की उनहों ने न पीता को न मुझे जाना है। और मैं ने ये
बातें तुम्हें कहीं की जब समय आवे तो चेत करो की मैं ने
उनको तुमसे कहीं मैं ने आरंभ में ये बातें तुम्हें न कहीं इस
५ कारन की मैं तुम्हारे संग था। पर अब मैं अपने पठेनक
पास जाता हुं और तुम में कोइ मुझ से नहीं पुछता की तु
६ कहां जाता है। परंतु मेरी इन बातों के कहने के कारन तुम
सोक से भर गये।

७ तौसपर भी मैं तुम्हें सत कहता हुं की मेरा जाना तुम्हारी
भलाइ के लीये है क्योंकी जो मैं न जाउं तो सांत दायक
तुम्हारे पास न आवेगा परंतु जो मैं जाउं तो उसे तुम पास
८ भेजुंगा। और जब वुह आवेगा तो संसार को पाप का और
९ धर्म का और ब्रीचार का ब्रीस्वय जनावेगा। पाप का इस
१० लीये की वे मुझ पर ब्रीसवास न लाये। धर्म का इस लीये
की मैं अपने पीता पास जाता हुं और तुम मुझे फेर न देखोगे।
११ ब्रीचार का इस लीये की इस संसार के राजा का ब्रीचार
१२ कीया गया है। तुम्हें कहने को अब भी मुझ पास बहुतसी
१३ बातें हैं परंतु अब तुम उनहें सह नहीं सकते। पर जब वुह सत
का आतमा आवेगा वुह तुम्हें सारी सचाइ में पहुंचावेगा
क्योंकी वुह अपनी न कहेगा परंतु जो कुछ वुह सुनेगा सो कहेगा
१४ और वुह तुम्हें आगे का भेद बतावेगा। वुह मेरी महीमा
करेगा क्योंकी वुह मेरी में से पावेगा और तुम्हें बतावेगा

१५ पीता का सब कुछ मेना है इस लीये मैं ने कहा की वुह मेनी
१६ में से लेके तुमहें दीप्प वेगा। तनीक ब्रोन तम सुहे न देप्पोगे
ब्रोन फेन तनीक तुम सुहे देप्पोगे कयोंकी मैं पीता पास जाता
१७ ऊं। तब उस के कीतने सीप्पों ने आपुस में कहा की यह कया
है जो वुह हमें कहता है की तनीक ब्रोन तुम सुहे न देप्पोगे
ब्रोन फेन तनीक ब्रोन तुम सुहे देप्पोगे इस कानन की मैं
१८ पीता पास जाता ऊं?। यह कया है जो वुह कहता है की
१९ तनीक ब्रोन हम नहीं जानते वुह कया कहता है?। यह
जानके की उनहों ने उस से पुछने याहा यसु ने उनहें कहा की
मैं ने जो कहा की तनीक ब्रोन तुम सुहे न देप्पोगे ब्रोन फेन
तनीक ब्रोन तम सुहे देप्पोगे उसे आपुस में पुछ पाछ कनते
२० हो। मै तुमहें सत सत कहता ऊं की तुम नोब्रोगे ब्रोन वीलाप
कनोगे पनंतु संसान आनंद कनेगा तुम लोग दुप्पी होब्रोगे
२१ पनंतु तुमहाना दुप्प सुप्प हो जायगा। जब इसतीनी पीडीत
होती है अपना समय पऊंयने के कानन वुह दुप्पी होती है
पनंतु जोंहीं वुह पुतन जनी तो ग्रेक पुनुप्प के उतपंन होने के
२२ आनंद के माने उस पीडा को येत नहीं कनती। सो अब तुम
लोग दुप्पी हो पनंतु मैं तुमहें फेन देप्पुंगा ब्रोन तुमहाना मन
आनंदीत होगा ब्रोन तुमहाना आनंद तुम से कोइ न लेगा।
२३ तुम उस दीन सुहे से कुछ न पुछोगे मैं तुम से सय सय कहता
ऊं की मेने नाम से जो कुछ तुम पीता से मांगोगे वुह तुमहें
२४ देगा। अब लों तुम ने मेने नाम से कुछ नहीं मांगा, मांगो
२५ ब्रोन तुम पाब्रोगे जीसतें तुमहाना आनंद पुना होवे। मैं ने
ये बातें तुमहें दीनीसटांतों में कहीं पनंतु समय आता है अब
मैं तुमहें दीनीसटांतों में फेन न कऊंगा पन मैं पीता के बीप्पय
२६ म तुमहें प्पोल के देप्पाउंगा। उस दीन तुम मेने नाम से मां-
गोगे ब्रोन मैं तुमहें नहीं कहता की मैं तुमहाने कानन पीता से
२७ पनानथना कनुंगा। कयोंकी पीता आपही इस कानन तुमहें

पीआर करता है की तुम ने मुझे पीआर कीया है और वीस-
२८ वास लाये हो की मैं ईसर से नीकला हुं। मैं पीता से नीकल
के जगत में आया हुं फेर जगत को छोड़ के पीता पास जाता
२९ हुं। उस के सीप्यों ने उसे कहा, लो अब आप वीन दीनीसटांत
३० प्योल के कहते हैं। अब हमें नीसयय है की आप सब कुछ
जानते हैं और अधीन नहीं की कोइ आप से पुछे इस से हमें
३१ नीसयय हुआ की आप ईसर से नीकल आये हैं। यसु ने उनहें
३२ उतर दीया, कया तुम लोग अब परतीत करते हो?। देप्यो घड़ी
आती है हां अब पहुंची है की तुम में से हर एक छीन भीन
होके अपना अपना मारग पकड़ेगा और मुझे अकेला छोड़ेगा
३३ तथापी मैं अकेला नहीं कयोंकी पीता मेरे संग है। मैं ने ये
बातें तुमहें कहीं हैं जीसतें मुझ में कुसल पाओ जगत में तुम
लोग दुप्य पाओगे परंतु नीसयींत रहो मैं ने जगत को जीता है।

१७ सतरहवां पर्व।

मसीह का अपने लीये परारथना करना १—५ और
अपने सीप्यों के लीये ६—१० उनकी रछा के और
पवीतर करने के लीये परारथना करना ११—२६।

१ यसु ने यह कथा समापत करके सरग को और अपनी आंप्य
उठा के कहा, हे पीता घड़ी पहुंची है अपने पुतर को महीमा
२ दे जीसतें तेरा पुतर भी तुझे महीमा देवे। जैसा तु ने उसे
सकल परानी पर पराकरम दीया है की वुह उन सभों को
३ जीन्हें तु ने उसे दीया है अनंत जीवन देवे। और अनंत
जीवन यह है की तुझे अकेला सत्य ईसर और यसु मसीह को
४ जीसे तु ने भेजा है जानें। मैं ने पीरथीवी पर तेरी महीमा
की है जो कारज तु ने मुझे करने को दीया है मैं उसे कर चुका
५ हुं। और अब हे पीता तु मुझे अपने संग उस महीमा से महीमा
दे जो जगत के होने से आगे मैं तेरे पास रप्यता था।

६ जीनहें तु ने जगत में से मुझे दीया है मैं ने तेरे नाम को उन
पर परगट कीया है वे तेरे थे और तु ने उनहें मुझे दीया है और
७ उनहों ने तेरे ब्रचन को पालन कीया है। अब्र उनहों ने जाना
है की सब कुछ जो तु ने मुझे दीया है सो तेरी ओर से हैं।
८ कयोंकी जो ब्रातें तु ने मुझे दी हैं मैं ने उनहें दी हैं और उनहों ने
गरहन कीया और नीसचय माना है की मैं तुझ से नीकला और
९ वे ब्रीसवास लाये हैं की तु ने मुझे भेजा। मैं उनके लीये परार-
थना करता हुं मैं संसार के लीये नहीं परंतु उन के लीये जीनहें
तु ने मुझे दीया है परारथना करता हुं कयोंकी वे तेरे हैं।
१० और मेरे सब्र तेरे हैं और तेरे मेरे हैं और मैं ने उन से
११ महीमा पाइ है। मैं जगत में आगे न रहुंगा परंतु ये जगत
में हैं और मैं तेरे पास आता हुं हे पवीतर पीता जीनहें तु ने
मुझे दीया है अपने नाम से उनकी रछा कर जीसतें वे हमारी
१२ नाइं एक होवें। जब्र लों मैं उन के संग जगत में था तेरे नाम
से मैं उनकी रछा करता था जीनहें तु ने मुझे दीया मैं ने
उनकी रछा की है और उन में से नास के पुतर को छोड़
१३ कोइ नसट न हुआ जीसतें लीप्पा हुआ पुरा होवे। परंतु
अब्र मैं तेरे पास आता हुं और ये ब्रातें जगत में कहता हुं
१४ जीसतें मेरा आनंद उन में पुरा होवे। मैं ने तेरा ब्रचन
उनहें दीया है और जगत ने उनसे ब्रैर कीया है कयोंकी वे
१५ जगत के नहीं हैं जैसा मैं जगत का नहीं हुं। मैं उनहें जगत
से उठा लेने के लीये परारथना नहीं करता परंतु उनहें दुसट
१६ से ब्रचा रखने को। जैसा मैं जगत का नहीं तैसा वे जगत के
१७ नहीं। उनहें अपनी सचाइ से पवीतर कर तेरा ब्रचन
१८ सचाइ है। जैसा तु ने मुझे जगत में भेजा है तैसा मैं ने भी
१९ उनहें जगत में भेजा है। उनके लीये मैं आप को पवीतर
२० करता हुं जीसतें वे भी सचाइ से पवीतर हों। केवल उनके
लीये मैं परारथना नहीं करता परंतु उनहों के लीये भी जो

२१ उनके उपदेस से मुझ पर बीसवास लावेंगे। जीसतें वे सब्ब ऐक
होवें जैसा की हे पीता तु मुझ में और मैं तुझ में वे भी हम में
ऐक होवें जीसतें संसार बीसवास लावे की तु ने मुझे भेजा है।
२२ और वुह महीमा जो तु ने मुझे दी है मैं ने उनहें दी है की
२३ जैसा हम ऐक हैं तैसा वे ऐक होवें। मैं उन में और तु मुझ
में की वे ऐक में सीध होवें और जीसतें संसार जाने की तु ने
मुझे भेजा है और जैसा तु ने मुझे पीआर कीया है तैसा उनहें
२४ भी पीआर कीया है। हे पीता मैं चाहता हुं की जीनहें तु
ने मुझे दीया है जहां मैं हुं वे भी मेरे संग होवें जीसतें वे मेरी
महीमा को, जो तु ने मुझे दी है देष्पें कयोंकी तु ने मुझ पर
२५ जगत की उतपती से आगे पर्रेम कीया है। हे धारमीक पीता
संसार ने तुझे नहीं जाना है परंतु मैं ने तझे जाना है और
२६ इनहों ने जाना है की तु ने मुझे भेजा है। और मैं ने तेरा
नाम उन पर परगट कीया है और परगट करुंगा की जीस
पर्रेम से तु ने मुझ पर पर्रेम कीया है वुह पर्रेम उन में हो
और मैं उन में।

१८ अठारहवां पर्ब्व।

मसीह का पकड़वाया जाना १—१२ परधान याजक
के आगे उसकी दुरदसा होनी और पतरस का
उस से मुकरना १३—१७ पीलातुस के आगे उस
पर दोष्प लगाया जाना २८—३७ यहुदीयों का
बरब्बास बचौक और बटमार को परभु से अधीक
चाहना ३८—४०।

यसु ये बातें कहके अपने सीष्पों के संग कदरुन नाले पार
गया जहां ऐक बारी थी जीस में वुह और उसके सीष्प गये।
और उसका छलदायक यहुदा भी वुह सथान जानता था
कयोंकी यसु बारंबार अपने सीष्पों के संग यहां जाया करता

३ था। तब परधान याजकों और फरीसीयों से एक जथा
और पीयादे पलीता और दीपक और हथीयार सहीत लेके
४ यहूदा वहां आया। पर यसु ने सब कुछ, जो उस पर बीतना
था जान के बाहर नीकल के उनहें कहा की तुम लोग कीसे
५ ढुंढते हो?। उनहों ने उतर दीया की यसु नासरी को यसु
ने उनहें कहा की मैं हुं उस समय उसका छलदायक यहूदा
६ भी उनके संग खड़ा था। जयोंही उसने उनहें कहा की मैं
७ हुं वे पीछे हट के भुम पर गर पड़े। तब उसने उनसे फेर
पुछा की तुम लोग कीसे ढुंढते हो वे बोले की यसु नासरी को।
८ यसु ने उतर दीया की मैं ने तो तुमहें कहा की मैं हुं सो यदी
९ तुम लोग मुझे ढुंढते हो तो इनहें जाने देओ। जीसतें उसका
कहा हुआ बचन पुरा होवे की जीनहें तु ने मुझे दीया है
मैं ने उन में से एक को न खोया।
१० तब समउन पतरस ने अपना खड़ग खींचा और परधान
याजक के सेवक पर चलाया और उसका दहीना कान उड़ा
११ दीया उस सेवक का नाम मलकुस था। तब यसु ने पतरस से
कहा की अपना खड़ग काठी में कर जो कटोरा मेरे पीता ने
१२ मुझे दीया है कया मैं उसे न पीउं?। तब जथा और सेना
पती और यहूदीयों के पीयादों ने यसु को पकड़ के बांधा।
१३ और उसे पहीले अंनास पास लेगये कयोंकी वुह कयाफा का
१४ ससुर था जो उस बरस परधान याजक था। यह वही कयाफा
था जीसने यहूदीयों को मंतर दीया की लोगों के लीये एक
१५ मनुष्य का मरना आवसक है। तब समउन पतरस दुसरे
सीष्य के संग होके यसु के पीछे हो लीया वुह सीष्य परधान
याजक का जाना हुआ था और यसु के साथ परधान याजक
१६ के आंगन में गया। परंतु पतरस दुवार पर बाहर खड़ा रहा
तब वुह दुसरा सीष्य, जो परधान याजक का जाना हुआ था,
बाहर गया और दुवार पाली को कहके पतरस को भीतर

१७ लाय़ा। तव्र दुवान पाली दासी ने पतनस को कहा "तु भी
इस मनुप्य के सीप्पों में से नहीं?" वुह व्रोला की मैं नहीं ऊं।
१८ अव्र सेवक ग्रैान पीआदे कोइलों की आग सलगा के जाड़े के
माने प्पड़े ऊप्ऐ तापते थे ग्रैान पतनस उनके संग प्पड़ा ताप नहा
१९ था। तव्र पनधान य़ाजक ने य़सु से उसके सीप्पों के ग्रैान
२० उसकी सीप्पा के व्रीप्पय़ में पुछा। य़सु ने उसे उतन दीय़ा
की मैं ने संसान को प्पोल के कहा मैं ने सदा मंडली में ग्रैान
मंदीन में जहा य़ऊदी नीत ऐकठे होते हैं सीप्पाय़ा ग्रैान गुपत
२१ में मैं ने कुछ न कहा। तु मुझे कय़ों पुछता है? जीनहों ने
मुझ से सुना उनसे पुछ की मैं ने उनहें कय़ा कहा देप्प जो मैं ने
२२ कहा सो वे जानते हैं। जव्र उसने य़ुं कहा तव्र पास के प्पड़े
ऊप्ऐ पीआदों में से ऐक ने य़सु को थपेड़ा मान के कहा की तु
२३ पनधान य़ाजक को ऐसा उतन देता है?। य़सु ने उसे उतन
दीय़ा की जो मैं ने व्रुना कहा तो व्रुनाइ की साप्पी दे पनंतु
२४ जो अछा तो तु मुझे कय़ों मानता है?। ग्रैान अंनास ने उसे
२५ व्रांधा ऊआ कय़ाफ़ा पनधान य़ाजक पास भेजा। तव्र समउन
पतनस प्पड़ा ताप नहा था सो उनहों ने उसे कहा, की "तु
भी उसके सीप्पों में से है"? उसने नाह कनके कहा की मैं नहीं
२६ ऊं। पनधान य़ाजक के सेवकों में से ऐक ने कहा, जीस के
कुटुंव्र का कान पतनस ने काटा था, कय़ा मैं ने तुझे उसके संग
२७ व्रानी में नहीं देप्पा?। तव्र पतनस ने फेन नाह कय़ा ग्रैान
२८ तुनंत ककुट व्रोला। तव्र वे य़सु को कय़ाफ़ा कने से व्रीयान
सथान में लाय़े ग्रैान अव्र व्रीहान ऊआ पनंतु वे आप व्रीयान
सथान में न गय़े जीसतें असुच न हों पनंतु जीसतें ने पान जाना
२९ प्पाय़ें। इस लीय़े पीलातुस उन पास नीकल आय़ा ग्रैान व्रोला
३० की तुम लोग इस मनुप्य पन कय़ा अपव्राद लगाते हो?। उनहों
ने उतन देके कहा की जो य़ह अपनाधी न होता तो हम उसे
३१ आप को न सौंपते। पीलातुस ने उनहें कहा की तुम उसे ले

जाओ और अपनी वैवसथा के समान उसका नयाय करो इस
लीये यहूदीयों ने उसे कहा की हमें उचीत नहीं की कीसी
३२ को घात करें। यूं यसु का कहा हुआ बचन पुरा हुआ की
३३ वुह कीस रीत से मरेगा। तब पीलातुस बीयानसथान में फेर
गया और यसु को बुला के कहा कया "तु यहूदीयों का राजा
३४ है"?। यसु ने उसे उतर दीया की आप यह बात आप से
कहते हैं अथवा औरों ने मेरे वीषय में आप से कहो?।
३५ पीलातुस ने उतर दीया कया मैं यहूदी हुं? तेरेही लोगों ने
और परधान याजकों ने तुझे मेरे पास सौंप दीया तु ने कया
३६ कीया है?। यसु ने उतर दीया की मेरा राज इस जगत का
नहीं है यदी मेरा राज इस जगत का होता तो मेरे सेवक
लड़ते की मैं यहूदीयों को सौंप न जाता पर मेरा राज तो यहां
३७ का नहीं। तब पीलातुस ने उसे कहा की "तु राजा है?"
यसु ने उतर दीया की आपही कहते हैं की मैं राजा हुं मैं
इसी लीये उतपंन हुआ और इसी कारन मैं जगत में आया
की सयाइ पर साप्पी देउ जो कोइ सत से है सो मेरी सुनता
३८ है। पीलातुस ने उसे कहा की सयाइ कया है? और यह
कहके वुह फेर यहूदीयों के पास गया और उनहें बोला की
३९ मैं उस पर कुछ दोष्प नहीं पाता। परनतु तुमहारा एक बैवहार
है की मैं तुमहारे लीये पारजाना परब में एक को छोड़ देउं,
तुम चाहते हो की मैं तुमहारे लीये यहूदीयों के राजा को छोड़
४० देउं?। उन सभों ने फेर चीला के कहा की इस मनुष्प को नहीं
परंतु बरबास को और बरबास बटमान था।

१९ उनीसवां परब।

पीलातुस के आगे परभु का बीयान कीया जाना
चोरों के बीच में कुरुस पर धीया जाना १—१८

मसीह का दोष्प पतन श्रीान उसके व्रसतण का
म्माग होना १९—२४ अपनी माता को ग्रहना को
सोंपना २५—२७ उसे सीनका देना श्रीान उसका
मनना २८—३० उसका पंजन गोदा जाना
३१—३७ समाघ में नय्या जाना ३८—४१।

१।२ तव्र पीलातुस ने य़सु को कोड़ा माना। श्रीान जोघाश्रों ने
काटों का मुकुट गुंथ के उसके सीन पन नप्पा श्रीान उसे व्रैंजनी
३ व्रसतन पहीना के कहा। की य़ऊदीय़ों के नाजा पननाम
४ श्रीान उनहों ने उसे थपेड़े माने। तव्र पीलातस ने फेन व्राहन
जाके उनहें कहा की देप्पो मैं उसे तुमहाने पास व्राहन लाता
ऊं जीसतें तुम जानो की मैं उसका कुछ दोप्प नहीं पाता।
५ तव्र य़सु काटो का मुकुट श्रीान व्रैंजनी व्रसतन पहीने ऊए व्राहन
श्राय़ा श्रीान पीलातुस ने उनहें कहा की इस मनुप्प को देप्पो।
६ जव्र पनघान य़ाजकों श्रीान पीश्रादों ने उसे देप्पा तो चीला के
व्रोले की "कुनुस पन मान" कुनस पन मान, पीलातुस ने उनहें
कहा तुम उसे लश्रो श्रीान कुनुस पन मानो कय़ोंकी मैं उस पन
७ कुछ दोप्प नहीं पाता। य़ऊदीय़ों ने उसे उतन दीय़ा की हम
व्रैवसथा नप्पते हैं श्रीान हमानी व्रैवसथा की नात से वुह घात
के जोग है कय़ोंकी उसने श्रपने को इसन का पुतन ठहनाय़ा।
८ जव्र पीलातुस ने य़ह व्रचन सुना वुह श्रघीक डन गय़ा।
९ श्रीान व्रीचान सथान में फेन जाके य़सु से कहा की तु कहां
१० का है? पनंतु य़सु ने उसे कुछ उतन न दीय़ा। तव्र पीलातुस
ने उसे कहा कय़ा तु मुझ से नहीं व्रोलता? तु नहीं जानता
की मैं पनाकनम नप्पता ऊं याऊं तुझे कुनुस पन मानुं याऊं
११ तुझे छोड़ देउं। य़सु ने उतन दीय़ा की य़दी श्राप को उपन
से दीय़ा न जाता तो मुझ पन श्राप का कुछ पनाकनम न होता
सो जीसने श्राप को मुझे सौंप दीय़ा उसका श्रघीक पाप है।

१२ उस समय से पीलातुस ने उसे छोड़ देने याहा पन यहूदीयों
ने यीलाके कहा की जो आप इस मनुष्य को छोड़ें तो आप
कैसन के मीतन नहीं जो अपने को नाजा ठहनाता है सो कैसन
१३ के वीनुघ कहता है। पीलातुस यह बात सुनके यसु को बाहन
लाया औन बीयान के आसन पन उस सथान में जो यबूतना
१४ कहावत है बैठा पनंतु इबनी भाप्पा में गबासा है। औन
अब पान जाना की बनाउनी थी औन छठवीं घड़ी के नीकट
था औन उसने यहूदीयों को कहा की अपने नाजा को देप्पो।
१५ तब वे यीलाये की "लेजा लेजा उसे कुनुस पन मान" पीलातुस
ने कहा की मैं तुमहाने नाजा को कुनुस पन मानु ? पनघान
याजकों ने उतन दीया की कैसन को छोड़ हमाना कोइ नाजा
१६ नहीं। उसने इस लीये उसके तइं कुनुस पन माने जाने को
उनहें सौंप दीया औन उनहों ने यसु को पकड़ा औन ले गये।
१७ औन अपना कुनुस उठाये ऊए वुह उस सथान को गया जो
प्पोपड़ी का कहावता है जो इबनी में गलगता कहावता है।
१८ वहां उनहों ने उसे औन उसके संग औन दो को इधन उधन
औन यसु को बीच में कुनुस पन माना।
१९ औन पीलातुस ने एक नामपतन लीप्प के कुनुस पन लगा
दीया वुह लीप्पा ऊआ यह था की "यसु नासनी यहूदीयों
२० का नाजा"। इस नाम पतन को बऊतेने यहूदीयों ने पढा
कयोंकी जीस सथान में यसु कुनुस पन प्पींया गया था सो नगन
के नीकट था औन वुह इबनी औन युनानी औन लातीनी में
२१ लीप्पा था। तब यहूदीयों के पनघान याजकों ने पीलातुस
से कहा की यहूदीयों का नाजा मत लीप्प पनंतु की उसने कहा
२२ की मैं यहूदीयों का नाजा ऊं। पीलातुस ने उतन दीया की
२३ मैं ने जो लीप्पा सो लीप्पा। फेन जब जोधाओं ने यसु को
कुनुस पन टांगा उसके बसतनों को लीया औन यान भाग
कीये हन जोधा को एक औन उसके बागे को भी लीया औन

२४ व्रागा व्रीन सीआ उपन से नीये लों व्रुना ऊआ था। इस लीये
वे आपुस में व्रोले की हम इसे न पराड़ें पनंतु उस पन याठी
डालें की यह कीसे पड़ंयता है जोसतें लीप्पा ऊआ पुन। होवे
जो कहता है की उनहों ने आपुस में मेन व्रसतन को व्रांट
लीया और मेनें व्राग के लीये यीठी डाला से। जोधाओं ने
ऐसाही कीया।
२५ अव्र यसु के कुनुस के पास उसकी माता और उसकी माता
की व्रहीन कलेओपास की मनीयम और मनीयम मजदलीय:
२६ प्पड़ी थीं। यसु ने अपनी माता को और अपने पीनीय सीप्प
को पास प्पड़े ऊए देप्प के अपनी माता को कहा की हे इसतीनी
२७ अपने पुतन को देप्प। फेन उसने उस सीप्प को कहा की
अपनी माता को देप्प और उसी घड़ी से व्रुह सोप्प उसे अपने
२८ घन ले गया। इसके पीछे यसु ने जाना की अव्र सव्र कुछ हो
युका जीसतें लीप्पा ऊआ पुना होवे उसने कहा की मैं पीआसा
२९ ऊं। अव्र वहां एक पातन सीनके से भना ऊआ घना था
उनहों ने व्रादल के टुकड़े को सीनके में भीगा के जुफा में
३० लपेट के नल पन नप्पा और उसके मुंह पन लगाया। इस
लीये जव्र यसु ने सीनके को यीप्पा तो कहा की हो युका और
३१ सीन झुका के पनान सैांप दीया। और इस लीये की व्रुह
व्रनाउनी का समय था यहूदीयों ने पीलातुस से याहा की
उनकी टांगें तोड़ी जायें और उतान ले जांये की लाथ व्रीसनाम
में कुनुस पन न नहने पावे कयोंकी व्रुह व्रीसनाम व्रड़ा दीन था।
३२ तव्र जोधाओं ने आके पहीले और दुसने की टांगें तोड़ीं जो
३३ उसके साथ कनुस पन प्पींये गये थे। पनंतु जव्र उनहों ने यसु
पास आके देप्पा की व्रुह मन युका हैं तो उनहों ने उसकी टांगें
३४ न तोड़ीं। पनंतु जोधाओं में से एक ने भाले से उसका पंजन
३५ गोदा और तुनंत उस से लोऊ और पानी नीकला। और
जोसने यह देप्पा उसने साप्पी दी और उसकी साप्पी सत है

और वुह जानता है की सत कहता है जीसतें तुम लोग वीसवास
३६ लाओ। ये वातें इस लीये ऊइं की लीप्पा ऊआ पुना होवे
३७ की उसकी कोइ हडी तोड़ी न जायगी। और फेन लीप्पा
ऊआ कहता है कीवे उस पन जीसे उनहों ने गोदा दीनीसट
३८ कनेंगे। और इसके पीछे अनमतीया के यूसफ ने जो यसु
का सीप्प था पनंतु यऊदीयों के डनके मारे छीप के था आके
यसु की लोथ ले जाने को पीलातुस से अगया याही पीलातुस
ने लेने दीया सो वुह आया और यसु की लोथ को लीया।
३९ और नीकुदीमुस भी, जो पहीले यसु के पास नात को गया था
आया और पयास सेन के लगभग गंधनस और एलुवा मीला
४० के लाया। तव उनहों ने यसु की लोथ को ले के यऊदीयों
के गाड़ने की नीत के समान सुती कपड़े में सुगंध के संग लपेटा।
४१ और वहां जीस सथान में उसे कुनुस पन पींया था एक वानी
थी और उस वानी में एक नइ समाध जीस में कोइ घना
४२ न गया था। सो उनहों ने यसु को यऊदीयों की वनाउनी के
लीये वहीं नप्पा कयोंकी वुह समाध समीप थी।

२० वीसवां पनव।

मसीह का जी उठना। १—१० दुतों का संदेस देना
११—१३ मसीह का मनीयम पन पनगट होना
१४—१८ पननीतों पन पनगट होना १९—२५
फेन पनगट होके थुमा को अपना घाव दीप्पाना
२६—३१।

१ अठवारे के आनंभ में मनीयम मजदलीयः तडके अंधीयाना
नहतेही समाध पन आइ और पथन को समाध से टाला
२ ऊआ देप्पा। तव वुह समउन पतनस और उस दुसने सीप्प
के पास, जीसे यसु पीआन कनता था, दौड़ी आइ और उनहें

व्रोली की कोइ पनन्न को समाच में से ले गया और हम नहीं
२ जानते की उनहों ने उसे कहां नप्पा है। इस लीये पतनस
दुसने सीप्प के संग होके नीकला और समाची की ओन जाने
४ लगा। सो वे दोनों प्रेकठे दौड़े पनंत दुसना सीप्प पतनस से
५ आगे व्रढ गया और समाच पन पहीले पहुंया। उसने हुक
६ के सुती कपड़े पड़े देप्पे पन भीतन न गया। फेन समउन
पतनस उसके पीछे पहुंया और समाच में पैठ के सुती कपड़ों
७ को पड़ा देप्पा। और उसके सोन पन का अंगोछा कपड़े के
संग नहीं, पनंतु लपेटा हुआ प्रेक सथान में अलग पड़ा देप्पा।
८ तव्र दुसना सीप्प भी, जो समाच पन पहीले आया था, भीतन
९ गया और देप्पके पनतीत की। कयोंकी वे अव्र लों लीप्पे हुप्रे
को न जानते थे की वृह मीनतकों में से अवस जी उठेगा।
१०।११ तव्र सीप्प अपने अपने घन गये। पनंतु मनायम समाच
के पास व्राहन नोती प्पड़ी नही और नोती हुइ जेउं समाच
१२ में देप्पने को हुकी। तो दो दुतों को सेत व्रसतन में प्रेक
को सीनहाने और दुसने को, पैताने में व्रैठे देप्पा जहां य्रसु
१३ की लोथ नप्पी गइ थी। उनहों ने उसे कहा की हे इसतीनी
तु कयों नोती है? उसने उनहें कहा इस लीये की वे मेने
पनभ को ले गये और मैं नहीं जानती की उनहो ने उसे कहां
१४ नप्पा है। और उसने यु कहके पीछे फीन के य्रसु को प्पड़े
१५ देप्पा पन न जाना की वृह य्रसु है। य्रसु ने उसे कहा की हे
इसतीनी तु कयों नोती है? कीसे ढुंढती है? उसने उसे माली
समहु के कहा की हे महासय जो आपने उसे यहां से उठाया
हो तो मुहु से कहीये की आप ने उसे कहां नप्पा है और मैं
१६ उसे लेजाउंगी। य्रसु ने उसे कहा की मनीयम उसने फीनके
१७ उसे कहा की नव्रुनी अनथात हे गुनु। य्रसु ने उसे कहा की
मुहे मत छु कयोंकी मैं अव्र लों अपने पीता पास उपन नहीं
गया पनंतु मेने भाइयों के पास जाके उनहें कह की मैं अपने

पीता और तुमहारे पीता और अपने ईसर और तुमहारे
१८ ईसर पास उठ जाता हूं। मरीयम मजदलीयः ने आके सीष्यों
से कहा का मैं ने परभु को देष्या और उस ने ये बातें मुझे
१९ कहीं। फेर उसी दीन जो अठवारे का पहीला था संघया के
समय में जब उस सथान के दुवार, जहां सब सीष्य एकठे थे
यहूदीयों के डर के मारे बंद थे यसु आया और मघ में प्षड़ा
२० हुआ और उनहें बोला की तुम पर कुसल। और यूं कहके
अपना हाथ और पंजर उनहें दीष्याया तय सीष्य परभु को
२१ देष के आनंद हुए। और यसु ने फेर उनहें कहा की तुम
पर कुसल जैसा पीता ने मुझे भेजा है तैसाही मैं तुमहें भेजता
२२ हूं। उसने यह कहके उन पर फुंका और कहा की धरमातमा
२३ को लेओ। जीनके पापों को तुम छोड़ते हो उनके लीये छोड़े
जाते हैं और जीनके तुम धरते हो उनके धरे हैं।
२४ परंतु उन बारह में से एक सुमा जीसकी पदवी डीदीमस
२५ थी यसु के आने में उनके संग न था। इस लीये और सीष्यों
ने उसे कहा की हम ने परभु को देष्या है परंतु उसने उनहें कहा
की जब लों मैं उसके हाथों में कीलों के चीनह न देष्युं और
कीलों के चीनह में अपनी अंगुली न करुं और अपने हाथ
२६ उसके पंजर में न डालुं मैं परतीत न करुंगा। आठ दीन के
पीछे जब उसके सीष्य फेर भीतर थे और सुमा उनके संग था
दुवार बंद होते हुए यसु आया और बीच में प्षड़ा होके बोला
२७ की तुम पर कुसल। तब उसने सुमा को कहा की अपनी
अंगुली इधर बढ़ा और मेरे हाथों को देष्य और अपना हाथ
इधर बढ़ा और उसे मेरे पंजर में डाल और अपरतीत मत
२८ हो परंतु परतीत मान। सुमा ने उतर देके उसे कहा की हे
२९ मेरे परभु और हे मेरे ईसर। यसु ने उसे कहा की सुमा तु
इस लीये परतीत लाया है की तु ने मुझे देष्या है, धन वे हैं
जीनहों ने नहीं देष्या और परतीत करेंगे।

३० ओान व्रुहतेने ओान बहुन ग्रसु ने चपने सीष्यों के आग
३१ दीष्पाय़े जो दूस पुसतक में नहीं लीष्पे हैं। पनंतु ये लीष्पे
गय़े जीसतें तुम वीसवास लाओा की ग्रसु वुह मसीह दूसन
का पुतन है ओान पनतीत कनके उसके नाम से चनंत जीवन
पाओा।

२१ एकीसवां पनव्न।

ससुदन तीन मसीह का आप को सीष्यों पन पनगट
कनना १—१४ पतनस से पनसन कनना ओान उसे
चगय़ा कनना ओान उस का मीनतु का संदेस देना
१५—१९ पतनस को नोकना ओान मसीह के
आसयनज कनम का वतानां २०—२५।

१ दून व्रातों के पीछे ग्रसु फेन आप को तीव्रीनोय़ास के ससुदन
के पास सीष्पों को दीष्पाद दीय़ा ओान दूस नीत से पनगट
२ ऊआ। की समउन पतनस ओान सुमा जो डीदीसम कहावता
है ओान काना के जलील का नासानाइल ओान ज़व्रदी के व्रेट
३ ओान उसके सीष्पो में से ओान दो एकठे थे। समउन पतनस
ने उनहें कहा की मैं मछली पकड़ने को जाता ऊं उनहों ने उसे
कहा की हम भी तेने संग यलेंगे ओान नीकल के तुनंत नाव
४ पन यढ़े ओान उस नात कुछ न पकड़ा। पनंतु जव्र व्रीहान
ऊआ ग्रसु तीन पन ष्पड़ा था पनंतु सीष्पों ने न जाना की वुह
५ ग्रसु है। तव्र ग्रसु ने उनहें कहा की हे लड़को तुमहाने पास
६ कुछ भोजन है? उनहों ने उसे उतन दीय़ा की नहीं। उसने
कहा की नाव की दहीनी ओान जाल डालो ओान पाओगे सो
उनहों ने डाला तव्र मछलीय़ों की व्रऊताद के मानें वे उसे
७ ष्पींय न सके। दूस लीय़े उस सीष्प ने, जीसे ग्रसु पीयान
कनता था, पतनस को कहा की वुह पनभु है सो जव्र समउन

पतनस ने सुना की वृह पनमु है उसने अपने मछुऐ का वसतन
कट पन लपेटा (कयोंकी वुह नंगा था) श्रौन आप समुदन में
८ कुद पड़ा। पनंतु श्रौन सीष्य नाव पन जाल को मछलीयों
समेत ष्पींयते आये कयोंकी वे तीन से दुन न थे पनंतु जैसा की
९ दो सै हाथ के। जेउं वे तीन पन आये उनहों ने वहां कोइलों
की आग श्रौन उस पन मछली नष्पी ऊइ श्रौन नोटी देष्पी।
१० यसु ने उनहें कहा की उन मछलीयों में से जो तुम ने अभी
११ पकड़ी हैं लाश्रो। समउन पतनस ने जाके जाल को एक सै
तीनपन वड़ी मछलीयों से भना ऊश्रा ष्पींया यदपी इतनी
१२ वऊत थीं तथापी जाल न फटा। यसु ने उनहें कहा की आश्रो
भोजन कनें यह जानके की वुह पनमु है सीष्पों में से कीसी का
१३ हीयाव न ऊश्रा की उसे पुछे की तु कौन है?। तव यसु ने
आके नोटी ली श्रौन उनहें दी श्रौन मछलीयां भी दीं।
१४ यह तीसने वान है की यसु ने जी उठके अपने तईं सीष्पों
१५ को दीष्पाया। सो जव वे भोजन कन युके यसु ने समउन
पतनस को कहा की युना के पुतन समउन कया तु इनसे मुझे
अधीक पनीत नष्पता है? उसने उसे कहा हां हे पनमु आप
जानते हैं की मैं आप से पनीत नष्पता ऊं उसने उसे कहा मेने
१६ मेमनों को यना। उसने दुसन वान उसे फेन कहा की युना
के पुतन समउन तु मुझ से पनीत नष्पता है? उसने उसे कहा
की हां हे पनमु आप जानते हैं की मैं आप से पनीत नष्पता ऊं
१७ उसने उसे कहा की मेनी भेड़ें यना। उसने उसे तीसने वान
कहा की युना के पुतन समउन तु मुझ से पनीत नष्पता है?
तव पतनस उदास ऊश्रा कयोंकी उसने उसे तीसने वान कहा
की तु मुझ से पनीत नष्पता है तव उसने उसे कहा हे पनमु
आप तो सव कुछ जानते हैं आप जानते हैं की मैं आप से पनीत
१८ नष्पता ऊं यसु ने उसे कहा की मेनी भेड़ें यना। मैं तुझ से
सत सत कहता ऊं की जव लों तु तनन था तु अपनी कट

व्रांघता था ग्रौन जहां कहीं याहता था जाता था पनंतु जव्र
तु व्रीनध होगा तु ग्रपने ह.थों को फरैलावेगा ग्रौन दुसना तेनी
१९ कट व्रांघेगा ग्रौन जहां तु न याहे तहां ले जायगा। उसने
ग्रह कहके पता दीग्रा की वुह कीस मीनतु से इसन की महीमा
पनगट कनेगा ग्रौन उसने ग्रुं कहके उसे कहा की मेने पीछे हो
२० ले। तव्र पतनस ने फरीन के उस सीष्य को पीछे ग्राते देष्पा
जीस से ग्रसु पनीत नष्पता था (जीसने व्रीग्रानी के समग्र उसकी
छाती पन ग्रोठंग के पुछा की हे पनभु जो तुहे पकड़वाता है सो
२१ कौन है ?)। पतनस ने उसे देष्प के ग्रसु से कहा की हे पनभु
२२ इस मनुष्प का कग्रा होगा ?। ग्रसु ने उसे कहा की जो मैं
याङं की जव्र लों मैं ग्राउं वुह ग्रहीं ठहने तो तुहे कग्रा तु मेने
२३ पीछे यला ग्रा। तव्र ग्राइग्रों में ग्रह व्रात फरैल गइ की वुह
सीष्प न मनेगा पनंतु ग्रसु ने उसे नहीं कहा की वुह न
मनेगा पनंतु ग्रह कहा की जो मैं याङं की मेने ग्राने
२४ लों वुह ठहने तो तुहे कग्रा ?। ग्रह वुह सीष्प हैं जीसने इन
व्रातों की साष्पी दी है ग्रौन इनहें लीष्पा ग्रौन हमें नीसयग्र
२५ है की उसकी साष्पी सत है। ग्रौन भी व्रहुत से कानज हैं जो
ग्रसु ने कीग्रे जो वे ग्रलग ग्रलग लीष्पे जाते तो मैं समुहता हुं
की उन गनंथों को, जो लीष्पे जाते जगत में भी समाइ न होती
ग्रामीन।

परेनीतें की कीनीया ।

---

१ पहीला पनव ।

मसीह के जी उठने का समाधान औन सनग पन जाना १—११ सीष्पों का यीनोसलीम में फीन आना औन पनानथना में लवलीन होना १२—१४ यहूदा का नसट औन मतसैयास का परेनीत होना १५—२६ ।

१ हे साओफलुस जो कुछ यसु उस दीन लों कनता औन सीष्पा-
२ वता नहा। जव वुह धनमातमा के दुवाना से अपने युने ऊऐ
परेनीतों को अगया देके उपन उठाया गया मैं उनहें अगीली
३ पुसतक में वनननन कन युका। अपने कसट के पीछे वुह उन में
वऊत पनमानों से जीवता पनगट ऊआ औन यालीस दीन लों
उनहें दीष्पाइ दे दे के इसन के नाज की वातें कहता नहा।
४ औन उनहें एेकठे कनके अगया की, की यीनोसलीम से वाहन मत
जाओ पनंतु पीता की वाया के लीये वाट जोहो जो मुझ से सुन
५ युके हो। कयोंकी यहीया ने तो जल से सनान दीया पनंतु
६ थोड़े दीन के पीछे तुम लोग धनमातमा से सनान पाओगे। सो
जव वे एेकठे ऊऐ उनहों ने यह कहके उसे पुछा की हे पनभु
७ कया आप इसी समय इसनाइल को फेन नाज देंगे। उसने
उनहें कहा की तुमहाना काम नहीं की उन समयों अथवा

नीतुन को जाने जीनहें पीता ने अपनेही व्रस में नप्प छोड़ा है।
८ पनंतु जव्र घनमातमा तुम पन आवेगा तव्र तुम लोग सामनथ
पाओगे और यीनोसलीम में और सारे यहूदीयः और सामनः
९ में और पीनथीवी के अतयंत लों मेने साप्पी होओगे। और
इन व्रातों को कहके उन के देप्पते देप्पते वुह उपन उठाया गया
१० और मेघ ने उसे उनकी दीनीसट से आड़ कन लीया। और
जव्र वे उसे उपन जाते आकास की ओन तक नहे थे देप्पो
११ दो मनुप्प उजला व्रसतन पहीने उनके पास प्पड़े ड़ुप्रे। और
कहने लगे की हे जलीली लोगो तुम लोग प्पड़े उपन सनग की
ओन कयों ताक नहे हो यही यसु जो तुम से सनग पन उठाया
गया है जीस नीत से तुम ने उसे सनग पन जाते देप्पा उसी
१२ नीत से आवेगा। तव्र वे उस पहाड़ से, जो जलपाई का कहा-
वता है, और यीनोसलीम से प्रेक व्रीसनाम दीन के टपे पन है,
१३ यनोसलीम को फीने। और वे भीतन आके प्रेक उपनैटी कोठनी
में गये जहां पतनस और याकुव्र और युहना और अंदनयास
और फैलवुस और सुमा और व्रानतुलमा और मती और
हलफ़ा का व्रेटा याकुव्र और समउन जलन और याकुव्र का
१४ भाई यहूदा नहते थे। ये सव्र इसतीनीयों सहीत और यसु
की माता मनीयम के और उसके भाइयों के संग मन लगा के
१५ पनानथना और व्रीनती कन नहे थे। और उनहीं दीनों में
सीप्पों के मघ में, जो गीनती में प्रेक सौ व्रीस के लग भग थे
१६ पतनस प्पड़ा होके व्रोला। हे मनुप्प भाइयो उस लीप्पे ड़ुप्रे
का पुना होना अवस था जो घनमातमा ने दाउद के दुवाना
यहूदा के व्रीप्पय में आगे से कहा था जो यसु के पकड़ाउओं
१७ का अगुआ ड़ुआ। कयोंकी वुह हम में गीना जाता था और
१८ उसने इस सेवकाई का भाग पाया। अव्र इस मनुप्प ने वुनाई
के दाम से प्रेक प्पेत मोल लीया और औंघे मुंह गीन के उस
का पेट फट गया और उसकी सानी अतड़ीयां नीकल पड़ी

१९ ग्रैान यह वात यनोसलीम के साने वासीयों पन जानी गइ
यहां लों की वुह प्येत उनकी भाप्पा में हकलदमा कहावता है
२० ग्रनथात लोहु का प्येत। कयोंकी भजन की पुसतक में लीप्पा
है की उसका घन उजाड़ होवे ग्रैान उस में कोइ न वसे ग्रैान
२१ उसका पद दुसना लेवे। सो जो लोग उस समय से हमाने संग
सदा यलते थे ग्रनथात जव से पनभु यसु हम में ग्राया जाया
२२ कनता था। यहोया के सनान से ग्रानंभ कनके उस दीन लों
की वुह हम में से उठाया गया उन में से उयोत है की ग्रेक जन
जो उसके फेन उठने की साप्पी हो हमाने संग ठहनाया जाय।
२३ तव उनहों ने दो को ठहनाया ग्रेक यसफ जो वानसवास
कहावता है जीसकी पदवी जसतस हैं ग्रैान दुसना मतसैयास।
२४ ग्रैान वे पनानथना में वाले, हे पनभु जो सव का ग्रंतनजामी
२५ है दीप्पा की इन दोनों में से तु ने कीस को युना है। जीसतें
वुह इस सेवकाइ ग्रैान पनेनीताइ का भाग लेवे जीस से यहुदा
पाप कनके भनीसट हुग्रा जीसतें ग्रपनेही सथान को जाय।
२६ ग्रैान उनहों ने यीठी डाली ग्रैान यीठी मतसैयास के नाम पन
नीकली तव वुह गयानह सीप्पों में गीना गया।

२ दुसना पनव।

पनेनीतों पन घनमातमा का पड़ना १—४ मंडली
का ग्रासयनज मानना ५—१३ पतनस का वनननन
कनना १४—३६ तीन सहसन का वीसवास लाना
३७—४१ सीप्पों की याल ४२—४७।

१ ग्रैान जव पयासवां दीन संपुनन हुग्रा पहुंया वे सव ग्रेक मत
२ हो के ग्रेक सथान में ग्रेकठे थे। तव ग्राकसमात सनग से वहुत
वड़ी ग्रांधी के सवद के समान ग्रेक सवद हुग्रा ग्रैान उस से
३ साना घन, जहां वे वैठे थे भन गया। ग्रैान उनहें ग्राग की

सी जोम्भ अलग अलग दीप्पाइ दीं औान उन में से हन प्रेक पन
४ पड़ीं। तव्‌ सव्‌के सव्‌ घनमातना से भ्नन गय़े अनु आन आन
भ्नाप्पा से कहने लगे जैसा की आतमा ने उनसे कहवाय़ा था।
५ औान कीतने भ्नकत य़ह्रूदी सनग के तले के हन प्रक देस से
६ य़नोसलीम में आ नहे थे। औान जव्‌ य़ह व्‌ात फैल गइ तव्‌
मंडली प्रेकठी होके व्‌य़ाकल ऊइ कय़ोंकी हन प्रेक ने उनहें
७ अपनी अपनी भ्नाप्पा में व्‌ोलते सुना। औान सव्‌ आसय़नजीत
औान व्‌ीसमीत हो आपुस में कहने लगे की देप्पो कय़ा य़े सव्‌
८ जो व्‌ोलते हैं जलीली नहीं?। सो कैसा है की हन प्रेक
९ हम में से अपने अपने देस की व्‌ोली में सुनता है। फानसी
औान माजी औान प्रेलामी औान इनाकीअजम के व्‌ासी औान
य़ह्रूदीय़ः औान कपादुकीय़ः औान पनतस औान आसीय़ा के।
१० औान फनजीय़ः औान पंफ्लीय़ः औान मीसन औान लीव्‌ीय़ा
के उस सीवाने के व्‌ासी जो कुनीनी के आस पास है औान नुम
११ के पनदेसी औान य़ह्रूदी औान नय़े य़ह्रूदी। कनीती औान
अनव्‌ी सुनते हैं की वे हमानी भ्नाप्पा में इसन की सुनदन व्‌ातें
१२ कहते हैं। औान उन सभ्नों ने आसय़नज माना औान संदेह
१३ में होके प्रेक दुसने को कहने लगा की कय़ा होगा?। कीतनों
ने ठठा कनके कहा की य़े लोग नइ मदीना के अमल में हैं।
१४ तव्‌ पतनस ने उन गय़ानह के संग प्पड़ा होके उनहें व्‌ड़े सवद
से कहा की हे य़ह्रूदी मनुप्पो औान य़नोसलीम के साने व्‌ासीय़ो
तुम पन य़ह जाना जाय़ औान मेना व्‌चन कान लगाके सुनो।
१५ कय़ोंकी य़े जन जैसा तुम लोग समझते हो मद के अमल में
१६ नहीं हैं इस लीय़े की य़ह दीन की तीसनी घड़ी है। पनंतु
य़ह वुह है जो जोइल भ्नवीसदव्‌कता की औान से कहा गय़ा।
१७ इसन कहता है की अंत समय़ में प्रेसा होगा की मैं हन प्रक
जन पन अपना आतमा व्‌हाउंगा औान तुमहाने व्‌ेटे औान
तुमहानी व्‌ेटीय़ां भ्नवीस कहेंगी औान तुमहाने तनुन दनसन

१८ देष्वेंगे औान तुमहाने व्रीनघ सपन देष्वेंगे। मैं उन दीनों में
अपने दास औान अपनी दासोयों पन अपना आतमा व्रहाउंगा
१९ औान वे ञ्वीस कहेंगे। औान मैं उपन सनग में अयनज औान
नीचे पीनथीवी पन लहन दीप्पाउंगा अनथात लोऊ औान आग
२० औान धुंप्रे के उठान। पनभु के उस व्रडे औान पनसीघ दीन के
२१ पहीले सुनज अंधीयाना औान यंदन लोऊ हो जायगा। औान
प्रैसा होगा की जो कोइ पनभु के नाम को दोहाइ देगा सो
२२ उघान पावेगा। हे इसनाइली लोगो ये व्रातें सुनो यसु नासनी
प्रेक मनुप्य था जीसका इसन की औान से होना उन पनाकनमों
औान आसयनजों औान लछनों से तुम में ठहन गया जो इसन
ने उसके दुवाना से तुमहाने मघ में दीप्पाया जीनहें तुम भी
२३ जानते हो। इसन के ठहनाये गये मत औान पुनव्र गयान से
सौंपे कुप्रे को तुमहों ने पकड़ा औान पापीयों के हाथों से कील
२४ गाड़ के कुनुस पन टांग कन घात कीया। जीसे इसन ने मीनतु
के व्रंधन को प्पोल के फेन उठाया कयोंकी यह अनहोना था
२५ की वुह उसके व्रस में पड़ा नहे। कयोंकी दाउद उसके व्रीप्पय
में कहता है की मैं ने पनभु को आगे से सनव्रदा अपने आगे
देप्पा की वुह मेनी दहोनी औान है न हो की मैं टल जाउं।
२६ इस लीये मेना मन मगन है औान मेनी जीभ आनंद मेना
२७ सनीन भी आसा में में यैन से नहेगा। कयोंकी तु मेने पनान
२८ को पनलोक में न छोड़ेगा न अपने धनमी को सड़ने देगा। तु ने
मुझे जीवन के मानग का पहीयान दीया है औान तु अपने
२९ सनुप से मुझे आनंद से भन देगा। हे मनुप्य भाइयो मैं
पीतनाधछ दाउद के व्रीप्पय में तुमहें मन प्पोल के कहुं वुह
तो मन गया औान गाड़ा भी गया औान आज लों उसकी समाघ
३० हम में है। सो वुह भवीसदव्रकता होके जानता था की इसन
ने उस से कीनीया प्पाके कहा की मैं मसीह को सनीन के
व्रीप्पय में तेने व्रस में से उठाउंगा जीसतें तेने सींहासन पन

३१ वैठे। इसे आगे देष्प के उसने मसीह के जी उठने की कही की
उसका पनान पनलोक में छोड़ा न जायगा न उसका देह सड़ने
३२ पावेगा। इस यसु को इसन ने उठाया है जीस वात के हम सव
३३ साप्पी हैं। सो इसन की दहीनी ओान वढ़ाया जाके ओान
पीता से वाया पाके उसने यह वहाया जो तुम लोग अव देप्पते
३४ ओान सुनते हो। कयोंकी दाउद सनग पन नहीं गया पनंतु
३५ उसने कहा की पनभु ने मेने पनभु से कहा। जव लों मैं तेने
वैनीयों का तेने पांव की पीढ़ी कनुं तु मेनी दहीनी ओान वैठ।
३६ सो इसनाइल का सानी घनाना नीसयय जाने की इसन ने
उसी यसु को जीसे तुम लोगों ने कुनुस पन टांगा पनभु ओान
मसीह कीया।

३७ जव उनहों ने यह सुना तो उनके मन वेघ गये ओान पतनस
अनु ओान पनेनीतों को वाले की हे मनुष्य भाइयो हम कया
३८ कनें ?। तव पतनस ने उनहें कहा की पछताओ। ओान तुम में
से हन ऐक पाप मोयन के कानन यसु मसीह के नाम से सनान
३९ पाओ ओान तुम लोग घनमातमा दान पाओगे। कयोंकी यह
वाया तुम से ओान तुमहाने वालकों से है ओान उन सभों से
४० जो दुन हैं जीतनी को हमाना पनभु इसन वुलावेगा। ओान
उसने वहुतेने ओान वचन से साप्पी दा दा के ओान उपदेस कन
४१ कनके कहा की आप को इस हठीली पीढ़ी से वचाओ। तव
जीनहों ने उसका वचन आनंद से गनहन कीया उनहों ने
सनान पाया ओान उसी दीन तीन सहसन पनानी के लगभग
४२ उन में मील गये। ओान वे पनेनीतों के उपदेस ओान संगत
ओान नोटी तोड़ने ओान पनानथना कनने में नीत वने नहे।
४३ ओान हन ऐक पनानी पन डन पड़ी ओान वहुत से आसयनज
४४ ओान लछन पनेनीतों से दीप्पाये गये। ओान सव जो वीसवास
४५ लाये ऐकठे थे ओान सव वसतें सव की थीं। ओान अपनी अपनी
संपत ओान सामगनी को वेय वेय के हन ऐक के आवसक के

४६ समान सभों के बांटते थे। और वे एक मता होके पनती
दीन मंदीन में नहते थे और घन घन नोटी तोड़ के पनसंनता
४७ और मन की सुधाइ से प्याते थे। और इसन की सतुत कनते
और साने लोगों में आदन पाते थे और पनभु मंडली में उधा-
नीतें का पनत दीन अधीक कनता था।

३ तीसना पनव।

पतनस और युहना का एक लंगड़े को यंगा कनना
१—११ मसीह के पनाकनम और लोगों के पाप
को पतनस का वनलन कनना १२—१८ पतनस का
उपदेस १९—२६।

१ फेन पतनस और युहना एक साथ पनानथना की जुन नवइं
२ घड़ीं मंदीन में जाने लगे। और लोग जनम के एक लंगड़े
को लेके पनती दीन मंदीन के दुवान पन, जीसका नाम सुनदन
३ है नप्पते थे की उनसे जो मंदीन में जाते थे भीष्प मांगे। जव
उसने पतनस और युहना को मंदीन में जाते देप्पा तो उनसे
४ भीष्प मांगी। तव पतनस ने युहना सहीत उसे टक लगा के
५ देप्प के कहा की हमें ताक नप्प। और वुह उन से कुछ पावने
६ की आसा से उनहें तक नहा। तव पतनस ने कहा की सोना
यांदी मेने पास नहीं पनंतु जो मेने पास है मैं तुहे देता हुं ग्रसु
७ मसीह नासनी के नाम से उठ और यल। और उसने उसका
दहीना हाथ पकड़ के उठाया और तनंत उसके पाओं और
८ घुटीयां वल पा गइं। और कुद के वुह उठ प्पड़ा हुआ और
यलता फीनता और उछलता कुदता और इसन की सतुत
९ कनता हुआ उनके संग मंदीन में गया। और सव लोगों ने
१० उसे यलते फीनते और इसन की सतुत कनते देप्पा। और
यीनहा की यह वही है जो मंदीन के सुंदन दुवान पन भीष्प

मांगते बैठता था और जो उस पर बीत गया था वे उस से
११ नीपट आसचरज करके बीसमीत हुऐ। और जौं वुह चंगा
कीया गया लंगड़ा पतरस और युहन्ना को लपटा जाता था
सारे लोग ओसारे में, जो सुलेमान का कहावता था बड़े आस
१२ चरज से उसकी ओर दौड़े आये। तब पतरस ने देष के
मंडली से कहा, हे इसराइली मनुष्यो तुम लोग इस से क्यों
आसचरज करते हो? अथवा क्यों हमें देष रहे हो जैसा की
हम ने अपने पराक्रम अथवा भकती से इस मनुष्य को चला-
१३ या। इब्राहीम और इसहाक और याकुब के इसर ने
हमारे पीतरों के इसर ने अपने पुत्र यसु को ऐसवर्यमान
कीया जीसे तुमहों ने सौंप दीया और पीलातुस के आगे उस से
१४ मुकर गये जब उसने उसे छुड़ाने को ठहराया था। परंतु तुम
उस पवीतर और धरम मय से मुकर गये और ऐक बधीक को
१५ चाहा की तुमहारे लीये छोड़ा जाय। और जीवन के अधछ
को मार डाला जीसे इसर ने मीरतकों में से उठाया और
१६ उस बात के हम साषी हैं। और उसके नाम पर बीसवास
लाने के दुवारा से उसने इस मनुष्य को, जीसे तुम लोग देषते
और जानते हो दीरढ़ कीया हां उसका नाम और बीसवास
जो उस से है तुम सब के सनमुष उसे ऐसा ठीक चंगा कीया।
१७ और अब हे भाइयो मैं जानता हुं की तुम लोग और तुमहारे
१८ परधानों ने भी अन जाने यह कीया। परंतु जो कुछ इसर ने
अपने समसत भवीसदबकतों के दुवारा से आगे कहा था की
१९ मसीह कसट पावेगा इसी रीत से उसने पुरा कीया। सो अब
पछताओ और फीरो जीसतें तुमहारे पाप मीटाऐ जायें और
२० परभु के पास से सांत होने की समय आवे। और वुह यसु
मसीह को भेजेगा जीसका समाचार तुमहें आगे से दीया गया
२१ है। क्योंकी जबलों सारी बातें, जो इसर ने अपने समसत
पवीतर भवीसदबकतों के दुवरा आद से कहा पुरी न हों

२२ अवेस है की सगन उसे लीये नहे। कयोंकी मुसा ने पीतरों
से ठीक कहा था की परभु जो तुमहारा इसवन है तुमहारे
भाइयों में से तुमहारे लीये ग्रेक अवीसदव्रकता को मेरे समान
उठावेगा तुम सारी बातों में, जो वुह तुमहें कहे उसे मानयो।
२३ ग्रोन ग्रेसा होगा की हन ग्रेक परानी जो उस अवीसदव्रकता
२४ को न सुनेगा सो लोगों में से नीकाल दीया जायगा। हां ग्रोन
समसत अवीसदव्रकतों ने, समुइल से लेके ग्रोन वे जो उसके
पीछे ग्राये हैं जीतनों ने कहा है इन दीनों का भी संदेस दीया
२५ है। तुम लोग उन अवीसदव्रकतों के संतान हो ग्रोन उस
नीयम के जो इसवन ने हमारे पीतरों से करके इव्रराहीम से
कहा की तेरे व्रस से पीरथवी के सारे घराने ग्रासीस पावेंगे।
२६ इसवन ने ग्रपने पुतर यसु को उठाके तुम में से हन ग्रेक को
उसकी वुराइयों से फीरा के पहीले तुमहें ग्रासीस देने
को भेजा।

४ चौथा परव्र।

पतरस ग्रोन यूहना का सताया जाना ग्रोन पांच
सहसन का व्रीसवास लाना १—४ नीरभै से पतरस
ग्रोन यूहना का व्रनरन करना ५—१२ परधानों
का उनहें घमकी देके छोड़ देना १३—२२ सीष्यों
का परारथना करना ग्रोन इसवन से उतर पाना
२३—३१ उनका ग्रेक मता ग्रोन परेम में रहना
३२—३७।

१ ग्रोन जव्र वे लोगों से कह रहे थे याजक ग्रोन मंदीर के
२ परधान ग्रोन जादुकी। लोगों को सीष्याने से ग्रोन यसु से
मीरतक का जी उठना परचारने से उदास होके उन पर
३ चढ़ ग्राये। उनहों ने उन पर हाथ डाले ग्रोन दुसरे दीन

४ जो बंदीगीरह में रख्या कयोंकी अब सांझ हुइ थी। तब भी
जीनहों ने ब्रचन सुना उन में से ब्रहुतेने ब्रीशवास लाये और
५ उनकी गीनती पांच सहस्र के लग भग हुइ। और दुसरे
६ दीन उनके परधान और पराचीन और अधापक। और
परधान याजक हंना और कयाफा और युहना और सीकंदर
और जीतने परधान याजक के कुटुंब थे यरोसलीम में एकठे
७ हुए। और उनहें बीच में खड़ा करके पुछा की तुम ने कीस
८ पराक्रम और कीस नाम से यह कीया?। तब पतरस ने
धरमातमा से भर पुर होके उनहें कहा की हे लोगो के
९ परधानों और इसराइल के पराचीनो। जो उस अछे काराज
के बीषय में जो इस रोगी मनुष्य पर कीया गया है हम से
१० आज पुछा जाता है की वुह कयोंकर चंगा हुआ। तो तुमहें
और इसराइल के लोगों को जाना जाय की यसु मसीह नासरी
के नाम से जीसे तुम लोगों ने कुरुस पर मारा उसे इसर ने
मीरतक में से जीलाया उसी से यह मनुष्य तुमहारे आगे चंगा
११ खड़ा है। यह वुह पथर है जीसे तुम थवइयों ने नीकमा
१२ ठहराया जो कोने का सीरा हुआ है। और कीसी दुसरे
में मुकत नहीं कयोंकी सरग के तले कोइ दुसरा नाम मनुष्यों
को नहीं दीया गया है जीस से हम लोग उधार पा सकें।
१३ और जब उनहों ने पतरस और युहना का हीयाव देख्या और
समझा की वे अपढ़े और ऐसे वैसे हैं वे ब्रीसमीत हुए और
१४ जान गये की वे यसु के संग थे। और उस चंगा कीया गया
१५ मनुष्य को उनके संग खड़ा देख्य के नीरुतर हुए। परंतु उनहें
१६ सभा से बाहर करके आपुस में ब्रीचारने लगे। की हम इन
मनुष्यों को कया करें कयोंकी यह यरोसलीम के सारे ब्रासीयों
पर परगट है की उनहों ने एक बड़ा आसचरज दीख्याया
१७ और हम लोग उसे नाह नहीं कर सकते। परंतु जीसतें यह
बात लोगों में अधीक न फैले आओ हम उनहें ब्रहुत धमकावें

१८ की वे इस नाम को यनया फेन कीसी से न कनें। श्चीन
उनहें वुलाके योता दीया की ग्रसु के नाम से फेन मत कहे।
१९ श्चीन मत सीप्पाश्चो। तव पतनस श्चीन युहना ने उतन देके
उहें कहा इसन के श्चागे कया ठीक है हम तुमहें श्रथवा इसन
२० को श्रधीक मानें तुमहीं वीयानो। कयोंकी यह श्चनहोना
है की हम उन वातों को, जोनहें हम ने देप्पा श्चीन सुना है
२१ न कहें। श्चीन लोगों के उन के माने उनहें दंड देने का कानन
कुछ न पाके फेन घमका के उनहें छोड़ दीया कयोंकी उस
२२ कानज के लीये सव इसन की सतुत कनते थे। श्चीन जीस पन
यंगा होने का श्चासयनज ऊश्चा वुह यालीस वनस से उपन का
२३ था। श्चीन वीदा होके वे श्चपने संगीयों के पास गये श्चीन
सव कुछ जो पनधान याजकों श्चीन पनायीनों ने कहा था उनहें
२४ कह सुनाये। श्चीन वे सुनके एक साथ इसन की श्चोन वड़े
सवद से वोले की हे पनभु तु वुह इसन है जोसने सनग श्चीन
पीनथीवी श्चीन समुदन श्चीन सव कुछ जो उन में हैं वनाया।
२५ तु ने श्चपने दास दाउद के दुवाना से कहा की श्चनदेसी कयों
२६ गुनाते हैं श्चीन लोग कयों वीनथा सोयते हैं?। पीनथीवी
२७ के नाजा लैस ऊए श्चीन पनधान। पनभु के श्चीन मसीह के
२८ वीनोघ में एकठे ऊए। कयोंकी सयसुय तेने घनमी पुतन
ग्रसु के वीनोघ में जीसे तु ने श्चभीसीकत कीया जो कुछ तेने
हाथ श्चीन तेने मंतन ने पहीले ठहना नप्पा था उसे हीनुदीस
श्चीन पंतयुस पीलातुस श्चनदेसीयों श्चीन इसनाइली लोगों के
२९ संग कनने का ज़कत वांधी है। श्चीन हे पनभु श्चव उनकी
घमकीयों को वुह श्चीन श्चपने दासों को श्चपने वयन नोनभै
३० से कहने को वन दे। श्चीन श्चव इस लीये श्चपना हाथ यंगा
कनने को वढ़ा की तेने पवीतन पुतन ग्रसु के नाम से लछन
३१ श्चीन श्चासयनज पनगट होवें। श्चीन उनके पनानथना कनते
ऊए जीस सथान में वे एकठे थे सो हील गया श्चीन वे सव

घनमातमा से मन गये श्रीन इसन का व्रयन नीनभ्ने से व्रोले।
३२ श्रीन व्रीसवासीग्रों की मंडली ऐक मन श्रीन ऐक जीव थी श्रीन
कीसी ने अपनी कीसी संपत को अपनी न समझा पनंतु सानी
३३ व्रसतु सव्र की थी। श्रीन पनेरीतों ने व्रड़े पनाकनम से पनभु
य्रसु के परेन उठने पन साप्पी दी श्रीन उन सभों पन व्रड़ा
३४ अनुगीनह ऊश्रा। श्रीन उन में कोइ कंगाल न था कय्रोंकी
जीतने भुम अथवा घन नप्पते थे उनहें व्रेंय व्रेंय के उनके
३५ दाम को लाते थे। श्रीन पनेनीतो के यनन पन घनते थे
श्रीन हन ऐक के श्रावेसक के समान भाग दीय्रा जाता था।
३६ श्रीन य्रुसस ने, जीस को पनेनीतों ने व्रननव्रास कनके कहा
३७ अनथात सांत का पुतन जो ऐक लावी श्रीन कव्रनसी था। सो
अपने अधीकान को व्रेंय के नोकड़ को ले पनेनीतो के यनन
पन नप्पा।

५ पांयवां पनव्र।

पाप के माने हनानीय्रा श्रीन सफ़ीना का आकसमात
माना जाना १—११ पनेनीतों का आसयनज कनम
१२—१६ श्रीन उनका व्रंधन में पड़ना श्रीन दुतों
के दुवाना से छुड़ाय्रा जाना १७—२५ फेन सभा के
आगे नीनभय्र से मसीह का व्रननन कनना २६—३३
ताड़ना पाके छुट जाना ३४—४० कसट में अनंदीत
होना श्रीन पनभु का उपदेस कनना ४१—४२

१ पनंतु हनानीय्रा नाम ऐक मनुप्य ने अपनी पतनी सफ़ीना
२ के संग ऐक संपत व्रेंयी। श्रीन मोल में से कुछ नप्प छोड़ा
उसकी पतनी भी जानती थी श्रीन कुछ लाके पनेनीतों के यनन
३ पन नप्पा। तव्र पतनस ने कहा, हे हनानीय्रा कय्रों तेने मन
में सय्रतान समा गय्रा? तु घनमातमा के आगे झुठा ऊश्रा श्रीन

४ मुम के मोल में से कुछ नप्प छोड़ा ?। जव् लों यह घनौं थीं
कग्रा तेनी न थी ? ग्रैान जव् व्रॅंयी गइ ते। कग्रा तेने व्रस में न
नहीं ? तु ने ग्रपने मन में इस व्रात को कग्रें ग्राने दीय़ ? तु
५ मनुप्प के ग्रागे नहीं पनंतु इसन के ग्रागे छुठा ऊग्रा। ग्रैान
हनानीग्रा ये व्रातें सुनते ही गीनपड़ा ग्रैान मन गय़ा तव्
६ जीनहों ने ये व्रातें सुनीं उन पन व्रड़ी डन पड़ी। तव् तनुनों
ने ग्राके उसे व्रसतन में लपेट व्राहन ले जाके गाड़ दीग्रा।
७ ग्रैान पहन मन के ग्रटकल व्रीते उसकी इसतीनी उस व्रात को
८ ग्रजाने ऊए ग्राइ। तव् पतनस ने उसे कहा, मुहे व्रतला तु
९ ने इतने को व्रॅंयी वुह व्रोली हां इतने को। फेन पतनस ने
उसे कहा की यह कैसा है की तुम ने इसन के ग्रातमा को
पनप्पने को जुकत कीग्रा देप्प जीनहों ने तेने पती को गाड़ा
१० उनके पांव दुवान पन हैं ग्रैान तुहे भी ले जायेंगे। तव् तुनंत
वुह उसके यनन पन गीन के मन गइ ग्रैान तनुनों ने ग्राके
उसे मनी ऊइ पाय़ा ग्रैान व्राहन ले जा उसके पती के लग गाड़ा।
११ तव् सानी मंडली पन ग्रैान इन व्रातें के साने सुनवैयों पन
१२ व्रड़ी डन पड़ी। ग्रैान लोगों में पनेनीतों के हाथों से व्रऊत से
ग्रासयनज ग्रैान लछन दीप्पाये गये ग्रैान वे एक मता हो
१३ सुलेमान के ग्रोसाने में नहते थे। ग्रैान नहे ऊए लोगों में से
कीसी को उन में मीलने को साहस न ऊग्रा पनंतु मंडली ने
१४ उनकी पनतीसठा की। तव् पुनुप्प ग्रैान इसतीनी मंडली की
मंडली व्रीसवास लाते ऊए पनभु में ग्रानंद से मीलते गये।
१५ यहां लों की लोग नोगीयों को मानगों में ला ला के व्रीछैाने
ग्रैान प्पाटों पन नप्पते थे जीसतें यलते ऊए पतनस की पनछाइं
१६ उन में से कीसी पन पड़े। ग्रैान व्रऊत से लोग यानों ग्रोन
के नगनों के भी नोगीयों को ग्रैान ग्रपवीतन ग्रातमा से
गनसतों को यनोसलीम में लाते थे ग्रैान सव् यंगे होते थे।
१७ तव् पनधान याजक ग्रैान उसके साने संगी जो जादुकीयों के

१८ मत के थे जलीत हो। पनेरीतों पन हाथ डाले श्रोन उनहें
१९ समान व़ंदीगीनह में व़ंद कीया़। पनंतु पनभु के प्रेक दुत ने
नात को व़ंदीगीनह के दुवानों को प्योला श्रोन उनहें व़ाहन
२० ले जा के कहा। जाश्रो मंदीन में प्पड़े होके इस जीवन के साने
२१ व़यन लोगों से कहो। य़ह सुन वे व़ड़े तड़के मंदीन में जाके
उपदेस कनने लगे पनंतु पनधान य़ाजक श्रोन उसके संगीय़ों
ने श्राके सभा को श्रोन इसनाइल के संतानों के साने पनाय्चीनों
को प्रेकठे व़ुलाय़ा श्रोन व़ंदीगीनह में भ्रेज के उनहें मंगाय़ा।
२२ पनंतु पीश्रादों ने श्राके उनहें व़ंदीगीनह में न पाय़ा तव़ लैाट
२३ के उनहें संदेस दीय़ा। की हम ने तो व़डी यैाकसी से व़ंदी-
गीनह को व़ंद श्रोन पहनों को दुवानों के श्रागे प्पड़ा पाय़ा
२४ पनंतु प्पोल के कीसी को भ्रीतन न पाय़ा। सो जव़ सनेसट
य़ाजक श्रोन मंदीन के पनधान श्रोन पनधान य़ाजकों ने य़े
व़ातें सुनीं तो उनके व़ीप्पै में संदेह में पड़े की य़ह कय़ा होगा।
२५ पनंतु प्रेक ने श्राके उनसे कहा, देप्पो जीन मनुप्पों को तुमहों ने
व़ंदीगीनह में डाला था मंदीन में प्पड़े ऊप्रे लोगों को उपदेस
२६ कनते हैं। तव़ पीश्रादों को लेके पनधान गय़ा श्रोन उन पन
व़ीना उपद्नव कीय़े ऊप्रे ले श्राय़ा कय़ोंकी वे लोगों से डनं
२७ प्रेसा न हो कहीं पथनाय़े जाय़ें। श्रोन उनहें लाके सभा के
२८ श्रागे प्पड़ा कीय़ा श्रोन पनधान य़ाजक ने उनसे पुछा। की
हम ने तुमहें दीनढ़ता से न यीताय़ा की इस नाम से उपदेस
मत कनो श्रोन देप्पो तुम लोगों ने य़नोसलीम को श्रपने उपदेस
से भ्रन दीय़ा है श्रोन याहते हो की इस मनुप्प का लोऊ हम
२९ पन धनो। तव़ पतनस श्रोन नहे ऊप्रे पनेरीतों ने उतन देके
कहा, हमें उयीत है की इसन को मनुप्प से पहीले मानें।
३० हमाने पीतनों के इसन ने य़सु को उठाय़ा जीसे तुम लोगों ने
३१ पेड़ पन टांग के घात कीय़ा। उसे इसन ने श्रगुश्रा श्रोन मुकत-
दाता कनके श्रपनी दहीनी श्रोन व़ढ़ाय़ा जीसतें इसनाइल को

३२ परस्यातार करवाके पापों से छुड़ावे। और इन वातों के हम
लोग साष्यी हैं और धरमातमा भी जीसे ईसर ने उनहें दीया
३३ है जो उसे मानते हैं। यह सुनके वे उन पर दांत कीचकीचाने
३४ लगे और उन सभों को घात करने को परामरस कीया। तव
गमलईल नाम ऐक फरीसी ने, जो वैवसथा गोआता और सव
लोगों में आदरमान था उठके परेरीतों को तनीक वाहर करने
३५ की अगया की। और उनहें कहा हे इसराईली मनुष्यों तुम
लोग जो कुछ उन मनुष्यों को कीया चाहते हो उस से चौकस
३६ रहो। कयोंकी इन दीनों से आगे थुदास ने उठके आप को
कोई महापुरुष ठहराके गीनती में चार सहसर जन के लग
भग उस से मील गये वुह मारा गया और जीतनों ने उसे मान
३७ लीया था सव के सव छीन भीन होके मीट गये। उसके पीछे
यहुदा जलीली कर लेने के दीनों में उठा और अपने पीछे वहुत
से लोगों को खींच लाया वुह भी नसट हुआ और जीतनों ने
३८ उसे माना था वे सव वीथर गये। सो अव मैं तुमहों से कहता
हुं की इन मनुष्यों से रुके रहो और उनहें रहने देओ कयोंकी
जो यह मंतर अथवा यह कारज मनुष्य से है तो मीट जायगा।
३९ परंतु जो यह ईसर से है तो तुम लोग उसे मीटा नहीं सकते,
४० न हो की ईसर के वीरुध संगरामी ठहरो। और उनहों ने
उसे माना और परेरीतों को वुलाके मारा और चेता दीया
४१ की यसु के नाम से कछ न वोलें और उनहें छोड़ दीया। सो
वे सभा के आगे से आनंद करते चले गये की हम उसके नाम
४२ के लीये सताये जाने के जोग गीने गये। और वे परती दीन
मंदीर में और घर घर में उपदेस करने से और यसु मसीह
को परचारने से अलग न रहे।

६ छठवां परव।

सीष्यों के वीवाद के मारे सात सेवक का ठहराया

जाना १—६ बहुतों का बीसवास लाना और मसीह
के लीये इसतीफान का पकड़ा जाना ६—१५।

१ और उन दीनों में जब सीष्यन की बढ़ती होने लगीं युनानी
इब्रानीयों के बीरुध कुड़कुड़ाने लगे कयोंकी परती दीन की
२ सेवा में उनकी बीधवा छोड़ी जाती थीं। तब उन बारह ने
सीष्यों की मंडली को बुला के कहा, यह उचीत नहीं की हम
३ इसर के बचन को छोड़ के खाने पीने की धंधा में रहें। सो
हे भाइयो अपने में से सात परखे हुए मनुष्य को चुनो जो
धरमातमा और बुध से भरे हुए हों जीनहें हम इस काज
४ पर ठहरावें। और हम आप परारथना में और बचन की
५ सेवा में नीत लवलीन रहेंगे। सो उस बचन से सारी मंडली
परसंन हुइ और उनहों ने इसतीफान को, जो बीसवास और
धरमातमा से भरा हुआ था और फीलबुस और परकरस
और नीकानुर और तैमुन और पारमनास और अंताकी
६ नया यहूदी नीकलाउस को चुन लीया। उनहें जीनहों ने
परेरीतों के आगे धरा और वे परारथना करके उन पर हाथ
७ रखे। और इसर का बचन बढ़ा और यरोसलीम में सीष्यों
की गीनती बहुत बढ़गइ और याजकों की बड़ी मंडली भी
८ बीसवास के अधीन हुइ। और इसतीफान अनुगरह और
सामरथ से पुरन होके बड़े बड़े आसचरज और लछन लोगों
९ को दीखाया कीया। तब लीबरतीयों और करीनीयों और
सीकंदरीयों और कलकीया और आसीया के लोगों की मंडली
१० में से कीतने उठके इसतीफान से बीबाद करने लगे। और
वे उस के गयान और आतमा की बारता के सामने ठहर न सके।
११ तब वे लोगों को उभाड़ के बुलवाये की हम ने उसे मुसा और
१२ इसर के बीरुध में पाखंड बकते सुना है। और उनहों ने
लोगों को और पराचीनों और अधापकों को उसकाया और

१३ लपक के उसे पकड़ा औान सभा में प्योंय ले गये। औान झुठी
साप्पी प्पड़े कीद्ये जीनहों ने कहा की यह मनुप्प इस पवीतन
सथान के औान वैवसथा के वीप्पय में पाप्पंडता वकना नहीं
१४ छोड़ता है। कयोंकी हम ने उसे कहते सुना है की यह यसु
नासनी इस सथान को नास कनेगा औान उन वेवहानों को,
१५ जो मुसा ने हम सभों को सैंपा पलट डालेगा। औान सभा
के साने वैठवैयों ने उस पन टक लगाके दीनीस्ट की औान उसके
नुप को देप्पा की दुत के समान ऊआ।

७ सातवां पनव।

यऊदीयों का समायान इवनाहीम के समय से
इसतीफान का वननन कनना १—५० सुनवैयों पन
दोप्प लगाना ५१—५३ उनका कनोधीत होना
औान इसतीफान को घात कनना ५४—६०।

१ तव पनधान याजक ने पुछा की ये वातें योंहीं हैं ?।
२ वुह वोला की हे मनुप्प भाइयो औान हे पीतनो सुनो प्पनान
में वसने से पहीले जव हमाना पीता इवनाहीम इनमनहन में
३ था तेजोमय इसन उस पन पनगट ऊआ। औान उसे कहा की
अपने देस औान अपने कुटुंव में से नीकल जा औान जो देस मैं
४ तुझे दीप्पाउंगा उस में यला आ। तव उसने कलदीयों के
देस से नीकल के प्पनान में वास कीया औान जव उसका पीता
मन गया वुह वहां से इस देस में उठ आया जीस में अव तुम
५ लोग वसते हो। औान उसने उसे वहां कुछ अधीकान पैनभन
भुम लों न दी पन उसने वयन दीया की मैं इसे तेने औान तेने
पीछे तेने वंस के वस में देउंगा औान तव उसका कोइ पुतन न
६ था। औान इसन ने उसे युं कहा की तेना वंस पनदेस में जा
नहेगा औान वे उनहें वंधुआ कनेंगे औान यान सै। वनस लों

७ उनकी दुरदसा करेंगे। और इसर ने कहा की जीन लोगों
के वे दास होंगे मैं उनका नयाय़ करुंगा और उसके पीछे वे
८ बाहर आवेंगे और इस सथान में मेरी सेवा करेंगे। और
उसने उसे खतरः का नीय़म दीय़ा और उस से इसहाक़ उतपंन
हुआ और आठवें दीन उसका खतरः कीय़ा और इसहाक़ से
य़ाकुब़ और य़ाकुब़ से घराने के ब़ारह पीतरायक उतपंन हुऐ।
९ और पीतरायकों ने डाहके मारे य़ुसफ़ को मीसर में बेंच्या
१० परंतु ईश्वर उसके संग था। और उसने उसको सारे कसट से
छुड़ाय़ा और मीसर के राजा फ़रऊन के आगे उसे अनुगीरह
और बुध दी और उसने उसे मीसर का और अपने सारे घर
११ का अधक्ष कीय़ा। अब मीसर के सारे देस और कीनान में
अकाल पड़ा और ब़ड़ा कलेस हुआ और हमारे पीतरों को कुछ
१२ जीवका न मीलती थी। परंतु जब य़ाकुब़ ने सुना की मीसर
१३ में अंन है उसने पहीले हमारे पीतरों को भेजा। और दुसरे
ब़ेर य़ुसफ़ ने आप को अपने भाइय़ों पर परगट कीय़ा और
१४ य़ुसफ़ का घराना फ़रऊन को जाना गय़ा। तब य़ुसफ़ ने
भेज कर अपने पीता य़ाकुब़ और अपने सारे घराने को जो
१५ पचहत्तर प्रानी थे बुलवाय़ा। सो य़ाकुब़ मीसर को उतर
१६ गय़ा और वुह और हमारे पीतर मर गय़े। और उन्हें
सखीम में ले गय़े और उस समाध में गाड़ा जीसे इब्राहीम
ने कुछ दाम देके हमुर के ब़ेटे सखीम के पीता से मोल लीय़ा
१७ था। परंत जब उस ब़चन का समय़ नीकट पहुंच्या जीस पर
इसर ने इब्राहीम से कीरीय़ा खाइ थी तब लोग अधीक हुऐ
१८ और मीसर में ब़ढ़ गय़े। जब लों दुसरा राजा हुआ जो
१९ य़ुसफ़ को न जानता था। उसने हमारी जात पांत से छल
करके हमारे पीतरों से बुरा ब़ेवहार कीय़ा इहां लों की उनके
ब़ंस को नसट करने को उसने उनके बालकों को भी बाहर
२० नीकलवा दीय़ा। उसी समय़ में मुसा उतपंन हुआ जो बहुत

सुनदन था औन तीन मास लों अपने पीता के घन में पाला गया।
२१ औन जव वुह नीकला गया तो फनउन की पुतनी ने उसे लेके
२२ अपना ही पुतन कनके पाला। औन मुसा ने मीसनीयों की
२३ सानी वीदया पढ़ी औन वुह वोलयाल में नीपुन था। औन
जव पुने यालीस वनस का ऊआ तो उसके मन में आया की
२४ अपने भाइ वंद इसनाइल के सनतानों से भेंट कने। औन
उन में से ऐक को सताया ऊआ देप्प के उसने सहाय की औन
उस मीसनी को घात कनके उसका पनतीफल लीया जीस पन
२५ उपदनव ऊआ था। कयोंकी उसने समझा था की उसके भाइ
वंद जान जायेंगे की इसन उनहें उसके हाथ से उघान देगा
२६ पनंतु उनहों ने न समझा। फेन दुसने दीन जव वे झगड़ नहे
थे वुह उन पास आया औन याहा की उनहें मीला देवे औन
वोला की हे मनुप्पो तुम तो भाइ हो तुम ऐक दुसने को कयों
२७ सताते हो ? पनंतु जीसने अपने पनोसी को सताया था उसे
हटा के कहा की तुझे कीसने हम पन अधक्ष औन अगयाकानी
२८ कीया है ?। कया जैसा तु ने कल मीसनी को घात कीया मुझे
२९ भी घात कनेगा ?। उस कहने पन मुसा भागा औन मदीयुन
३० देस में जा नहा जहां उस से दो वेटे उतपंन ऊऐ। औन जव
यालीस वनस वीत गये तव पनभु का दुत सीना पनवत के वन
में ऐक झाड़ी में आग की लवन में उस पन पनगट ऊआ।
१ उसे देप्पतेही मुसा उस दनसन से वीसमीत ऊआ औन जव
वुह नीकट गया की उसे अछी नीत से देप्पे तो पनभु का सवद
२ यह कहते ऊऐ उस पास आया। की मैं तेने पीतनों का इसन
इवनाहीम का इसन इसहाक का इसन याकुव का इसन ऊं
तव मुसा कांप गया औन उसे देप्पने को हीयाव न ऊआ।
३३ तव पनभु ने उसे कहा की जुती अपने पाओं से उतान कयोंकी
३४ जीस सथान पन तु प्पड़ा है सो पवीतन भुम है। अपने लोगों की
दुनदसा जो मीसन में हैं नीसयय मैं देप्प नहा ऊं औन मैं ने

उन का बीलाप सुना और उनहें छुड़ाने को उतरा हूं अब
३५ तु इधर आ मैं तुझे मीसर में भेजुंगा। यह मुसा जीसे उनहों
ने मुकर के कहा की कीस ने तुझे हम पर परधान और नयाइ
कीया? उसी को उस दुत की ओर से, जो झाड़ी में उस पर
दीखाइ दीया इसर ने परधान और उधारक करके भेजा।
३६ वही मीसर के देस में और लाल समुदर में और बन में
चालीस बरस आसचरज और लछन दीखा के उनहें बहार
३७ नीकाल लाया। यही है वुह मुसा जीसने इसराइल के संतान
को कहा की परभु इसर तुमहारे भाइयों में से मेरे समान एक
भवीसदबकता को तुमहारे लीये उदय करेगा तुम उसकी
३८ सुनयो। यह वुह है जो मंडली के बीच बन में उस दुत और
हमारे पीतरों के संग, जो सीना परबत में उस से बोला उसी ने
३९ हमें देने को जीवत बचन पाया। हमारे पीतर उसे मानने
को न चाहते थे परंतु अपने पास से दुर कीया और अपने
४० मन से मीसर को फीर गये। और हारन को कहा की हमारे
लीये ऐसे देव बनाओ जो हमारे आगे आगे चलें कयोंकी लीस
मुसा ने हमें मीसर की भुम से बाहर नीकाला हम नहीं जानते
४१ की वुह कया हुआ। और उन दीनों में उनहों ने एक बछड़ा
बनाया और मुरत के लीये बल चढ़ाया और अपने हाथ के
४२ कारजों से मगन हुए। तब इसर ने फीरके आकास के सेना
की पुजा करने को उनहें छोड़ दीया जैसा की भवीसदबकतों
की पुसतक में लीखा है की हे इसराइल के घराने तुमहीं
लोगों ने चालीस बरस बन में मुझे भेंट और बलदान चढ़ाये।
४३ हां तुम सभों ने मलुक के तंबु को और अपने देव रंफान की
तारा को, अरथात उन मुरतीन को उठाया जो तुम लोगों ने
पुजा करने को बनाइ इस लीये मैं तुमहें बाबुल से परे ले
४४ जाउंगा। हमारे पीतरों के साथ साखी का तंबु बन में था
जैसा उसने ठहराया था जीसने मुसा से बातें कीं, की जैसा तु ने

४५ देष्पा था उसी डौल का प्रेक व्रना। उसे हमाने व्राप दादे
पाके य़सुश्र के संग श्रदेसीय़ों के देस में लाय़े जीनहें हमाने
पीतनों के श्रागे से दाउद के समय़ लों इसन दुन कनता नहा।
४६ उसने इसन के श्रागे श्रनुगीनह पाके याहा की य़ाकुव्र के इसन
४७ के लीय़े प्रेक तंव्रु व्रनावे। पर्नतु सुलेमान ने उसके लीय़े मंदीन
४८ व्रनाय़ा। तथापी हाथ के व्रनाय़े ऊप्रे मंदीनों में श्रती महान
४९ नहीं नहता जैसा की भवीसदव्रकता कहता है। की सनग
मेना सींहासन श्रौन पीनथीवी मेने पांव की पीढ़ी है पनभ्रु कहता
है तुम लोग मेने लीय़े कौनसा घन व्रनाश्रोगे? श्रथवा मेने
५० व्रीसनाम का कौनसा सथान है?। कय़ा मेने हाथ ने य़े सानी
५१ व्रसतें नहीं व्रनाई?। हे कठोन गले श्रौन मन श्रौन कान
के श्रप्पतनः तुमलोग श्रपने श्रपने पीतनों के समान नीत घनमा-
५२ तमा का वीनोध कनते हो। कौन से भवीसदव्रकतों को
तुमहाने पीतनों ने न सताय़ा? श्रौन उनहों ने उनहें मान
डाला जीनहों ने उस घनमी के श्राने के श्रागे से संदेस दीय़ा
श्रौन तुम लोग श्रव्र उसके पकड़ाउ श्रौन व्रधीक ऊप्रे हो।
५३ तुमहों ने व्रैवसथा को दुतों की श्रोन से पाय़ा श्रौन न माना।
५४ य़े व्रातें सुनतेही वे श्रपने मन में कट गय़े श्रौन उस पन दांत
५५ कीयकीयाने लगे। पनतु घनमातमा से पुनन होके उसने
सनग की श्रोन घय़ान से देष्पा श्रौन इसन के प्रेसनय़ को
५६ श्रौन य़सु को इसन के दहीने हाथ ष्पड़ा देष्पा। श्रौन कहा
की देष्पो मैं सनगों को ष्पुला श्रौन मनुष्य के पुतन को इसन के
५७ दहीने हाथ ष्पड़े देष्पता ऊं। तव्र उनहों ने व्रड़े सव्रद से चीला
के श्रपने कान को मुंद लीय़ा श्रौन प्रेक साथ उस पन लपके।
५८ श्रौन नगन से व्राहान नीकाल के उस पन पथनवाह कीय़ा श्रौन
साष्पीय़ों ने श्रपने कपड़े को सुलुस नाम प्रेक तनुन के पांव पास
५९ नष्प दीय़ा। श्रौन इसतीफान को य़ह कहके पनानथना कनते
की हे पनभ्रु य़सु मेने पनान को गनहन कन उनहों ने पथनवाह

६० कीआ। औन वह घटने टेकके वड़े सवद से पुकान के बोला
की हे पनभु यह पाप उन पन मत घन औन यह कहके
सो गया।

८ आठवां पनव्।

पनभु के सीष्पों का सताया जाना १—३ मत का
फैलना ४—१३ पतनस औन युहना का सीष्पों
को दीनढ़ कनना १४—२५ फैलवुस के दुवाना से
हवसी पनघान का सनान पाना २६—३८ फैलवुस
का मंगल समायान का उपदेस कनना ३९—४०।

१ औन सुलुस भी उसके घात से पनसंन था औन उस समय में
यनोसलीम की मंडली पन वड़ा उपदंनव हुआ औन पनेनीतों
को छोड़ सवके सव यहूदीअः औन सामनः के देस में वीथन
२ गये। औन भकतों ने इसतीफान को गाड़ा औन उसके लीये
३ वड़ा वीलाप कीया। औन सुलुस घन घन घुसके मंडली का
सतयानास कीया कनता था औन पुनुष्पों औन इसतीनीयों
४ को प्पींय प्पींय वंदीगीनह में डालता था। पन जो छीन भीन
हुऐ थे सो हन ऐक सथान में जा जा के वयन को पनयानते
५ गये। तव फैलवुस ने सामनः के नगन में जा के मसीह का
६ उपदेस कीया। औन लोगों ने उन लछन को, जो फैलवुस
दीष्पावता थ, सुनके औन देष्पके ऐक मत हो उसकी वातें यीत
७ लगा के सुनी। कयोंकी अपवीतन आतमा वहुतेने गनसतों से
वड़े सवद से यीला के नीकले औन वहुतेने अनघांगी औन
८ लंगड़े यंगे हुऐ। औन उस नगन में वड़ा आनंद हुआ।
९ पनंत उसी नगन में उस से पहीले समउन नाम ऐक मनुष्प था
जीसने टोना से सामनः के लोगों को मोह लीया था औन कहता
१० था की मैं वड़ा कोइ हूं। औन छोटे से वड़े लों सव उसकी

पनतीत कनके कहते थे की यह मनुष्य इसन का बड़ा पनाकनम
११ है। और उसके टोना से उनहें मोह लेने के कानन वे उसके
१२ वीसवासी हो नहे थे। पनंतु जव उनहों ने इसन का नाज और
यसु मसीह के नाम के वीष्ये में फीलवुस को पनयानते सुना
तो कया पुनुष्य कया इसतीनी वीसवास ला ला के सनान पावने
१३ लगे। तव समउन आप भी वीसवास लाया और सनान पाके
फीलवुस के संग नहा कीया और आसयनज कनम और बड़े
१४ लछन, जो पनगट हुए थे देष्य के वीसमीत हुआ। जव
यनोसलीम में के पनेनोतों ने सुना की सामनीयों ने इसन के
वयन को गनहन कीया उनहों ने पतनस और युहना को उन
१५ पास भेजा। उनहों ने वहां जाके उनके लीये पनानथना की
१६ कीसतें वे धनमातमा को पावें। (कयोंकी अव लों वुह उन में
से कासी पन न पड़ा था केवल उनहों ने पनभु यसु के नाम से
१७ सनान पाया था)। तव उनहों ने उन पन हाथ धने और
१८ उनहों ने धनमातमा को पाया। और जव समउन ने देष्या
की पनेनीतों के हाथ धनने से धनमातमा दीया जाता है तो
१९ वुह उनहें नोकड़ देने लगा। की मुझे भी यही पनाकनम देओ
२० की जीस पन मैं अपना हाथ धनुं वुह धनमातमा पावे। तव
पतनस ने उसे कहा की तेना नोकड़ तेने संग नसट होय इस
लीये की तु ने समझा की इसन का दान नोकड़ से मोल लीया
२१ जाता है। इस वसतु में तेना भाग अथवा अधीकान नहीं
२२ है कयोंकी इसन की दानीसट में तेना मन ष्पना नहीं। इस
लीये अपनी इस दुसटता से पसयाताप कन और इसन से
पनानथना कन कया जाने तेने मन की यीनता छमा की जाय।
२३ कयोंकी मैं देष्पता हुं की तु कड़ुआहट के पीते में और पाप के
२४ वंधन में है। तव समउन ने उतन देके कहा की तुम मेने
लीये पनभु से पनानथना कनो की उन वसतुन में से जो तुम
२५ ने कही हैं कुछ मुझ पन न पड़े। और वे साष्पी देके और

प्रभु का बचन प्रचार के यिरोसलीम को फिरे और सामरी-
२६ यों के बहुत से गांवों में मंगल समाचार प्रचारा। और
प्रभु का दूत फिलिप्पुस को यह कहके बोला की उठ और
दक्खिन की ओर उस मारग में जा जो यिरोसलीम से गजः को
२७ जाता है और बन है। वह उठके चला गया और देखो की
एक हबसी खोजा, जो हबस की रानी कंदाकी का एक बड़ा
परधान और उसके सारे घर का भंडारी था और यिरोसलीम
२८ में सेवा के लीये आया था। वह फीरा चला जाता था और
अपने रथ पर बैठा हुआ यशीयाह भवीसदबकता के बचन को
२९ पढ़ता था। तब आतमा ने फिलिप्पुस को कहा की पास जा
३० और अपने को इस रथ से मीला। तब फिलिप्पुस ने उधर
दौड़ के उसे यशीयाह भवीसदबकता को पढ़ते सुना और उसे
३१ कहा की जो आप पढ़ते हैं सो समझते हैं?। वह बोला की
बीना कीसी के बताये मैं कयोंकर समझ सकूं और उसने
३२ फिलिप्पुस को ऊपर बुलाके अपने पास बैठाया। और उस लीखे
हुए का स्थल जो वह पढ़ता था यह था की वह उस भेड़ की
नाईं घात के लीये पहुंचाया गया और मेमना की नाईं अपने
कतरवैया के आगे चुप चाप है सो उसने अपना मुंह नहीं
३३ खोला। उसकी दीनताई से उस का बीचार न होने पाया
और उसकी पीढ़ी के लोगों की चरचा कौन करेगा? कयोंकी
३४ उसका जीवन पीरथीवी से उठाया गया। और उस खोजे ने
फिलिप्पुस को उत्तर देके कहा की मैं बीनती करता हूं की
भवीसदबकता कीसके बीषै में यह कहता है? अपने अथवा
३५ दुसरे मनुष्य के?। तब फिलिप्पुस अपना मुंह खोल के उसी
३६ बचन से यिसु का भेद प्रचारने लगा। और जाते जाते वे
कीसी जल के पास पहुंचे तब खोजे ने कहा देखीये जल, अब
३७ मुझे स्नान पावने से कौनसी बात रोकती है?। फिलिप्पुस ने
कहा की जो आप सारे अंतःकरन से बीसवास लाये हैं तो जोग

है उसने उत्तर देके कहा की मैं ब्रीसवास लाता हूं की यीस
१८ मसीह ईसर का पुत्तर है। तब उसने रथ ख्ड़ा करने को
आगया की श्रोर फरैलबुस श्रोर ख्जा दोनों जल में उतरे
१९ श्रोर उसने उसे सनान दीया। श्रोर जब वे जल से ब्राहर
नीकले परभु के आतमा ने फरैलबुस को उठा लीया श्रोर ख्जे
ने उसे फेर न देख्या श्रोर वुह आनंद से अपने मारग यला
४० गया। परंतु फरैलबुस अजोतुस में दीख्याई दीया श्रोर
उसने जाते हुए सारे नगरों में कैसरीया में पहुंयने लों
उपदेस कीया।

९ नवां पत्रव।

साउल का बैर करना श्रोर आकास ब्रानी से फीरा-
या जाना १—९ हनानीया का उसे सनान देना
१०—१९ साउल का मसीह की परयारना श्रोर
यहूदीयों का उसके घात में रहना २०—२५ साउल
का यरोसलीम में सीख्यों में आना श्रोर यहूदीयों
के बैर से भाग नीकलना २६—३१ पतरस का एक
अरधांगी को यंगा करना श्रोर एक मीरतक को
जीलाना ३२—४३।

१ श्रोर अब लों सुलुस परभु के सीख्यों के ब्रीरोध में धमकी
श्रोर घात करने पर जी यलाके परधान याजक के पास गया।
२ श्रोर उस से दमीसक की मंडलीयों के लीये इस रीत की पत्री
मांगी की जो मैं कीसी को इस मत में पाऊं कया इसतीरी कया
३ पुरुख्य तो उन्हें ब्रांध के यरोसलीम में लाऊं। श्रोर जब वुह
यला जाता था श्रोर दमीसक के पास आया ऐसा हुआ की
४ आकसमात एक जोत सरग से उसके यारों श्रोर यमकी। तब
वुह भूम पर गीर पड़ा श्रोर यह कहते हुए एक सब्रद सुना की

५ सुलुस सुलुस तु मुझे कयों सताता है ?। उसने पुछा की हे
पनभु तु कौन है ? पनभु ने कहा की मैं यसु ऊं जीसे तु सताता
६ है पनडुयों पन लात चलाने में तेने लीये कठीन है। वुह
कंपीत श्रौन वीसमीत होके बोला, हे पनभु तेना इछा से मैं
कया करुं ? पनभु ने उसे कहा की उठ श्रौन नगन में जा श्रौन
७ जो कुछ तुझे कनना उचीत है सो कहा जायगा। श्रौन उसके
संग के जातनीक बीसमीत पड़े नह गये कयोंकी सबद को तो
८ सुनते थे पनंतु कीसी को न देखते थे। तब सुलुस भुम पन से
उठा श्रौन ऋांखें खोलते ऊये उसे कुछ सुझ न पड़ा पनंतु वे
९ उसका हाथ पकड़ के दमीसक में लाये। श्रौन वुह तीन दीन
१० लों बीना दीनीसट नहा श्रौन न खाया न पीया। श्रौन
दमीसक में हनानीया नाम एक सीख था जीसे पनभु ने दनसन
में कहा की हे हनानीया वुह बोला, हे पनभु देख मैं ऊं।
११ पनभु ने उसे कहा की उठके उस मानग को जा जो सीधा कहावता
है श्रौन सुलुस नाम एक तनसी मनुष्य को यऊदा के घन में
१२ ढुंढ कयोंकी देख वुह पनानथना ..नता है। श्रौन जीसनें
वुह ऋपनी दीनीसट फेन पावे उसने दनसन में हनानीया नाम
एक जन को भीतन ऋाते श्रौन ऋपने उपन हाथ धनते देखा।
१३ तब हनानीया ने उतन दीया की हे पनभु मैं ने बऊतों से उस
मनुष्य के बीखे में सुना है की उसने यनोसलीम में तेने सीधों
१४ के संग बऊत बुनाइ की है। श्रौन सब जो तेना नाम लेते हैं
उनहें बांधने को यहां भी पनधान याजकों की श्रौन से पना
१५ कनम नखता है। पनंतु पनभु ने उसे कहा की चला जा
कयोंकी ऋंनदेसीयों के श्रौन नाजा के श्रौन इसनाइल के
संतानों के ऋागे मेना नाम पऊंचाने को वुह मेने लीये चुना
१६ ऊऋा पातन है। कयोंकी मेने नाम के लीये उसे कैसा बड़ा
१७ दुख उठाना ऋवस है मैं उसे दीखाउंगा। तब हनानीया
नीकल के उस घन में गया श्रौन ऋपना हाथ उस पन नख के

कहा है भाइ सुलुस पनभु यसु ने, जो तहे उस मानग में, जीस
से त् आया है दनसन दीया मुहे भेजा है जीसतें तु अपनी
१८ दीनीसट पाके घनमातमा से भन जाय। और तुन्त उसकी
आंष्पों से कुछ छीलक से गीने और उसने ततकाल अपनी
१९ दीनीसट फेन पाइ और उठके सनान पाया। और कुछ
भोजन कनके वल पाया फेन सुलुस कइ दीन दमीसक में
२० सीष्पों के संग नहा। और तुनंत मंडलीयों में वुह पनयानने
२१ लगा की मसीह इसन का पुतन है। पनंतु सव जो सुनते थे
वीसमीत होके वोले कया यह वुह नहीं जीसने यनोसलीम में
उन पन उपदनव कीया जो इस नाम को लेते थे और यहां इस
लीये आया की उनहें वांध के पनधान याजकों के पास ले
२२ जाय। पनंतु सुलुस ने और भी दीनढ़ता की और दमीसक
के वासी यहूदीयों को पनमान ला ला के घवनाया की वही
नीसचय मसीह है।

२३ और वहुत दीन के वीतने में यहूदीयों ने उसे घात कनने को
२४ पनामनस कीया। पनंतु उनका मनसा सुलुस को जान पड़ा
और उसे घात कनने को उनहों ने नात दीन फाटकों की
२५ चौकसी की। तव सीष्पों ने नात को उसे लाया और भीत पन
२६ से टोकने में उतान दीया। और सुलुस ने यनोसलीम में
आके चाहा की सीष्पो में मीले पनंतु उसका सीष्प होना पनतीत
२७ न कनके वे उस से डन गये। तव वननवास ने उसे लेके पनेनीतों
पास पहुंचाया और जीस नीत से उसने पनभु को मानग में
देष्पा था और उस से वातता की और जीस नीत से दमीसक
में यसु के नाम को साहस से पनयाना उन से वननन कीया।
२८ और वुह यनोसलीम में उनके संग आता जाता था।
२९ और पनभु यसु के नाम के हीयाव से पनयानता था और यूना-
नीयों से वीवाद कनता था पनंतु वे उसके घात में लगे। यह
३० जानके भाइयों ने उसे कैसनीया में पहुंचाया और तनसस को

३१ ग्रौन व्रीदा कीग्रा। तव्र सानी य्रक्षदीय: की ग्रौन जलील की ग्रौन
सामन: की मंडलीग्रें ने चैन पाग्रा ग्रौन सुघन गग्रे ग्रौन पनभु
के भय में ग्रौन पनमातमा की सांत में चल चल के व्रढ़ गग्रे।
३२ ग्रौन ऐसा ऊग्रा की पतनस सनव्रतन फीनते लदा में के साधुन
३३ पास ग्राग्रा। ग्रौन वहां ग्रनीग्रास नाम एक मनुष्प के पाग्रा
३४ जो ग्रनधांगी होके ग्राठ व्रनस से ष्पाट पन पड़ा था। पतनस
ने उसे कहा की ग्रनीग्रास ग्रसु मसीह तुझे चगा कनता है
३५ उठ ग्रपना व्रीछौना सुधान ग्रौन वुह तुनंत उठा। तव्र लदा
ग्रौन सानुन के व्रासी उसे देष्प के पनभु का ग्रौन फीने।

३६ ग्रव्र य्राफा में ताव्रीता नाम एक सीष्पा थी जीसका ग्रनथ
३७ दनकास है वुह सुकनम ग्रौन दान से भनपुन थी। ऐसा ऊग्रा
की वुह उन दीनों में नोगी होके मनगई ग्रौन उसे नहला के
३८ एक उपनौटी कोठनी में नष्पा। ग्रौन जैसा की लदा य्राफा से
नीकट था सीष्पों ने पतनस का वहां होना सुनके दो मनष्प को
भेज के उसको व्रीनती की, की हमाने पास ग्रावने में व्रीलंव्र
३९ न कीजीग्रे। तव्र पतनस उठके उनके संग हो लीग्रा जव्र वुह
पऊंचा वे उसे उपनाटी कोठनी में लाग्रे ग्रौन सानी नाड़ें उस
पास ष्पड़ी होके नोती, कुढ़ती ग्रौन ग्रोढ़ने दीष्पाती थीं जो
४० दनकास ने उनके संग नहते ऊग्रे व्रनाग्रे थे। तव्र पतनस ने
उन सभा को व्राहन कीग्रा ग्रौन घुटना टेक के पनानथना की
ग्रौन लोथ का ग्रौन फीन के कहा की ताव्रीता उठ तव्र उसने
४१ ग्रपनी ग्रांष्पें ष्पोलीं ग्रौन पतनस को देष्प के उठ व्रैठी। ग्रौन
उसने हाथ देके उसे उठाग्रा ग्रौन साधुन को ग्रौन नाड़ों को
४२ व्रुलाके उसे जीवती उनहें सोंप दीग्रा। तव्र ग्रह सानी य्राफा
४३ में फैल गई ग्रौन व्रऊतेने पनभु पन व्रीसवास लाग्रे। ग्रौन
वुह व्रऊत दीन लों समउन नाम एक चनमकान के संग य्राफा
में नहा कीग्रा।

१० दसवां पनव्र।

ऐक दुत का कननीलोय़ुस पन पनगट होना और पतनस का व्रुलवाना १—८ पतनस का दनसन पाना ९—१६ आतमा की अगाय़ा से कननीलोय़ुस के दुतों के संग जाना १७—२३ पतनस से भेंट कनना और सव्र व्रातें उस पन पनगट कननी २४—३३ पतनस का उपदेस कनना ३४—४३ धनमातमा का उतनना और लोगों का सनान पाना ४४—४८।

१ कैसनीय़ः में कननीलोय़ुस नाम ऐक मनुष्य था जो अतालो-
२ कीनाम जथा का ऐक सतपती था। वुह भकत जन था और
अपने सारे घनाने समेत ईसन से डनता था और लोगों को
व्रहुत दान भी देता था और नीत ईसन की पनानथना कनता
३ था। उसने दीन की नवईं घड़ी क अंटकल में दनसन में ईसन
के दुत को अपने पास आते देष्या जीसने उसे कहा की कननी
४ लोय़ुस। वुह उसे देष्य के डन गय़ा और कहा की हे पनभु
कय़ा है? उसने उसे कहा तेनी पनानथना और तेने दान
५ समनन के लीय़े ईसन के आगे पहुंचे। अव्र य़ाफा में लोगों
६ को भेज और समउन को जीसका नाम पतनस है व्रुला। वुह
ऐक समउन चनमकान के संग नहता है जीसका घन सागन
७ तीन है जो कुछ तुझे कनना उचीत है वुह तुझे कहेगा। और
जव्र वुह दुत कननीलोय़ुस से कहके चला गय़ा तो उसने अपने
सेवकों में से दो को और उन में से जो नीत उसके पास नहते
८ थे ऐक जोधा भकत को व्रुलाय़ा। और सव्र व्रातें उनहें कह
९ के य़ाफा में भेजा। अगीले दीन जाते जाते जय़ों वे नगन के
पास पहुंचे तो पतनस छटवीं घड़ी के अटकल में कोठे पन
१० पनानथना कनने को चढ़ा। और उसे व्रड़ी भुष्य लगी और
कुछ ष्याने चाहा पनंतु जव्र वे व्रना नहे थे वुह व्रेसुध हुआ।

११ और सरग को खुला और चार खुंट बंधी हुई एक बड़ी
चादर की नाईं अपने पास उतरते भुम लों पहुंचते हुए कुछ
१२ देख्या। जीसमें पीरथीवी के सारे परकार के चौपाए और
१३ बनैले पसु और रेंगवैये और आकास के पंछी थे। और एक
१४ सब्द उस पास आया की उठ पतरस मार और खा। तब
पतरस बोला की हे परभु ऐसा नहीं कयोंकी मैं ने कभी कोई
१५ सामान अथवा असुध बसतु नहीं खाई। तब दुसरे बेर उस
पास फेर सब्द आया की जो ईसर ने पवीतर कीया है तु
१६ सामान मत कह। यह तीन बार हुआ और वुह पातर फेर
१७ सरग पर उठाया गया। सो जब लों पतरस मन में संदेह
कर रहा था जो दरसन मैं ने देख्या उसका कया अरथ है देखो
करनीलीयुस के भेजे हुए मनुख्य समउन का घर पुछके दुवार
१८ पर खड़े हुए। और पुकार के पुछा, कया समउन जो पतरस
१९ कहावता है यहां रहता है?। जब पतरस उस दरसन को
सोच रहा था तो आतमा ने उसे कहा की देख तीन मनुख्य
२० तुझे ढुंढ़ते हैं। इस लीये उठ और उतर के नीसंदेह उनके
२१ संग चला जा कयोंकी मैं ने उनहें भेजा है। तब पतरस ने
उन मनुख्यों के पास, जो करनीलीयुस के भेजे हुए थे उतर
जाके कहा की देखो वुह जीसे तुम लोग ढुंढ़ते हो मैं हुं कया
२२ कारन है कीस लीये आये हो?। वे बोले की करनीलीयुस
सतपती को, जो धरमी मनुख्य और ईसर से डरता है और
यहुदीयों के सारे लोगों में सुनाम ईसर की ओर तें एक
पवीतर दुत से सीखाया गया की तुझे अपने घर बुलावे और
२३ तुझ से बातें सुने। तब उसने उनहें भीतर बुला के उनका
सीसटाचार कीया और दुसरे दीन पतरस उनके संग गया और
२४ याफा में के कई भाई उसके संग हो लीये। और दुसरे दीन
वे कैसरीय: में पहुंचे और करनीलीयुस अपने कुटुमब और
२५ परमहीतों को एकठे करके उनकी बाट जोहता था। पतरस

के भीतर जाते जाते कर्नीलीयुस ने उस से भेंट कर उसके
२६ चरन पर गीर दंडवत की। परंतु पतरस ने उसे उठा के कहा की
२७ खड़ा हो मैं आप भी मनुष्य हूं। और वुह उस से बातें
करता हुआ भीतर गया और बहुत से लेगों को एकठे पाया।
२८ और उन्हें कहा की तुम लेग जानते हो की यहूदी को
अनुचीत है की अनदेसी से संगत करें अथवा उसके यहां
जायें परंतु ईस्वर ने मुझे दीखाया है की मैं कीसी मनुष्य को
२९ साम न अथवा असुध न कहूं। इसी लीये मैं जो बुलाया गया
नीसंदेह आया सो मैं पुछता हूं की तुम्हों ने मुझे कीस लीये
३० बुलाया है? कर्नीलीयुस ने कहा, चार दीन बीते मैं ईस
घड़ी लों ब्रत करता और नवईं घड़ी में अपने घर में प्रार्थना
करता था और क्या देखता हूं की एक मनुष्य झलकते
३१ बसतर में मेरे सनमुख खड़ा है। और बेला की हे कर्नी-
लीयुस तेरी परार्थना सुनी गई और तेरे दान ईस्वर के आगे
३२ समरन कीये गये। सो याफा में भेज और समउन को,
जो पतरस कहावता है यहां बुला वुह सीमन चीरसमउन
चरमकार के घर में टीका है वह जब आवेगा तुझे कहेगा।
३३ ईस लीये तुरंत मैं ने आप पास भेजा और आने में आपने अच्छा
कीया सो अब हम सब यहां ईस्वर के आगे बटुरे हैं जीसतें
३४ सब बातें जो आप से ईस्वर ने कहीं हैं सुनें। तब पतरस ने
मुंह खोल के कहा की मुझे ठीक समझ पड़ता है की ईस्वर
३५ मनुष्यों में भींन भाव नहीं करता। परंतु हर एक जात में
जो उस से डरता है और धरम का काज करता है सो उसको
३६ गराह्य है। यह वही संदेस है जीसे ईस्वर ने यसु मसीह के
द्वारा से कुसल परचारते हुए ईसराईल के संतानों का कहला
३७ भेजा वुह सब का परभु है। तुम यस का वुह समाचार जानते
हो जो यहाया के सनान के परचारने के पीछे जलील से
३८ आरंभ होके सारे यहूदीयः में होता रहा। की ईस्वर ने

करनील से उसे परमात्मा से और पराक्रम से अभीषेक
कीया जो भला करता फीरा कीया और भूत से सताए हुए
लोगों को चंगा करता रहा क्योंकी ईसर उसके संग था।
३९ और हम लोग उन सब बातों के साक्षी हैं जो उसने यहूदीयों
के देस में और यरूसलीम में कीया जीसे उनहों ने लकड़े पर
४० टांग के मार डाला। परंतु ईसर ने उसे तीसरे दीन उठाया
४१ और उसे प्रगट कर दीखाया। पर सब लोगों को नहीं परंतु
साक्षीयों को अरथात हम लोगों को जो पहीले से ईसर के
चुने हुए थे जीनहों ने उसके जी उठने के पीछे उसके संग खाया
४२ पीया। और उसने लोगों में परचारने और साक्षी देने को
हमें अगय़ा की, का जीवतों और मीरतकों का नयाइ होने
४३ को ईसर ने मुझे ठहराया है। उस पर सारे भवीसदबकता
साक्षी देते हैं की जो कोइ उस पर बीसवास लावेगा उसके नाम
४४ से पाप का मोचन पावेगा। जब पतरस ये बातें कह रहा था
४५ तो सारे सुनवैयों पर परमातमा पड़ा। और खतनः कीये
गये बीसवासी जो, पतरस के संग आये थे बीसमीत हुए की
४६ अंनदेसीयों पर भी परमातमा का दान बहाया गया। क्यों-
की उनहों ने उनहें भांत भांत की बोली बोलते और ईसर की
४७ सतुत करते सुना। तब पतरस ने उतर दीया की कोइ जल
को रोक सकता है जीसतें ये लोग सनान न पावें? जीनहों ने
४८ हमारी नाइ परमातमा को पाया है। तब उसने उनहें परभु
के नाम से सनान देने की अगय़ा की फेर उनहों ने कइ दीन
अपने यहां रहने को उसकी बीनती की।

११ गय़ारहवां पत्र।

अंनदेसीयों में जाने का पतरस का दोष पाना
और उस का उतर देना १—१८ बरनबास का

अनतीओक में भेजा जाना ग्रौर सउल के संग उपदेस करना २०—२९ व्रनवास ग्रौर सउल के दुवारा से यहूदीयः के भाइ पास सहाय भेजनी २७—३० ।

१ अव पत्रेरीतों ग्रौर यहूदीयः में के भाइयों ने सुना की ग्रन-
२ देसीयों ने भी इसन का व्रचन ग्रहन कीया। ग्रौर जव
पतरस यरोसलीम में ग्राया तो खतनः कीये गये लोगों ने उस
३ से व्रीवाद करके कहा। की तु अखतनों के पास गया ग्रौर
४ उनके संग खाया है। तव पतरस ने ग्रारंभ से उस व्रात को
दोहराया ग्रौर उनके ग्रागे ढव से व्ररनन करके कहने लगा।
५ की मैं याफा के नगर में पराथना करता था ग्रौर व्रे सुध
हो के मैं ने सरग से उतरते हुए चारों खुंट व्रंधे हुए एक
६ चदर की नाइं अपने पास ग्राते एक दरसन देखा। धयान
से ताकते हुए मैं ने भुम के चौपाए ग्रौर व्रन पसु ग्रौर कीड़े
७ मकोड़े ग्रौर ग्राकास के पंछीयों को देखा। ग्रौर मुह से कहते
८ हुए मैं ने एक सव्रद सुना की उठ पतरस मार ग्रौर खा। तव
मैं व्रोला की ऐसा नहीं हे परभु कयोंकी कोइ सामान ग्रथवा
९ अपवीत्र व्रसतु मेरे मुंह में कधी नहीं पड़ी। ग्रौर सरग से
उतर में मुझे फेर सव्रद ग्राया की जो कुछ इसन ने पवीत्र
१० कीया है उसे तु सामान मत कह। यह तीन व्रार हुग्रा तव
११ सव्र सरग में फेर खींच गये। ग्रौर कया देखता हुं की
ततकाल उस घर में जहां मैं था कैसरीया से भेजे हुए तीन
१२ मनुष्य मेरे पास पहुंचे। ग्रौर ग्रातमा ने नीसचीनत उनके
संग जाने को मुझे अगया की ग्रौर ये छः भाइ भी मेरे संग
१३ हुए ग्रौर हम उस मनुष्य के घर में गये। तव उस ने हमें कहा
की कीस रीत से मैं ने अपने घर में दुत को मुझे यह कहते
हुए खड़े देखा की लोगों को याफा में भेज ग्रौर समउन को

१४ जो पतनस कहावता है वुला। वुह तुझे ऐसी व्रातें व्रता देगा
१५ जीन से तु अपने साने घनाने समेत मुकत पावेगा। औान
जयों मैं ने कहना आनंभ कीया तो जोस नीत से आनंभ में
१६ घनमातमा हम सव्र पन पड़ा था तैसा उन पन भी पड़ा। तव्र
मैं ने पनभु का व्रयन येत कीया की उसने कैसा कहा था की
यहीया ने तो जल से सनान दीया पनंतु तुम लोग घनमातमा
१७ से सनान पाओगे। सो जैसा की इसन ने उनहें वही दान
दीया जो हमें दीया जव्र की हम पनभु यसु मसीह पन व्रीसवास
१८ लाये मैं कौन था जो इसन को नोक सकता?। औान जव्र
उनहों ने ये व्रातें सुनीं तो मान लीया औान यह कहके इसन
की सतुन की, तो इसन ने अंनदेसीयों को भी जीवन के लीये
१९ पसयाताप दीया। अव्र जो उस व्रीपतके कानन छींन भींन
ङुए थे जो इसतीफरान के समय में पड़ी थी उनहों ने फरुनीकी
औान कुव्रनस औान अनताकीयः लों यले जाके यङ्दीयों को
२० छोड़ कीस को व्रयन का उपदेस न कीया। पनंतु उन में से
कीतने कुव्रनस औान कुनीनः के व्रासी थे जानहों ने अनताकीयः
में जाके युनानीयों से पनभु यसु का उपदेस कनके व्रातें कीं।
२१ औान पनभु उनका सहायक था औान व्रङ्गत से लोग व्रीसवास
२२ लाके पनभु की औान फीने। तव्र उन व्रातों का समायान
यनोसलीम की मंडली के कान लों पङ्गंया औान उनहों ने
२३ व्रननव्रास को भेजा की अंताकीयः लों जाय। वुह आके इसन
के अनुगीनह को देष्प के आनंः ङुआ औान उनहें उभाड़ा की
२४ मन की पुनी दीनढ़ता से पनभु से पीलये नहें। कयोंकी वुह
उतम मनुष्य औान घनमातमा औान व्रीसवास से भना ङुआ था
२५ औान व्रङ्गत लोग पनभु की औान व्रढ़ गये।तव्र व्रननव्रास सुलुस
२६ का ढुंढ़ने को तनसुस को यला गया। औान उसे पाके अनता-
कीयः में लाया औान ऐसा ङुआ की वे व्रनस भन मंडली में
एकठे नहे औान व्रङ्गत से लोगों को उपदेस कीया औान सीष्प

२७ लोग पहीले अनताकीयः में कीर्त सटीआन कहलाये। और
इनहीं दीनों में ज़वामदवृकता यीनोसलीम से अनताकीयः में
२८ आये। और उन में से अजवूम नाम एक ने उठ के आतमा
की ओर से वतलाया की सारे देस में वड़ा अकाल पड़ेगा जो
२९ कलादीयूस कैसन के दीनों में पड़ा हुआ। उस समय सीष्यों
में से हन एक ने अपने वीसात के समान यादहा की यहुदीयः
३० में के भाइयों के लीये कुछ भेजें। सो उनहें ने कीया और
वनवास और सुलुस के हाथ से पनायीनों के पास भेजा।

१२ वानहवां पनव।

हीनदीस नाजा का याकूव को घात करना और पतनस को वंदीगीनह में डालना १—४ दुत से छुड़ाया जाना ५—१७ हीनदीस का पहनुओं को घात करना और कैसनायः में जाना और अहंकार के मारे मारा जाना १८—२३ ईसन के वयन का फैलना और वननवास और सुलुस का अनताकीयः में फरान आना २४—२५।

१ और उसी समय में हीनुदीस नाजा ने मंडली में के कीतनों
२ को सताने के लीये हाथ डाला। और युहना के भाई याकूव
३ को तलवान से मान डाला। और जब उसने देष्पा की यह
यहुदीयों को अच्छा लगा तो उस से अधीक वनके पतनस को
४ भी अप्पमीनी नाटी के दीनों में पकड़ लीया। और उसने
उसे पकड़ के वंदीगीनह में डाला और उसकी चौकसी के लीये
जोघाओं के यान पहने को इस इच्छा से सौंपा की पानजाना
५ पनव के पीछे उसे लोगों कने पहुंचावे। सो वंदीगीनह में पत-
नस पड़ा था पनंतु मंडली में उसके लीये नीनंतन ईसन की
पनानथना होती थी।

६ और जव्र हीनदीस ने उसे व्राहन नीकालने याहा उसी नात
दो जोचओं के मघ में पतनस दो सीकनों से जकड़ा हुआ
सोता था और पहनु वंदीगीनह के दुवन के सामने चौकसी
७ कनते थे। और देप्पो की इसन का दुत दीप्पाइ दीया और
उस घन में एक उंजीयाला चमका और उसने पतनस के पंजन
पन माना और उसे यह कहके जगाया की तुनत उठ, और
८ उसके हाथों से सीकनें गीन पड़ीं। और दुत ने उसे कहा की
कट व्राध और प्पनपा पहीन ले और उसन वैसाही कीया तव्र
९ उसे कहा की अपना ओढ़ना ओढ़के मेने पीछे हो ले। वुह
नीकल के उसके पीछे हो लीया और न जाना की यह जो दुत
१० ने कीया सत है पनंतु कुछ दोप्पा सा समझा। जव्र वे पहीले
और दुसने पहने में से नीकल गये तो नगन में जाने को लोहे
के फाटक पन पहुचे वुह आपसे आप उनके लीये प्पुल गया
और नीकलके वे सड़क में होके चले गये और उसी घड़ी
११ दुत उस पास से जाता नहा। तव्र पतनस ने चेत में आके कहा
अव्र मैं ठीक जानता हुं की इसन ने अपने दुत को भेजा और
हीनदीस के हाथ से और यहुदी लोगों की सानी आसा से
१२ मुझे छुड़ाया। और सोच के यह ना अनथात मनकस की माता
मनीयम के घन आया जहां व्रहुत से एकठे हो पनानथना कन
१३ नहे थे। और जव्रों पतनस ने दुवान के व्राहनी फाटक को
प्पटप्पटाया तो नुदा नाम एक कंनया व्रुझने को गई की वुह
१४ कौन है। और पतनस का सव्रद पहीचान के उसने माने
आनंद के फाटक न प्पोला पनंतु भीतन दौड़ के उनहें कहा
१५ की पतनस फाटक पन प्पड़ा है। वे व्रोले की तु व्रौड़ही है
उसने नीसचय से कहा की यूंहीं है तव्र वे व्रोले की उसका दुत
१६ है। पनंतु पतनस प्पटप्पटाता गया और जव्र उनहों ने प्पोल
१७ के उसे देप्पा तो असचनज माना। और उसने उनहें चुप
कनाने को हाथ से सैन कनके कहा और व्रननन कीया की

परन्तु सुहे वंदीगीनह से इस इस नीत से नीकाल लाया और
कहा की इन बातों को याकुब को और भाइयों को जनाओ
१८ फेर वुह नीकलके कीसी और सथान में गया। और जब
दीन हुआ तो जोधाओं में बड़ी घबड़ाहट हुई की पतनस
१९ कया हुआ। और हीरुदीस ने उस का षोज कीया पर जब
न पाया तो पहरुओं को जांच के उनहें घात करने को अगया
२० दी और वुह यहूदीयः से कैसरीया में जा रहा। और
हीरुदीस सुर और सैदा के लोगों से नीपट कोपीत था परंतु
वे एक मता होके उस पास आये और उनहों ने राजा के
सयन सथान के अधक्ष अरथात बीलासतुस को अपना और
करके मीलाप याहा इस कारन की उनके देस का पततोपाल
२१ राजा के देस से होता था। और ठहराए हुए दीन में हीरुदीस
ने राज बसतर पहीनके सींहासन पर बैठ कर उनसे बारता
२२ की। तब लोग पुकारके बोले की यह तो देव सबद का है मनुष्य
२३ का नहीं। परंतु इसर के दुत ने उसे मारा कयोंकी उसने
इसर की महीमा न की और वुह कीड़ों से खाया जाके मर
२४ गया। और इसर का बचन बढ़ा और बहुत हुआ।
२५ और बरनबास और सुलस अपनी सेवकाई को पुरी करके
युहना को, जीस की पदवी मरकुस थी अपने संग लीये हुए
यरोसलीम से फीरे।

१३ तेरहवां परब।

बरनबास और सलुस का धरमातमा का भेजा हुआ
उपदेस के लीये जाना १—४ उनके बैर करने से
इलीमास टोनहे का अंधा होना ५—१२ उनका
अंताकीयः में जाके उपदेस करना १३—४१ सारे
नगर का बचन सुनने को भीड़ करना और

यहूदीयों के पाखंड और बैर से पौलुस और बरन-
बास का खेदा जाना ४२—५२।

१ अब अंताकीयः की मंडली में कितने भविष्यद्वक्ता और
उपदेशक थे निज करके बरनबास और समऊन जो नीजार
कहावता था और लुकीयुस कुरीनी और मनाहेन जो चौथाई
२ के स्वामी हेरोदेस का दूध भाई था और सउलुस। जब वे
प्रभु के लीये मंडली में प्रार्थना और ब्रत करते थे
धर्मात्मा ने कहा की मेरे लीये बरनबास और सउलुस को
उस कार्ज के नीमीत अलग करो जीसके लीये मैं ने उन्हें
३ बुलाया है। तब उन्हों ने ब्रत और प्रार्थना करके हाथ
४ उन पर रख के उन्हें बीदा कीया। सो वे धर्मात्मा के
भेजे हुए सलुकीयः को गये और वहां से प्याल के कुबरस
५ को चले। और सालामीस में पहुंचके यहूदीयों की मंडली
में ईश्वर के बचन का उपदेश कीया और यूहन्ना उनका साथी
६ था। और उस टापु में पफरस लों सरबतर फीर के उन्हों ने
बारीसु नाम एक यहूदी को पाया जो टोनहा और झूठा
७ भविष्यद्वक्ता था। जो उस देश के अध्यक्ष सरजयुस पौलुस
परतीसठीत एक मनुष्य के संग था उसने बरनबास और सउलुस
८ को बुला के ईश्वर का बचन सुनने चाहा। परंतु टोनहा
इलमास ने, जीसके नाम का यही अर्थ है इस इच्छा से उस का
९ सामना कीया की अध्यक्ष को बीसवास से फेरे। तब सउलुस,
अर्थात पौलुस ने धर्मात्मा से पूरन होके ध्यान से देख के
१० कहा। अरे तू जो नीरे कपट और सारी दुसटता से भरा है
पीशाच के पुत्र और सारे धर्म के बैरी तू ईश्वर के सीधे
११ मारग को टेढ़ा करने से अलग न रहेगा?। और अब देख
प्रभु का हाथ तुझ पर पड़ा है और तू अंधा होजायगा और
कीतने दीन लों सुरज को न देखेगा और तुरंत उस पर कुहीरा

और अंधकार पड़ा और वुह ढुंढ़ता फीरा की कोइ उसका
१२ हाथ पकड़ के ले जाय। इस बात को देख के अधक्ष प्रभु के
१३ उपदेस से बीसमीत होके बीसवास लाया। तब पफुस से
खोल के पुलुस और उसके साथी पंफुलीय: के पिरजा में आये
परंतु यूहन्ना उनसे अलग होके यरोसलीम को फीर गया।
१४ तथापी वे पिरजा से होके पिसदीय: के अंताकीय: में आये और
१५ बीस्राम दीन मंडली में जा बैठे। और बेवस्था और भवीस
बचन के पढ़ने के पीछे मंडली के प्रधानों ने उनहें कहला
भेजा की हे मनुष्य भाइयो यदी लोगों के कारन कोइ उपदेस
१६ का बचन तुमहारे पास होवे तो कहो। तब पुलुस खड़ा हुआ
और हाथ से सैन करके बोला की हे इसराइली मनुष्यो और
१७ जो इसर से डरते हो सुनो। इसराइल के इन लोगों के इसर
ने हमारे पीतरों को चुन लीया और जब की वे मीसर देस
में परदेसी थे लोगों को उभारा और हाथ बढ़ा के उनहें वहां
१८ से नीकाल लाया। और चालीस बरस लों वुह बन में उनकी
१९ चाल सहता था। और जब उसने कीनान के देस में सात राज
गनों को छेद दीया उसने उनके देस को अधीकार के लीये बांट
२० दीया। और उन बातों के पीछे जीन में साढ़े चार सौ बरस
के लग भग बीत गये उसने समुइल भवीसदक्ता लों नयाइ
२१ दीये। और तब से उनहों ने एक राजा चाहा और इसर ने
चालीस बरस लों बनीयामीन की गोसट का एक जन अरथात
२२ कीस के बेटे साउल को उनहें दीया। और उसे अलग करके
उनका राजा होने को दाउद को उदय कीया और उसके
लीये यह साछी दी की मैं ने यससी के बेटे दाउद को अपना
२३ मनोनीत पाया जो मेरी सारी इछा को पुरा करेगा। इसी
मनुष्य के बंस से इसर ने अपनी बाचा के समान इसराइल के
२४ लीये एक मुकतदायक यसु को उदय कीया। और उसके
आने से आगे यहोया ने इसराइल के सारे लोगों को पछताव

२५ के सनान का उपदेस दीया। और जब युहीया अपनी दौड़
को पुरा करने पर था तब वुह बोला की तुम लोग मुझे कया
समझते हो मैं वुह नहीं हुं परंतु देषो मेरे पीछे एक आता है
२६ जीसके पांव की जुती षोलने के जोग मैं नहीं हुं। हे मनुष्य
भाइयो इब्राहीम के संतान और हे लोगो जो ईसर से डरते
२७ हो तुमहारे पास मुकत का यह वचन भेजा गया है। कयोंकी
युरोसलीम वासीयों ने और उनके परधानों ने न तो उसको
और न भवीसदबकतों की उन बातों को जाना जो हर
बीसराम दीन में पढ़ी जाती हैं उसे दोषी ठहरा के उनहें
२८ पुरा कीया। और यदपी उनहों ने उस पर मीरतु का कारन
२९ न पाया। तथापी उनहों ने पीलातुस से चाहा की वुह घात
कीया जाय और जब उनहों ने सब कुछ जो उसके बीषय में
लीषा था पुरा कीया तो उसे कुरुस पर से उतार के समाध
३० में रषा। परंतु ईसर ने उसे मीरतकों में से जीलाया।
३१ और जो उसके संग जलील से युरोसलीम में आये थे वुह
उनहें बहुत दीन लों दीषाई दीया जो लोगों के आगे उसके
३२ साषी हैं। और हम तुमहें मंगल समाचार सुनाते हैं की
३३ जो बाचा पीतरों से की गई थी। उसे ईसर ने यसु को फेर
जीलाने से उनके संतान हमारे लीये पुरा कीया है जैसा दुसरे
भजन में भी लीषा है की तु मेरा पुतर है आज तु मुझ से
३४ उतपंन हुआ। और इस कारन से उसे जीलाया की वह सड़
न जाय उसने युं कहा की मैं तुमहें दाउद की ठीक दया देउंगा।
३५ इस लीये उसने दुसरे सथल में भी युं कहा की तु अपने धारमीक
३६ को सड़ने न देगा। दाउद तो अपने समय को पुरा करके
ईसर की इछा पर सो गया और अपने पीतरों में बटुर गया
३७ और सड़ गया। परंतु जीसे ईसर ने उठाया सो सड़ न गया।
३८ इस लीये हे मनुष्य भाइयो तुमहें जानाजाय की पापों से
उधार उसी के दुवारा से तुम सभों के लीये पाप मोचन का

३९ उपदेस कीआ जाता है। और हन ऐक बीसवासी उसी की
और से सारे बसतुन से नीनदोष्प है जीनसे तुम लोग मुसा
४० की बेवसथा से नीनदोष्प नहीं हो सकते थे इस लीऐ चौकस
होओ न होवे की जो भवीसदबकता की पुसतकों में कहा गया
४१ है सो तुमहों पन आ पड़े। की देष्पो हे नींनदको और
आसचरज कनो और नास हो जाओ की मैं तुमहारे समय
में ऐक ऐसा कारज करता हूं की यदपी कोइ तुमहें सुनावे
४२ तुम लोग उसकी पनतीत न कनोगे। पनंतु जब यहूदी मंडली
से नीकल जाते थे अदेसीओं ने याहा की ये बचन दूसरे
४३ बीसराम में हम सभों से कहे जायें। और जब भीड़ छुट गई
बहुत से यहूदी और नये भकत पुलुस और बननबास के पीछे
हो लीये और उनहों ने उनसे बात चीत करके उपदेस कीआ
की तुम लोग इसर के अनुगीनह में मीले नहो।
४४ और अगीले बीसराम में सारे नगन के लगभग इसर का
४५ बचन सुनने को ऐकठे आये। पनंतु यहूदी मंडलीओं को
देष्प के डाह से भर गये और बीनोध करते और पाष्पंड
४६ बकते पुलुस के बचन के बीनुध कहा। तब पुलुस और
बननबास ने मन मंता कहा अवेस था की इसर का बचन पहीले
तुमहें कहा जाता पनंतु जैसा की तुम लोग उसे टाल देते हो
और अपने को अनंत जीवन के अजोग ठहनाते हो देष्पो हम
४७ अंनदेसीओं की ओर जाते हैं। कयोंकी पनभु ने हमें ऐसी
अगया की, की मैं ने तुझे अंनदेसीओं का उंजीआला कर नष्पा
है जीसतें तु पीनथीवी के अंत लों मुकत का कारन होवे।
४८ और अंनदेसी यह सुनतेही आनंद हुए और पनभु के बचन
की सतुत की और जीतने की अनंत जीवन के लीये ठहनाये
४९ गये थे बीसवास लाये। और पनभु का बचन उस सारे देस
५० में फैल गया। पनंतु यहूदीयों ने पनतीसठीत भकतीन इस-
तीनीयों को और नगन के पनधनों को उसकाया और पुलुस

और बरनबास पर उपद्रव कीया और अपने सीवानों में से
५१ खेद दीया। परंतु वे अपने पांव की धुल उनके बीरुध झाड़
५२ के इकुनीअः को आये। परंतु सीष्य आनंद से और धरमातमा
से भर गये।

१४ चौदहवां पत्र।

पुलुस और बरनबास का इकुनीया में उपदेस करना
और वहां से खेदा जाके लसतरा में जाना १—७
एक लंगड़े को चंगा करना और लोगों का उनहें
बलचढ़ाने को सीध होना ८—१८ यहूदीयों के
बैर से पुलुस का पथरवाया जाना वहां से फीर के
मंडलीयों को दीढ़ करना और अनताकीया में
आना १९—२८

१ और इकुनीअः में ऐसा हुआ की वे यहूदीयों की मंडली में
एक साथ गये और ऐसी कथा कही की यहूदीयों की और
२ युनानीयों की भी बड़ी मंडली बीसवास लाई। परंतु अबी-
सवासी यहूदीयों ने अनदेसीयों के मन को भड़काया और
३ भाइयों के बीरुध उनहें बैर से भर दीया। सो वे बहुत दीन
लों रहके परभु के बीष्यय में हीयाव से कहते रहे और वुह
अपने अनुगरह के बचन पर साष्यी देता और कीरपा करके
लछन और आसचरज उनके हाथों से परगट करता रहा।
४ परंतु नगर की मंडली बीभाग हुई कुछ तो यहूदीयों के संग
५ रहे और कुछ परेरीतों के। परंतु जब अंनदेसीयों ने और
यहूदीयों ने परधानों के साथी होके उनहें सताने को और
६ पथरवाने को हला कीया। वे उस से चैतंन होके लकउनीया
के नगर लसतरा और दरबा में और उस सीवाने के देस में
७।८ भाग गये। और वहां मंगल समाचार परचारा। और

लसतना का प्रेक मनप्य पाश्रों का दुनवल वैठा था जो अपनी
९ माता के गनभ से लंगड़ा था श्रोन कभी न यला था। उसी
ने पुलुस को वातता कनते सुना जीसने उस पन टकटकी लगा के
१० देष्पा की उसको यंगा होने का वीसवास है। उसने वड़े सवद
से कहा की अपने पाश्रों पन सीघा ष्पड़ा हो वुह तुनंत उछला
११ श्रोन यलने लगा। श्रोन जव की लोगों ने पुलुस का कीश्रा
ऊश्रा देष्पा तो लकउनीश्रा की भाष्पा में यीला के कहने लगे
१२ की देव मनुष्प के भेस में हम पास उतन श्राये हैं। श्रोन
उनहों ने वननवास का नाम वीनहसपती श्रोन पुलुस का वुघ
१३ नष्पा कश्रोंकी वोलने में वुह श्रगुश्रा था। श्रोन वे वीनहस-
पती को अपने नगन का उपकानी जानते थे श्रोन उसके पुनाहीत
ने भंडली समेत वैल श्रोन फूलों के हान दुवानों पन लाके
१४ याहा की वल यढ़ावें। पनंतु वननवास श्रोन पुलुस दोनों
पनेनीत सुन के अपने श्रोढ़ने फाड़के मंडलीश्रों में दौड़ गये
१५ श्रोन यीला के वोले। की हे मनुष्पो तुम लोग ये सव कश्रों
कनते हो? तुम सनीके हम भी दुनवल मनुष्प हैं श्रोन तुमहें
मंगल समायान का उपदेस कनते हैं जीसतें इन वयनथ
भावनन को छोड़ के जीवते ईसन की श्रोन फीनो जीसने सनग
श्रोन पीनथीवी श्रोन समुदन श्रोन सव कुछ जो उन में हैं
१६ वनाश्रा। उसने अगीले समश्रों में अपने अपने मानगों में
१७ सान जातगनों को यलने दीश्रा। तथापी उसने भलाई कन
के सनग से वीनसट श्रोन फलवंत नीतुन को हमें देके हमाने
अनतःकनन को भोजन से भनके संतुसट कीश्रा उसने अपने
१८ को वीना साष्पी न छोड़ा। श्रोन इन वातों को कहके उनहों ने
लोगों को वड़े कठीन से वल कनने से नोक नष्पा।

१९ पनंतु कीतने यहूदीश्रों ने अनताकीश्रा श्रोन यकुनीश्रा से
श्राके मंडली को वहका के पुलुस को पथनवाह कनके श्रोन यह
२० जान के की वुह मनगश्रा नगन के वाहन ष्पींयवाश्रा। पनंतु

अव़ सीप्प उसके आस पास ऐकठे ऊए वुह उठके नगन में आया
और दुसने दीन व्रननव्रास के संग दनव्रा को यला गया।
२१ और उस नगन में मंगल समायान पनयान के और वऊतें को
सीप्प कनके उनहें ने लसतना और य़कुनीया और अंताकीया
२२ में फीन आते ऊऐ। सीप्पों के मन को दीनढ़ कनके उनहें
व्रीसवास पन सथीन नहने को उपदेस कीया और साप्पी दी
की हमें अवेस है की व्रऊत पनीसनम से इसन के नाज में पनवेस
२३ कनें। और उनहें ने हन ऐक मंडली के लीये पनायीन
ठहनाये और व्रनत और पनानथना कनके उनहें पनभु को
२४ सैंप दीया जीस पन वे व्रीसवास लाये थे। और फसदीय़ः से
२५ होके पंफुलीय़ः में आये। और व्रनजा में व्रयन का उपदेस कन
२६ के अतालीय़ः में उतन आये। और वहां से प्पोल के अनताकीया
को गये जहां से वे उस कानज के कानन इसन के अनुग्रीनह से
२७ सैंपे गये थे जीसे उनहें ने संपुनन कीया था। और आके
मंडली को ऐकठे कनके जो की इसन ने उनकी ओन से कीया था
और की उसने कीस नीत से अंनदेसीयों के लीये व्रीसवास का
२८ दुवान प्पोला व्रननन कीया। और वे व्रऊत दीन लें सीप्पों के
संग वहां नहे।

१५ पंदनहवां पनव्र।

प्पतनः के व्रीव़ाद के लीये पुलुस और व्रननव्रास का यनोसलीम में जाना १—२१ पनेनीतें का उस व्रात का नीनुआन कनना १२—२१ उस व्रीप्पय़ में पतनयां लीप्पनी और लोगों के आनंद का कानन होना २२—३५ मनकस के व्रीप्पय़ में पुलुस और व्रननव्रास का नयाना होना और अलग अलग उपदेस को जाना ३६—४१।

१ ग्रैान कीतनों ने य़ऊदीय़ः से ग्राके ज्राइग्रों को सीप्पाय़ा की
जो तुम सव़ मुसा की नीत के समान प्पतनः न कनाग्रो तो
२ उधान नहीं पासक्ते। इस लीय़े जव़ पुलुस ग्रैान व़ननव़ास
से ग्रैान उनसे हगड़ा ग्रैान व़ादानुव़ाद ऊग्रा तव़ उनहों ने
ठहनाय़ा की पुलुस ग्रैान व़ननव़ास ग्रैान उस में से कइ ग्रेक
य़नोसलीम को पनेनीतों ग्रैान पनाय़ीनों कने इस पनसन के
३ कानन जावें। सो वे मंडली के लोगों से ग्रागे व़ढाय़े जाके
फ्नीकी ग्रैान सामनः से होके ग्रंनदेसीय़ों के मन के फीनने
का संदेस देते यले गय़े ग्रैान वे ज्राइग्रों के ग्रती मगन के कानन
४ ऊग्रे। ग्रैान जव़ वे य़नोसलीम में ग्राय़े तो मंडली के लोग
ग्रैान पनेनीतों ग्रैान पनाय़ीनों ने उनहें गनहन कीय़ा ग्रैान
उनहों ने सव़ कुछ जो इसन ने उनके दुवाना से कीय़ा था कह
५ सुनाय़ा। पनंतु फनीसीय़ों के मत के कीतने व़ीसवासी उठके
कहने लगे की उनका प्पतनः कनवाना ग्रैान मुसा की व़ैवसथा
६ यलने की उनहें ग्रगय़ा कननी उयीत है। तव़ पनेनीत ग्रैान
पनाय़ीन इस व़ात के व़ीप्पय़ में व़ीयान कनने को ग्रेकठे ऊग्रे।
७ ग्रैान व़ऊत व़ादानुव़ाद के पीछे पतनस प्पड़ा होके उनसे व़ोला
की हे मनुप्प ज्राइय़ो तुम लोग जानते हो की व़ऊत दीन व़ीते
इसन ने हम में से युना की ग्रंनदेसी मेने मुंह से मंगल समायान
८ के व़यन को सुनके व़ीसवास लावें। ग्रैान ग्रनतनजामी इसन ने
उनके लीय़े साप्पी दी जैसा उसने हमें धनमातमा दीय़ा वैसा
९ उनहें भी दीय़ा। ग्रैान उनके ग्रंतःकनन को व़ीसवास से
१० पवीतन कनके हम में ग्रैान उन में कुछ भेद न नप्पा। सो
ग्रव़ तुम लोग कय़ों इसन को पनप्पते हो ग्रैान सीप्पों के
गले पन जुग्रा नप्पते हो जीसे न हम न हमाने पीतन सह
११ सकते थे ?। ग्रैान हमें नीसयय़ है की हम पनभु य़सु मसीह
१२ के ग्रनुगीनह से उनके समान मुकत पावेंगे। तव़ सानी मंडली
युप ऊइ ग्रैान व़ननव़ास ग्रैान पुलुस से उन साने लछन ग्रैान

पासयनज का व्रननन सुनने लगे इसन ने उनको ओान से
१३ अनदेसीओं में दीप्पलाओ। औान जव वे युप नहे याकुव ने
१४ उतन में कहा की हे मनुष्य भाइयो मेनी सुनो। समउन ने
व्रननन कीया है की इसन ने पहीले अनदेसीओं पन कीस नीत
से दीनीसट की, की उन में से अपने नाम के लीये एक मंडली
१५ यन ले। औान भवीसदव्रकतों के व्रयन उस से मीलते हैं
१६ जैसा की लीप्पा है। इसके पीछे मैं फीन आउंगा औान दाउद
के गीने हुए तंव्र को फेन के व्रनाउंगा औान उसके उजाड़ों को
१७ फेन व्रनाउंगा औान उसे फेन प्पड़ा कनुंगा। की जो लोग
नह गये हैं अनथात साने अनदेसी जो मेने नाम के हैं पनभु
को ढुंढें यह पनमेसन की कही हुई है जो इन व्रसतुन को
१८ पुना कनता है। इसन के साने कानज सनातन से जाने हुए
१९ हैं। सो मेना व्रीयान यह है की जो अनदेसीओं में से इसन
२० की औान फीने हैं वे असथीन न कीये जायें। पनंतु हम उनके
पास लीप्पें जीसतें वे मुनतीन की अपवीतनता से औान व्रीभी-
यान से औान गला घुटेहुओं से औान लोहु से पने नहें।
२१ क्योंकी पनायीन पीढ़ीयों से हन एक नगन में मुसा के पनयानक
हैं औान मंडलीयों में हन व्रीसनाम के दीन में पढ़ा जाता है।
२२ तव्र पनेनीत औान पनायीन औान सानी मंडली को अछा लगा
की पुलुस औान व्रननव्रास के साथ अपने में से युने हुए मनुष्यों
को अनथात यहुदा को जीसकी पदवी व्रनसाव्रास थी औान
सीलास को जो भाइयों में स्नेसट गीने जाते थे अनताकीया
को भेजें।
२३ औान उनके हवाना से यह लीप्प भेजा की भाइयों को जो
अनताकीया औान साम औान कीलकीया में हैं औान आगे अन-
देसीओं में के थे पनेनीतो औान पनायीनों औान भाइयों का
२४ नमसकान। जैसा की हम ने सुना है की हम में से कीतनों ने
नीकल के तुमहों को व्रातें कहके व्याकुल कीया औान तुमहाने

मन को यह कह के चंचल कीया की खतनः करवाने को और
ब्यवसथा पर चलने को तुम्हें अवेस है जीन्हें हमने आग्या न
२५ दी। सो हम सब ने एक मता होके उचीत जाना की चुने
हुए मनुष्यन को अपने पीरीय बरनबास और पुलुस के संग
२६ तुम्हारे पास भेजें। जीन्हों ने अपने पराण को हमारे परभु
२७ यसु मसीह के नाम के लीये सौंप दीया। सो हमों ने यहुदा
२८ और सीलास को भेजा है वे मुंह से भी ये बातें कहेंगे। कयोंकी
धरमातमा को और हमें अछा लगा की केवल इन कारजों
२९ के जो अवेस हैं तुम सभों पर अधीक भार न डालें। की तुम
लोग मुरत पर के बलदान से और लोहू से और गला घुंटे
हुओं से और बेभीचार से परे रहो उनसे अपने को अलग
रख्ने में भला करोगे तुम्हारा भला होय।
३० सो वे बीदा होके अनताकीया में आए और मंडली को
३१ एकठे करके पतरी पहुंचाइ। वे उस कुसल की पतरी को
३२ पढ़के आनंदीत हुए। और यहुदा और सीलास ने जो आप
भी भवीसदबकता थे बहुतसी बातों से उपदेस करके भाइयों
३३ को दीरढ़ कीया। और कुछ दीन रहके वे कुसल से भाइयों
३४ से बीदा होके परेरीतों की ओर गये। परंतु सीलास को वहां
३५ रहना अछा लगा। पुलुस और बरनबास भी और बहुतों
के संग परभु का बचन उपदेस करते और सीखावते अनता-
३६ कीया में रह गये। और कुछ दीन के पीछे पुलुस ने बरनबास
से कहा आओ हम अपने भाइयों से हर एक नगर में जहां
हम ने परभु के बचन का उपदेस दीया है फीर के भेंट करें
३७ और देखें उनकी कया दसा है। और बरनबास ने यूहना
को, जीसकी पदवी मरकुस थी अपने संग ले जाने को चाहा।
३८ परंतु पुलुस ने उस जन को अपने संग लेना ठीक न समझा जो
पंफुलीया में उनसे अलग हो गया था और कारज के कारन
३९ उनके संग न गया। और उन में ऐसा बड़ा बीवाद हुआ की

प्रेक दुसने से अलग हो गये और ब्रननब्रास मनकुस को संग
४० लेके कब्रनस को नाव पन यला गया। पनंतु पुलुस ने सीलास
को युना और भाइयों से इसन के अनुगीनह को सोंपा जाके
४१ ब्रीदा ज्जआ। और वुह साम और कीलकीयः से मंडलीयों
को दीनढ़ कनता ज्जआ यला गया।

१६ सोलहवां पनब्र।

पुलुस और सीलास का नगन नगन उपदेस कनना
१—१२ भुत का दुन कनना और पुलुस और सीलास
का माना जाना और वंदीगीनह में पड़ना १३—२४
उनका भजन कनना और भुइंडोल से दुवानों का
खुल जाना और वंदीगीनह के सामी का मन फीनना
२५—३४ उनका वंदीगीनह से युट जाना और
वहां से ब्रीदा होना ३५—४०।

१ फरेन वुह दनब्रा और लसतना में पज्जंया और देख्यो वहां
तीमताउस नाम प्रेक ब्रीसवासीनी यज्ज़दनी का पुतन था पनंतु
२ उसका पीता युनानी था। लसतना और यकुनीया के भाइ
३ लोग जीसकी सुयाल के जानकान थे। उसको पुलुस ने अपने
संग ले जाने को याहा सो उधन के यज्ज़दीयों के लीये उसने
उसे लेके खतनः कनाया कयोंकी वे सब्र जानते थे की उसका
४ पीता युनानी था। और नगनों में होके जाते ज्जए उनहों ने
यनोसलीम में के पनेरीतों और पनायीनों की ठहनाइ ज्जइ
५ आगयाओं को उनहें सौंपी। इस लीये मंडलीयां ब्रीसवास में
६ दीनढ़ ज्जइं और पनत दीन गीनती में ब्रढ़ती गइं। और वे
फरनज्जः और गलतीयः के देस में होके नीकल गये और आसीया
७ में ब्रयन पनयानने को धनमातमा ने उनहें ब्रनजा। जब्र वे
मुसीयः में आये तो ब्रतुनीयः को जाने याहा पनंतु आतमा ने

८ उनहें जाने न दीया। सो वे मुसीया से होके त्रवास में उतन
९ पड़े। और रात को पुलुस पर दरसन हुआ की कोइ मकदुनी
यह कहके उसकी बीनती करता रहा है की मकदुनीया में पार
१० आ और हमारा उपकार कर। और जयों उसने यह दरसन
पाया तुरंत हमने मकदुनीया में जाने का मन कीया यह
नीसचय जान के की परभु ने उन में मंगल समाचार परचारने
११ को हमें बुलाया। हम त्रवास से खोल के सीधे सामुतराकी
१२ को आये और दुसरे दीन नेयापुलस को। और वहां से
फीलीप्पी में आये जो मकदुनीया के उधर के नगरों में बड़ा
नगर और परदेसीयों का नीवास है उसी नगर में कुछ दीन
१३ रहे। और बीसराम के दीन हम लोग उस नगर से नीकल
के नदी के तीर पर गये जहां परारथना की जाती थी और
१४ बैठ के उन इसतीरीयों से बातें कीं जो वहां बटुरीं थीं। और
सुआतीरः के नगर की बैजनी की बैपारीनी लुदीयः नाम
ऐक इसतीरी थी जो इसर को भजती थी हमारी सुनी जीसके
१५ मन को परभु के बचन सुनने को इसर ने खोला। और जब
उसने अपने परीवार समेत सनान पाया ता हमारी बीनती
करने लगी की यदी मुझे परभु की बीसवासनी जानते हो तो
१६ चल के मेरे घर उतरो और वुह हमें बरबस ले गइ। और
जब हम परारथना को चले तो ऐसा हुआ की ऐक कंनया
हमको मीली जो गुपत गयानी भूत से गरसत थी और भवीस
कह कहके अपने सामीयों को बहुत कुछ कमवा देती थी।
१७ वुह पुलस के और हमारे पीछे पीछे चली और चीला के कहने
लगी की ये मनुष्य अतीमहान इसर के सेवक हैं और हमें
१८ मुकत का मारग दीखावते हैं। और वुह कइ दीन लों यह
करती रही परंतु पुलुस उदास होके फीरा और उस भूत को
कहा मैं यसु मसीह के नाम से तुझे आगया देता हुं उस पर
१९ से उतर वुह उसी घड़ी उस पर से उतर गया। परंतु जब

उसके स्वामियों ने देखा की लाभ की आसा जाती रही तो
पौलुस और सीलास को पकड़ा और हाट में खैंचे हुए सासकों
२० कने ले चले। और उन्हें प्रधानों पास लाके बोले की ये
२१ मनुष्य यहूदी होके हमारे नगर को नीपट सताते हैं। और
ग्रहण करने और पालन करने को ब्यवहार सीखाते हैं जो
२२ हम रूमीयों के लीये अनुचीत हैं। तब लोग उनके बीरोध
में एकठे उठे और प्रधानों ने उनके कपड़े फाड़े और उन्हें
२३ छड़ीयों से मारने की आग्या की। और उन्हें बहुत सा
मारके बंदीगीरह में डाला और वहां के प्रधान को आग्या
२४ की, की उन्हें बहुत चौकसी से रखे। उसने यह दीनढ आग्या
पाके उन्हें भीतर के बंदीगीरह में ढकेला और उनके पाओं
२५ को काठ में डाला। परंतु आधी रात को पौलुस और सीलास
प्रार्थना में ईस्वर की भजन गाने लगे और बंधुए सुनते थे।
२६ और अकस्मात एक बड़ा भुईंडोल हुआ यहां लों की बंदी-
गीरह की नेवें हील गईं और तुरत सारे दुवार खुल गये और
२७ सभों के बंधन खुल गये। तब बंदीगीरह का रक्षक नींद से
उठा और बंदीगीरह के दुवार खुले देख के समझा की बंधुए
भाग गये और तलवार खींच के अपने तईं घात करने जाता
२८ था। इतने में पौलुस ने बड़े सब्द से पुकार के कहा की अपने
२९ को दुख न दे क्योंकी हम सब यहीं हैं। तब वुह दीया
मंगवा के भीतर लपका और थरथराता हुआ पौलुस और
३० सीलास के आगे गीर पड़ा। और उन्हें बाहर लाके कहा
की हे महासय मुक्त के लीये मुझे क्या करना आवस्यक है?।
३१ वे बोले की प्रभु यसु मसीह पर बीस्वास लाव तब तु और
३२ तेरा घराना मुक्त पावेगा। तब उन्हों ने उसे और उसके
३३ घर के सारे लोगों को प्रभु का बचन सुनाया। और उन्हें
रात को उसी घड़ी लेके उसने उनके घावों को धोया और वहीं
३४ उसने और उसके सभों ने स्नान पाया। और उन्हें अपने

घन लाके उसने उनके आगे भोजन नप्पा श्रीन अपने साने घन
समेत ईसन पन ब़ीसवास लाके मगन ऊश्रा।
३५ श्रीन जव़ दीन ऊश्रा उनहें छोड़ देने को सासकों ने पीश्रादों
३६ को श्रोन से कहला भेजा। श्रीन ब़ंदीगीनह के नहक ने ये
ब़ातें पुलुस को कहीं की सासकों ने तुमहें छोड़ देने को कहला
३७ भेजा है सो अब नीकल के कुसल से जाइये। पनंतु पुलुस ने
उनहें कहा की हम नुमीयों को ब़ीन दोप्पी ठहनाके पनगट
में माना श्रीन ब़ंदीगीनह में डाला है श्रीन अब़ वे हमें युपके
से नीकाल देते हैं कधी न होगा पनंतु वे आप आके हमें ब़ाहन
३८ पऊंयावें। तव़ पीश्रादों ने जाके ये ब़ातें सासकों को सुनाईं
३९ श्रीन जव़ उनहों ने सुना की वे नुमी हैं तो डन गये। श्रीन
आके उनहें सांत दी श्रीन ब़ाहन पऊंया के उनकी ब़ीनती
४० की, की नगन से यले जाइये। सो वे ब़ंदीगीनह से नीकल के
लुदीया कने गये श्रीन भाइयों को देप्प के उनहें सांत दी श्रीन
ब़ीदा ऊए।

१७ सतनहवां पनब़।

पुलुस का तसलुनीकी में उपदेस कनना यऊदीयों का ब़ैन श्रीन पुलुस श्रीन सीलास का ब़नीया में भेजा जाना १—१० वहां के लोगों का ब़ीसवास लाना यऊदीयों का ब़ैन कनना श्रीन पुलुस का श्रासीना में पऊंयाया जाना ११—१५ उनकी सुनत पजा को देप्प के पुलुस का उनसे ब़ीवाद कनना श्रीन उपदेस कनना १६—३४।

१ तब़ वे अंफरपुलस श्रीन अपलुनीयः से होके तसलुनीकी
२ में आये जहां यऊदीयों की एक मंडली थी। श्रीन पुलुस
अपने ब़ेवहान पन उन में जाके तीन ब़ीसनामों में घनम

३ पुस्तकों से उपदेश करता रहा। और खोल खोल के और
परमान ला ला के कहता था की मसीह को दुख उठाना और
जी उठना उचीत था और की यह यसु जीसका मैं तुम्हें सुनाता
४ हुं मसीह है। तब उनमें से कीतने बीसवास लाये और पलुस
और सीलास से मील गये और भकत युनानीयों में से बहुत
५ और बीसेस इसतीनीयों में से थोड़ी नहीं। परंतु अबीसवासी
यहुदीयों ने डाह से भनके कीतने नीच और लपट जनों को
एकठे लीया और भीड़ कीया और बटुर के नगर में हैरा
मचाया और यासुन के घर पर हल्ला कीया और उन्हें लोगों
६ के पास लाने चाहा। परंतु उन्हें न पाके यासुन को कीतने
भाइयों के संग नगर के परधानों के पास खींच ले गये और
चीलाते जाते थे की इन लोगों ने जगत को उलट दीया और
७ यहां भी आये हैं। उनको यासुन ने गरहन कीया और ये
सब कैसर की आगया बीरुध कहते हैं की दुसरा राजा कोइ
८ यसु है। सो उन्हों ने मंडली को और नगर के सासकों को
९ ये सुनाकर बयाकुल कीया। तब उन्हों ने यासुन से और
१० औरों से बीचवइ लेके छोड़ दीया। परंत भाइयों ने तुरंत
पलुस और सीलास को राते रात बरीया को बीदा कीया और
११ वे वहां आके यहुदीयों की मंडली में गये। यहां के लोग
तसलुनीकी के लोगों से अधीक परतीसठीत थे कयोंकी उन्हों
ने बचन को बड़े आनंद से मान लीया और परतदीन धरम
पुस्तक में ढुंढ़ते रहे की ये बातें यांहीं हैं अथवा नहीं।
१२ इस लीये बहुत उन में से और युनानी उतम इसतीरीयन
१३ में से भी और पुरुषन में से बहुतेरे बीसवास लाये। परंतु
जब तसलुनीकी के यहुदीयों ने जाना की पलुस बरीया में भी
इसर के बचन परचारता है तो उन्हों ने वहां भी आके लोगों
१४ में हौरा मचाया। और भाइयों ने उसी समय पलुस को
बीदा कीया जैसा की वुह समुदर से जाता है परंतु सीलास

१५ और तीमताउस वहीं रहे। और जो पुलुस को पहुंचाने गये
सो उसे असीनः लों लाये और सीलास और तीमताउस के लीये
आगया लेके चल नीकले की सीघर जैसे हो सके उस पास आवें।
१६ सो जब पुलुस असीनः में उनकी बाट जोह रहा था और नगर
को देवपुजा के बस में देखा तो उसका मन भीतर से उभड़ा।
१७ इस लीये वुह यहूदीयों से और भकतों से, जो उनके साथ
सेवा में रहते थे मंडली में और परतीदीन जो उसे हाटों
१८ में मीलते थे बीवाद करता था। तब अपीकुरी और सतुइकी
के पंडीतों में से कई एक उसके सनमुख हुए और कीतनों ने
कहा की यह बकवादी कया कहेगा? और कीतने बोले की
यह उपरी देवों का परचारक दीखाई देता है कयोंकी वुह
१९ उनहें यसु का और जीउठने का संदेस देता था। सो उनहों
ने उसे लेके मीरीख के पहाड़ पर लाके कहा की जो नई सीखा
२० तु सुनाता है हम लोग उसे जान सकते हैं? कयोंकी तु अनोखी
बातें हमें सुनाता है हम लोग उन बसतुन का भेद जानने
२१ चाहते हैं?। कयोंकी सारे असीनी और उन में के परदेस
बासी केवल नई नई बात कहने अथवा सुनने के अपना समय
२२ और बात में न काटते थे। तब पुलुस मीरीख के पहाड़ के
मघ में खड़ा होके बोला की हे असीनः के मनुष्यो मैं तुमहें
२३ अदीनीस पराकरमों का अत पुजेरी देखता हुं। कयोंकी
जाते हुए मैं ने तुमहारे पुजयों में एक बेदी पर यह लीखा
हुआ पाया की अजाना हुआ इसर के लीये सो जीसे तुम सब
अजाने हुए पुजते हो मैं तुमहें उसी का संदेस देता हुं।
२४ इसर जीसने संसार और उस में के सब कुछ उतपंन कीया
आकास और पीरथीवी का परभु होके हाथों के मंदीरों में बास
२५ नहीं करता। और वुह इस लीये मनुष्य के हाथों से सेवा नहीं
करवाता की वुह कीसी बसतु का अधीन नहीं है कयोंकी उसी
२६ ने सब को जीवन और सास और सब कुछ दीया। और उसने

प्रेकही लोऊ से मनुष्यों के साने जात गनों को सानी पीनथीवी
में व्रसने को व्रनाया है अैान उनके नीवास के सीवानों को अैान
२७ हन प्रेक समय्र को ठहनाया है। जीसतें पनभु को ढुंढ़ें कया
उसे टटोल कन पायें यद्पी वुह हम में से कीसी से दुन नहीं।
२८ कयोंकी हम लोग उसी से जीते यलते फीनते अैान सथीन हैं
जैसा की तुमहाने हा कीतने कव्रीतों ने भी कहा है की हम तो
२९ उसी के व्रंस हैं। सो जों हम इसन के व्रंस हैं तो हमें समझने
को उयीत नहीं की इसन साने अथवा नुपे अथवा पथन के
३० समान है जो मनुष्य के मनन अैान व्रनावट से है। कयोंकी
यद्पी इसन ने अगयानता के समयों को टाल दीया तथापी
अव्र अगया कनता है की हन प्रेक मनुष्य जो जहां है सो
३१ पसयाताप कने। इस कानन की उसने प्रेक दीन ठहनाया है
जीस में वुह घनम से उस मनुष्य के दुवाना से जीसे उसने
सथापीत कीया है संसान का नयाय कनेगा अैान उसके व्रीष्यै
३२ में सव्र को उसे फेन जीलाने से नीसयय कीया। अैान
जव्र उनहों ने मीनतकों के जी उठने की सुनी कीतनों ने
ठठा कीया पनंतु अैानों ने कहा की हम तुझ से इस व्रात
३३ के व्रीष्यै में फेन सुनेंगे। सो पुलुस उन में से जाता नहा।
३४ तथापी कीतने लोग उस से मील के व्रीसवास लाये जोन में
देयुनसयुस मंतनी था अैान प्रेक इसतीनी दमनस नाम की अनु
उनके संग अैान कीतने थे।

१८ अठानहवां पनव्।

पुलुस का कनंतस में जाना अैान यहूदीयों के
व्रैन के माने अनदेसीयों को उपदेस कनना १—११
अयह्न के आगे पकड़वाया जाना अैान छुट जाना
१२—१७ पुलुस का यनोसलीम में जाना अैान

वहां से अंतयुक को मंडलीयों से भेंट करना। १८—२३ अपरलुस का अफसस में उपदेस करना २४—२८।

१ इन बातें के पीछे पुलुस असीने से जाके करंतुस में आया।
२ और पंतस देसी अकला नाम कोसी यहुदी को पाया जो थोड़े
दीन हुऐ अपनी इसतीरी परसकला के संग ऐतालीया से
आया था इस लीये की कलादीयुस कैसर ने सारे यहुदीयों
को रुम से नीकल जाने की आगया की थी सो वुह उनके पास
३ आया। और इस लीये की वुह उनका सा उदमी था उनके
संग रहा और काराज कीया कयोंकी उन का काराज तंबु
४ बनाने का था। और उसने हर बीसराम में मंडली में बीवाद
५ कीया और यहुदीयां और युनानीयों को मना लाया। और
जयोंहीं सीलास और तीमताउस मकदुनीया से आये मन के
उभड़ने से पुलुस ने यहुदीयों के आगे साख्यी दी की यसु वही
६ मसीह है। परंतु जब वे बीरोध करके ईसनीय नींदात
बयारने लगे उसने अपने बसतर को झाड़ के उनहें कहा की
तुमहारा लोहु तुमहारे सीर पर मैं नीरदोष्य हुं सो अब से
७ मैं अनदेसीयों की ओर जाता हुं। और वहां से होके वुह
युसतुस नाम इसर के ऐक भकत के घर गया जीसका घर
८ मंडली से मीला हुआ था। परंतु मंडली का परधान कीरसपस
अपने सारे घर समेत परभु पर बीसवास लाया और सुनके
९ बहुत से करंती बीसवास लाये और सनान पाया। परंतु
परभु ने रात के दरसन के दुवारा पुलुस को कहा की मत डर
१० परंतु कहे जा और चुपका मत रह। कयोंकी मैं तेरे संग
हुं तुझे सताने को कोइ तुझ पर न पड़ेगा कयोंकी इस नगर
११ में मेरे बहुत लोग हैं। सो वुह डेढ़ बरस वहां रहके इसर
१२ का बचन उन में उपदेस करता रहा। परंतु जब जलयुन

अप्पाय़ा का अधछ ऊआ य़ऊदीय़ों ने ऐक मन से पुलुस पन
१३ चढ़ा कन के उसे व़ीयान सथान में लाके कहा। की य़ह जन
य़ैवसथा व़ीनुध ईसन की सेवा कनने के लेगें के उभाड़ता
१४ है। औान जव़ पुलुस ने व़ानता कनने याहा ते जलय़ुन ने
य़ऊदीय़ों से कहा की हे य़ऊदीय़े जे य़ह कुछ अंधेन अथवा
उपदनव की व़ात होती ते तुमहानी सहाय़ कनने में उचीत
१५ होता। पनंतु जे य़ह व़यन के औान नाम के औान तुमहाने
सासतन के व़ीप्पै का व़ीवाद है ते तुमहीं जाने कय़ाेकी मैं
१६ ईन व़ातें का व़ीयानी न ऊंगा। औान उसने व़ीयान सथान
१७ से उनहें हांक दीय़ा। तव़ साने य़ुनानाय़ों ने मंडली के
पनधान ससतनीस के पकड़ के उसे व़ीयान सथान के आगे
१८ माना पनंतु जलय़ुन ने उन व़ातन के कुछ न समझा। औान
पुलुस औान भी व़ऊत दीन लें वहां नहा तव़ भाईय़ों से व़ीदा
होके कनकनाय़ा में मनैाती के लीय़े अपना सीन मुंड़ाके
पनसकला औान अकला के संग सीनीय़ा की औान यल नीकला।
१९ औान उसने अफसस में आके वहां उनहें छोड़ा पनंतु आप
२० मंडली में जाके य़ऊदीय़ों से यनया की। य़दपी उनहें ने
कुछ दीन अपने य़हां ठहनने के उस से व़ीनती की तथापी
२१ उसने न माना। पनंतु उनसे य़ह कहके व़ीदा ऊआ की
अवैय़ा पनव़ में मुझे य़नोसलीम में होना अवस है पनंतु ईसन
याहे ते मैं तुमहाने पास फीन आऊंगा औान वह अफसस
२२ से पोल यला। औान कैसनीय़ा में उतन के यढ़ गय़ा औान
२३ मंडली के नमसकान कनके अनताकाय़ः में उतन पड़ा। औान
वहां कुछ दीन नहके यला गय़ा औान साने सीप्पों के दीनढ़
कनता ऊआ नीत से गलतीय़ः के देस औान व़नजीय़ः में सनव़नस
२४ फीना। अव़ सकनदनानी ऐक य़ऊदी अपलुस नाम जे
सुव़कता औान धनम पुसतक में व़ड़ा नीपुन था अफसस में
२५ आय़ा। ईस जन ने पनभु के मत की सीप्पा पाई थी औान मन

के तेज से पनभु की बातें कहता औान ठीक नीत से सीप्पाता
२६ था पनंतु केवल यहीया के सनान का जानकान था। उसने
साहस से मंडली में कहना आनंभ कीया औान अकला औान
पनसकला उसे सुनके अपने घन लाये औान इसन का मत अती
२७ अच्छी नीत से उस पन प्पाला। औान जब उसने अप्पाय: में
पान जाने याहा ता उसे गनहन कनने का भाइयों ने सीप्पों
पास लीप्पा औान पहुंयके जो अनुगीनह के दुवाना से बीसवास
२८ लाये थे उसने उनकी बड़ी सहाय की। कयोंकी उसने बड़ी
हीनढ़ता से घनम पुसतकों से दीप्पा दीप्पाके की यसु वही
मसीह है यहूदीयों से संवाद कीया।

१९ उनीसवां पनब।

पुलुस का अफसस में आके सीप्पों को सनान देना
औान घनमातामा का उतनना १—७ उस नगन में
उपदेस कनना औान आसयनज कनम दीप्पाना
औान बहुतों का बीसवास लाना ८—२० अफसस
में उस पन उपद्नव होना नगन में घुम मयनी औान
कठीन से लोगोंका घीनज पाना २१—४१।

१ औान जब अपलुस कनंतीस में था तो ऐसा हुआ की पुलुस
उपन के सोवाने से फीनके अफसस में आया औान कीतने सीप्पों
२ को पाके। उनहें कहा की जब से तम लोग बीसवास लाये
तुमहों ने घनमातमा को पाया है उनहों ने उतन दीया की
३ हमों ने तो घनमातमा का होना नहीं सुना। उसने उनहें
कहा तो तुमहों ने कीस बात का सनान पाया? वे बाले की
४ हम ने यहीया का सनान पाया। तब पुलुस ने कहा की
यहीया ने नीसयय पसयाताप का सनान देते हुए लोगों को
यु कहा की तुम लोग उस पन बीसवास लाओ जो मेन पीछे

५ आता है अनथात इसु मसीह पन। उनहें ने याह्‌सुन के
६ पनभु य़सु के नाम से सनान पाया। औान पुलुस के उन पन
हाथ घनतेही घनमातामा उन पन उतना औान वे भांत भांत
७ की भाष्या व्रोले औान अवीस कहने लगे। औान वे सव मनुष्य
८ व्रानह प्रेक थे। औान मंडली में जाके वुह तीन मास लों
साहस से इसन के नाज के व्रीष्ये मं व्रीवाद कनता औान समझाता
९ नहा। पनंतु जय़ें कीतने कठोन औान अवीसवासी होके इस
मत को मंडली के आगे व्रुना कहने लगे वुह उनसे अलग हो
सीष्यों को प्रेकांत में लेके तनसस की पाठसाला में पनतदीन
१० व्रीवाद कनने लगा। औान दो व्रनस लों य़ही ऊआ कीय़ा य़हां
लों की आसीय़ा के नीवासीय़ें ने कय़ा य़ऊदी कय़ा य़ुनानी
११ सभों ने पनभु य़सु का व्रयन सुना। औान पुलुस के हाथें से
१२ इसन पनम आसयनज कनता नहा। य़हा लों की अंगोछा
औान व्रसतन उसके अंग से नोगीय़ें पन ले जाते थे औान उनका
नोग जाता नहता था औान कुआतमा उन पन से उतन जाते
१३ थे। तव्र व्रहेतु औान मंतन जापक य़ऊदीय़ें में से कीतने
पनभु य़सु का नाम लेके कुआतना गनसतें को कहने लगे की
जीस य़सु का पनयानक पुलुस है हम तुमहें उसकी कीनाय़ा
१४ देते हैं। औान सुकवा य़ऊदी पनधान य़ाजक के सात व्रेटे
१५ य़ही कनते थे। तव्र कुआतमा ने उतन देके कहा की य़सु को
मैं जानता ऊं औान पुलुस का जानकान ऊं पनंतु तुम लोग कौन
१६ हो ?। औान कुआतमा गनसत मनुष्य उनपन लपका औान
उनपन पनव्रल होके उनहें व्रस में कीय़ा य़हां लों की वे घन
१७ से नंगे औान घाय़ल नीकल भागे। औान य़ह व्रात अफसस
व्रासी सानें य़ऊदीय़ें औान य़ुनानीय़ें को जान पड़ी औान उन
सभें पन डन पड़ी औान पनभु य़सु के नाम की महीमा ऊई।
१८ औान व्रऊतेने व्रीसवासीय़ें ने आ आ के मान लीय़ा औान
१९ अपने अपने कनम को पनगट कीय़ा। औान व्रऊतेने इंदन-

जाद कनमी अपनी पुसतकों को ऐकठे लाये औन सब के आगे
फूंक दीये औन उनहों ने उनके मोल का जो लेखा कीया तो
२० पचास सहसन टुकड़े चांदी हुऐ। ऐसे पनाकनम से ईसन का
२१ बचन बढ़ा औन पनबल हुआ। जब ऐ बातें हो चुकीं तब
पुलुस ने मकदुनीया औन अष्वाया से हो यनोसलीम में यह
कहके जाने को मन में ठाना की वहां होके मुझे नुम को भी
२२ देष्पना अवेस है। औन अपनी सेवाकानीयों में से दो को
अनथान तीमताउस औन आनासतस को मकदुनीया को भेजा
२३ औन आप आसीया में कुछ दीन नहा। औन उस समय उस
२४ मत के बोष्पे में वहां बड़ा हौना हुआ। कयोंकी दीमीतन-
यूस नाम ऐक सुनान था जो अनतमस के चांदी के सनुप बना
२५ बना कानजकानीयों को बहुत कमवाता था। उसने ऐस कानज
कानीयों के संग उनहें ऐकठे बटोन के कहा की मनुष्यो तुम
२६ लोग जानते हो की हमानी जीवीका ईसी उदम से है। औन
देष्पते औन सुनते हो की केवल अफसस में नहीं पनंतु सानी
आसीया में ईस पुलुस ने बहुत से लोगों को मना मना के भट-
काया है औन कहता है की जो हाथों से बने हैं सो देव नहीं
२७ होते। सो केवल यही तो ष्पटका नहीं की हमान उदम का
नीनादन होजाय पनंतु महेसनी अनतमस का मंदीन भी
नींदीत होजायगा औन जीसको पूजा सानी आसीया औन संसान
२८ कनते हैं उसकी महीमा जाती नहेगी। यह सुन के वे कोप से
भन गये औन चीला उठे की अफसीयों की अनतमस महान
२९ है। तब सानी नगन बड़ी घबनाहट से भनगया औन जायुस
औन अनसतष्पनस मकदुनी को जो पुलुस के संगी जातीनीक थे
३० घसीट के ऐकमन से कीनीड़ा सथान को दौड़गये। औन जब
३१ पुलुस ने लोगों में जाने चाहा तब सीष्पों ने उसे न छोड़ा। औन
आसीया के कनेसट पनधानों में से भी उसके हीतकानी होके
कीतनों ने कहला भेजा की तु कीनीड़ा सथान में जाने से पने

३२ रह। तब कितने कुछ चिल्लाये और कितने कुछ क्योंकि
मंडली गड़बड़ा गई और बहुतेरे न जानते थे कि हम किस
३३ लिये एकट्ठे हुए हैं। और यहूदियों ने सिकन्दर को
आगे धकियाया और लोगों ने मंडली में से उसे बढ़ा दिया
और सिकन्दर ने हाथ से सैन करके लोगों के आगे बचाव
३४ की बात करने चाहा। परंतु जब उन्हों ने जाना कि वुह
यहूदी है तो सब के सब दो घड़ी लों एक साथ चिल्लाये कि
३५ अफसियों की अर्तमिस महान है। परंतु अध्यापक ने मंडली
को शांत करके कहा कि हे अफसी मनुष्यो कौन मनुष्य नहीं
जानता कि अफसस का नगर महादेवी अर्तमिस का और उस
३६ मूरत का पुजेरी है जो बृहस्पती से गिरी है?। अब जैसा
कि ये बातें अखंडित हैं तुम्हें उचित है कि चुपके रहो और
३७ उतावली से कुछ न करो। क्योंकि तुम लोग इन मनुष्यों को
यहां लाये हो जो न तो मंदिर के चोर और न तुम्हारी
३८ देवी के निंदक हैं। इस लिये यदि दमित्रियुस और उसके
संगी कारीगर किसी पर अपवाद रखते हों तो न्याय
३९ हो रहा है और अध्यक्ष हैं एक दूसरे से विवाद करें। परंतु
यदि तुम लोग और आन बात के खोजी हो तो वुह विचार
४० सभा में निर्णय किया जायगा। क्योंकि आज के दंगा के
लिये हम लोग लेखा देने के खटके में हैं कि हमारे पास कोई
ऐसा कारण नहीं जो इस भीड़ का कुछ उत्तर दे सके।
४१ और इन बातों को कहके उस ने उस सभा को बिदा किया।

२० बीसवां पर्ब।

पौलुस की यात्रा करनी और तरवास में फिर
जाना १—६ उपदेस के समय यूतखुस का गिर के
मर जाना और पौलुस से जिलाया जाना ७—१२

पुलुस का मीक्षीतस में जना श्रीन श्रफसस के पनायीनों को वुलाना। १२—१७ उनहें उपदेस कनना श्रीन पमानथात कन के उन मे श्रलग होना।

१ जव दीना थीमा ऊश्रा तो पुलुस सीष्यों को वुला के श्रीन
२ उन से मील मकदुनीयः को श्रीन यल नीकला। श्रीन उधन
के सथानों में से हो श्रीन उनहें वऊत कहके उपदेस कनके
३ युनान में श्राया। श्रीन वहां तीन मस नहके जव वह सुनीया
के लीये जहाज़ पन यढ़ने पन था तव युऊदीयों के उसके ढुके
में नहने के कानन से उसने उयीत जाना की मकदुनीयः से
४ फीनें। श्रीन वुनाइ का सुपतनस श्रीन श्रनसतनष्युस श्रीन
सकनदस तसलुनीकी श्रीन जायुस दनवी श्रीन तीमताउस
श्रीन श्रासीया का तकीकस श्रीन तनफनस उसके संग
५ श्रासीया लों गये। ये श्रागे जाके तनवास में हमाने लीये
६ ठहने। श्रीन श्रप्पमीनी नोटी के दीनों के पीछे फलीपी से
हमने प्पोली श्रीन पांय दीन में तनवास में उन पास पऊंये
७ श्रीन वहां सात दीन नहे। श्रीन श्रठवाने के पहीले दीन जव
सीष्य लोग नोटी तोड़ने के लीये एकठे ऊए वीहान को वीदा
होने के लीये पुलुस उनहें उपदेस कनने लगा श्रीन कथा को
८ श्राधी नात लों वढ़ाया। श्रीन उपन के सथान में जीस में वे
एकठे थे वऊत से दीपक थे वहां एक तनुन युतष्युस नाम का
९ प्पुली प्पीड़की पन वैठा सो गया। श्रीन जैसा की पलुस ने
श्रपनी कथा श्रवेन लों वढ़ाइ वुह नींद के वस में होके तीसनी
१० श्रंटानी से गीन पड़ा श्रीन मीनतक उठाया गया। तव पुलुस
उतन के उसे लपट गया श्रीन गोद में उठाके कहा, मत
११ घवेनाश्रो कयांकी उसका पनान उस में है। तव उपन श्राके
श्रीन नोटा तोड़ श्रीन प्पाके श्रवेन श्रनथात भोन लों वातें
१२ कनता नहा तव वीदा ऊश्रा। श्रीन वे उस तनुन को जीता

१३ श्राग्ने श्रीन व्रक्कत शांत क्रए। पनंतु हम श्रागे जहाज़ पन
जाके श्रसस को यने जहां पुलुस को यढ़ालेना था कग्नोंकी श्राप
१४ पैद्ल जाने की इक्का कनके ऐसा ठहनाग्रा था। श्रीन जव्र
वुह हमें श्रसस में मीला हम उसे यढ़ा के मतलीनी में श्राग्ने।
१५ श्रीन वहां से प्पोल के दुसने दीन प्पग्नुस के सामने श्राग्ने श्रीन
दुसने दीन सामस में हो तनजलीग्नन में ठहन के श्रगीले दीन
१६ मीलीतस में श्राग्ने। कग्नोंकी पुलुस ने श्रफ़सस से होके जाने
को ठहनाग्रा था जीसतें श्राशीग्रा में कुछ समग्न नहने न पड़े
इस लीग्ने उसने व्रक्कत सा उपाग्न कीग्रा था की जो हो सके तो
१७ पयासवें दीन का पनव्र ग्रनोसलीम में होवे। पनंतु उसने
मीलीतस से श्रफ़सस की श्रीन संदेस भेजवाके मंडली के पनचानों
१८ को व्रुलाग्रा। श्रीन जव्र वे उस पास श्राग्ने तो उनहें कहा
तुम लोग जानते हो की पहीले दीन से मैं कग्नोंकन श्राशीग्रा
१९ में श्राग्रा श्रीन तुमहें में यला कीग्रा था। श्रीन श्रतग्नंत
दीनताइ से व्रक्कत से श्रांसु व्रहा व्रहा के उन पनीक्कों में पनभु
की सेवा कनता था जो ग्रक्कदीग्नें के घात में नहने से मुझ पन
२० पड़ा था। श्रीन कग्नोंकन मैं ने कोइ लाभ की व्रात न नप्प
क्कोड़ी श्रीन तुमहें उपदेस कनके मंडली मंडली श्रीन घन घन
२१ सीप्पलाग्रा कीग्रा। श्रीन ग्रक्कदीग्नें श्रीन ग्रुनानीग्नें के श्रागे
साप्पी दी की इसन के श्रागे पक्कता के हमाने पनभु ग्रसु मसीह
२२ पन व्रीसवास लाश्रो। श्रीन श्रव्र देप्पो मैं श्रातमा में व्रंधा
क्कश्रा ग्रनोसलीम को जाता क्कं श्रीन नहीं जानता की वहां मुझ
२३ पन कग्रा कग्रा व्रीतेगा। पनंतु इतना की घनमातमा हन एक
व्रसती में ग्रह कह के साप्पी देता है की सीकनें श्रीन कसट मेने
२४ लीग्ने घने हैं। पन मैं इन व्रातों को कुछ नहीं व्रुझता श्रीन न
मैं श्राप श्रपने पनान को पीनीग्न जानता क्कं जीसतें मैं श्रपने
दौड़ को श्रीन उस सेवा को श्रानंद से पुना कनुं जो मैं ने पनभु
ग्रसु से पाग्रा है की इसन के श्रनुगीनह के मंगल समायान की

२५ साप्पी देउं। श्रीन श्रव्र देप्पो मुहे नीसयय है की तुम में से
जीन में मैं इसन के नाज को पनयाना श्रीन परीना ऊं कोइ
२६ मेना मुंह फरेन न देप्पेगा। इस लीये मैं आज तुमहाने आगे
२७ साप्पी देता ऊं की हन ऐक के लोह्र से मैं नीनदोप्प ऊं। क्योंं-
की मैं तुमहाने आगे इसन की सानी मता व्रननन कनने से
२८ अलग न नहा। श्रव्र अपने लीये श्रीन साने झुंड के लीये जीस
पन घनमातमा ने तुमहें नप्पवाल कीया सैंयेत होके इसन की
मंडली को यनाश्रो जीसे उसने अपने लोह्र से छुड़ाया है।
२९ कयोंकी मैं यह जानता ऊं की मेने जाने के पीछे पराइनीहान
३० झंडान तुमहों में पैठ के झुंड पन दया न कनेंगे। हां तुमहीं
में से कीतने मनुप्प उठेंगे जो सीप्पों को अपनी श्रीन प्पींयने
३१ को हठीली व्रातें कहेंगे। इस लीये यीकस नहो श्रीन समनन
कनो की मैं तीन व्रनस लों नात दीन आंसु व्रहा व्रहा के हन
३२ ऐक को नीत यीताता नहा। श्रीन अव्र हे भाइयो मैं तुमहें
इसन को श्रीन उसके श्रनुगीनह के व्रयन को सौंपता ऊं जो
तुमहें सुधान सकता है श्रीन सभों में जो पवीतन कीये गये हैं
३३ तुमहें अधीकान दे सकता है। मैं ने कीसी के सोने यांदी
३४ अथवा व्रसतन का लोभ न कीया। हां तुमहीं लोग जानते हो
की इनहीं हाथों ने मेने श्रीन मेने संगीयों की आवेसक सेवा
३५ की। मैं ने तुमहें सव्र कुछ व्रता दीया है की कयोंकन तुमहें
उयीत है की पनीसनम कनके दुनव्रलों का पनतीपाल कनो
श्रीन पनभु यीसु के व्रयन का समनन कनो कयोंकी उसने आपही
३६ कहा है की देना, लेने से श्रधीक धन है। श्रीन उसने यूं
३७ कह घुटने टेके के उन सभों के संग पनानथना की। श्रीन
वे सव्र नीपट नोये श्रीन पलुस के गले पन गीन गीन उसे यूमा।
३८ वीसेप्प उस व्रात के लीये जो उसने कही की तुम सव्र मेना
मुंह फरेन न देप्पोगे व्रऊत उदासीन ऊए श्रीन जहाज़ लों उसे
पऊंयाया।

२१ ऐकीसवां पनव्र।

पुलुस का सुन में आके सीप्पों को पाना और पनानथना कनके यल नीकलना १—६ उसका कैसनीय़ा में जाना और अपने वृंघन के व्रीप्पे में भवीस व़ानी सुननी ७—१६ उसका व्रनोसलीम में आना और उस पन उपद्नव होना १७—४०।

१ और क्य़ों हम लोग उनसे अलग ऊऐ और यल नीकले तो
सीधे कौस में आय़े और दुसने दीन नुद्स को और वहां से
२ पतनः को गय़े। और ऐक जहाज़ को पान फ़ुनीकी को जाते
३ पाके हम लोग उस पन यढ़ व़ैठे और यल नीकले। और
कृव्रनस को देप्प व़ांय़े हाथ छोड़ सुनीय़ा को यले और सुन में
४ उतन पड़े क्य़ोंकी वहां नाव की व़ोह्हाइ उतानती थी। और
सीप्पों को पाके सात दीन ठहने और उनहों ने आतमा की
५ पनेनना से पुलुस को कहा की व्रनोसलीम को मत जा। पनंतु
उन दीनों को पुना कनके हम यल नीकले और व़ीदा हो
अपना मानग पकड़ा और इसतीनय़ों और व़ालकों समेत वे
सव्र नगन के व़ाहन लों हमाने संग आय़े और हमने नदी के
६ तीन घुठने टेक के पनानथना की। और आपुस में मील
व़ीदा होके जहाज़ पन यढ़ व़ैठे और वे अपने अपने घन को
७ फीने। और अपनी दौड़ पुनी कनके हम सुन से तलमाउस
में आय़े और भाइय़ों से मील के ऐक दीन उनके संग नहे।
८ और व़ीहान को पुलुस और उसके संगी व़ीदा होके कैसनीय़ा
में आय़े और फ़ैलव़ुस मंगल समायान पनयानक के य़हां,
९ जो उन सात में से था उतनके उस कने टीके। अव्र उस मनुप्प
१० का यान कुआंनी पुतनी थीं जो भवीसदव़कतनी थीं। और
हमाने वहां व़ऊत दीन होते ऊऐ य़ऊदीय़ों से अजव़स नाम
११ का ऐक भवीसदव़कता उतन आय़ा। उसने हमाने पास

अेक पुलुस का पटुका उठा लीया श्रौन अपने हाथ पांव व्रांधके
कहा की धनमातमा युं कहता है की यनोसलीम में यहूदी
उस मनुष्य को, जीसका यह पटुका है युं व्रांधेंगे श्रौन श्रंनदेसीयों
१२ के हाथ सोंपेंगे। जव्र हम ने ये व्रातें सुनी तो हम लोगों ने
श्रौन वहां के व्रासीयों ने यनोसलीम को न जाने के लीये
१३ उसकी व्रीनती की। पनंतु पुलुस ने उतन दीया की क्यों
व्रीलाप कनके मेने मन को तोड़ते हो? क्योंकी मैं तो केवल
व्रांधे जाने को नहीं पनंतु यनोसलीम में पनभु यसु के नाम के
१४ लीये मनने को भी तैयान हुं। श्रौन जव्र उसने न माना तो हम
१५ युं कहके चुप हुए की पनभु की इछा होवे। श्रौन उन दीनों
१६ के पीछे हम अपनी सामगनी लेके यनोसलीम को चले। तव्र
हमाने संग कैसनीया में के कीतने सीष्य भी गये श्रौन हमें अेक
मनसुन कुब्रनसी पुनाने सीष्य के घन पहुंचाया जीसके साथ
१७ हमें टीकना था। श्रौन जव्र हम लोग यनोसलीम में पहुंचे तो
१८ भाइ लोग आनंद से हमें आगे से आ मीले। श्रौन दुसने दीन
पुलुस हमाने संग याकुव्र कने आया श्रौन साने पनाचीन भी
१९ अेकठे थे। श्रौन उनसे मीलके सव्र कानज को जो इसन ने
श्रंनदेसीयों में उसकी सेवा की श्रौन से कीये थे अलग अलग
२० व्रनतन कीया। उनहों ने सुन के पनभु की सतुत की श्रौन
उसे कहा की भाइ तु देखता है की कीतने सहसन व्रीसवासी
२१ यहूदी हैं श्रौन सव्रके सव्र व्यवसथा के लीये जलीत हैं। उनहों
ने तेने व्रीष्यै में सुना है जो तु श्रनदेसीयों में के साने यहूदीयों
को मुसा से फीन जाने को सीष्याता है श्रौन कहता है की अपने
लड़कों का खतनः कनने को श्रौन व्यवहान पन चलने को उचीत
२२ नहीं। सो यह क्या है? मंडली नीसंदेह जुटेगी क्योंकी
२३ तेने श्राने का सुनेंगे। सो हमाने कहने के समान कन हमाने
२४ पास चान मनुष्य हैं जीनकी मनाती है। उनहें लेके श्राप को
उनके संग पवीतन कन श्रौन उनके साहे में कुछ उठान कन

जीसतें वे अपना सीर मुंडावें और सब्र जान जायेंगे की जो
बातें हम लोगों ने उसके वीष्पै में सुनी थीं सो कुछ नहीं परंतु
वुह भी वैवसथा को पालन करके उसकी रीत पर यलता है।
२५ और वीसवासी अंनदेसीयों के वीष्पै में हम ने लीष्प के ठहराया
है की वे इन बातों को न मानें परंतु केवल इतना करें की
मुरतीन के परसाद से और लोहू से और गला घुंटी हुई
२६ वसतु के प्याने से और बयभीयार से परे रहें। तब पुलुस
ने उन मनुष्पों को लेके दुसरे दीन उनके संग अपने को पवीतर
करके मंदीर में गया और कह दीया की जब लों उन में से
हर एक का बलदान यढ़ाया जाय पवीतर करने का समय पुरा
२७ हो जायगा। परंतु जब वे सात दीन बीतने पर आये आसीया
के यहुदीयों ने उसे मंदीर में देष्प कर सारी मंडलीयों को
२८ उभाड़ा और उस पर हाथ डालके यीलाये। की हे इसराइली
मनुष्पो सहाय करो यह वुह मनुष्प है जो हर सथान में लोगों
और बयवसथा के और इस सथान के बीरोध में सब का
सरबतर सीष्पाता है और युनानीयों को भी मंदीर में लाया
२९ और इस पवीतर सथान को असुध कीया। इस लीये की
उनहों ने आगे नगर में तरफीमस अफसी को देष्पा और
३० समझा था की पुलुस उसे मंदीर में लाया। तब सारा नगर
यंयल हुआ और लोगों की भीड़ हुई और पुलुस को पकड़के
मंदीर में से बाहर घसीटा और झट दुवार बंद कीये गये।
३१ और जब वे उसे घात करने पर हुए तो परधान सेनापती
३२ को संदेस पहुंया की सारे यरोसलीम में हौरा हुआ है। तब
वुह तुरंत जोधा और सतपतीन को लेके उन पर दौड़ पड़ा
और वे परधान और जोधाओं को देष्पके पुलुस को मारने से
३३ अलग रहे। तब परधान ने पास आके उसे पकड़ा और दो
सीकरों से बांधने की आगया की और पुछा की यह कौन है
३४ और इसने कया कीया है?। तब कीतने कुछ बड़बड़ाए और

कितने कुछ और जब वह कोलाहल के मारे ठीक न जान सका
३५ तो उसे गढ़ में ले जाने की आज्ञा की। परंतु जब वह सीढ़ी
पर पहुंचा तो ऐसा हुआ कि लोगों के कारन जोधाओं ने
३६ उसे उठाया। क्योंकि लोगों की एक बड़ी मंडली चिल्लाती
आती थी कि उसे उठा डालो।
३७ परंतु जब पुलुस को गढ़ में ले जाने लगे तो उसने प्रधान को
कहा कि मैं आप से कुछ कहूं वह बोला क्या तू यूनानी बोल
३८ सकता है?। तू वह मिसरी नहीं जिसने इन दिनों से आगे
दंगा मचाया और चार सहस्र हत्यारों को बन में ले गया?।
३९ परंतु पुलुस ने कहा कि मैं तो किलकिया: के तरसस का एक
यहूदी हूं जो ऐसा हलुक नगर नहीं और मैं बिनती करता
४० हूं कि मुझे लोगों से बोलने दीजिये। उस ने उस से छुट्टी
पाके सीढ़ी पर खड़े होके लोगों को हाथ से सैन किया और
जब वे चुप चाप हुए तब वह इब्री भाषा में यह कह
के बोला।

२२ बाईसवां पर्ब्ब।

पुलुस का लोगों के आगे अपना सभ चार बर्णन
करना १—२१ यहूदियों का कोपित होना और
पुलुस का सभा के आगे पहुंचाया जाना २२—३०।

१ हे मनुष्य भाइयो और हे पितरो मेरे बचाव की बात सुनो
२ जो अब तुम्हों से कही जाती है। जब उन्हों ने उसे इब्री
३ भाषा में बातें करते सुना तो वे तनिक न बोले। तब उसने
कहा कि मैं यहूदी मनुष्य हूं जो किलकिया: के तरसस में
उत्पन्न हुआ परंतु इस नगर में जमलिएल के चरन पास बिद्या
पाई और पितरों की ब्यवस्था में ठीक उपदेश पाया और
ईश्वर के लिये ऐसा ज्वलित था जैसा तुम लोग आज के दिन

४ हो। और मैं इस पंथ के लोगों को मौरतु लों सताता कीया
और कया पुरुष कया इसतीरों को बंदीगीरह में सोंपा कीया।
५ जैसा की परधान याजक और सारे परायीन मेरे साछी हैं
उनसे मैं भाइयों के लीये पतरी पाके दमीसक को जाता था
जीसतें वहां के लोगों को ताड़ना कराने के लीयें बांधके यरो-
६ सलीम में लाउं और जाते जाते जब मैं दमीसक पास पहुंचा
दो पहर के अटकल में ऐसा हुआ की मेरी चारों ओर आकस-
७ मात सरग से बड़ी जोत का परकास हुआ। और मैं भुम
पर गीर पड़ा और मुझ से कहते हुए मैं ने ऐक सब्द सुना की
८ साउल साउल तु मुझे कयों सताता है?। तब मैं ने उतर देके
कहा हे परभु तु कौन है? उसने मुझे कहा की मैं यसु नासरी
९ हुं जीसे तु सताता है। और मेरे संगीयों ने उस जोत को
तो देख्या ठीक और डर गये परंतु जीसने मुझ से कहा
१० उनहों ने उसका सब्द न सुना। तब मैं ने कहा की हे परभु
मैं कया करुं? परभु ने मुझे कहा की उठके दमीसक में जा
और वहां सारी बातें जो तेरे करने के लीये ठहराई गई हैं
११ तुझे कही जायंगी। और जैसा की उस जोत के तेज के मारे
मैं देख न सका तो अपने संगीयों का हाथ धरे हुए दमीसक
१२ में आया। और ब्बवसथा की रीत का ऐक भकत जन,
१३ हनानीया, जीसकी भलाई को सारे यहुदी मानते थे। मेरे
पास आया और खड़ा होके मुझे कहा, हे भाई साउल उपर
१४ देख और उसी घड़ी मैंने उसे देख्या। उसने कहा की हमारे
पीतरों के ईसर ने अपनी इछा जानने को और उस धरमी
को देखने को और उसके मुंह का सब्द सुनने को तुझे ठहरा
१५ रख्या है। सो उन बसतुन के लीये जो तु ने देखीं और सुनीं
१६ हैं तु सब लोगों के आगे साछी होगा। और अब बीलंब कयों
करता है? उठके सनान पा और परभु का नाम लेके अपने
१७ पापों को धो डाल। फेर जब मैं यरोसलीम में फीर गया

औान मंदीन में पनानथना कनने लगा ग्रुं ऊत्रा की मैं व्रेसुघ
१८ हो गया। औान मैं ने मुझ से ग्रह कहते उसे देप्पा की सीघन
कनके ग्रनोसलीम से नीकल जा इुस लीग्रे की मेने व्रीष्पैमें
१९ वे तेनी साप्पी न मानेंगे। तव्र मैं ने कहा हे पनभु वे जानते
हैं की मैं तेने व्रीसवासीग्रों को व्रंदीगीनह में डालता नहा
२० औान हन ग्रेक मंडली में उनहें माना कीग्रा। औान जव्र तेने
साप्पी इुसतीफान का लोहु व्रहाग्रा गग्रा मैं भी वहां था औान
उसके मान डालने में संगी था औान उसके व्रघीकों के व्रसतन
२१ कीनप्पवाली कनता था। तव्र उसने मुझे कहा की यला जा
कग्रोंकी मैं तुझे ग्रंदेसीग्रों के पास दुन भेजुंगा।
२२ औान उनहों ने इुस व्रात लों उसकी सुनी तव्र वे यीला के
व्रोले की ग्रेसे को भुम पन से उठा डाल कग्रोंकी इुसका जीना
२३ जोग नहीं। औान जव्र वे यीला के ग्रपने कपड़े फाड़के
२४ घुल उड़ाने लगे। तव्र ग्रघक्ष ने उसे गढ़ में लाने की ग्रगग्रा
की औान कहा की उसे कोड़े मानके ताड़ें जीसतें जानें की वे
२५ कग्रों उसके व्रीनोघ में ग्रुं यीलाग्रे औान जव्र वे उसे यमोटी से
व्रांघते थे पुलुस ने पास प्पड़े ऊग्रे सत पती को कहा कग्रा
तुमहाने लीग्रे जोग है की ग्रेक नुमी मनुप्प को व्रीन दोप्पी
२६ ठहनाग्रे ताड़ना कनो। सतपती सुनके ग्रघक्ष से जा व्रोल की
जो ग्राप कीग्रा याहते हैं जो सोयें की ग्रह मनुप्प तो नुमी
२७ है। तव्र ग्रघक्ष ने पास ग्राके उसे कहा की मुझ से कह कग्रा
२८ तु नुमी है उसने कहा की हां। तव्र ग्रघक्ष ने कहा की मैं ने
व्रऊत सा नोकड़ देके इुस नीनव्रंघता को पाग्रा पुलुस व्रोला
२९ पनंतु मैं नीनव्रंघ उतपंन ऊग्रा। तव्र जो उसे ताड़ा याहते
थे उनहों ने उस से हाथ उठाग्रे औान ग्रघक्ष भी उसे नुमी जान
३० के औान की मैं ने उसे व्रांघा डन गग्रे। ग्रऊदीग्रों ने जीस
व्रात के लीग्रे उसपन दोप्प लगाग्रे उसे नीसयग्र जानने को
दुसने दीन मैं ने उसे व्रंघन से प्पोला औान पनघान ग्राजकों

औान उनकी सानी सभाओं को प्रेकठे होने की अगया की औान पुलुस को नीकाल के उन के आगे प्पड़ा कीया।

२३ तेइसवां पनब्र।

पुलुस का व्रयाव की व्रात कहनी यहूदीयों का कोपीत होना औान पुलुस का व्रयना १—११ उसके घात में यालीस यहूदीयों का नहना कैसनीया में पहुंचया जाके पुलुस का उनके हाथ से व्रयना १२—३५।

१ तव्र पुलुस ने सभा को घयान से देप्प के कहा की हे मनुप्प
भाइयो मैं मन की सानी भलाइ से आज लों इसन के आगे
२ यला। तव्र पनघान याजक हनानीया ने उनहें, जो उस पास
३ प्पड़े थे उसे थपड़ाने की अगया की। पुलुस ने उसे कहा की
हे उजलीत भीत इसन तुहे थपड़ावेगा कयोंकी व्रैवसथा की नीत
पन तु मेने नयाय के लीये व्रैठा है औान व्रैवसथा व्रीनुघ मुहे
४ थपड़ाने की अगया कनता है। तव्र आस पास के लोग व्रोल
उठे की कया तु इसन के पनघान याजक को व्रुना कहता है।
५ पुलुस ने कहा हे भाइयो मैं न जानता था की यह पनघान
याजक है कयोंकी लीप्पा है की तु अपने लोगों के पनघान
६ को व्रुना मत कह। औान जव्र पुलुस ने देप्पा की उन में प्रेक
भाग सादुकी औान दुसने भाग फनीसी हैं तो सभा में पुकाना
की हे मनुप्प भाइयो मैं फनीसी औान फनीसी का व्रेटा हुं
मीनतु से जी उठने की आसा के लीये मैं व्रीयान सथान में
७ पहुंयाया गया। उस के यूं कहतेही फनीसीयों औान सादुकीयों
८ में व्रीवाद हुआ औान मंडली के दो भाग हो गये। कयोंकी
सादुकी कहते हैं की न जी उठना औान न दुत औान न आतमा
९ है पनंतु फनीसी सव्र को मानते हैं। तव्र व्रड़ा हौना मया

और फरीसीयों की ओर के अध्यापक उठे और युप करके
कहने लगे की हम लोग इस मनुष्य में कुछ बुराइ नहीं पाते
परंतु जो कीसी आतमा अथवा दुत ने उस से कहा है तो हम
१० लोग इसर से लड़ाइ न करें। और जब बड़ा झगड़ा ऊआ
तो उनसे पुलुस का टुकड़ा टुकड़ा कीये जाने के डर के मारे
सेना के अध्यक्ष ने जोधाओं को जाने को और उनके मध में
११ से उसे परबलता से लेके गढ़ में लाने को अगया की। अगली
रात को परभु ने उस पास खड़ा होके कहा हे पुलुस धीरज
धर कयोंकी जैसा तु ने मेरे वीष्ये में यरोसलीम में साष्णी दी
१२ है तैसा रुम में भी साष्णी देना तुझे अवेस है। और जब
दीन ऊआ यऊदीयों में से कीतनों ने यह कहके जुकत बांधी
की हम पर धीकार है जब लों पुलुस को घात न करें हम न
१३ खायेंगे न पीयेंगे। और जीनहों ने यह एका कीया था सो
१४ यालीस से उपर थे। और उनहों ने परधान याजकों और
पराचीनों के पास आके कहा की हमों ने अपने पर सराप
लीया है की जब लों पुलुस को घात न करें हम लोग कुछ न
१५ चीष्षेंगे। जैसा की तुम लोग याहते हो की उसके समाचार
को अछी रीत से बुझें अब इस लीये सभा के संग होके सेना
के अध्यक्ष को कहीयो की कल उसे हमारे पास उतार लावे
और तुमहारे पास न पऊंचते ही हम लोग उसे घात करने को
१६ सीध हो रहेंगे। परंतु पुलुस का भांजा ढुके की सुनके गया
१७ और गढ़ में आके पुलुस को कहा। तब पुलुस ने सतपतीन
में से एक को बुलाके कहा की इस तरुन को सेना के अध्यक्ष
१८ पास ले जा कयोंकी उस से कुछ कहना है। वुह उसे लेगया
और सेना के परधान करने लाके कहा की पुलुस बंधुआ ने मुझे
बुलाके याहा की इस तरुन को आप के पास लाउं जो आप
१९ से कुछ कहा याहता है। तब सेना के अध्यक्ष ने उसका हाथ
पकड़ के एकांत में लेजाके पुछा की तु मुझे कया कहा याहता

२० है ? । उसने कहा की जैसा वे लोग उसके व़ीप्पै में चछी नीत
से व़ीयान कीय़ा याहते हैं य़ऊदीय़ों ने प्रका की ।ा है की
२१ आप से पुछके पुलुस को कल सभा में उतान लावें। पनंतु आप
उनकी व़ात न मानय़े कय़ोंकी उन में यालीस से उपन जो
उसके ढुके में हैं जीनलों ने आपस में कीनीय़ा प्याइ है की
जव़लों उसे घात न कनें न प्याय़ेंगे न पीय़ेंगे ख़ान अव़ वे लैस
२२ होके थाप की अगय़ा की व़ाट जोह नहे हैं। तव़ सेना के
अघक्ष ने उस तनुन को व़ीदा कनके योताय़ा की देप्प कोइ
२३ न जाने की तुने य़े व़ातें मुह़ से कहीं। ख़ान उसने सतपतीन
में से दे। को व़ुलाके कहा की कैसनीय़ा को जाने के लीय़े दो
सै। जोघा ख़ान सतन घोड़ यढे ख़ान दो सै। भलइत पहन
२४ नात लों लैस कन नप्पो। ख़ान व़ाहन सहेजो जीसतें वे पुलुस
२५ को यढ़ा के परीलकस अघक्ष पास पऊंयावें। ख़ान उसने इस
२६ व़तान की नीमीत पतनी लीप्पी। परीलकस महामहीमन
२७ अघक्ष को कलाडीय़ुस लीसीय़ास का नमसकान। इस मनुप्प
को य़ऊदीय़ों ने पकड़ा ख़ान उनके हाथ से मानें जाने पन था
तव़ य़ह समह़ के की वुह नुमी है मैं ने जोघाख़ों को लेके उसे
२८ जा छुड़ाय़ा। ख़ान उस पन उनके अपनाघ का दोप्प जानने
२९ को मैं उसे उनकी सभा में ले गय़ा। ख़ान मैं ने उनकी
व़ैवसथा के पनसन के व़ीप्पै में उस पन दोप्प लगाते पाय़ा
पनंतु उसे घात कनने अथवा व़ंघन में डालने को मैं ने कोइ
३० व़ात न पाइ। पनंतु जव़ य़ऊदीय़ों क उसके ढ़के में लगने
का संदेस मुह़े पऊंया मैं ने तुनंत उसे आप पास भेजा ख़ान
उसके दोप्प दाय़कों को भी थगय़ा की, की जो उस पन अपव़ाद
३१ नप्पते हों सो आप के आगे व़ननन कनें कुसल होवे। जोघाख़ों
ने अगय़ा के समान पुलुस को लेके नाते नात अंतपतनस में
३२ लाय़े। ख़ान दुसने दीन घोड़ यढ़ों का उसके साथी छोड़ के
३३ ने गढ को फरेने। सो कैसनीय़ा में आके पतनी अघक्ष को दी

१४ औन पुलुस को भी उसके आगे कीया। अचछ ने पतनी पढ़के
पछा की वुह कौन पनदेस का है औन उसे कीलकीय़ः का वुह
२५ का। उसने कहा की जव तेने दोष्य दायक भी आवेंगे तव मैं
तेनी सुनुंगा औन उसे हीनुदीस के बीयान सथान में नष्पने की
अगय़ा की।

२४ यौवीसवां पनव्र।

य़ऊदीयों का पुलुस पन दोष्य लगाना औन उसका उतन देना १—२१ फीलकस अचछ का उस पन कीनपा कननी औन घुस न पाके पुलुस को व़ंधन में छोड़ जाना २२—२७।

१ पांच दीन पीछे पनधान य़ाजक हनानीय़ा पनायीनों के
औन ततलस नाम ऐक सुव़कता के संग उतन आया औन वे
२ अचछ के आगे पुलुस के वीनुध जा खड़े हुऐ। औन जव वुह
वुलाय़ा गय़ा ततलस ने य़ुं कहके उसे दोष्य देना आनंभ कीया
की हे महानाज फीलकस हम सव पना धन मान के हन समय़
३ औन हन सथान में वड़े कुसल से नहते हैं। कय़ोंकी हमलोग
आप के कानन से वड़ा यैन पाते हैं औन आप की पनवीनता से
४ इन लोगों को वहुत से लाभ हैं। तथापी जीसतें मैं आप को
अधीक कलेस न देउं मैं आप की वीनती कनता हुं की कीनपा
५ कनके हमानी थोड़ी वातें सुनीये। कय़ोंकी हमों ने इस मनुष्य
को सव य़हुदीय़ों में जो जगत में हैं वीगाड़ु औन दंगइत पाय़ा
६ औन नसनानीय़ों के पंथ का अगुआ है। उसने मंदीन को भी
अपवीतन कनने याहा उसे हम ने पकड़ा औन अपनी वैवसथा
७ की नीत पन उसका नय़ाय़ कनने याहा। पनंतु लसीय़ास अचछ
वड़ी सेना लेके हम पन यढ़ आय़ा औन उसे हमाने हाथ से
८ छुड़ा लेके। उसके दोष्य दाय़कों को आप पास आने की अगय़ा

को, जीसतें आप उसे जांच के हमारे दोष्प लगाने की व्रातें को
९ व्रुझे। श्रैार य़ङ्कदीय़ों ने भी य़ह कहके मान लीय़ा की य़े व्रातें
१० य़ोंहीं हैं। परेन्त जव्र अचक्ष ने पुलुस को सैन कीय़ा तव्र उसने
उतन दीय़ा की हे फ़ीलकुस जैसा मैं जानता ङ्कं की आप व्रनसों
से इन लोगों के नय़ाय़ी हैं मैं अधीक सुयातइ से अपना उतन
११ देता ङ्कं। आप समझ सकते हैं की व्रारह दीन से अधीक
नहीं ङ्कए जव्र से मैं सेवा के लीय़े य़रुसलीम में गय़ा था।
१२ श्रैार उनहों ने मुझे कीसी के संग मंदीर में व्रीवाद करते
अथवा लोगों को भड़काते न पाय़ा न तो मंडली में न नगर
१३ में। श्रैार न वे उन व्रातों को ठहरा सकते हैं जीनके व्रीष्पै
१४ में वे मुझ पर दोष्प लगाते हैं। परंतु मैं आप के आगे य़ह
व्रात मान लेता ङ्कं की उस मत के समान जीसे वे उपद्रव कहते
हैं मैं अपने पीतरों के इसर की सेवा करता ङ्कं श्रैार सव्र व्रातों
का जो व्रैवसथा श्रैार भवीसव्रानीय़ों में लीष्पी है व्रीसवास
१५ रष्पता ङ्कं। श्रैार इसर से य़ह आसा रष्पता ङ्कं की मीरतकों
का जी उठना होगा कय़ा धरमी का कय़ा अधरमी का जीसे वे
१६ आप भी मानते हैं। श्रैार इसी व्रात के लीय़े मैं इसर के
श्रैार मनुष्पों के आगे नीरदोष्प मन रष्पने को साधन करता
१७ ङ्कं। अव्र व्रङ्कत व्ररसों के पीछे मैं दान श्रैार भेंट अपने लोगों
१८ के लीय़े लाय़ा। इस में आसीय़ा के कीतने य़ङ्कदीय़ों ने मुझे
न मंडली से न दंगा से मंदीर में पवीतर कीय़ा ङ्कआ पाय़ा।
१९ श्रैार य़दी उनका मुझ पर कुछ अपव्राद होता तो उचीत था
२० की वे आप के आगे आके मुझ पर दोष्प लगाते। अथवा जव्र
मैं सभा के आगे ष्पड़ा था तव्र य़दी इनहों ने मुझ में कुछ अपराध
२१ पाय़ा हो तो कहें। केवल इस एक व्रात के व्रीष्पै के लीय़े की
मैं उन में ष्पड़े ङ्कए पुकारा की मीरतकों के जी उठने के कारन
से आज मैं तुमहों से पुछा जाता ङ्कं।
२२ श्रैार जव्र फ़ीलकुस ने य़े व्रातें सुनीं तो य़ह कहके उनहें

टाल दीया की जब् लसीयास सेना का सधछ आवेगा मैं तुमहा-
२३ नी वात अछी नीत से बुझुंगा। फेन उसने पुलुस को दीनीसट
में नष्पने को और उसे छुटी देने को और उसके मीतनों को
उस पास आने जाने को और सहाय कनने को एक सतपती को
२४ अगया की। और कीतने दीनों के पीछे फीलकस अपनी पतनी
दनुसला: यहूदनी के संग आया और पुलुस को वुलाके मसीह
२५ के वीसवास के वीष्पै में उस से सुना। और जब् वुह घनम
के और संजम के और आवैया नयाय के वीष्पै में कह नहा था
फीलकस ने कांपते हुए उतन दीया की अब् तो तु जा मैं
२६ अवकास पाके फेन तुझे वुला भेजुंगा। उसे यह आसा भी थी
की पुलुस से कुछ नोकड़ पावे जीसतें उसे छोड़ देवे इस लीये वुह
२७ उसे वानंवान वुला के उस से वानता कनता था। और दो
वनस पीछे पनकयुस फेसतस फीलकस की सनती आया और
फीलकस ने यहूदीयों की पनसनता के लीये पुलुस को वंधुआइ
में छेड़ा।

२५ पचीसवां पनव्।

यहूदीयों का पुलुस पन दोष्प लगाना और पुलुस का उतन और दोहाइ देनी १—१२ अगनपा नाजा का पुलुस का समाधान सुनना १३—२७।

१ इस लीयें जब् फेसतस उस पनदेस में पहुंचा तो तीन दीन
२ पीछे कैसनीया से यनोसलीम को गया। तव् पनधान याजक
और यहूदीयों के मुष्पीयों ने उस के आगे हो पुलस के वीनोध
३ में उस से वीनती कनके इतना अनुगीनह चाहा। की वुह
उसे यनोसलीम में मंगवावे और उसे मानग में घात कनने को
४ ढुके में हुए। पनंतु फेसतस ने उतन देके कहा की पुलुस कैसनीया
५ में नहे और मैं आप भी सीघन वहां जाने पन हुं। और

तुममें से जो मेरे संग जासकें सो चलें और यदी उस में कुछ
६ अपराध होय तो उस पर दोष लगावें। सो उन में दस दीन
से उपर रहके वुह कैसरीया को गया और दुसरे दीन वीचार
७ आसन पर वैठा और पुलुस को लाने की अगया की। और
जब वुह सनमुष्प हुआ तो यरोसलीम से आये हुए यहुदीयों
ने चारो ओर खड़े होके पुलुस पर वहुत भारी भारी दोष
८ लगाये जो ठहरा न सके। तब उसने अपने बीष्पै में उतर
दीया की मैं ने कोइ अपराध न तो यहुदीयों की वैवसथों
९ के न मंदीर के और न कैसर के वीरोध में कीया। तब
फरसतस ने यहुदीयों का मन रखने के लीये पुलुस को उतर
देके कहा कया तु इन बातों के बीष्पै में मेरे नीयाय के लीये
१० यरोसलीम को जायगा?। परंतु पुलुस ने कहा की मैं कैसर
के बीयार सथान में खड़ा हुं उचीत है की मेरा वीचार यहीं
कीया जाय यहुदीयों का मैं ने कुछ अपराध न कीया जो आप
११ भी अछी रीत से जानते हैं। कयोंकी यदी मैं ने अपराध अथवा
मारे जाने के जोग कुछ कीया है तो मैं मारे जाने से नाह नहीं
करता परंतु जो उन दोष्पों में से जो ये मुझ पर लगाते
हैं कुछ नहीं है तो कोइ मुझ को उनहें सौंप नहीं सकता
१२ मैं कैसर की दोहाइ देता हुं। तब फरसतस ने सभा से बात
चीत करके उतर में कहा की तु कैसर की दोहाइ देता है तु
कैसरही के पास भेजा जायगा।

१३ और कीतने दीनों के पीछे अगरपा राजा और बरनीकी
फरसतस को नमसकार करने के लीये कैसरीया में आये।
१४ और उनके वहां वहुत दीन होते हुए फरसतस ने पुलुस का
समाचार राजा से कहा की यहां ऐक मनुष्प है जीसे फीलकस
१५ बंधन में छोड़ गया। जब मैं यरोसलीम में था परधान
याजकों और यहुदीयों के पराचीनों ने उसके वीष्पै में संदेस
१६ देके चाहा की उस पर दंड की अगया करुं। मैं ने उनहें

छतन दीया की नुमीयों का यह व्रेवहान नहीं की कीसी को
नास होने को सौंपे जव्र लों दोप्पी अपने दोप्प दायकों के
१७ सनमुप्प न होवे औन व्रयाव की व्रात कनने न पावे। इस
पीछे जव्र वे यहां एकठे आये मैं ने व्रीना व्रीलंव्र व्रीहानहीं को
व्रीयान आसन पन व्रैठ के उस मनुप्प को लाने की अगया की।
१८ औन जव्र उसके दोप्पदायकों ने प्पड़े होके उन दोप्पों में से जो
१९ मैं समझता था कोइ दोप्प न लाये। पनंतु वे अपने मत की
औन कीसी यसु के व्रीप्पै में, जो मन गया जासे पुलुस कहता है
२० की जीता है कुछ अपव्राद उस पन कनते थे। पनंतु जैसा की
उसके व्रीप्पै की व्रात में मुझे संदेह था मैं ने उसे कहा यदी तु
याहे तो यनोसलीम को यल औन वहां इन व्रातों के व्रीप्पै में
२१ तेना व्रीयान कीया जाय। पनंतु जव्र पुलुस ने दोहाइ दी
की मेना नीयाय महानाज के व्रीयान पन छोड़ा जाय तव्र मैं ने
उसे नप्प छोड़ने की अगया की जव्र लों उसे कैसन कने भेजुं।
२२ तव्र अगनपा ने परसतस से कहा की मैं भी उस मनुप्प की सुनने
२३ याहता हुं वुह व्रोला की कल उसे सुनयेगा। सो दुसने दीन
जव्र अगनपा औन व्रननीकी व्रड़े व्रीभव से पनधान सेनापतीन
औन नगन के सनेसठों के संग व्रीयान सथान में आये परसतस
२४ की अगया से पुलुस आगे पहुंयाया गया। तव्र परसतस ने
कहा की हे नाजा अगनपा औन हे साने लोगो जो यहां हो तुम
लोग इस मनुप्प को देप्पते हो जीसके व्रीप्पै में यहुदीयों की
सानी मंडली यनोसलीम से लेके यहां लों मेन पीछे पड़ी हैं
औन यीलाते हैं की आगे को यह जीने के जोग नहीं है।
२५ पनंतु मैं ने उस में मान डालने के जोग कोइ अपनाध न पाया
तथापी जैसा उसने महानाज की दोहाइ दी है मैं ने उसे भेजने
२६ को ठहनाया है। मुझे उसके व्रीप्पै में कीसी व्रात का नीसयय
नहीं जो मैं अपने महानाज को लीप्पुं इस कानन मैं उसे
तुमहाने आगे औन नीज कनके हे नाजा अगनपा आप के आगे

२७ बाया हुं जीसतें मैं नायने के पीछे कुछ षोप्प सकुं। कयोंकी बीन अपनाघ बनन कीये हुये बंघुये को भेजना मुझे अनुचीत समझ पड़ता है।

२६ छब्बीसवां पत्व।

नाज सभा में पुलुस का अपना समायान बनन कनना १—२३ उसके बीष्पे में फसतस की समझ अगनपा का मन फीनना औान पुलुस को नीनदोष्प ठहनाना २४—३२।

१ तब अगनपा ने पुलुस कों कहा की अपने बयाव की बात कनने को तुझे कुटी है तब पुलुस ने हाथ बढ़ा के अपने बयाव
२ की बात कहो। कीं हे नाजा अगनपा मैं जो आज के दीन आपके आगे उन सब बातें क बीष्पै में, जो यहूदी मुझ पन दोष्प लगाते हैं अपने बयाव की बात कनुं यह मेनी समझ
३ में मेना बड़ा भाग है। नीज कनके की आप यहूदीयों के साने बेवहानों औान पनसनें के जानकान हैं इस कानन मैं आप
४ की बीनती कनता हुं की घीनज से मेनी सुनीये। तननाइ से जैसी कुछ मेनी यलन थी, जो पहीले से यनोसलीम में
५ अपने लोगों में थी साने यहूदी जानते हैं। जो वे साष्पी दीया याहें तो मेना समायान पहीले से जानते हैं की मैं उनके मतके
६ अतयायान के समान एक फनीसी हो नहा था। औान अब मैं उस बाया की आसा के लीये जो इसन ने हमाने पीतनों
७ को दी बीयान सथान में षड़ा कीया गया हुं। औान हमानी बानह गोसटी उस बाया लों पहुंयने को नात दीन बड़े अभीलास से पनानथना कनने में आसा नष्पती हैं हे नाजा अगनपा इसी आसा के बीष्पै में यहूदी मुझ पन दोष्प लगाते
८ हैं। यह कया आप की समझ में बीसवास के जोग नहीं का

९ इसन मीनतकों को जोलावे ?। मैं भी नोसयग्र समहुता था
की मुहु पन उयीत है की ग्रसु नासनी के नाम के व़ीनोघ में
१० व़ऊत कुछ कनुं। सो मैं ने य़नोसलीम में ग्रहो कोया ग्रीन
पनघान य़ाजकों से पनाकनम पाके व़ऊतेने सीघों को व़दो-
गीनह में डाला ग्रीन जव़ वे घात कीये जाते थे मैं उनके
११ व़ीनुघ कहता था। ग्रीन मैं ने व़ानंव़ान सानी मडली में उनहें
ताड़ना दी ग्रीन उनसे ग्रपनींदा कनवाइ ग्रीन उनक व़ैन में
ग्रतय़ंत व़ौाड़ाहपन से मैं उपनी नगन लों उनहें सताया कोया।
१२ इस व़ात के लीये जव़ मैं पनघान य़ाजकों से पनाकनम ग्रीन
१३ ग्रगया पाके दमीसक को यला जाता था। मघय़ान को नानग
में होते ऊए हे नाजा मैं ने सनग से एक जोत सुनज से भी
ग्रघीक तेजोमय़ देप्पो जो मेने ग्रीन मेने संगी जातनीकों की
१४ यानों ग्रीन यमकी। ग्रीन जव़ हम सव़ भुमं पन गीन पड़े
तो मैं ने इव़नानी भाप्पा में मुहे युं कहते एक सव़द सुना की
साउल साउल तु मुहे कयों सताता है ग्रनइ पन लात मानना
१५ तेने लीये कठीन है। तव़ मैं ने कहा, हे पनभु तु कौन है ?
१६ वुह व़ोला की मैं इसु ऊं जीसे तु सताता है। पनंतु उठ प्पड़ा
हो कयोंकी तुहे उन व़सतुन का, जो तु ने देप्पीं हैं ग्रीन उनका
जो मैं तुहे दीप्पाउंगा सेवक ग्रीन साप्पी व़नाने के लीये तुहे
१७ दनसन दीया है। तुहे लोगों से ग्रीन ग्रंनदेसीयों से व़याते
ऊए जीन पास उनकी ग्रांप्पें प्पोलने को ग्रव़ मैं तुहे भेजता ऊं।
१८ जोसतें वे ग्रघय़ाने से उंजीयाले की ग्रोन ग्रीन सैतान के व़स से
इसन की ग्रोन फीनें ग्रीन पाप मोयन ग्रीन उन में ग्रघीकान
१९ पावें जो मेने व़ासवास के दुवाना से पवीतन ऊए। तव़ से हे
नाजा ग्रगनपा मैं ने सनग के दनसन का व़ीनघ न कीया।
२० पनंतु पहीले दमीसक में ग्रीन य़नोसलीम में ग्रीन य़ऊदीय़ः
देस के साने लोगों को ग्रीन ग्रंनदेसीयों को कहा की पसयाताप
करो ग्रीन पसयाताप के जोग का कानज कनके इसन की ग्रोन

२१ फरीसे। इन ब्रातों के लीये ग्रहुदी मुहे मंदीर में पकड़ के
२१ घात करने को लैस ऊए। से इसर के उपकार पाके मैं आज
लों छोटे ब्रड़े के आगे साखी देता ऊ और उन व्रातों को छोड़,
कुछ न कहता था जीनके होने का संदेस अवीसदव्रकतों ने
२३ और मुसा ने दीया। की मसीह कसट उठा के मीरतकों में
से पहीले जी उठके लोगों और अंनदेसीयों के आगे जोत को
२४ परगट करेगा। और जव्र वुह अपने व्रयाव की व्रात कर रहा
था फरसतस ने पुकार के कहा की हे पुलुस तु आप में नहीं है
२५ व्रीदया की व्रऊताइ ने तुहे सीरी कीया। परंतु उसने उतर
दीया की हे महा महीमन फरसतस मैं सीरी नहीं परंतु धरम
२६ की और सगयान की व्रातें उचारता ऊं। कयोंकी राजा भी
ये व्रातें जानते हैं जो मैं भी खोल के कहता ऊं कयोंकी मुहे
नीसयय है की इन में से कोइ व्रसतु उस पर छीपी नहीं कयों-
२७ की यह व्रात कोने में न ऊइ। हे राजा अगरपा कया आप
अवीसदव्रकतों के व्रीसवासी हैं मैं जानता ऊं की आप व्रीसवासी
२८ हैं। तव्र अगरपा ने पुलुस से कहा, तनीक है की तु मुहे
२९ मना के कीरीसटान व्रना डाले। पुलुस व्रोला मैं तो इसर
से याहता ऊं की केवल आप नहीं परंतु सव्रक सव्र भी जो
आज मेरी सुनते हैं तनीक कया उन सीकरों को छोड़ पुरे मेरे
३० समान होवें। और जव्र उसने युं कहा तो राजा और अधक
३१ और व्रररीकी और उनके संगी उठे। और वे अलग होके
आपुस में कहने लगे की इस मनुष्य ने मार डालने के अथवा
३२ व्रंधन के जोग कुछ नहीं कीया। तव्र अगरपा ने फरसतस से
कहा, जो यह मनुष्य कैसर की दोहाइ न देता तो छुड़ाया
जा सकता।

२७ सताइसवां पत्र।

पुलुस का रुम को भेजा जाना और व्रड़ी व्रड़ी

व्रीपत में पड़ना १—२६ उसके दनसन का पुरा होना २७—४४।

१ और जैसा की जहाज़ पन प्रेतलीय़ः का हमाना जाना
ठहनाया गया उनहों ने पुलुस को कीतने बंधुओं के संग अगसतुसी
२ सेना में के य़ुलीय़ुस नाम सतपती को सौंप दीया। और हमने
अदनमतीनी जहाज़ पन यढ़के आसीया के तीन तीन होके
जाने का मन कन के लंगन उठाया और तसलुनी का प्रेक
३ मकदुनी अनीसतनखस हमाने संग था। दुसने दीन हम सैदा
लों पहुंये और य़ुलीय़ुस ने पुलुस पन दया कनके उसे अपने
४ मीतनों के पास जाके यैन कनने दीया। वहां से लंगन उठाके
हम कपनस के नीछे होके पहुंये कयोंकी व्रयान सनमुख की
५ थी। और कीलकीय़ः और पंफुलीय़ः के सनमुख के समुदन
६ में से हम लुकीय़ः के मीना में आये। वहां उस सतपती ने
प्रेनलीय़ः को जाते हुए प्रेक असकंदनानी जहाज़ पाके हमें
७ उसपन यढ़ाया। और जब हम बहुत दीन लों धीने धीने
यले गये और व्रयान के नोकने से कठीन से कंदुस के सनमुख
८ आके कीनत के तले सलमुनी के सनमुख यले। और सकेती
से वहां से आगे बढ़के प्रेक सथान में, जो सुनदन घाट कहावता
९ है आये और ल.सीया का नगन उसके पनोस था। और जब
समय बहुत बीत गया और यले जाने में जोख्पीम था, कयोंकी
ब्रत का समय बीत गया था पुलुस ने उनहें यीता के कहा,।
१० हे महासय़ मैं देख्पता हुं की इस जातना में दुख और बहुत
टुटी होगी केवल जहाज़ और बोझाइ को नहीं पनंतु हमाने
११ पनान की भी। पनंतु पुलुस के कहने से सतपती को मांझी का
१२ और जहाज़ पती का अधीक मान था। और जैसा की वुह
घाट जाड़ा काटने को परैलाव न था बहुतेनों ने वहां से यल
नीकलने को कहा जीसतें जो हो सके तो फुनीकी लों पहुंय

केजाड़ा काटें वुह कीरत का घाट दष्पीन पछीम श्रीर उतर
१३ पछीम की श्रोर को था। श्रीर जब दष्पीन की बयार रसायन
रसायन बहने लगी उनहें ने अपने अभीलाष को पुरा हुआ
१४ समझ के लंगर उठाया श्रीर कीरत के पास से चले गये। परंतु
तनीक पीछे उसके सनमुष्प एक आंधी की बयार उठी जो
१५ युरकलीदुन कहावती है। श्रीर जयां जहाज़ उड़ाइ चली
गइ श्रीर बयार के सनमुष्प न ठहर सकी हमने हाथ उठाया।
१६ श्रीर कलादी नाम कीसी टापु के तले जाते जाते बड़े कठीन
१७ से डोंगी को बस में कीया। सो जब उनहें ने उसे प्वींच लीया
तब जतन कर कर जहाज़ को बांध के येत बालु में फसने की
१८ डर के मारे पाल गीरा दीया श्रीर युं उड़ाये गये। श्रीर
आंधी से नीपट सताये जाके दुसरे दीन उनहें ने जहाज़ को
१९ हलुक कीया। श्रीर तीसरे दीन हमने अपने हाथों से जहाज़
२० का सामगरी को फेंक दीया। श्रीर जब बहुत दीन लों सुरज
श्रीर तारे दीष्पाइ न दीये श्रीर आंधी भी न थंमी अंतत को
२१ बचने की सारी आसा हम से जात रही। श्रीर बहुत से
उपवास के पीछे पुलुस उनके मध में ष्पड़ा होके बोला की हे
महासय तुमहें मेरी सुनने को उचीत था श्रीर कीरत से न
२२ ष्पोलते जीसतें दुष्प श्रीर टुटी न उठाते। तथापी अब भी मैं
तुमहारी बीनती करता हुं की धीरज धरो कयोंकी तुम में से
कीसी के परान का नास न होगा परंतु केवल जहाज़ का।
२३ कयोंकी जीस इसर का मैं हुं श्रीर जीसकी सेवा करता हुं उसके
२४ दुत ने रात को मुझे दरसन देके। कहा की हे पुलुस मत डर
तुझे कैसर के आगे ष्पड़ा होना अवस है श्रीर देष्प इसर ने
२५ इन सभों को, जो तेरे संग हैं तुझे दीया। इस कारन हे
महासय धीरज धरो कयोंकी मैं इसर पर भरोसा रष्पता हुं
२६ की जैसा मुझे कहा गया तैसाही होगा। परंतु कीसी टापु
२७ में हम अवस जा पड़ेंगे। श्रीर जब चौदहवीं रात हुइ श्रीर

हम अदनीया के समुदन में माने फीने आधी नात के समय
में डांड़ीयों ने अटकल से जाना की कीसी देस के नीकट पऊंये।
२८ और थाह लेते उनहों ने बीस पुनसे पाये और थोड़ा आगे
२९ जाके फेन थाह ली तो पंदनह पुनसे पाये। तब पथनैले तीन
पन पड़ने की डन के माने उनहों ने पतवान की ओन से यान
३० लंगन डाले और बीहान होने की आसा में नहे। पनंतु जब
डांड़ीयों ने जहाज़ पन से भागने की जुकत की और गलही से
३१ लगन डालने के छल से डोंगी उतानी। पुलुस ने सतपती और
जोधाओं को कहा की जब लों ये जहाज़ में न बने नहें तुम
३२ लोग बच नहीं सकते। तब जोधाओं ने डोंगी की नसीयों को
३३ काट के उसे गीना दीया। और जयों दीन होने लगा यह
कहके पुलुस ने उनहें कुछ प्याने को बीनती की, की तुम लोग
यौदह दीन से तकते हो और उपवास कन नहे हो और कुछ
३४ नहीं प्याये हो। अब मैं तुमहानी बीनती कनता हूं की कुछ
प्यालो की इस में तुमहाना बयाव है कयोंकी तुम में से कीसी के
३५ सीन का ऐक बाल न गीनेगा। उसने युं कहके नोटी ली और
सभों के आगे ईसन का धन माना और तोड़ के प्याने लगा।
३६।३७ और मन में धीनज पाके सभों ने नोटी प्याई। और हम
३८ सबके सब जहाज़ पन दो सौ छीहतन पनानी थे। और भोजन
से तीनीपत होके उनहों ने अंन को समुदन में डाल के जहाज़
३९ को हलुक कीया। और जब दीन हुआ उनहों ने उस भूम को
न पहीयाना पनंतु ऐक कोल देप्पी जीसकी तीन था जीस में
उनहों ने याहा की जो हो सके तो जहाज़ को उसमें घुसा देवें।
४० और जब उनहों ने लंगन उठाये तो तुनंत पतवान की नसी
प्पाल के समुदन में छोड़ी और बयान के नुप्प पन बड़ी पाल
४१ यढ़ा के तीन की ओन यले। पनंतु ऐक सथान में जहां दो
समुदन का संगम था पहुंय के जहाज़ को तीन पन दौड़ा दीया
तब गलही फंस गई और नुक गई और लहनों के बहने के

४२ मारे पतवार को ओर टुट गई। तब जोधाओं का मंतन हुआ
को बंधुओं को मान डालें न हो की उन में से कोई पंवन कु
४३ यब दें। पनंतु पुलुस को बयाने की इच्छा से सतपती ने उनके
ठहनाये हुऐ से उनहें नोक नष्पा ओन जो पंवन सकते थे
पहीले उनहें समुदन में कुद के तीन पन जाने को आगया की।
४४ अनु ओन कीतनी सीधीयों पन ओन कीतने जहाज के टुकड़ों
पन ओन यों हों हुआ की वे सब के सब भुम पन कुसल से
पहुंय गये।

२८ अठाइसवां पनब।

पुलुस पन सनप का लपटना १—६ बनैले लोगों की
कीनपा ओन पुलुस का नोगीयों को यंगा कनना
७—१० उनका नुम में जाना ११—१६ यहूदीयों
के आगे पुलुस का अपना सनायान बनन कनना
१७—२९ पुलुस का भाड़े के घन में नहना ओन दो
बनस लों उसदेस कनना ३०—३१।

१ ओन उन के बयने के पीछे वे जान गये की उस टापु का नाम
२ मलीता था। ओन वहां के बनैले लोगों ने हम सभों पन बड़ा
अनुगनह कीया कयोंकी मेंह की झड़ी ओन जाड़े के मानें उनहों
३ ने आग सुलगा के हम सभों को पास बुलाया। ओन जब पुलुस
ने लकड़ीयां की आंटी एकठी कनके आग पन नष्पी एक नाग
४ ताप पाके नीकला ओन उसके हाथ पन लपट गया। तब उन
बनैले लोगों ने उस जंतु को उसके हाथ पन लटकते देष्प के
आपुस में कहा की नीसयय यह मनुष्प हतयाना है यदपी यह
समुनदन से बय नीकला तथापी दंड दायक उसे जीने नहीं
५ देता। पनंतु उसने उस जंतु को आग में झटक के कुछ दुष्प न
६ पाया। ओन वे देष्पते नहे की वुह सुज जायगा अथवा आकस-

मात गीन के मनजाय़गा पनंतु जव़ उनहें ने व़ड़ी व़ेन लें अ·
गाना। औन उस पन कुछ दुप्प पड़ते न देप्पा तव़ कुछ औन ही
७ समझ के व़ोले की य़ह देव है। औन इस सावाने में उस टापु
के ठाकुन का अधीकान था जीसका नाम पव़लय़ुस था उसने हम
लोगें को घन लेजाके तीन दीन लें हमाना सीसटाचान कीय़ा।
८ औन य़ुं ऊआ की पव़लय़ुस का पीता जन से औन आंवलोऊ
से नोगी पड़ा था पुलुस ने उस पास जाके पनानथना की औन
९ अपने हाथ उस पन नप्प के उसे यंगा कीय़ा। सो जव़ य़ह
ऊआ तो औन भी जो उस टापु में नोगी थे आय़े औन यंगे
१० ऊय़े। उनहें ने भी व़ऊत आदन से हमाना सनमान कीय़ा
औन जव़ हम लोग यलने लगे तो जो जो हमें आवसक था सो
११ सो उनहें ने लाद दीय़ा। औन तीन मास पीछे हम लोग एक
असकंदनीय़ः जहाज़ पन यलनीकले जीसने उस टापु में जाड़ा
१२ काटा था जीसके यीनह दे देव व़ये थे। औन सीना कोसी में
१३ पऊंय के तीन दीन नहे। फेन वहां से तीन तीन तीन घुम
के नीजय़ुम के सनमुप्प आय़े औन एक दीन पीछे दप्पीन की
१४ व़य़ान यली तव़ हम लोग दे दीन में पतय़ुली में पऊंये। वहां
हमलोग भाइय़ें को पाके उनकी व़ीनती से सात दीन ठहने
१५ औन नुम को यले गय़े। वहां से भाइय़ें ने हमाना संदेस सुन
के अपीफोनम औन तीन सना लें हमानी भेंट को आय़े पुलुस
१६ ने उनहें देप्प के इसन की सतुत की औन जीव पाय़ा। औन
जव़ हम नुम में आय़े सतपती ने व़ंधुओं को नीज सेना के पन
धान को सैांप दीय़ा पनतु पुलुस अपने नप्पवाल जोधा के साथ
१७ अकेला अपनेही घन मे नहने पाय़ा। औन एसा ऊआ की
तीन दीन पीछे पुलुस ने सनेसठ य़ऊदीय़ें को वुलाय़ा औन
जव़ वे एकठे आय़े उनहें कहा, हे भाइय़े। य़दपी मैं ने कोइ
कनम लोगें के व़ेवहान का अथवा पीतनें का उलटा न कीय़ा
तथापी मैं व़ंधुआ होके य़नोसलीम से नुमीय़ें के हाथ में सैांपा

१८ गया। उनहों ने मुहे जांय के छोड़ देने याहा इसलीये की
१९ मुहृ में मारे जाने का कोइ कानन न था। पन जव्र यहुदीयों
ने व्रीनोध कीया ते मैं ने सकेती से कैसन की दोहाइ दी इस
लीये नहीं की मैं अपने लोगों पन कीसी व्रात का दोष्प देउ।
२० सो इसी कानन से मैं ने तुमहें देष्पने के। चैान व्रात यीत कनने
के। व्रीनती की कयोंकी इसनाइल की आसा के लीये मैं इस
२१ सीकन से व्रंधा ऊं। उनहों ने उसे कहा की हम सभों ने तेने
व्रीष्पै में यहुदीयः से पतनी न पाइ चैान न कीसी ने भाइयों म
से आके कुछ संदेस दीया अथवा कुछ तेने व्रीष्पै में व्रुना कहा।
२२ पनंतु जो तु समहृता है हम तुहा से सुनने याहते हैं कयांकी
हम जानते हैं की हनएक सथान में इस मत के व्रीष्पै में नीनदा
२३ की जाती है। चैान वे उसके लीये एक दीन ठहनाके उसके
टीकाव में व्रहुताइ से आये उनके आगे वुह व्रननन कनके मुसा
की व्रैवसथा से चैान भवीसदव्रानीयों से व्रीहान से लेके सांहृ
लों इसन के नाज पन साष्पी देता चैान यसु के मत पन पनमान
२४ लाता था। तव्र कीतनों ने उन व्रातों पन जो कही जाती
२५ थीं व्रीसवास कीया चैान कीतनों ने न कीया। जव्र वे आपुस में
एक मता न ऊए उस से पहीले की वे यलेजायें पुलुस ने उनहें
यह व्रयन कहा की धनमातमा ने हमाने पीतनों से आसीया
२६ भवीसदव्रकता के दुवाना से ठीक कहा। की इन लोगों के पास
जा चैान कह की सुनते ऊए सुनोगे चैान न समुहोगे देष्पते
२७ ऊए देष्पेगे चैान न सुहेगा। कयोंकी इन लोगां का मन मोटा
ऊआ चैान उन के कान सुनने में भानी ऊए हैं चैान उनहों ने
अपनी आंष्पें मुंद लीया है न हो की वे आंष्पों से देष्पें चैान
कानों से सुनें चैान मन में समहें चैान फीन जांय चैान मैं
२८ उनहें यंगा कनुं। सो यह तुमहें जाना जाय की इसन की
२९ मुकत अंनदेसीयों के पास भेजी गइ चैान वे सुनलेंगे। जव्र
वुह ये व्रातें कह युका तो यहुदी आपुस में व्रड़ा व्रीवाद कनते

३० ऊठे यले गए। परंतु दो वरस भर के पुलुस अपने ही भाड़े
के घर में रहा कीया और सभों को जो उस पास आते थे
३१ ग्रहन कर के। वीना रोक से वड़न खोल खोल ईसर के
राज का उपदेस करता रहा और परभु यसु मसीह के वीषै
की वातें सीखाता रहा।

पुलुस की पतनी नुमीयों को

---

१ पहीला पनव।

१ यसु मसीह का सेवक पुलुस वुलाया ऊआ ऐक पनेनीत श्रौन
२ इसन के मंगल समाचान के लीये श्रलग कीया गया। जो उसने
श्रपने श्रागमगयानीयों के श्रोन से पवीतन पुसतकों में पनन
३ कीया। श्रपने पुतन हमाने पनभु यसु मसीह के वीष्यै में जो
४ सनीन के संवंघ से दाउद के वंस से ऊश्रा। पनंतु पवीतनता
के श्रातमा के संवंघ से इसन का पुतन है जैसा की उसके जी
५ उठने के दीनढ़ पनमान से ठहन गया। जीस से हमों ने
श्रनुगीनह श्रौन पनेनीतत पाया की समसत लोग श्राघीनता
६ के लीये उसके नाम पन वीसवास लावें। जीनहों में तुम लोग
७ भी यसु मसीह के वुलाये ऊऐ हो। उन सव नुमीयों को जो
इसन के पीश्राने श्रौन वुलाये ऊऐ सीघ हैं हमाने पीता इसन
श्रौन पनभु यसु मसीह से श्रनुगीनह श्रौन कुसल तुमहों पन
८ होवे। पहीले मैं यसु मसीह के श्रोन से तुमहाने लीये श्रपने
इसन का घन मानता ऊं की तुमहाना वीसवास समसत जगत
९ में कहा जाता है। कयोंकी इसन मेना साघ्घी है जीसकी सेवा

मैं अपने आतमा से उसके पुतर के मंगल समाचार में करता
१० हूं की मैं कैसे तुमहारी चरचा नीरंतर करता हूं। और
सदा अपनी परारथना में बीनती करता हूं की जो अब ईसर
की इछा से मेरी यातरा कुसल से कुसल होय तो तुमहारे पास
११ आउं। क्योंकी मैं तुमहों से भेंट करने को नीपट लालसा
रखता हूं की मैं तुमहें कोइ आतमीक दान पहुंचाउं की तुम
१२ लोग दीरढ हो जाओ। अरथात की मैं तुमहों में मीलके उस
बीसवास के कारन जो तुमहों में और मुझ में है आपुस में सांत
१३ पाउं। और हे भाइयो मैं चाहता हूं की तुम लोग उस से
अगयान न रहो की मैं ने तुमहारे पास आवने को बारंबार
मन कीया की जैसा मुझ को आन आन लोगों से फल मीला
वैसाही कुछ तुमहों से भी पाउं परंतु आज लों रुका रहा।
१४ क्योंकी मैं युनानीयों और बरबरों और गयानीयों और
१५ अगयानीयों का रीनी हूं। सो मैं तुमहों को भी जो रुम में हो
सामरथ भर मंगल समाचार का संदेस देने को सीध हूं।
१६ क्योंकी मैं मसीह के मंगल समाचार से लजीत नहीं हूं इस
लीये की वुह हर एक बीसवासी का उधार करने के लीये
ईसर का सामरथ है पहीले यहुदी का फेर युनानी का।
१७ क्योंकी उस में ईसर का धरम परगट हुआ है जो नीर केवल
बीसवास से है जैसा लीख्या है की धरमी बीसवास से जीवेगा।
१८ क्योंकी ईसर का करोध मनुष्यन की समसत अधरमता और
असतता पर सरग से परगट हुआ जो सत को असतता से बंद
१९ करते हैं। इस लीये की ईसर का बीष्ये जो कुछ जाना जा
सकता है उन पर परगट है क्योंकी ईसर ने उन पर परगट
२० कीया है। इस लीये की उसके गुन जो जगत की उतपती से
अदीरीस हैं अरथात उसका अनंत पराकरम और ईसरत
सीरीसट पर दीरीसट करने से पहीचाना जाता है यहां लों
२१ की वे नीरुतर हैं। क्योंकी उनहों ने ईसर को चीनह के

उसकी महीमा उसके इसनत के जोग न कीया श्रोन न उसका
घन माना पनंतु अपनी भावना से व्रहक गये श्रोन उनके
२१ अंत: कनन अगयानता से अंधयाने ऊए। वे अपने को गयानी
२२ ठहना के मुनप्य व्रन गये। श्रोन उनहों ने अव्रीनासी इसन
की महामा को व्रीनास मान मनुप्य की श्रोन पंछीअन श्रोन
२४ पसुन श्रोन नेंगनीहान जंतुन के सनुप से व्रदल डाला। इस
कानन इसन ने भी उनहें तयाग कीया की अपने अपने मन की
कामना के समान अपवीतनता में नहें श्रोन आपुस में अपने
२५ सनीनों का नीनादन कनें। उनहों ने इसन की सयाइ की
संती झठ को सथापन कीया श्रोन सीनजी ऊइ व्रसतु की पुजा
श्रोन सेवा की श्रोन सीनजनहान को छोड़ दीया जो सनव्रदा
२६ सतुत के जोग है आमीन। इस कानन इसन ने उनहें नीच
अभीलासों में नहने दीया कयोंकी उनकी इसतीनीयों ने भी
अपनी पनकीनत के कानज को उस से जो पनकीनत से व्रीनुध
२७ है व्रदल डाला। श्रोन उसी नीत से उन के पुनुप्य भी
इसतीनीयों से पनकीनत व्रेवहान को छोड़ कन आपुस में अपनी
कामना में जल गये पुनुप्यों ने पुनुप्यों के संग लजा के कनम
कीये श्रोन वुह पनतीफल जो उनकी युक के जोग था अपने
२८ में पाया। श्रोन जैसा की उनहों ने इसन को अपने गयान में
नप्पने न याहा इसन ने भी उनहें मुढ व्रुध में छोड़ दीया की
२९ वे अजोग कनम कनें। श्रोन समसत असतता श्रोन व्रेभीयान
श्रोन व्रुनाइ श्रोन लोभ श्रोन छल श्रोन कुटीलता से भन पुन
३० होवें श्रोन फुसफुसहा। श्रोन यवाइ इसन के व्रैनी हगड़ालु
अहंकानी गालफटाक व्रुनाइयों के उतपादक माता पीता के अप-
३१ मानी। नीनव्रुध श्रोन व्राया के तोड़वेया मयानहीत नीसपनेम
३२ नीनदय होवें। श्रोन यदपी वे इसन की अगया को जानते हैं
की ऐसे कानज कननीहान मान डालने के जोग हैं केवल आप
ही नहीं कनते पनंतु कननीहानों से भी पनसंन होते हैं।

२ दुसरा परब।

१ सो हे जन जो दोष्य लगावता है कोई न हो तु नीरुतर है
कयोंकी जीस बात में तु दुसरे पर दोष्य लगावता है अपने पर
दोष्य ठहरावता है इस कारन की तु जो दोष्य लगावता है वही
२ करता है। परंतु हम नीशचय जानते हैं की ऐसे करम
करनीहारों पर इसर की ओर से दंड की आगया अवेश होगी।
३ सो हे मनुष्य तु जो ऐसे करम करनीहारों पर दोष्य लगावता
है और वही कीया करता है कया तु यह समझता है की तु
४ इसर के नयाय से बचनीकलेगा। अथवा तु उसकी अतयंत
कीरपा और धीरज और संतोष्य की नींदा करता है और नहीं
जानता की इसर की कीरपा तो तेरे पसचाताप के लीये
५ है। परंतु तु कठोरता करके और मन में कड़ाई रखके
अपने लीये करोध को संगरह करता है जो करोध के और
६ इसर के सत नयाय के दीन में परगट होगा। वुह हर एक
७ को उसके करम के समान परतीफल देगा। उनहों को जो
संतोष्य से नीत भलाई करने में महीमा और आदर और
८ अमीरत की खोज करते हैं अनंत जीवन देगा। परंतु उनके
लीये जो झगड़ालु हैं और सत को नहीं मानते परंतु असत को
९ मानते हैं जलजलाहट और करोध होगा। और हर एक
मनुष्य के परान पर जो बुराई करता है बीपत और कशट
१० होगा पहीले यहुदी पर फेर युनानी पर। परंतु हर एक
जन को जो भलाई करता है महीमा और आदर और कुशल
११ मीलेगा पहीले यहुदी को फेर युनानी को। इस लीये की
इसर कीसी का परगट दसा पर दरीसट नहीं करता।
१२ कयोंकी जीतनों ने बीना बेवसथा पाप कीया है बीना बेवसथा
नाश भी होंगे और जीतनों ने बेवसथा पाके पाप कीया है
१३ उनका नयाय बेवसथा से कीया जाएगा। कयोंकी बेवसथा

के सुननेहान इसन के आगे घनमी नहीं हैं पनंतु व्रैवसथा
१४ के पालनोहान घनमी ठहनाए जायेंगे। कय़्रोंकी जव्र अंनदेसी
जीनहें। के व्रैवसथा नहीं मीली अपने सभ्माव से व्रैवसथा का
कानज कनते हैं वे व्रैवसथा हीन होके आपही अपनी व्रैवसथा
१५ हैं। वे व्रैवसथा का कानज अपने अंत:कनन में लीप्पा ऊआ
दीप्पावते हैं की उनके मन साप्पी देते हैं श्रीन उनके यीतन
१६ आपुस में दोप्पी अथवा नीनदोप्पी ठहनावते हैं। उस दीन में
जव्र इसन मेने मंगलसमाचान के समान य्रसु मसीह के दुवाना
१७ से मनुप्पन के गुपत कानज का नय़्राय्र कनेगा। देप्प तु य्रऊदी
कहावता है श्रीन व्रैवसथा पन आसा नप्पता है श्रीन इसन
१८ की व्रड़ाइ कनता है। श्रीन उसकी इछा जानता है श्रीन
व्रैवसथा का उपदेस पाके व्रीनुघ व्रसतुन का व्रेवहान जानता है।
१९ श्रीन अपने के नीसयय़्र जानता है की मैं अंघो का अगुआ
२० श्रीन उनका जो अंघकान में हैं पनकास ऊं। श्रीन सुनप्पों का
उपदेसक श्रीन व्रालकों का सीप्पावनीहान ऊं श्रीन गय़्रान का
२१ श्रीन सय़्राइ का ढव्र मेने लीय़्रे व्रैवसथा में है। सो तु जो
दुसने को सीप्पावता है अपने को नहीं सीप्पावता तु जो उपदेस
कनता है की योनी मत कन कय़्रा आपही योनी कनता है।
२२ तु जो कहता है की पनइसतीनीगमन मत कन कय़्रा आपही
पनइसतीनी गमन कनता है तु जो मुनतीन से घीन कनता है
२३ कय़्रा आपही मंदीन को लुटता है। तु जो व्रैवसथा की व्रड़ाइ
कनता है तुही व्रैवसथा से उलटा कनके इसन का अपमान
२४ कनता है। कय़्रोंकी जैसा लीप्पा है की इसन का नाम अंन-
देसीय़्रों के व्रीय तुमहाने कानन पाप्पंडता से कहा जाता है।
२५ कय़्रोंकी प्पतनः से तो लाभ है जो तु व्रैवसथा पन यले पनंतु
जो तु व्रैवसथा से उलटा कने तो तेना प्पतनः अप्पतनः है।
२६ सो जो अप्पतनः व्रैवसथा के व्रेवहानों पन यले तो कय़्रा उसका
२७ अप्पतनः प्पतनः में न गीना जायगा। श्रीन जो अपने सभ्माव

से अप्पतनः है और ब्रेवसथा के समान यले कया वुह तुहे दोष्प
न देगा जो अक्षन और प्पतनः की ब्रेवसथा से उलटा यलता
२८ है। कयोंकी जो व्राहन से यहूदी है यहूदी नहीं है न वुह
२९ प्पतनः जो मांस में व्राहन से है प्पतनः है। पनंतु वही यहूदी
है जो भीतन से यहूदी है और प्पतनः वुह है जो अंतःकनन
में और मन में है न की अक्षन में जीसकी व्रड़ाइ मनुष्पन से
नहीं पनंतु इसन से है।

३ तीसना पनव्र।

१ सो कया यहूदी को कुछ लाभ और प्पतनः का कुछ परल
२ नहीं। समसत पनकान से व्रहुत है नीज कनके यह की उनहें
३ इसन की व्रानी सौंपी गइ। और यदपी कइ एक व्रीसवास
न लाये तो कया हुआ कया उनकी अव्रीसवासता इसन के
४ व्रीसवास को व्ययनथ कन सकती है। ऐसा न होवे इसन सया
यदपी हन एक मनुष्प झुठा होय जैसा लीष्पा है की तु अपने
व्ययन में नीनदोष्पी नीकले और जव्र तेना नयाय कीया जाय
५ तु जय पावे। पनंतु जो हमाना अधनम इसन के धनम को
पनगट कनता है तो हम कया कहें की इसन अनयायी है जो
६ दंड देता है मैं तो मनुष्प की नाइं व्रोलता हुं। ऐसा न होवे
७ नहीं तो इसन कयोंकन जगत का नयाय कनेगा। कयोंकी
जो मेने झुठ के कानन से इसन की सयाइ पनगट हुइ और
उस से उसकी महीमा अधीक हुइ फेन कीस लीये मैं पापी
८ की नाइं धनम सभा में पकड़ा जाता हुं। और कयों न कहें
जैसा हमों पन कलंक लगाया जाता है और कीतने व्रोलते हैं
की हम लोग कहते हैं की आओ व्रुनाइ कनें जीसतें भलाइ
९ नीकले उन पन दंड की अगया ठीक है। पन कया हम लोग
उनसे भले हैं कभी नहीं हम तो पहीले व्रननन कन युके की
१० यहूदी और अनदेसी सव्र के सव्र पाप के तले हैं। जैसा लीष्पा

११ है की कोइ धरमी नहीं ऐक भी नहीं। कोइ बुद्धीमान नहीं
१२ कोइ ईसर का ढुंढनेहारा नहीं। सब भटके हुऐ हैं सब के सब
१३ नाकमें हैं कोइ भला करनीहारा नहीं ऐक भी नहीं। उनकी
नरटी खुली हुइ समाध है उनहों ने जीभ से छल बल कीया
१४ है उनके होठों के नीचे संपोलीयों का बीष है। उनहों के
१५ मुंह सराप और कड़वाहट से भरे हुऐ हैं। उनके पांव रुधीर
१६ बहाने के लीये चंचल हैं। बीनास और कलेस उनके मारगों
१७ में हैं। और उनहों ने कुसल का मारग नहीं जाना।
१८।१९ उनकी आंखों के आगे ईसर का भय नहीं। अब हम
जानते हैं की ब्यवसथा जो कुछ कहती है उनहों को कहती है
जो ब्यवसथा के बस में हैं जीसतें हर ऐक का मुंह बंद होवे और
२० समसत जगत ईसर के आगे पापी ठहरे। इस लीये कोइ
मनुष्य ब्यवसथा के करम से उसके आगे नीरदोष ठहर नहीं
२१ सकता क्योंकी ब्यवसथा से पाप का गयान हुआ। परंतु अब
ईसर का धरम परगट हुआ है जो ब्यवसथा से बाहर है जीसपर
२२ ब्यवसथा और आगम गयानीयों ने साखी दी है। अरथात
ईसर का वुह धरम जो यसु मसीह पर बीसवास लावने से
मीलता है और उन सब के लीये और उन सभों में है जो
२३ बीसवास लावते हैं की उन में कुछ बीच नहीं। इस कारन
की सभों ने पाप कीया है और ईसर की महीमा लों न पहुंचे।
२४ सो उसके अनुगीरह से उस मुकत के कारन जो यसु मसीह में
२५ है सेंत से धरमी गीने जाते हैं। जीसको ईसर ने उसके लोहू
के बीसवास के दुवारा से परायसचीत ठहराया की अपने
धरम को पीछले पापों के मोचन के लीये ईसर के संतोष
२६ के समान परगट करे। की इस समय में अपने धरम को दीखावे
जीसतें वुह धरमी रहे और उसको जो यसु मसीह पर बीसवास
२७ लावते हैं धरमी जाने। अब अहंकार करना कहां रहा दूर
तो उड़ गया कीस रीत से क्या करनी से नहीं परंतु बीसवास

२८ की नीत से। सो हम ग्रह सीधांत नीकालते हैं की मनुष्य व्रीना
२९ कनम सासतन व्रीसवास से धनमी गीना जाता है। कग्रा वुह
केवल ग्रहूदीओं का इसन है ओान ग्रंनदेसीओं का नहीं नीसचय
३० वुह ग्रंनदेसीओं का भी है। कग्रोंकी ग्रेक ही इसन है जो
प्पतनः कीग्रे गग्रेन को व्रीसवास के कानन से ओान ग्रप्पतनः
३१ लोगों को भी व्रीसवासही की नीत से धनमी जानेगा। कग्रा
हम व्रैवसथा को व्रीसवास से व्रग्रनथ कनते हैं ग्रैसा न होवे हम
तो व्रैवसथा को सथापीत कनते हैं।

४ चौथा पनव्र।

१ सो हम कग्रा कहें की इव्रनाहीम ने जो सनीन के संव्रंध से
२ हम सभों का पीता है कुछ पाग्रा। कग्रोंकी जो इव्रनाहीम
कननी से नीनदोप्पी गीना जाता तो उसकी व्रड़ाइ का व्रीप्पै
३ था पनंतु इसन के आगे नहीं। कग्रोंकी गनंथ कग्रा कहता
है की इव्रनाहीम इसन पन व्रीसवास लाग्रा ओान वुह उसके
४ लीग्रे धनम ठहना। अव्र व्रनीहान को व्रनी देना दान नहीं
५ है पनंतु नीन का है। कींतु वुह जो कननी नहीं कनता पनंतु
उस पन व्रीसवास लावता है जो अधनमीओं को नीनदोप्पी
६ ठहनावता है उसी का व्रीसवास धनम में गीना जाता है। ओान
जैसा की दाउद भी उस मनुष्य की धंनग्राता का व्रननन कनता
है जीसके ओान इसन व्रीना कननी से धनम गीनता है।
७ की धंन वे हैं जीनके अपनाध छमा कीग्रे गग्रे ओान जीन के
८ पाप ढांपे गग्रे। धंन वुह है जीसके ओान पनभु पाप नहीं
९ गीनता। सो कग्रा ग्रह धंनता केवल प्पतनः कीग्रे गग्रेन की है
अथवा अप्पतनः लोगों की भी हम तो कहते हैं की इव्रनाहीम
१० का व्रीसवास धनम में गीना गग्रा। सो वुह कव्र गीना गग्रा
कग्रा उसके प्पतनः कीग्रे गग्रे अथवा अप्पतनः के समग्र में
११ प्पतनः कीग्रे गग्रे में नहीं पनंतु अप्पतनः में। ओान उसने

प्प्तन: यीनह के लीये पाया की वुह उसके व्रीसवास के घनम
पन छाप हाेय जो ऋप्प्तन: में मीला था जीसतें वुह उन सभों
का जो ऋप्प्तन: में व्रीसवास लावते हैं पीता होय की उनके
११ ऋोन भी घनम गीना जाय। ऋोन प्प्तन: कीये गयेन का भी
पीता होय न केवल उनका जो प्प्तन: कीये गये हैं पनंतु उनका
भी जो हमाने पीता इव्रनाहीम के व्रीसवास पन यलते हैं जो
१३ ऋप्प्तन: में था। कयोंकी यह व्राचा जो इव्रनाहीम से ऋोन
उसके व्रंस से ऋथा की तु जगत का ऋधीकानी होगा व्रैवसथा
के कानन से नहीं पनंतु व्रीसवास के घनम के कानन से कीया
१४ गया। कयोंकी जो वे जो व्रैवसथा के हैं ऋधीकानी होवें
१५ तो बीसवास व्रयनथ ऋोन व्राचा नीसफल ऋथा। कयोंकी
व्रैवसथा क्रोध का कानन होती है कयोंकी जहां कहीं व्रैवसथा
१६ नहीं तहां उलंघन भी नहीं। सो इस लीये व्रीसवास के कानन
से कीया गया की वुह ऋनुगनह से ठहने जीसतें समसत व्रंस
के लीये सथीन होय केवल उनके कानन नहीं जो व्रैवसथा
नप्पते हैं पनंतु उनके कानन भी जो हम सभों के पीता इव्रना-
१७ हीम के व्रीसवास पन यलते हैं। जीसके ऋागे वुह व्रीसवास
लाया ऋनथात इसन के जो मीनतकन को जीलावता है ऋोन
नासती व्रसतुन को ऋसती के समान व्रुलावता है जैसा लीप्पा
१८ है की मैं ने तुहे व्रऋत से लोगों का पीता व्रनाया। वुह
नीनासा के सथान में ऋासा से व्रीसवास लाया जीसतें वुह व्रऋत
से लोगों का पीता होय उस लीप्पे गये के समान की तेना व्रंस
१९ ऐसाही होगा। ऋोन जैसा की उसने व्रीसवास में दुनव्रल न
होके ऋपने सनीन को मीनतक न जाना यदपी उसका व्रय
सै। व्रनस के नीकट था ऋोन सानाके गनभ के मुनहाने को
२० भी न सोया। ऋोन ऋव्रीसवासी नथा की इसन के व्राचा पन
संदेह कनता पनंतु व्रीसवास की दीनढ़ताइ से इसन का जस
२१ मानता था। ऋोन नीसयय काया की जो कुछ उसने व्राचा

२२ कीया है उसको पना भी कन सकता है। इस कानन उसके
२३ ओन घन न गीना गया। ओन यह वा केवल उसी के लीये
२४ नहीं लीप्पी गइ की वृह उा क ओन गोना गया। पनंतु हमाने
लीये भी गीना गया जो हम उस पन वीसवास लावें जीसने
२५ हमाने पनभु यसु का मीनतकन में से जीलाया। जो हमाने
अपनाधों के कानन पकड़ा गया ओन हमों को नीनदोप्प
ठहनाने के लीये फेन के जीलाया गया।

५ पांचवां पनव।

१ सो जव की हम वीसवास लाके नीनदोप्पी ठहने तो हमाने
पनभु यसु मसीह के कानन से इसों में ओन इसन में मीलाप
२ है। ओन उसी के कानन से हम वीसवास लाके उस अनुगीनह
में पहुंयते हैं जीस पन हम सथीन हैं ओन इसन के प्रेसनीय
३ की आसा में आनंद कनते हैं। ओन केवल ऐसा नहीं पनंतु
वीपत में भी आनंद कनते हैं यह जानके की वीपत से
४ संतोप्प। ओन संतोप्प से पनीक्षा ओन पनीक्षा से आसा
५ उतपंन होती है। ओन आसा लजीत नहीं कनती कयोंकी
घनमातमा हमें दीया गया जीसके ओन से हमाने मन में इसन
६ का पनेम वहाया गया। कयोंकी जव हम नीनवल थे तव
७ अघनमीयों के कानन ठीक समय में मसीह मुआ। अव ऐसा
कोइ है जो कीसी घनमी के लीये पनान देवे ओन कया
जानें कीसी में यह दीनढ़ता होय की कीसी उतम मनुप्प के
८ लीये पनान देवे। पनंतु इसन ने अपने पनेम को हम सभों
पन ऐसा पनगट कीया की जव हम लोग पाप कनते यले जाते
९ थे मसीह हमाने कानन मुआ। सो उसके लोहु से नीनदोप्पी
ठहन के कीतना अघीक उसके कानन से कनोघ से वय जायेंगे।
१० कयोंकी जो सतनु होके हमलोग उसके पुतन की मीनतु से
इसन में मीलाये गये तो कीतना अघीक मीलाया जाके उसके

११ जीवन से बच जायेंगे। और केवल ऐसाही नहीं परंतु हम
अपने प्रभु यिसु मसीह के कारन से ईश्वर में बड़ाई करते हैं
१२ जिसके कारन से अब हम लोग मिलाये गये हैं। सो जैसा
की एक मनुष्य के कारन से पाप ने जगत में प्रवेस कीया और
पाप के कारन से मीरतु ने और इसी रीत से मीरतु समसत
१३ मनुष्यन पर फैल गया क्योंकी सभों ने पाप कीया। क्योंकी
ब्यवसथा के प्रगट होने लों पाप जगत में था परंतु जहां
१४ ब्यवसथा नहीं है तहां पाप नहीं गीना जाता। तीसपर भी
मीरतु ने आदम से लेके मुसा लों उनहों पर भी राज कीया
जीनहों ने आदम के अपराध के तुल पाप न कीया वुह उस
१५ आवनेहार का चीनह था। तथापी जैसा अपराध था
वैसा अनुग्रीनह नहीं है क्योंकी जो एकही के अपराध से
बहुत मर गये तो कीतना अधीक ईस्वर का अनुग्रीनह और
दान जो अनुग्रीनह से है एक मनुष्य अरथात यिसु मसीह से
१६ बहुतों पर अधीक हुआ। और दान ऐसा नहीं है जैसा एक
से पाप हुआ क्योंकी एक से दंड के लीये बीचार कीया गया
परंतु दान बहुतेरे अपराधों से नीरदोष्य ठहरावता है की
१७ धरमी ठहरें। सो जो एक मनुष्य के अपराध से मीरतु ने
एकही के ओर से राज कीया तो वे जो बहुत से अनुग्रीनह
और धरम के अधीक दान को पावते हैं एक के अरथात
यिसु मसीह के कारन से क्योंकर जीवन में राज न करेंगे।
१८ सो जैसा की एक अपराध से समसत मनुष्यन पर दंड की
आग्या हुई वैसाही एक धरम के कारन से समसत मनुष्य जीवन
१९ के लीये नीरदोष्यी ठहरे। क्योंकी जैसा एक मनुष्य के आग्या
भंग करने से बहुत से लोग पापी ठहराये गये वैसाही एक के
आग्या पालन करने से बहुत से लोग धरमी ठहराये जायेंगे।
२० और इस से अधीक ब्यवसथा आई की अपराध बहुत होवे
परंतु जहां पाप बहुत भया तहां अनुग्रीनह भी उस के परीमान

२१ से व़ज़्त अधीक ज़ुआ। की जैसा पाप ने मौनत लों नाज
कीय़ा वैसाही अनुगीनह धनम से इहां लों नाज कने की
हमाने पनभु य़सु मसीह की सहाय़ता से अनंत जीवन लों
पज़ुंयावे।

६ छठवां पनव़।

१ से अव़ हम कय़ा कनें कय़ा हम पाप कीय़ा कनें की अनुगं नह
२ अधीक होवे। ऐसा न होवे हम जो पाप के ओन से मने हैं
३ फेन कीस नीत से आगे को उस में जीयेंगे। कय़ा तुम लोग
नहीं जानते की हम में से जीतनों ने य़सु मसीह का सनान
४ पाय़ा उसके मौनतु का सनान पाय़ा। इस लाय़े हम लोग
मौनतु के सनान के कानन से उसके संग गाड़े गय़े की जीस
नीत से पीता की महीमा से मसीह मनके उठाय़ा गय़ा हम सव़
५ भी जीवन की नवानता में यलें। कय़ोंकी जो हम लोग उसके
मौनतु की समानता में व़ोय़े गय़े तो उसके जी उठने में भी
६ समान होंगे। य़ह जानके की हमानी पुनानी मनुष्यता उसके
संग कुनुस पन ष्पैंयी गई की पाप का सनीन नसट होय़ जीसतें
७ हम लोग आगे को पाप की सेवा न कनें। कय़ोंकी जो मनगय़ा
८ सो पाप से छुटा। सो जो हम लोग मसीह के संग मने हैं तो
९ नीसयय़ जानते हैं की उसके संग जायंगे। य़ह जानके की
मसीह मौनतु से उठाय़ा जाके फेन नहीं मनता मौनतु का
१० नाज उसपन औन नहीं है। कय़ोंकी वुह जो मना तो पाप के
लीय़े एक व़ान मना पनंतु वुह जो जीवता है सो इसन के
११ लीय़े जीवता है। इसी नीत से तुम लोग भी अपने को पाप
के ओन से मौनतक जानो पनंतु इसन के ओन से हमाने पनभु
१२ य़सु मसीह में जीवता समझो। सो पाप तुमहाने मननीहान
सनीन में नाज न कनने पावे की तुम लोग उसकी कामना के व़स
१३ में होओ। औन अपने अंगन को पाप को न सौंपो की अधनम

के हथीआर बनें परंतु अपने को ऐसा ईश्वर को सौंपो जैसा
सचमुच मरके जी उठे हो और अपने अंगन को ईश्वर को
१४ सौंपो की धरम के हथीआर हो जायें। क्योंकी पाप तुमहों
पर राज न पावेगा क्योंकी तुम लोग व्यवस्था के बस में नहीं
१५ परंतु अनुग्रह के बस में हो। सो इस चीज़ की हम लोग
व्यवस्था के बस में नहीं हैं परंतु अनुग्रह में हैं तो क्या पाप
१६ करें ऐसा न होवे। क्या तुम लोग नहीं जानते की जीस
कीसी को तुमहों ने अपने को अग्या मानने के लीये दास के
समान सौंपा उसके दास होओ जीसको तुमलोग मानते हो याहे
पाप के जीस का अंत मीरतु है अथवा अधीनता के जीसका
१७ अंत धरम है। परंतु धंन ईश्वर को की तुम लोग जो आगे
पाप के सेवक थे शीख्या के सांचा में सौंपा जाके अंतःकरन से
१८ आधीन हुए। और पाप से मोख्य पाके धरम के दास हुए।
१९ मैं तुमारे सरीर की दुरबलता पर दीरीसट करके मनुष्य की
नाईं कहता हुं क्योंकी जैसा तुमहों ने अपने अंगन को अप-
वीतरता को और बुराइ करने को सौंपा था की उनके सेवक
होवें वैसाही अब अपने अंगन को धरम की सेवकाइ करने के
२० लीये सौंपो की पवीतर होयें। क्योंकी जब तुम लोग पाप
२१ के दास थे तब धरम से नयारे थे। और जीन कारजन से तुम
लोग लजीत हो उनसे तुमहों ने क्या फल पाया क्योंकी उन
२२ बसतुन का अंत मीरतु है। परंतु अब पाप से छुट के और
ईश्वर के दास बनके पवीतरता के लाये फल लावते हो जीस
२३ का अंत अनंत जीवन है। क्योंकी पाप का फल मीरतु है
परंतु ईश्वर का दान अनंत जीवन है जो हमारे परभु यसु
मसीह के कारन से है

७ सातवां पत्र।

१ हे भाइयो क्या तुम लोग नहीं जानते क्योंकी मैं व्यवस्था

के गयानीओं से कहता ऊं की जव लों मनुष्य जीवता है व्रैवसथा के
२ वस में है। कयोंकी व्याहीता इसतीरी पती जीवने लों व्रैवसथा
से वंधी ऊइ है पनंतु जो उसका पती मन जाय तो वुह अपने
३ पती की व्रैवसथा से छुट गइ। सो जो अपने पती के जीते जी
वुह दुसने पुनुष्य की हो जाय तो व्रैभीयाननी कहावेगी पन
जो उसका पती मन जाय तो वुह उस व्रैवसथा से छुट गइ सो
वुह व्रैभीयाननी नही है यदपी दुसने पुनुष्य से व्याह कने।
४ सो हे भाइयो तुम लोग भी मसीह के सनीन से व्रैवसथा के
ओन से मन गये जीसतें तुमहाना व्याह दुसने से होय
अनथात उस से जो मनके जी उठा की हम लोग इसवन के लीये
५ फल लावें। कयोंकी जव हम लोग सनीन में थे तव पापों की
इछा जो व्रैवसथा के कानन से थीं हमाने अंग अंग में युं पनवेस
६ कनती थीं की मीनतु के लीये फल लावें। पनंतु अव हम
लोग व्रैवसथा से छुट गये कयोंकी जीस में वंधे थे वह मनगया
की हम लोग आतमा की नवीनता से सेवा कनें ओन अछन
७ की पनाचीनता से नहीं। सो हम कया कहें की व्रैवसथा पाप
है ऐसा न होवे मैं तो व्रैवसथा वीना पाप को न जानता कयोंकी
मैं कामना को न जानता जो व्रैवसथा न कहती की तु लालच
८ मत कन। पनंतु पाप ने आगया के कानन से अवसन पाके
मुझ में समसत नीत की लालच उतपंन की कयोंकी व्रैवसथा
९ वीना पाप मीनतक था। इस लीये की वीना व्रैवसथा आगे
मैं जीवता था पनंतु जव आगया आइ तव पाप जी उठा ओन मैं
१० मन गया ओन वह आगया जो जीवन के लीये था मैं ने मीनतु
११ के लीये पाइ। कयो की पाप ने आगया के कानन से अवसन
१२ पाके मुझे ठगा ओन उसी के कानन से मुझे मान डाला। सो
व्रैवसथा पवीतन है ओन आगया पवीतन ओन ठीक ओन भली
१३ है। सो कया जो वसतु भली है वहा मेने लीये मीनतु ठहनी
ऐसा न होवे पनंतु पाप ने, की उसका पाप होना पनगट होवे

इछो वुसत् के कानन से मोनतु को मुह में उतपंन कीया की
१४ अगया से नन पाप के वुनाइ अ यत होवे। कयोंकी
हम जानते हैं की व्रैवसथा आतमोक है पनंत् मैं सनीनोक औान
१५ पाप के हाथ में व्रीक गया ऊं। कयोंकी जो कनता ऊं सो
मुहे नहीं भावता कयोंकी जो मैं याहता ऊं सो नहीं कनता
१६ पनतु जीस से घीनाता ऊं वही कनता ऊं। सो जो वुह कनुं
जो नहीं कीया याहता ऊं तो मैं व्रैवसथा की भलाइ का मान-
१७ नोहान ऊं। सो अव् उसका कननोहान मैं नहीं पनंतु पाप
१८ जो मुह में वुसता है। कयोंकी मैं जानता ऊं को मुह में
अनथात मेने सनीन में कोइ भला वुसतु नहीं वुसती कयोंकी
१९ इछा तो मुह में है पनंत् भला कनने नहीं पावता ऊं। कयोंकी
जो भलाइ याहता ऊं सो नहीं कनता पनंतु जो वुनाइ नहीं
२० याहता ऊं सो कनता ऊं। अव् जो मैं वुह कनुं जीसे नहीं
याहता तो उसका कननोहान मैं नहीं ऊं पनंतु पाप जो मुह
२१ में वुसता है। सो मैं एक व्रैवसथा पावता ऊं की जव् मैं भला
२२ कीया याहता ऊं तव् वुनाइ मेने पास घनी है। कयोंकी
अंत:कनन की मनुष्यता से मैं इसन की व्रैवसथा से पनसंन ऊं।
२३ पनंत् दुसनी व्रैवसथा को अपने अंग अंग में देष्पता ऊं जो मेने
मन की व्रैवसथा से युघ कनती है औान मुहे पाप की व्रैवसथा
२४ के वंघन में लावती है जो मेने अंग अंग में है। आह दुनगत
मनुष्य जो मैं ऊ कौन मुहे इस सनीन की मोनतु से नोसतान
२५ कनेगा। हमाने पनभ् यसु मसीह के दुवाना से मैं इसन का
घंनवाद कनता ऊं सो मैं अपने मन से तो इसन की व्रैवसथा की
सेवा कनता ऊं पनंतु सनीन से पाप की व्रैवसथा का दास ऊं।

८ आठवां पनव्र।

१ सो जो लोग यसु मसीह में हैं उनको याल सनीन के व्रेवहान
पन नहीं पनंतु आतमा के व्रेवहान पन है उन पन कोइ दंड

२ की अगया नहीं। कयोंकी जीवन के आतमा की व्रैवसथा ने
जो युसु मसीह में है मुझे पाप और मीनतु की व्रैवसथा से
३ छुड़ाया है। कयोंकी व्रैवसथा से जीस व्रात का अनहोना था
इस लीये की सनीन के कानन से नीनव्रल थी इसन ने अपनेही
पुतन को पाप के सनीन के सनूप में भेज कन पाप को पाप के
४ लीये सनीन में नसट कीया। की व्रैवसथा का घनम हमों में
संपुनन होवे जो सनीन के व्रेवहान पन नहीं पनंतु आतमा के
५ व्रेवहान पन यलते हैं। कयोंकी जो सनीन के व्रस में हैं
उनका सभाव भी सनीनीक है पनंतु जो आतमा के व्रस में
६ हैं उनका सभाव आतमीक है। कयोंकी सनीनीक सभाव
होना मीनतु है पनंतु आतमीक सभाव होना जीवन और कुसल
७ है। इस कानन की सनीनीक सभाव इसन से सतनुता है
कयोंकी वुह इसन की व्रैवसथा के व्रस में नहीं है और न हो
८ सकता है। सो जो सनीन में हैं इसन को पनसंन नहीं कन
९ सकते। पन तुम लोग सनीन में नहीं हो पनंतु आतमा में हो
जो ऐसा होय की इसन का आतमा तुमहों में व्रसे और जीस में
१० मसीह का आतमा नहीं है वुह उसका नहीं है। और जो
मसीह तुमहों में होय तो देह पाप के कानन से मीनतक
११ है पनंतु आतमा घनम के कानन से जीवता है। और जो
उस का आतमा जीसने युसु को मीनतकन में से जीलाया
तुमहों में व्रास कने तो मसीह का जीलावनीहान तुमहाने
मीनतक सनीनों को अपने उस आतमा के सहाय से जीलावेगा
१२ जो तुमहों में व्रसता है। सो हे भाइयो हम लोग सनीन के
१३ नीनी नहीं हैं की सनीन के व्रेवहान पन यलें। इस लीये
की जो तुम लोग सनीन के व्रेवहान पन यलो तो मनोगे पनंतु
जो आतमा की सहायता से सनीन की व्रात को मानो तो
१४ जीओगे। कयोंकी जीतने लोग इसन के आतमा की सीछा
१५ पावते हैं वे इसन के पुतन हैं। इस लीये की तुमहें व्रंघन का

आतमा नहीं मीला की फेर के डरो। परंतु तुमहें ने लेपालक
का आतमा पाया है जीस से हम लोग आबा पीता करके
१६ पुकारते हैं। वुह आतमा आपही हमारे आतमा के संग साप्पी
१७ देता है की हम लोग ईसर के पुतर हैं। और जो पुतर ऊए
तो अधीकारी ठहरे ईसर के अधकारी और अधीकार में
मसीह के साझी हैं जो ऐसा होय की हम लोग उसके संग दुप्प
१८ उठावें जीसतें उसके संग बीभव भी पावें। कयोंकी मेरे
अटकल में इस समय के दुप्पों को जोग नहीं की उस महीमा
१९ से जो हमें पर परकास होगी तुल करें। कयोंकी सरीसट
का अतयंत अभीलास ईसर के पुतरन के परगट होने की
२० आसा से है। कयोंकी सीरीसट ब्यरथ के बस में ऊई अपनी
इछा से नहीं परंतु उसकी जीसने उसे बस में कर दीया।
२१ और आसा से है की नास के बंधन से छुट के ईसर के पतरन
२२ की परमसुकत में परवेस करें। कयोंकी हम जानते हैं की समसत
सीरीसट मीलके अब लों पीप्पें मारती है और पीर उठावती
२३ है। और केवल वही नहीं परंतु हम लोग भी जीनहें ने
आतमा का पहीला फल पाया अरथात हम लोग आप अपने
अंतःकरन में पीप्पें मारते हैं और अपने सरीर के उधार की
२४ बाट जोहते हैं जो हमारा लेपालक होना है। कयोंकी हम
लोग आसा से बच गये हैं परंत जो आसा देप्पी जाती है सो
आसा नहीं है इस कारन की जीसे कोइ देप्पता है कयोंकर
२५ उसकी आसा करता है। परंतु जीसे हम लोग नहीं देप्पते जो
२६ उसकी आसा करें तो संतोप्प से उसकी बाट जोहते हैं। इसी
रीत से वुह आतमा भी हमारी दुरबलता में उपकार करता
है कयोंकी जैसा परारथना करने को हमें उचीत है हम
नहीं जानते परंतु वुह आतमा आपही ऐसी आहें करके
जीनका बरनन नहीं हो सकता हमारे और से बीनती करता
२७ है। और वुह जो अंतःकरन की परीछा करता है जानता

है की प तमा का कया अभीपनाय है इस लीये की वुह इसन
२८ की इछा के समान साघ । के औान न वीनती कनता है। औान
हम जानते हैं की जो लोग इसन को पीअ न कनते हैं उनकी
भलाइ के लीये समसत वनतं म लके कानज वनती हैं ये वे
२९ हैं ना उस के ठहनाये ऽपे के समान वुलाए गये हैं। कयोंकी
जीनहें उसने आगे से जाना उन के लीये ठहनाया भी की उसके
पुतन के सनुप के समान होवें जीसतें वुह वहुत से भाइयों में
३० पहीलौंठा होवे। औान ज नहें उसने ठहनाया उसने उनको
वुलाया औान जीनहें उसने वुलाया उनको घनमी कीया औान
३१ जीनहें उसने घनमी कीया उनको महीमा भी दी। सो हम
लोग कया कहें जो इसन हमाने औान होय तो कौन हमाना
३२ वीनोघी होगा। वुह जीस ने अपने पुतन को भी न छोड़ा
पनंतु उसको हमानी संती दीया तो वुह उसके संग सव वसतें
३३ कयोंकन न देगा। इसन के चुने ऽपे लोगों पन कौन अपवाद
३४ कनेगा इसन उनहें घनमी ठहनाता है। कौन दंड की अगया
देगा मसीह मनगया हां जी भी उठा औान वुह इसन के दहीने
३५ औान है औान हमाने लीये वीनती कनता है। कौन हमको
मसीह के पनेम से अलग कनेगा कया कलेस अथवा कसट अथवा
ताड़ना अथवा अकाल अथवा नंगापन अथवा संकट अथवा
३६ खड़ग। जैसा लीखा है की हम लोग तेने लीये दीन भन
वघ कीये जाते हैं औान ऐसे गीने गये हैं जैसे भेड़ें जो वघ के
३७ लीये हैं। हां हम लोग उन सव वसतुन में उसके कानन से
जीसने हमों से पनेम कीया हन ऐक जयमान पन जयमान हैं।
३८ कयोंकी मुहे ठीक नीसचय है की न मीनतु न जीवन न दुत
न नाज न पनाकनम न वनतमान की वसतें न भवीस की वसतें।
३९ औान न उंचाइ न नीचाइ न कोइ औान वसतु हम सभों को
इसन के उस पनेम से जो हमाने पनभु मसीह यसु में है अलग
कनसकेगी।

९ नवां पत्र।

१ मैं मसीह में सच बोलता हूं झूठ नहीं कहता और मेरा
२ मन भी धर्मातमा से मेरी साक्षी देता है। की मुझे बड़ा
३ सोक है और मेरे मन में नीत उदासी है। कयोंकी मैं
चाह सकता की मैं अपने भाइयों की संती जो सरीर के सबंध
४ से मेरे नाते गोते हैं मसीह के तुल सरापीत होउं। वे
इसराइली हैं और लेपालक होना और महीमा और नीयम
और ब्वैवसथा का पावना और सेवा और परन करना उनका
५ भाग है। और पीतर लोग उनहीं में के हैं और सरीर के
संबंध से मसीह भी उनहीं में से नीकला जो सब का परधान
६ नीतयानंद ईसर है आमीन। परंतु ऐसा नहीं की ईसर
का बाचा ब्यरथ हुआ है इस लीये की सब इसराइल नहीं
७ जो इसराइल से हैं। और न इस कारन की वे इब्राहीम
के बंस हैं सब संतान हैं परंतु इसहाक से तेरा बंस कहा जा-
८ येगा। अरथात वे नहीं जो केवल सरीर के संतान हैं ईसर
के संतान हैं परंतु बाचा का संतान बंस के लीये गीना गया
९ है। कयोंकी बाचा की बात यही है की मैं उसी समय में
१० आउंगा और सारा एक पुतर जनेगी। और केवल इतना
नहीं परंतु रबका भी एक से अरथात हमारे पीता इसहाक
११ से गरभवती हुई। और लड़कों के उतपंन होने से पहीले
१२ जब वे भले बुरे के करता न थे। उस से कहा गया की जेसठ
कनीसठ की सेवा करेगा जीसतें ईसर की इछा पर जो उसके मन
के समान है सथीर होवे करनी से नहीं परंतु उस से जो बुलाव-
१३ नीहार है। जैसा लीख्खा है की मैं ने याकुब से परेम कीया
१४ और असु से बैर रख्खा। सो हम कया कहें की ईसर के पास
१५ अधरम है ऐसा न होवे। कयोंकी वुह मुसा से कहता है की
मैं जीस पर दया करने चाहूंगा उस पर दया करूंगा और

जीस पर अनुग्रह करने चाहूंगा उस पर अनुग्रह करुंगा।
१६ सो इछा करनेहार पर नहीं और न दौड़नेहार पर परंतु
१७ ईश्वर पर जो दया करता है। और ग्रंथ फरऊन से कहता
है की मैं ने तुझे इस लीये बढ़ाया की अपना पराक्रम तुझ में
प्रगट करुं और जीसतें मेरा नाम समस्त पृथीवी में बीदीत
१८ होवे। सो वुह जीस पर चाहता है दया करता है और जीसे
१९ चाहता है कठोर करता है। सो तु यह मुझ से कहेगा फेर
वुह कयों दोष्प देता है कीस ने उसकी इछा को रोका है।
२० हे मनुष्प तु कौन है जो ईश्वर से बीवाद करता है कया बनाई
हुई बसतु बनावनेहार को कह सकती है की तु ने मुझे ऐसा
२१ कयों बनाया। और कया कुम्हार मीटी पर पराक्रम नहीं
रखता की एकही पींड से एक पातर प्रतीसठीत और दुसरा
२२ अप्रतीसठीत बनावे। जो ईश्वर ने इस इछा से की अपने
क्रोध को जनावे और अपने पराक्रम को प्रगट करे क्रोध
के पातरन पर संतोष्प कीया जो नसट होने के लीये तयार थे।
२३ और जीसतें वुह अपनी महीमा की अधीकाई को दया के
पातरन पर प्रगट करे जीन्हें उसने आगे से महीमा के लीये
२४ सीध कीया था। अरथात हमें को जीन्हें उसने बुलाया
केवल यहुदीयों में से नहीं परंतु अंनदेसीयों में से भी।
२५ जैसा की वुह होसआ के ग्रंथ से कहता है की मैं पराये लोगों
को अपना लोग कहुंगा और जो पीरीय न था उसे पीरय
२६ कहुंगा। और यूं होगा की उस सथान में जहां उनसे कहा
गया की तुम मेरे लोग नहीं हो वे जीवते ईश्वर के पुत्र
२७ कहावेंगे। और असीया इसराईल के बीष्पै में पुकारता है
की यदपी इसराईल के बंस गीनती में समुदर के बालु की
२८ नाईं होयें तथापी थोड़े बचाए जायगे। कयोंकी प्रभु लेष्पा
एकठा करता है और संक्षेप से धरम में समापत करता है
इस कारन की प्रभु पीरथीवी पर संक्षेप से लेष्पा करेगा।

२९ औन जैसा असीआ ने आगे कहा की जो सेनन का पनभु हमाने
लीये बीज न छोड़ जाता तो हम लोग सदुम के समान औन
३० गमनः के तुल होते। सो अब हम कया कहें की अनदेसीओं
ने जो धनम के खोज में न थे धनम को पनापत कीया अनथात
३१ उस धनम को जो बीसवास से है। पनंतु इसनाइल धनम की
बैवसथा का पीछा कनके धनम की बैवसथा लों नहीं पहुंचा है।
३२ कीस लीये इस लीये की उनहों ने उसका पीछा बीसवास से न
कीया पनंतु बैवसथा के कनम के समान कयोंकी उनहों ने उस
३३ ठोकन खीलावनीहान पथन से ठोकन खाया। जैसा लीखा है की
देखो मैं सीऊन में धका देनहानी चटान औन ठोकन खीलाव-
नीहान पथन नखता हूं औन जो कोइ उस पन बीसवास लावता
है सो लजीत न होगा।

१० दसवां पत्र।

१ हे भाइयो मेने मन का अभीलास औन मेनी पनानथना
२ इसन से इसनाइल के लीये है की वे तनान पावें। कयोंकी मैं
उनके कानन साखी देता हूं की वे इसन के लीये जलीत हैं
३ पनंतु गयान की नीत से नहीं। कयोंकी वे इसन के धनम से
अगयान होके औन अपने धनम के ठहनावने की इछा नखके
४ इसन के धनम के आधीन न हुए। कयोंकी हन एक बीसवासी
५ के धनम के लीये मसीह बैवसथा का अन्तीपनाय है। इस
लीये की वुह धनम जो सासतन का है मुसा उसका बननन
कनता है की जो मनुष्य उन कानजन को कनता है उनसे
६ जीवता नहेगा। पनंतु धनम जो बीसवास का है युं कहता है
की तु अपने मन में मत कह की सनग पन कौन चढ़ेगा अनथात
७ की मसीह को नीचे लावे। अथवा गहीनापे में कौन पैठेगा
८ अनथात की मसीह को मीनतकन में से फेन लावे। पनंतु
वुह कया कहता है यह की बचन तेने नीकट तेने मुंह में औन

तेरे अंतःकरन में है अरथात ब्रीसवास का ब्रयन जो हम लोग
८ सुनवते हैं। कयोंकी जो तु अपने मुंह से परभु यसु को मान
लेवे और न अपने अंतःकरन से ब्रीसवास लावे की इसर ने उसे
१० मरेन के जीलाया तो तु बचाया जायगा। कयोंकी धरम के
लीये अंतःकरन से मनुष्य ब्रीसवास लाता है और तरान के
११ लीये मुंह से माना जाता है। कयोंकी गरंथ यों कहता है
की जो कोइ उस पर ब्रीसवास लावता है सो लजीत न होगा।
१२ कयोंकी यहुदीयों और युनानीयों में कुछ भेद नहीं कयोंकी
वुह जो सब का परभु है सब के लीये जो उसका नाम लेते हैं
१३ धनी है। कयोंकी जो कोइ परभु का नाम लेगा सोइ तरान
१४ पावेगा। सो जीस पर वे ब्रीसवास नहीं लाये उसका नाम कयों-
कर लेवें और जीसका संदेस उनहों ने नहीं सुना उस पर कयों-
१५ कर ब्रीसवास लावें और उपदेसक बीना कयोंकर सुनें। और जो
भेजे न जावें तो कयोंकर उपदेस करें जैसा लीख्या है की जो कुसल
का और उतम ब्रसतु का समाचार देते हैं उनके कया सुनदर
१६ चरन हैं। परंतु सभों ने मंगल समाचार को न माना कयोंकी
असीया कहता है की हे परभु कौन हमारे उपदेस पर ब्रीसवास
१७ लाया। सो ब्रीसवास सुन लेने से और सुन लेना इसर के ब्रयन
१८ से आवता है। परंतु मैं कहता हुं कया उनहों ने नहीं सुना
नीसयय उनका सबद तो समसत परथीवी में फैल गया और उन
१९ की बातें जगत के सीवाने लों पहुंची। परंतु मैं कहता हुं कया
इसराइल ने न जाना मुसा ने पहीले कहा की मैं तुमहें पराये
लोगों से डाह दीलाउंगा और मुरख लोगों से कोपीत कराउंगा।
२० और असीया बड़े साहस से कहता है की जीनहों ने मेरी खोज
न की मुझे पागये जीनहों ने मुझे न याहा मैं उनपर परगट
२१ हुआ। परंतु इसराइल को युं कहता है की मैं ऐक लोग के
लीये जो अगया भंग करनेहार और ब्रीवादी हैं अपने हाथ
दीन भर बढ़ाऐ हुऐ हुं।

११ गयारहवां पत्र।

१ सो कया मैं कहता हूं की ईसर ने अपने लोगों को तयाग
कीया ऐसा न होवे कयोंकी मैं भी ईसराईली हूं इबराहीम
२ के बंस से बिनयामीन के घराने से हूं। ईसर ने अपने लोगों
को जीनहें उसने आगे से जाना तयाग नहीं कीया कया तुम
लोग नहीं जानते की ईलीयास के बीषै में गरंथ कया कहता
है वुह कयोंकर ईसर से ईसराईल पर अपबाद करके कहता
३ है। की हे परभु उनहों ने तेरे आगममगयानीयों को मार
डाला और तेरी जग बेदीन को ढा दीया और मैं अकेला
४ बच रहा हूं और वे मेरे पराण के षोजी हैं। परंतु ईसर
की बानी उसको कया कहती है की मैं ने अपने लीये सात
सहसर मनुष्य अलग कीये हैं जीनहों ने बआल के आगे घटने
५ नहीं टेके। सो ऐसा ईस समय में भी अनुगरह से ऐक मंडली
६ चुनी हुई होके बच रही है। और जो अनुगरह से है
तो करनी से नहीं नहीं तो अनुगरह अनुगरह न रहेगा
परंतु जो करनी से है तो अनुगरह और कुछ नहीं नहीं
७ तो करनी करनी न रहेगी। सो कया है ईसराईल ने जीस
बसतु को ढुंढ़ा वुह उसे नहीं मीली परंतु चुने हुऐ लोगों को
८ मीली और और लोग अंधे हो गये। जैसा लीषा है की ईसर
ने उनहें उंघनीहार आतमा और अंधी आंषें और बहीरे
९ कान ईस दीन लों दीये हैं। और दाउद कहता है की उनका
मंच जाल और फंदा और ठोकर षीलावनीहार पलटा उनके
१० लीये परतीफल होवे। और उनकी आंषें अंधीआरी हो
जावें की वे न देष सकें और उनकी पीठ को सदा झुका रष।
११ सो मैं कहता हूं की कया उनहों ने ऐसा ठोकर षाया है
की गीर पड़ें ऐसा न होवे परंतु उनके गीरने से अनदेसीयों
१२ को छुटकार मीला की उनहें परुनतीला करे। पर जो उनका

गीरना जगत के लीये धन है और उनकी घटती अंनदेसीयों
के लीये व़ढ़ती है तो उनकी पुरनता कीतनी अधीक होगी।
१३ कयोंकी मैं अंनदेसीयों का परेरीत हो कर तुम अंनदेसीयों
१४ से बोलता हुं और अपने पद की व़ड़ाई करता हुं। जीसतें
मैं अपने कुटुंबों को परुनतीला करुं और उन में से कीतनें
१५ को बयाउं। कयोंकी जो उनका तयाग कीया जाना जगत के
मीलाये जाने का कारन है तो उनका मीलाया जाना जैसा
१६ मीरतु से जी उठना होगा। कयोंकी जो पहीला फल पवीतर
होय तो पींड भी ऐसा है और जो जड़ पवीतर होय तो
१७ डारें भी ऐसी हैं। सो जो डारों में से कई एक तोड़ी गई
और तु जंगली जलपाई होके उन में पेवंद हुआ और जलपाई
१८ की जड़ और रस में भागी हुआ। तो डारों पर अभीमान
मत कर और जो अभीमान करे तो तु जड़ का आधार नहीं
१९ परंतु जड़ तेरा आधार है। सो तु कहेगा की डारें इस लीये
२० तोड़ी गई की मैं पेवंद होउं। अछा वे अव़ीसवास के कारन
तोड़ी गई और तु अव़ीसवास से सधीर है अभीमान मत
२१ कर परंतु डर। कयोंकी जो ईसर ने परकीरत के डारों को
२२ न छोड़ा न हो की तुहे भी न छोड़े। सो ईसर की कोमलता
और कठोरता को देख उन पर जो काटी गई कठोरता और
तुह पर कोमलता जो तु भलाई पर सथीर रहे और नहीं
२३ तो तु भी काटा जायगा। और जो वे भी अव़ीसवास में न
रहें तो पेवंद कीये जायेंगे कयोंकी ईसर उनहें फेर के पेवंद
२४ कर सकता है। इस लीये की जब तु उस जलपाई के व़ीरछ
से जीसकी परकीरत जंगली है काटा गया और परकीरत से
उलटा अछे जलपाई के व़ीरछ में पेवंद कीया गया तो वे जो
परकीरत की हैं अपने ही जलपाई के व़ीरछ में कयोंकर जोड़ी
२५ न जायेंगी। हे भाईयो मैं नहीं याहता की तुम लोग इस
गुपत भेद से अगयान रहो न हो की तुम लोग अपने को

सनेसठ समहा की कुछ अंधापन इसनाइल के व्रस पन आन
१९ पड़ी जव्र लों अंनदेसीओं की सनपुनी न हो ले। श्रान यूं
समसत इसनाइल व्रचाया जाञगा जैसा लीष्पा है की सीऊन
से मुकतदाता नीकलेगा श्रीन याकुव्र से अधनमता को दुन
२७ कनेगा। श्रीन मेना यह नीयम उनके संग होगा जव्र मैं उनके
२८ पापों को छमा कनूंगा। वे मगल समाच्यान के व्रीष्पै में तुमहाने
२९ कानन सतनु हैं पनंतु युने ऊए की नीत से पीनीय़ हैं। कयोंकी
३० इसन का दान श्रीन वुलावा पछतावा से नहीत है। कयोंकी
जैसा तुम लोग आगे इसन पन व्रीसवास नहीं लाये पनंतु अव्र
३१ उनक अव्रीसवास के कानन से दया पाए हो। वैसाही तुमहानी
दया पावने के कानन से व्रीसवास नहीं लाये की उन पन भी
३२ दया की जाय। इस लीये की इसन ने उन सभों को अव्रीस-
३३ वासता में व्रंद कीया जीसतें वह सभों पन दया कने। वाह
इसन के गयान श्रीन वुध की गहीनाइ उसका व्रीयान कैसाही
३४ प्योज से व्राहन है श्रीन उसका मानग अपान है। कयोंकी
कीसने इसन की इछा को जाना है अथवा कौन उसका मंतनी
३५ था। अथवा कीसने उसे पहीले कुछ दीया है की उसे फेन
३६ दीया जायगा। कयोंकी उसी से श्रीन उसी के कानन श्रीन
उसी के लाये समसत व्रसतें ऊइ हैं सनव्रदा सतुत उसी के लीये
है आमीन।

१२ व्रानहवां पत्र।

१ सो हे भाइयो मैं इसन की दया का कानन देके तुमहों से
व्रीनती कनता ऊं की तुम लोग अपने सनीन इसन को समनपन
कनो की जीवता श्रीन पवीतन श्रीन गनाह्य व्रलीदान होय की
२ यह तुमहानी उचीत सेवा है। श्रीन इस जगत के समान मत
होश्रो पनंतु अपने मन की नव्रीनता में व्रदल जाश्रो जीसतें तुम
लोग इसन की इछा को नीसचय से जानो की वुह भली श्रीन

३ गनाहट्ट औन सीध है। औन मैं उस अनुगनह से जो मुहे दीया
गया है तुमहों में से हन ऐक को कहता हूं की अपने माहतमा
से अपने को व़ड़ा मत समुहो पनंतु समानता से व़ाहन न जाके
ऐसा सम्हाव नखो जैसा ईसन ने हन ऐक मनुष्य को पनीमान
४ से व़ीसवास दीया। कयोंकी जैसा हमाने ऐक सनीन में व़ऊत
५ से अंग औन हन अंग का कानज भीन भीन है। सो हमलोग
जो व़ऊत से हैं मसीह के मसीह का ऐक सनीन ऊऐ हैं औन हन
६ ऐक आपुस में अंग हैं। सो हमों ने उस अनुगनह के समान जो
हमें दीया गया अलग अलग दान पाया सो जो वुह आगम की
७ व़ात है तो व़ीसवास के पनीमान के समान कहें। अथवा सेवा
है तो सेवा में नहें अथवा सीख्यावनीहान तो सीख्यावने में।
८ अथवा उपदेसक तो उपदेस में सथीन नहे दानी नीत से देवे
औन अधछ पनीसनम से जो दया कनता है आनंद से कने।
९ पनेम नीसकपट होय व़ुनाइ से घीन कनो भलाइ से मीले नहो।
१० भाइ की सी पीनीत से आपुस में दया नखो आदन की नीत
११ से ऐक दुसने को पनतीसठा देओ। काम काज में आलस न
कनो आतमा में पुनतीला होओ पनभु की सेवा में नहो।
१२ आसा में मगन होओ व़ीपत में संतोख्य पनानथना में नीत नहो।
१३ सीधों की दनीदनता को व़ांट लेओ अतीथ की सेवा कनो।
१४ उनके लीये जो तुमहें संतावते हैं व़न मांगो भला मनाओ सनाप
१५ न देओ। आनंद कनीहानों के संग आनंद कनो औन नोदन
१६ कनीहानों के संग नोदन कनो। आपुस में ऐकसा सम्हाव
नखो अभीमानी मत होओ पनतु दीनों के संग दीन होओ
१७ अपने को वुधमान मत समहो। व़ुनाइ की संती कीसी से
व़ुनाइ मत कनो उन कानजन पन जो समसत मनुष्यन की
१८ दीनीसट में भले हैं आगे से चींता कनो। जो हो सके अपने
१९ सामनथ भन हन ऐक मनुष्य के संग मीले नहो। हे पीनीयो
अपना पलटा मत लेओ पनंतु कनोध का मानग छोड़ देओ

क्योंकि यह कीय्या है की परमेश्वर कहता है की पलटा लेना मेरा
२० काम मैं हीं दंड देउंगा। सो जो तेरा शत्रु भुख्या होय तो
उसको खीला दे जो पीआसा होय तो उसे पीने को दे क्योंकि
तु यूं करके उसके शीर पर आग के अंगारों की ढेर करेगा।
२१ बुराइ के बस में मत होओ परंतु बुराइ को भलाइ से जीतो।

१३ तेरहवां पत्र।

१ हर एक प्राणी बड़े पराक्रम के बस में रहे क्योंकि ऐसा
कोइ पराक्रम नहीं जो इश्वर के ओर से न हो जीतने पराक्रम
२ हैं सो इश्वर के ठहराए हुए हैं। सो जो कोइ पराक्रम का
सामना करता है सो इश्वर के ठहराए हुए का सामना करता
है और वे जो सामना करते हैं सो अपने दंड को पावेंगे।
३ क्योंकि पराक्रमी भले कारज को नहीं डरावते परंतु बुरे
को सो जो तु चाहे की पराक्रम से न डरे तो भला कर और
४ तु उस से बखान पावेगा। क्योंकि वुह इश्वर का सेवक तेरी
भलाइ के लीये है परंतु जो तु बुरा करे तो डर की वुह खड़ग
बीरथ नहीं पकड़ता क्योंकि वुह इश्वर का सेवक बुराइ
५ करनीहारों के लीये क्रोध का दंडदाता है। सो तुम लोग
केवल क्रोध के भय से नहीं परंतु बीवेक से भी मानो।
६ इस लीये तुम लोग कर भी देओ की वे उसी कारज के लीये
७ इश्वर के सेवक हैं। सो सबका जो आवता हो भर देओ जीसको
कर चहीये कर और जीसे सुलक चहीये सुलक देओ और
जीस से डरा चहीये डरो और जीस का प्रतीसठा चहीये
८ प्रतीसठा देओ। पीआर को छोड़ कीसी को कुछ मत धरो
क्योंकी वुह जो औरों को पीआर करता है उसने बेवसथा को
९ पुरा कीआ है। क्योंकी यह की तु परसतीरी गमन मत कर
हतया मत कर चोरी मत कर झूठी साखी मत दे लालच मत
कर सब और आगया जो इनहों से अधीक हैं सो संक्षेप से

इसी में हैं अरथात अपने परोसी को ऐसा पीआर कर जैसा
१० आप को करता है। पीआर अपने परोसी से बुराइ नहीं
११ करता इस कारन पीआर ब्रेवसथा का संपरन करना है। और
समय को पहीयान के की नींद से जागने का समय अब आन
पहुंया है कयोंकी जीस समय से हम लोग बीसवास लाये तब
१२ से अब हमारी मुकत समीप है। रात बहुत बीत गइ और
भीनसार हो यला सो हम अंधीयारे के कारजन को तयाग
१३ करें और परकास का हीलम पहीन लेवें। और जैसा की दीन
का ब्रेवहार है संवर के यलें ऊलर और मतवालपन में नहीं
बेभीयार और लुयपन में नहीं झगड़ा और डाह में नहीं।
१४ परंतु परभु यीसु मसीह को पहीन लेओ और सरीर की कामना
को पालने के लीये यींता न करो।

१४ यौदहवां परब।

१ जो बीसवास में नीरबल है उसको गरहन करो परंतु मेहीन
२ अरथन के बीवाद के लीये नहीं। एक बीसवास करता है की
हर एक बसतु प्पा सकता है परंतु जो नीरबल है केवल साग
३ पात प्पाता है। सो वुह जो प्पाता है उसको जो नहीं प्पाता
नींदा न करे और जो नहीं प्पाता सो प्पानेवाले का बीयार
४ न करे कयोंकी इसर ने उसे गरहन कीया है। तु कौन
है जो दुसरे के सेवक पर अगया करता है वुह तो अपने परभु
के आगे प्पड़ा है अथवा पड़ा है हां वुह प्पड़ा कीया जायगा
५ कयोंकी इसर उसे प्पड़ा कर सकता है। कोइ मनुष्प एक
दीन को दुसरे दीन से स्रेसठ मानता है और काइ हर एक
दीन को समान मानता है हर एक मनुष्प को यहीये की
६ अपने मन में पुरी परतीत रप्पे। और वुह जो दीन की यींता
करता है सो परभु के कारन यींता करता है और जो दीन
की यींता नहीं करता सो परभु के कारन नहीं करता जो

ख्याता है सो परमेश्‍वर के कारन ख्याता है क्योंकी वुह ईश्‍वर की
स्‍तुत करता है और जो नहीं ख्याता से। परमेश्‍वर के लीये नहीं
७ ख्याता और ईश्‍वर की सतुत करता है। क्योंकी कोई हम में
से अपने कारन नहीं जीता और कोई अपने लीये नहीं मरता।
८ जो हम जीते हैं तो परमेश्‍वर के कारन जीते हैं और जो मरते
हैं तो परमेश्‍वर के कारन मरते हैं इस लीये जो हम जीवें अथवा
९ मरें सो परमेश्‍वर हो के हैं। क्योंकी मसीह इसी बात के लीये
मरा और उठा और जीआ की मीरतकन और जीवतन का
१० परमेश्‍वर होवे। परंतु तु कीस लीये अपने भाई पर अगया करता
है अथवा तु कीस लीये अपने भाई को कुछ नहीं समुझता क्योंकी
को हम लोग मसीह के सींहासन के आगे ख्पड़े कीये जायंगे।
११ क्योंकी लीख्पा है परमेश्‍वर कहता है की अपने जीवन की सैांह हर
ऐक घुठना मेरे आगे झुकेगा और हरऐक जीभ ईश्‍वर के आगे
१२ मान लेगी। सो हर ऐक हम में से ईश्‍वर के आगे अपना अपना
१३ लेख्पा देगा। इसीलीये यहाीये की हम ऐक दुसरे पर अगया
न करें परंतु पहीले यह ठहरावें की वुह वसतु जो ठोकर ख्पीलाने
के अथवा गीरपड़ने के कारन होवे अपने भाई के आगे न
१४ रख्पें। मैं जानता हूं और परमेश्‍वर यसु मसीह से परबोध पाया
हे की कोई वसतु आपही असुध नहीं है परंतु जो कीसी वसतु
१५ को असुध समुझता है वुह उसके लीये असुध है। जो तेरा भाई
तेरे भोजन से उदास होवे तो तु परेम की रीत पर नहीं यलता
जीस के कारन मसीह मरा अपने भोजन से उसका नास मत
१६।१७ कर। यहीये की तेरी भलाई बुरी न कही जाय। क्योंकी
ईश्‍वर का राज ख्याने अथवा पीने में नहीं है परंतु धरमातमा
१८ में धरम और कुसल और आनंद है। और जो कोई इनहीं
बातें में मसीह की सेवा करता है सोई ईश्‍वर का भाया और
१९ मनुष्यें का सराहा हुआ है। इसी लीये आओ ऐसे कारजन
का पीछा करें जो कुसल के कारन होय और जीस से ऐक दुसरे

२० को बुढ़ा सके। और भोजन के लीये इसर का कारज मत
बीगाड़ो समसत बसतें तो पवीतर हैं परंतु वुह उस मनुष्य के
२१ लीये जो भोजन करके ठोकर खीलावता है बुरा है। भला
यह है की मांस न खाना मदीरा न पीना और ऐसा करम न
करना जीस से तेरा भाइ धका अथवा ठोकर खाय अथवा
२२ नीरबल होजाय। तेरा बीसवास जो ठीक है तो उसे इसर
के आगे अपने लीये रख छोड़ धन वुह जो अपने को उस कारज
२३ में जो उसे भरता है दोख नहीं देता। परंतु वुह जो संदेह
रखके खाता है दोखी है इस कारन की बीसवास से नहीं है
कयोंकी जो कुछ बीसवास से बाहर है सो पाप है।

१५ पंद्रहवां परब।

१ सो हम लोगों को जो बली हैं चाहीये की नीरबलों की
२ दुरबलता को सहें और अपना सवारथ न करें। हर ऐक
हम में से भलाइ के लीये अपने परोसी का सवारथ करे की
३ वुह सवर जाय। कयोंकी मसीह ने भी अपनी इछा न की
पर जैसा लीखा है की तेरे नींदकों की नींदा मुझ पर आपड़ी।
४ कयोंकी जो कुछ आगे लीखा गया सो हमारी सीछा के लीये
लीखा गया की हम लोग संतोख से और गरंथों के सांत से
५ भरोसा पावें। अब संतोख और सांतर का इसर तुमहों
का यह देवे की मसीह यसु के समान आपुस में ऐक मन हो
६ रहो। जीसतें ऐक मन और ऐक बोली होके हमारे परभु
७ यसु मसीह के पीता इसर की महीमा करो। इस कारन हर
ऐक तुमहों में से दुसरे का मीला लेवे जैसा की मसीह ने भी
८ हमों को इसर की महीमा में मीला लीया। अब मैं कहता
हुं की यसु मसीह खतनः कीये गयों का सेवक इसर की सचाइ
के लीये हुआ की उन परतीगयाओं को जो पीतरों से की गइ
९ पुरी करे। जीसतें परदेसी भी दया के कारन से इसर की

महीमा कनें जैसा लीप्पा है की इस कानन मैं अंनदेसीयों के
मघमें तहे मान लेउंगा औान तेने नाम की सतुत गउंगा।
१० औान वुह फेन कहता है की हे अंनदेसीयो उसके लोगों के संग
११ आनंद कना। औान फेन की हे समसत अंनदेसीयो पनभु की
१२ सतुत कनो औान हे लोगो उसकी सतुत कनो। औान फेन
असीया कहता है की यसी का ऐक मुल होगा औान अंनदेसीयों
पन नाज कनने को ऐक उदय होगा औान अंनदेसी उस पन
१३ आसा नष्पेंगे। अव् आसा का इसन तुमहों को वीसवास
लावने से समसत आनद औान सांत से भनपुन कने धी तम लोग
१४ घनमातमा के सामनथ से आसा में वढ़ते यले जाओ। औान
हे मेने भाइयो मेना तो तुमहाने वीष्पे में यह वीसवास है
धी तुम लोग भलाइ से भन पुन औान नाना पनकान के गयान
१५ से भने हो औान ऐक दुसने को समझा सकते हो। सो हे
भाइयो मैं ने नोडन से यत दीलाने की नीत से कुछ थोड़ा सा
तुमहें लीप्प भेजा कयोंकी इसन ने मुझ पन इस लीये अनुगीनह
१६ कीया। की मैं यसु मसीह का सेवक अनदेसीयों के लीये
होके इसन के मंगल समायान की सेवकाइ कनुं जीसतें अन-
देसीयों की भेंट घनमातमा से पवीतन होके गनहन की जाय।
१७ सो मैं यसु मसीह के कानन उन कानजन में जो इसन के हैं
१८ वड़ाइ कन सकता हुं। कयोंकी मेना इतना हीयाव नहीं
की उन कानजन को छोड़ जो मसीह ने मुझ से कनवाया वननन
कनुं की अनदेसीयों को वयन में औान कननी में आधीन कने।
१९ वड़े वड़े लछन औान आसयनजन से औान इसन के आतमा
के पनाकनम से यहां लों की मैं ने यनोसलीम से फीनते फीनते
इलुनकुम लों मसीह के मंगल समायान का पुना उपदेस कीया।
२० सो मैं उस पनतीसठा का अभीलासी था की जहां जहां मसीह
का नाम नहीं लीया गया तहां तहां मंगल समायान पहुंयाउं
२१ न हो की मैं दुसने की नेउ पन नदा नप्पुं। पनतु जैसा लीप्पा

है की जीनहों को उसका संदेस नहीं पङ्कंया वे देष्पेंगे औान
२२ जीनहों ने नहीं सुना समझेंगे। इसी कानन से मैं तुमहाने
२३ पास आवने से वृक्त नोका गया। पनंतु अव इन देसों में
कोइ सथान वृय न नहा। औान तुमहों से भेंट कनने को वृक्त
२४ वृनस से अभीलासी ङं। जव मैं असपनीयः को यातना कनुंगा
तुमहाने पास भी आजाउंगा मैं आसा नष्पता ङं की जाते जाते
तुमहों को देष्पुं औान तुमहानी भेंट से संतुसट होके तुमहीं
२५ से उचनी को वृढायाजाउं। पनंतु अव मैं सीधों की सेवा
२६ कनने के लीये यनोसलीम को जाता ङं। कयांकी मकदुनीयः
औान अष्पाइयः के वासीयों की इछा युं है की यनोसलीम के
२७ दनीद्न सीधों के लीये कुछ भेजें। यह उनकी इछा ङइ
औान वे उनहों के नीनी भी हैं कयोंकी जव अंनदेसी आतमीक
वृसतुन में उनके भागी ङए हैं तो उयीत है की वे सनीनीक
२८ वृसतुन में उनहों की सेवा कनें। सो मैं इस कानज को पुना
कनके औान यह फल उन के हाथ में देके तुमहाने पास से हो कन
२९ असपनीयः को जाउंगा। औान मैं जानता ङं की मेना आवना
तुमहाने पास मसीह के मंगल समायान की भनपुनी से होगा।
३० औान हे भाइयो मैं तुमहों से अपने पनभु यसु मसीह के औान
आतमा के पनेम का कानन देके वीनती कनता ङं की तुम लोग
मेने लीये मेने संग इसन की पनानथना कनने में पनीसनम
३१ कनो। जीसतें मैं यङदीयः के अवीसवासीयों से वृय जाउं
औान मेनी वुह सेवा जो यनोसलीम के लीये है सो सीधन को
३२ गनाह्ह होय। की मैं इसन की इछा से तुमहाने पास आनंद से
३३ आउं औान तुमहाने संग यैन पाउं। अव सांत का इसनी
तुम सभों के संग नहे आमीन।

१६ सोलहवां पनव।

१ मैं तुम सभों से फावी का सनाहना कनता ङं जो हमानी

२ व्हीन है और कंकनीयः नगर की मंडली की दासी है। की
तुम लोग उसको परभु में ग्रहन करो जैसा संतों को जोग
है और जो जो कारज में वुह तुमहें से परयोजन रखती होय
उसका उपकार करो क्योंकी वुह बहुतों की और मेरी भी
३ उपकारनी थी। परसकला और अकला को जो मसीह यसु
४ में मेरे उपकारक हैं मेरा नमसकार कहो। उनहें ने मेरे
परान के लीये अपनाही गला धर दीया उनका केवल मैं नहीं
परंतु अनदेसीयों की समसत मंडली भी धंन मानती हैं।
५ और मंडली को जो उनके घर में हैं नमसकार कहो और मेरे
पीरीय अपीनतस को जो अखायः का मसीह्री पहीला फल है
६ नमसकार कहो। और मरीयम को जीसने हमारे लीये बहुत
७ परीस्रम कीया नमसकार कहो। और अंद्रनीकस और
यूनीयः को जो मेरे कुटुंब हैं और बंदीगीरह में मेरे साथी
थे और परेरीतों में परसीध हैं और मुझ से पहीले मसीह
८ में भी थे नमसकार कहो। अंपलीयास को जो परभु में मेरा
९ पीरीय है नमसकार कहो। और मसीह में मेरे संगी सेवक
अरबानुस को और मेरे पीआरे सतकीस को नमसकार कहो।
१० और अपलीस को जो मसीह में परखा हुआ है नमसकार
११ कहो और अरसतबुलस के लोगों को नमसकार कहो। मेरे
कुटुंब हीरुदीयुन को नमसकार कहो और नारकीसस के
१२ लोगों को जो परभु में हैं नमसकार कहो। और तरीफीना
और तरीफुसा को जीनहें ने परभु में परीस्रम कीया है
और पीआरे परसस को जीसने परभु के लीये बहुत परीस्रम
१३ कीया है नमसकार कहो। और रुफस को जो परभु में चुना
हुआ है और उसको जो उसकी और मेरी माता है नमसकार
१४ कहो। और असनकरतस और फलगुन और हरमास और
पतरबास और हरमीस और भाइयों को जो उनके संग हैं
१५ नमसकार कहो। और फललुगस और यूलीआ और नीरीयुस

और उसकी वुहान को और उलंपास और समसत संतन को
१६ जो उनके संग हैं नमसकान कहो। और पवीतन चुमा से
एक दुसने को नमसकान कहो मसीह की समसत मंडली तुमहें
१७ नमसकान कहती हैं। अव़ हे भाइय़ो मैं तुमहों से वीनती
कनता हुं की उन लोगों को जो इस उपदेस से उलटा यलते हैं
और वीगाड़ के और ठोकन प्योलावने के कानन हैं यीनह
१८ नप्यो और उनसे पने नहो। कय़ोंकी जो ऐसे हैं सो हमाने
पनभु य़सु मसीह की नहीं पनंतु अपने उदन की सेवा कनते हैं
और सुवयन और ललोपतो की वातों से सुचे लोगों को
१९ ठगते हैं। कय़ोंकी तुमहानी अधीनता सभों लों पहुंयी है
इसकानन मैं तुमहों से आनंदीत हुं पनंतु मैं य़ह याहता हुं
की तुमलोग भलाइ में यतुन और वुनाइ में भोला होओ।
२० और कुसल का इसन सय़तान को तुमहाने पाओं तले सीघन
लताड़ेगा हमाने पनभु य़सु मसीह का अनुगीनह तुमहाने संग
२१ होवे आमीन। मेने संग का पनौसनमो तीमताउस और मेना
कुटुंव लुकय़ुस और य़ासन और सुपतनस तुमहें नमसकान
२२ कहते हैं। मैं तनतय़ुस जो इस पतनी का लेप्यक हुं तुमहों को
२३ पनभु में नमसकान कहता हुं। गाय़ुस जो मेना और सानी
मंडली का आतीथय़ कननीहान है तुमहें नमसकान कहता है
आनासतस जो नगन का भंडानी है और भाइ कानतस तुमहों
२४ को नमसकान कहते हैं। हमाने पनभु य़सु मसीह का अनुगीनह
२५ तम सभों पन होवे आमीन। अव़ वुह जो तुमहों को मेने
मंगल समायान के और य़सु मसीह के उपदेस के समान सथीन
कन सकता है अनथात पनगट कीए हुए भेद के समान जो जगत
२६ के आनंभ से गुपत था। पनंतु अव़ आगमगय़ानीओं के गनंथों से
अनंत इसन की आगय़ा के समान समसत लोगों पन पनगट कीय़ा
२७ गय़ा की आधीनता के लीय़े वीसवास लावें। अद्वैत वुधमान इसन
को य़सु मसीह के ओन से सनवदा महीमा पहुंयी कने आमीन।

पुलुस की पहीली पतरी करंतीयों को

१ पहीला पत्र।

१ पुलुस जो इसर की इक्षा से यसु मसीह का वुलाया ज्ञआ
२ परेरीत और भाई सुसतनीस से। इसर की मंडली को जो
करनतस में है उनको जो यसु मसीह में होके पवीतर कीये
गये हैं और साधु कहाए हैं उन सब समेत जो हर एक सथान
में यसु मसीह का नाम जो हमारा और उनका परभु है लीया
३ करते हैं। हमारे पीता इसर के और परभु यसु मसीह के
४ और से अनुगीरह और कुसल तुमहारे लीये होवे। मैं
तुमहारे लीये नीत अपने इसर का घन मानता ज्ञं की इसर का
५ अनुगीरह यसु मसीह में तमहों को दीया गया। की हर एक
वसत में और समसत उचारन और समसत गयान में उसी के
६ कारन से तम लोग घनी कीये गये हो। जैसा की मसीह की
७ साप्षी तुमहों में ठहराई गई। यहां लों की तुम लोग कीसी
अनुगीरह में घाट नहीं हो और हमारे परभु यसु मसीह के
८ परगट होने की वाट जोहते हो। वही तुमहें अत लों सथीर
रखेगा जीसतें तुम लोग हमारे परभु यसु मसीह के दीन में
९ नीरदोष ठहरो। इसर घरमी है जीस से तुम लोग उसके
पुतर हमारे परभु यसु मसीह की संगत में वुलाये गये हो।
१० अव हे भाइयो मैं परभु यसु मसीह के नाम के कारन तुमहारी
वीनती करता ज्ञं की तुम लोग एकही वात वोलो और वीभाग

तुमहों में न होवे परंतु एक ही मन और एकही गयान में
११ मीले जुले रहो। कयोंकी हे भाइयो मुझे कलाइ के लोगों से
१२ कहा गया है की तुमहों में झगड़े हैं। सो मैं कहता हूं की
तुमहों में हर एक कहता है की मैं पुलुस का मैं अपलुस का
१३ मैं कायफा का मैं मसीह का हूं। तो कया मसीह वीभाग
होगया कया पुलुस तुमहारे कारन कुरुस पर खींचा गया
१४ अथवा तुमहों ने पुलुस के नाम से सनान पाया। मैं तो इसर
का धन मानता हूं की मैं ने करसपस और गायुस को छोड़
१५ तुमहों में कीसी को सनान न दीया। न होवे की कोइ कहे
१६ की उसने अपने नाम से सनान दीया। और मैं ने इसतीफरान
के घराने को भी सनान दीया और उन से अधीक मैं नहीं
१७ जानता की मैं ने कीसी और को सनान दीया। कयोंकी
मसीह ने मुझे सनान देने को नहीं परंतु मंगल समाचार का
उपदेस करने को भेजा वचन के गयान से नहीं न होवे की
१८ मसीह का कुरुस नीरर्थ हो जाय। कयोंकी कुरुस का उपदेस
उनके लीये जो नसट होते हैं मुरखता है परंतु हम ने लीये
१९ जो बचाये गये हैं इसर का सामरथ है। कयोंकी लीखा है
की मैं गयानीयों क गयान को नस करुंगा और बुधमानों
२० की बुध को मीटा डालुंगा। कहां गयानी कहां अधापक कहां
इस जगत के वीवादी कया इसर ने इस जगत के गयान को
२१ मुरख न कीया। इस लीये की जब इसर के गयान से
युं हुआ की जगत ने अपने गयान से इसर को न पहीचाना
तो इसर को यह इछा हुइ की मंगलसमाचार की मुरखता
२२ से वीसवासीयों को बचावे। कयोंकी यहुदी कोइ लछन
२३ चाहते हैं और युनानी गयान ढुंढ़ते हैं। परंतु हम मसीह
का जो कुरुस पर मारा गया संदेस देते हैं वुह यहुदीयों के
लीये ठोकर का कारण है और युनानीयों के लीये मुरखता
२४ है। पर मसीह उनके लीये जो बुलाये गये हैं कया यहुदी

कया युनानी इसन का सामनथ श्रीन इसन का गयान है।
२५ कयोंकी इसन की मुनष्पता मनुष्यन से अधीक गयानी है श्रीन
२६ इसन की दुनबलता मनुष्य से बलवंत है। हे भाइयो अपने
बुलाऐ ऊऐ पन दीनासट कनो की बऊत से सनीनीक गयानी
श्रीन बऊत पना कनमी श्रीन बऊत से पनतीसठीत नहीं हैं।
२७ पनंतु इसन ने जगत की सुनष्प बसतुन को युन लीया की
गयानीयों का अपमान कने श्रीन इसन ने जगत की दुनबल
२८ बसतुन को युन लीया की बलवंत को लजीत कने। श्रीन
जगत की नीय बसतुन का श्रीन नींदीत बसतुन को श्रीन
बसतुन को जो नहीं हैं इसन ने युन लीया की उन बसतुन को
२९ जो हैं मीटा डाले। जीसतें कोइ सनीन उसके आगे बड़ाइ
३० न कने। पनंतु तुमलोग उसी से मसीह युसु में हो जो इसन
से हमारे लीये गयान श्रीन धनम श्रीन पवीतनता श्रीन मुकत
३१ ऊआ है। की जैसा लीष्पा है की जो बड़ाइ कने सो पनमु पन
बड़ाइ कने।

२ दुसना पनत्र।

१ श्रीन हे भाइयो जब मैं तुम्हाने पास आया तब बयन की
उतमता अथवा गयान से इसन की साष्पी देता ऊआ नहीं
२ आया। कयोंकी मैं ने ठहनाया की तुमहों में कुछ न जानुं
केवल युसु मसीह को श्रीन उसके कुनुस पन मारे जाने को।
३ श्रीन मैं दुनबलता में श्रीन भय में श्रीन नीपट थनथनाता ऊआ
४ तुमहाने पास था। श्रीन मेनी भासा श्रीन मेना उपदेस मनुष्य
के गयान के फुसलाने की बातें न थीं पनंतु आतमा के सामनथ
५ श्रीन पनतछ पनमान के संग थीं। जीसतें तुमहाना बीसवास
मनुष्य के गयान में नहीं पनंतु इसन के सामनथ पन ठहने।
६ तीसपन भी हम उनके आगे जो सीध हैं गयान की बातें बोलते
हैं तथापी इस लोक का श्रीन इस नासमान लोक के अधकन

७ का गयान नहीं बोलते। परंतु हम इसन का नीगुढ़ गयान
बोलते हैं वही गुपत गयान जीसे इसन ने जगत से पहीले
८ हमारे महातम के कारन ठहराया। जीसे कीसी ने इस
जगत के अधक्छन में से न जाना क्योंकी जा वे जानते होते ता
९ महातम के परभु का क्रुस पर न मारते। परंतु जेसा की
लीख्या है की इसन ने अपने परमीयों के लीये उन बसतुन को
सीध कीया है जीनहें अख्या ने न देख्या और न कानें ने सुना
१० और न मनुख्यन के अतःकरन में परवेस ऊई। परंतु इसन
ने उनको अपनें आतमा के ओर से हम सभा पर परगट कीया
क्योंकी आतमा समसत बसतुन को हां इसन के गंभीर बसतुन
११ को भी बीचार करता है। क्ये की कौन मनुख्य मनुख्य के
आतमा को छोड़ जो उस में है मनुख्य का भेद जानता है इसी
रीत से इसन के आतमा को छोड़ इसन का भेद कोइ नहीं
१२ जानता। अब हमों ने जगत के आतमा का नहीं परंतु उस आतमा
को पाया जो इसन के ओर से है जसतें हम उन बसतुन को जानें
१३ जो इसन ने हमें दीं। जो हम कहते हैं मनुख्य की बुध के सीख्या-
वने के बचन में नहीं परंतु धरमातमा की सीख्य इ ऊइ आत-
१४ मीक बसतुन को आतमीक से मीलावते हैं। परंतु सारीरीक
मनुख्य इसन के आतमा की बसतुन को गरहन नहीं करता का वे
उसके आगे मुरख्यता हैं और न वुह जान सकता है क्योंकी वे
१५ आतमीक रीत पर बुझी जाती हैं। परंतु वुह जो आतम का है
सो सब बातों का समझता है पर वुह आप कीसी से नहीं समझा
१६ जाता। क्योंको परभु के मन को कीसने जाना है की उसका मंतरी
होवे परंतु मसीह का मन हमें। में है।

३ तीसरा परब।

१ और हे भाइयो मैं तुम हों से ऐसा न कह सका जैसा आत-
मीकों से परंतु ऐसा जैसा सरीरीकों से अरथात जैसा उनके जो

२ मसीह में ब्रालक हैं। मैं ने तुमहें दुघ पीलाय़ा औान मांस न
प्पीलाय़ा कय़ोंकी तुम लोग असकत थे औान अव्र लों भी तुमहों
३ में सकती नहीं। कय़ोंकी तुम लोग अव्रलों सानीनीक हो इस
लीय़े जव्र की तुमहों में डाह औान हगड़ा कनना औान व्रीभाग
होना है तो कय़ा तुम लोग सानीनीक नहीं हो औान मनुष्यन
४ के व्रेवहान पन नहीं चलते हो। कय़ोंकी जव्र प्रेक कहता
है की मैं पुलुस का ऊं औान दुसना की मैं अपलुस का तो कय़ा
५ तुम सानीनीक नहीं। पुलुस कौन औान अपलुस कौन है केवल
सेवक जीन के औान से तुम लोग व्रीसवास लाये सो भी इतना
६ जीतना पनभु ने हन प्रेक को दीय़ा। मैं ने व्रीनछ लगाय़ा
७ औान अपलुस ने सींया पनंतु इसन ने व्रढ़ाय़ा। सो लगाव-
नीहान कुछ नहीं औान न सींयनीहान पनंतु इसन को व्रढ़ाव-
८ नीहान है। सो लगावनीहान औान सींयनीहान दोनों प्रेक
हैं औान हन प्रेक अपने पनीसनम के समान फल पावेगा।
९ कय़ोंकी हम लोग इसन के व्रनीहान हैं औान तुम लोग इसन
१० की प्येती औान इसन के व्रसाव हो। मैं ने इसन के अनुगीनह
की नीत पन जो मुहे दीय़ा गय़ा व्रुधमान थवइ के समान
नेउं डाली औान दुसना उस पन थन घनता है सो हन प्रेक
सोंयेती कने की वुह कीस नीत से उस पन थन घनता है।
११ कय़ोंकी उस नेउं को छोड़ जो डाली गइ है कोइ दुसनी नेउं
१२ डाल नहीं सकता वुह य़ेसु मसीह है। पनंतु जो कोइ इस
नेउं पन सोने नुपे अत मोल के पथन लकड़ी घास भुसे का
१३ थन नप्पे। तो हन प्रेक का कानज पनगट होगा की वुह दीन
उसको पनगट कनदेगा की प्रैसे कानज आग से पनप्पे जाय़ेंगे
१४ औान हन प्रेक का कानज जैसा है आग ठहनावेगी। जो
१५ कीसी का कानज सथीन नहे वुह फल पावेगा। औान जो
कीसी का कानज जल जाय़ वुह टुटी उठावेगा तथापी आप तो
व्रय जाय़गा पनंतु प्रैसा जैसा कोइ आग से व्रय नीकलता है।

१६ कया तुम लोग नहीं जानते की तुम ईसर के मंदीर हो और
१७ ईसर का आतमा तुमहों में बसता है। जो कोई ईसर के
मंदीर को बीगाड़े तो ईसर उसको बीगाड़ेगा कयोंकी ईसर
१८ का मंदीर पवीतर है और वुह तुम लोग हो। कोई मनुष्य
अपने को छल न देवे जो कोई तुमहारे बीचमें अपने को जगत
१९ में गयानवान जाने तो मुरष्य बने की गयानी होवे। कयोंकी
लौकीक गयान ईसर के आगे मुरषता है जैसा की लीखा है
२० की वुह गयानीओं को उनकी चतुराईओं में फंसाता है। और
फीर की परभु गयानीओं की चींतों को जानता है की वे बेअरथ
२१ हैं। ईस लीये कोई मनुष्य मनुष्य पर बड़ाई न करे कयोंकी
२२ समसत बसतें तुमहारी हैं। कया पुलुस कया अपलुस कया
कैफा कया जगत कया जीवन कया मरन कया बरतमान
२३ की बसत कया भवीस की सब तुमहारी हैं। और तुम मसीह
के हो और मसीह ईसर का है।

४ चौथा परब।

१ मनुष्य हमों को ऐसा जाने जैसे मसीह के सेवक और ईसर
२ के भेद के भंडारी। और भंडारी में ईस बात की खोज की
३ जाती है की वुह धरमी पाया जाय। परंतु मुझ को उसकी
कुछ चींता नहीं की तुमहों से मेरा बीचार कीया जाय अथवा
कीसी मनुष्य के बीचार करने से हां मैं आप भी अपना
४ बीचार नहीं करता। कयोंकी मेरा मन कीसी बात में मुझे
दोष नहीं देता तथापी मैं उस से कुछ धरमी नहीं ठहरता
५ परंतु मेरा बीचार करनीहार परभु है। ईस कारन जब लों
परभु न आवे तुम लोग समय से पहीले बीचार मत करो वुह
अंधकार के गुपत भेदों को परकासीत करेगा और मन के
परामरस को परगट करेगा और तब हर एक जन ईसर से
६ बड़ाई पावेगा। और हे भाईओ मैं ने ईन बातों में तुमहारे

कारन अपना ओर अफलुस का व्रनन दीनीसटांत की रीत
पर कीया की तुम लोग हमारे ओर से सीष्पो की लीष्पे ऊए
से अधीक न समझो न होवे की तुम लोग ऐक से दुसरे की
७ अधीक व्रड़ाइ करके फुलो। कयोंकी कौन तुझे दुसरे से
व्रीभेद करता है ओर तुझ पास कया है जो तु ने नहीं पाया
सो जो तु ने पाया तो कयों व्रड़ाइ करता है जैसा की तु ने
८ नहीं पाया। सो अव्र तुम लोग संतुसट ओर धनमान हो
ओर हमारे व्रीना तुमहों ने राजाओं के समान राज कीया
ओर मैं चाहता ऊं की तुम लोग राज करते की हम लोग भी
९ तुमहारे संग राज करते। कयोंकी मेरी व्रुध में इसर ने
हमों को जो पीछले परेरीत हैं ऐसा परगट कीया जैसा की
हमारे मार डालने पर अगया की गइ है की हम जगत के ओर
१० दुतों के ओर मनुष्पन के लीये ऐक सवांग ऊए हैं। हम
मसीह के कारन से मुरष्प हैं परंतु तुम लोग मसीह में गयानी
हो हम दुरव्रल तुम व्रलवान हो तुम परतीसठीत हम नींदीत
११ हैं। हां हम इस घड़ी लों भुष्पे ओर पीयासे ओर नंगे हैं
१२ ओर घोल ष्पाते हैं ओर मारे फीरते हैं। ओर अपने हाथों
से परीसरम करते हैं नींदीत होके हम भला मनाते हैं सताए
१३ जाके हम सहते हैं। वे अपव्राद लगावते हैं हम व्रीनती करते
हैं ओर हम जगत के कुड़े की ओर समसत व्रसतुन की मैल
१४ के समान आज लों हैं। मैं ये व्रातें नहीं लीष्पता ऊं की तुमहें
लजीत करुं परंतु अपने पीरीय पुतरों के समान मैं चेतावता हों।
१५ कयोंकी यदपी मसीह में तुमहारे दस सहसर उपदेसक ऊं
तथापी तुमहारे पीता व्रऊत से नहीं इस लीये की मैं अकेला
मंगल समाचार के दुवारा से मसीह यसु में तुमहारा पीता
१६ ऊआ। सो मैं तुमहारी यह व्रीनती करता ऊं की मेरे पीछे
१७ चलनीहार होओ। इस कारन मैं ने तीमताउस को जो मेरा
पीरीय पुतर है ओर परभु में व्रीसवासी है तुमहारे पास भेजा

की वुह मेरे यतन को जो मसीह में हैं जैसा मैं हर एक स्थान
१८ हर मंडली में सीखावता हूं तुम्हें समरन करावे। कीतने
यह समझ के फुलते हैं की मैं तुम्हारे पास नहीं आवने का।
१९ परंतु जो परभु याहे तो मैं तुम्हारे पास सीघर आऊंगा और
अभीमानीओं की वातों को नहीं परंतु उनके पराकरम के मन
२० को वुझुंगा। कयोंकी इसर का राज वयन में नहीं परंतु परा-
२१ करम में है। तुम लोग कया याहतेहो की मैं तुम्हारे पास
छड़ी लेके आउं अथवा परेम और आतमा की कोमलता से।

५ पांयवां पत्र।

१ यह समवतन सुनाया जाता है की तुम्हारे बीय्ये वेभीयार
है और ऐसा वेभीयार जीस का नाम अंनदेसीओं में भी नहीं
२ की मनुष्य अपने पीता की इसतीरी को रख्ये। और तुम लोग
फुलते हो वीलाप नहीं करते जो उयीत था की जीसने यह
३ करम कीया तुमहों से नीकाला जाय। कयोंकी मैं तो सरीर
में अलग हूं परंतु आतमा में ऐसा समीप हूं जैसा समयमुय
समीप था उस पर जीसने ऐसा कीया यह आगया कर युका।
४ की हमारे परभु यसु मसीह के नाम में जव तुम लोग और
हमारा आतमा हमारे परभु यसु मसीह के पराकरम के संग
५ एकठे हो। तो ऐसे मनुष्य को सरीर में कसट ष्योयने के
लीये सैतान को सौंप देओ जीसतें हमारे परभु यसु के दीन
६ में आतमा वय जाय। तुम्हारा घमंड करना ठीक नहीं कया
तुम लोग नहीं जानते की थोड़ा सा ष्मीर सारे पींडे को ष्मीर
७ कर डालता है। सो पुराने ष्मीर को नीकाल फेंको जीसतें
तुमलोग नया पींड वनो जैसा की तुम अष्मीर हो कयोंकी
हमारा फसह अरथात मसीह हमारे लीये वलीदान कीया गया।
८ इस लीये हम लोग पुराने ष्मीर से नहीं और न वुराई और
दुसटता के ष्मीर से परंतु नीरमलता और सयाई के ष्मीर

९ से पत्र करें। मैं ने पत्री में तुम्हें को लीख्या की व्यभीचारीओं
१० को संगत मत करो। परंतु केवल इस जगत के व्यभीचारीओं को
नहीं अथवा लोभीओं को अथवा नीयोनीओं को अथवा देव
पुजकों को नहीं तब तो तुम्हें जगत से नीकल जाना अवश्य
११ होता। पर मैं ने अब तुम्हें लीख्या है की जो कोई भाई कहा
के व्यभीचारी अथवा लोभी अथवा देवपुजक अथवा नींदक
अथवा मदप अथवा नीयोनी होय तो तुम लोग ऐसे की संगत
१२ न करना हां ऐसे के संग भोजन भी न खाना। क्योंकी मुझे
क्या काम है की उन पर जो बाहर हैं आग्या करुं क्या तुम
१३ लोग उन पर जो भीतर हैं आग्या नहीं करते। परंतु उन पर
जो बाहर हैं ईश्वर आग्या करता है सो इस कारन तुम लोग
उस दुष्ट मनुष्य को अपने बीच में से बाहर करो।

६ छठवां पत्र।

१ क्या तुम्हों में कीसी का यह हीयाव है की दुसरे से बीवाद
२ रखके अधर्मीयों के पास जावे और सीधन करे नहीं। क्या
तुम लोग नहीं जानते की साधु लोग जगत का बीचार करेंगे जो
तुम्हों से जगत का बीचार कीया जाय तो क्या तुम लोग सहज
३ बीवादों के बीचार करने के अजोग हो। क्या तुम नहीं
जानते की हम लोग दुतों का बीचार करेंगे तो कीतना अधीक
४ इस जीवन के बसतुन के बीष्ये में। सो जो तुम्हों में इस जीवन
की बसतुन के बीष्ये में बीवाद होय तो मंडली के उन लोगों को
५ जो छोटे हैं न्याय मानो। मैं तुम्हारी लाज के लीये कहता हुं
क्या तुम्हारे बीष्ये एक बुधमान भी नहीं जो अपने भाईओं
६ के बीष्ये में न्याय से चुका सके। परंतु भाई भाई से बाद
७ करता है और सो अबीसवासीयों के आगे। सो यह सर्वथा
तुम्हारा दोष्य है की तुम आपुस में झगड़ा करते हो तुम लोग
क्यों नहीं अंधेर सहते और तुम लोग क्यों नहीं अपनी घटी

८ सहते। पनंतु तुम लोग आपही एेक तो अंधेन औान व्रनव्रसती
९ कनते हो औान दुसने भाइयों पन। कया तुम लोग नहीं
जानते की अधनमी इसन के नाज के अधीकानी न होंगे छल
न खाओ न व्रैभीयानी न देवपुजक न पन इसतीनी गामी न
१० जुमेहनेन पुनुष गामी। न चोन न लालची न मदयप न
११ नोंदीक न नीयानी इसन के नाज के अधीकानी होंगे। औान
कीतने तुमहों में एेसे थे पनंत पनभु यसु के नाम से औान हमाने
इसन के आतमा से सनान पाये औान पवीतन ऊए औान धनमी
१२ भी ठहने। समसत व्रसतें मेने लीये जोग हैं पनंतु सव व्रसतें
अछेस नहीं हैं यदपी सव व्रसतें मेने व्रस में हैं पन मैं कीसी के
१३ व्रस में न ऊंगा। भोजन पेट के लीये औान पेट भोजन के
लीये पनंतु इसन उसको औान उनको नसट कनेगा पनंतु देह
व्रैभीयान के लीये नहीं पनंतु पनभु के लीये औान पनभु देह
१४ के लीये। औान इसन ने पनभु को उठाया है औान हमों को
१५ भी अपनेही सामनथ से उठावेगा। कया तुम लोग नहीं जानते
की तुमहाने सनीन मसीह के अंग हैं सो कया मैं मसीह के
१६ अंगन को ले कन व्रेसया का अंग व्रनाउं। एेसा न होवे कया
तुम लोग नहीं जानते की जो कोइ व्रेसया से संजुकत है एेक
देह ऊआ कयोंकी कहा गया है की एेसे दोनों एेक देह होंगे।
१७ पनंतु वुह जो पनभु से मीला ऊआ है सो एेक पनान ऊआ है।
१८ व्रैभीयान से भागो जो पाप मनुष्य कनता है देह से व्राहन है
पनंतु वुह जो व्रैभीयान कनता है अपनेही सनीन के व्रीनुध
१९ पाप कनता है। कया तुम लोग इस से अगयान हो की
तुमहाना देह धनमातमा का मंदीन जो तुमहों में है जीसको
तुमहों ने इसन से पाया है औान तुम लोग अपने ही नहीं
२० हो। कयोंकी मोल लीये गये हो सो तुम लोग अपने
तन से औान अपने मन से जो इसन के हैं इसन की सतुत
कनो।

७ सातवां पनत्र।

१ अब्र उन ब्रसतुन के ब्रीष्पे में जो तुमहों ने मुझे लीष्पा है
२ भला य़ह है को पुनुष्प इसतीनी को न छुवे। तीस पन भी
ब्रैभीयान से ब्रयने को हन प्रेक पुनुष्प अपनी पतनी औान हन
३ प्रेक सीतनी अपना पती नष्पे। पती अपनी पतनी पन प्रेसा
सील नष्पे जैसा जोग है औान प्रेसाहो पतनी अपने पती पन भी।
४ पतनी का सनीन अपने ब्रस में नहीं पनंतु पती के इसी नीत से
५ पती का सनीन भी अपने ब्रस में नहीं पनंतु पतनी के। तुम
प्रेक दुसने से अलग न नहो पन थोड़े दीन के लीये आपुस की
पनसनता से जीसतें तुम लोग ब्रनत औान पनानथना कनने
के कानन अवकास पाओ औान फेन प्रेकठे होओ न हो की
सैतान तुमहाने इंदनीयन के अब्रस के कानन तुमहानी
६ पनीछा कने। पनंतु मैं छुटी की नीत पन य़ह कहता हुं अगय़ा
७ नहीं कनता। कय़ोंकी मैं याहता हुं की जैसा मैं हुं वैसा ही
सब्र होते पन सभों ने अपना अपना दान इसन से पाय़ा प्रेक ने
८ इस नीत से दुसने ने उस नीत से। सो मैं अनब्रीय़ाहे पुनुष्पों
औान ब्रीधवें से कहता हुं की भला है की वे प्रेसे नहें जैसा मैं
९ हुं। पनंतु जो सह न सकें तो ब्रीवाह कनें कय़ोंकी ब्रीवाह कनना
१० जलने से अती भला है। पनंतु मैं उनको जीनका ब्रीवाह हुआ
है अगय़ा कनता हुं मैं नहीं पनंतु पनभु की पतनी पती को न
११ छोड़े। औान जो छोड़े तो वुह अनब्रीय़ाही नहे अथवा पती से
१२ फेन मीलाप कने औान पती पतनी का तय़ाग न कने। सो जो
कुछ नह गय़ा है पनभु नहीं मैं कहता हुं की जो कीसी भाइ
की पतनी अब्रीसवासीनी होय़ औान उसके संग नहने पन
१३ पनसंन होय़ तो वुह उसे न छोड़े। औान जो कीसी इसतीनी का
पती अब्रीसवासी होय़ औान वुह उसके संग नहने को याहे तो
१४ वुह उसको न छोड़े। कय़ोंकी अब्रीसवासी पती पतनी के कानन

से पवीतन है औन अव्रीसवासनी पतनी पती के कानन से
पवीतन है नहीं तो तुमहाने संतान अपवीतन होते पनंतु अव्र
१५ पवीतन हैं। पन जो अव्रीसवासी आप को अलग कने तो कने
हमाने भाइ अथवा व्रहीन ऐसी व्रातों के व्रंघन में नहीं औन
१६ इसन ने हमों को मीलाप में व्रुलाया है। हे पतनी कया जाने
तु पती को व्रयावे अथवा हे पुनुष्प कया जाने तु पतनी को
१७ व्रयावे। पनंतु जैसा इसन ने हन ऐक को भाग्य दीया औन
जीस पनकान से पनभु ने हन ऐक को व्रुलाया वुह वैसाही
१८ नहे औन मैं सानी मंडलीयों में ऐसाही ठहनावता हुं। जो
कोइ प्यतनः कीया गया होकन व्रुलाया गया होय तो वुह
अप्यतनःन होवे जो कोइ अप्यतनःही मं व्रुलाया गया होय तो
१९ प्यतनः न कनवावे। प्यतनः कुछ नहीं औन अप्यतनः भी कुछ
२० नहीं पनंतु इसन की अगया पन यलना है। जो जीस उदम
२१ में व्रुलाया गया वुह उसी में नहे। जो तु दासता में व्रुलाया
गया होय तु यींता न कन पनंतु जो तु छुटकाना पासके तो
२२ पहीले गनहन कन। कयोंकी जीस दास को पनभु ने व्रुलाया
वुह इसन का नीनव्रंघ पुनुष्प है औन इसी नीत से जो नीनव्रंघ
२३ में व्रुलाया गया सो मसीह का दास है। तुम लोग दाम से
२४ मोल लीये गये हो सो मनुष्यों के दास न होओ। हे भाइयो
जो जीस दसा में व्रुलाया गया सो उसी दसा में इसन के संग
२५ नहे। पन कुंआनीयों के व्रीष्पे में पनभु की कोइ अगया मुझ
पास नहीं पनंतु जैसा मैं पनभु से दया पाके घनमी व्रना हुं
२६ वैसा ही संमत देता हुं। सो मैं समुझता हुं की व्रनतमान कसट
के लीये यह भला है की मनुष्प के लीये अतयंत अछा है की
२७ जैसा है वैसा नहे। जो तु पतनी के व्रंद में है तो छुटकना मत
२८ ढुंढ जो तु पतनी से छुटा है पतनी को मत ढुंढ। पनंतु जो तु
व्रीवाह कने तो पाप नहीं कनता औन जो कुंआनी व्रीयाही जावे
तो वुह पाप नहीं कनती तथापी ऐसे लोग सनीन में दुष्प पावेंगे

२९ पर मैं तुमसों पर क्षमा करता हुं। परंतु हे भाइयो मैं तुमसों
से यह कहता हुं की समय सकेत है इस कारन चाहीये की
३० जो पतनी रखत हैं ऐसे होवें जैसा की उनको नहीं हैं। और
रोदनकरनीहार ऐसे जैसा की नहीं रोते और आनंद करनी
हार ऐसे जैसा की आनंद नहीं करते और कीननीहार ऐसे
३१ जैसा को अधीकारी नहीं। और जगत के ब्रेवहारी ऐसे होवें
की उनका काम अधीकाइ को न पहुंचे कयोंकी जगत का
३२ ब्रेवहार बीता चलाजाता है। सो मैं चाहता हुं की तुम लोग
नीसचींत रहो वुह जो अनबीयाहा है परभु के बसतुन के लीये
३३ चींता करता है की वुह कयोंकर परभु को परसन करे। परंतु
वुह जो बीयाहा है सो जगत के लीये चींता करता है की वुह
३४ कयोंकर पतनी को परसन करे। पतनी और कुंआरी में भेद
है की अनबीयाही परभु के लीये चींता करती है की वुह देह
और आतमा में पवीतर होय परंतु वुह जो बीयाही है जगत
के लीये चींता करती है की कीस रीत से पती को परसन करे।
३५ पर मैं तुमहारेही लाभ के लीये यह कहता हुं तुमसों पर जाल
फेंकने को नहीं परंतु सोभा के लीये जीसतें तुम लोग परभु
३६ की सेवा पर सुचीत से सधीन रहो। परंतु जो कोइ समझे की
अपनी कुंआरी के बीषै में अजोग ब्रेवहार करता हुं जो वुह
तरुनाइ से बीतजाय और ऐसाही अवेस जाने तो जो चाहे
३७ सो करे वुह पाप नहीं करता बीवाह करे। पर जो कोइ
अवेस न समझ के अपने मन में दीढ़ रहे और अपनी ही इछा
पर सामरथ रखता हो और अपने मन में ठाने होय की मैं
३८ अपनी कुंआरी को रख छोड़ुंगा वुह भला करता है। सो वुह
जो बीयाह देता है भला करता है परतु जो बीयाह नहीं देता
३९ सो और भी भला करता है। पतनी ब्रेवसथा से बंधी है जबलों
उसका पती जीवता है परंतु जो उसका पती मर जाय तो वुह
४० छुट गइ जीस से चाहे बीवाह करे केवल परभु में। परंतु

जो वुह ऐसीही नहे तो वुह मेरे वीयाह में अती सुखी है और
मैं जानता हूं की ईसर का आतमा मुझ में है।

८ आठवां पत्र।

१ अब उन वसतुन के वीषै में जो मुरतीन को वलीदान
की जाती हैं हम जानते हैं की हम लोग गयान रखते हैं
२ गयान फुलावता है परंतु परेम सुधारता है। और जो कोई
जाने की मैं कुछ जानता हूं तो वुह अब लों जैसा चाहीये
३ की जाने नहीं जानता। परंतु जो कोई मनुष्य ईसर को
४ पीआर करे वुह उस से जाना गया है। सो उन वसतुन
के भोजन करने के वीषै में जो मुरतीन को बल की जाती
हैं हम जानते हैं की मुरत जगत में कुछ नहीं और कोई ईसर
५ नहीं परंतु एक। कयोंकी यदपी सरग में अथवा पीरथीवी
में वहुत से ईसर कहावते हैं जैसा की वहुतेरे ईसर और
६ वहुतेरे परभु हैं। तथापी हमारा एक ईसर है जो पीता है
जीस से समसत वसतें हुई हैं और हम उसके लीये हैं और
एक परभु यसु मसीह जीस से समसत वसतें हैं और हम उससे
७ हैं। परंतु सब में यह गयान नहीं कयोंकी कीतने मुरत पर
नीसचय करके मुरतीन पर की भेंट यह समझ के की मुरत की
है आज लों खाते हैं और उनके मन जो नीरवल हैं असुध
८ होते हैं। परंतु भोजन हमें ईसर के आगे नहीं सराहता
कयोंकी जो खावें तो हमें वढ़ती नहीं और जो न खावें तो
९ कुछ घटी नहीं। परंतु सैंयेत रहो न होवे की जो तुमहारे
लीये जोग है कहीं दुरवलों के लीये ठोकर खीलावने का
१० कारन होवे। कयोंकी जो कोई तुझ गयानी को मुरत के
मंदीर में वैठा हूआ देखे कया उसका मन जो दुरवल है
११ मुरतीन की भेंट खाने पर नीरभय न होगा। और तेरा वुह
नीरवल भाई जीसके लीये मसीह मुआ तेरे गयान से नसट

१२ होगा। परंतु जब तुम लोग भाइयों का यूं अपराध करते हो
और उनके नीरबल मन को घायल करते हो तो तुम मसीह
१३ का अपराध करते हो। इस लीये यदी भोजन मेरे भाइ
के ठोकर खाने का कारन होवे मैं तो कधी मांस न खाउंगा
न होवे की मैं अपने भाइ के ठोकर का कारन होउं।

९ नवां पत्र।

१ क्या मैं परेरीत नहीं और नीरबंध नहीं हूं क्या मैं ने
हमारे परभु यसु मसीह को नहीं देखा तुम लोग परभु में मेरे
२ कारज नहीं हो। यदपी मैं औरों का परेरीत नहीं तथापी
तुमहारा तो नीसंदेह हूं क्योंकी तुम सभों का परभु में होना
३ मेरे परेरीतत पर छाप है। जो मुझे परखते हैं उनके लीये
४ मेरा यह उतर है। क्या खाने पीने को हमारा बस नहीं।
५ क्या हमारे बस में नहीं की कीसी बहीन को पतनी करके
अपने संग लीये फीरें जैसा आन आन परेरीत और परभु के
६ भाइ और कापरा करते हैं। अथवा केवल मेरा और बरन-
७ बास का बस नहीं की परीसरम न करें। कौन अपनी उठान
करके जुध करता है कौन दाख की बारी लगावता है और
उसका फल नहीं खाता अथवा कौन झुंड को चरावता है जो
८ उस झुंड का कुछ दुध नहीं पीता। क्या मैं मनुष्य की नाइं
९ ये बातें बोलता हूं और बेवसथा भी यूं नहीं कहती। क्योंकी
मुसा की बेवसथा में लीखा है की तू बैल का जो दावता है
१० मुंह मत बांध क्या इसर को बैल की चींता है। अथवा
बीसेख करके वुह हमारे कारन कहता है हां नीसंदेह हमारे
कारन लीखा है की जोतनीहार आसा से जोते और वुह
११ जो आसा से दावता है अपनी आसा का भाग पावे। जो हम
ने तुमहारे लीये आतमीक बसतें बोइ हैं क्या बड़ी बात है
१२ की हम तुमहारी सरीरीक बसतें काटें। जो और लोगों का

सामनथ तुमहों पन होय्य ते। कीतना अघीक हमाना पनंतु
इस सामनथ को पनगट न कीय़ा पन सानी वातें सहते हैं न
१३ होवे की हम मसीह के मंगल समाय़ान के। नोकें। कय़ा तुम
लोग नहीं जानते की जो पवीतन वसतुन की सेवा कनते हैं
सो मंदीन में से प्वाते हैं औान जो वेदी के सेवक हैं सो वेदी
१४ में से भाग लेते हैं। औान पनभु ने भी यूं ठहनाय़ा है की
जो मंगल समाय़ान का उपदेस कनते हैं मंगल समाय़ान से
१५ उपजीवन पावें। पन मैं आप इन वसतुन में से कीसी को
वेवहान में न लाय़ा औान न इस इछा से लीप्वा की मेने लीय़े
यूं होय़ कय़ोंकी मुझे मनना अत भला है की कोइ मेनी
१६ वड़ाइ वय़नथ कने। कय़ोंकी जो मैं केवल मंगल समाय़ान
का उपदेस कनुं तो मेनी कुछ वड़ाइ नहीं कय़ोंकी मुझे अवेस
आन पड़ा है औान मुझ पन संताप है जो मैं मंगल समाय़ान
१७ का उपदेस न कनुं। जो मैं य़ह पसनता से कनुं तो फल
पाउंगा पनंतु जो अपनसनता से कनुं तो भी भंडानपन मुझे
१८ सैांपा गय़ा है। तो मेना फल कय़ा है नीसयय़ य़ह की जब
मैं मसीह के मंगल समाय़ान का उपदेस कनुं मैं मंगलसमाय़ान
को वीन दाम ठहनाउं की मैं अपने सामनथ को जो मंगल
१९ समाय़ान में है अननीत से न कनुं। कय़ोंकी सब से नीनवंघ
होके मैं ने अपने को सब का सेवक कीय़ा जीसतें मैं अघीक को
२० लाभ में पाउं। औान मैं य़हूदीय़ों में य़हूदी की नाइं हुआ
की मैं य़हूदीय़ों को पनापत कनुं उन में जो वेवसथा के वस में
थे जैसा वैवसथा के वस की मैं वेवसथा वसी लोगों को पनापत
२१ कनुं। औान वेवसथा हीनों में मैं वेवसथा हीन की नाइं हुआ
तथापी मैं इसन के समीप वेवसथा हीन नहीं हुआ पनंतु
मसीह के लीय़े वेवसथा के वस में था की मैं वेवसथा हीनों को
२२ पनापत कनुं। नीनवलों में नीनवल की नाइं हुआ जीसतें
मैं नीनवलों को पनापत कनुं मैं समसत मनुप्वन के कानन सब

२३ कुछ ब्रना की मैं कीसी पनकान से कीतनों को बयाउं। औन
मैं ग्रह मंगलसमाचान के कानन कनता ऊं जीसतें मैं उस में
२४ भागी हो जाउं। तुम लोग नहीं जानते की दौड़ानी में जो
दौड़ते हैं सब्र तो दौड़ते हैं पनंतु दांव ऐकही पाता है ऐसा
२५ दौड़ो की तुम लोग पनापत कनो। औन हन ऐक जो इस
में हीसका कनता है सब्र ब्रातों में मघम है वे तो नास मान
२६ मुकुट के लीग्रे कनते हैं पनंतु हम अब्रीनासी के लीग्रे। सो
मैं दौड़ता ऊं संदेह कननीहानों के समान नहीं मैं लड़ता ऊं
२७ न उसके समान जो पवन को मानता है। पनंतु मैं अपने
सनीन को पीसे डालता ऊं औन आधीन कनता ऊं न होवे की
औनों को उपदेस कनके मैं आप तग्रकत होउं।

१० दसवां पनब्र।

१ सो हे भाइग्रो मैं नहीं याहता की तुम लोग इस से अगग्रान
नहो की हमाने समसत पीतन मेघ के नीचे थे औन समुदन
२ में से होके सब्र नीकल गग्रे। औन सभों ने उस मेघ औन
३ समुदन से मुसाइ सनान पाग्रा। औन सभों ने ऐकही पनकान
४ का आतमीक भोजन प्याग्रा। औन सभों ने ऐकही पनकान
का आतमीक पान पीग्रा कग्रोंकी उनहों ने उस आतमीक
पहाड़ी से जो उनके पीछे पीछे यली गइ पीग्रा औन वुह पहाड़ी
५ मसीह था। तथापी उन में से इसन ब्रंऊतों से पनसन न था
६ इस लीग्रे वे ब्रन में माने पड़े। सो ग्रे ब्रातें हमाने येतावने
के लीग्रे थीं की हम ब्रुनाइ की लालसा न कनें जैसा उनहों ने
७ लालसा की। औन तुम लोग उन में से कीतनों के समान
देव पुजक मत होओ जैसा लीप्या है की लोग प्याने पीने ब्रैठे
८ औन लीला कनने उठे। औन हम ब्रैभीयान न कनें जैसा की
उनमें से कीतनों ने कीग्रा औन दीन भन में तेइस सहसन माने
९ पड़े। औन हम मसीह की पनीछा न कनें जैसा की उन में से

१० कीतनों ने भी की श्रीर सांपों से नसट ऊए। श्रीर मत कुड़-
कुड़ाश्रो जैसा उन में से कीतने कुड़कुड़ाये श्रीर नासक से
११ नसट ऊए। ये सब जो उन पर पड़े चेतावने के लीये ऊए
श्रीर ये हमारे सीष्पावने के लीये लीष्पे गये जीन पर पीछला
१२ समय श्रान पड़ा। सो जो कोइ श्रपने को दीनढ बुझता है
१३ सो सैांचेत नहे ऐसा न होवे की गीर पड़े। तुम लोग कीसी
रीत की परीछा में नहीं पड़े हो परंतु केवल वैसी जैसी मनुष्पन
से की जाती है श्रीर इस्वर धरमी है जो तुमहों को तुमहारे
वुता से श्रधीक परीछा में पड़ने न देगा परंतु परीछा के संग
नीकस नेका भी पंथ ठहरायेगा की तुम लोग सह सको।
१४ इस कारन हे मेरे पीरीय तुम लोग देव पुजा से भागो।
१५ मैं जैसे गयान वानों से बोलता ऊं जो की मैं कहता ऊं बीचान
१६ करो। कया श्रासीस का कटोरा जीसे हम श्रासीस देते हैं
मसीह के लोऊ का भागी होना नहीं रोटी जो हम तोड़ते हैं
१७ मसीह के श्रंग का भागी होना नहीं। कयोंकी हम बऊत
होके ऐक रोटी श्रीर ऐक देह हैं कयोंकी हम लोग ऐकही
१८ रोटी के भागी हैं। जो सरीर की रीत से इसराइल हैं उन
पर दीसीसट करो कया जो बलीदान से पाते हैं वे बेदी से
१९ भागी नहीं। सो मैं कया कऊं की मुरत श्रथवा मुरतीन का
२० बलीदान कछ बसतु है। परंतु श्रंनदेसी जो बलीदान करते
हैं देवों के कारन करते हैं इसर के लीये नहीं श्रीर मैं नहीं
२१ चाहता की तुम लोग देवों के संग भागी होश्रो। तुम लोग
परभु का श्रीर देवों का कटोरा नहीं पी सकते श्रीर परभु के
२२ श्रीर देवों के मंच से भागी नहीं हो सकते कया हम परभु
को डाह दीलावते हैं कया हम उस से श्रधीक बलवान हैं।
२३ सब बसतें मेरे लीये करतब हैं परंतु सब बसतें जोग नहीं सब
बसतें मेरे लीये करतब हैं परंतु समसत बसतें सुधारती
२४ नहीं। कोइ श्रपना सवारथ न ढुंढ़े परंतु हर ऐक दुसरे

२५ की मलाइ याहे। सो जो कुछ कसाइ की हाट में व़ीकता है
२६ उसे प्याश्रो श्रोन व़ीवेक के लीय़े कुछ पूछो मत। कय़ोंकी
२७ पीनथीवी श्रोन उसकी मन पुनी पनभु की है। श्रोन जो कोइ
श्रव़ीसवासीय़ों में से तुमहाना नेवता कने श्रोन जाने को तुम-
हाना मन होय़ तो जो कुछ तुमहाने श्रागे घना जाय़ उसे प्याश्रो
२८ श्रोन व़ीवेक के लीय़े कुछ पुछो मत। पनंतु जो कोइ तुमहें
कहे की य़ह मुनतीन को व़लीदान कीय़ा गय़ा है तो उसके
लीय़े जीसने कहा है श्रोन व़ीवेक के लीय़े न प्याश्रो कय़ोंकी
२९ पीनथीवी श्रोन उसकी भनपुनी पनभु की है। व़ीवेक मैं कहता
हुं तेनाही नहीं पनंतु दुसने का कय़ोंकी मेना नीनव़ंघ होना
३० कीस लीय़े दुसने के व़ीवेक से व़ीयान कीय़ा जाय़। कय़ोंकी
श्रनुगीनह से जो मैं भागी हुश्रा तो जीस व़सतु के लीय़े मैं
घंन मानता हुं उसके कानन कीस लीय़े मेनी नींदा होती है।
३१ इस लीय़े प्याश्रो श्रथवा पीश्रो श्रथवा जो कुछ कनो सव़ कुछ
३२ इसन के महातम के लीय़े कनो। न य़हुदीय़ों को न
य़ुनानीय़ों को न इसन की मंडली को ठोकन पीलाश्रो।
३३ जैसा की मैं सव़ व़ातों में सव़ को नीहावता हुं श्रोन श्रपना
लाभ नहीं ढुंढ़ता पनंतु व़हुतेनों का जीसतें वे उघान
पावें।

११ गय़ानहवां पनव़।

१ तुम लोग मेना पीछा कनो जैसा मैं भी मसीह का कनता हुं।
२ श्रोन हे भाइय़ो मैं तुमहानी व़ड़ाइ कनता हुं की तुम लोग
समसत व़ातों में मुझे समनन कनते हो श्रोन उन व़सतुन को
३ ऐसा घानन कनते हो जैसा मैं ने तुमहें सैांपा है। पनंतु मैं
याहता हुं की तुम लोग जानो की हन ऐक पुनुष्प का सीन
मसीह है श्रोन इसतीनी का सीन पुनुष्प है श्रोन मसीह का
४ सीन इसन। हन ऐक पुनुष्प जो पनानथना कनते श्रथवा

उपदेस कनते अपने सीन को ढांपता है अपने सोन का अपमान
५ कनता है। और वुह इसतीनी जो नंगे सीन पनानथना कनती
अथवा उपदेस कनती है अपने सीन का अपमान कनती है
६ कयोंकी वुह ऐसी है जैसा की वुह मुंड़ाइ गइ है। सो यदी
इसतीनी ओढ़नी न ओढ़े तो वुह मुंडाइ भी जाय और जो
इसतीनी का चोटी कटने से अथवा सीन मुंडाने से अपमान
७ होत है तो ओढ़नी ओढ़े। कयोंकी पुनुष्य को तो न चाहीये
की अपना सीन ढांपे कयोंकी वुह इसन की सुनत और उसकी
८ सोभा है पनंतु इसतीनी पुनुष्य की सोभा। कयोंकी पुनुष्य
९ इसतानी से नहीं पनंतु इसतीनी पुनुष्य से है। और पुनुष्य
इसतीनी के लीये नहीं सीनजा गया पनतु इसतीनी पुनुष्य
१० के लीये। सो दुतों के कानन इसतीनी को चहीये की अपने
११ सीन को वस में नखे। तीसपन भी पनभु में न पुनुष्य इसतीनी
१२ से अलग न इसतीनी पुनुष्य से अलग है। कयोंकी जैसा
इसतीनी पुनुष्य से है वैसाही पुनुष्य भी इसतनी से है पनतु
१३ सब कुछ इसन से है। तुम लोग आपही वीचान कनो कया
उचीत है की इसतनी वीना ओढ़नी ओढ़के इसन की पनानथना
१४ कने। कया पनकीनत तुम लोगों को नहीं सीखावती की जो
१५ पुनुष्य लंवा वाल नखे तो उसके लीये लजा है। पनंत जो
इसतीनी का लंवा वाल होय वुह उसकी सोभा है कयोंकी
१६ उसका वाल ढापने के कानन उसे दीया गया है। पनंतु यदी
कोइ हुगड़ालु दीखाइ देवे तो जान नखे की न हमाना न इसन
१७ की मंडलीयों का कोइ ऐसा वेवहान है। और मैं तुमहें ये
कहता हूं और तुमहनी वड़ाइ नहीं कनता की तुम लोग एकठे
होके आते हो कुछ उस में तुमहानी भलाइ नहीं पनंतु अधीक
१८ वुनाइ है। कयोंकी मैं सुनता हूं की पहीले जब तुम लोग
मंडली में एकठे होके आते हो तो तुमहों में वीभाग होते हैं
१९ और मैं उसे कुछ वीसवास कनता हूं। कयोंकी अवेस है की

तुमहों में व़ीगाड़ भी होवे की वे जो गनहन कीय़े गय़े हैं पनगट
२० हो जाय़ं। इस लीय़े जव़ तुम लोग प्रेक ही सथान में प्रेकठे होके
आते हो य़ह तो पनभु की व़ीय़ानी खाने के लीय़े नहीं है।
२१ कय़ोंकी हन प्रेक जन पहीले अपनी व़ीय़ानी प्पा लेता है औन
२२ प्रेक भुप्पा औन दुसना मतवाला होता है। कय़ा तुम लोग
प्पाने पीने के लीय़े घन नहीं नप्पते अथवा इसन की मंडली की
अवगय़ा कनते हो औन कंगालों को लजीत कनते हो अव़ मैं
तुमहों से कय़ा कहूं कय़ा मैं तुमहानी व़ड़ाइ कनुं मैं इस व़ात
२३ में तुमहानी व़ड़ाइ नहीं कनने का। कय़ोंकी मैं ने पनभु से
पाय़ा औन तुमहें भी सैांपा की पनभु य़सु ने जीस नात को
२४ पकड़वाय़ा गय़ा नोटी ली। औन धंनमान के तोड़ी औन
कहा की लेओ प्पाओ य़ह मेना देह है जो तमहाने लीय़े तोड़ा
२५ जाता है तुम लोग मेने समनन के लीय़े य़ह कीय़ा कनो। औन
उसी नीत से उसने व़ीय़ानी के पीछे कटोना भी लीय़ा औन
कहा की य़ह कटोना मेने लोहु में नय़ा नीय़म है जव़ जव़ तुम
२६ लोग पीओ मेने समनन के लीय़े य़ों कनो। कय़ोंकी जव़ जव़
तुम लोग य़ह नोटी प्पाओ औन य़ह कटोना पीओ तव़ तव़
पनभु के मीनतु को पनगट कनते हो जव़ लों वुह न आ ले।
२७ इस कानन जो कोइ अनुचीत नीत से य़ह नोटी प्पावे अथवा
पनभु का कटोना पीवे वुह पनभु के देह औन लोहु का अपनाधी
२८ होगा। सो मनुप्प पहीले अपने को जांचे औन इसी नीत से
२९ नोटी प्पावे औन कटोना पीवे। कय़ोंकी जो अनुचीत नीत से
प्पाता औन पीता है सो पनभु के देह का सोच न कनके अपना
३० दंड प्पाता औन पीता है। इसी कानन से तुमहों में वहुतेने
३१ नीनव़ल औन नोगी हैं औन कीतने सो गय़े हैं। कय़ोंकी जो
हम लोग अपने को व़ीचानते तो हमाना व़ीचान न कीय़ा
३२ जाता। पनंतु जव़ हम लोगों का व़ीचान कीय़ा जाता है तव़
पनभु से ताड़ना पावते हैं जीसतें जगत के संग हम पन दंड की

३३ अगया न की जाय। सो हे मेने भाइयो जव तुम लोग प्याने
३४ को ऐकठे आओ तो ऐक दुसने के लीये ठहनो। औान जो कीसी
को भुष्प लगे तो वुह अपने घन में प्यावे जीसतें तुम लोग दंड
पावने को ऐकठे न आओ औान जो जो वातें नह गइं हैं मैं
आके सुघानुंगा।

१२ वानहवां पनव।

१ हे भाइयो मैं नहीं याहता की तुम लोग आतमीक दान के
२ वीष्पै में अगयान नहो। तुम लोग जानते हो की तुम सव
अंनदेसी थे औान गुंगी मुनतन के पीछे जैसे यलाये गये वैसे
३ यलते थे। सो मैं तुमहें जनावता ऊं की कोइ इसन के आतमा
के औान से कहते ऊऐ यसु को सनापीत नहीं कहता औान वौना
घनमातमा के औान से कोइ यसु को पनभु नहीं कह सकता।
४ अव नाना पनकान के दान हैं पनंतु आतमा ऐकही।
५ औान सेवकाइ के अनेक पनकान हैं पनंतु पनभु ऐकही।
६ औान नाना पनकान की कीनया हैं पनंतु इसन ऐकही जो सव
७ में सव कुछ कनता है। पनंतु आतमा का पनकास हन ऐक
८ के लाभ के लीये दीया जाता है। कयोंकी ऐक को आतमा
से गयान की वात दी गइ है औान दुसने को उसी आतमा से
९ वीदया की वात। औान को वीसवास दुसने को यंगा कनने
१० का सामनथ। औान को आसयनज कनम दुसने को आगम
कहना औान को आतमा का पहीयानना दुसने को भांत भांत
११ की भाष्पा औान को भाष्पाओं का अनथ कनना। पनंतु वुह
ऐकही आतमा इन सभों का कनता है जैसा याहता है हन
१२ ऐक को वांटा कनता है। कयोंकी जैसे देह ऐक होके अंग
वऊत नष्पता है औान उसी देह में इतने अंग मील के ऐक देह
१३ हैं मसीह भी ऐसा है। कयोंकी हमों ने कया यऊदी कया
युनानी कया दास कया मीनवंघ ऐकही आतमा से ऐक देह

१४ में सनान पाय्रा श्रोन प्रेक आतमा में हम सव पीलाय्रे गय्रे।
१५ देह प्रेक अंग नहीं पनंतु व्रऊत हैं। य़दी पांव कहे की मैं
१६ हाथ नहीं तो कय़ा वुह इस कानन से देह का नहीं। श्रोन
य़दी कान कहे की मैं आंप्प नहीं इस कानन मैं देह का नहीं
१७ तो कय्रा वुह देह का नहीं है। जो सानी देह आंप्प होता
तो सनवन कहां होता श्रोन य़दी समसत देह सनवन होता
१८ तो सुंघना कहां होता। पनंतु अव्र इसन ने हन प्रेक अंग को
१९ देह में अपनी इछा के समान नप्पा। पन जो सव्र प्रेकही
२० अंग होते तो देह कहां होता। पनंतु अव्र व्रऊत से अंग हैं
२१ तथापी देह प्रेकही है। श्रोन आंप्प हाथ से नहीं कह सकती
की मैं तेना पनय़ोजन नहीं नप्पती श्रोन सीन भी पांव को
नहीं कह सकता की मैं तुमहाना पनय़ोजन नहीं नप्पता।
२२ पनंतु देह में वे अंग जो दुनव्रल समझ पड़ते हैं सव्र से अघीक
२३ अवेस हैं। श्रोन हम जीन अंगों को श्रोनों के तुल अपनतीस-
ठीत जानते हैं उनहीं को अघीक पनतीसठा देते हैं श्रोन
२४ हमाने व्रेडैाल अघीक सुडैाल हो जाते हैं। पनंतु हमाने
सुडैाल अंगों को पनय़ोजन नहीं पन इसन ने हीन अंगों को
२५ व्रऊत अघीक पनतीसठा देके देह को मीलाय़ा। की व्रीभाग
देह में न होवे पनंतु की समसत अंग प्रेक दुसन के लीय़े समान
२६ चींता कने। श्रोन जो प्रेक अंग पीड़ा पावे तो समसत अंग
उसके संग पीड़ा पावते हैं अथवा जो प्रेक अंग पनतीसठा पावे
२७ तो समसत अंग उसके संग आनंद कनते हैं। सो तुम लोग
२८ मसीह के देह हो श्रोन भींन भींन अंग हो। श्रोन मंडली
में इसन ने कीतनों को ठहनाय़ा पहीले पनेनीतों को श्रोन
दुसने आगमगय़ानीय़ों को श्रोन तीसने उपदेसकों को उसके
पीछे आसय्रनज कनम तव्र चंगा कनने के सामनथ फेन उपकान
२९ श्रोन पनघानता श्रोन नाना पनकान की भाप्पा दीं। कय़ा सकल
पनेनीत हैं सकल आगमगय्रानी हैं सकल उपदेसक हैं सकल

१० आसयरज करम करनीहार हैं। कया सव को चंगा करने
का सामरथ है कया सव कोइ भांत भांत की भाष्या वोलते
११ हैं कया सव अरथ करते हैं। अछे अछे दानों की लालसा
करो मैं एक मारग जो उनहों से कीतना अछा है तुमहें
वतावता हूं।

१३ तेरहवां परव।

१ जो मैं मनुष्य अथवा दुतों को भाष्या वोलुं परंतु परेम न
२ रषुं तो मैं हुहुंनाता पीतल अथवा ठंठनाता झांझ हूं। और
जो मैं आगम का वात कह सकुं और गुपत की सारी वातें
और सारी वीदया को जानुं और मेरा वीसवास पुरा होय
इहां लों की मैं पहाड़ों को चलाउं परंतु परेम न रषुं तो मैं
३ कुछ नहीं हूं। और जो मैं अपनी समसत संपत भीष्य में दे
डालुं अथवा जो मैं अपना देह देउं की जलाया जाय परंतु
४ परेम न रषुं तो मुझ कुछ लाभ नहीं। परेम संतोष्य करता
है दयाल है परेम डाह नहीं करता परेम अपनी गालफटाकी
५ नहीं करता अभीमानी नहीं। कुचाल नहीं चलता अपना
सवारथ नहीं ढुंढता जलजलाहट नहीं वुरी चींता नहीं
६ करता। कुकरम से परसंन नहीं परंतु सचाइ से परसंन है।
७ सव वातों को ढांपता है सव कुछ परतीत करता है समसत
८ वसतुन की आसा रषता है सव का संतोष्य करता है। परेम
कभी अलग नहीं होता परंतु जो आगम की वातें हैं तो नास
हो जायेंगी जो भाष्या है तो वंद हो जायेगी जो वीदया है तो
९ लोप हो जायगी। कहांकी हमारा गयान अलप है और
१० हमारा आगम कहना अलप है। परंतु जव वुह जो संपुरन
११ है आवेगा तो वुह जो अलप है नसट हो जायगा। जव मैं
वालक था तव मेरी वोली वालक की नाइं थी और मेरा
सभाव वालक की नाइं था और मेरी समझ वालक की नाइं

थी परंतु जब मैं तरुन ज़आ तब मैं ने बालक पन से हाथ
१२ उठाया। अब हम लोग दर्पन में धुंधला सा देख्ते हैं परंतु
उस समय आमने सामने देखेंगे अब मेरी बोदया अलप है
१३ परंतु तब मैं ऐसा जानुंगा जैसा की मैं भी जान गया ज़ं। सो
अब ये तीन धर्मी हैं बीसवास और आसा और प्रेम परंतु इन
में प्रेम सब से बड़ा है।

१४ चौदहवां पत्र।

१ प्रेम का पीछा करो और आतमीक दान की लालसा रख्खो
२ नीज करके आगम कहने की। कयोंकी जो कोइ भाष्पा बोलता
है सो मनुष्पन से नहीं परंतु इसर से बोलता है कयोंकी कोइ
नहीं समझता यदपी वुह आतमा में गुपत भेद बोलता है।
३ और जो कोइ आगम की बातें कहता है सो बातों से मनुष्पन
४ को सुधारता और बोध करता और संतोष्प देता है। और
जो कोइ कीसी भाष्पा में बारता करता है सो अपने को सुधारता
है परंतु जो कोइ आगम की बातें कहता है मंडली को सुधारता
५ है। मैं चाहता ज़ं की तुम लोग सब के सब बोलीयां बोलो
परंतु नीज करके की आगम की बातें कहो कयोंकी जो बोलीयां
बोलता है यदी वुह मंडली के सुधारने के लीये अरथ न करे
६ तो वुह जो आगम की बातें कहता है उस से बड़ा है। अब
हे भाइयो जो मैं तुमहारे पास बोलयां बोलते ज़ए आवता
और तुमहों से खोल के अथवा समझा के अथवा आगम की
बातें कहके अथवा उपदेस से न बोलता तो मुझ से तुमहें
७ कया लाभ होता। सो ऐसी नीरजीव बसतें जीन से सबद
नीकलते हैं जैसे तुरही अथवा बीन जो उनके सबद बेवरा के
संग न होवें तो कयोंकर जाना जायगा की कया फुंका अथवा
८ कया बजाया जाता है। और जो नरसींघा अनरथ सबद करे
९ तो युध के लीये कौन लैस होगा। सो वैसहीं जो तुम लोग

भी जीभा से जैसे व्रयन जो सहज से समझे जाएँ उयारन
न करो तो कयोंकर जाना जाएगा की कया कहा गया कयोंकी
१० तुम लोग व्रयार से व्रातता करोगे। जगत में नाना परकार
११ की भाषा हैं और कोइ उन में से अरथ हीन नहीं। तथापी
जो वुह भाषा मुझे न आती हो तो व्रकता के आगे मैं मुढ़
१२ रहुंगा और व्रकता मेरे आगे मुढ़। सो तुम लोग भी जैसा की
आतमीक दान के अभीलासी हो तो मंडली के सुधारने के
१३ लीये ढुंढ़ो की तुमहें अधीक व्रढ़ती होय। इस कारन जो
जीस भाषा में व्रोलता है सो परारथना करे की अरथ भी
१४ कर सके। कयोंकी जो मैं कीसी अनजान भाषा में परारथना
करुं तो मेरा आतमा परारथना करता है परंतु मेरी व्रुध
१५ नीसफल है। सो कया है आतमा से परारथना करुंगा और
व्रुध से भी परारथना करुंगा और आतमा से भजन गाउंगा
१६ और व्रुध से भी गाउंगा। और जो तु आतमा से आसीस
कहे तो वुह जो अलप पद रखता है तेरे धंनव्राद में आमीन
कीस रीत से कहेगा कयोंकी जो कुछ तु कहता है वुह नहीं
१७ समझता। कयोंकी तु अछी रीत से धंन कहता है ठीक परंतु
१८ दुसरा नहीं सुधारा जाता। मैं अपने इसर का धंन मानता
१९ हुं की मैं तुम सभों से अधीक भाषा व्रोलता हुं। परंतु मैं
मंडली में पांच व्रातें अपनी व्रुध से व्रोलने को अधीक चाहता
हुं जीसतें औरों को सीखाउं की दस सहस्र व्रातें कीसी
२० अनजान भाषा में व्रोलुं। हे भाइयो व्रुध में व्रालक न व्रनो
२१ परंतु व्रुराइ में व्रालक व्रनो पर व्रुध में तरुन होओ। व्रैवसथा
में लीखा है की मैं आन व्रोली और आन होठों से इन लोगों
से व्रोलुंगा तथापी परभु कहता है की वे मेरा न सुनेंगे।
२२ सो व्रोलीयां व्रीसवासीयों के लीये नहीं परंतु अव्रीसवासीयों के
लीये चीनह हैं परंतु आगम कहना अव्रीसवासीयों के लीये
२३ नहीं परंतु व्रीसवासीयों के लीये है। सो जो समसत मंडली

प्रेकठे होके प्रेक सथान में आवें ग्रोन सव़ के सव़ भाप्पा व़ोलें
ग्रोन अपढ़ा अथवा अव़ीसवासी उन में आवें तो कय़ा वे न
२४ कहेंगे की तुम लोग व़ोड़हे हो। पनंतु जो सव़ उपदेस कनें
ग्रोन कोइ अव़ीसवासी अथवा अपढ़ा भीतन आ जाय़ तो वुह
हन प्रेक से पनव़ोघ कीय़ा जाय़गा ग्रोन वुह हन प्रेक से व़ीयान
२५ कीय़ा जाय़गा। ग्रोन य़ुं उसके मन के भेद पनगट होंगे तव़
वुह ग्रोंघा गीन के इसन को दंडवत कनेगा ग्रोन कहेगा की
२६ इसन सय मुय तुमहाने मघ में है। सो हे भाइय़ो कय़ा है
की जव़ तुम लोग प्रेकठा आवते हो हन प्रेक तुमहां में भजन
अथवा कोइ उपदेस अथवा कोइ भाप्पा अथवा पनकासीत अथवा
कोइ अनथ नप्पता है सो याहीय़े की हनप्रेक व़सतु सुघानने
२७ के लीय़े होवे। जो कोइ कीसी भाप्पा में व़ोले तो दो ग्रोन
अतय़ंत तीन प्रेक प्रेक कनके व़ोले ग्रोन प्रेक जन अनथ कने।
२८ पन य़दी कोइ अनथ कननीहान न होवे तो वुह मंडली में
२९ युपका नहे ग्रोन अपने इसन के संग व़ोले। सो दो अथवा
३० तीन आगमगय़ानी व़ोलें ग्रोन ग्रोन लोग व़ीयान कनें। पनंतु
य़दी दुसने पन जो व़ैठा है कुछ प्पुल जावे तो पहीला युपका
३१ नहे। कय़ोंकी तुम सव़के सव़ प्रेक प्रेक कनके आगम की व़ात
३२ कह सको की सव़ सीप्पें ग्रोन सव़ सांत पावें। कय़ोंकी आगम
३३ गय़ानीय़ों के आतमा आगमगय़ानीय़ों के व़स में हैं। इसन
गड़ व़ड़ से पनसंन नहीं पनंतु मीलाप से पनसंन है जैसा की
३४ संतन की समसत मंडलीय़ों में है। तुमहानी इसतीनी लोग
मंडली में युप याप नहें कय़ोंकी उनहें व़ोलने की अगय़ा नहीं
३५ पनंतु आघीन नहने की अगय़ा की गइ है। ग्रोन जो वे सीप्पा
याहें तो घन में अपने पती से पुछें कय़ोंकी लाज है की इसतीनी
३६ मंडली में व़ोलें। कय़ा इसन की व़ात तुमहों में से नीकली
३७ अथवा केवल तुमहीं लों पहुंयी। जो कोइ अपने को आगम
गय़ानी अथवा आतमीक जाने तो वुह उन व़सतुन को जो मैं

३८ तुमहें सीप्पता ऊं मान लेवे की पनभु की अगय़ा हैं। पनंतु
३९ जो कोइ अगय़ान होय़ तो होने दे। सो हे भाइय़ो आगम
की वात कहने की लालसा नप्पो पनंतु भाप्पा वोलने से मत
४० वनजो। औान सानी वातें सुडैाल औान वींच से होवें।

१५ पंद्नहवां पनव।

१ अव हे भाइय़ो मैं तुमहें उस मंगल समाचान को जनावता
ऊं जो मैं ने तमहें उपदेस कीय़ा था तुमहों ने पाय़ा भी औान
२ जीन में ठहने हो। जीन से तुम लोग वच भी गय़े हो य़दी
तम लोग मेने कीय़े ऊए उपदेस को समनन कनो जो तुमहाना
३ वीसवास लावना वय़नथ न होवे। कय़ोंकी मैं ने तुमहें पहीले
सोंपा जो मैं ने भी पाय़ा की मसीह लीप्पे ऊए के समान हमाने
४ पापों के लीय़े सुआ। औान की गाडा गय़ा औान की तीसने
५ दीन लीप्पे ऊए के समान जी उठा। औान की काफा से फेन
६ उन वानहों से देप्पा गय़ा। उसके पीछे जो पांच सैा भाइ से
अधीक थे एक साथ उनसे देप्पा गय़ा जीन में अधीक भाग
७ अव लों हैं पनंतु कइ एक सो गय़े। फेन वुह य़ाकुव से देप्पा
८ गय़ा फेन समसत पनेनीतों से। औान सवके सव पीछे मुझ से
९ भी देप्पा गय़ा जो असमय़ में उतपंन ऊथा। कय़ोंकी मैं
समसत पनेनीतों में अतय़ंत छोटा ऊं औान जोग नहीं ऊं की
पनेनीत कहाउं इस कानन की मैं ने इसन की मंडली को संताय़ा।
१० पनंतु इसन के अनुगीनह से ऊं जो ऊं औान उसका अनुगीनह
जो मुझ पन ऊआ सो अकानथ न ऊआ पनंतु मैं ने उन सभों
से अधीक पनीसनम कीय़ा तथापी मैं ने नहीं पनंतु इसन के
११ अनुगीनह ने जो मेने संग था। सो कय़ा मैं कय़ा वे ऐसा उपदेस
१२ कनते हैं औान तुम लोग वैसाही वीसवास लाय़े हो। पनंतु
जो उपदेस कीय़ा गय़ा है की मसीह मीनतकन में से जी उठा तो
तुमहों में कीतने कय़ो कहते हैं की मीनतकन का पुननुतथान

१३ नहीं है। कयोंकी जो मीनतकन का पुननुतथान नहीं है
१४ तो मसीह भी फेन नहीं उठा। औन जो मसीह नहीं उठा
तो हमाना उपदेस व्यनथ है औन तुमहाना वीसवास भी
१५ व्यनथ। हां हम इसन के झूठे साख्यी ठहने कयोंकी हम ने
इसन के वीखे साख्यी दी है की उसने मसीह को उठाया है जो
१६ मीनतक नहीं उठते तो उसने उस को भी नहीं उठाया। कयों-
की जो मीनतक नहीं उठते तो मसी भी नहीं उठाया गया।
१७ औन जो मसीह न उठाया गया तो तुमहाना वीसवास मीथ्या
१८ औन तुम लोग अव् लों अपने पाप में पड़े हो। तव् वे भी जो
१९ मसीह में होके सो गये हैं नसट हुये। जो हम लोग केवल इसी
जगत में मसीह से आसा नख्यं तो समसत मनुख्यन से अधीक
२० हमाना दुनभाग है। पनंतु अव् मसीह तो मीनतकन में से
२१ उठा है औन उन में जो सो गये हैं पहीला फल हुआ। कयोंकी
जव् मनुख्य से मीनतु है तो मनुख्य ही से मीनतकन का पुननुतथान
२२ भी है। कयोंकी जैसा आदम में सव् कोइ मनते हैं वैसाही
२३ मसीह में सव् कोइ जीलाये जायेंगे। पनंतु हन ऐक अपनी
अपनी दसा में पहीला फल मसीह फेन वे जो मसीह के हैं
२४ उसके आये पन। तव् अंत होगा जव् वुह नाज इसन को जो
पीता है सौंप देगा जव् सानी पनभुता औन समसत पनाकनम
२५ औन सामनथ को नास कनेगा। कयोंकी जव् लों वुह समसत
सतनुन को अपने पांव के तले न कने अवेस है की वुह नाज
२६ कने। मीनतु भी जो पीछला सतनु है नसट होगा।
२७ कयोंकी उसने समसत वसतें उसके पांव तले कीयां औन जव् वुह
कहता है की समसत वसतें उसके वस में हुइं तो पनगट है
की ऐक वही नहगया जीसने सव् कुछ उसके वस में कन दीया।
२८ औन जव् सव् कुछ उसके वस में कीया जायगा तव् पुतन आप
उसके जीसने समसत वसतें उसके वस में कीयां वस में होगा
२९ की इसन सव् में सव् होवे। नहीं तो वे जो मीनतकन को

संतो सनान पावते हैं कया करेंगे जो मीनतक न उठे तो कयों
३० मीनतकन की संतो सनान पावते हैं। औन फेन हम सब
३१ कयों हन घड़ी जोखिम में हैं। मुहे अपनी उस वड़ाइ की
सें जो हमाने पनभु मसीह यसु में है मैं पनती दीन मनता
३२ ऊं। जो मनुष्यन की नाइं मैं अफसस में व्रनैले पसुन के संग
लड़ा तो मुझे कया फल है जो मीनतक न उठें आओ खावें
३३ पीवें की कलके दीन मनेंगे। छल न खाओ वुनी संगत अच्छे
३४ सभाव को व्रीगाड़ती है। घनम के लीये जागो औन पाप न
कनो कयोंकी कीतनों में इसन का गयान नहीं मैं यह तुमानी
३५ लज्जा के लीये कहता ऊं। पनंतु कोइ कहे की मीनतक कीस
३६ नीत से उठते हैं औन कीस देह से आवते हैं। हे व्रेसमुह
जो तु व्रोता है यदी वुह न मने तो कभी जीलाइ न जायगी।
३७ औन जो कुछ तु व्रोता है वुह देह नहीं व्रोता जो होयेगा
पनंतु नीना एक व्रीज है याहे गोऊं अथवा औन कुछ होवे।
३८ पनंतु इसन अपनी इछा के समान उसको एक देह देता है
३९ औन हन एक व्रीज को अपना नीज देह। समसत सनीन
एकही नीत का नहीं है पनंतु मनुष्यन का सनीन भींन है पसुन
४० का भींन मछलीयों का भींन है पंछीयों का भींन। सनगीय
के भी सनीन हैं औन पानथीव के भी हैं पनंतु सनगीय का तेज
४१ औन है औन पानथीव का तेज औन। सुनज का तेज औन
है यंदनमा का तेज औन तानों का तेज औन है कयोंकी तानों
४२ के तेज भींन भींन हैं। सो मीनतकन का पुननुतथान ऐसाही
है वुह सड़ाहट में व्रोया जाता है औन असड़ाहट में उठाया
४३ जाता है। अनादनता में व्रोया जाता है औन ऐसनय में
उठाया जाता है नीनवलता में व्रोया जाता है पनाकनम में
४४ उठाया जाता है। जंतु का देह व्रोया जाता है औन आतमीक
देह उठाता जाता है एक जंतु का देह है औन एक आतमीक
४५ देह। औन यु लीख्या है की पहीला पुनुष्य आदम जीवता

४६ पनानो ऊआ और पीछला आदम जीव दाता आतमा। तथापी
आतमीक पहीले न था पनंतु वुह जो जंतु का है और उसके
४७ पीछे आतमीक। पहीला मनुप्य पीनथीवी से पानथीव ऊआ
४८ दुसना मनप्य सनग से पनभु है। जैसे पानथीव वैसे वे भी जो
पानथीव हैं और जैसा सनगीय़ वैसे वे भी जो सनगीय़ हैं।
४९ और जैसा की हमों ने पानथीव का सनुप पाय़ा है सनगीय़ का
५० भी सनुप पावेंगे। हे भाइओ मैं य़ह कहता ऊं की देह और
नुधीन इसन के नाज के अधीकानी नहीं हो सकते और न
५१ सड़ाहट असड़ाहट का अधीकानी हो सकता है। देष्पो मैं
तुमहें गुपत की एक व्रात कहता ऊं की हम सव्र के सव्र न सोवेंगे
५२ पनंतु सव्र के सव्र व्रदले जाय़ेंगे। एक पल में एक पलक
में पीछला सुन फुंकते ऊए सुन फुंका जाय़गा और मीनतक
असड़नीहान उठाय़े जाय़ेंगे और हम लोग व्रदले जाय़ेंगे।
५३ कय़ोंकी याहीय़े की य़ह सड़नीहान असड़ाहट को पहीन ले
५४ और य़ह मननीहान अमीनत को पहीन ले। सो जव्र य़ह
सड़नीहान असड़नीहान को और य़ह मननीहान अमीनत को
पहीन युकेगा तव्र वुह व्रात जो लीष्पी है पुनी होगी की जै ने
५५ मीनतु को नींगल लीय़ा। हे मीनतु तेना डंक कहां है और हे
५६ समाध तेना जै कहां नहा। मीनतु का डंक पाप है और
५७ पाप का व्रल व्रैवसथा है। पनंतु घंन इसन को जो हमें हमाने
५८ पनभु य़सु मसीह के कानन से जै देता है। सो हे मेने पय़ाने
भाइय़ो तुम लोग सथीन और अयल होओ और इसन के
कानज में सदा लवलीन नहो कय़ोंकी तुम जानते हो की
तुमहाना पनीसनम पनभु में अकानथ नहीं है।

१६ सोलहवां पनव्।

१ अव्र व्रेहनी के कानन जो संतन के लीय़े है जैसा मैं ने
गलतीय़ः की मंडलीय़ों को अगय़ा की है वैसाही तुमलोग कनो।

२ हर अठवारे के पहीले दीन तुमहों में हर एक अपने परापत
के समान एकठा करके अपने पास रष्प छोड़े की जव मैं आउं
३ तो वेहरी में अवेर न होवे। और मैं आके उनहीं के और से
जीन के। तुम लोग अपनी पतरी से ठहराओगे तुमहारे दान
४ यरोसलीम में पहुंचावने को भेजुंगा। और जो मेरा भी
५ जाना उचीत होय़ तो वे मेरे संग जायेंगे। कयोंकी मैं
मकदुनीय़ः में होके नीकलुंगा कयोंकी मैं मकदुनीय़ः में होके
६ जाउंगा तव मैं तुमहारे पास आउंगा। कया जानें मैं तुमहारे
पास कुछ दीन ठहरुं हां जाड़ा भी काटुं की तुम लोग मुझे
७ आगे को वीदा करो जीधर मैं जाने चाहुं। कयोंकी मैं
अवकी जाते हुए तुमहों को न देष्युंगा परंतु जो ईसर चाहे
८ तो आसा रष्पता हुं की कुछ दीन तुमहारे संग रहुं। और मैं
९ पयासवें के परव लों अफसस में रहुंगा। कयोंकी एक वड़ा
दुवार जो गुनकारी है मेरे लीये ष्पुला है और वैरी वहुत से
१० हैं। और जो तीमताउस आवे तो देष्पो की वुह तुमहारे
पास नीरभय़ से रहे कयोंकी वुह मेरे समान परभु का कारज
११ करता है। कोई उसकी अवगय़ा न करे परंतु उसको कुसल
से ईधर के। वीदा कीजीयो की मेरे पास आवे कयोंकी मैं उसकी
१२ वाट जोहता हुं की भाईयों के संग आवे। रहा भाई अपलुस
सो मैं ने उसकी वहुत वीनती की, की तुमहारे पास भाईयों
के संग जाय़ तथापी उसकी ईछा तनीक न थी की अवकी जाय़
१३ परंतु जो अवकास होगा तो वुह आ नीकलेगा। जागते रहो
१४ वीसवास में सथीर रहो पुरुष्पारथ करो वलवान होओ। और
१५ तुमहारे समसत कारज परेम के संग होयें। अव हे भाईयो
तुम लोग तो ईसतीफानस के घराने को जानते हो की वुह
अष्पाईय़ः का पहीला फल है और वे सव संतन की सेवा करने
१६ को सीध रहे हैं। मैं तुमहारी वीनती करता हुं की तुमलोग
एसों के और हर एक के जो कारज करनोहार है आधीन

१७ होओ। और मैं इसतीफानास फरनतुनातुस और अख्यायकस
के आवने से आनंद ऊं कय़ोंकी उनहों ने तुमहारी घटती को
१८ भर दीय़ा। कय़ोंकी उनहों ने मेरे और तुमहारे आतमा
१९ को संतुसट कीय़ा इस लीय़े तुम लोग ऐसों को मानो। और
आसीय़ा की समसत मंडली तुमहें नमसकार कहती हैं अकला
और परसकला उस मंडली समेत जो उनके घर में हैं तुमहें
२० परभु में बज्ञत बज्ञत नमसकार कहते हैं। समसत भाइ
तुमहें नमसकार कहते हैं सो तुम लोग पवीतर चुमा से आपुस
२१ में नमसकार करो। अय़ पुलुस का नमसकार अपनेही
२२ हाथ से। जो कोइ जन परभु य़सु मसीह पर परेम न रक्खे
२३ वुह सरापीत होवे परभु आता है। परभु य़सु मसीह का
२४ अनुगीरह तुमहों पर होवे। मेरा परेम तुमहारे संग य़सु
मसीह में होवे आमीन।

पुलुस की दुसनी पतनी कनंतीग्रों को

---

१ पहीला पनब्र।

१ पुलुस के जो इसन की इछा से ग्रसु मसीह का पनेनीत है
ग्रोन भाइ तीमताउस के ग्रोन से इसन की मंडली को जो
कनोंतस में है ग्रोन समसत संतन को जो समसत ग्रप्पाग्र: में
२ हैं। ग्रनुगीनह ग्रोन सांत हमाने पीता इसन ग्रोन पनभु
३ ग्रसु मसीह के ग्रोन से होवे। घंन इसन ग्रोन हमाने पनभु
ग्रसु मसीह के पीता को जो दग्रा का पीता ग्रोन समसत सांत
४ का इसन है। वुह हमाने समसत कलेस में हमें घीनज देता
है की हम उनहों को जो कोसी कलेस में हैं उसी घीनज के
कानन से जो हम ग्राप इसन से घीनज पावते हैं घीनज दे
५ सकें। कग्रोंकी जैसे मसीह का दुप्प हम में व्रढ़ता है वैसा
६ हमाना सांत भी मसीह के कानन से व्रढ़ता है। कग्रोंकी जो
हम लोग दुप्प पावते हैं तो तुमहाने सांत ग्रोन उघान के कानन
जो हमाने उनहों दुप्पों को जो हम पावते हैं संतोप्प से सहने
से सीघ होता है ग्रथवा जो हम सांत पावते हैं तो तुमहाने
७ सांत ग्रोन उघान के लीग्रे। ग्रोन हमानी ग्रासा तुमहाने
व्रोप्पै में दीनढ़ है ग्रह जानके की जैसा तुम लोग कसटों में
८ साही हो वैसाही सांत में भी होग्रोगे। हे भाइग्रो हम नहीं
याहते की तुम लोग उस कलेस से जो ग्रासीग्रा में हमों पन

पड़ा अगयान नहो की हम व्रे पनीमान दव्र गये यहां लें की
९ हम जीवन से भी नीनास ऊप्रे। पनंतु हमों ने अपने ही
में मीनतु की अगया पाइ जीसतें हम लोग अपने ही भनोसा
१० न नप्पें पनंतु इसन का जो मीनतकन को जीलावता है। उसने
हमको प्रैसी महा मीनतु से व्रयाया आैान व्रयावता है उस पन
११ हमाना भनोसा है की वुह आगे को भी व्रयावेगा। तुमलोग
भी मीलके पनानथना से हमाने सहायक ऊप्रे की वुह दान जो
व्रऊत से लोगों के कानन से हमों को मीला व्रऊत से लोगों से
१२ हमाने लीये सतुत की जाय। कयोंकी हमाने मन की साप्पी
हमाना आनद कनना है की हमने सीधाइ से आैान इसन की
सयाइ से न की सानीनीक व्रुध से पनंतु इसन के अनुगीनह से
जगत में आैान नीज कनके तुमहाने समीप अपना नीनव्राह
१३ कीया। कयोंकी हम दुसनी व्रातें नहीं पनंतु वही व्रातें तुमहें
लीप्पते हैं जीनहें तुम लोग जानते हो आैान मानते हो आैान
१४ मैं आसा नप्पता ऊं की अंत लें मानोगे। जैसा की तुमहों ने
हमें थोड़ा सा माना है की हम पनभु यसु के दीन तुमहाना
१५ आनंद कनना हैं जैसा तुम सव्र भी हमाने हो। आैान मैं ने
इसी भनोसा से इछा की, की मैं पहीले तुमहाने पास आउं की
१६ तुम लोग दुसना पदानथ पाआे। आैान तुमहों में होके मकदु-
नीयः को जाउं आैान मकदुनीयः से फेन तुमहाने पास आउं
आैान अपनी यातना में तुमहों से यऊदीयः को आैान पऊंयाया
१७ जाउं। सो जव्र मैं ने यह इछा की तो कया मैं ने हलुकापन
की अथवा की जो इछा मैं कनता ऊं कया मैं सनीन की नीत
१८ पन कनता ऊं की मुह से हां हां आैान नहीं नहीं होवे। सचे
इसन की सों हमानी व्रात तुमहों से हां आैान नहीं न थी।
१९ कयोंकी इसन का पुतन यसु मसीह जो हमों से अनथात मुह से
आैान सलवानीस से आैान तीमताउस से तुमहों में उपदेस
कीया गया सो हां आैान नहीं न था पनंतु उस में हां था।

२० क्योंकी ईसर की समस्त प्रतीग्या उस में हां और उस में
२१ आमीन हैं की हमों से ईसर की बड़ाई की जाय। अब वुह
जो हम को तुम्हारे संग मसीह में स्थीर करता है और
२२ हम को अभीसेक कीया ईसर है। जीसने हमों पर छाप भी
कीया है और आतमा को हमारे अंतःकरन में बयाना दीया।
२३ परंतु मैं ईसर को अपने आतमा पर साखी लावता हूं की मैं
तुम्हों पर छमा करने को अब लों करंतीस में नहीं आया।
२४ इस कारन नहीं की हम तुम्हारे बीस्वास पर कुछ प्रभुता
रखते हैं परंतु तुम्हारे आनंद के सहायक हैं क्योंकी बीस्वास
से तुम लोग खड़े हो।

२ दुसरा परब।

१ परंतु मैं ने अपने मन में यह ठाना की मैं तुम्हारे पास
२ फीर के उदासीन न आउं। क्योंकी जो मैं तुम्हें उदासीन
करुं तो कौन है जो मुझे हरसीत करता है परंतु वही जो
३ मुझ से उदास कीया गया। और मैं ने तुम्हों को यूं लीखा न
हो की जब मैं आउं मैं उनहों के कारन उदासी पाउं जीस से
उचीत है की हरसीत होउं तुम सभों के बीखै में नीस्चय
४ रख के की मेरा हरस तुम सभों का है। क्योंकी मैं ने बड़े
कसट और मन के सोक से बहुत से आंसु बहा बहा के तुम्हें
लीखा न इस लीये की तुम लोग उदास कीये जाओ परंतु की
तुम लोग मेरे उस प्रेम की बढ़ती को जानो जो मुझे तुम्हों
५ से है। और जो कीसी ने उदास कराया तो उसने केवल मुझी
को थोड़ा उदास कीया की मैं तुम सभों को अधीक बोझ न
६ देउं। ऐसे मनुष्य के लीये यही दंड जो बहुतों से कीया गया
७ बस है। सो अब उस से उलटा नीज करके उस पर छमा करो
और सांत देओ ऐसा न होवे की ऐसे जन अतयंत सोक से
८ नीगले जायें। इस कारन मैं तुम्हों से यह बीनती करता हूं

९ की तुम लोग उस पन अपने पनेम के सथीन कनो। कय़ोंकी
मैं ने इस कानन लीष्पा है की मैं तुमहानो पनीछा पाउं की
१० तुम लोग सानी व्रातों में अघीन हो की नहीं। जीस को तुम
लोग कुछ छमा कनो मैं भी कनता ड्डं ग्रैान जो मैं कीसी को
कुछ छमा कनुं कोइ न हो तो तुमहाने कानन से मसीह की
११ संती होकन छमा कनता ड्डं। न होवे की सैतान हम से कुछ
वाना पावे क्य़ोंकी हम उसकी जुगतों से अगय़ान नहीं हैं।
१२ ग्रैान जव्र मैं मसीह का मंगल समाचान देने को तनवास में
आय़ा ग्रैान पनभु के ग्रोन से ग्रेक दुवान मेने लीय़े प्पुल गय़ा।
१३ मेने मन में चैन न था इस कानन की मैं ने अपने भाइ तीतस
को वहां न पाय़ा पनंतु उनहों से व्रीदा होकन वहां से मकदु-
१४ नीय़ः को गय़ा। अव्र घंन इसन को जो मसीह में हम को
सव्रनदा जै देता है ग्रैान अपने गय़ान के गंघ को हम से हन
१५ ग्रेक सथान में पनगट कनता है। कय़ोंकी हम इसन के आगे
उनके लीय़े जो व्रचाय़े जाते हैं ग्रैान उनके लीय़े जो नसट
१६ होते हैं मसीह के सुगंघ हैं। कीतनों को मीनतु के लीय़े
मीनतु के गंघ हैं ग्रैान कीतनों को जीवन के लीय़े जीवन के
१७ ग्रैान कैान इन व्रातों के जोग है। कय़ोंकी हम व्रहुतों के
समान इसन के व्रचन में मीलोनी नहीं कनते पनंतु सचाइ से
पनंतु जैसे इसन की दीनीसट में मसीह में व्रोलते हैं।

३ तीसना पनव्र।

१ कय़ा हम ने अपनी सनाहना कनवाना फेन आनंभ कीय़ा है
ग्रैान कय़ा हम कइ ग्रेक के समान चाहीन हैं की सनाहने का
पतन तुमहाने पास लावें अथवा तुमहाने सनाहने का पतन ले
२ जावें। तुम लोग हमाने पतन हो जो हमाने अंत:कननों में
लीष्पे गय़े हो ग्रैान समसत मनुप्पन से जाने गय़े ग्रैान पढ़े गय़े
३ हो। की पनगट काय़े गय़े मसीह के पतन हो जो हमानी

सेवकाइ से है जो मस से नहीं पनंतु जीवते इसन के आतमा
से पथन की पटनीयों पन नहीं पनंतु अंनतःकनन के मांस की
४ पटनीयों पन लीष्पा है। औान हम मसीह के ओान से इसन
५ पन ऐसा ऊनोसा नष्पते हैं। न की हम आप से सामनथी
हैं की आप से कीसी व्रसतु का सोय कनें पनंतु हमाना सामनथ
६ इसन से है। उसने हमको नये नयम का सामनथी सेवक औो
व्रनाया अछन का नहीं पनंतु आतमा का कयोंकी अछन व्रधन
७ कनता है आतमा जीलावता है। कयोंकी जो मीननु की सेवा
पथनों पन ष्पोदे ऊऐ अननों में तेजमय थी यहां लों की
इसनाइल के संतान मुसा के सनुप पन उस व्रोंल्लव के कानन से
८ जो उसके मुंह पन था औान नासमान था ताक न सके। तो
आतमा की सेवा कीतना अधीक कयोंकन तेजमय न होगी।
९ औान जो दोष्प दायक सेवा तेजमय है तो धनम की सेवा का
१० तेज कीतना अधीक होगा। कयोंकी वुह जो तेजमय ऊआ
इस लगाव से तेज न नष्पता था उस तेज के कानन से जो
११ अधीक था। औान जो लोप होनहानी व्रसतु तेजमय थी तो
१२ वुह जो सथीन है कीतना अधीक तेजमय है। सो हम ऐसी
१३ आसा नष्पके व्रऊत ष्पोलके व्रलते हैं। औान मुसा के समान
नहीं जीसने अपने मुंह पन घुंघट डाला की इसनाइल के संतान
१४ उस लोप होनीहानी व्रात के अंत को न देष्पें। पनंत उनकी व्रुध
अंधी हो गइ कयोंकी अव्र लों वुह घुंघट पुनाने नीयम के पढ़ने
१५ में अलग न कीया गया वुह मसीह में अलग कीया गया। पन
आजके दीन लों जव्र मुसा पढ़ा जाता है वुह घुंघट उनके मन
१६ पन पड़ा नहता है। पनंतु जव्र वुह पनभु के ओान फीनेगा तव्र
१७ वुह घुंघट अलग कीया जायगा। अव्र पनभु वही आतमा है
१८ औान जहां कहीं पनभु का आतमा है वहीं मोष्प है। औान हम
सव्र वीन घुंघट पनभु के तेज को दनपन में देष्प देष्प के उसके
नुप में तेज से तेज में व्रदलते जाते हैं जैसा पनभु के आतमा से।

४ चौथा पत्र।

१ सो हम उस की दया से यह सेवकाई पाके उदास नहीं
२ होते। परंतु हम ने लाज के गुपत कामन को तयाग कीया
और छल के ब्रवहार पर नहीं चलते और इसर के ब्रचन में
कपट नहीं करते परंत सचाई को परगट करके हर एक मनुष्य
३ के मन में इसर के सनमुष्य अपने को सराहते हैं। परंतु जो
हमारा मंगल समाचार गुपत होवे तो उनहीं के लीये जो
४ नसट होते हैं गुपत है। की इस जगत के इसर ने उनकी ब्रुध
को जो अब्रीसवासी हैं अंधी कर दीया है न होवे की मसीह
के जो इसर की मुरत है तेजमय मंगल समाचार का परकास
५ उनहों पर चमके। कयोंकी हम अपना उपदेस नहीं करते
परंतु मसीह यसु परभु का और हम आप यसु के लीये
६ तुमहारे सेवक हैं। कयोंकी इसर जीसने परकास को आगया
की, की अंधकार से चमके हमारे अंतःकरन में परकास ऊआ
की इसर के उस तेज को जो यसु मसीह के रुप में है गयान का
७ उंजीआला देवे। कयोंकी हम यह धन मीटी के पातरों में
रष्यते हैं की सामरथ की उतमा इसर से न की हम से होवे।
८ हम समसत परकार से कसटीत हैं तथापी जंजाल में नहीं
९ घबराहट में हैं परंतु नीरास नहीं। संताए जाते हैं पर
१० अकेले नहीं छोड़े गए गीराए गए पर नसट नहीं ऊए। की
हम परभु यसु के मरन को अपने देह में नीत लीये फीरते
११ हैं की यसु का जीवन भी हमारे देह में परगट होय। कयोंकी
हम जो जीते हैं यसु के लीये मीरतु को नीत सौंपे जाते हैं
की यसु का जीवन भी हमारे नासमान देह में परगट होवे।
१२ सो मीरतु हमों में और जीवन तुमहों में परवेस करता है।
१३ हम वही ब्रीसवास का आतमा रष्यते हैं जैसा लीष्या है की मैं
ब्रीसवास लाया और इस लीये मैं बोला हम भी ब्रीसवास लाते

१४ हैं श्रीर इसी कारन बोलते हैं। हम जानते हैं की जीसने
परभु यसु को जीलाया सो हम को भी यसु से जीलायेगा श्रोर
१५ तुमहारे संग अपने संमुप्प करेगा। कयोंकी समसत बसतें
तुमहारे कारन है की अनुगौरह उभरता ज्ञञा बज्जतेरों
के घन मानने से इसन के महातम की बघीकाइ के कारन
१६ होय। इस लीये हम उदास नहीं होते परंतु यदपी हमारी
बाहरी मनुष्पता नास होती है तथापी मानसीक मनुष्पता
१७ परती दीन नवीन होती है। की हमारा हलुक दुप्प जो
छन भर के लीये है हमारे लीये कीतना अघीक अनंत महीमा
१८ के भार को उतपंन करता है। जब लों हम दीरीस बसत
को नहीं देप्पते परंतु उनहों को जो अदीरीस हैं कयोंकी
जो बसतें दीरीस हैं थोड़े दीन की हैं परंतु वे जो अदीरीस
हैं अनंत हैं।

५ पांचवां परब।

१ हम जानते हैं की जो हमारे मीटी के घर का मंदीर उजड़
जावे तो हम इसर का बनाया ज्ञञा एक घर रप्पते हैं जो
२ हाथों से नहीं बना सरबदा सरगों में है। कयोंकी हम इस में
रहके आहें प्पींयते हैं श्रीर अभीलासी हैं की अपने घर को
३ पहीरलें जो सरग से है। की ऐसे पहीराए जाके हम नंगे
४ न पाये जायें। कयोंकी जब लों हम तंबु के मंदीर में हैं
बोहीत होके आहें प्पींयते हैं तीसपर भी अपहीनाए जाने को
नहीं याहते हैं परंतु याहते हैं की पहीनाए जायें की मीरतुता
५ जीवन से नींगली जाय। सो जीसने हमको इस कारज के
लीये सोच कीया इसर है जीसने हम सभों को अपने आतमा
६ का बयाना भी दीया। इस लीये सरबदा साहस रप्पते हैं
यह जानके की जब लों हम देह में जातना करते हैं हम परभु
७ से बीयोगी हैं। कयोंकी हम बीसवास से न की दीरीसट से

८ यहते हैं। हम साहस नप्पते हैं और अधीक याहते हैं की
९ देह से व्रीयोगी होवें और पनभु के संग साप्पात होवें। इस
कानन हम व्रड़ी घुन से कनते हैं की कया साप्पात में कया
१० व्रीयोग में हम उस से भाये जावें। कयोंकी हम सव्र को अवेस
है की मसीह के व्रीयान सथान के आगे प्पड़े कीये जायें की
हन ऐक अपने देह में कीये के समान पावे कया भला कया
११ व्रुना। इस कानन पनभु के भय को जान कन हम मनुप्यन
को समझाते हैं पनंतु हम इसन पन पनगट कीऐ गऐ हैं और
मैं आसा भी नप्पता हुं की तुमहाने मन पन भी पनगट कीऐ
१२ गऐ हैं। कयोंकी फेन अपनी सनाहना तुमहों से नहीं कनते
हैं पन तुमहें कानन देते हैं की हमाने कानन से व्रड़ाइ कनो
की तुम लोग उनको उतन दे सको जो पनगट में व्रड़ाइ कनते
१३ हैं और अंत: कनन में नहीं। कयोंकी जो हम अपने से पने
हैं तो इसन के लीये हैं अथवा जो सगयान हैं तो तुमहाने
१४ कानन हैं। कयोंकी मसीह का पनेम हम को प्पींचे जाता है
जव्र लों हम युं व्रीयान कनते हैं की जो ऐक सव्र के कानन मुआ
१५ तो सव्र के सव्र मने थे। और वुह सव्र के कानन मुआ की जो
जीते हैं सो आगे को अपने लीये नहीं जीवे पनंतु उसके लीये
१६ जो उनके कानन मुआ और फेन उठा। सो अव्र से हम कीसी
को सनीन की नीत पन नहीं पहीयानते हैं और यदपी हमने
मसीह को सनीन की नीत पन पहीयाना है तथापी आगे को
१७ युं नहीं जानते हैं। सो जो कोइ मसीह में है तो वुह नइ
सोनीसट है पुनानी व्रसतें व्रीतगइं और देप्पो सानी व्रसतें
१८ नइ हुइं। और समसत व्रसतें इसन से हैं जीसने यसु मसीह
के कानन से हमों को अपने से मीला लीया और मीलाप की
१९ सेवकाइ हमको दी। अनथात की इसन मसीह में होके जगत
को अपने से मीलाप कनवाता था की उसने उन के अपनाधों
को उन पन न ठहनाया और हमों को मीलाप का व्रयन सोंपा।

२० इस लीये हम मसीह के ओर से दुत हैं जैसा की ईसर हमारे
ओर से तुमहों से वीनती करता है सो हम तुमहों से मसीह
की संती वीनती करते हैं की तुम लोग ईसर से मीलाए जाओ।
२१ क्योंकी उसने उसको जो पाप को न जानता था हमारी संती
पाप ठहराया की हम उसमें ईसर के धरम बनें।

६ छठवां परब्र।

१ हम संगी सेवक तुमहारी वीनती करते हैं की तुम ईसर के
२ अनुग्रीह को अकारथ न लेओ। कयोंकी वुह कहता है की
मैं ने ग्रहन कीए हुए समय में तेरी सुनी और उधार के
दीन में तेरा सहाय कीया देखो ग्रहन करने का समय अब
३ है और देखो उधार का दीन अब है। हम कीसी बात में
४ ठोकर नहीं देते की सेवा दोखी न जाय। परंतु आप को हर
एक बात में ऐसा सराहते हैं जैसे ईसर के सेवक बहुत संतोख
५ में दुखों में सकेतीयों में जंजालों में। कोड़ों में बंधन में हुलर
६ में परीसरमों में जागने में उपवास में। पवीतरता में गयान
में संतोख में कोमलता में धरमातमा में नीसकपट परेम में।
७ सयाई की बानी में ईसर के सामरथ में दहीने बाएं धरम के
८ हथीयार से। मान और अपमान में होके और सुखात और
९ कुखात में होके छलीयों के समान तथापी सया। जैसा
अनजाना हुआ तथापी अछी रीत से जाना हुआ जैसा मरते
हुए तथापी देखो हम जीते हैं जैसा ताड़ीत होके तथापी मारे
१० न गये। जैसा उदासीन तथापी सदा आनंद करते हैं जैसा
कंगाल तथापी बहुतेरों को धनी करते हैं जैसा बसतु हीन
११ तथापी समसत बसतु रखते हैं। हे करंतीयो हमारे मुंह
१२ तुमहारे लीये खुले हमारे अंतःकरन बढ़ाए गए हैं। तुम
लोग हमों में सकेती में नहीं हो परंतु अपनेही मन में सकेती
१३ में हो। इस कारन उसके परतीफल में मैं तुमहों से जैसा

१४ बालकों से कहता हूं तुम भी बढ़ जाओ। अबीसवासीयों के
संग असमान रीत से एक जूये में मत जोते जाओ क्योंकी
धरम और अधरम से कौनसा मेल है और परकास को
१५ अंधकार से कौनसा मेल है। और मसीह को बलीआल के
संग कौनसा मेल है और बीसवासी वा अबीसवासी के संग
१६ कौनसा भाग है। और इसर के मंदीर को मुरतीन से
कौनसा संयोग है क्योंकी तुम लोग जीवते इसर के मंदीर हो
जैसा की इसर ने कहा है की मैं उनमें बसूंगा और उस में
फीरुंगा और मैं उनका इसर हूंगा और वे मेरे लोग होंगे।
१७ इस कारन परभु यह कहता है की उनके बीच से नीकल आओ
और अलग होओ और अपवीतर बसतु को मत छुओ और मैं
१८ तुम को गरहन करुंगा। और मैं तुमहारा पीता हूंगा और
तुम लोग मेरे पुतर और पुतरीयां होगे यह सरब सकतीमान
परभु कहाता है।

७ सातवां पत्र।

१ सो हे पीरीय ऐसी परतीगयाओं को पाके आओ अपने को
समसत परकार की सरीरीक और आतमीक असुधता से पवीतर
२ करके इसर के भय से पवीतरता को संपुरन करें। हम को
गरहन कर लेओ हमने कीसी पर अंधेर न कीया कीसी को
३ न बीगाड़ा कीसी को न छला। मैं दोष्य देने के कारन यह
नहीं कहता मैं तो आगे कह चुका हूं की तुम लोग हमारे
४ अंतःकरन में हो की तुमहारेही संग जीयें और मरें। बड़े
नीरभय की बोली से तुमहों से कहता हूं और तुमहारे बीष्यै
में नीपट बड़ाइ करता हूं सांत से भरा हुआ हूं अपने समसत
५ कसटन में मैं अतयंत आनंदीत हूं। क्योंकी जब हम मकदु-
नीयः में आये हमारे सरीर को कुछ चैन न था परंतु हम
६ सरबतर दुष्य पावते थे बाहर लड़ाइयां भीतर भय। परंतु

इसन ने जो उदासीनें का सांत दाता है तीतस के आवने से
७ हमें सांत दी। और केवल उसी के आजाने से नहीं पनंतु उस
सांतवन से जीस से उस ने तुमहों से सांत पाइ जब उसने तुमहानी
वड़ी लालसा तुमहाना वीलाप तुमहाना जलन जो मेने कानन
था हमाने आगे बनानन कीया यहां लों की मैं ने अधीक आनंद
८ कीया। कयोंकी यदपी मैं ने पतनी से तुमहें सोकीत कीया
मैं पछताता नहीं यदपी मैं पछताया कयोंकी मैं देष्पता ऊं की
९ उसी पतनी ने थोड़े समय लों तुमहें सोकीत कीया। सो अब
मैं आनंद कनता ऊं न इस लीये की तुम लोग सोकीत ऊपे
पनंतु इस लीये की तुम लोग पसयाताप के लीये सोकात ऊपे
कयोंकी इसन के लाये सोकीत ऊपे सो तुमहों ने हमसे कुछ
१० घटी न उठाइ। कयोंकी इसन के लाये सोक कनना उधान
के कानन पसयाताप उतपंन कनता है की पछताया न जावे
पनंतु जगत के लाये सोक कनना मीनतु को उतपंन कनता है।
११ कयोंकी देष्पो इसी बात ने अनथात इसन के लीये तुमहाना
सोकीत होना तुम में कयाही यालाकी उतपंन की कयाही
वीनती कयाही जलजलाहट कयाहा भय कयाही वड़ी वांछा
कयाही तापीत कीया है कयाही दंड लेना उतपंन कीया है
समसत नीत से तुमहों ने अपने को इसी बात में नीनदोष्पी
१२ ठहनाया। सो जो मैं ने तुमह लीष्पा न उसके कानन जीसने
अंधेन कीया और न उसके कानन जीस पन अंधेन ऊआ पनंतु
इस लीये की हमानी यींता तुमहाने लीये इसन के संमुष्प
१३ तुमहों पन पनगट होवे। इस लीये हम ने तुमहाने सांतन से
सांत पाइ और तीतस के आनंद से अतयंत आनंद कीया इस
१४ कानन की उसके आतमा तुम सभों से संतुसट ऊपे। सो जो
मैं ने उसके आगे कुछ बड़ाइ की सो मैं लजीत नहीं ऊं पनंतु
जैसा सानी बातें हम ने तुमहों से संयाइ से कहीं वैसाही
हमाना बड़ाइ कनना जो तीतस के आगे था ठहनाया गया।

१५ यहां लों की उसके मन की दया तुमहों पर अतयंत है जब
कभी वुह तुम सभों का आगया मानना समरन करता है की
तुमहों ने कैसे डरते और थरथराते उसे गरहन कीया।
१६ इस लीये मैं आनंद करता हुं की हर एक बात में तुमहों पर
मेरा भरोसा है।

८ आठवां पत्र।

१ और हे भाइयो हम इसर के उस अनुग्रह को जो मकदु-
नीयः की मंडलीयों पर कीया गया है तुमहों को जताते हैं।
२ कयोंकर बड़ी परीछा के कलेस में उनके आनंद की अधीकाई
ने और उनके अतयंत कंगालपन ने उनके पुन्न की बहुताई
३ को अधीक परगट कीया। यहां लों की मैं साखी देता हुं की
सामरथ भर हां सामरथ से अधीक आपही इछा रखते थे।
४ उनहों ने बहुत सी बीनती करके याहा की हम उस दान को
५ लेवें और संतन की सेवा में संगी होवें। और यह उनहों ने
हमारी आसा के समान न कीया परंतु पहीले अपने तई परभु
६ को सौंपा और इसर की इछा से हमों को। यहां लों की
हमने तीतस से याहा की जैसा उसने आरंभ कीया था वैसा
७ इस अनुग्रह को भी तुमहों में पूरा करे। इस लीये जैसा
तुम लोग हर एक में अरथात बीसवास में बयाखान में और
गयान में और समसत जतन में और हमारे परेम में भरपुर
हो वैसाही तुम लोग इस अनुग्रह में भी संपुरन होओ।
८ मैं आगया से नहीं कहता परंतु औरों के जतन के कारन से
९ जीसतें तुमहारे परेम की सचाई परगट हो जाय। कयोंकी
तुम लोग हमारे परभु यसु मसीह के अनुग्रह को जानते हो
की यद्पी वुह धनी था तथापी वुह तुमहारे कारन कंगाल
१० हुआ की तुमलोग उसके कंगालपन से धनी हो जाओ। और
मैं इस बात में मंतर देता हुं कयोंकि यही तुमहारे कारन

जोग है की तुमहों ने केवल कुछ करना आरंभ नहीं कीया
११ परंतु एक बरस आगे से जतन कीया। सो अब्र कारज को
भी संपुरन करो की जैसा तुम लोग इक्षा करने को लैस थे
१२ वैसाही अपने ब्रीसात के समान संपुरन भी करो। कयोंकी
जो मन की तीयारी पहीले होय तो मनुष्य अपने ब्रीसात के
समान गरहन कीया गया न उसके समान जो उसकी नहीं है।
१३ यह नहीं की औरों पर सुष्प और तुमहों पर दुष्प होवे।
१४ परंतु समता की रीत पर की इस समय में तुमहारी अधीकाइ
उनकी घटती को पुरा करे की उनकी अधीकाइ भी तुमहारी
१५ घटती को पुरा करे जीसतें समता होवे। जैसा लीष्पा है की
जीसने ब्रहुत ब्रटोरा उसका कुछ न ब्रढ़ा और जीसने थोड़ा
१६ ब्रटोरा उसका कुछ न घटा। परंतु ईश्वर का जीसने
तुमहारे लीये इस ब्रड़े जतन को तीतस के मन में डाला।
१७ कयोंकी उसने उस ब्रुलाहट को तो गरहन कीया परंतु ब्रहुत
यटक होकर आप अपने मन से तुमहारे पास नीकल गया।
१८ और हमने उसके संग उस भाइ को भेजा जीसकी ब्रड़ाइ मंगल
१९ समाचार में समसत मंडलीयों में है। और केवल इतनाही
नहीं परंतु वुह मंडलीयों से भी ठहराया गया की कृय में इस
अनुगीरह के साथ हमारे संग रहे जीसको हमों से उसी परभु
की महीमा के लीये और तुमहारे तीयार मन के लीये सेवा
२० की गइ है। इस से ब्रयके की कोइ इस ब्रहुताइ के लीये
२१ कीसकी सेवा हम से की गइ हम को दोष्प न देवे। हम उन
ब्रसतुन के लीये जो न केवल परभु के आगे परंतु मनुष्पन के
२२ आगे भी भली हैं यीता करते हैं। और हम ने उसके संग
अपने उस भाइ को भेजा जीसे हम ने ब्रहुत सी ब्रातों में
ब्रारंब्रार परीक्षा करके परनतीला पाया पर अब उस ब्रड़े
ब्रीसवास के कारन से जो तुमहों पर है कीतना अधीक
२३ परनतीला पाया। जो कोइ तीतस की पुछे तो वुह मेरा साही

और तुमहारे वीष्पै में संगी सेवक है अथवा हमारे और
भाइयों के ता वे मंडलीयों के दुत और मसीही के महीमा
१४ हैं। इस कारन तुम लोग अपने प्रेम और हमारी बड़ाइ
के प्रमान के जो तुमहारे कारन है उनके और मंडलीयों
के दीष्पाओ।

९ नवां पत्र।

१ सो अब संतन की सेवा के वीष्पै में मुझे तुमहें लीष्पना अवेस
२ नहीं। कयोंकी मैं तुमहारी तीयारी के जानता हूं जीसके
वीष्पै में तुमहारी बड़ाइ मकदुनीयों के आगे करता हूं की
अष्पाय: एक बरस आगे लेस था और तुमहारे तेज ने बहुतेरों
३ के उसकाया। तथापी मैं ने भाइयों के भेजा न होवे की
हमारी बड़ाइ तुमहारे वीष्पै में बयरथ होवे की जैसा मैं ने
४ कहा है तुम सीध हो रहो। कहीं ऐसा न होवे की जो मकदुनी
लोग मेरे संग आवें और तुमहें असीध पावें तुम ता रहे हम
५ इस नसीसयीत बड़ाइ करने से लजीत हो जावें। इस कारन
मैं ने भाइयों से बीनती करना अवेस समझा की वे तुमहारे
पास आगे से जावें और तुमहारे पुन के जो तुमहें आगे जनाया
गया सीध कर रष्पं जीसतें वुह पुन के समान न की कंजुसी के
६ समान होवे। पर यह यीत रहे की जो थोड़ा करके बोता
है सो थोड़ा काटेगा और जो बहुताइ से बोता हैं बहुताइ
७ से काटेगा। हर एक अपने मन की इछा के समान करे
पछताके अथवा आवेसक से नहीं कयोंकी आनंद से देनहार
८ के इसर पीआर करता है। और इसर तुमहें पर समसत
परसाद का अनुग्रीनह बढ़ा सकता है की तुम लोग कीसी बात
में कघी घटी न रष्पके हर एक भली करनी में बढ जाओ।
९ जैसा लीष्पा है की उसने बीथराया है उसने दरीद्रों के
१० दीया है और उसका धरम सरबदा रहता है। सो जो बोवन-

हान को ग्रोज और भोजन के लीये रोटी देता है तुमहारे
ब्रोने को देवे और ब्रढ़ावे और तुमहारे घरम का फल अघीक
११ करे। की हर एक ब्रात में घनी होके समसत दानसीलता के
१२ लीये हमारे कारन से ईसर का घंरब्राद होता है। कयोंकी
सेवा की कीरया केवल संतों के आवेसक को पुरा नहीं करती
है परन्तु ब्रहुतेरों के ओर से ईसर के लीये घंनब्रादों में भी
१३ अघीकाई देती है। वे इस सेवा की परीछा के परमान से
और इस लीये की तुम लोग मसीह के मंगल समाचार के
आघीन हो और तुमहारी दातापन के लीये जो उनहों पर
१४ और सभों पर है ईसर की महीमा करते हैं। और ईसर के
उस अतीयंत अनुग्रीह के लीये जो तुमहों पर है तुमहारे
१५ लीये ब्रड़ी चाह से परारथना करते हैं। ईसर के अकथ दान
के लीये उसका घंनबाद होय।

१० दसवां परब्र।

१ अब्र मैं पुलुस आपही मसीह की कोमलता और नमरता के
कारन से तुमहारी ब्रीनती करता हुं जो साछात में तुमहों में
२ दीन हुं परंतु ब्रीयोग में तुमारे लीये नीडर हुं। परंतु मैं
तुमहारी ब्रीनती करता हुं की जब्र मैं साछात में होउं उस
भरोसे से नीडर न होउं जैसा मैं उनहों पर नीडर होने को
३ समझता हुं जो हमारी चाल को सरीरीक समझते हैं। कयोंकी
यद्यपी हम सरीर में चलते हैं तथापी हम सरीर की रीत
४ पर नहीं लड़ते हैं। कयोंकी हमारे जुघ के हथीयार
सरीरीक नहीं परंतु ईसर के कारन से कोटन के ढाने पर
५ सामरथी हैं। की ब्रीचारों को और हर एक उंची ब्रसतु को
जो अपने को ईसर की पहीचान के ब्रीरोघ से ब्रढ़ाते हैं
ढादेते हैं और हर एक सोच को ब्रंघन में करके मसीह के
६ आगया के ब्रस में लावते हैं। और जब्र तुमहारा आगया

मानना संपुरन हो जाए हम समसत अगया भंग करने का
७ पलटा लेने को सीध हैं। कया तुम लोग वसतुन की वाहरी
वाहन को देष्पते हो जो कोसी मनुष्य को नीसचय है की वुह
आप मसीह का है तो वुह यह भी आप से वीचार करे की
८ जैसे वुह मसीह का वैसे हम भी मसीह के हैं। कयोंकी जो मैं
उस पराकरम के कारन जो परभु ने हमें सुधारने के लीये
न तुमहें नसट करने के लीये दीया है कुछ वड़ाइ करुं मैं
९ लजीत न हुंगा। जीसतें मैं ऐसा न जाना जाउं जैसा की मैं
१० तुमहों को पतरीयों से डराया चाहता हुं। कयोंकी वे
कहते हैं की उसकी पतरीयां भारी और वलवंत हैं पर उसका
११ देह साष्पात में नीरवल और वोली नींदीत। सो ऐसा जन
जान रष्पे की जैसे हम वचन में पतरीयों से वीयोग में हैं
१२ वैसाही साष्पात में हमारे करम भी होंगे। कयोंकी हमारा
यह साहस नहीं की अपने को उन में गीनें अथवा अपने को
उनसे तुल करें जो अपने को सराहते हैं परंतु वे अपने को आप
१३ से नाप के और आप से अपने को मोला के वुधमान नहीं। परंतु
हम लोग परीमान से वाहर वड़ाइ न करेंगे पर उस परीमान
की रीत के समान जो इसर ने हमें वांट दीया है एक परीमान
१४ जो तुम लों भी पहुंचे। कयोंकी हम अपने को अधीकाइ से नहीं
वढ़ावते हैं जैसा की हम तुम लों नहीं पहुंचे हैं कयोंकी हम तुम
१५ लों भी मसीह के मंगल समाचार को ले पहुंचे हैं। न वे परी-
मान से औरों के परीसरमों से वड़ाइ करते परंतु आसा रष्पते
हैं की जव तुमहारा वीसवास अधीक होय की हम लोग तुमहों
१६ से अपनी रीत के समान वढ़ जायेंगे। की तुमहारे सीवाने से
आगे वढ़के मंगल समाचार पहुंचावें की औरों की सीध की हुइ
१७ वसतु पर वड़ाइ न करें। परंतु वुह जो वड़ाइ करता है सो
१८ परभु में वड़ाइ करे। कयोंकी वुह गराह्य नहीं है जो अपने को
सराहता है परंतु वुह जीसे परभु सराहता है।

११ गय़ारहवां पत्र।

१ हाय़ की तुम लाेग मेरो मुरष्पता का तनीक सहो और हां
२ मेरी सहो। कय़ोंकी मुझे तुमहारे लीय़े ईसरीय़ झल से झल
है कय़ोंकी मैं ने तुमहें संवारा की सतो कंनय़ा के समान ऐकही
३ पती अरथात मसीह के संमुष्प करुं। परंतु मैं डरता झं कहीं
ऐसा न होवे की जैसा सांप ने अपने छल से हैावा को ठगा
ऐसाही तुमहारे मन की सुघाई को जो मसीह में है व्रीगाड़े।
४ कय़ोंकी वुह जो आवता है जो दुसरे य़सु का उपदेस करे जीस
का हम ने नहीं कीय़ा अथवा जो तुम लोग कोई और आतमा
पावते जीसे तुमहों ने न पाय़ा अथवा दुसरा मंगल समाचार
५ जीसे तुमहों ने न माना तो तुमहें सहना भला होता। कय़ोंकी
मैं वुझता झं की मैं अतय़ंत व्रड़े परेरीतों से तनीक घाट न
६ था। कय़ोंकी य़दपी मैं व्रोल चाल में अनारी झं तथापी
गय़ान में नहीं परंतु हम तो हर ऐक व्रात में तुमहों में परगट
७ झऐ हैं। अपने को दीन करने में की तुमलोग व्रढ़ जाओ कय़ा
मैं ने अपराघ कीय़ा इस कारन की मैं ने तुमहें ईसर का
८ मंगल समाचार सेंत से सुनाय़ा। मैं ने और मंडलीय़ों को
९ लुट लीय़ा की महीनवारी लेके तुमहारी सेवा करुं। और
साष्पात होके जव्र मुझे परय़ोजन था मैं ने कीसी पर व्रोझ न
दीय़ा कय़ोंकी जो कुछ मुझे घटती थी उन भाईय़ों ने जो
मकदुनीय़ः से आय़े थे भर दीय़ा और हर ऐक व्रात में मैं ने
अपने को तुमहों पर भार होने से अलग रष्पा और रष्पुंगा।
१० मसीह की उस सचाई की सों जो मुझ में है अष्पाय़ः के देसों
११ में मुझे इस व्रड़ाई से कोई न रोकेगा। कीस कारन कय़ा इस
कारन की मैं तुमहें पीय़ार नहीं करता ईसर जानता है।
१२ परंतु मैं जो करता झं सोही करता रझंगा की मैं गर्व ढुंढ़नी-
हारों से गर्व उठा देउं की जीस व्रात में वे व्रड़ाई करते हैं

१३ वे हमारे समान पाये जावें। क्योंकी ऐसे झुठे प्रेरीत हैं
छली कारज कारी हैं वे अपने को मसीह के प्रेरीतों के भेस
१४ में बदलते हैं। और कुछ आसचरज नहीं क्योंकी सैतान
१५ आपही प्रकास के दुत के भेस में बदल गया। इस कारन
जो उसके सेवक भी धरम के सेवकों के भेस में बदल जावें तो
कुछ बड़ी बात नहीं उनका अंत उनके कारजन के समान होगा।
१६ मैं फेर कहता हुं की कोइ मुझे मुनष्य न समझे नहीं तो मुझे
मुनष्य के समान ग्रहन करो की मैं भी थोड़ी सी बड़ाइ
१७ करुं। जो कुछ की मैं बड़ाइ के भरोसा में कहता हुं सो प्रभु
१८ की रीत पर नहीं परंतु मुनष्य के समान। बहुतेरे देह की
१९ रीत पर बड़ाइ करते हैं मैं भी बड़ाइ करुंगा। क्योंकी
तुम लोग बुधमान होके मुनष्यों को आनंद से सहते हो।
२० क्योंकी जो कोइ तुम्हें बंधन में लावे जो कोइ तुम्हें नीगले
अथवा कोइ तुम्हों से कुछ ले अथवा कोइ आप को बढ़ावे
अथवा जो कोइ तुम्हारे मुंह पर थपेड़ा मारे तब तुम लोग सहते
२१ हो। मैं अनादर के बीष्ये में कहता हुं ऐसा जैसा की हम
नीरबल हैं तौभी जीस बात में कोइ दीरढ़ है तो मैं
२२ मुनष्यता से कहता हुं की मैं भी दीरढ़ हुं। क्या वे इब्रानी
हैं मैं भी हुं वे इसराइली हैं मैं भी हुं वे इब्राहीम के बंस से
२३ हैं मैं भी हुं। क्या वे मसीह के सेवक हैं मैं मुनष्यता से कहता
हुं की मैं अधीक हुं परीस्रमों में अधीक और कोड़े प्यारे
में परीमान से बाहर बंदीगीरहों में बहुत बहुत और
२४ मीरतुन में बारंबार। यहुदीयों से मैं ने पांच बार ऐक कम
२५ चालीस कोड़े प्याये। तीन बार मैं छड़ीयों से मारा गया
ऐक बार मैं पथरवाह कीया गया तीन बार नावतोड़ में पड़ा
२६ ऐक रात दीन गंभीर में काटा। जातरा करने में बहुत
नदीयों के भै में चोरों के भै में अपने देसीयों के भै में
अंदेसीयों के भै में नगर के भै में बन के भै में समुदर

२७ के मे में झूठे भाइयों के मे में। थकाहट श्रौर कलेस में
जागने में बारंबार भुष्य में श्रौर पीश्रास में उपवास में बारंबार
२८ सीत श्रौर नंगाइ में भी रहा ऊं। बाहर की बसतुन से श्रधीक
समसत मंडलीश्रों का सोच मुझे को पीनती दीन दबावता है।
२९ कौन नीरबल है श्रौर मैं नीरबल नहीं ऊं श्रौर कौन ठोकर
३० खाता है की मैं नहीं जलता। जो मुझे बड़ाइ करना श्रवेस
३१ है तो मैं श्रपनी दुरबलता की बसतु में बड़ाइ करुंगा। इसर
श्रौर हमारे परभु यसु मसीह का पीता जो नीतश्रानंद है
३२ जानता है की मैं झूठ नहीं बोलता। दमीसक में उस श्रधक्ष
ने जो श्ररीतस राजा के श्रोर से था मुझे पकड़ने की इछा
३३ से नगर पर चौकी बैठालाइ। श्रौर मैं खीड़की में से टोकरी
में भीत पर से लटकाया गया श्रौर उसके हाथों से बच
नीकला।

१२ बारहवां परब।

१ मैं नीसचय जानता ऊं की उचीत नहीं की श्रपनी बड़ाइ
करूं तथापी मैं परभु के दरसनों श्रौर श्राकास बानीश्रों का
२ बरनन करुंगा। चौदह बरस बीते होंगे की मैं मसीह में श्रेक
मनुष्य को जानता था तो सरीर में मैं नहीं जानता श्रथवा
सरीर से बाहर मैं नहीं जानता इसर जानता है वहा तीसरे
३ सरग लों पहुंचाया गया। हां श्रैसे मनुष्य को मैं जानता था
तो सरीर में श्रथवा सरीर से बाहर मैं नहीं जानता इसर
४ जानता है। वुह बैकुंठ लों पहुंचाया गया श्रौर श्रैसी श्रकथ
५ बातें सुनीं जो मनुष्य के उचारन करने के जोग नहीं। श्रैसाही
मनुष्य की मैं बड़ाइ करुंगा परंतु श्रपने पर बड़ाइ न करुंगा
६ परंतु केवल श्रपनी नीरबलता पर। कयोंकी जो मैं बड़ाइ
कीया चाऊं मैं मुरष्य न ऊंगा कयोंकी मैं सत बोलता परंतु
थमता ऊं न होवे की कोइ मुझे उस से जैसा मुझे देखता है

७ अथवा जैसा मेने वीप्पै में सुनता है अधीक समझे। औान न
होवे की मैं इनसनों की अधीकाइ से वे पनीमान फुल जाउं
मेने सनीन में प्रेक कांटा दीया गया सैतान का दुत की मुझे
८ घुंसे माने न होवे की मैं वे पनीमान फुल जाउं। इसके लीये
मैं ने पनभु से तीन वान वीनती की, की वुह मुझ से दुन हो
९ जाय। पनंतु उसने मुझे कहा की मेना अनुगीनह तेने लीये
वस है कयोंकी मेना वल नीनवलता में सीध होता है इस
कानन मैं अपनी नीनवलता में वहुत आनंद से वड़ाइ कनुंगा
१० जीसतें मीसह का वल मुझ पन ठहने। सो मैं मसीह के कानन
नीनवलता में औान नींदा में दनीदनता में संताप जाने में कलेसों
में पनसन हूं कयोंकी जव मैं नीनवल हूं तव वलवान हूं।
११ मैं वड़ाइ कनने में मुनप्प वना हूं पनंतु तमहों ने मुझे वनवस
कनवाया कयोंकी याहता था की मैं तुमहों से सनाहा जाता
कयोंकी कीसी वात में मैं अतयंत वड़े पनेनीतों से छोटा नहीं
१२ हूं यद्‌पी मैं कुछ नहीं। नीसयय पनेनीत होने के यीनह
तुमहों में समसत संतोप्प औान लछन में औान आसयनजन
१३ औान पनभाव के कानजन से पनगट हुआ। कयोंकी तुम लोग
कौनसी वात में आन आन मंडलीयों से छोटे थे केवल की मैं
१४ तुमहों पन भान न था मेना यह अपनाध छमा कनो। देप्पो
मैं तीसने वान तुमहाने पास आवने पन हूं तीसपन भी तुमहों
पन भान न हूंगा कयोंकी मैं तमहाना नहीं ढुंढ़ता पनंतु
तुमहीं को कयोंकी उयीत है की माता पीता पुतनों के लीये
१५ वटोने न की पुतन माता पीता के लीये। औान मैं तुमहाने
कानन वहुत आनंद से उठान कनुंगा औान उठान होजाउंगा
यद्‌पी मैं जीतना अधीक तुमहें पीआन कनता हूं उतना थोड़ा
१६ पीनीय हूं। पनंतु यही सही की मैं ने तुमहों पन वोझ न
दीया तीसपन भी यतुनाइ कनके मैं ने तुमहें छल से पकड़ा।
१७ जीनहों को मैं ने तुमहाने पास भेजा उन में से कीसी से कया

१८ मैं ने तुमहों से कुछ पनापत कीया। मैं ने तीतस से बीनती की
औन उसके संग ऐक भाइ को भेजा तो कया तीतस ने तुमहों से
कुछ पनापत कीया कया हम ऐकही आतमा में औन ऐकही
१९ डग में न यलते थे। परेन कया तुम लोग समझते हो की हम
तुमहों से अपना बयाव कनते हैं हम इसन के आगे मसीह
में बोलते हैं पनंतु हे अती पीनीय यह सानी बातें तुमहाने
२० संवानने के लीये हैं। कयोंकी मैं डनता हूं न होवे की मैं
आके जैसा तुमहें याहता हूं वैसा न पाउं औन मैं तुमहों से
ऐसा पाया जाउं जैसा तुम लोग नहीं याहते न होवे की बीवाद
औन डाह औन कनोध औन झगड़े औन गुपतबाद औन
२१ परसपरुसाहट अहंकान औन हुलन होवे। न होवे की जब
मैं आउं मेना इसन मुझे तुमहों में आधीन कने औन न होवे
की मैं उन में से बहुतेनों के कानन जीनहों ने पाप कीया है
औन अपनी अपवीतनता औन बेभीयान औन कामाभीलास
से जो उनहों ने कीया पसयाताप न कीया सोक कनुं।

१३ तेनहवां पनब।

१ यह तीसने बान मैं तुमहाने पास आवता हूं दो अथवा तीन
२ साखीयों के मुंह से हन ऐक बात ठहनाइ जायगी। मैं ने
तुमहें आगे कहा है औन दुसने बान आगे से कहदेता हूं ऐसा
जैसा की मैं साखात था औन अब बीयोगी होके मैं उनहों को
जीनहों ने आगे पाप कीये औन औन सभों को लीखता हूं की
३ जो मैं परेन आउं तो न छोडुंगा। जैसा की तुम लोग मुझ में
मसीह के कहने का पनमान ढुंढते हो जो तुमहाने लीये नीनबल
४ नहीं है पनंतु तुमहों में सामनथी है। कयोंकी यदपी वुह
नीनबलता से कुनुस पन माना गया तथापी वुह इसन के पना-
कनम से जीता है औन हम भी उस में नीनबल हैं पन उसके
संग इसन के पनाकनम से जो तुमहाने बीखे में है जीवेंगे।

५ अपने को जांचो की तुम लोग बीसवास में हो की नहीं अपने
को परखो क्या तुम लोग आप को नहीं जानते की यसु मसीह
६ तुमहों में है नहीं तो तुम लोग अखरे हो। पर मैं आसा
रखता हूं की तुम लोग जानोगे की हम अखरे नहीं हैं।
७ परंतु मैं इसर से बीनती करता हूं की तुम लोग कुछ बुराई न
करो इस कारन नहीं की हम खरे हुए परगट होवें परंतु की
तुम लोग भला करो यदपी हम अखरे के समान होवें।
८ क्योंकी हम सत का बीरुध कुछ नहीं कर सकते पर्नतु सत के
९ कारन। क्योंकी जब नीरबल हैं तब हम लोग परसन हैं
और तुम लोग बली हो और हम तुमहारी सीधता याहते हैं।
१० इस लीये मैं बीयोगी होके ये बातें लीखता हूं न होवे की मैं
साख्यात होके तुमहों पर उस पराकरम के समान जो परभु ने
मुझे सुधारने के लीये दीया और ढा देने के लीये नहीं
११ कठोरता करूं। अंत में हे भाइयो कुसल रहो सीध होओ
धीरज धरो एक मता होके मीले रहो परेम और मीलाप का
१२ इसर तुमहारे संग रहेगा। एक दुसरे का पवीतर युमा लेकर
१३ नमसकार करो। समसत साधु लोग तुमहें नमसकार कहते
१४ हैं। परभु यसु मसीह का अनुग्रह और इसर का परेम
और धरमातमा की मीलाप तुम सभों के संग होवे आमीन।

पुलुस की पतनी गलतीओं के।

---

१ पहीला पनव्र।

१ पुलुस पनेनीत जो मनुष्य से नहीं न मनुष्य के दुवाना से पनंतु
यसु मसीह से ग्रीन इसन पीता से जीसने उसके। मीनतकन में
२ से उठाया। ग्रीन साने भाइयों से जो मेने संग हैं गलतीयः
३ की मंडलीयों के। इसन पीता से ग्रीन हमाने पनभु यसु
४ मसीह के ग्रीन से अनुगीनह ग्रीन कुसल तुमहों पन होवे। उसने
हमाने पापें के कानन अपने के दीया की वुह हमें के हमाने
पीता इसन की इछा के समान इस वुने वृनतमान जगत से
५ व्रया लेवे। अनंत महातम उसी के लीये होवे ग्रामीन।
६ मैं अयंभीत ऊं की तुम लोग उस से जीस ने तुमहें मसीह के
अनुगीनह में वुलाया ऐसा सीघन ग्रीनही मंगलसामायान में
७ हट गये। जो दुसना नहीं है पनंतु कीतने हैं जो तुमहें
व्रयाकुल कनते हैं ग्रीन याहते हैं की मसीह के मंगल समायान
८ के व्रीगाड़ें। पनंतु यदी हम लोग अथवा सनग से कोइ दुत
उस मंगल समायान का छोड़ जो हमने तुमहें दीया कोइ
९ दुसना उपदेस कने वुह सनापीत होवे। जैसा हमने ग्रागे कहा
वैसा मैं फेन कहता ऊं का जो कोइ कोसी दुसने मंगलसमायान
के तुमहें सोंप्पावे उसे छोड़ जीसे तुमहों ने पाया वुह सनापीत

१० होवे। क्या मैं अव मनुष्यन का अथवा इसन का मन
जोगावता हुं अथवा क्या मैं मनुष्यन की नुय ढुंढ़ता हुं क्योंकी
जो मैं मनुष्यन को नुयावता तो मैं मसीह का दास न होता।
११ पन हे भाइयो मैं तुमहें येता देता हुं की वुह मंगलसमायान
जीसका उपदेस मुझ से कीया गया सो मनुष्य की नीत से नहीं है।
१२ क्योंकी मैं ने उसको न तो मनुष्य से पाया न सीप्पाया गया
१३ पर्नतु यसु मसीह के पनकासीत से पाया। क्योंकी तुम लोग
मेनी पीछली याल को जव मैं यहुदीयों के मत में था सुने हो
की मैं इसन की मंडली को व्रे पनीमान सताता था औन उजाड़-
१४ ता था। औन यहुदीयों के मत में अपनेही देस के लोगों में
अपने समान के व्रहुतेनें जन से अधीक य तकानी की, की
१५ अपने पीतनन के व्रेवहानों पन अतयंत जलीत था। पनंतु जव
इसन पनसंन हुआ जीसने मुझे माता के गनभ से अलग कनके
१६ अपने अनुगोनह से वुलाया। की अपने पुतन को मुझ पन
पनगट कने की मैं उसका उपदेस अंनदेसीयों के व्रीय में
१७ कनं तुनंत मैं ने मांस औन लहु के संग जुकत न की। औन
यनोसलीम में उनके पास जो मुझ से पहीले पनेनीत थे न गया
१८ पनंतु मैं अनव को गया फेन दमीसक को फीना। फेन तीन
व्रनस पीछे पतनस से भेंट कनने को यनोसलीम को गया औन
१९ उसके संग पंदनह दीन नहा। पनंतु पनेनीतों में से कीसी
२० दुसने को न देप्पा केवल पनभु के भाइ याकुव को। अव जो
व्रातें मैं तुमहों को लीप्पता हुं देप्पो इसन के आगे मैं मीथ्या
२१ नहीं कहता। उसके पीछे मैं सीनीया औन कलकीया के देस
२२ में आया। औन यहुदीयों की मंडली जो मसीह में थीं मेने
२३ मनुप से अपनीयीत थीं। पनंतु केवल उनहों ने सुना था की
वुह जो हम को आगे संतावता था अव उस व्रीसवास का उपदेस
२४ कनता है जीसे उसने आगे नसट कीया था। औन उनहों ने
मेने व्रीप्पै में इसन की सतुत की।

२ दुसना पनव्र।

१ तव्र यौदह व्रनस पीछे मैं व्रननव्रास के संग तीतस को भी
२ संग लेके य़नोसलीम को फेन गय़ा। पनंतु मेना जाना पन-
कासीत से ऊआ औान वुह मंगलसमाचान उनहें सुनाय़ा जीसका
उपदेस मैं अंनदेसीय़ों में कनता ऊं पनंतु ऐकांत में पनतीसठीत
३ लोगों को न होवे की मैं व्रय़नथ दौड़ों अथवा दौड़ा था। पनंतु
तीतस युनानी को जो मेने संग था प्पतनः कनवाने का आवेसक
४ न ऊआ। औान यह झुठे भाइय़ों के कानन से जो छीपके
घुस आऐ की उस मुकत का जो हम लोग मसीह य़सु में नप्पते
५ हैं भेद लेवें की वे हमों को व्रंघन में लावें। पन हम ऐक
घड़ी भी उनके व्रस में न ऊऐ की मंगलसमाचान की सचाइ
६ तुमहाने पास व्रनी नहे। पनंतु जो सनेसठ देप्पे जाते थे सो
जैसे थे वैसे थे मुझे कछ काम नहीं है इसन कीसी के मनुप्पतव
पन दीनीसट नहीं कनता कय़ोंकी इनहों ने जो उनमें मान
७ थे मुझे में कुछ नहीं व्रढाय़ा। पनंतु उसका व्रीपनीत जव्र उनहों
ने देप्पा की अप्पतनः लोगों के लीय़े मुझे मंगलसमाचान सोंपा
८ गय़ा जैसा की पतनस को प्पतनः कीय़े गय़ों के। कय़ोंकी
जीसने पतनस के पनेनीतत के लीय़े प्पतनः कीय़े गय़ों में
गुनकानी की उसीने मुझे में भी अंनदेसीय़ों के लीय़े गुनकानी
९ की। औान जव्र य़ाकुव्र औान काफा औान य़ुहना ने जो प्पंभे
की नाइं दीप्पाइ देते थे उस अनुगोनह को देप्पा जो मुझे
दीय़ा गय़ा था तो उनहों ने मुझे को औान व्रननव्रास को साहे
के दहीने हाथ दीय़े की हम अंनदेसीय़ों के औान वे प्पतनः
१० कीय़े गय़ों के पास जावें। पनंतु इतना चाहा की हम दनीदनों
११ को समनन कनें उसी व्रात में मैं भी पउनतीला था। औान
जव्र पतनस इनताकीय़ः में आय़ा तो इस लीय़े की वुह दोप्प
१२ के जोग था मैं ने उसका सामना कीय़ा। कय़ोंकी य़ाकुव्र के

यहां से कइ प्रेक के आनने से पहीले उसने अंनदेसीयों के संग
प्याया पनंत जव्र वे आये तव्र वुह प्पतनःकीयेगयों के भै से पीछे
१९ हटा औान अपने को अलग कीया। औान औान यहुदीयों
ने भी उसी के समान डौंभ कीया यहां लों की उनहों के डौंभ
१४ ने व्रननव्रास को भी ले लीया। पनंतु जव्र मैं ने देप्पा की वे मंगल
समायान की सयाइ के समान प्पनाइ से नहीं यलते मैं ने
सभों के आगे पतनस को कहा की जो तु यहुदी होकन अंनदे-
सीयों के व्रेवहान पन यलता है औान यहुदीयों के समान
नहीं तु कीस कानन अंनदेसीयों को व्रनव्रस यहुदीयों के
१५ व्रेवहान पन यलावता है। हम लोग जो सभाव से यहुदी हैं
१६ औान अंनदेसीयों में के पापी नहीं। यह समझ कन की मनुष्प
व्रैवसथा की कीनया से नहीं पनंतु यसु मसीह पन व्रीसवास लाने
से नीनदोष्प ठहनता है हम लोग भी यसु मसीह पन व्रीसवास
लाए हैं की हम लोग यसु मसीह पन व्रीसवास लाने से न की
व्रैवसथा की कीनया से नीनदोष्प ठहनें कयोंकी कोइ मनुष्प
१७ व्रैवसथा की कीनया से नीनदोष्प न ठहनेगा। पनंतु जव्र हम
प्पोज में हैं की मसीह के कानन से नीनदोष्प ठहनें हम आप
पापी पाये जावें तो कया मसीह पाप का सेवक है ऐसा न होवे।
१८ कयोंकी जो मैं उन व्रसतुन को जीनहें मैं ने ढा दीया फीनके
१९ व्रनाउं तो मैं अपने को अपनाधी मान लेता हुं। कयोंकी मैं
व्रैवसथा के कानन व्रैवसथा के औान से मनगया हुं की इसन के
२० लीये जाओं। मैं मसीह के संग कुनुस पन टांगागया हुं तीसपन
भी मैं जीवता हुं तथापी मैं नहीं पनंतु मसीह मुझ मे जीवता
है औान वुह जीवन जो अव्र मैं सनीन में जीवता हुं मैं इसन
के पुतन के व्रीसवास से जीवता हुं की उसने मुझे पीआन कीया
२१ औान आपका मेने लीये दीया। औान मैं इसन के अनुगीनह
को व्रीनथा नहीं कनता कयोंकी जो धनम व्रैवसथा से मीले तो
मसीह व्रयनथ मुआ।

३ तीसरा पर्व।

१ हे अबीबेक गलतीयो कीसने तुमहों पर टोना कीया की सत
को न मानो जीनकी आंखों के आगे यसु मसीह परतीछ
रीत से दीखाया गया ऐसा जैसा की तुमहारे मध में क्रुस पर
२ टांगा गया। तुमहों से मैं केवल इतना जानने चाहता हुं की
तुमहों ने ब्यवसथा की कीरया से आतमा को पाया अथवा
३ बीसवास के सुनने से। कया तुम लोग ऐसे अबीबेक हो की
आतमा में आरंभ करके सरीर से अब सीध हुऐ हो।
४ कया तुमहों ने इतनी बातों को बयरथ सहा यदी अब
५ भी बयरथ होय। सो वुह जो तुमहें आतमा देता है और
तुमहों में आसचरज करम करता है सो ब्यवसथा पर चलने
६ से अथवा बीसवास के सुनने से। जैसा की इबराहीम ईसर
पर बीसवास लाया और वुह उसके लीये धरम गीना गया।
७ सो जानो की वे जो बीसवास के हैं सोही इबराहीम के पुतर
८ हैं। और गरंथ ने आगे देख के की ईसर अंनदेसीयों को
भी बीसवास की रीत से नीरदोख ठहरावेगा इबराहीम को
आगेही मंगलसमाचार दीया की समसत अंनदेसी तुझ में
९ आसीस पावेंगे। सो वे जो बीसवास के हैं बीसवासी इबराहीम
१० के संग आसीस पावते हैं। इस लीये जीतने ब्यवसथा की
कीरया के हैं सराप के तले हैं कयोंकी लीखा है की हर एक
जो ब्यवसथा के पुसतक में लीखी हुई समसत बातों को नहीं
११ मानता सरापीत है। परंतु की कोइ ईसर की दीसटी में
ब्यवसथा से नीरदोख नहीं ठहरता सो परतछ है कयोंकी
१२ धरमी बीसवास से जीयेगा। अब ब्यवसथा बीसवास से नहीं
१३ परंतु वुह मनुष्य जो उनहें माने उनसे जीयेगा। मसीह ने
हमें ब्यवसथा के सराप से छुड़ाया की वुह हमारी संती सरापीत
हुआ कयोंकी लीखा है की हरएक जो बीरछ पर टांगा है

१४ सरापीत है। जीसतें इब्राहीम का आसीस अंनदेसीयों पर
ईसु मसीह के दुवारा से पहुंचे की हम लोग बीसवास के
१५ दुवारा से आतमा की परतीगा पावें। हे भाइयो मैं मनुष्यन की
रीत पर बोलता हूं यद्पी केवल मनुष्य का बाचा होय तथापी
जो वुह सथीर कीया जाय कोइ मीटावता नहीं और न उस में
१६ कुछ मीलावता है। अब इब्राहीम और उसके बंस से
परतीगा की गइ है वुह नहीं कहता और तेरे बंसों को जैसा
बहुतों के परंतु जैसा एक के कारन और तेरे बंस को जो
१७ मसीह है। अब मैं यह कहता हूं की उस बाचा को जो ईसर
ने मसीह के बीष्ये में आगे ठहराया बैवसथा जो चार सौ तीस
बरस के पीछे हुइ मीटा नहीं सकती की वुह परतीगा नीसफल
१८ हो जावे। कयोंकी जो अधीकार बैवसथा से होय तो परतीगा
के कारन से नहीं परंतु ईसर ने इब्राहीम को परतीगा से
१९ दीया। सो बैवसथा कीस काम की है वुह अपराधों के लीये
मीलाइ गइ जब लों की वुह बंस जीसके लीये परतीगा की गइ
आवे दूतों के ओर से एक बीचवइ के हाथ में सौंपी गइ।
२० अब बीचवइ एक का नहीं होता परंतु ईसर एक है।
२१ सो बैवसथा कया ईसर की परतीगा से बीरुध है ऐसा न होवे
कयोंकी जो ऐसी बैवसथा दी गइ होती जो जीवन दे सकती
२२ तो सच मुच धरम बैवसथा से मीलता। परंतु गरंथ ने सभों
को पाप के तले ठहराया की वुह परतीगा जो ईसु मसीह पर
२३ बीसवास लाने से है बीसवासीयों को दी जाय। परंतु जब
बीसवास नहीं आया हम बैवसथा के तले थे और उस बीसवास
२४ के लीये जो पीछे परगट होनीहार था बंधे थे। सो बैवसथा
हम सभों की गुरु ठहरी की मसीह लों पहुंचावे की हम लोग
२५ बीसवास से नीरपराध ठहरें। पर जब बीसवास आचुका तो
२६ फेर हम लोग गुरु के बस में नहीं रहते। कयोंकी तुम सबके
२७ सब ईसु मसीह के बीसवास से ईसर के पुत्र हो। कयोंकी

तुमहों में से जीतनों ने मसीह में सनान पाया मसीह को पहीन
२८ लीया। वहां न यहूदी न युनानी है न बंधा हुआ न छुटा
हुआ है और न पुरुष न इसतीरी है कयोंकी तुम सबके
२९ सब मसीह यसु में एक हो। और जो तुम लोग मसीह के
हो तो इबराहीम के बंस हो और परतीगा के समान
अधीकारी हो।

४ चौथा परब।

१ अब मैं कहता हुं की अधीकारी जब लों बालक है उस में
२ और दास में भेद नहीं यदपी वुह सबका सामी है। परंतु
उस समय लों जो पीता ने ठहराया है अधापकों और अधक्षों
३ के बस में रहता है। ऐसाही हम लोग भी जब लड़के थे
४ जगत की रीत के बंधन में थे। परंतु जब संपुरनता का समय
आया तब इसर ने अपने पुतर को भेजा जो इसतीरी से उतपंन
५ होके ब्यवसथा के बस में पड़ा। की वुह उनहों को जो ब्यवसथा
के तले थे छुड़ावे की हम लेपालक पुतर होने का पद पावें।
६ और तुम जो पुतर हो इसी के कारन से इसर ने अपने पुतर
के आतमा को तुमहारे अंतःकरन में पीता पीता पुकारते हुए
७ भेजा। सो तु आगे दास नहीं परंतु पुतर और जो पुतर है
८ तो मसीह के कारन से इसर का अधीकारी है। परंतु तुम
लोग आगे जब इसर को नहीं पहीचानते थे उनके बंधन में
९ थे जो परकीरत से इसर नहीं। परंतु अब जब तुमहों ने
इसर को पहीचाना अथवा रीज करके इसर ने तुमहें पहीचाना
तुम लोग फेर कयों इन दुरबल और दरीदर रीतीन के ओर
जाते हो और चाहते हो की फेर उनके बंधन में पड़ो।
१० तुम लोग दीनों और महीनों और समयों और बरसों को
११ मानते हो। मैं तुमहारे लीये डरता हुं न होवे की मैं ने जो
१२ तुमहों पर परीसरम कीया है बेअरथ होवे। हे भाइयो मैं

तुमहारी बीनती करता हुं की मेरी नाईं हे। जाओ कयोंकी
मैं तुमहारी नाईं बन गया की तुमहें ने मेरा कुछ बीगाड़ा
१३ नहीं। तुम लोग जानते हो की मैं ने पहीले से देह की
दुरबलता से तुमहें के। मंगलसमाचार का उपदेस दीया।
१४ और तुमहें ने मेरी उस परीछा की जे। मेरे देह में थी नींदा
न की और न तयाग कीया परंतु मुझ के। ईसर के दुत के ऐसा
१५ हां मसीह यसु की नाईं गरहन कीया। से। तुमहारा जाना
हुआ आसीरबाद कहां कयोंकी मैं तुमहें पर साछी देता हुं
की जे। हो सकता ते। तुम लोग अपनी आंखें नीकाल के मुझे
१६ देते। से। इस कारन ‍ी मैं तुमहें सत कहता हुं कया मैं
१७ तुमहारा बैरी हुआ। वे तुमहारे मन के। जलीत करते हैं
परंतु भलाई से नहीं हां वे तुमहें बाहर कीया चाहते हैं की
१८ तुम लोग उनहें जलीत करे।। परतु अछी बात में सरबदा
जलीत होना अछा है न केवल की जब मैं तुमहारे साछात
१९ में हुं। हे मेरे बचो जीनके लीये मैं जनने की पीड़ा में फेर
२० हुं जब लें। मसीह तुमहें में रुप पकड़े। मैं चाहता हुं की
अब तुमहारे पास आउं और अपना सबद ‍ दलें। कयोंकी
२१ मुझे तुमहारा संदेह है। मुझ से कहो तुमलोग जे। बैवसथा
के बंद में हुआ चाहते हो कया बैवसथा के। नहीं सुनते।
२२ कयोंकी लीख्या है की इबराहीम के दे। पुतर थे एक दासी से
२३ दुसरा नीरबंध से। परंतु जे। दासी से था से। सरीर की रीत
पर उतपंन हुआ परंतु नीरबंध से था से। परतीगा से था।
२४ जे। बातें एक दीरीसटांत है कयोंकीये दे। बाचा हैं एक ते।
सीना परबत से जे। नीरे बंधन के लीये जनती है यह हाजीरः
२५ है। कयोंकी यह हाजीरः अरब का सीना परबत है और
यरोसलीम से जे। अब है मीलती है और अपने बालकों के
२६ संग बंधन में है। परंतु यरोसलीम जे। उपर है नीरबंध है
२७ से। हम सभों की माता है। कयोंकी यह लीख्या है की हे

व्रांह जो नहीं जनती मगन हो और तु जो पीन नहीं जानती
यीलाके ने। कयोंकी नांड के लड़के अहीवाती के लड़कों से
२८ अधीक हैं। अब हे भाइयो हम लोग इसहाक की नाई
२९ पनतींगा के पुतन हैं। पन जैसा उस समय में वुह जीसकी
उतपती सनीन की नीत से थी उसे जीसकी उतपती आतमा की
३० नीत पन थी सतावता था वैसा अब भी होता है। पनंतु
गनंथ कया कहता है की दासी को और उसके पुतन को दुन कन
कयोंकी दासी का पुतन छुटी ऊइ के पुतन के संग अधीकानी
३१ न होगा। सो हे भाइयो हम लोग दासी के नहीं पनंतु छुटी
ऊइ के पुतन हैं।

५ पांयवां पनव।

१ सो जो मुकत मसीह ने हमें दी है उस पन सथीन नहो और
२ बंधन के जेतले फेन के न फंसो। देष्पो मैं पुलुस तुमहों
से कहता ऊं जो तुम लोग ष्पतनः कनवाओ तो मसीह से तुमहें
३ कुछ लाभ न होगा। और मैं हन एक मनुष्य को जीसने
ष्पतनः कनवाया है फेन कह सुनावता ऊं की वह समसत
४ व्रैवसथा पन यलने का नीनी है। तुमहों में से जो कोइ
व्रैवसथा के दुवाना से नीनदोष्प ऊए हैं उनके लीये मसीह
५ नीसफल ऊआ है वे अनुगीनह से भनीसट हैं। कयोंकी
हम लोग आतमा के दुवाना से व्रीसवास से धनम के आसा की
६ व्राट जोहते हैं। कयोंकी यसु मसीह में न ष्पतनः न अष्पतनः
से कुछ पनापत होता पनंतु व्रीसवास जो पनेम से कानज कनता
७ है। तुम लोग तो अछी नीत से दौड़ते थे कीसने तुमहें नोक
८ दीया की अब सत के आधीन न होओ। यह मत तुमहाने
९ बुलावनीहान के ओन से नहीं। थोड़ा सा ष्पमीन साने पींड
१० को ष्पमीन कन डालता है। तुमहाने कानन पनभु के ओन
से मुझे भनोसा है की तुमहाना मन औनही न होगा पनंतु वुह जो

तुमहें व्याकुल करता है कोइ कयों न हो अपना दंड भोगेगा।
११ और हे भाइयो जो अब मैं खतनः का उपदेस करुं तो मैं
अब लों कयों सताया जाता हूं तो कुरुस का ठोकर उठ गया।
१२ मैं चाहता हूं की वे जो तुमहें व्याकुल करते हैं आप कट जायें।
१३ कयोंकी हे भाइयो तुमलोग तो मुकत में बुलाये गये हो केवल
मुकत को सरीर के बेवहार के कारन मत करो परंतु परेम से
१४ एक दुसरे को सेवा करो। कयोंकी समसत बेवसथा इसी एक
बात में पुरी हुइ है की तु अपने परोसी को अपने समान
१५ पीआर कर। परंतु जो तुम लोग एक दुसरे को दांत काटो
और भछन करो तो सोचेत रहो की कहीं एक दुसरे से नास
१६ न हो जाओ। सो मैं कहता हूं की आतमा में चलो तो तुम
१७ लोग सरीर की बांछा को पुरा न करोगे। कयोंकी देह की
कामना आतमा से बीरुध है और आतमा की देह से बीरुध
और ये एक दुसरे से बीपरीत हैं यहां लों की तुम लोग जो
१८ कछ कीया चाहते हो उसे नहीं कर सकते। परंतु जो तुम
लोग आतमा से चलाए जाओ तो बेवसथा के तले नहीं हो।
१९ अब देह के कारज तो परगट हैं जो ये हो हैं परसतीरीगमन
२० बेभीचार अपवीतरता कामुकता। देव पुजा टोना करना
२१ दुसटता झगड़े होसका करोध बीवाद दंगा उपदरव। डाह
हतया मतवालपन घुमघाम और एसे एसे जीनके बाब्पै में मैं
तुमहें आगे से कहता हूं जैसा मैं ने आगे कहा की एसे कारज
२२ करनीहार इसर के राज के अधीकारी न होंगे। परंतु
आतमा का फल परेम है और आनंद और कुसल और
२३ सहना और कोमलता और भलाइ और बीसवास। नमरता
२४ और संयम होना कोइ बेवसथा एसों की बीरोधी नहीं। और
उनहों ने जो मसीह के हैं देह के अभीलास और कामना
२५ को कुरुस पर मारा है। जो हम लोग आतमा में जीवें तो हम
२६ आतमा में भी चलें। हम अनरथ बड़ाइ के चाहनीहार

न होवें और न एक दुसरे को खीजायें और न एक दुसर
पर डाह करें।

६ छठवां पत्र।

१ हे भाइयो जो कोइ जन कीसी दोष में पड़ जाय तो तुम
लोग जो आतमीक हो एैसों को आतमा की कोमलता से थाम
लेओ और तु चैाकस रह न होवे की तु भी परीछा में पड़े।
२ तुम लोग एक दुसरे का भार उठा लेओ और यूं मसीह की
३ ब्रैवसथा को संपुरन करो। कयोंकी जो कोइ कुछ न होके आप
४ को कुछ समझे तो वुह अपने को छल देता है। परंतु हर एक
अपनी अपनी करनी को जांचे और तब वुह अपने में आनंद
५ करना पावेग, और दुसरे में नहीं। कयोंकी हर एक अपनाही
६ बोझ उठावेगा। जो कोइ बचन में सीष्पा पावे सीष्पावनीहार
७ को समसत अछी बसतुन में साझी करे। भरमाए न जाओ
इसर थीढाया न गया कयोंकी जो कुछ मनुष्य बोता है सोइ
८ वुह लवेगा। कयोंकी जो कोइ अपने देह के लीये बोता है
सो देह से सड़ाव लवेगा परंतु जो आतमा के लीये बोता है
९ आतमा से अनंत जीवन लवेगा। और हमें याहीये की भला
कारज करने में थक न जावें कयोंकी जो हम लोग दुरबल न
१० होवें तो ठीक समै में लवेंगे। सो हम लोग जब जब अवसर
पावें आओ सब से भलाइ करें नीजकरके उनसे जो बीसवास
११ के घराने के हैं। तुम लोग देष्पते हो की मैं ने अपने हाथ से
१२ कैसी बड़ी पतरी तुमहें लीष्पी है। जीतने की देह की सोभा
याहते हैं वे तुमहें ष्पींयते हैं की ष्पतनः करवाओ सो केवल
इतने लीये की वे मसीह के क्रुस के कारन संताए न जावें।
१३ कयोंकी न वे आप जो ष्पतनः कीये गये हैं ब्रैवसथा को मानते
हैं पर याहते हैं की तुम लोग ष्पतनः करवाओ की वे तुमहारे
१४ देह के बीष्पै में बड़ाइ करें। परंतु इसर न करे की मैं बड़ाइ

करु केवल हमारे परमेश्वर यिसु मसीह के क्रुस के विषय में जीस से
जगत मेरे लीये क्रुस पर खींचा गया और मैं जगत के लीये।
१५ क्योंकी मसीह यिसु में न खतनः कुछ परापत करता है और न
१६ अखतनः परंतु नई सीरीसट। और जीतने इस विवहार पर
चलते हैं वीसराम और दया उनके लीये और इसर के
१७ इसराइल के लीये होवे। अब से आगे कोई मुझे वयाकुल
न करे क्योंकी मैं अपने देह पर परमेश्वर यिसु का चीनह लीये
१८ फीरता हुं। हे भाइयो हमारे परमेश्वर यिसु मसीह का अनुगीरह
तुमहारे आतमा के संग होवे आमीन।

पुलुस की पतनी अफरसीयां को

१ पहीला पनब।

१ पुलुस के ओन से जो इसन की इछा से यसु मसीह का
पनेनीत है उन साधुन को जो अफरसस में मसीह यसु में
२ बीसवासी हैं। हमाने पीता इसन औान पनभु यसु मसीह से
३ अनुगीनह औान कुसल तुमहों पन होवे। हमाने पनभु यसु
मसीह के पीता इसन को धंन जीसने हमों को सनगीय बसतुन
४ में अनेक पनकान का आतमीक बन दीया। जैसा की उस ने
हमों को जगत के आनंभ से पहीले उस में युना की हम लोग
५ उसके आगे पनेम में पवीतन औान नीनदोष्प होवें। उसने
हमको बदा था की अपने सुमनमान की इछा के समान यसु
६ मसीह से अपना लेपालक पुतन कनके। अपने अनुगीनह की
महीमा को पनगट कने जीस में उसने हमों को उसी पीनीय
७ में गनाह्य कीया। जीस में हम लोग उसके अनुगीनह के धन
के समान उसके लोहू के कानन से उधान अनथात पाप का
८ मोयन पावते हैं। जीसमें उसने हमों को समसत गयान औान
९ बुध अधीकाइ से दीया। की उसने अपनी इछा के भेद को
जो अपने सुमनमान के समान जीसे उसने अपने में ठहनाया
१० हमों पन पनगट कीया। की समयों की संपुननता में सनग
औान पीनथीवी दोनों में जीतनी बसतु हैं सभों को मसीह
११ में मीलाके एक के बस में कने। उसके कानन से हमों ने

भी एक अधीकार पाया की बदे ऊए होके उसके ठहराए ऊए
के समान जो अपनीही इछा के मंतर की नीत से सब कुछ
१२ करता है। की हम लोग जीनहों ने मसीह पर पहीले भरोसा
१३ कीया उसके ऐसनय्र की सतुत का कारन होवें। जीस में
तुमहों ने भी जब सचाइ के बचन को सुना जो तुमहारे उधार
का मंगलसमाचार है जीस में बीसवास भी लाके तुम लोग
१४ परतीगा के धरमातमा से छाप कीये गये। जो हमारे
अधीकार का बयाना है जब लों मोल ली ऊइ बसतु का उधार
१५ कीया जाय और उसके ऐसनय्र की बड़ाइ होवे। इस लीये
मैं भी तुमहारे बीसवास को परभु यसु पर और परेम को
१६ समसत साधुन पर सुनके। तुमहारे कारन धन मानने में
और अपनी परारथना में तुमहारा समरन करने में नहीं
१७ थमता। जीसतें हमारे परभु यसु मसीह का इसर जो ऐसनय्र
का पीता है तुमहें परकासीत और गयान का आतमा देवे की
१८ तुम लोग उसको पहीचानो। की तुमहारे समझ की आंखें
परकासीत होवें की तुम लोग जानो की उसके बुलावने की
कया आसा है और साधु लोग जो उसके अधीकार बने हैं
१९ उस में कया ऐसनय्र का धन है। और उसके अतयंत
सामरथ की बड़ाइ हमों पर जो बीसवास लाते हैं कया है जो
२० उसके पराकरम के सामरथ के कारज के समान है। जो उसने
मसीह में कीया जब उसने उसे मीरतु से उठाया और अपनेही
२१ दहीने और सरगीय्र सथान पर बैठाके। समसत परभुता
और पराकरम और सामरथ और राज और हर एक नाम से
जो न केवल इस जगत में परंतु आवनीहार जगत में भी लीया
२२ जाता है स्रेसठ कीया। और समसत बसतें उसके चरन के
तरे कीयां और उस को मंडली के लीये सब का सीरा
२३ बनाया। जो उसका देह है उसकी भरपुरी जो सबको सब
में भरता है।

२ दूसरा पर्ब्ब।

१ और उसने तुमहों को जीलाया जो अपराधों और पापों में
२ मीरतक थे। जीन में तुम लोग पीछले दीनों में इस जगत के
ब्यवहार के समान चलते थे अरथात आकास के पराक्रम के
अधक्ष की रीत पर वुह आतमा जो अब अगया भंग करनीहार
३ पुत्रों में कारज करता है। जीनहों में हम सब भी अपने
सरीर की कामना में जीवन नीर्बाहते थे को सरीर की और
मन की इछा करते थे और सुभाव से औरोंही की नाइं क्रोध
४ के संतान थे। परंतु ईसर दया में धनमान होके अपने बड़े
५ प्रेम से जीस से उसने हमों को पीआर कीया। अरथात जब
हम लोग पापों में मीरतक थे हमों को मसीह के संग एकठे
६ जीलाया तुमहों ने अनुग्रीरह से तरान पाया है। और हमों
को एकठे उठाया और मसीह ईसु में सरगीय सथानों पर
७ एकठे बैठाया। जीसतें वुह अपने अनुग्रीरह से जो मसीह
ईसु के कारन से हमों पर है आवनीहार समै में अपनी दया
८ के अतयंत धन को दीखावे। क्योंकी तुमहों ने अनुग्रीरह
से बीसवास के कारन तरान पाया है और वुह तुमहारे ही
९ ओर से नहीं वुह ईसर का दान है। कीरीया से नहीं न हो
१० की कोई बड़ाई करे। क्योंकी हम लोग उसके बनाए हुए
कारज हैं मसीह ईसु में अछे कारजन के लीये सीरजे गये
जीनहें ईसर ने आगे ठहराया की हम लोग उन में चलें।
११ इस कारन समरन करो की तुम लोग आगे सरीर में परदेसी
थे और उनके जो खतनः कीये गये कहाते हैं अखतनः कहाते
१२ हो की उनका खतनः देह में और हाथ से हुआ था। की
उस समय में तुम लोग मसीह हीन थे और इसराइल के राज
से परदेसी और परतीगा के नीयमों से अनजान थे और
१३ आसा हीन होके जगत में ईसर हीन थे। परंतु अब मसीह

यसु में तुम लोग जो आगे दुर थे मसीह के लोऊ के कानन
१४ से नीकट कीये गये हो। क्योंकी वही हमारा मीलाप है
जीसने दो को एक कीया और मध की भीत के व्रोछेद को
१५ ढा दीया। अपने देह में सतनुता को मीटा दीया अर्थात
व्यवसथा की आग्याओं को जो व्रेवहारों में थीं की वुह अपने
१६ में मीलाप कर के दो से एक नया मनुष्य बनावे। और सतनुता
को व्रध कर के वुह क्रूस से दोनो को एक देह बना के ईसर
१७ से मीलावे। और आके तुमहें जो दुर थे और उनहें जो
१८ नीकट थे मीलाप का उपदेस दीया। कयोंकी उसी के कारन से
१९ एकही आतमा से हम दोनो पीता लों पहुंचते हैं। सो अब
तुम लोग अनजान और परदेसी नहीं हो परंतु सोंधों के एकही
२० नगर के वासी और ईसर के घराने के हो। और परेरीतों
और आगमगयानीयों पर जो नेउ हैं जोड़े गये हो यसु मसीह
२१ आप कोने का सीरा है। जीस में सारी जोड़ाई व्रीध के साथ
एकठे कीये जाके ईसर के लीये पवीतर मंदीर उठता जाता
२२ है। उस में तुम लोग भी ईसर के नीवास के लीये आतमा से
एकठे जोड़ाए गये हो।

३ तीसना पत्र।

१ इस कारन मैं पुलुस तुम परदेसीयों के लीये यसु मसीह का
२ बंधुआ हूं। जो तुमहों ने सुना है की ईसर के अनुग्रह का
३ बंटवारा तुमहारे लीये मुझे दीया गया। की उस ने परकासीत
से भेद को मुझे जनाया जैसा मैं संक्षेप से आगे लीख चुका।
४ उसे पढ़ के जान सको की मैं ने मसीह के भेद को कया समझा।
५ जो अगीले समयों में मनुष्यन के संतानों को न जनाया गया
जीस रीत से उसके पवीतर परेरीतों और आगमगयानीयों
६ पर आतमा से परकास कीया गया की परदेसी मंगलसमाचार
के कारन से अधीकार में संगी और एकही देह के और मसीह

७ में उस की पनतीगा के भागी होवें। जीस का मैं इसन के
अनुगीनह के दान के समान जो उसके सामनथ की गुनकानी से
८ मुझे मीला सेवक वना। मुझे जो समसत अतयंत छोटे सीघों
से छ टा ऊं यह अनुगीनह दीया गया की मैं पनदेसीयों के मघ
९ में मसीह के घंन का जो प्योज से पने है उपदेस देउं। औान
सभों को दीप्पाउं की उस भेद में साझी होना क्या है जो
सनातन समयों से इसन में गुपत था जीस ने समसथ वसतें यसु
१० मसीह से उतपंन कीयां। की अव मंडली के दुवाना से इसन
का नाना पनकान का गयान औान पनभुता औान पनाकनम जो
११ सनगीय सथानें में हैं जाने जायें। जैसा उसने मसीह यसु
१२ हमाने पनभु में सनातन से यु ठहनाया था। जीसमें हम लोग
उसी के वीसवास के संग साहस से औान भनोसा से पझुंयते हैं।
१३ सो मैं याहता ऊं की तुम लोग मेने कसट के लीये जो तुमहाने
कानन है औान तुमहानी वड़ाइ है नीनवल मत होओ।
१४ इसी कानन मैं अपने पनभु यसु मसीह के पीता के आगे घुटने
१५ टेकता ऊं। जीस से सनग में औान भुम पन समसत पनीवान
१६ के नाम नष्पे गये हैं। की वुह अपनी महीमा के घन के समान
तुमहें देवे की तुम लोग उसके आतमा के कानन से अंतन के
१७ मनुष्प में वल से वली कीये जाओ। की मसीह तुमहाने
अंत:कनन में वीसवास से वास कने की तुम लोग पनेम में जड़
१८ पकड़ के औान नेव डालके। समसत सीघों समेत समझ सको
की उसकी यौड़ाइ औान लंवाइ औान गहीनाइ औान उंयाइ
१९ कीतनी है। औान की मसीह के पनेम को जानो जो गयान से
पने है जीसतें तुम लोग इसन की सानी भनपुनी से भन जाओ।
२० अव उसके लीये जो कुछ हम मांग सकें अथवा योंता कन सके उस
से अतयंत अघीक उस सामनथ के समान जो हमें में कानज
२१ कनता है दे सकता है। उसके लीये मंडली में मसीह यसु के दुवाना
से समसत पीढ़ी से पीढ़ी अनंत लों महातम होवे आमीन।

४ चैाथा पत्र।

१ सो मैं परभु का वंधुआ तुमहों से वीनती करता हुं की जीस
२ वुलावा से तुम लाेग वुलाये गये हो उसके जाेग चलो। समसत
नमरता चैार कोमलता के संग संतोष्य से एक दुसरे काे परेम
३ में सहो। चैार वतन करा की आतमा की एकता काे मीलाप
४ के वंघन में रष्या। एक देह चैार एक आतमा है की
तुम लाेग अपने वुलावा की एक आसा में वुलाये गये १।
५।६ एक परभु एक वीसवास एक सनान। एक परमेसर चैार
सवका पीता जाे सव से उपर चैार सव में व्यापत चैार तुम सभाें
७ में। परंतु हम में से हर एक काे मसीह के अनुगीरह के
८ परमान के समान दान दीया गया है। इस कारन वुह कहता
है जव वुह उपर उठ गया तव उसने वंच काे वंधुआ कीया
९ चैार मनुष्यन काे दान दीया। अव वुह जाे उपर उठ गया साे
कया है परंतु यह की वुह पहीले पीरथीवी के नीचे के सथानों
१० में उतरा वुह जाे उतरा साे वही है जाे समसत सरगाें से
भी कहीं परे उठ गया जीसतें वुह समसत वसतुन काे परीपुरन
११ करे। चैार उसने कीतनों काे परेरीत कीया चैार कीतनों काे
आगमगयानी चैार कीतनों काे मंगलसमाचारक चैार कीतनों
१२ काे रष्यवार चैार उपदेसक वनाया। की सेवा के कारज के
लीये साधुन काे सीच करे चैार मसीह का देह सुघरता चला
१३ जाय। जव लाें की हम लाेग वीसवास में चैार इसर के पुतर
की पहीचान में एकता में संपुरन मनुष्य हाेवें अरथात मसीह
१४ की डील की पुरनता लाें पहुंचें। जीसतें हम लाेग आगे काे
लड़के न रहें नहें की उपदेस की हर एक वयारां से इघर
उघर डाेलते फीरें जाे मनुष्यन के कपट छल से जीस से वे
१५ भुलावने के लीये घात में रहते हैं। परंतु परेम में सत काे
पालन करके समसत वसतु में उस में जाे सीर है अरथात

१६ मसीह में वृढ़ते जावें। जीस से समसत देह ठीक नीत से
मीलाया जाके और हर एक जोड़ की भनती से जोड़ा जाके
हर एक वृंद के गुनकारी के समान देह को वृढ़ावता है की
१७ अपने को परेम में सुधारे। इस लीये मैं यह कहता हूं और
परभु में साप्पी देता हूं की तुम लोग आगे को आन परदेसीयों
की याल पर जो अपने मन की भुल में यलते हैं न यलो।
१८ की उनकी वृघ अंधयारी हो गई की वे उस अगयानता के
कारन से जो उनके अंतःकरन की अंधरैाटी से उन में है ईसर
१९ के जीवन से अलग हो गए हैं। उनहों ने सुन होके अपने को
कामातुर की कीरीया में सौंपा की नाना परकार की अपवीत-
२० रता के कारज लालय से करें। परंतु तुमहों ने मसीह को
२१ युं नहीं सीप्पा। तुमहों ने तो उसे सुना है और उस से सीप्पाए
२२ गए हो जैसा की सयाई यसु में है। की अगीली यलन के
वीप्पै मं पुरानी मनुप्पता को जो कपट मदन के समान सड़ी
२३ है उतारो। और अपने मन के आतमा में नए वन जाओ।
२४ और की तुम लोग नई मनुप्पता को पहीन लेओ जो ईसर के
२५ समान धरम में और सत पवीतरता में सीरजी गई है। इस
लीये हर एक झुट को अलग करके हर एक जन अपने परोसी
२६ से सत वोले कयोंकी हम लोग एक दुसरे के अंग हैं। कुरुध
होओ और पाप मत करो न हो की तुमहारे करोध पर सुरज
२७। २८ असत हो जाय। और सैतान को सथान मत देओ। जीसने
योरी की है योरी न करे परंतु वीसेप्प करके परीसरम करे
हाथों से ऐसे कारज करे जो अछे हो जीसतें वुह दरीदरों को
२९ कुछ दे सके। कोई सड़ी वात यीत तुमहारे मुंह से न नीकले
परंतु वुह जो सुधारने के लीये अछी है जीसतें सुननीहारों
३० पर अनुगीरह का कारन होय। और ईसर के धरमातमा
को जीस से तुमहों पर मोप्प के दीन लों छाप कीया गया है
३१ उदास न करो। सारी कड़वाहट और करोध और कोप

श्रोर कोलाहल श्रोर बुरी बात यीत समस्त डाह समेत तुमहों
३१ से अलग कीया जाय। श्रोर एक दुसरे पर दयाल श्रोर
कोमल हो एक दुसरे पर छमा करो जैसा इसर ने भी मसीह
के लीये सेंत से तुमहों पर छमा की है।

५ पांचवां पत्र।

१ सो तुम लोग पीरीय बालकों के समान इसर का पीछा करो।
२ श्रोर परेम में यलो जैसा की मसीह ने भी हमों से परेम कीया
श्रोर हमारी संती अपने का सुगंध के लीये इसर के आगे भेंट
३ श्रोर बलीदान कीया। परंतु बैभीयार श्रोर हर एक परकार
की अपवीतरता श्रोर लालय की यरया लों तुमहों में न
४ होवे जैसा की साधुन को उयीत है। श्रोर न मलीनता न मुढ़
बात न ठठे जो ठीक नहीं है परंतु बीसेक करके सतुत करना
५ होवे। कयोंकी तुम लोग इसे जानते हो की न कोइ बैभीयारी
न अपवीतर जन न लालयी पुरुष जो मुरत पुजक है मसीह
६ के श्रोर इसर के राज में अधीकार रखता है। कोइ तुमहों
को अनरथ बातों से छल न देवे कयोंकी एैसी बातों के कारन
इसर का करोध अगया भंग करनीहार बालकों पर पड़ता है।
७।८ सो तुम लोग उनहों के संग साझी न होश्रो। कयोंकी
तुम लोग आगे अंधकार थे परंतु अब परभु में परकास हो
९ सो परकास के बालकों के समान यलो। कयोंकी आतमा
१० का फल समस्त भलाइ में श्रोर धरम श्रोर सत में है। परखते
११ रहो की परभु को कया भावता है। श्रोर अंधकार के नीसफल
कारजन में साझी मत होश्रो परंतु बीसेष करके उनहें दोष
१२ देश्रो। कयोंकी उनके गुपत कारजन की यरया भी करना
१३ लाज है। परंतु समस्त बसतें जो दुषीत हैं परकास से परगट
की गइ है कयोंकी जो कुछ परगट करता है सो परकास है।
१४ इसी लीये वुह कहता है की तु जो सोता है जाग श्रोर

१५ मीनतकन में से उठ और मसीह तुझे परकास करेगा। सो देखो
की तुम लोग चौकसाई से चलो मुनष्यों के समान नहीं परंतु
१६ गयानीओं के। सो समय को लाभ जानो कयोंकी दीन बुरे
१७ हैं। इस कारन तुम लोग नीरबुध न रहो परंतु समझ रखो
१८ की परभु की इछा कया है। और मदीरा से मतवाले न होओ
१९ जीस में अघीकाई है परंतु आतमा से पुरन होओ। आपुस
में भजन और कीरतन और आतमीक गान गाया करो
२० और मंगल गाके परभु के लीये गाते बजाते रहो। समसत
बसतुन के लीये हमारे परभु यसु मसीह के नाम से इसर का
२१ अनथात पीता का धंन मानो। और इसर के डर में एक
२२ दुसरे के बस में होओ। हे पतनीओ अपने पतीयों के ऐसे बस
२३ में रहो जैसे परभु के। कयोंकी पती पतनी का सीर है जैसा
की मसीह मंडली का सीर और वुह देह का नीसतारक है।
२४ सो जैसा मंडली मसीह के बस में हैं वैसा ही पतनीयां हर एक
२५ बात में अपने पती के। हे पतीयों अपने पतनीयों को
पीआर करो जैसा मसीह ने भी मंडली को पीआर कीया और
२६ अपने को उसकी संती दीया। जीसतें वुह उसको जल से सनान
२७ देके अपने बचन से सुच और पवीतर करे। की वुह उसको
अपने सनमुख एक तेजोमै मंडली करे जीसमें कोई कलंक
अथवा सीकोड़ अथवा कोई ऐसी बसतु न होवे परंतु की पवीतर
२८ और नीरदोप्प होवें। पतीयों को चहीये की अपनी पतनीयों
को ऐसा पीआर करें जैसा अपने देह को वुह जो अपनी पतनी
२९ को पीआर करता है सो अपने को पीआर करता है। कयोंकी
कीसी ने अबलों अपने देह से बैर न कीया परंतु उसको पालता
३० और पोसता है जैसा की परभु मंडली को। कयोंकी हम लोग
उसके देह के उसके मांस के और उसकी हडीयों के अंग हैं।
३१ इसी कारन मनुष्य अपने माता पीता को छोड़ेगा और अपनी
३२ पतनी से मीला रहेगा और वे दोनो एक देह होंगे। यह

नीगुढ़ भेद है पर मैं मसीह के औा मंडलौ के वीषै में बोलता
हुं तौस पर भी हर एक तुमहों में से अपनी अपनी पतनी
३३ को ऐसा पीआर करे जैसा आप को करता है और याहीपे
की पतनी अपने पती का आदरमान करे।

६ छठवां पत्र।

१ हे बालको तुम लोग परभु के लीये अपने माता पीता की
२ अगया में रहो कयोंकी यह ठीक है। तु अपने माता पीता को
३ परतीसठा दे जो पहीली अगया परतीगा सहीत है। जीस तें
तेरा भला होवे और पीरथीवी पर तेरा जीवन अघीक होवे।
४ और हे पीतरो तुम लोग अपने बालकों को उदास करके कुरुच
न करो परंतु इसर की सीप्पा और उपदेस में उनका परतीपाल
५ करो। हे सेवको तुम लोग उनके जो जगत में तुमहारे सामी
हैं अपने मनकी सीघाइ से डरते और थरथराते हुऐ ऐसे
६ अगया के बस में होओ जैसे मसीह के हो। न दरीसट सेवा
से जैसा मनुप्प के परसन करनेहारों से परंतु जैसा मसीह
७ के सेवकों के समान मन से इसर की इछा पर यलो। भला
याहके सेवा करो जैसा परभु की और न जैसा मनुप्पन की
८ करते हैं। की जानते हो जो कोइ कुछ अछा काम करे कया
९ दास कया नीरबंघ परभु से ऐसाही पावेगा। हे सामीयो
तुम लोग भी उनसे ऐसेही करो और घमकी देने में ठकाने से
बाहर न जाओ कयोंकी तुम लोग जानते हो की तुमहारा भी
सामी सरग पर है और वुह कीसी की परगट दसा पर दीठीसट
१० नहीं करता। सो अंत में हे मेरे भाइयो परभु के सामरथ के
११ पराकरम से दीरढ़ होओ। इसर के सारे हथीयार बांघो
१२ की तुम लोग सैतान के छल के संमुप्प ठहर सको। कयोंकी
हम देह से और लोहु से युजनी नहीं करते परंतु परभुता
और पराकरम से और जगत के अंघकार के महाराजों से

१३ औन आतमीक दुसटना से उंये सथान में। इस कानन तुम
लोग इसन के साने हथीयान उठा लेउ की तुम लोग दुष्प के
दीन सामना कन सको औन सव कानज कनके प्पड़े नह सको।
१४ इस लीये अपनी कमन को सतता से कसके घनम का हीलम
१५ पहीनके प्पड़े नहो। औन अपने पावों को कुसल के मंगल
१६ समायान का जुता पहीनाओ। औन सभों पन वीसवास की
ढाल वांघके जीस से तुम लोग उस दुसट के साने अगीन के
१७ भालों को वुहा सको। औन उघान का टोप औन आतमा का
१८ प्पडग जो इसन का वयन है ले लेओ। नीत आतमा में
पनानथना औन वीनती कनते हुए औन उस पन सानीं घुन से
औन गीड़गीड़ाने से समसत घनमी लोगों के कानन जागते नहो।
१९ औन मेने कानन भी की मुहे उयानन दीया जावे की मेना
मुंह नीनभै से प्पुल जावे जीसतें मैं मंगलसमायान के भेद को
२० पनकास कनुं। कयोंकी उसके लीये मैं एक दुत वंद मं हुं
की मैं उसको नीनभै से ऐसा कहुं जैसा मुहे कहा याहीए।
२१ औन जीसतें तुम लोग भी मेने समायान को जानो की मैं कया
कनता हुं तप्पीकस जो पीआना भाइ औन पनभु का वीसवासी
२१ सेवक है तुमहों को सव वातें वताएगा। की मैं ने उसे तुमहाने
पास इसी कानन भेजा की तुम लोग हमानी दसा को जानो
२३ औन वुह तुमहाने अंतःकनन को सांत देवे। भाइयों को
कुसल होवे औन इसन पीता के औन पनभु ग़सु मसीह के औन
२४ से वीसवास के संग पनेम मीले। उन सभों पन जो हमाने
पनभु ग़सु मसीह से सया पनेम नप्पते हैं अनुगीनह होवे
आमीन।

पुलुस की पतरी फीलीपीयों को

---

१ पहीला परब।

१ पुलुस और तीमताउस से जो यसु मसीह के दास हैं फीलीपी
के समसत सीधों को जो मसीह यसु में हैं आयारयों और
२ सेवकों समेत। अनुगीरह और कुसल हमारे पीता इसर
३ और परभु यसु मसीह के ओर से तुमहों पर होवे। मैं जब
जब तुमहें समरन करता हुं अपने इसर का धन मानता हुं।
४ अपनी हर ऐक पराथना में सदा आनंद से तुम सभों के लीये
५ पराथना करता हुं। इस लीये की तुम लोग मंगलसमायार
६ में पहीले दीन से आज लों भागी हुए हो। इसी बात का
नीसयय रख्के की जीसने तुमहों में उतम कारज करना
आरंभ कीया सो यसु मसीह के दीन लों करता यला जायगा।
७ जैसा की मुझे उयीत है की तुमहारे बीख्यै में ऐसाही समझों
कयोंकी तुम लोग मेरे अंत:करन में हो की मेरे बंधनों में
और मंगलसमायार के पक्ष और ठहरावने में भी मेरे अनुगीरह
८ में साझी हो। कयोंकी इसर मेरा साख्यी है की मैं यसु मसीह
९ के हीरदै में तुम सभों का कैसा अभीलास करता हुं। और
मैं यह पराथना करता हुं की तुमहारा परेम गयान में और
१० बीवेक में बढ़ता यला जाय। की तुम लोग बेवरा की बातों
को परख्य सको जीसतें तुम लोग नीसकपट होओ और मसीह
११ के दीन लों ठोकर न ख्याओ। और धरम के फलों से जो यसु

मसीह से है भ्रनजाओं की इसन का मसातम और सतत की
१२ जाय। परंतु हे भाइयो मैं याहता हुं की तुम लोग जानो
की जो कुछ मुझ पर बीता है सो बीसेष्य करके मंगलसमायान
१३ के अधीक फैलने के लीये हुआ। यहां लों की मसीह में मेरा
बंधन समसत राजभवन में और समसत सथानों में परगट हुआ।
१४ और बहुतेरे भाइ ने परभु में मेरे बंधनों से दीनढता पाके
बयन को नीनभै से बोलने का अधीक साहस उतपंन कीया।
१५ कीतने तो डीसका और बीनोघ से और कीतने परसंनता से
१६ मसीह का उपदेस देते हैं। पहीले के यह समझ के की मेरे
बंधन पर पीड़ा अधीक करें बीनोघ से न की सयाइ से मसीह
१७ का संदेस देते हैं। परंतु और लोग परेम से यह जानके की
१८ मैं मंगलसमायान के पक्ष के कारन ठहराया हुआ हुं। सो
कया तीसपर भी समसत नीत से मसीह का संदेस कीया जाता
है याहे छल में याहे सयाइ में और इस में मैं आनंद करता
१९ हुं और आनंद करुंगा। कयोंकी मैं जानता हुं की तुमहारी
परारथना से और यसु मसीह के आतमा की बढ़ती से यह
२० मेरे उधार का कारन होगा। जैसा की मेरा बड़ा भरोसा और
आसा है की मैं कीसी बात में लजीत नहीं परंतु समसत साहस
से जैसा सदा था वैसा अब भी मसीह मेरे देह में याहे जीवन
२१ से याहे मीरतु से महीमा पावेगा। कयोंकी जीवन मेरे लीये
२२ मसीह है और मीरतु लाभ है। परंतु जो मैं देह में जीउं तो
यही मेरे परीसरम का फल है तथापी मैं नहीं जानता की मैं
२३ कया याहुं। कयोंकी मैं दो के मध में सकेत में हुं नीरबंध
होने को अभीलासी हुं और मसीह के संग होउं जो अती अछा
२४ है। परंतु देह में रहना तुमहारे कारन अधीक परयोजन
२५ है। और मैं यह नीसयय करके जानता हुं की मैं रहुंगा
और तुम सभों के संग ठहरुंगा की तुमहारा बीसवास और
२६ आनंदता बढ़ती जाय। जीसतें तुमहों में मेरे फीर आवने के

कानन से मुहृ में तुमहाना आनंद कनना मसीह यसु में अधीक
२७ होवे। केवल तुमहानी चलन मसीह के मंगलसमाचान के
जाेग होवे की जाे मैं आउं औान तुमहें देष्णुं अथवा न आउं
तुमहाना यह समाचान सुनं की तुम लाेग एेक आतमा में
सथीन हाे नहे हाे औान मंगलसमाचान के ब्रीसवास के लीये
२८ एेक मन हाेके एेकठे पनीसनम कनते हाे। औान अपने ब्रोनाेध
कननीहानाें से कीसी ब्रात में डनाए न जाओ जाे उनके लीये
नास का पनंतु तुमहाने लीये दुसन के ओान से उधान का
२९ चीनह है। कयाेंकी मसीह के कानन से तुमहें केवल यही
नहीं दीया गया की तुम लाेग उस पन ब्रीसवास लाओ पनंतु
३० यह भी की उसके कानन से दुष्प भी पाओ। वही पनीसनम
नष्पके जाे तुमहाें ने मुहृ में देष्पा औान अब सुनते हाे की
मुहृ में है।

२ दुसना पनब्र।

१ साे जाे मसीह में कुछ सांतन जाे कुछ पनेम की सांत जाे
२ आतमा का कुछ मीलाप जाे कुछ दया औान सनेह हाेय। ताे
मेनी आनंदता काे पुना कनाे की एेक सभाव नष्पाे एेकही
३ पनेम नष्प के एेक जीव औान एेक मन हाेओ। झगड़े औान
ब्रयनथ अभीमान से कुछ न कनाे पनंतु मनकी नमीनता से एेक
४ दुसने काे अपने से अछा समहाे। काेइ अपने लाभ का ष्पाेजी
५ न हाेवे पनंतु हन एेक औानाें के। तुमहाें में वही मन हाेवे जाे
६ मसीह यसु में भी था। उसने इसन का सनुप हाेके इसन
७ के तुल हाेना चाेनी न जाना। तीसपन भी अपने काे हीन
कीया औान दास का सनुप पकड़ा औान मनुष्प का आकान
८ ब्रना। औान उसने मनुष्प के सनुप में पनगट हाेके अपने काे
दीन कीया औान मनने लाें अनथात कुनुस की मीनतु लाें अगया
९ के ब्रस में ऊआ। इस कानन इसन ने भी उसे अतयंत महान

कीया और उसको ऐसा नाम दीया जो समसत नाम से सनेसठ
१० है। को यसु के नाम पन हनऐक घुटना जो सनग में और
११ पीनथीवी में और जो पीनथीवी के नीचे है टेका जाय। और
की हन ऐक जीहवा इसन पीता की महीमा के लीये मानले
१२ की यसु मसीह पनभु है। सो हे मेने पीनीय जैसा तुमहों ने
सनवदा अगया मानी है केवल मेने साप्पात में नहीं पनंतु अव
मेने वीयोग में अधीक डनते और थनथनाते अपने उधान के
१३ कानज कीये जाओ। कयोंकी वुह इसन है जो तुमहों में कानज
कनता है की तुम लोग उसकी अछी वांछा के समान इछा
१४ और कानज कनो। सव काम वीना कुड़कुड़ाते और वीना
१५ वीवाद कनते कनो। की तुम लोग नीनदोप्प और सुधे होके
इसन के पुतन दोप्प नहीत टेढ़े तीनछे लोगों के वीच में वने
नहो जीन में तुम लोग पनकास के समान जगत में चमकते हो।
१६ जीवन का वचन लीये ऊपे जीसतें मैं मसीह के दीन में आनंद
१७ कनुं की मेनी दौड़ और पनीसनम वयनथ न ऊआ। कयोंकी
जो मैं तुमहाने वीसवास की सेवा और वलीदान पन ढाला
जाउं तो आनंद कनता ऊं और तुम सभों को वधाइ देता ऊं।
१८ और इसी कानन तुम लोग भी आनंद कनो और मेने संग
१९ वधाइ कनो। और मैं पनभु यसु में आसा नप्पता ऊं की
तीमताउस को तुमहाने पास सीघन से भेजुं और तुमहाना
२० समाचान वुझ के मैं भी तीनोपत होउं कयोंकी ऐसे मन का
मेना कोइ नहीं है जो सभाव से तुमहाने लीये चींता में होवे।
२१ कयोंकी सव अपनी अपनी वसतु की प्पोज में हैं और उन
२२ वसतुन की नहीं जो यसु मसीह की हैं। पनंतु तुम लोग उसको
पनप्प के जानते हो का उसने मेने संग मंगलसमाचान में सेवा
२३ की जैसा पीता के संग पुतन कनता है। इस लीये आसा नप्पता
ऊं की अपने उपन जो होनीहान है देप्प के सीघन उसको भेज
२४ देउं। पनंतु मुझे पनभु में भनोसा है की मैं आप भी सीघन

२५ आउंगा। तीसपन भी अपाफरोदीतस को तुमहाने समीप
भेजना उचीत जाना जो मेना भाइ श्रोन संगी सेवक श्रोन
संगी सीपाही श्रोन तुमहाना दुत श्रोन मेने श्रावेसक का सेवक।
२६ कयोंकी वुह तुम सभों का नीपट अभीलासी था श्रोन इस
कानन की तुमहों ने सुना की वुह नोगी था उदासी न था।
२७ श्रोन वुह तो नोग से मनने पन था पनंतु इसन ने उस पन दया
की श्रोन केवल उसी पन नहीं पनंतु मुझ पन भी न होवे की
२८ मुझ पन सोक पन सोक होवे। सो मैं ने उसे व्रड़े यतन से
भेजा की जव्र तुम लोग उसे फेन देष्पो तो श्रानंद कनो श्रोन
२९ जीसतें मेना भी सोक घटे। सो तुम लोग उसको पनभु में व्रड़े
श्रानंद से गनहन कनो श्रोन ऐसों को पनतीसठीत समझो।
३० कयोंकी मसीही कानज के लीये वुह मनने पन था की मेने
लीये तुमहानी सेवा की घटती को पुना कने अपने पनान को
कुछ न समझा।

३ तीसना पनव्र।

१ अंत में हे मेने भाइयो पनभु में श्रानंद नहो की ऐकही व्रात
तुमहें फीन फीन लीष्पना मेने लीये कलेस नहीं श्रोन तुमहाने
२ लीये कुसल है। कुतों से व्रचे नहो कुकनमीयों से पने नहो
३ भींन कननीहानों से अलग नहो। कयोंकी हम वुह ष्पतनः
हैं जो आतमा से इसन की सतुत कनते हैं श्रोन मसीह यसु
४ में श्रानंद कनते हैं श्रोन देह का भनोसा नहीं कनते। पनंतु
मैं देह का भनोसा नष्प सकता हुं जो श्रोन कोइ समझता है
५ की मेने देह के भनोसा के लीये कुछ है तो मैं अधीक। की
आठवें दीन में ष्पतनः कीया गया इसनाइल के कुल में का
व्रनयमीन के पनीवान में का इव्रनानीयों का इव्रनानी व्रैवसथा
६ के वीष्पै में फनीसी। जलन में पुछो तो मंडली का संतावनेवाला
७ श्रोन व्रैवसथा के धनम के वीष्पै में नीनदोष्प। पनंतु जो व्रसतें

मेरे लाभ की थीं मैं उनहीं को मसीह के लीये टुटी समझा।
८ हां नीःसंदेह अपने परभु मसीह यसु के गयान की उतमता
के वीषे में मैं समसत वसतुन को टुटी समझता हुं मैं ने उसके
लीये हर एक वसतु की टुटी सहली और उनहें कुड़ा की नाईं
९ जानता हुं की मसीह को लाभ में पाउं। और उस में पाया जाउं
अपने ही धरम में नहीं जो वेवसथा से है परंतु उसके जो मसीह
के वीसवास से है वुह धरम जो ईसर से वीसवास के दुवारा से
१० है। की मैं उसको और उसके जी उठने के पराकरम को और
उसके संग दुखों में साझी होने को जानुं और उसकी मीरतु
११ की नाईं कीया गया। की कीसी रीत से मैं जी उठने के पद
१२ लों पहुंचुं। यह नहीं की जैसा मैं पराप्त कर चुका अथवा
सीध हो चुका परंतु पीछा कीये जाता हुं की उसको धारन करुं
१३ जीसके लीये मसीह यसु से मैं धारन कीया गया हुं। हे
भाइयो मैं यह नहीं समझता की मैं पराप्त कर चुका हुं पर
इतना है की मैं उन वसतुन को जो पीछे हैं भुल भुल के उनके
१४ लीये जो आगे हैं वढ़ा हुआ जाता हुं। मैं मसीह यसु में
ईसर के वड़े वुलावा के दांव के लीये हुंडा के और पीछया
१५ जाता हुं। सो जीतने हमों में पहुंचे हुए हैं ऐसा मन रखें
और जो कीसी वात में तुमहारा मन औरही होय ईसर तुमहों
१६ पर यह परकास करेगा। तीसपर भी जहां लों हमों ने पराप्त
कीया है उसी वेवहार पर चलें और उनहीं वातों को मानें।
१७ हे भाइयो मेरे पसचातगामी होओ और उनहें जो ऐसे चलते
१८ हैं जैसा हम तुमहारे लीये वानगी हैं चीनह रखो। कयोंकी
वहुतेरे चलते हैं जीनकी चरचा मैं ने तुमहों से वारंवार
की और अव रो रो के कहता हुं की वे मसीह के कुरस के
१९ सतरु हैं। उनका अंत नास है पेट उनका ईसर है उनकी
२० लजा उनकी वड़ाई है उनका मनभाव लौकीक है। परंतु हमारा
वेवहार सरग में है जहां से हम नीसतार करनीहार परभु यसु

२१ मसीह की बाट भी जोहते हैं। २१ वुह अपने पराक्रम के कार्य
के समान जिस से वुह सभों को अपने बस में करसकता है
हमारे नीकमे देह को बदल डालेगा कि उसके तेजसी सरीर
के समान होय।

४ चौथा पत्र।

१ इस कारन हे मेरे अति पीरीय और लालसीत भाइयो
मेरे आनंद और मुकुट हे अती पीरीय परभु में दीनढ़ता से
२ खड़े रहो। मैं अपुदीयः से और संतकी से बीनती करता हूं
३ कि वे परभु में एकही मन हो रहें। और हे नीसकपट संगी
मैं तेरी भी बीनती करता हूं कि उन इसतीरीयों का जीनहों
ने मेरे संग मंगलसमाचार की सेवा में परीस्रम कीया क्लेमेन
और मेरे और और संगी सेवकों के संग जीनके नाम जीवन
४ के पुसतक में हैं सहाय कर। परभु में सरवदा आनंद करो
फेर कहता हूं कि आनंद करो तुमहारी धीरता समसत
५ मनुष्यन को जानी जाय परभु समीप है। कीसी बात की
६ चींता न करो परंतु हर एक बात में तुमहारी परारथना और
७ बीनती धंनबाद के संग इसर से की जाय। और इसर की
सांत जो सारी समझ से बाहर है तुमहारे अंतःकरन और
८ मन की रष्यवारी मसीह यसु के कारन करेगी। सो अब हे
भाइयो जीतनी बसतें सत्य हैं जीतनी बसतें जोग हैं जीतनी
बसतें नयाय की हैं जीतनी बसतें पवीतर हैं जीतनी बसतें
पीरीय हैं जीतनी बसते सुभमान हैं जो कुछ गुन और कुछ
९ सतुत होवे तो इन बातों का समरन करो। और जीन बातों
को तुमहों ने मुझ से सीष्या और अंगीकार कीया और सुना
और देष्या उन पर चलो तब सांत का इसर तुमहारे संग रहेगा।
१० परंतु मैं परभु में बहुत आनंदीत हुआ कि अब अंत में तुमहारी
चींता मेरे लीये फेर लहलहाती है तुम लोग तो आगे मेरे

११ लीय़े चींता में थे परंतु तुमहें अवसर न मीला। परंत मैं
कुछ याहके नहीं कहता कय़ोंकी मैं ने सीष्पा है की जीस दसा में
१२ ऊं उसी में संतोष्प करुं। मैं घटने जानता ऊं और वढ़ने
जानता ऊं हर सथान में और सव़ वातों में मैं ने उपदेस पाया
है संतुसट होने में भुष्पा होने में वढ़ने में और सहने में।
१३।१४ मसीह के सामरथ से मैं सव़ कुछ कर सकता ऊं। तीसपर
भी तुमहों ने भला कीया की दुष्प में मेरा सहाय़ कीया।
१५ कय़ोंकी हे फीलीपीय़ो तम लोग तो जानते हो की मंगल
समायार के आरंभ में जव़ मकदुनीय़: से मैं नीकल आया तव़
कीसी मंडली ने केवल तुमहारे देने लेने में मेरा सहाय़ न
१६ कीय़ा। कय़ोंकी तसलुनींकी में भी तुमहों ने मेरे परय़ोजन
१७ के लीय़े कुछ भेजा। य़ह नहीं की मैं दान याहता ऊं परंतु
१८ याहता ऊं की फल तुमहारे लीय़े भरपुर होय़। कय़ोंकी
मेरे सव़ कुछ है और अधीक है मैं संपुरन ऊं की तुमहारी
भेजी ऊई वसतु अपफरादीतस के हाथ से पाई सुगंध और
१९ गराह्य वलीदान जीस से ईसर परसन है। परंतु मेरा ईसर
अपने ऐसरय़ के धन के समान तुमहारे हर एक परय़ोजन को
२० मसीह य़सु में भर देगा। अव़ हमारे पीता ईसर के लीय़े
२१ सतुत नीत नीत होवे आमीन। मसीह य़सु में हर एक सीधों
को नमसकार कहो भाई लोग जो मेरे संग हैं तुमहें नमसकार
२२ कहते हैं। समसत सीध वीसेष्प करके वे जो कैसर के घराने
२३ के हैं तुमहें नमसकार कहते हैं। हमारे परभु य़सु मसीह
का अनुगीरह तुम सभों पर होवे आमीन।

पुलुस की पतनी कुलसीयों के लीऐ

१ पहीला पतत्र ।

१ इसत की इछा से ग्रसु मसीह का पनेनीत पुलुस ग्रौन भाइ
२ तीमताउस। उन सीधों ग्रौन मसीह में वीसवासी भाइयों के
लीये जो कुलसी में हैं हमाने पीता इसन ग्रौन पनभु ग्रसु
३ मसीह से ग्रनुगीनह ग्रौन येन तुमहाने लीये होवे। हम इसत
का घंनवाद कनते हैं ग्रौन हमाने पनभु ग्रसु मसीह के पीता से
४ तुमहाने लीये नीत पनानथना कनते हैं। जव से हम ने
मसीह ग्रसु में तुमहाना वीसवास ग्रौन समसत सीधों पन पनेम
५ सुना। उस ग्रासा के कानन जो तुमहाने लीये सनग पन धनी
है जीसका वननन तुमहों ने ग्रागे मंगलसमाचान के सत वचन
६ में सुना। जो तुम लों ग्राया जैसा समसत जगत में है जैसा की
तुमहाने मध में भी जीस दीन से तुमहों ने उसे सुना ग्रौन
इसन के ग्रनुगीनह को सचाइ से जाना फल लावता है।
७ जैसा तुमहों ने हमाने पीनीय संगी सेवक इपाफनस से भी जो
तुमहाने कानन मसीह का वीसवासी सेवक है ऐसाही सीख्या है।
८ उस ने तुमहाना ग्रातमीक पनेम हम पन पनगट कीया।
९ इस कानन हम ने भी जीस दीन से यह सुना तुमहाने कानन
पनानथना कनने से नहीं थमते ग्रौन वीनती कनते हैं की
तुम लोग उसकी इछा के गयान से समसत वुध में ग्रौन ग्रातमीक
१० समझ में भन जाग्रो। ग्रौन तुमहानी चाल ऐसी हो जैसी

पनभु के जोग होवे सब को पनसंन कनते ऊए औन हन एक
अछे काम में फलीत होओ औन इसन के गयान में बढ़ते
११ आओ। उसके पनाकनम के महातम के समान समसत धीनज
१२ औन संतोप्प औन आनंद से दीनढ़ता पाके। पीता की सनुत
कनते नहो जीसने हमको इस जोग कीया की पनकास में
१३ सीधों के संग अधीकान के भागी होवें। उसी ने हमको
अंधकान के पनाकनम से छुड़ाया औन अपने पीनीय पुतन के
१४ नाज में लाया। हम उसी में उसके लोहू के कानन से उधान
१५ अनथात पाप मोचन पावते हैं। वुह उस अदीनीस इसन का
१६ सनुप है औन वुह सानी सनीसट से पहीलौंठा है। कयोंकी
उस से समसत बसतें जो सनग औन पीनथीवी पन हैं दीनीस
औन अदीनीस कया सींहासन कया अगया कया पनभुता कया
सुप्पीया सीनजी गई हैं समसत बसतें उस से औन उसके लीये
१७ उतपंन ऊई हैं। वुह सब से आगे है औन उस में सभों की
१८ असती है। औन वुह देह का अनथात मंडली का सीन है वही
आनंभ है औन मीनतकन से पहीलौंठा है की समसत बसतुन
१९ में वुह पनधानता पावे। कयोंकी उसे अछा लगा की सानी
२० संपुनता उस में होवे। औन उसके कनुस के लोहू के कानन
से मीलाप कनके समसत बसतुन को मीला लेवे हां उसी से सब
२१ बसतुन को कया भुम पन कया सनग पन अपने में मीला
२२ लेवे। औन तुमहों को जो आगे पनदेसी औन कुकनम के
कानन से मन में सतनु थे उसने अब अपने सानीनीक देह में
मीनतु के कानन से मीला लीया की तुमहें अपनी दीनीसट में
२३ पवीतन औन नीनदोप्प औन नीसपाप ठहनावे। जो तुम लोग
बीसवास में सथीन औन दीनढ़ नहो औन मंगलसमाचान की
आसा से जीसे तुमहों ने सुना टल न जाओ जीसका उपदेस
समसत सीनीसट के लीये जो सनग के नीचे है कीया गया
२४ जीसका मैं पुलुस सेवक बना ऊं। जो अब अपने उन दुप्पों में

जो तुमहाने काननं पीयता ऊं आनंद कनता ऊं औन मसीह
के कलेसों की घटती उसके देह के अनथात मंडली के कानन
२४ अपने देह में भन देता ऊं। जीसका मैं सेवक ऊआ जैसा की
ग्रह भंडानपन ईसन के ओान से मुझे तुमहाने लीये दीग्रा गग्रा
२५ की मैं ईसन के व्रयन का संपुनन उपदेस कनुं। अनथात उस भेद
२६ को जो समग्रों से औान पीढ़ीग्रों से गुपत नहा पनंतु अव्र उसके
सीघों पन पनगट ऊआ जीनसों पन ईसन ने उस भेद की
२७ महीमा की व्रऊताई को जो अनदेसीग्रों में है पनगट कनने को
२८ ठहनाग्रा जो मसीह तुमहों में महीमा की आसा है। हम
उसी का उपदेस देके हन ग्रेक मनुष्य को येत:वते हैं औान हन
ग्रेक मनुष्य को समसत व्रुघ से सीष्पा देते हैं की हम हन ग्रेक
२९ मनुष्य को मसीह ग्रसु में सीघ कनके साष्पात कनें। उसी के
लीग्रे मैं भी उसके कानज कनने के समान जो मुझ में पनाकनम
से कनता है पनीसनम से ग्रतन कनता ऊं।

२ दुसना पनत्र।

१ मैं याहता ऊं की तुम लोग जानो की मैं तुमहाने औान उनके
कानन जो लाओदीकीग्र: में हैं औान उन सभों के कानन जीनसों
ने सनीन में मेने सनुप को नहीं देष्पा कग्रा ही ईहट उठावता
२ ऊं। जीसतें उनका अत:कनन सांत पावे की पनेम में औान
पनीपुननता के घन के समहू में वुने जाग्रें की ईसन अनथात
३ पीता के औान मसीह के भेद को मान लेने के लीग्रे। उस में व्रुघ
४ औान गग्रान के समसत भंडान गुपत हैं। औान मैं ग्रह कहता
ऊं न होवे की कोई फुसलावने की व्रात से तुमहें व्रहकावे।
५ कग्रोंकी ग्रदपी मैं देह में अलग ऊं पनंतु आतमा में तुमहाने
संग ऊं औान तुमहाने व्रीघ औान दीनढ़ता को औान मसीह
६ में तुमहाने व्रीसवास को देष्पके आनंद कनता ऊं। सो जैसा
तुमहों ने मसीह ग्रसु पनभु को गनहन कीग्रा वैसो उस में यलन

७ चलो। उस में जड़ बांधके और बनाए जाके और जैसी
तुमहों ने सीप्पा पाई है बीसवास में सथीर हो जाओ और
८ उस में धंनबाद करते ऊए बढ़ते जाओ। सावधान रहो न
होवे की कोई तुमहें बीद्या के कारन से और बेरनथ कपट
से जो मनुप्प के कहावत के समान और लौकीक रीत के ऐसा
९ लुट न लेवे और मसीह के समान नहीं। कयोंकी उस में ईसरत
१० की समसत संपुरनता देह सहीत बास करे रही है। और तुम
लोग उस में संपुरन हो जो सारी परभुता और पराकरम का
११ मसतक है। उस में तुम लोग भी बीना हाथ के प्पतनः से
प्पतनः कीए गए हो देह के पापों को ससारी प्पतनः के कारन से
१२ तुमहों ने उतार डाला। उसके संग सनान में गाड़े गए जीस में तुम
लोग भी उस ईसर के सामरथ पर बीसवास लावने के कारन
से जीसने उसको मीरतकन में से जीलाया उसके संग जीलाए
१३ गये। और उसने तुमहें जो अपराधों और अपने देह के
अप्पतनः से मीरतक थे उसके संग एकठे जीलाया की उस ने
१४ तुमहारे सारे अपराधों को छमा कीया। और हमारे बीप्पै
में हाथ के लीप्पे ऊए बीध को जो हम से बीपरीत था मीटा
डाला और उसको अलग करके कुरुस पर कील से ठोंकदीया।
१५ और परभुता और पराकरम को बीगाड़ के उसने उनहों पर
१६ जै करते ऊए परगट में उनको सवांग बनाया। इस कारन
प्पाने पीने के अथवा परब के अथवा अमावस के अथवा बीसराम
१७ के बीप्पै में कोई तुमहारा बीचार न करे। की ये सब आवने
वाली बसतुन की परछाईं हैं परंतु देह मसीह का है।
१८ कोई तुमहें अधीक दीनता और दुतों की पुजा करने से
तुमहारे फल से नीसफल न करे की उन बसतुन में जीनहें
उसने नहीं देप्पा घुसता है और अपने सारीरीक मन से बेरनथ
१९ फुलता है। और मसतक को नहीं पकड़ता जीस से सारा
देह बंद बंद और गांठ गांठ परतीपाल पाके और एकठे

२० जरे जाके इसर की ब्रढ़ती से ब्रढ़ता है। सो जो तुम लोग
संसारी रीत से मसीह के संग मरे हो तो कयों उनके समान
२१ जो जगत में जीवते हैं ठहराए ऊए के ब्रस में हो। छु मत
२२ चीप्प मत हाथ न लगा। ये समसत ब्रसतें करते ऊए ब्रीगड़ती
जाती हैं ग्रोर मनुप्पन की ग्रगयाग्रें ग्रोर उपदेसों के
२३ समान होती हैं। ये ब्रसतें ग्रपनी इछा की पुजा ग्रोर
दीनताइ में गयान के तुल देप्पी तो जाती हैं ग्रोर देह का
ग्रनादर करना ग्रोर सरीर की संतुसटता के कुछ सनमान
के चीये नहीं।

३ तीसरा पतर।

१ सो जो तुम लोग मसीह के संग जी उठे हो तो उपर की
ब्रसतुन को प्पोजो जहां मसीह इसर के दहीने ग्रोर ब्रैठा है।
२ उपर की ब्रसतुन पर चीत लगाग्रो ग्रोर उन ब्रसतुन पर नहीं
३ जो भुम पर हैं। कयोंकी तुम लोग मरगये हो ग्रोर तुमहारा
४ जीवन मसीह के संग इसर में छीपा है। जब्र मसीह जो
हमारा जीवन है परगट होगा उसके संग तुम लोग भी ऐसरय
५ में परगट होगे। इस कारन ग्रपने इंद्रीयों को जो भुम पर
हैं ग्ररथात ब्रैभीचार ग्रपवीतरता ग्रतीमोह ब्रुरी लालसा
६ को इछा ग्रोर लोभ को जो मुरत पुजा है मारा करो। उनहीं
के कारन से इसर का क्रोघ ग्रगया भंग करने वाले पुतरों पर
७ उतरता है। ग्रोर ग्रागे जब्र तुम लोग उन में जीते थे उन
८ में तुम लोग भी चलते थे। पर ग्रब्र तुमहों ने उन सभों को
ग्ररथात रीस ग्रोर क्रोघ ग्रोर द्रोह ग्रोर पाप्पंड ग्रोर
९ फुहर ब्रात चीत को ग्रपने मुंह से नीकाल फेंका है। एक
दुसरे से झुठ न ब्रोलो की तुमहों ने पुरानी मनुप्पता को उसकी
१० करनी समेत उतार फेंका। ग्रोर नवीन को जो गयान
में ग्रपने सीरजनहार के सरुप के समान नवीन ऊइ है पहीना।

११ वहां न यूनानी है न यहूदी न खतनः न अखतनः न मलेछ न
१२ सकुती न बंध न नीरबंध पर मसीह सब और सब में है। सो
इसर के चुने हुए पवीतर और पीआरे के समान अंतःकरन
की अत दया नमरता का मन कोमलता और अती सहाव को
१३ पहीन लेओ। जो कोई कीसी से झगड़ा रखे तो एक दुसरे पर
धीरज करे और एक दुसरे पर छमा करे जैसा मसीह ने भी
१४ तुम पर छमा कीया वैसाही तुम लोग भी करो। और इन
१५ सभों से अधीक परेम को जो सीधता का बंधन है। इसर
का कुसल तुमहारे अंतःकरन में राज करे जीस में तुम लोग
१६ एक देह होकर बुलाए गए हो धंनमान करो। मसीह के
बचन तुमहों में समसत गयान में अधीकाई से बसें की तुम
लोग एक दुसरे को सीखावते और उपदेस करते गान और
भजन और सुभगीत अपने अंतःकरन में अनुगीरह के संग
१७ परभु के लीये गाते जाओ। और जो कुछ तुम लोग बाचा
और कोरीया में करते हो परभु यसु के नाम में करो और
उसी के ओर से इसर और पीता की सतुत कीया करो।
१८ हे पतनीओ अपने अपने पती के बस में रहो जैसा परभु में
१९ जोग है। हे पतीओ अपनी पतनीओं को पीआर करो और
२० उन से कड़ुआ न होओ। हे बालको तुम लोग अपने माता
पीता की हर एक बात में आगया मानो कयोंकी परभु को
२१ यही भावता है। हे पीतरो अपने बालकों को मत कलपाओ
२२ न होवे की वे उदास हो जायें। हे सेवको तुम लोग उनकी जो
सरीर के बीखै में तुमहारे सामी हैं समसत बातों में आगया
मानो पर मनुख्यन के परसन करनेहारों की नाई दीखाने को न
२३ हो परंतु मन की सीधाई से इसर से डरते हुए। और जो कुछ
करो सो अंतःकरन से जैसा परभु के लीये करो और मनुख्यन
२४ के लीये नहीं। यह जानते हुए की तुम लोग परभु से
अधीकार का फल पाओगे कयोंकी तुम लोग परभु मसीह की

२५ सेवा करते हो। पर वह जो अपराध करता है सो अपने
अपराध के समान पावेगा और मनुष्यत पर दीठीसट न होगी।

४ चौथा पत्र।

१ हे सामीओ सेवकों के बीष्यै में धरम और नयाय करो यह
२ जानके की तुमहारा भी एक सामी सरग में है। परारथना
३ कीए जाओ और उस में धंनबाद से चौकस रहो। और
उसके संग हमारे लीये भी परारथना करो की ईसर हमारे
लीये बयारन का दुवार षोले की मैं मसीह के भेद को जीसके
४ लीये मैं बंद में भी ऊं बरनन करुं। की जैसा मुझे उचीत
५ है वैसा उसको परगट करुं। समय को सफल जानके उनके
६ संग जो बाहर हैं बुध से चलो। तुमहारी बात सरबदा
अनुगीरह से मोली रहे और लोन से सवादीत होय जीसतें
तुम लोग जानो की हर एक को क्योंकर उतर दीया चाहीये।
७ तष्षीकस जो पीआरा भाइ और बीसवासी सेवक और परभु
की सेवा में साझी है मेरे समसत समाचार को तुमहें सुनावे-
८ गा। जीसको मैं ने इस लीये तुमहारे पास भेजा है की वुह
तुमहारी दसा देष्ष लेवे और तुमहारे मन को सांत देवे।
९ उसके संग उनीसमस को जो बीसवासी और पीरीय भाइ है
जो तुमहों में का है भेज दीया वे तुमहें यहां के समसत संदेस
१० पहुंचायेंगे। अरसतरष्षस मेरा संगी बंधुआ तुमहें नमसकार
कहता है और बरनबास का भांजा मरकुस जीसके बीष्यै
में तुमहों ने आगया पाइ जो वुह तुमहारे पास आवे तो उसको
११ गरहन करो। और यसु जो युसतस कहावता है जो षतनः
कीयेगयों में से है केवल ये ईसर के राज के कारन मेरे संगी
१२ सेवक हैं और मेरे लीये सांत के कारन हुए हैं। अपाफरास
जो तुमहों में से मसीह का दास है तुमहों को नमसकार
कहता है और वुह तुमहारे कारन सदा बड़े परीसरम से

पनानथना कनता है की तुम लोग इसन की समसत इछा में सीघ
१३ श्रैान संपुनन होके सथीन नहो। कय़ांकी मैं उसका साप्पी ऊं
की वुह तुमहाने श्रैान उनके कानन जो लाउदीकीय़ा में श्रैान
१४ जो हीनुपलस में हैं वृक्रुत जलीत है। लुका पीनीय़ वृैद
१५ श्रैान दामास तुमहें नमसकान कहते हैं। तुम लोग उन
भाइय़ें कें जो लाउदीकीय़ा में हैं श्रैान नमफास कें श्रैान
१६ मंडली के जो उसके घन में है नमसकान कहो। श्रैान जव
य़ह पतनी तुमहें में पढ़ी जाय़ तो ऐसा कनो की लाउदीकीय़ों
की मंडली में भी पढ़ी जाय़ श्रैान लाउदीकीय़ा की पतनी तुम
१७ लोग भी पढ़ो। श्रैान श्रनकीपस से कहे की तु उस सेवकाइ
के जो तु ने पनभु से पाइ है यैाकसी से नप्प की तु उसे
१८ संपुनन कने। मुह पुलुस के हाथ से नमसकान श्रैान मेने
वंघनों के समनन कनो श्रनुगीनह तुमहों पन होवे श्रामीन।

पुलुस की पहीली पतनी तसलुनीयों को

---

१ पहीला पनब्र।

१ पलुस औन सलवानोस औन तीमताउस तसलुनीयों की
मंडली को जो पीता इसन औन पनभु यसु मसीह में है
अनुगोनह औन कुसल हमाने पीता इसन औन पनभु यसु
२ मसीह के औन से तुमहाने लीये होवे। हम तुमहाने कानन
इसन की सतुत सनब्रदा कनते हैं औन अपनी पनानथना में
३ तमहें समनन कनते हैं। अपने पीता इसन के आगे तुमहाने
ब्रीसवास के कानज औन पनेम के पनीसनम औन सतोप्प की
आसा को जो हमाने पनभु यसु मसीह में है नीत समनन कनते
४ हैं। हे पीनीय भाइयो हम जानते हैं की तुम लोग इसन के
५ युने ऊए हो। कयोंकी हमाना मंगलसमायान केवल ब्रयन
में नहीं पनंत सामनथ में औन धनमातमा में औन ब्रड़े नीसयय
में तुमहों में आया जैसा की तुम लोग जानते हो की हम
६ तुमहाने लीये तुमहों में कैसे थे। औन तुम लोग उस ब्रयन
ब्रड़े कलेस के संग धनमातमा के आनंद से पाकन हमाने औन
७ पनभु के पीछे हो लीये। यहां लों की तुम लोग मकदुनीयः
औन अप्पाइयः के समसत ब्रीसवासीयों के लीये ब्रानगी ब्रने।
८ कयोंकी तुमहों से पनभु के ब्रयन का सब्रद केवल मकदुनीयः
औन अप्पाइयः में नहीं पहुंया पनंतु हन ऐक सथान म

तुमहाना ब्रीसवास जो इसन पन है फैलगया यहां लों की
९ हमाने कहने का पनयोजन नहीं। कयोंकी वे आप हमाने
वीष्यै में वतावते हैं की हमाना पनवेस कनना तुमहों में कैसा
हुआ ओन तुम लोग कयोंकन मुनतीन से इसन के ओन फीने
१० की जीवते ओन सये इसन की सेवा कनो। ओन उसके पुतन
अनथात यसु की जीसे उसने मीनतकन में से जीलाया वाट
जोहो की सनग पन से आवे जो हमें को आवनीहान कनोध
से वयावता है।

२ दुसना पनव।

१ हे भाइयो तुम लोग तो आप जानते हो की हमाना पनवेस
२ कनना तुमहों में ब्रथा न था। पनंतु जैसा तुम लोग जानते हो
की हम आगे फीलीपी में दुष्फ ओन दुनगती उठाके अपने इसन
में नीनभै थे की इसन का मंगलसमायान वड़े वीवाद के संग
३ तुमहों से कहते थे। कयोंकी हमाना उपदेस कनना भनमाने
४ ओन अपवीतनता ओन छल से न था। पनंतु जैसा इसन ने
हमें मंगलसमायान सौंपने को जोग जाना वैसाही हम वोलते
हैं न जैसा की मनुष्यन को पनसन कनते हैं पनंतु जैसा इसन को
५ जो हमाने अंत:कननों को पनष्पता है। जैसा तुम लोग जानते
हो की हम फुसलाने की वात से कधीं न वोलते थे न लोभ के
६ आड़ में इसन साष्पी है। न मनुष्य से न तुमहों से न ओन
कीसी से वड़ाइ ढुंढते थे यदपी हम मसीह के पनेनीतों के
७ समान तुमहों पन वोझ डाल सकते थे। पन हम तुमहाने मध
में ऐसे कोमल थे जैसे दाइ जो अपने वालकों की सेवा कनती
८ है। सो हम तुमहाने ओन अत दयावान होके याहते थे की
केवल इसन के मंगल समायान को नहीं पनंतु अपने पनान
को भी तुमहें देवें इस कानन की तुम लोग हमाने पीनीय थे।
९ कयोंकी हे भाइयो तुम लोग हमाने पनीसनम ओन कसट को

समनन कनते हे। कयोंकी हम इस लोये की तुमहों में कीसी
पन व्रोझ न होवें नात दीन हाथ से पनीसनम कनके तुमहों में
१० इसन के मंगलसमाचान का उपदेस कनते थे। इसन औन
तुम लोग साप्पी हो की कयाही पवीतनताइ से औन सयाइ
से औन नीनदोप्पता से हम लोग तुम व्रीसवासीयों में नीनवाह
११ कनते थे। जैसा की तुम लोग जानते हो की हम तुमहों में
हन ऐक को कयोंकन धीनज औन सांत देते औन उपदेस
१२ कनते थे ऐसे जैसे पीता व्रालकों को। की तुमहानी याल
इसन के व्रुलाऐ हुऐ के जोग होवे जीसने तुमहें अपने नाज
१३ औन ऐसनय में व्रुलाया। इस कानन हम नीनंतन इसन का
धंन मानते हैं की जव्र तुमहों ने इसन के व्रयन को जीसे
तुमहों ने हम से सुना गनहन कीया उसे मनुप्पन के व्रयन के
समान नहीं पनंतु इसन के व्रयन के समान की वुह सयमुय है
गनहन कीया वुह तुम व्रीसवासीयों में कानज कनता है।
१४ कयोंकी भाइयो तुम लोग इसन की मंडलीयों के जो यहुदीयः
में यसु मसीह में हैं लानग पन यले कयोंकी तुमहों ने भी अपने
१५ देसीयों से वैसे दुप्प पाये जैसे उनहों ने यहुदीयों से। जीनहों
ने पनभु यसु को औन अपने आगमगयानीयों को मान डाला
औन हमों को संताया है औन वे इसन को पनसन नहीं कनते
१६ औन समसत मनुप्पन के व्रीनोधी हैं। की अपने पाप को नीत
भनपुन कनें हमें अंनदेसीयों को व्रयन कहने से की वे उधान
पावें व्रनजते हैं कयोंकी इसन का कनोध उनपन अतयंत लों
१७ पहुंया। पनंतु हे भाइयो हमने तुमहों से थोड़ी व्रेन लों
साप्पात में अलग कीयाजाके औन अंतःकनन में नहीं व्रहुत
अभीलास से अतयंत जतन कीया की तुमहाना मुंह देप्पें।
१८ इस कानन हमने अनथात मैं पुलुस ने ऐक अथवा दो व्रान
याहा की तुमहाने पास आउं पन सैतान ने हमें नोका।
१९ कयोंकी हमानी आसा अथवा आनंद अथवा आनंद कनने का

मुकुट क्या है क्या तुम लोग हमारे परभु यसु मसीह के आगे
२० उसके सनमुष्य नहीं हो। क्योंकी तुमहीं हमारी बड़ाई
और आनंद हो।

३ तीसरा पत्र।

१ इस कारन जब हम आगे सह न सके तो हम मान गये की
२ आथेन: में अकेले छोड़े जायें। और हमने अपने भाई और
ईसर के सेवक और मसीह के मंगलसमाचार में हमारे संगी
परीस्रमी तीमताउस को भेजा की तुमहों को दीरढ़ करे और
३ तुमहारे वीसवास के वीष्यै में सांत देवे। की कोई इन कलेसों
के कारन से न डगमगावे क्योंकी तुम लोग आप जानते हो की
४ हम लोग इनहीं के लीये ठहराये गये हैं। क्योंकी जब हम
तुमहारे पास भी थे तब हमने तुमहें आगे कहा की हम दुष्य
५ पावेंगे जैसा की वही हुआ और तुम लोग जानते हो। क्योंकी
इसी कारन जब मैं आगे सह न सका तो तुमहारा वीसवास
बुझने को भेजा न होवे की तुमहें परीछक ने कीसी रीत से
६ भरमाया हो और हमारा परीस्रम बिरथा हो जाय। पर
अब जब तीमताउस तुमहों से हमारे पास फीर आया और
तुमहारे वीसवास और परेम का अछा संदेस लाया और की
तुम लोग सदा हमारा अछा समरन करते हो और हमारे
७ देष्यने के अती अभीलासी हो जैसे हम भी तुमहारे। इस
लीये हे भाइयो हमने अपने समसत दुष्य और सोक में
८ तुमहारे वीसवास के कारन से सांत पाई। क्योंकी अब हम
जीते हैं जो तुम लोग परभु में सथीर रहो क्योंकी उन समसत
९ आनंद के लीये जीस से हम तुमहारे लीये ईसर के आगे
आनंद करते हैं तुमहारे वीष्यै में क्योंकर धंन मान सकें।
१० हम रात दीन अतयंत चयान से परारथना करते हैं की
तुमहारा मुंह देष्यें और तुमहारे वीसवास की घटती को

११ भर देवे। और इसर और हमारा पीता आप और परभु
यसु मसीह ऐसा करे की हमारा जाना तुमहारे और होवे।
१२ और परभु तुमहें को आपुस की परीत में और सभें में जैसी
१३ हमको तुमहें से है बढ़ावे और अधीक करे। यहां लें की
तुमहारे अंत:करन दीरढ़ता पावें की जब हमारा परभु यसु
मसीह अपने समसत साधुन के संग आवे तब तुम लोग
इसर के अरथात हमारे पीता के आगे पवीतरता में नीरदोष्प
नीकलो।

४ चौथा पत्र।

१ सो जो रह गया है हे भाइयो हम तुमहें से परभु यसु के
कारन बीनती करते हैं और उपदेस देते हैं की जैसा तुमहें ने
हम से पाया की कयोंकर चला चाहीये और इसर को परसन
२ कीया चाहीये सो उस में अधीक बढ़ते जाओ। कयोंकी
तुम लोग जानते हो की हम ने तुमहें को परभु यसु के और से
३ कया कया अगया दी। कयोंकी इसर की इछा तुमहारी
४ पवीतरताई है की तुम लोग बीभीचार से बचे रहो। की
हर ऐक तुमहें में से जाने की अपने अपने पातर को पवीतरता
५ से और परतीसठा से रष्पे। और कामाभीलास में अंनदेसीयों
६ की नाई नहीं जो इसर को नहीं पहीचानते हैं। की कोइ
अपने भाइ से धुरतता और छल न करे कयोंकी परभु समसत
ऐसें का पलटा लेगा जैसा की हम ने आगे भी तुमहें से कहा
७ और साष्पी दी। कयोंकी इसर ने हमको अपवीतरता में
८ नहीं परंतु पवीतरता में बुलाया है। इस कारन जो कोइ
अवगया करता है सो मनुष्प की नहीं परंत इसर की जीसने
अपना पवीतर आतमा भी हमें दीया अवगया करता है।
९ परंत भाइ कीसी परीत के बीष्पे में तुम लोग आधीन नहीं
की कोइ तुमहें लीष्पे कयोंकी तुमहें ने आप आपस की परीत

१० में इसन से सौप्पा पाइ। और नीसयय़ तुम लोग उन सारे
भाइय़ों से जो समसत मकदुनीय़ः में हैं ऐसाही करते हो
परंतु हे भाइय़ो हम तुमहारी बीनती करते हैं की तुम लोग
११ अधीक बढ़ते जाओ। और जीस परकार से हमने तुमहें
अगय़ा की, की तुम लोग चैन से रहो और की अपने अपने
काम काज करने में और अपने ही हाथों से कारज करने
१२ में धुन से रहो। जीसतें तुम लोग उनहों के आगे जो बाहर
१३ हैं परतीसठा से चलो और कीसी के आधीन न होओ। परंतु
हे भाइय़ो मैं नहीं चाहता की तम लोग उनके बीप्पै में जो
सो गय़े हैं अनजान रहो की तुम लोग औरों के समान जो
१४ नीरास हैं सोक न करो। कय़ोंकी जो हम बीसवास करें की
य़सु मुआ और उठा ऐसाही वे भी जो मसीह में सोए हैं उसके
१५ संग इसन ले आवेगा। इस कारन हम तुमहें परभु के बचन
से य़ह कहते हैं की हम जो परभु के आवने के समय़ में जीवते
१६ होंगे उनहों को जो सो गय़े हैं न रोकेंगे। कय़ोंकी परभु आप
धुम से परधान दुत के सब्द के संग अरथात इसन के नरसींगे
के साथ सरग पर से उतरेगा और जो मसीह में मुए हैं पहीले
१७ उठेंगे। उसके पीछे हमों में से वे जो जीवते होंगे उन सब
समेत मेघों पर हट उठाए जाय़ेंगे की आकास में परभु से
१८ भेंट करें सो हम परभु के संग सरबदा होंगे। इस लीय़े तुम
लोग इनहीं बातों से एक दुसरे को सांत देउ।

५ पांचवां परब।

१ परंतु हे भाइय़ो तुम लोग उसके आधीन नहीं की समय़ों
२ और कालों का समाचार मैं तुमहें लीखुं। कय़ोंकी तम लोग
नीसयय़ से जानते हो की परभु का दीन ऐसा आवेगा जैसा
३ रात को चोर आता है। कय़ोंकी जब लोग कहेंगे की कुसल
और बचाव तब जीस रीत से गरभनी पर पीर आ जाती है

४ उन पर आकसमात नास आवेगा और वे न व्रचेंगे। परंतु
तुम लोग हे भाइयो अंधकार में नहीं हो की वुह दीन चोर
५ की नाईं तुमहें आ घेरे। तुम सव्र के सव्र परकास के पुतर
और दीन के संतान हो हम रात के नहीं और न अंधकार
६ के हैं। इस कारन औरों की नाईं न सोवें परंतु जागें और
७ चौकस रहें। कयोंकी जो सोते हैं सो रातही को सोते हैं
और जो मतवाले होते हैं सो रातही को मतवाले होते हैं।
८ परंतु हमें जो दीन के हैं चाहीये की चौकस रहें और व्रीसवास
और परेम का झीलम और उधार की आसा का टोप पहीनें।
९ कयोंकी इसर ने हम को करोध के लीये नहीं परंतु इस लीये
ठहराया की हम अपने परभु यसु मसीह से उधार परापत
१० करें। वुह हमारे कारन मुआ की हम लोग कया जागते
११ कया सोते एकठे उसके संग जीयें। इस लीये तुम लोग एक
दुसरे को सांत देओ और एक दुसरे को सुधारो जैसा तुम लोग
१२ करते भी हो। और हे भाइयो हम तुमहों से व्रीनती करते
हैं की तुम लोग उनको जो तुमहों में परीसरम करते हैं और
परभु के कारज में तुमहारे परधान हैं और तुमहों को
१३ चेतावते हैं जान जाओ। और उनके कारज के लीये परेम से
उनका व्रहुत आदरभाव करो और आपुस में मीले रहो।
१४ और हे भाइयो हम तुमहें उपदेस करते हैं की तुम मगरे
लोगों को चेता देओ नीरव्रल मनों को सांत देओ दुरव्रलों को
१५ संभालो और सभों से संतोखी हो। देखो कोइ कीसी से
व्रुराइ की संती व्रुराइ न करे परंतु तुम लोग आपुस में और
१६ सभों से भला व्रेवहार करो। सरव्रदा आनंद करते रहो।
१७।१८ नीरंतर परारथना करो। हर एक व्रात में धंन माना
करो कयोंकी तुमहारे व्रीखै में मसीह यसु में इसर की यही
१९।२० इछा है। आतमा को मत व्रुझाओ। आगम कहने
२१ का अपमान न करो। सव्र व्रातों को परखो अछे से अछे

२२ को थांम लेओ। समसत बुनाइ के सनुप से पने नहो।
२३ कुसल ही का इसन आपही तुमहो को वाल वाल पवीतन
कने औन तुमहाना समसत आतमा औन जीव औन देह
हमाने पनभु यसु मसीह के आने लों नीनदोष्पता से नहे।
२४ जीसने तुमहें बुलाया वुह वीसवास के जोग है वुह ऐसाही
२५।२६ कनेगा। भाइयो हमाने कानन पनानथना कनो। औन
२७ साने भाइयों को पवीतन युमा लेके नमसकान कहो। मैं तुमहें
पनभु की कीनीया देता हूं की यह पतनी साने पवीतन भाइयों
२८ में पढ़ी जाय। अब हमाने पनभु यसु मसीह का अनुगीनह
तुमहों पन होवे आमीन।

पुलुस की दुसरी पतरी तसलुनीय़ों को

---

१ पहीला परब।

१ पुलुस और सलवानीस और तीमताउस तसलुनीय़ों की
मंडली को जो हमारे पीता ईसर और परभु य़सु मसीह में
२ हैं। हमारे पीता ईसर और परभु य़सु मसीह के ओर से
३ अनुगीरह और कुसल तुमहारे लीय़े होवे। हे भाइय़ो
उचीत है की हम तुमहारे लीय़े सरवदा ईसर का धंनवाद
करें इस लीय़े की तुमहारा बीसवास अतय़ंत बढ़ता जाता है
और तुमहों में हर एक का परेम आपुस में अधीक होता है।
४ य़हां लों की हम आप तुमहारे संतोष और बीसवास के लीय़े
तुमहारे समसत दुषों और कलेसों में जो तुम लोग सहते हो
५ ईसर की मंडलीय़ों में तुमहारी बड़ाई करते हैं। जो ईसर
के धरम नय़ाय़ का परगट लछन होगा की तुम लोग ईसर के
राज के जोग गीने जाओ जीसके लीय़े तुम लोग दुष भी पावते
६ हो। कय़ोंकी ईसर के समीप य़ह जथारथ है की उनहों को
७ जो तुमहें कलेस देते हैं कलेस का परतीफल देवे। और तुमहों
को जो कलेस पावते हो हमारे संग चैन देवे की जब परभु य़सु
८ मसीह सरग से अपने पराकरमी दुतों के संग। धधकती आग में
परगट होवे और उनहों से जो ईसर को नहीं पहीचानते और
जो हमारे परभु य़सु मसीह के मंगलसमाचार को नहीं मानते

९ पलटा लेवे। की वे परभु के सनमुष्य से ग्रीर उसके पराक्रम
१० के तेज से ग्रनंत वीनास से ताड़ना पावेंगे। जब वुह ग्रपने
साधुन में प्रसनयमान होने को ग्रावेगा ग्रीर समसत बीसवासीयों
११ में ग्रासचरज का कारन होगा। सो हम तुमहारे लीये सदा
परारथना करते हैं की हमारा इसर तुमहें बुलावने के जोग
जाने ग्रीर ग्रपनी भलाइ की मनमान इछा को ग्रीर बीसवास
१२ के कारज को सामरथ से पुरा करे। की हमारे इसर ग्रीर परभु
यसु मसीह के ग्रनुग्रीरह के समान हमारे परभु यसु मसीह का
नाम तुमहों में प्रसनयमान होवे ग्रीर तुम लोग उस में।

२ दुसरा परब।

१ ग्रब हे भाइयो हमारे परभु यसु मसीह के ग्रावने के ग्रीर
उसके समीप हमारे एकठे होने के कारन से हम तुमहारी
२ बीनती करते हैं। की तुमहारा मन सीघर टल न जाय ग्रथवा
ब्याकुल न होवे न तो ग्रातमा से न बचन से न पतरो से जैसा
३ की हमारे ग्रोर से है ऐसा की मसीह का दीन समीप है। कोइ
तुमहें कीसी रीत से छल न देवे कयोंकी वुह दीन न ग्रावेगा
परंतु जब की पहीले भ्रसट होना ग्रारंभ होवे ग्रीर वुह पाप
४ का जन ग्ररथात नास का पुतर परगट होवे। जो रोकता है
ग्रीर ग्रपने को समसत से जो इसर कहावता है ग्रथवा परार-
थना की जाती हैं बढ़ावता है यहां लों की वुह इसर के समान
इसर के मंदीर में बैठता है ग्रीर ग्रपने को दीखाता है की मैं
५ इसर हुं। कया तुमहें चेत नहीं की तुमहारे संग होतेहुए मैं
६ ने तुमहें ये बातें कहीं। ग्रब तुमलोग जानते हो की ग्रपनेही
७ समय पर परगट होने में कया उसे रोकता है। कयोंकी बुराइ
का भेद तो ग्रब से कारज करता है परंतु एक है जो रोकता है
८ जब लों वुह पंथ से ग्रलग कीया जाय। ग्रीर तब वुह दुसट
परगट होगा जीसे परभु ग्रपने मुंह के सांस से भसम करेगा

९ श्रीन श्रपने श्रावने के तेज से व्रीनास कनेगा। जीसका श्रावना
सैतान के कीश्रे के समान समसत सामनथ श्रीन छ्छन श्रीन झुठे
१० श्रासयनजों से है। श्रीन समसत नीत के श्रघनम के छल के
संग उनहों में जो नास होंगे इस कानन की उनहों ने सयाइ के
११ पनेम को जीस से वे व्रयाश्रे जाते गनहन न कीश्रा। श्रीन इसी
कानन से इसन उनके पास छल की सकती को भेजेगा जीसते वे
१२ झुठ पन व्रीसवास लावें। की वे सव्र जो सत पन व्रीसवास न लाश्रे
१३ पनंतु श्रघनमता से पनसंन थे दंड पावें। पनंतु हे भाइश्रो पनभु
के पीनीश्र उचीत है की हम तुमहाने कानन सनव्रदा इसन का
घंन माना कनें इस कानन की इसन ने श्रानंभ से श्रातमा की
पवीतनता से श्रीन सयाइ पन व्रीसवास लाने से तुमहें उचान
१४ के लीश्रे चुना। जीसके लीश्रे उसने तुमहें हमाने मंगलसमाचान
के दुवाना से व्रलाश्रा की हमाने पनभु यसु मसीह का ऐसनय्र
१५ पनापत कनो। सो इस कानन हे भाइश्रो सथीन नहो श्रीन
उन व्रातों को जो तुमहें सैांपी गइं जो तुमहों ने व्रयन से श्रथवा
१६ हमाने गनंथ से सीप्पीं थामें नहो। श्रव्र हमाना पनभु यसु मसीह
श्राप श्रीन हमाना पीता इसन जीस ने हमें पीश्रान कीश्रा श्रीन
हमें श्रनुगनह के दुवाना से श्रनंत सांतन श्रीन श्रछी श्रासा दी।
१७ तुमहाने मन का सांती देवे श्रीन तुमहों को हन एक श्रछे व्रयन
श्रीन कनम में दीढ़ कने।

३ तीसना पनव्र।

१ सो श्रंत में हे भाइश्रो हमाने लीश्रे पनानथना कनो की इसन
का व्रयन फैले श्रीन ऐसी महीमा पावे जैसी तुमहों में है।
२ श्रीन की हम श्रव्रीचानी श्रीन दुसट मनुप्पन से व्रय जावें कयों-
३ की सव्र व्रीवास नहीं नप्पते। पनंतु पनभु व्रीसवास के जोग है
४ वुह तुमहों को दीनढ़ कनेगा श्रीन दुसट से व्रयावेगा। श्रीन
तुमहाने कानन पनभु पन हमाना भनोसा है की तुम लोग उन

अगया को पन जो हम तुमहें देते हैं यलते हो और यलोगे।
५ और पनभु तुमहाने अंतःकननों को ईसन के पनेम में और सं-
६ तोष्प से मसीह की वाट जोहने में तमहों को सोप्पावे। पनंतु
हे भाइयो हम अपने पनभु यसु मसीह के नाम से तुमहें अगया
कनते हैं की हनएक भाइ से जो अननीत से यलता है और
उसे सौंपी ऊइ सीप्पा का जो उसने हम से पाइ नहीं मानता
७ अलग नहो। कयोंकी तुम लोग आप जानते हो की हमानी
नाइं कयोंकन यला याहीये कयोंकी हम तो तुमहों में अन
८ नीत से न नहते थे। और कीसो की नोटी सेंत न प्याते थे पनंतु
पनीसनम से नात दीन कानज कनके की हम कीसी पन तुमहों
९ में से भान न होवें। इस कानन नहीं की हम को सामनथ नहीं
पनंतु की हम आप को तुमहाने लीये वानगी ठहनावें की तुम
१० हमानी नाइं यलो। कयोंकी जव हम तुमहाने संग भो थे तव
हम ने तुमहें यह अगया की थी की जो कोइ काम न कने सो
११ भोजन न पावे। हम सुनते हैं की कइ एक तुमहों में से अन
नीत से यलते हैं कोइ काम काज नहीं कनते पनंतु औनों के
१२ कानज में उलहते हैं। हम पनभु यसु मसीह से एसों को अगया
देते हैं और येतावते हैं की वे युपयाप से कानज कनके अपनी
१३ ही नोटी प्यावें। और हे भाइयो तुम भले कानज कनने में
१४ ढील न कनो। पन जदी कोइ हमानी वात को जो इस पतनी
में हैं न माने तो उसे यीनह नप्पीयो और उससे संगत न
१५ कनीयो जीसतें वुह लजीत होवे। तथापी उसको वैनी की नाइं
१६ मत समुझीयो पनंतु भाइ के तुल यीता दीजीयो। अव कलयान
का पनभु तुमहों को समसत नीत से सनवदा कलयान देवे
१७ पनभु तुम सभों के संग होवे। मेने ही हाथ के लीप्पे से सुह
पुलुस का नमसकान जो हन एक पतनी में यीनह है वैसा मैं
१८ लीप्पता ऊं। हमाने पनभु यसु मसीह का अनुगनह तुम सभों
पन होवे आमीन।

पुलुस की पहीली पतनी तीमताउस को

---

१ पहीला पतव्र।

१ हमाने मोप्पादाता इसन श्रौन हमानी आसा पनभु ग्रसु
मसीह के ठहनाऐ ऊये के समान पुलुस ग्रसु मसीह का पनेनीत।
२ व्रीसवास में सच्ये पुतन तीमताउस को अनुगीनह दया श्रौन
कुसल हमाने पीता इसन श्रौन हमाने पनभु ग्रसु मसीह से
३ होवे। जैसा मैं ने मकदुनीयः में जाते ऊऐ तुह से व्रीनती
की थी की अफसस में ठहनहीयो की तु कीतनें को अगया
४ कने की नया उपदेस न सीप्पावें। श्रौन कहानीयों श्रौन अनंत
व्रंसाउनीयों पन मन न लगावें जो व्रीवाद का व्रीप्पै होता है
५ श्रौन व्रीसवास में इसन की भकती व्रढाने में नहीं। पनंतु
अगया का अभीपनाय पनेम पवीतन अंतःकनन से श्रौन अछे
६ व्रीवेक श्रौन नीसकपट व्रीसवास से है। जीस से कीतने भटक
७ के अननथ कथनी के श्रौन फीने हैं। की व्रैव्रसथा के उपदेसक
होने की इछा नप्पके नहीं व्रुहते की हम कया कहते हैं श्रौन
८ कीसके व्रीप्पै में व्रयन देते हैं। पनंतु हम जानते हैं की
व्रैवसथा अछी है यदी मनुप्प उसे उयीत नीत से कने।
९ यह जानके की व्रैवसथा घनमी पुनुप्प के लीये नहीं पनंतु
व्रैवसथा हीन श्रौन अगया भंगकनीनहान अघनमी श्रौन
पापीयों के लीये अपवीतन श्रौन ढीठ के लीये श्रौन पीतन
घातकों श्रौन मातन घातकों श्रौन मनुप्प घातकों के लीये।

१० व्रीभीयानीय़ों श्रीन पुनुप्प गामीय़ों श्रीन पुनुप्पन के चोनों श्रीन
मीथय़ावादय़ों श्रीन झूठी कीनीय़ा प्पानेवालों के कानन श्रीन
जो उन से श्रीन कोइ व्रसत जो प्पने उपदेस से उलटी होवे उनके
११ कानन है। धंनमान ईस्वन के तेजोमय़ मंगलसमाचान के
१२ समान जो मुझे सौंपा गय़ा। श्रीन मैं श्रपने पनभु मसीह य़सु
का जीसने मुझे सामनथ दीय़ा धंनमानता ऊं इस कानन की
उसने मुझे व्रीसवास के जोग समझा श्रीन सेवकाइ में नप्पा।
१३ मैं तो श्रागे नींदीक श्रीन उपदनवी श्रीन संतानेवाला था पनंतु
मैं ने दय़ा पाइ इस कानन की मैं ने श्रव्रीसवासता में मुनप्पता
१४ से कीय़ा। श्रीन हमाने पनभु का श्रनुगीनह व्रीसवास श्रीन
१५ पनेम समेत जो मसीह य़सु में है व्रऊत उभना। य़ह व्रीसवास
के जोग का व्रचन श्रीन सव्रके गनहन कनने के जोग है की
मसीह य़सु जगत में श्राय़ा की पापीय़ों को व्रचावे जीनहों
१६ में मैं पनधान ऊं। पनंतु मुझ पन इस लीय़े दय़ा की गइ की
मुझ में जैसा पनधान पन य़सु मसीह श्रपने व्रडे धीनज को
पनगट कने की उनके कानन जो उस पन श्रनंत जीवन के लीय़े
१७ व्रीसवास लावें दीनीसटांत व्रनुं। श्रव्र नाजा को जो सनातन
श्रमन श्रदीनीस जो श्रदैत व्रुधनान ईस्वन है पनतीसठा श्रीन
१८ ऐसनय़ सनव्रदा श्रनंत है श्रामीन। हे पुतन तीमताउस मैं
तुझे उन श्रागम गय़ानीय़ों के समान जो श्रागे तेनी श्रवसथा
में कीय़े गय़े य़ह श्रगय़ा देता ऊं की उनहों के कानन से तु
१९ श्रछी लड़ाइ लड़। श्रीन व्रीसवास श्रीन श्रछे व्रीवेक को धने
नह जीसे कीतनें ने छोड़के व्रीसवास के व्रीप्पै में नाव को
२० तोड़ा। उनहों में से हमीय़ुस श्रीन सीकंदन हैं जीनहें मैं ने
सैतान को सौंपा की वे सीप्पें की नींदा न कनें।

२ दुसना पनव्र।

१ श्रव्र मैं उपदेस कनता ऊं की सव्र से पहीले व्रीनती श्रीन

पनानथना ग्रौन ब्रीनय़ ग्रौन धंनब्राद समसत मनुष्यन के लीय़े
२ कीय़ा जाय़। नाजाओं के ग्रौन उन सभों के लीय़े जो पना-
कनमी हैं की हम यैन ग्रौन कुसल से समसत भकताइ ग्रौन
३ सयाइ में जीवें। कय़ोंकी हमाने नीसतानक इसन के आगे
४ य़ही भला ग्रौन गनाह्य है। जो याहता है की समसत मनुष्य
५ ब्रयाय़े जावें ग्रौन सत के गय़ान लों पऊंयें। कय़ोंकी इसन
प्रेक ग्रौन इसन ग्रौन मनुष्य के ब्रीय में प्रेक मनुष्य अनथात
६ मसीह य़सु बीयवइ है। जीसने अपने को सभों के मोष्य के
७ लीय़े दीय़ा की समय़ पन साष्यी दी जाय़। मैं मसीह में सय
ब्रोलता ऊं झूठ नहीं कहता की मैं उसके लीय़े उपदेसक ग्रौन
पनेनीत ठहनाय़ा गय़ा की ब्रीसवास ग्रौन सयाइ में अंनदेसीय़ों
८ को सीष्याउं। सो मेनी इछा य़ह है की हन प्रेक सथान
में लोग पनानथना कनें पवीतन हाथों को नीसकनोध ग्रौन
९ नीसंदेह उठावें। इसी नीत से इसतीनी भी अपने को लाज
ग्रौन संकोय से ग्रौन संजम से सवांने ब्राल गुथने अथवा सोने
१० अथवा मोतीय़ों अथवा ब्रऊमोल के ब्रसतन से नहीं। पनंतु
उतम कानजन से सवांने जैसा इसतीनीय़ों को जो इसन की
११ सेवाती कहावती हैं जोग है। इसतीनी समसत ब्रस में होके
१२ युपके से सीष्ये। पनंतु मैं अगय़ा नहीं देता की इसतीनी
सीष्लावे अथवा पुनुष्य पन पनभुता कने पनंतु युप याप
१३ नहे। कय़ोंकी पहीले आदम ब्रनाय़ा गय़ा पीछे हौवा।
१४ ग्रौन आदम ने छल न प्याय़ा पनंतु इसतीनी छल प्याके
१५ पाप में पड़ी। तथापी वुह ब्रालक जनने में ब्रयाइ जाय़गी
जो वे ब्रीसवास में ग्रौन पनेम ग्रौन पवीतनता में संजम के संग
सथीन नहे।

३ तीसना पनब्र।

१ य़ह ब्रयन पनतीत के जोग है की य़दी कोइ मंडलायछ

२ का पद व़ुझत याहे वुह अच्छे कानज को याहता है। सो
अवस है की मंडलाधच्छ नीनदोष्प औान एक पतनी का पती
यौकस सगयान उतम सन्नाव अतीथीपालक औान उपदेस कनने
३ में नापुन होवे। औान मद्यप अथवा मनकहा अथवा लालयी
न होवे पनंत मधम औान ह्गलालु अथवा लोभी न होवे।
४ एक जो अपने व़ालकों को गंभीनता से व़स में नष्पता औान
५ अपने घन की पनघानता अच्छी नीत से कनता है। कय़ोंकी
य़दी कोइ अपनेही घन की पनघानता कनने न जाने तो वुह
६ इसन की मंडली की यौकसी कय़ोंकन कनेगा। औान नय़ा
सीष्प न होवे कहीं वुह गनव़ से फूलके सैतान के दंड की
७ अगय़ा में न पड़े। इस लोय़े य़ह भी उयीत है की उनहों
से जो व़ाहन हैं सुभनाम पावे की वुह नींदा में औान सैतान
८ के फंदे में न पड़े। इसी नीत से याहीय़े की सेवक गंभीन
होवें औान दो जीभी अथवा मधप अथवा मलीन लाभ के लोभी
९ नहीं। औान व़ीसवास के भेद को पवीतन मन से धने नहें।
१० औान य़े भी पहीले पनष्पे जावें तव़ य़दी वे नीनदोष्प नीकलें
११ तो सेवक के पद में कानज कनें। इसी नीत से उनकी पतनी
भी गंभीन होवें औान हुठे दोष्पदाय़क न होवें सगय़ान औान
१२ सानी व़ातों में व़ीसवास के जोग होवें। सेवक एक एक पतनी
का पती होवे अपने व़ालकों औान अपने घनों को अच्छी नीत
१३ से व़स में नष्पते हों। कय़ोंकी जीनहों ने सेवकाइ के कानज
को अच्छी नीत से कीय़ा सो अपने लोय़े अच्छे पद औान व़ीसवास
१४ में व़ड़े ढाढ़स को जो मसीह य़सु पन हैं कमाते हैं। य़े व़ातें
मैं लीष्पता हूं औान आसा नष्पता हूं की तुह्म पास सीघन आउं।
१५ पनंतु जो मैं अव़ेन कनुं जीसतें तु जान नष्पे की इसन के घन
में जो जीवते इसन की मंडली औान सयाइ का ष्पंभा औान
१६ नेउं है कय़ोंकन नीव़ाह कीय़ा याहीय़े। औान नीसंदेह
इसन की सेवा का भेद महान है इसन सनीन में पनगट हुआ

आतमा में नीनदोष्य ठहनाया गया दुतों से देष्या गया अंन-
देसीयों में उसका उपदेस कीया गया जगत में व्रीसवास कीया
गया ऐसनय में उपन उठाया गया।

४ चैाथा पत्र।

१ पनंतु आतमा तो ष्याेलके कहता है की पीछले समयों में
कीतने व्रीसवास से फीन जायेंगे की वे भनमावने वाले आतमाओं
२ औान पीसाचों की सीष्या में चीत लगावेंगे। यह झुठों की
कपटाइ से होगा जीनका मन तपत लोहे से दागा गया है।
३ व्रीवाह कनने से व्रनजेंगे औान मांस ष्याने से नीसेघ कनेंगे
जीनहं इसन ने उतपंन कीया की वे लोग जो व्रीसवासी औान
४ सत के गयानी हैं घंनव्राद कनके ष्यावें। कयोंकी इसन की
उतपंन की हुइ हन एक व्रसतु अछी है औान तयाग कनने के
५ जोग नहीं यदी वुह घनव्राद के साथ ष्याइ जावे। कयोंकी
वुह इसन के व्रचन औान पनानथना से पवीतन की गइ है।
६ सो जो तु भाइयों को ये व्रातें चेतावे तो तु यसु मसीह का
अछा सेवक व्रना नहेगा अनथात व्रीसवास की व्रातें में औान
सुसीष्या में जीसे तु ने पनापत कीया है पनतीपाल पावेगा।
७ पनंतु घनमहीनों औान व्रुढीयों की कहानीयों को तयाग कन
८ औान इसन की सेवा का साघन कन। कयोंकी सनीन की
साघना थोड़ा लाभ है पनंतु इसन की सेवा सव्र व्रातों के लाभ
के लीये है की व्रनतमान औान भव्रीस जीवन की पनतीगा
९ नष्यती है। यह व्रचन व्रीसवास के जोग है औान सव्र के
१० गनहन कनने के जोग है। कयोंकी इसी कानन हम पनीसनम
कनते हैं औान नींदा सहते हैं इस लीये की हम ने जीवते
इसन पन आसा नष्यी है जो समसत मनुष्यन का तनान कनता
११ है व्रीसेष्य कनके व्रीसवासीयों का। इन व्रातें की अगया
१२ कन औान सीष्या। कोइ तेनी तनुनाइ की नींदा न कने पनंतु

तु व्रीसवासीयों के लीये व्रयन में औान व्रात यीत में औान
पनेम में औान आतमा में औान व्रीसवास में औान पवीतनता में
१३ दीनीसटांत व्रनो। जव्र लों मैं आउं तु पढ़ता औान सीप्पा
१४ कनता औान उपदेस देता नह। तु उस दान से जो तुह में है
जो तुहे आगमगयान से मंडलाधक्षों के हाथ नप्पने के आसीष
१५ से दीयागया अयेत न हो। इनहीं व्रातों को घयान कन औान
उनहीं में लवलीन नह की तेना व्रढ़ता जाना सब्रों पन पनगट
१६ होवे। अपने पन औान अपनी सीप्पा पन यौकस नह औान उन
पन सथीन नह कयोंकी ऐसा कनने से तु अपने को औान अपने
सुननीहानों को व्रयायेगा।

५ पांयवां पनव्र।

१ कीसी पनायीन को मत दपट पनंतु पीता के समान औान तनुनों
२ को भाइयों के समान। औान पनायीन इसतीनीयों को जैसे
माता को औान तनुनीयों को जैसे व्रहीनों को समसत पवीतनता
३ से व्रुझ औ। व्रीधवन को जो सयसुय व्रीधवा हैं पनतीसठा
४ दे। पनंतु यदी कोइ व्रीधवा का पुतन अथवा पोता होवे तो वे
पहीले सीप्पें की अपने घन की सेवा कनें औान माता पीता का
भाग भन देवें कयोंकी यह इसन के आगे सोभीत औान गनाह्य
५ है अव्र सयी व्रीधवा औान अनाथ वुह है जो इसन पन भनोसा
नप्पती है औान नात दीन व्रीनती में औान पनानथना में लवलीन
६ नहती है। पन जो सुप्प भोगती है सो जीतेजी मीनतक
७ है। औान यह अगया कन को वे नीनदोप्प होवें।
८ पनंतु यदी कोइ अपनेहो के औान व्रीसेप्प कनके अपने घन
के लीये नहीं सहेजता तो वुह व्रीसवास से मुकनगया औान
९ अव्रीसवासीयों से भी व्रुना है। कोइ व्रीधवा साठ व्रनस के
नीये गीनती में न आवे जो ऐकहीं पती की पतनी ऊइ होय।
१० औान सुभ कनम के लीये जसपती होय जो उसने लड़कों को

सीष्पाया हो अथवा परदेसीयों को अपने यहां टीकाया हो
अथवा सीधों के पांव धोए हो अथवा दुष्पीयों का सहाय कीया
११ हो जो हर एक भले काम का पीछा कीया हो। पर तरुनी
बीधवन को छांट डाल कयोंकी जब वे मसीह से बीरुध पेलाड़
१२ होती हैं तो बीवाह करेंगी। और अपने को दोष्प की अगया
के जोग करती हैं कयोंकी उनहों ने अपने अगीले बीसवास को
१३ मोटा डाला। और आलसी भी होके घर घर डोलती फीरती
हैं और केवल आलसी नहीं परंतु बकबकी भी अरु औरों
के काम में उलझनेवाली और अनुचीत बातें करती हैं।
१४ इस कारन मेरी इछा है की तरुनी इसतीरी बीवाह करें और
बालक जनें और गीरहसथी करें और सत्रु को नींदा करने
१५ का कारन न देवें। कयोंकी कइ एक अभी से सैतान के पीछे
१६ फीरी हैं। परंतु जो कीसी बीसवासी अथवा बीसवासीनी की
बीधवा हुं तो वे उनका उपकार करें जीसतें मंडली पर बोझ
न होवे की वुह उन्ही जो सचमुच बीधवा हैं उपकार करे।
१७ प्राचीनों को जो अछी रीत से प्रधानता करते हैं बीसेष्प
करके उनको जो बचन और सीष्पा में परीसरमी हैं दुना
१८ प्रतीसठा के जोग जानो। कयोंकी गरंथ कहता है की बैल
का जो दवंरी करता है मुंह मत बांध और की बनीहार
१९ अपनी बनी के जोग है। बीना दो अथवा तीन साष्पीयों के
२० प्राचीनों पर अपबाद मत मान। उनहों को जो पाप करते
हैं सब के सनमुष्प दपट जीसतें औरों के लीये भी भै होवे।
२१ मैं इसर और प्रभु यसु मसीह और चुने हुए दुतों के आगे
अगया करता हुं की तु पछ छोड़के इन बातों को धारन कर
२२ और कीसी की पछ्य मत कर। एकाएक कीसी पर हाथ न
रष्प और न औरों के पापों में भागी हो अपने को पवीतर
२३ रष्प। और अब से तु जल न पीया कर परंतु अपने ह्योह
और बारंबार नीरबलता के लीये थोड़ा दाष्परस पी।

२४ कीतने मनुष्यन के पाप परगट हैं श्रीर आगे आगे व्रीयार लों
२५ पहुंयते हैं श्रीर कीतनें के पीछे पीछे जाते हैं। सो उतम
कारज भी परगट हैं श्रीर वे जो श्रीर ढव्र के हैं छीपाए जा
नहीं सकते।

६ छठवां परव्र।

१ जीतने सेवक जुए के नीये हैं अपने सामीयों को समसत
सनमान के जोग जानें की इसर के नाम की श्रीर सीप्पा की
२ नींदा न की जावे। श्रीर जीनहों के व्रीसवासी सामी हैं वे
उनकी इस कारन की भाइ हैं अवगया न करें परंतु व्रीसेप्प
करके सेवा करें इस लोये की वे व्रीसवासी श्रीर पीरीय श्रीर
३ पदारथ में साह्री हैं ये व्रातें सीप्पा श्रीर व्रुह्ा। यदी कोइ
श्रीर ढव्र की सीप्पा करे श्रीर सजीवन व्रयन को अरथात
हमारे परभ्रु यसु मसीह के व्रयन को श्रीर सीप्पा को जो इसर
४ की सेवा के जोग है गरहन नहीं करता। वुह घमंडी है श्रीर
कुछ नहीं जानता परंतु उसको व्रयन का व्रीवाद श्रीर झगड़ों
का रोग है जीन से डाह श्रीर झगडा श्रीर गाली गलौझ श्रीर
५ व्रुरी यींता होती हैं। श्रीर उन लोगों के समान व्रीवाद करते
हैं जीनके यीत व्रीगड़ गये हैं श्रीर जीस में सयाइ नहीं हैं
श्रीर समझते हैं की लाभ इसर की सेवा है तू ऐसों से परे रह।
६ परंतु इसर की सेवा संतोप्पता के संग व्रड़ा लाभ है।
७ कयोंकी हम जगत में कुछ न लाए श्रीर परगट है की हम उस
८ से कुछ ले जा नहीं सकते। सो भोजन श्रीर व्रसतर पाके हम
९ इनहों से संतोप्प करें। परंतु वे जो अपने को धनमान
अवस कीया याहते हैं सो परीछा श्रीर फंदे में श्रोंचे मुंह
गीरते हैं श्रीर व्रहुत सी मुरप्पता श्रीर व्रुरी लालसा में पड़ते
हैं जो मनुष्यन को सतयानास श्रीर व्रीनास में देमारती हैं।
१० कयोंकी धन की परीत समसत व्रुराइयों की जड़ है कीतने

उसकी लालच करने से बिस्वास के मारग से भटक गये और
११ नाना प्रकार के सोक से छेद गये। परन्तु हे ईस्वर के जन
इन बस्तुन से भाग और धरम और ईस्वर की सेवा और
बिस्वास और दया और संतोष्य और कोमलता का पीछा कर।
१२ बिस्वास की अच्छी लड़ाई लड़ अनंत जीवन के पकड़ ले
जिसके लिये तु बुलाया गया और तने बहुत से साष्यीयों के
१३ आगे भला मानना मान लीया है। मैं ईस्वर के जो समसत
बसतुन के जीलावता है और मसीह यसु के साष्यात जिसने
पनतयुस पीलातुस के आगे भले मानने पर साष्यी दी तुझे
१४ अगया करता हूं। की तु अगया के नीसकलंक और नीरदोष्य
हमारे प्रभु यसु मसीह के परगट होने लों धारन कर।
१५ जिसे वुह अपने समयों में परगट करेगा जो धंन और अदैत
सामरथी राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है।
१६ अमरता केवल उसीकी है वुह आगम जोत में बास करता है
जिस के कीसी मनुष्य ने न देष्या न देष्य सकता है उसीकी
१७ परतीसठा और सामरथ सरबदा है आमीन। इस संसार
के धनमानों के अगया कर की मन में गरब न करें और
बे जड़ धन पर आसा न करें परंतु जीवते ईस्वर पर जो हमारे
१८ भोग के लीये सब कुछ बहुताई से देता है। की वे भला करें
और सुकारजन में धनी और दान करने में सीघ और बांटने
१९ में अभीलासी। और भबीस के लीये येक भली नेउं धर
२० रष्यें की वे अनंत जीवन के पकड़ रष्यें। हे तीमताउस वुह
जो तुझे सौंपा गया जतन से रष्य और उन अधरम और
बयरथ बकबक से और उस बसतु के बीवाद स जो झुठाई
२१ से बीदया कहावती हैं मुंह फेर ले। जिसे कीतने अंगीकार
करके बीसवास से भटक गये हैं अनुग्रीह तुझ पर होवे
आमीन।

पुलुस की दुसरी पत्री तीमताउस को

---

१ पहीला पर्ब्ब।

१ पुलुस के ओर से जो जीवन की परतीगया के समान जो
मसीह यिसु में है इसर की इछा से यिसु मसीह का परेरीत
२ है। मेरे पीरीय पुत्र तीमताउस को अनुग्रह दया कुसल
३ पीता इसर और हमारे परभु मसीह यिसु के ओर से। मैं
इसर का धंन मानता हुं जीसकी सेवा मैं पीतरों के समान
नीरमल ब्रीवेक से करता हुं की मैं रात दीन अपनी परारथना
४ में नीरंतर तुझे समरन करता हुं। तेरे आंसुओं को समरन
करके मैं बहुत अभीलासी हुं की तुझे देखुं की आनंद से भर
५ जाउं। तमहारे नीसकपट ब्रीसवास को समरन करता हुं जो
पहीले तेरी नानी लुइस में और तेरी माता युनीकी में बास
६ करता था और मुझे नीसचय है की तुझ में भी है। इस कारन
से मैं तुझे चेत करवाता हुं की तु इसर के उस दान को जो
७ मेरे हाथ रखने से तुझ में है उसकावे। कयोंकी इसर ने हम
को डेठापन का आतमा नहीं दीया परंतु जोधापन और परेम
८ और बुध का। तु इस कारन न तो हमारे परभु की साखी
से न मुझ से जो उसका बंधुआ हुं लजीत हो परंतु इसर के
९ सामरथ से मंगलसमाचार के दुखों में भागी हो। उसने हमें
बचाया और पवीतरता के बुलावा से हमें बुलाया हमारे

कानजन के समान नहीं पनंतु अपनेही ठहनाझे ऊऐ के ग्रैान
अनुगीनह के समान जो मसीह य़सु में सनातन समय़ों से हमें
१० दीय़ा गय़ा। पनंतु अव्र हमाने मोष्पदाता य़सु मसीह के
पनगट होने से पनगट ऊआ जीसने मीनतु को नसट कीय़ा
ग्रैान जीवन ग्रैान अमनता को मंगलसमाच्यान के दुवाना से
११ पनकास कीय़ा। जीसके लीय़े मैं उपदेसक ग्रैान पनेनीत
ग्रैान पनदेसीय़ों का सीष्पावनोहान ठहनाय़ा गय़ा ऊं।
१२ कय़ोंकी उसी लीय़े मैं य़ह दुष्प भी पावता ऊं पनंतु मैं लजीत
नहीं कय़ोंकी मैं जानता ऊं जीस पन मैं व्रीसवास लाय़ा ऊं
ग्रैान नीसयय़ जानता ऊं की वुह मेनी थाती को उस दीन लों
१३ जतन से नष्प सकता है। तु उन योष्पी व्रातों के डौल को जो
तु ने मुझ से सुनी य़सु मसीह के व्रीसवास ग्रैान पनेम में दीनढ़ता
१४ से धन नष्प। उस सैांपी ऊई भली व्रसतु को धनमातमा से जो
१५ हमों में व्रसता है जतन से नष्प। तु य़ह जानता है की सव्र
जो ग्रासीय़ा में हैं जीन में से फुजलस ग्रैान हनमोगनस हैं
१६ मुझ से फीन गय़े हैं। पनभु उनोसफुनस के पनीवान पन
दय़ा कने कय़ोंकी उसने व्रानंव्रान मुझे व्रहलाय़ा ग्रैान मेने
१७ सीकन से लजीत न ऊआ। पनंतु नुम में होके उसने मुझे व्रड़े
१८ जतन से ढुंढ़ा ग्रैान पाय़ा। इसन उस पन ग्रनुगीनह कने
की वुह पनभु से उस दीन दय़ा पावे ग्रैान जो सेवकाइ
उसने अफसस के नगन में की तुही उन्हें ग्रछी नीत से
जानता है ।

२ दुसना पनत्र।

१ हे मेने पुतन तु उस ग्रनुगीनह में जो मसीह य़सु में है दीनढ़
२ हो। ग्रैान जो व्रातें तु ने व्रऊत से साष्पीय़ों के ग्रागे मुझ से
सुनीं है उसे व्रीसवास के जोग पुनुष्पों को सैांप जो ग्रैानों को
३ भी सीष्पा सकें। सो तु य़सु मसीह के ग्रछे सीपाही के समान

४ कसटों को सहले। कोइ मनुष्य जो जुध को नीकलता है अपने
को जगत के व्रेवहान में नहीं उलझावता है की वुह उसे
५ जीसने उसे सीपाही कीया है पनसन कने। श्रीन जो कोइ
व्रजनी कनता है सो मुकुट नहीं पावता जव्र लों वुह ठहनाये
६ ङये के समान व्रजनी न कने। अवस है की कीसान पहीले
७ पनीसनम कने श्रीन तव्र फरल का भाग लेवे। जो मैं कहता ङं
उसे सोय नण्य श्रीन पनभु तुझे समसत व्रातों की समझ देवे।
८ समनन कन की य्रसु मसीह दाउद के व्रंस में का जो मने
९ मंगलसमाच्यान के समान मीनतकन में से उठाया गया। जीस में
मैं कुकनमी के समान य्रहां लों दुष्य पावता ङं की व्रंधन में ङं
१० पनंतु इसन का व्रयन नहीं व्रंधा है। इसी लीये मैं च्युने ङये
लोगों के लीये सव्र कुछ कहता ङं की नीसतान जो य्रसु मसीह
११ में है अनंत ऐसनय के संग मीले। य्रह व्रयन व्रीसवास के जोग
है की जो हम उसके संग मने ते। हम उसके संग जीयेंगे।
१२ जो हम कसट पावें ते। हम उस के संग नाज कनेंगे जो हम उस
१३ से मुकन जायें ते। वुह भी हम से मुकनेगा। जो हम अव्रीस-
वासी होवें वुह व्रीसवास के जोग है वुह अपने को मुकन नहीं
१४ सकता। इन व्रातों का समनन कनाओ श्रीन पनभु के सनमुष्य
साष्पी दे की लोग व्रातों के व्रीष्यै में झगड़ा न कनें जो सनव्रथा
१५ नीसफरल है पनंतु य्रह की सनोता व्रीगड़ जायें। अपने को
इसन का भाया ङश्रा ऐक कानज कानी जीसे लजीत होने
का कानन न हो सयाइ के व्रयन को ठीक नीत से भाग कनने
१६ में जतन कन। पनंतु अधनम श्रीन व्रयनथ व्रकवादों से पन
१७ नह कयोंकी वे अधीक अधनमता में व्रढ़ते जायेंगे। श्रीन
उनकी व्रातें सुनये की नाइं ष्यायंगी जोन में से ह्मीनीयस
१८ श्रीन फरलीतस हैं। जो य्रह कहके की पुनरुतथान हो च्युका
सयाइ के व्रीष्यै से फीन गये श्रीन कीतनों का व्रीसवास से
भनीसट कनते हैं। तथापी इसन की नेउ दीनढ़ व्रनी है

श्रीन ग्रह छाप नप्पती है की पनभु उनहों का जो अपनेही
हैं पहीयानता है श्रीन याहीये की हन प्रेक जो मसीह का
१० नाम लेता है कुकनम से दुन नहे। कयोंकी व्रड़े घन में केवल
सोने नुपे के पातन नहीं हैं पनंतु काठ के श्रीन मीटी के भी
श्रीन कीतने आदन के श्रीन कीतने अनादन के कानज के
२१ लीये हैं। इस लीये यदी कोइ अपने के इनहों से पवीतन
कने तो वुह आदन का पातन सुध कीया ऊआ श्रीन सामी के
कानज के जोग श्रीन हन प्रेक अछे कानज के लीये सीघहोवेगा।
२२ तनुनाइ के नस से भागो श्रीन जो पवीतन मन से पनभु का
नाम लेते हैं उनके संग घनम श्रीन व्रीसवास श्रीन पनेम श्रीन
२३ कुसल का पीछा कन। पनंतु मुढ श्रीन अपढ़े पनसनों से पने
२४ नह ग्रह जानते ऊपे की वे झगड़ा उतपंन कनते हैं। पनंतु
उयीत नहीं की पनभु का सेवक झगडा कने पनंतु सव्र से कोमल
२५ नहे सीप्पाने पन सीघ श्रीन दुप्प सहनीहान। नमीनता से
व्रीनोघ कननीहानों को सीप्पा देवें जो कीसी नीत से सत को
२६ मान लेने के लीये इसन उनहें पसयाताप देवे। श्रीन जीसतें
वे सैतान के परंदे से जीस ने अपनी इछा पन उनहें व्रंघुश्रा
कीश्रा जाग उठें।

३ तीसना पत्र।

१ श्रीन ग्रह जान नप्प की अंत के दीनों में सकेती का समय
२ आवेगा। कयोंकी मनुप्प अपनेही पनेमी श्रीन लालयी व्रड़ाइ
कननीहान अंहकानी इसन के नींदक माता पीता की अगया
३ भंग कननीहान घयंनमानी श्रीन अपवीतन। माया नहीत
अवचीं के भंग कननीहान श्रीन मीथयापव्रादी श्रीन अजीतें-
४ दीनीय श्रीन कठोन श्रीन भले लोगों के नींदक। छली श्रीन
मगन श्रीन अभीमानी श्रीन इसन से सुप्प व्रीलास के अघीक
५ पनेमी। इसन की सेवा का नुप नप्पते हैं पनंतु उसके सामनथ

६ से सुकनते हैं ऐसों से पने नह। उनहों में वे हैं जो घन घन
घुसके उन अौकी इसतीनीओं को व्रस में लावते हैं जो पापों से
लदी हैं अौन नाना पनकान के कामाभीला से पींची गइ हैं।
७ नीत सीप्पा पावती हैं पनंतु सयाइ के मान लेने लों कघी नहीं
८ पहुंच सकती। अौन जीस नीत से यंनस अौन यव्रनस ने मुसा
का सामना कीया वैसा ये भी सयाइ का सामना कनते हैं नसट
९ वुघ लोग जो व्रीसवास के व्रीप्पै में अभाऐ हैं। पन वे आगे न
व्रढेंगे कयोंकी उनकी मुनप्पता सभों पन पनगट हो जायेगी
१० जीस नीत से उनकी भी थी। पनंतु तु मेना उपदेस अौन
व्रोल याल अौन अभीपनाय अौन व्रीसवास अौन अतीसहना
११ अौन पनेम अौन घीनज। अौन संताया जाना अौन दुप्पों
को जो अंताकीय: अौन यकुनीयों में अौन लसतना में मुझ पन
पड़े अकी नीत से जानता है की मैं ने कैसे दुप्प उठाये पनंतु
१२ पनभु ने मुझे उन सभों से व्रयाया। हां अौन सव्र जो यसु
१३ मसीह में घनम से यलेंगे संताये जायेंगे। पनंतु दुसट अौन
छली लोग छल देके अौन छल पाके वुनाइ में अघीक व्रढ़ते
१४ जायेंगे। पन तु उन व्रातों पन सथीन नह जीसे तु ने सीप्पा है
अौन व्रीसवास लाया है यह जानके की तुने कीस से सीप्पा है।
१५ अौन की व्रालकपन से घनम पुसतक तेने जाने हुऐ हैं जो
सामनथी हैं की व्रीसवास के दुवाना से जो मसीह यसु में है
१६ उघान के लीये तुझे व्रुघमान कने। समसत गनंथ इसन
के पनगट कीये हुये हैं अौन सीप्पा अौन दोप्प के अौन
दपटने के अौन घनम में उपदेस कनने के लीये लाभ हैं।
१७ जीसतें इसन का जन पनीपुनन होवे अौन हन ऐक उतम
कानज में सीघ नहे।

४ यौथा पनव्र।

१ सो मैं इसन अौन पनभु यसु मसीह के आगे जो पनगट होके

अपने नाज में जीवतन चैान मीनतकन का नय़ाय़ कनेगा
२ अगय़ा कनता ऊं। समय़ में चैान असमय़ में व्रयन का उपदेस
कन व्रऊत सह सह के समहाके दोष्प व्रहा चैान डांट दे
३ चैान सीष्पा कन। कय़ोंकी समय़ आवेगा जव्र वे सजीवन
सीष्पा को न सहेंगे पन ष्पुजलाते ऊऐ कान नष्पके अपनी लालसा
४ के समान उपदेसकों का व्रटोनेंगे। चैान अपने घय़ान को
सयाइ के चैान से फेनेंगे चैान कहानीय़ों के चैान फीनाय़े
५ जाय़ंगे। पनंतु समसत व्रातों में यैाकस नह दुष्प को सह मंगल
६ समायान का कानज कन अपनी सेवा को पुना कन। कय़ोंकी
अव्र मैं व्रल होने को सीघ ऊं चैान यलने का समय़ नीकट है।
७ मैं ने अक्का जुघ कीय़ा है मैं ने अपने दैाड़ को समापत कीय़ा है
८ मैं ने व्रीसवास को नष्प लीय़ा है। सो अव्र घनम का मुकुट मेने
लीय़े घना है जीसे पनभु जो घनमी नय़ाय़ी है उस दीन मुहे
देगा चैान केवल मुह्ही को नहीं पनंतु उन सभों को भी जो उसके
९ पनगट होने के पनेमी हैं। तु सीघन से मेने पास आवने को
१० जतन कन। कय़ोंकी दीमस ने इस व्रनतमान जगत को पीयान
कनके मुहे क्कोड़ दीय़ा है चैान तसलुनी को यला गय़ा कनसकंस
११ गलतीय़ः को चैान तीतस दलमतीय़ः को गय़ा। केवल लुका
मेने संग है तु मनकस को अपने संग ले आ कय़ोंकी सेवा में वुह
१२।१३ मेने काम का है। मैं ने टकीकस को अफसस को भेजा। तु
वुह लव्रादा जीसे मैं ने तनवास में कनपस के घन में क्कोड़ा चैान
१४ पुसतकों को व्रीसेष्प कनके यनमी पतनों को लेता आ। सीकंदन
ठठेने ने मुह से व्रऊत व्रुनाइ की उसके कानजन के समान
१५ पनभु उसको फल देवे। उस से तु भी यैाकस नह कय़ोंकी
१६ उसने हमानी व्रातों की व्रऊत सतनुता की। मेने पहीले व्रयाव
की व्रात में कोइ मेने संग न देष्पाइ दीय़ा पनंतु सभों ने
१७ मुहे क्कोड़ दीय़ा उसका लेष्पा उनहें देना न पड़े। पन पनभु
मेने समीप ष्पड़ा था मुहे व्रल दीय़ा की मुह से मंगल समायान

का उपदेस ऋनोसा के साथ कीया जावे श्रीन समसत पनदेसी
१८ लोग सुनें श्रीन मैं सींह के मुंह से व्रयाया गया। श्रीन पनभु
मुझे हनएक वुने कानज से व्रयावेगा श्रीन अपने सनग के नाज
के लीये जतन से नप्पेगा उसकी महीमा सनव्रदा है ग्रामीन।
१९ पनसकला श्रीन अकला श्रीन अनीसफरनस के घनाने को नमस-
२० कान कह। इनासतस कनंतस में नहा श्रीन तनफीमस को मैं
२१ ने मीलीतस में नोगी छोड़ा। जतन कन की तु जाड़े से आग
पड़ंये युवुलस श्रीन पुदींस श्रीन लीनस श्रीन कलादीया श्रीन
२२ समसत भाइ तुझे नमसकान कहते हैं। पनभु युसु मसीह तेने
आतमा के संग होवे अनुगनह तुम्हों पन नहे ग्रामीन।

पलुस की पतनी तीतस को।

---

१ पहीला पनब्र।

१ इसन का सेवक पुलुस श्रोन युसु मसीह का पनेनीत इसन
के युनेऊर्ण्ये के व्रीसवास के लीय्रे श्रोन सयाइ को मान लेने के
२ लीय्रे जो इसन की सेवा के समान है। की अनंत जीवन की
श्रासा में जीसे इसन ने जो हुठ नहीं कहीसकता जगत के श्रानंभ
३ से पहीले अवघी कीय्रा। पनंतु उपदेस के दुवाना से अपने
व्रयन को समय्र पन पनगट कीय्रा जो हमाने उघानक ननी-
४ हान इसन की अगय्रा के समान मुहे सैांपा गय्रा। तीतस को
जो सामान व्रीसवास की नीत से मेनाही पुतन है अनुगनह दय्रा
श्रोन कुसल पीता इसन से श्रोन हमाने उघान कननीहान
५ पनभु युसु मसीह के श्रोन से होवे। मैं ने तुहे इस कानन
कीनीत में छोड़ा की तु उन व्रसतुन को जो अघुड़ी थीं सवांने
श्रोन पनाय्योनों को हनय्रेक नगन में जैसा मैं ने तुहे अगय्रा की
६ है ठहनावे। जदी कोइ नीनदोप्प श्रोन य्रेक पतनी का पती हो
जीन के लड़के व्रीसवासी हैं श्रोन ऊलन अथवा मगनाइ से
७ दोप्प नहीत ऊं। कय्रोंकी अव्रस है की मंडलाघछ इसन के
भंडानी के समान नीनदोप्प होवे श्रोन अपना सानथी नहीं
८ तुनंत नीसीश्रा न जाय्र न मदप न मनकहा न लालयी। पनंत
श्रथीती पालक साधुन का पनेमी सजमी घनमी पवीतन मघमु

९ हे। जैसा उसने सीष्या पाइ है व्रीसवास के व्रयन को दीढ़ता
से घरे रहे जीसतें वुह योष्पी सीष्या से उपदेस करसके श्रोर
१० व्रीपरीतों का व्रोघ कर सके। कयोंकी व्रज्ञत से नगरे श्रोर
व्रयारथ व्रकव्राची हैं श्रोर छली व्रीसेष्प करके घ्रतरः कीये
११ गयों में से। जीनका मुंह व्रंद कीया याहीये वे ग्ननुयीत
१२ व्रातें सीष्या सीष्या के घर के घर को उलटावते हैं। उनहीं में
से प्रेक ने जो उनका ग्रागमगयानी था कहा है की करीती सर-
१३ व्रदा हुठे हैं व्रनैले पसु श्रोर पेट के भ्रारी हैं। यह साष्पी सत
है इस कारन तु उनहें दीनढ़ता से डांट की वे व्रीसवास में
१४ नीरदोष्प होवें। यहूदीयों की कहानीयों पर श्रोर मनुष्पन
की ग्रगया पर जो सयाइ को मड़ोड़ते हैं घयान न देवें।
१५ पवीतरों के लीये सव्र कुछ पवीतर हैं परंतु ग्रसुघों के श्रोर
ग्रव्रीसवासीयों के लीये कुछ सुघ नहीं परंतु उनके मन श्रोर
१६ व्रीवेक भ्री ग्रसुघ हैं। इसर के गयानी कहाके करनी से
मुकरते हैं घीनीत श्रोर ग्रगया भ्रंग करनीहार होके श्रोर हर
प्रेक सुकरम में सतयानास।

२ दुसरा परव्र।

१ पर तु वे व्रातें कह जो सजीवन सीष्या के जोग ऋं।
२ की व्रीनघ पुनुष्प सोंयेत श्रोर गंभ्रीर श्रोर मघम श्रोर व्रीसवास
३ श्रोर परेम श्रोर संतोष्प में ठीक हों। श्रोर उसी रीत से व्रीनघ
इसतीरीयां भ्री साघुन के जोग की नाइं व्रेवहार रष्पें श्रोर
मीथया दोष्प दायक नहीं श्रोर ग्रती मद के व्रेवहार नहीं
४ घ्रछी व्रात की सीष्पावनीहार हों। की वे तरुनी इसतीरीयों
को संजम सीष्पावें की वे ग्रपने सामीयों श्रोर व्रालकों को
५ पीग्रार करें। ग्राप यतुरी श्रोर सत श्रोर घर में रहने वाली
श्रोर सुष्पभ्राव ग्रपनेही पतीयों को मानें की इसर के व्रयन की
६ नींदा न की जावे। इसी रीत से तरुन पुरुष्पों को भ्री सीष्पा

७ करें वे संजमी होवें। सारी ब्रातों में अपने को उत्तम
कारज की ब्रानगी कर दीप्पा सीप्पा में नीरलेपता से गंभीरता
८ से सुधाई से। सजीवन ब्रयन जो प्पंडीत न कीया जाय वुह
जो ब्रीपरीत के और है तुमहों पर कुछ ब्रुरी ब्रात का कारन
९ न पाके लज्जीत हो जाय। सेवक अपनेही सामीयों के ब्रस में
हों और सारी ब्रातों में उनको परसन करें और फीरके उत्तर
१० न देवें। और युरावने में नहीं परंतु समसत अच्छी सचौटी
दीप्पावें की वे हमारे मोप्पदाता इसर की सीप्पा को सारी ब्रातों
११ में सोभा देवें। कयोंकी इसर के उधार करने का अनगीरह
१२ समसत मनुप्पन पर परगट हुआ। जो हमें सीप्पावता है की
अधरमता और संसारी लालसा से मुकर के हम लोग इस
ब्रर्तमान जगत में सजम से और धरम से और भकताइ से
१३ जीवें। और इस आसीरब्राद की आसा को और महान इसर
और अपने मोप्पदाता यसु मसीह की महीमा के परगट होने
१४ की ब्राट जोहें। की उसने आप को हमारी संती दीया की वुह
सारे कुकरमों से हमों को छुडावे और अपने लये एक नीज
१५ लोग को जो भले कारज में उलीत है पवीतर करे। यह
ब्रातें कह उपदेस कर और समसत पराकरम स दपट दे कोइ
तेरी नींदा न करे।

३ तीसरा पर्व्व।

१ उन्हें येता दे की राजाओं और सामरथीयों के ब्रस में
होवें की अचक्षों को मानें और हर परकार की भलाइ करने
२ पर सीध रहें। कीसी को कलंक न लगावें और झगड़ालु न
होवें परंतु धीमा और समसत मनुप्पन को कोमलता दीप्पावें।
३ कयोंकी हम लोग आप भी आगे मुरप्प मगरा भटके हुए थे
और नाना परकार की ब्रुरी लालसा और सुप्पाभीलास के
दास थे और डाह और दीसका स नीबाह करते थे ब्रीरध के

४ लोग और आपस में बीरोध करते थे। परंतु जब हमारे
मुकत दाता ईसर की दया और परेम मनुष्य पर परगट हुआ।
५ उसने हमको बचाया न की धरम की करनी से जो हम ने
की परंतु अपनी दया के कारन से नये जनम के सनान से और
६ धरमातमा की नवीनता से। जीसे उसने हमारे मुकतदाता
७ ईसु मसीह के और से बहुताई से ढाया। की उसके अनुगीरह
से धरमी ठहरके अनंत जीवन की आसा के समान हम
८ अधीकारी होवें। यह बचन बीसवास के जोग है और मैं
चाहता हुं की तु नीत दीरढ़ता से इन बातों के बीष्‍ै में कह
की वे जो ईसर पर बीसवास लाये हैं उतम कारज करने में
जतन करें ये बातें अछी और मनुष्यन के लीये सफल हैं।
९ परंतु अगयान परसनों और बंसाउरीयों और ब्रैवसथा के
बीष्‍ै में झगड़े और टंटे से परे रहो कयोंकी वे नीसफल
१० और बीरथ हैं। उस मनुष्य को जो बीगाड़ है पहीले और
११ दुसरे बेर डाटने से पीछे तयाग कर। तु जानता है की ऐसा
जन फीरगया है और अपनेही से दोष्‍ी होके पाप करता है।
१२ जब मैं अरतमस अथवा तकीकस को तेरे पास भेजुं जतन कर
की तु मेरे पास नीकुपुलीस में आवे कयोंकी मैं ने ठहराया है
१३ की जाड़ा वहीं काटुं। सासतरी जीना और अपलुस को
१४ जतन से भेज की वे कीसी बसतु की चाह न रखें। और
हमारे लोग भी सीखें की परयोजन के लीये अछे कारज
१५ करहर करें की वे नीसफल न रहें। सब जो मेरे संग हैं
तुझे नमसकार कहते हैं उनको जो हम से बीसवास में परम
रखते हैं नमसकार कह तुम सभों पर अनुगीरह होवे आमीन।

पुलुस की पत्री फिलीमोन को

---

१ पुलुस के जो मसीह यिसु का बंधुआ और भाई तिमथियुस
के ओर से फिलीमोन को जो हमारा अति प्रिय और संगी
२ परिश्रमी है। और प्रिय अप्फिया और अर्खिप्पुस
हमारा संगी सिपाही और उस मंडली को जो तेरे घर में है।
३ अनुग्रह और कुशल हमारे पिता ईश्वर और प्रभु यिसु
४।५ मसीह के ओर से होवे। मैं तेरे प्रेम को जो सारे धर्मियों
से है और विश्वास को जो प्रभु यिसु पर है सुन के नित अपनी
प्रार्थना में तेरा चर्चा कर के ईश्वर का धन्यबाद करता हूं।
६ कि तेरे विश्वास में भागी होना गुणकारी होवे कि सारी
७ भलाइयां जो मसीह यिसु में तुझ में हैं मानली जावें। क्योंकि
हम तेरे प्रेम से बहुत आनंद और शांति पावते हैं कि हे भाई
८ तुझ से साधुन के जीव बिश्राम पावते हैं। सो यद्यपि मैं
उचित बातों में मसीह में साहस से तुझे आज्ञा कर सकूं।
९ तथापि प्रेम के कारण से मैं बिनती कर के बिनती करता हूं
क्योंकि मैं पुलुस बृद्ध और अब यिसु मसीह का बंधुआ भी
१० हूं। सो मैं अपने पुत्र उनीसिमस के लिये जो मैंने बंधन में
११ तुझ से उत्पन्न हुआ बिनती करता हूं। वुह आगे तेरे लिये
१२ निष्फल था पर अब तेरे और मेरे लिये सफल है। मैं ने

उसे भेजा है अब तु उसको अनथात मेरेही अंतड़ीआं को
१३ गनहन कन। मैं ने याहा था का उसे अपनेही पास नप्पुं की
वुह तेनी संती मंगलसमायान के वुघन में मेनी सेवा कने।
१४ पनतु मैं ने न याहा की तेनी इच्छा वीना कुछ कनुं की तेनी
दया आवेसक नीत से नहीं पनतु मन की इच्छा से होवे।
१५ कदे की कया जाने वुह तुह से इस लीये थोड़ी वेन लों अलग
१६ हुआ की तु उसे सनवदा के लीये पावे। अब सेवक के समान
नहीं पनंतु सेवक से सनेसठ अनथात पीनीय भाइ के समान
वीसेप्प कने मेने लीये पनंतु तेने लीये सनीन में औन पनभु
१७ में कीतना अधीक। सो जो तु मुहे संगी जानता है तो उसको
१८ मेने समान गनहन कन। जो उसने तेना कुछ वीगाड़ा है
अथवा तेना कुछ धनावता है तु उसे मेने नाम पन लीप्प नप्प।
१९ मुह पुलुस ने अपनेहा हाथ से लीप्पा है मैं आप भन देउंगा
२० तुह से नहीं कहता की तु अपनेहीं का मुहे धानता है। हां
भाइ मैं तुह से पनभु में लाभ पाउं मेनी अंतड़ी का पनभु में
२१ सुप्प दे। मैं ने तेनी अधीनता का भनोसा नप्पके तुहे लीप्पा
२२ यह जानके की तु मेने कहने से अधीक कनेगा। औन भी
मेने लीये टीकाव साध कन की मुहे आसा है की मैं तुमहानी
२३ पनानथना के कानन से तुमहे दीया जाउंगा। मसीह यसु
२४ में मेना संगी वंधुआ अपाफ्नास। औन मनकुस औन अनस-
तनप्पुस औन दीमा औन लुका जो मेने संगी पनीसनमा हैं
२५ तुहे नमसकान कनते हैं। हमाने पनभु यसु मसीह का अनुगनह
तुमहाने आतमा के संग होवे आमीन।

पुलुस की पतरी इबरानीयों को

---

१ पहीला परब।

१ ईसर जीसने आगम गयानीयों के ओर से पीतरों से
२ बारंबार और नाना परकार से बारता की। इनहीं पीछले
दीनों में हमों से पुतर के ओर से कहा जीसे उसने समसत
बसतुन का अधीकारी कीया और जीस से उसने जगतों को भी
३ बनाया। वुह उसके तेज का परकास और उसकी मुरत का
ठीक सरुप है और अपने पराकरम के बचन से समसत बसतुन
को संभालता है आपही से हमारे पापों को सुध करते महीमा
४ के दहीने ओर उपर जा बैठा। वुह दुतों से ऐसा बड़ा है
५ जैसा उसने अधीकार में उनसे सरेसठ नाम पाया। कयोंकी
उसने दुतों में से कीसके बीषै में यह कभी कहा की तु मेरा
पुतर है आज मुझ से उतपन हुआ और फेर का मैं उसका
६ पीता हुगा और वुह मेरा पुतर होगा। और फेर जब वुह
पहीलौंठे को जगत में लाता है तब कहता है की ईसर के
७ समसत दुत उसको पुजा करें। और वुह दुतों के बीषै में
कहता है की वुह अपने दुतों को आतमा और अपने सेवकों
८ को आग की लवर करता है। परंतु पुतर से कहता है की हे
ईसर तेरा सींहासन सनातन है तेरे राज का दंड धरम का
९ दंड है। तुने तो धरम से परेम कीया और अधरम से

व्रोनोघ कीय़ा इुस कानन इूसन ने हां तेने इूसन मे ञानंद के
सुगंघ तेल से तह के। तेने संगीय़ों से अघोक अभीसेक कीय़ा।
१० ञोन यह की हे पनमु तु ने ञानंम में मम की नेउं डाली ञोन
११ समसत सनग तेने हाथें के व्रने ऊऐ हें। उनका नाष हो
जाय़गा पनंतु तु नीत नहता है हां वे सव्र व्रसतन के समान
१२ पुनाने होंगे। ञोन तु उनहें ञोढ़ने के समान लपेटेगा ञोन वे
व्रदल जाय़ेंगे पनंतु तु जैसा का तैसा है ञोन तेने व्रनस न
१३ घटेंगे। पनंतु उसने दुतों में से कैान से के। कभी कहा की तु
मेने इहीने हाथ व्रैठ जव्र लों की मैं तेने सतनुन को तेने पाञों
१४ तले का पीढ़ा कनं। कय़ा वे सव्र सेवा कननीहान ञातमा
नहीं हैं जे। उघान ऊ अधीकानीय़ों की सेवा के लीय़े भजे
गय़े हैं।

२ दुसना पनव्र।

१ इुस कानन य़हीय़ की हम उन व्रातें पन जो हन ने सुनीं
२ अनय़ंत घय़ान कनें न होवे की हम उनहे पंा देवें। कय़ोंकी
जो दुतों के ञोन से कहा ऊञा व्रयन दीनढ़ था ञोन हन ऐक
अपनाघ ञोन अगय़ाभग कनना उयीत पलटा का फल पाय़ा।
३ ते। हम कय़ांकन व्रयंगे जो इतने व्रड़े उघान से अयेत नहें जो
ञानंम में पनमु से कहा गय़ा ञोन जीनहो ने उन सुना हमाने
४ समीप ठहनाय़ा। ञोन इूसन ने भी ञासयनज ञोन लछन
ञोन नाना पनकान के अदभुत ञोन घनमातमा के दान से
५ अपनाही इुछा के समान उन पन साप्पी दी। कय़ोंकी उसने
ञाव्रनीहान जगत को जीसके वीप्पै में हम व्रोलते हैं दुतों के
६ व्रष में नहीं कीय़ा। पनंतु कीसी ने कहीं साप्पी देके कहा
की मनुप्प कय़ा है जो तु उसकी यींता कनता है अथवा मनुप्प
७ का पुतन कय़ा है की तु उसके लीय़े सोय कनता है। तु ने
उसको दुतों से तनीक छोटा कीय़ा तु ने उसको ऐसनय़ ञोन

परतीसठा से मुकुट दीया और उसको अपने हाथों के कारजन
८ पर परधान कीया। तू ने समसत बसतें उसके पांव तले कीयां
क्योंकी जब उसने समसत बसतें उसके पांव तले कीयां उसने
कोइ बसत न छोड़ी जो उसके बस में न की परंतु अबलों हम
९ नहीं देखते की सारी बसतें उसके नीचे रखी गईं। तथापी
हम देखते हैं की यसु मीरतु की पीड़ा के कारन से दुतों से
तनीक छोटा कीया गया ऐसरय और परतीसठा से मुकुट पाया
जीसतें वह ईसर् के अनुगरह से हरएक मनुष्य के कारन
१० मीरतु का चाखे। क्योंकी उसको उचीत हुआ जीसके कारन
समसत बसतें हैं और जीस से समसत बसतें को बहुत से पुतरों
को ऐसरय में लावे उनके उधार देनीहार अगुआ को दुखों से
११ सीध करे। क्योंकी वह जो पवीतर करता है और जो पवीतर
कीये गये हैं सब एकही के हैं क्योंकी उस कारन से वुह उन्हें
१२ भाइ कहने में लजात नहीं है। की यह कहता है की मैं अपने
भाइयों को तेरे नाम का संदेस देउंगा और मंडली के मध में
१३ तेरी सतुत गाउंगा। और फेर यह की मैं उस पर आसा
रखुंगा फेर यह की देख मैं और लड़के जो ईसर ने मुझे
१४ दीये हैं। सो जैसा की लड़के देह और लोहु में साझी हैं उसने
भी आप उनके संग तैसा भाग कीया जीसतें वुह मीरतु के दुवारा
से उसके जीसपास मीरतु का बल है अरथात सैतान को नास
१५ करे। और उन्हें जो मीरतु के भै से जीवन भर बंधन में पड़े
१६ थे छुड़ावे। क्योंकी उसने तो दुतों को नहीं पकड़ा परंतु इबरा-
१७ हाम के बंस को पकड़ा। इस कारन उसे अवस हुआ की वह
सारी बातों में अपने भाइयों के समान होजाय की वह ईसर
के बीखै में दयाल और धरमी परधान याजक होके लोगों के
१८ पापों के कारन परायसचीत करे। क्योंकी जब उसने आप
ही परीछा में पड़के दुख पाया तो वुह उनका जो परीछा में पड़ते
हैं उपकार करसकता है।

३ तीसना पनव्र।

१ सो हे पवीतन भाइयो जो सनग की वुलाहट में भागी हो
तुम लोग हमाने मत के पनेनीत औन पनधान याजक अनथात
२ मसीह यसु को सोचो। वुह अपने ठहनानेवाले के वीसवास
के जोग था जीस नीत से मुसा भी उसके साने घन में था।
३ कयोंकी जैसा घन से घन के वनाने वाले की पनतीसठा अधीक
है वैसा वुह मुसा से अधीक पनतीसठा के जोग गीना गया।
४ कयोंकी हन एक घन का कोइ वनाने वाला है पन जीसने
५ समसत वसतें वनाइं सो इसन है। औन उन वसतुन की साप्पी
के लीये जीसका वननन अगीले समय में होनेवाला था मुसा
६ उसके साने घन में वीसवास के जोग था। पनंतु मसीह अपनेही
घन में पुतन के समान था जीसका घन हम लोग हैं जो हम
उस भनोसा औन अनंद कनने की आसा को अंत लों दीनढ़ता
७ से थांमे नहं। इस कानन जैसा धनमातमा कहता है जो तुम
८ आज के दीन उसका सवद सुनो। अपने अंत:कनन को कठोन
न कनो जैसा नीसीयाने में पनीछा के दीन वन में कनते थे।
९ जव तुमहाने पीतनों ने चालीस वनस लों मुझे पनप्पा औन
१० पनीछा की औन मेने कानजन को देप्पा। इस कानन मैं उस
पीढ़ी से कुनुध हुआ औन कहा की ये लोग मन में सनवदा
भनमते हैं औन उनहोंने मेने मानगों को नहीं पहीचाना।
११ सो मैं ने अपने कनोध में कीनीया खाइ की ये लोग मेने
१२ वीसनाम में कधी पनवेस न कनेंगे। हे भाइयो चैाकस नहो न
होवे की तुमहों में से कीसी में दुसट औन अवीसवासी मन होवे
१३ जो तुमहों को जीवते इसन के समीप से फीनावे। पन जव
लों की आज के दीन कहा जाता है एक दुसने को पनतीदीन
उपदेस कनो न होवे की तुमहों में से कोइ पाप के छल के
१४ कानन से कठोन हो जाय। कयोंकी हम मसीह के भागी हुए

हैं जो हम अपने आनंभ के भनोसा के अंत लें दीनढ़ता से
१५ थामे नहैं। जब़ लें कहा जाता है की आज के दीन जो तुम
उसका सब़द सुने ते अपने मन के कठोन न कने जैसा
१६ नीसीय़ाने में कनते थे। कय़ोंकी कीतनें ने सुनके उसे नीस
दीलाय़ा तथापी सभों ने नहीं जो मुसा के आेान से मीसन से
१७ नीकले। आैान वुह कीन से याालीस बनस लें नीस दीलाय़ा
गय़ा कय़ा उनहें से नहीं जीनहें ने पाप कीय़ा जीनकी लोथें
१८ बन में गीनपड़ीं। आैान उसने कीन से कीनीय़ा प्पाके कहा की
वे मेने ब्रीसनाम में पनवेस न कनेंगे पनंतु उनहें से जो ब्रीसवास
१९ न लाय़े। से हम देप्पते हैं की वे अब्रीसवास के कानन से
पनवेस न कनसके।

४ चैाथा पनब्ब।

१ इस लीय़े हमें उना याहीय़े न होवे की उसके ब्रीसनाम में
पनवेस कनने की पनतीगय़ा की जाय़ की हम में से कोइ
२ पछंयने न पावे। कय़ोंकी जैसा उनके वैसा हमाने लीय़े
भी मंगलसमायान का उपदेस कीय़ा गय़ा पनंतु बयन जो
उनहें ने सुना उनके लाभ न ज्ञआ की सुनने वालें ने ब्रीसवास
३ सहीत न सुना। इस लीय़े हम ब्रीसवास लाके ब्रीसनाम में
पछंयते हैं जैसा उसने कहा की अपने कनोघ में मैं ने कीनीय़ा
प्पाइ की वे मेने ब्रीसनाम में पनवेस न कनेंगे य़दपी कानज
४ जगत के आनंभ से सीघ ज्ञए। कय़ोंकी उसने सातवें के ब्रीप्पै
में वहीं य़ुं कहा की इसन ने अपने समसत कानज कनके सातवें
५ दीन में ब्रीसनाम कीय़ा। पनंतु इस में फीन कहता है की वे
६ मेने ब्रीसनाम में पनवेस न कनेंगे। से जैसा की अवस है की
कीतने उस में पनवेस कनें आैान वे जीनके कानन मंगलसमायान
का उपदेस आगे कीय़ा गय़ा अब्रीसवास के कानन से पनवेस न

७ लीये। फरेन वुह ग्रेक दीन का ठीकाना कनके दाउद में कहता
है की आज इतना समय्र वीतने के पीछे जैसा कहा गया है जो
तुम आज उसका सब्द सुनो तो अपने अंतःकनन को कठोन न
८ कनो। कयोंकी जो य्रसुअ ने उनहें वीसनाम में पहुंचाया
९ होता तो वुह उसके पीछे दुसने दीन के वीष्ये में न कहता। सो
१० ग्रेक वीसनाम इसन के लोगों के कानन घना है। कयोंकी
जीसने उसके वीसनाम में पनवेस कीया वुह भी अपनेही कानज
११ से नहगया जैसा की इसन ने अपने से। इस कानन आओ
पनीसनम कनें की हम उस वीसनाम में पनवेस कनें ग्रेसा न होवे
की कोइ अवीसवास के कानन से उनके समान भनीसट होजाय।
१२ कयोंकी इसन का वचन जीवता औन सामनथी औन समसत
दोधाना खड्‌ग से अती चोप्या है औन पनान औन आतमा
औन गांठ गांठ औन गुदे को अलग अलग कनके चला जाता
है औन चीतों को औन मन के अभीलाखों को जांचता है।
१३ औन कोइ सीनीसट उसकी दीनीसट से छीपी नहीं पनंतु समसत
वसतें उसके नेतन के आगे जीस से हम को काम है नंगी औन
१४ खुली हुइ हैं। सो जैसा की हमाने लीये ग्रेक वड़ा पनधान
याजक जो सनग से पान चला गया अनथात इसन का पुतन
१५ य्रसु है आओ अपने मत को दीनढ़ता से थांभे नहें। कयोंकी
हमाना ग्रेसा पनधान याजक नहीं है जो हमानी दुनवलता
से न छुआ जा सके पनंतु सानी वातों में पापों को छोड़ हमाने
१६ समान पनख्या गया है। इस लीये हम अनुगीनह के सींहासन
के पास ढाढस से आवें की हम दया पावें की हन ग्रेक आवसक
के समय में सहाय के लीये अनुगीनह पावें।

५ पांचवां पनव्र।

१ कयोंकी हन ग्रेक पनधान याजक मनुष्यन के कानन इसन के

बिष्ये की बसतुन पर मनुष्यन में से लीया जाके ठहराया जाता
२ है की वुह पाप के लीये भेंट और बलीदान चढ़ावे। जो
अगयानें और भटकेहुयेन पर दया कर सकता है क्योंकी
३ वुह आप भी दुरबलता से घेरा हुआ है। और इसी कारन
से अवस है की जीस रीत से वुह औरों के लीये तसी रीत से
४ अपने लीये पाप के कारन चढ़ावे। और इस पद को कोइ
मनुष्य अपने उपर नहीं लेता हैं परंतु वुह जो हारुन के समान
५ इसर से बुलाया गया है। ऐसा मसीह ने भी परधान याजक
होने के लीये अपनी महीमा न की परंतु उसने जीसने उसे
६ कहा की तु मेरा पुतर है आज मैं ने तुझे उतपंन कीया। जैसा
की वुह और सथल में कहता है की तु मलकीसीदक की पांती में
७ सरब्दा का याजक है। वुह अपने सरीर के दीनें में अती
बीलाप करके और आंसु बहा बहा के उसके आगे जो उसको
मीरतु से बचाने पर सामरथी था प्रारथना और बीनती की
और जीस बात से अपनी भकताइ में वुह डरता था सुना गया।
८ यदपी वुह पुतर था तथापी उन दुष्यों से जो उसने पाये आधीनता
९ सीष्यी। और सीध होके वुह उनके लीये जो उसको अगया
१० मानते हैं सरब्दा के उधार का करता हुआ। इसर से
११ मलकीसीदक की पांती में परधान याजक कहाया। जीसके
बीष्यै में हमारे पास कहने को बहुत है जीनका समझना कठीन
१२ है क्योंकी तुम लोग ऊंघा सुनते हो। क्योंकी तुमहें जब
चाहीये था की तुम लोग इस समय के उपदेसक होओ तुम लोग
आधीन हो की कोइ तुमहें फेर सीष्यावे की इसर की बानी के
पहीले सुतर कया हैं और ऐसे बने हो की तुमहें दुध पीलावे
१३ न की कड़ा भोजन षीलावे। क्योंकी हर एक जो दुध
पीता है धरम के बचन में अपरबीन है क्योंकी वुह बालक
१४ है। परंतु कड़ा भोजन तरुनों के लीये है जीनको अभयास
के कारन से भले और बुरे को पहीचानने की बान पड़गइ है।

६ छठवां पत्र्व।

१ इस कारन हम मसीह की सीख्या के सुतनों को छोड़ के
सीधता को यले जावें और मीनतक कारजन के पसयाताप की
२ और इसन पन व्रीसवास लावने की। और सनान के सीख्या
को और हाथ नख्यने की और मीनतकन के जीउठने की और
३ घनंत नयाव्र की नेउ फेरे के न डालें। और जो इसन याहे
४ तो हम यह करेंगे। कयोंकी जो ऐक व्रान पनकासीत ऊऐ
और सनग के दान का सवाद पाया और घनमातमा में साझी
५ ऊऐ। और इसन का सुव्रयन और आवने वाले जगत के
६ सामनथ का सवाद पाया। जो वे भनीसट हो जायें तो उनके
व्रीख्ये में अनहोना है उनहें फेरे के नये सीन से पसयाताप
कनावे इस लीये की वे इसन के पुतन को दुहनाके अपने लीये
कुनुस पन ख्योंयते हैं और पनगट में लाज दीलावते हैं।
७ कयोंकी भुम जो उस मेंह को जो उस पन व्रानंव्रान व्रनसता है
पीती है और ख्येती के कनने वालों के जोग हनीयाली
८ उपजावती है इसन के आसीस की भागी होती है। पन जो
कांटे और उंटकटाने उपजावती है तयकत है और सनापीत
९ होने के नीकट है जीसका अंत जलाया जाना है। पनंतु हे
पीनीय यदपी हम युं व्रोलते हैं तथापी तुमहाने लीये हमाना
उस से अछा पनव्रोध है अनथात ऐसी व्रसतु जो उधान की
१० संगी है। कयोंकी तुमहाने कानज और पनम के पनीसनम
को जो तुमहों ने उसके नाम पन साधुन की सेवा कनके और
सेवा कनते पनगट कीया है इसन अनयायी नहीं है की भुल
११ जाय। और हम याहते हैं की हन ऐक तुमहों में से ऐसा
यतन कने की भनोसा की संपुननता की आसा अंत लों नखे।
१२ जीस में तुम लोग आलसी न होओ पनंतु उनके पीछे यलने
वाले होओ जो घती सहने और व्रीसवास के दुवाना से पनतीगा

१३ के अधीकारी होते हैं। क्योंकी जब इसर ने इब्राहीम को
बाचा दीया बुह अपने से बड़ा जीसकी कीरीया खाता न पाके
१४ उसने अपनीही कीरीया खाके कहा। नीसचय मैं तुझे पर
आसीस पर आसीस देउंगा और तुझे बढ़ती पर बढ़ती करुंगा।
१५ और यूं धीरज से ठहर के उसने बाचा को परापत कीया।
१६ क्योंकी मनुष्य तो नीसचय बड़े की कीरीया खाते हैं और
उनके कारन ठहरावने के लीये कीरीया खाते हैं की सारे
१७ झगड़े को समापत करे। इसी लीये इसर अतयंत इछा करके
की परतीगया के अधीकारीयों को अपने मंतर की अचलता
१८ को दीखावे कीरीया को मध में लाया। जीसतें दो अचल
बसतुन से जीन में इसर का झुठ बोलना अनहोना था हम लोग
जो सरन लेने के लीये आगे की आसा को जो हमारे आगे
१९ धरी है धर रखें की दीढ़ता से सांतर पावें। सोई हमारे
परान के लंगर के समान है जो ब्याई ऊई और सथीर है
२० और घुंघट के भीतर के सथान में पऊंचती है। जीधर
हमारे अगुआ यसु ने जो मलकीसीदक की पांत के समान
सरबदा के लीये परधान याजक ऊआ हमारे कारन परवेस
कीया।

७ सातवां पत्र।

१ क्योंकी यह मलकीसीदक सलीम का राजा और अती
महान इसर का याजक था जो इब्राहीम से जा मीला और
आसीस दीया जब बुह राजाओं को मारके फेरे आवता था।
२ उसको इब्राहीम ने समसत बसतुन का दसवां भाग दीया
जीसका पहीला अरथ धरम का राजा है और फेर सलीम का
३ राजा अरथात कुसल का राजा। पीता रहीत माता रहीत बंस
रहीत जीसके न तो दीनों का आरंभ न तो जीवन का अंत परंतु
४ इसर के पुतर के समान बना था नीत का याजक धरा है। अब

ध्यान करो यह कैसा महापुरुष था जीसको परधान पीता
४ इब्राहीम ने लूट का दसवां भाग दीया। सो लुइ के पुत्रों
को जो याजकता का काम पावते हैं व्यवस्था के समान नीश्चय
आग्या है की लोगों से अर्थात अपने भाइयों से दसवां भाग
६ लेवें यद्यपी वे इब्राहीम की कटि से नीकले। परंतु उसने
जीसका वंश उनसे न गीना गया इब्राहीम से दसवां भाग
लीया और उसको जीस से प्रतीग्या कीगइ आसीस दीया।
७। ८ और नसंदेह छोटा बड़े से आसीस पावता है। और
यहां मनुष्य जो मरते हैं दसवां भाग लेते हैं परंतु वहां वही
९ जीसके वीषे में साक्षी दीगइ की वुह जीवता है। और लुइ
ने भी जीसने दसवां भाग लीया इब्राहीम के द्वारा से दसवां
१० भाग दीया। क्योंकी जब मलकीसीदक उसे जा मीला वुह
११ अपने पीता की कटि में था। सो जो सीधता लुइ की याजकता
से हुइ होती की उसके नीचे लोगों ने व्यवस्था पाइ तो अधीक
क्या प्रयोजन की दुसरा याजक मलकीसीदक की पांती के
समान नीकले और हारुन की पांती के समान गीना न जावे।
१२ क्योंकी याजकता के पलट जाने से अवस है की व्यवस्था भी
१३ पलट जाय। क्योंकी वुह जीसके वीषे में ये बातें कही जाती
हैं दुसरे कुल में से है जीस में से कीसी ने जग वेदी की सेवा
१४ नहीं की। क्योंकी प्रगट है की हमारा प्रभु यहूदा से उप-
जा जीसके कुल की याजकता के वीषे में मुसा ने कछ न कहा।
१५ और भी अधीक प्रगट है की दुसरा याजक मलकीसीदक की
१६ समता के समान उदय होता है। जो सरीर की आग्या की
व्यवस्था के समान नहीं परंतु अनंत जीवन के पराक्रम के
१७ समान बना है। क्योंकी वुह साक्षी देता है की तु मलकीसीदक
१८ की पांती में सर्वदा के लीये याजक है। क्योंकी नीर्बलता
और नीसफलता के कारन से अगली आग्या लोप की जाती
१९ है। क्योंकी व्यवस्था ने तो कुछ सीध न कीया परंतु उस से

अच्छी आशा के लावने में कीया जीस से हम इसन के नीकट
१०।२१ बढ़ते हैं। श्रौर जैसा की बीना कीनीया से न ऊश्रा। वे तो
बीना कीनीया प्याये याजक बने हैं परंतु यह कीनीया से उस
से जीसने उसको कहा की परमु ने कीनीया प्याइ श्रौर न पछ-
तावेगा तु मलकीसीदक की पांती के समान नीत के लीये याजक
२२ है। इतना अधीक यसु ऐक श्रती अच्छे नीयम का बीचवइ
२३ ऊश्रा। श्रौर बऊत याजक थे कयोंकी वे मीरतु के कारन से
२४ जगत में रह न सके। पर यह इस कारन की सरबदा रहता
२५ है ऐसी याजकता रखता है जो अचल है। इसी लीये वुह
उनहें जो उसके दुवारा से इसन के पास आवते हैं अतयंत
लों बचा सकता है कयोंकी वुह उनके लीये बीनती करने
२६ को सरबदा जीवता है। कयोंकी ऐसा परधान याजक हमारे
लीये चहीये था जो पवीतर नीरदोष्प नीरमल पापीयों से
२७ अलग श्रौर सरगों से भी महान है। जो उन परधान याजकों
के समान परती दीन आधीन न था की पहीले अपनेही श्रौर
फेर लोगों के पापों के कारन बलीदान लावे कयोंकी उसने
२८ आपको ऐक बार भेंट देके यह कीया। कयोंकी बैवसथा
मनुष्पन की जो नीरबल है परधान याजक ठहरावती है परंतु
कीरीया का बचन जो बैवसथा के पीछे था सरबदा अभीसेक
कीये गये पुतर को ठहरावता है।

८ आठवां पत्र।

१　अब जो कुछ की हमने कहीं हैं उसका यह तातपरज है की
हमारा ऐसा परधान याजक है जो महीमा के सींहासन के
२ दहीने श्रौर सरग में बैठा है। जो पवीतर बसतुन का श्रौर
सचे तंबु का सेवक है जीसे मनुष्प ने नहीं परंतु इसन ने खड़ा
३ कीया है। कयोंकी हर ऐक परधान याजक भेंट श्रौर
बलीदान चढ़ावने के लीये ठहराया जाता है इस लीये अवस

४ ऊआ की यह मनष्य भी भेंट के लीये कुछ चष्पे। परंतु जो
वृह पीरथीवी पर ऊआ होता तो याजक न होता कयोंकी
५ याजक तो हैं जो ब्रैवसथा के समान भेंट यढावते हैं। जो सरग
की ब्रसतुन के दीनीसटांत श्रीर परछाहीं के लीये सेवा करते
हैं जैसा मुसा को जब वुह तंब्र ब्रनाने पर था दरसन में अगया
दी गइ कयोंकी वुह कहता है की तु समसत ब्रसतें उस डौल
६ के समान ब्रना जैसा तुहे पहाड पर दीष्याया गया। परंतु अब्र
उसको उस से सरेसठ सेवा मीली की वुह अती अछे नीयम का
ब्रीयवइ ऊआ जो उस से अछी परतीगया के संग ठहराया
७ गया। कयोंकी जो वुह पहीला नीयम नीरदोष्य ऊषा होता
८ तो दुसरे के सथान की प्योजन न होतीं। कयोंकी वुह उनको
दोष्मी ठहराके कहता है की देष्य वे दीन आवते हैं परभु कहता
है की मैं इसराइल के घराने श्रीर यऊदा के घराने के लीये
९ एेक नया नीयम ठहराउंगा। परभु कहता है की यह उस
नीयम के समान न होगा जो मैं ने उनके पीतरन के संग उस
दीन जब्र मैं ने उनका हाथ पकड़ा की उनहें मीसर के देस से
नीकाल लाउं इस कारन की वे मेरे नीयम पर सथीर न रहे
१० श्रीर मैं ने उनसे आनाकानी की। कयोंकी यह नीयम है
इन दीनों के पीछे मैं इसराइल के घराने से करुंगा परभु
कहता है की मैं अपनी अगया को उनके मन में डालुंगा श्रीर
उनहें उनके अंतःकरन में लीष्युंगा श्रीर मैं उनका इसर होंगा
११ श्रीर वे मेरे लाग होंगे। श्रीर कोइ अपने परोसी को श्रीर
परेर कोइ अपने भाइयों को न कहेगा की तु इसर को पहीयान
१२ कयोंकी छोटे से ब्रड़े लों सब मुहे पहीयानेंगे। कयोंकी
मैं उनकी अधरमता पर दया करुंगा श्रीर उनके पापों
१३ श्रीर उन की ब्रुराइयों को कभी समरन न करुंगा। जब्र वुह
कहता है की एेक नया उस ने पहीले को पुराना कीया अब्र वुह
जो पुराना ऊआ श्रीर गलगया सो नास के नीकट है।

९ नवां पनब्र।

१ इस लीये पहीला तंबु इसन की सेवा का बीच नप्पता था
२ औान ऐक संसानी पवीतन सथान। कयोंकी पहीला तंबु सीच
ऊआ जीस में दीअट औान मंय औान भेंट की नोटीयां थीं यह
३ पवीतन सथान कहावता है। औान दुसने घुंघट के पने वुह
४ तंबु था जो पवीतनों से पवीतन कहावता है। उस में सोने
की घुपाउनी थी औान नीयम की संदुक जो यानों औान सोने
से मीढ़ी थी उस में ऐक सोने का पातन मंना से भना ऊआ
औान हानुन की छड़ी जीस में कनप्पी फुटी थी औान नीयम
५ की पटीयां थीं। औान उसके उपन तेजसवी कनोबीम थे जो
दया के आसन पन छाया कीये थे जीनके बीप्पै में हम अब
६ कह नहीं सकते। सो जब ये बसतें इस नीत से ठीक हो युकीं
७ पहीले तंबु में याजक नीत पनवेस कनके सेवा कनते थे। पन
दुसने में केवल पनघान याजक बनस में ऐक बान लोऊ सहीत
जीसे वुह अपने लीये औान लोगों के भुल युक के लीये यढ़ावता
८ था। घनमातमा इस से बुझावता था की जब लों पहीला तंबु
प्पड़ा था तब लों अतयंत पवीतन में मानग पनगट न ऊआ था।
९ जो बनतमान समय की उपमा है जीस में भेंट औान बलीदान
यढ़ाये जाते हैं जो सेवा कननीहानों को अंतःकनन के बीप्पै
१० में सुघ न कनसके। की वे केवल प्पाना औान पीना औान नाना
पनकान के सनान औान सानीनीक बेवहानों से पनयोजन
११ नप्पते थे जब लों की सुघानने का समय न आवे। पन जब
मसीह आनेवाली उतम बसतुन का पनघान याजक हो आया
उस से बड़ा औान अती सीघ तंबु के कानन से जो हाथों से
१२ नहीं बना अनथात इस सीनोसट से नहीं। औान बकनीयों
औान बछीयों के लोऊ से नहीं पनंतु अपनेही लोऊ से पवीतन
सथान में ऐक बान पनवेस कीया की उसने हमाने कानन

१३ सनव्रदा का मोप्प पनापत कीया। कयोंकी जो व्रैलों श्रोन
व्रकनीयों का लोऊ श्रोन व्रछीया की नाप्प जो श्रपवीतनों पन
छोड़ की जाय सनीन का पवीतन कनने का पवीतन कनती है।
१४ तो कीतना श्रधीक मसीह का लोऊ जीसने श्रपने को नीसकलंक
से सनव्रदा के श्रातमा से इसन के श्रागे यढ़ाया तुमहाने
श्रंत:कनन को मीनतक के कानजन से पवीतन कनेगा की तुम
१५ जीते इसन की सेवा कनो। श्रोन वुह इसी लीये नये नीयम
का व्रीयवइ है की मीनतु के कानन से उन श्रपनाधों के मोप्प
के लीये जो पहीले नीयम के व्रीप्पे में था की वे जो व्रुलाये
गये हैं सनव्रदा के श्रधीकान को पनतीगया को पनापत कनें।
१६ कयोंकी जहां नीयमपतन है तहां नीयम कननेवाले की मीनतु
१७ श्रवस है। कयोंकी नीयमपतन मीनतु से दीनढ़ होता है
नहीं तो वुह कीसी काम का नहीं जव लों उसका सथीन
१८ कननीहान जीता है। इस कानन पहीला भी व्रीना लोऊ से
१९ नहीं कीया गया। कयोंकी जव मुसा ने समसत लोगों को
व्रैवसया की नीत पन हन एक श्रगया कह सुनाइ उसने व्रछड़ों
श्रोन व्रकनीयों का लोऊ जल श्रोन लाल उन श्रोन जुफा के संग
लेकन गनंथ पन श्रोन समसत लोगों पन छीड़क के कहा।
२० कीयह उस नीयम का लोऊ है जो इसन ने तुमहाने लीये
२१ ठहनाया। श्रोन उसने तंवु पन श्रोन सेवा के पातनों पन भी
२२ लोऊ छीड़का। श्रोन व्रहुदा समसत व्रसतें व्रैवसथा में लोऊ से
पवीतन की जाती थीं श्रोन व्रीना लोऊ व्रहाये मोप्प नहीं
२३ होता। इस लीये श्रवस था की सनग की व्रसतुन की व्रानगी
ऐसी व्रसतुन से पवीतन की जायें पनंतु सनग की व्रसतें श्राप
२४ इनहीं से श्रछे व्रलीदानों से। कयोंकी मसीह ने उस पवीतन
सथान में जो हाथों से व्रनाया गया श्रोन सत व्रसतुन का यीनह
है पनवेस नहीं कीया पनंतु सनगही में की श्रव हमाने कानन
२५ इसन के श्रागे जा पहुंये। पन श्रवस न था की वुह श्राप को

व्रानंव्रान यढ़ावे जैसा पनधान ग्राजक पवीतन सथान में हन
२६ व्रनस औनों के लोझ्र से पनवेस कनता है। इस लीय़े जो
उसको ऐसा अवस होता तो वुह जगत के आनंभ से व्रानंव्रान
कसट पाय़ा कनता पनंतु अव्र वुह अंत के समय़ में पाप को
नास कनने के लीय़े अपने को व्रलीदान देके ऐकही व्रान पनगट
२७ ऊआ है। औान जैसा की ठहनाय़ा गय़ा की मनुप्य ऐक व्रान
२८ मने औान उसके पीछे व्रीयान। वैसही मसीह ऐक व्रान
व्रऊतेमों के पापों को उठावने के लीय़े यढ़ाय़ा गय़ा औान उनहों
के उधान के लीय़े जो उसके दुसने व्रान आवने की व्राट जोहते
हैं नीःसपाप पनगट होगा।

१० दसवां पनव्र।

१ कय़ोंकी व्रैवसथा उन व्रसतुन का ठीक सनुप नहीं पन आने
वाली अछी व्रसतुन की पनछाही मातन नप्य के उन व्रलीदानों
के यढ़ावने से जो वे हन व्रनस नीत लावते हैं जो उन कने
२ आवते हैं सीध नहीं कन सकती। नहीं तो उनका यढ़ावना
व्रंद हो जाता इस कानन की पुजेनी ऐक व्रान पवीतन होके
३ पाप का प्यटका नहीं नप्पते। पनंतु उन में व्रनस व्रनस पाप
४ का येत होता है। कय़ोंकी अनहोना है की व्रैलों औान
५ व्रकनीय़ों का लोऊ पापों को मीटावे। इस लीय़े वुह जगत में
आवते ऊऐ कहता है की व्रलदान औान अनपन को तुने नहीं
६ याहा पनंतु मेने लीय़े ऐक देह सहेजा। होम से औान अनपन
७ से जो पापों के कानन था पनसन न था। तव्र मैं ने कहा की
देप्य मैं आवता ऊं पुसतक के कांड में मेने व्रीप्ये में लीप्पा है
८ की तेनी इछा पन यलुं हे इसन। उपन कहके की व्रलीदान
औान अनपन औान होम औान पाप के लीय़े व्रलीदान तुने न
याहा औान उन से पनसन न ऊआ औान य़ह व्रेवसथा की नीत
९ पन यढ़ाइ जाती हैं। तव्र उसने कहा की हे इसन देप्य मैं

तेनी इछा पन यलने को आवता ऊं वुह पहीले को अलग
१० कनता है की दुसने को सथीन कने। उसी इछा के कानन से
हम यसु मसीह के देह के एकही वान वलीदान होने से पवीतन
११ कीये जाते हैं। और हन एक याजक पनतीदीन खड़ा होके
इसन की सेवा कनता है और एकही पनकान के वलीदान जो
पाप को दुन नहीं कन सकते वानंवान भेंट दीया कनता है।
१२ पनंतु वुह एकही वलीदान पापों के कानन एकही वलीदान
१३ यढ़ाके इसन के दहीने ओन सनवदा के लीये वैठा है। और
अव से वाट जोहता है जव लों उसके वैनी उसके पांव के पीढ़ा
१४ होवें। कयोंकी एकही अनपन से उसने उनहें जो पवीतन
१५ कीये गये हैं सनवदा के लीये सीध कीया है। धनमातमा भी
१६ पहीले कहके हमाने लीये साखी देता है। की पनभु कहता है
की यह वुह नीयम है जो उन दीनों के पीछे उन से कनुंगा मैं
अपनी वैवसथा को उनके अंतःकनन में डालुंगा और उनहें
१७ उनके मन में लीखुंगा। उनके पापों और अपनाधों को मैं
१८ कधी समनन न कनुंगा। अव जहां इनहों का मोयन है तहां
१९ पाप के कानन वलीदान नहीं है। इस लीये हे भाइयो हम ने
२० यसु के लोहु से एक नये और जीवते मानग से जीसे उसने
पाड़ में से अनथात अपने सनीन में से हमाने लीये ठहनाया
२१ पवीतन सथल में पनवेस कनने की छुटी पाइ। और महा
२२ याजक इसन के घन पन नख के। आओ हम सये अंतःकनन
और संपुनन वीसवास से वुने वीवेक से अपने मन का छीड़कवा
के और अपने देह को सुध जल से धोलवा के नीकट आवें।
२३ अपने मन की आसा को वीना डगमगाने से दीनढ़ता से थामें
नहें कयोंकी जीसने पनतीगया की है सो वीसवास के जोग है।
२४ और हम एक दुसने को सोयें की हम पीआन और सुकनम
२५ कनने को उसकावें। हम एकठे होने से अलग न नहें जैसा
की कीतनों की नीत है पनंतु उपदेस कनें और यह इतन,

अधीक जेउं जेउं तुम देखते हो की दीन समीप आवता है।
२६ कयोंकी जो हम सयाइ के गयान को पराप्त करके जान
बुझ के पाप करें तो फीर कोइ बलीदान पाप के कारन नहीं
२७ धरा है। परंतु नयाय का नीसयय भयंकर बाट जोहना
और अगीन का जलजलाहट जो सतरुन को खा लेगा धरा है।
२८ जीस कीसी ने मुसा के सासतर की नीनदा की वुह दो अथवा
तीन साखीयों के परमान से बीना दया से मारा जाता था।
सो तुम लोग बुझो की वुह कीतने अती कठीन दंड के जोग
गीना जायगा जीस ने इसर के पुतर को पांव तले लताड़ा और
नीयम के रुधीर को जीससे वह पवीतर कीया गया सामान गीना
३० और अनुगरह के आतमा का अपमान कीया। कयोंकी हम
उसे जानते हैं जो यह बोला की बैर लेना मेरा काम है परभु
कहता है की मैंहीं पलटा देउंगा और फेर यह की परभु अप
३१ ने लोगों का नयाय करेगा। जीवते इसर के पलले में पड़ना
३२ भयंकर है। परंतु अगले दीनों को समरन करो जीन में
३३ तुमहों ने परकासीत होते हुए जुध के कसट को सहा। कुछ
तो जब की तुम लोग नीनदा और दुखों के सवांग बने और
३४ कुछ जब की उनके जीनकी यह दसा होती थी साही थे। कयों
की मेरे बंधन में तुम लोग मेरे संग दुखी थे और अपनी संपत
के लुटे जाने को आनंद से गरहन कीया अपनेही में जान के
की हमारे लीये एक संपत जो अछी और सथीर है सरग में
३५ धरी है। सो तुम लोग अपने भरोस को तयाग न करो
३६ जीसका बड़ा फल है। कयोंकी तुमहें संतोख अवस है की
३७ इसर की इछा पर चल के परतीगया को पराप्त करो। कयों
की और थोड़ी बेर और वुह जो आवता है आवेगा और अ-
३८ बेर न करेगा। परंतु धरमी बीसवास से जीयेगा तथापी
जो वुह हट जावे तो मेरा पराण उस से परसंग न होगा।
३९ परंतु हम उन में से नहीं हैं जो नास लों हटे जाते हैं

परंतु उनहों में से हैं जो परान ब्र्यावने के लीये ब्रीसवास लाते हैं।

११ गयानहवां परब्र।

१ अब ब्रीसवास उन ब्रसतुन का नीसयीत ब्राट जोहना है जीन
२ पर आसा की जाती है। कयोंकी उसही से परायीनें ने साप्पी
३ परापत की। बीसवास से हम जानते हैं की जगत इसर के ब्रयन
से सृचन गय़ जैसा की जो ब्रसतें देप्पी जाती हैं उन ब्रसतुन से
४ जो देप्पने में आता हैं नहीं ब्रनीं। ब्रीसवास से हाब्रील ने कीन से
अछा ब्रलीदान इसर को यढ़ाया उसी के कारन उसने घरमी
होने की साप्पी परापत की की इसर उसके दान पर साप्पी देता
५ है की वुह मीरतक होके अब लों ब्रोलता है। ब्रीसवास से
इनप्प सथानांतर कीया गया जीसतें वुह मीरतु को न देप्पे
और न पाया गया कयोंकी वुह इसर से सथानांतर कीया गया
था कयोंकी अपने सथानांतर कीये जाने से पहील उसने साप्पी
६ परापत की, की उसने इसर को परसंन कीया। परंतु ब्रीना
ब्रीसवास से परसंन करना अनहोना है कयोंकी जो इसर कने
आवता है उसके लीये अवेस है की नीसयय करे की वुह है
और की जो उसको जतन से प्पोजते हैं उनका फल देनवाला
७ है। ब्रीसवास से नुह ने उन ब्रसतुन के ब्रीप्पय में जो अब्रलों
देप्पने में नहीं आई थीं इसर से यैताया जाके और भय प्पाके
जाहाज ब्रनाई की अपने परीवार को ब्रयावे और उसी से उस
ने जगत को दोप्पी कीया और उस घरम का जो ब्रीसवास से
८ मीलता है अघीकार हुआ। ब्रीसवास से इब्रराहीम जब्र ब्रुला
या गया की एक सथान में ब्राहर जाय जीसे वुह अघीकार में
पावने को था मान लीया और नीकल गया यदपी वुह न जानता
९ था की कीघर जाता है। ब्रीसवास से उसने परतीगया की भुम
में यों ब्रास कीया जैसे परदेस में की वुह इसहाक और याकुब्र

के संग जो उसी अवची के उसके संग अधीकानी थे तंव्रुओं में
१० नहा कीया। कयोंकी वुह ऐक नगन की व्राट जोहता था
जीसकी नेवें हैं जीसका व्रनानेवाला ओान डौल कननेवाला ईसन
११ है। व्रीसवास से सान्ना ने आपी गनभ धानन कनने की सकती
पाई ओान समय व्रीते पन पुतन जनी ईस कानन की उसने
१२ अव्रची कननेवाले को व्रीसवास के जोग जाना। ईस लीये ऐक
ही से ओान वुह जो ईस व्रीसय में मीनतकसा था आकास के
तानों के समान मंडली में ओान समुंदन के तीन पन के अन
१३ गीनीत व्रालु के समान उपजे। ये सव्र पनलोगा को न पाके
व्रीसास में मन गये पनंतु दुन से उनहें देष्य के ओान पनवुच
होके गनहन कीया ओान अंगीकान कीया की हम पीनथीवी
१४ पन पनदेसी ओान जातनी हैं। कयोंकी वे जो ऐसी व्रातें कहते
१५ हैं ष्योल के कहते हैं की हम ऐक देस ढुंढते हैं। ओान जो
उनके मन वहां होते जहां से वे नीकले थे तो उनके व्रस में था
१६ की फीन जाते। सो ईस लीये वे ऐक अती अछे अनथात
सनग के अभीलाष्यी हैं ईस कानन ईसन लजीत नहीं है की
उनका ईसन कहावे कयोंकी उसने उनके लीये ऐक नगन सोच
१७ कीया है। व्रीसवास से ईव्रनाहीम ने जव्र पनीछा में पड़ा ईस
हाक को व्रल में दीया हां जीसने की पनतागया पाई थी अपने
१८ ऐकलौते को यढ़ाया। जीसके व्रीष्यय में कहा गया की सई
१९ हाक में तेना व्रंस कहा जायगा। यह समुझ के की ईसन
मीनतकन से जीलावने को सामनथी है जहां से उसने उसे ऐक
२० दीनीसटांत में पाया। व्रीसवास से ईसहाक ने अपनेवाली व्रस
२१ तुन के व्रीष्यय में याकुव्र ओान असु को आसीस दीया। व्रीस
वास से याकुव्र ने मनते मनते युसफ के दोनों पुतन को आसीस
२२ दीया ओान अपने हंड पन सतुत की। व्रीसवास से युसफ ने
मनते मनते ईसनाईल के व्रंस की जातना की व्रात कही ओान
२३ अपने हडीयों के व्रीष्यय में अगया की। व्रीसवास से मुसा

उतपंन होके तीन महीने लों अपने माता पीता से छीपाया गया
क्योंकी उनहों ने देप्पा की बालक सुंदर है और राजा की
२४ आगया से न डरे। बीसवास से मुसा ने तरुन होके न चाहा
२५ की फरऊन की कनया का पुतर कहावे। की ईसर के लोगों
के संग दुप्प में भागी होना अधीक चाहा की पाप का भोग
२६ थोड़े लों करे। उसने मीसर के भंडारों से मसीह की नींदा
को अधीक धन समझा क्योंकी उसकी दीनीसटी फरती रल पाव
२७ ने पर थी। बीसवास से उसने राजा के क्रोध से भय न प्पाके
मीसर को छोड़ा क्योंकी उसने उसको जो अदीनीस है देप्प के
२८ बल पाया। बीसवास से उसने पार जाने के परब को और
रुधीर छीड़काने को धारन कीया न होवे की पहीलौंटे पुतरों
२९ का नास करनेवाला उनको छूवे। बीसवास से वे लाल समुंदर
से पार गये जैसे सुप्पे से जीसे मीसरी करते हुए डुब गये।
३० बीसवास से यरीहा की भीतें सात दीन से घेरी जाके गीर
३१ गईं। बीसवास से राहाव बेसया भेदीयों को कुसल से ग्रहन
३२ करके अबीसवासीयों के संग नास न हुई। अब मैं और क्या
कहूं समय घट जाता जो मैं जदीऊन और बारक और सम
सुन और यफतह और दाऊद और समुइल और आगमगया
३३ नीयों की कथा कहता। जीनहों ने बीसवास से राज को बस
में कीया और धरम का काज कीया और परतीगया को
३४ पराप्त कीया और सींहों के मुंह को बंद कीया। और अगीन
के तेज को बुझा दीया प्पडग के धार से बच गये दुरबलता में
बलवान हुए जुध में बीर हुए और अनदेसीयों की सेनर को
३५ हटा दीया। सतरीयों ने अपने मीरतकन को फेर के जीव
ता पाया और कीतने अती कसट में डाले गये और मोप्प को
ग्रहन न कीया जीसतें वे अती अछे पुनरुतथान को पराप्त
३६ करें। कीतने ठठों को और कोड़ों की परीछा में पड़े हां
३७ सीकरों और बंधनों में भी पड़े। पथरवाह कीये गये आरे से

यीने गये पनप्पे गये प्पनग से मा ने गये भेड़ों ग्रैान वकनीयों
के प्पाल ग्रोढ़े ऊए अनमते फीने सकेती में दुप्प में पीड़ा में
३८ नहे। जगत उनके जाग न था वे उजाड़ों ग्रैान पहाड़ों ग्रैान
३९ मांदों ग्रैान भुम के गड़हों में अनमते फीने। ग्रैान इन सभों
ने वीसवास से सुनाम पाके पनतीगया को पनापत न कीया।
४० इसन ने हमाने लीये अती अछी वसतु ठहनाइ की वे हमें छोड़
के सीच न होवें।

१२ वानहवां पनव्र।

१ सो साप्पीयों के इतने वड़े मेघ से घेने ऊए होके हम हनएक
वाह ग्रैान पाप को जो सहज से हमें छेंकता है तयाग कनके
उस दैाड़ानी में जो हमाने आगे घनी गइ है संतोप्प से दैाड़ें।
२ ग्रैान यसु को जो हमाना अगुआ ग्रैान वीसवास का संपुनन कननी
हान है ताक नप्पें उसने उस ग्रानंद के लीये जो उसके आगे
घना गया लजा को तुछ समह के कुनुस को सहा ग्रैान वुह इसन
३ के सींहासन के दहीने ग्रैान वैठा है। कयोंकी जीसने अपने
वीनोध में पापीयों से ग्रैसी वीपनीतता को सहा उसको सोचो
न होवे की तुम लोग थकजाग्रो ग्रैान मन में नीनवल हो जाग्रो।
४।५ तुमहों ने अव लों नुधीन लों पाप का सामना न कीया। ग्रैान
उस सीप्पा को भुल गये हो जो तुमहें पुतनों के समान कहोत
है की मेने पुतन पनभु की ताड़ना की नींदा न कन ग्रैान जव
६ वुह तुहे दपटे नीनवल मत हो। कयोंकी जीसे पनभु पीग्रान
कनता है उसे ताड़ना कनता है ग्रैान हनएक पुतन को जीसे
७ वुह गनहन कनता हैं पीटता है। जो तुम लोग ताड़ना सहो
तो इसन तुमहों से ग्रैसा वेवहान कनता है जैसा पुतनां से कयों-
८ की वुह कैानसा पुतन है जीसे पीता ताड़ना नहीं कनता। पनंतु
जो तुम लोग ताड़ना नहीत होग्रो जीस में सव साही हैं तो तुम
९ लोग वनन संकन हो ग्रैान पुतन नहीं। ग्रैान जव हम अपने

सनीन के पीता को जीनहें ने हमें ताड़ना की अ दन कीया
कया हम कीतना अधीक आतमा के पीता के वस में न हेगे
१० और जीयेंगे। कयोंकी उनहें ने थोड़े दीन के कानन अपनी
इछा से ताड़ना की पन वुह हमाने लाभ के लीये जीसतें हम
११ उसकी पवीतनता के साझी हेवें। सो समसत ताड़ना अव
आनंद का कानन नहीं सुझ पड़ती पनंतु दुष्य का तथापी पीछे
को वुह उनहें जो उस से साधन कीये गये हैं धनम के सांतीमय
१२ फल को देती है। सो इस कानन ढीले हाथों और नीनवल
१३ घुठनें को उठाओ। और अपने पावें के लीये सीधे मानग
वनाओ की जो लंगड़ा है भटक न जाय पनंतु पहीले चंगा हो
१४ जाय। समसत मनुष्यन के संग कुसल का पीछा कने और पवी
१५ तनता का की उसके वीना कोइ पनभु को न देष्पेगा। धयान
से देष्पते ऊए न होवे की कोइ इसन के अनुगनह से गीनजाय
न होवे की कोइ कडुआहट की जड़ उगके दुष्प देवे और उससे
१६ वऊतेने असुच हे जायें। न होवे की कोइ वेभीयानी अथवा
अधनमी इसौ के समान हो जाय जीसने ऐक भोजन के कानन
१७ अपने जनमभागा को वेच डाला। कयोंकी तुम लोग जानते
हो की पीछे से जव उसने आसीस के अधीकान को याहा तव
वुह तयाग कीया गया कयोंकी उसने पसयाताप कनने का
सथान न पाया यदपी उसने आंसु वहा वहा के उसे जतन से
१८ ढुंढा। कयोंकी तुम लोग उस पाहाड़ लों नहीं आये हे जे छुआ
जा सका और जलती ऊइ अगनी और गाढ़ा मेघ और अंध-
१९ कान और आंधी। और तनही का सवद और वातें का सवद
जीसे जीनहें ने सुना याहा की वयन उनहें फेन न कहा जाय।
२० कयोंकी जे कहा गया वे उसे न सह सकते थे और यदी पसु
भी तन पहाड़ के छूवे ते उस पन पथनवाह कीया जायगा
२१ अथवा भाले से छेदा जायगा। और वुह दनसन ऐसा
भयंकन था की मुसा वोला की मैं अतयंत डनता ऊं और

२२ कांपता ऊं। पनंतु तुम लोग सैऊन के पहाड़ के ग्रौन
जीवते ईसन के नगन के जो सनग का ग्रौनोसलीम है ग्रौन
२३ ग्रसंष्प दुतों के पास। ग्रौन पहीलौठे की महा सभा के
ग्रौन मंडली के जो सनग पन लीप्पे हैं ग्रौन ईसन के पास
जो सव्रका नयाय़ी है ग्रौन सीघ कीये गये घनमीयों के
२४ ग्रातमाग्रों के पास। ग्रौन य़सु के जो नये नीयम का व्रीचवइ
है ग्रौन छीड़कने के लोऊ के पास जो हावील से ग्रछी व्रातें
२५ व्रोलता है ग्राये हो। चैाकस नहो की तुम लोग व्रोलनेवाले
को तयाग न कनो कयोंकी जो वे जीनहों ने उसको जीसने भुम
पन कहा था तयाग कीया न व्रचे तो हम लोग कयोंकन व्रचेंगे
२६ जो उस से जो सनग से कहता है फीन जायें। जीस के सब्द
ने तव भुम को हीला दीया पनंतु ग्रव उसने यह कही के ग्रवधी
कीया की फीन ऐकव्रान मैं केवल पीनथीवी को नहीं पनंतु
२७ सनग को भी हीला देउंगा। ग्रौन यह की ग्रौन ऐक व्रान
उसका यह ग्रनथ है की जो व्रसतें हीलाई जाती हैं टल जायें
जैसा व्रनी ऊई व्रसतुन का जीसतें वे व्रसतें जो हीलाई नहीं
२८ जातीं व्रनी नहें। सो जैसा की हमों ने ग्रचल नाज पाया
ग्राग्रो ग्रनुगनह लेवें जीसतें हम लोग गनाह्य की नीत से ग्रौन
२९ ग्रादन से ग्रौन घनम के भय़ से ईसन की सेवा कनें। कयोंकी
हमाना ईसन भसम कननीहान ग्रगीन है।

१३ तेनहवां पनव।

१।२ सो भाई की सी पीनत व्रनी नहे। ग्रतीथ की सेवा को
मत भुलो कयोंकी उसीसे कीतनों ने व्रीना जाने दुतों की सेवा
३ की है। जो व्रंघन में हैं उनहें ऐसा समनन कनो जैसा की
उनके संग व्रंघन में हो उनहें जो दुष्प सहते हैं ऐसा जैसा की
४ तुम लोग भी सनीन में हो। व्रीवाह सव में पनतीसठीत है ग्रौन
व्रीछैाना सुध है पनंतु ईसन व्रेसयागामीयों ग्रौन व्रभीचानीयों

५ को दंड देगा। यलन लोभ नहीत होवे श्रीर जो जो वसतु
तुमहानी हैं उन से संतोष्य कनो कयोंकी उसने कहा है की मैं
तुहे न छोडुंगा श्रीर तुहे कधी कीसी भांत से तयाग न कनुंगा।
६ सो हम हीयाव से कहें की पनभु मेना सहायक श्रीन मैं न
७ डनुंगा मनुष्य मुह पन कया कनेगा। श्रपने श्रगुश्रों को जीनहों
ने तमहों से इसन की वात कही समनन कनो उनकी यलन
८ के श्रंत को वीयान कनके उनके वीसवास का पीछा कनो। यसु
९ मसीह कल श्रीन श्राज श्रीन सनवदा ऐकसां है। वीदेसी श्रीन
ना ना पनकान की सीष्या से फीनाये न जाश्रो कयोंकी भला है
की मन श्रनुगनह में दीढ़ होय भोजन में नहीं जीन से उनहों
१० ने जो उन में नहते थे लाभ न पाया। हमानी तो ऐक जगवेदी
११ है जीस से तंवु के सेवकों को खाने को उयीत नहीं। कयोंकी
जीन पसुन का लोहु पाप के लीये पनधान जाजक पवीतन
सथान में ले जाता है उनके देह छावनी के वाहन जलाये जाते
१२ हैं। इस कानन यसु भी जीसतें वुह लोगों को श्रपने लोहु से
१३ पवीतन कने फाटक के वाहन माना गया। इस लीये हम उस
की नींदा को सहके छावनी के वाहन उस पास नीकल यलें।
१४ कयोंकी यहां हमाने ठहनने का नगन नही पनंतु ऐक को जो
१५ श्रावनीहान है ढुंढते हैं। इस कानन हम उसी के सहाय से
सतुत का वलीदान इसन को नीत नीत यढ़ावें श्रनथात होठों
१६ का फल उसके नाम का धंनवाद कनते जायं। पनंतु भलाइ
श्रीन पुन कनने में मत भलीयो कयोंकी ऐसे वलीदानों से
१७ इसन पनसंन होता है। श्रपने श्रगुश्रों की श्रगया मानो श्रीन
उनके वस में होश्रो कयोंकी वे उनके समान जो लेखा देंगे
तुमहाने पनान की यौकसी कनते हैं की वे श्रानंद से देवें श्रीन
१८ सोक से नहीं कयोंकी वुह तुमहाने लीये नीनलाभ है। हमाने
लीये पनानथना कनो कयोंकी हमें नीसयय है की हम श्रच्छा
वीवेक नष्पते हैं की हम सानी वातों में श्रछो नीत से नीनवाह

१९ कीव्रा याहते हैं। ग्रैान व्रीसेप्प कनके मैं तुमहानी व्रींनती
कनता ऊं ग्रह कनो की मैं सीघन से तुमहें फेन के दीग्रा जाउं।
२० ग्रव्र कुसल का इसन जो सनव्रदा के नीग्रम के लोऊ से हमाने
पनभ्रु ग्रसु को जो महा गड़नीग्रा है मीनतकन में से फेन
२१ लाग्रा। तुमहों को हन ग्रेक भ्रले कानज में सीघ कने की उस
की इछा पन यलो ग्रैान जो कुछ की उसकी दीनीसट में पनसंन
है ग्रसु मसीह के लीग्रे तुमहों में कने जीसको ग्रैसनग्र सनव्रदा
२२ ग्रैान सनव्रदा होवे ग्रामीन। पनंतु हे भ्राइग्रो मैं तुमहों से
व्रींनती कनता ऊं कीसीप्पा के व्रयन को मान लेग्रो की मैं ने
२३ थोड़ी व्रातें में तुमहों को पतनी लीप्पी।। जानो की भ्राइ
तीमताउस छुट गग्रा जो वुह सीघन ग्रावे तो उसके संग होके
२४ मैं तुमहें देप्पुंगा। ग्रपने साने यगुग्रों ग्रैान साघुन को नमस-
कान कहो जो ग्रैतलीग्रः के हैं तुमहें नमसकान कहते हैं।
ग्रनुगनह तुमसभों पन होवे ग्रामीन।

य़ाकुव़ की पतनी सव़के लीय़े।

---

१ पहीला पनव़।

१ य़ाकुव़ का जो इसन और पनभु य़सु मसीह का सेवक है
२ व़ानह गोसठीय़ों को जो व़ीथनी ऊई हैं नमसकान। हे मेने
भाइय़ो तुम अपनी ना ना पनकान की पनीछा में पड़ना पुना
३ आनंद समुझो। य़ह जान के की तुमहाने व़ीसवास के पनप्पा
४ जाने से संताेष्प उतपंन होता है। पनंतु संताेष्प अपना पुना कानज
कनने पावे की तुम सीध और पनीपुनन होओ और कीसी व़ात
५ में घाट न होओ। पनंतु य़दी कोई तुम में से व़ुध हीन होवे
तो वुह इसन से मांगे जो समसत मनुप्पन को दातापन से देता
है और ओलाना नहीं देना और वुह उसे दीय़ा जाय़गा।
६ पनंतु डोलाय़मान न होक व़ीसवास से मांगे कय़ोंकी जो डोलता
है सो समुद्रन की लहन की नाई है जो पवन से व़हती उछलती
७ है। सो वुह पुनुप्प न समुझे की मैं पनभु से कुछ पाउंगा।
८।९ दो यीता मनुप्प अपनी सानी याल में असथीन है। भाइ
१० जीसका अलप पद है अपनी व़ढ़ती पन आनंद कने। पनंतु
घनमान अपनी छोटाइ पन इस कानन की वुह घास के फुल
११ के समान जाता नहेगा। कय़ोंकी जोंहीं सुनज व़ड़े घाम से उदय़
ऊआ घास सुनझा जाती है और उसका फुल झड़ जाता है और

उसके रूप की सोभा नसट होती है धनमान भी ऐसाही अपनी
१२ सारी चाल में मुरझा जायगा। धंन वुह मनुष्य जो परीछा
सहता है कयोंकी वुह जांचा जाके जीवन का मुकुट पावेगा जीस
१३ का व्राचा परभु ने अपने परेमीयों से कीया। जब कोइ परीछा
में पड़े सो न कहे की मैं इसर से परखा जाता ऊं कयोंकी इसर
वुराइयों से परखाया नहींजासकता और न वुह कीसी को
१४ परखता है। परंतु हर कोइ अपनी ही लालसा से खींचा जाके
१५ और फुसलाया जाके परीछा में पड़ता है। और जब लालस.
गरभीनी ऊइ तो पाप जनती है और पाप पुरा होके मीरतु को
१६ उतपंन करता है। हे मेरे पीआरे भाइओ चुक न करो।
१७ हरऐक अछा दान और हरऐक संपुरन पुन उपरही से है
और परकास के पीता से उतरता है जीस में कुछ अदल वदल
१८ और वीकार की छाया नहीं। उसने अपनी इछा से हमें
सचाइ के वचन से उतपंन कीया की हम उसकी सीरीसटी में पहीले
१९ फल के समान होवें। सो हे मेरे पीयारे भाइओ हरऐक मनुष्य
सुन लेने में चटक और वोलने नें धीमा और करोध करने में
२० धीमा होवे। कयोंकी मनुष्य का करोध इसर के धरम का कारज
२१ नहीं करता। इस कारन समसत असुधता और अफरनी ऊइ वुराइ
को फेंक के उस जोड़े ऊऐ वचन को संतोख से ले लेओ वुह तुमहारे
२२ परान को वचा सकता है। परंतु अपने को छल देते ऊऐ केवल
२३ वचन के सुंनेवाले मत होओ परंतु पालनेवाले। कयोंकी यीद
कोइ वचन का सुननीहार होय और पालनीहार नहीं तो
वुह उस मनुष्य के समान है जो अपने सभावीक मुंह को दरपन
२४ में देखता है। कयोंकी वुह अपने को देखता है और चला
जाता है और तुरंत भुलजाता है की वुह कीस परकार का जन
२५ था। पर जो कोइ मोख के सीध सासतर को सोचता है और
सथीर है वुह भुल का सुनवैया नहीं है परतु कारज का करनेवाला
२६ है यही मनुष्य अपने कारज में भागमान होगा। यदी कोइ

तुमहारे मध में भकतीमान दीष्पाइ देवे और अपनी जीभ को
न रोके परंतु अपनेही मन को छल देवे इसी मनुष्य की भकती
२७ व्रयरथ है। पवीतर और नीरमल भकती इसर और पीता के
आगे यह है की अनाथ और वीधवें को उन के कलेसें में देष्पना
और अपने को जगत से नीसकलंक रष्पना।

२ दुसरा परव।

१ हे मेरे भाइयो हमारा परभु यसु मसी जो तेज का परभु है
उसके वीसवास को मनुष्यत पर दीनीसट करके गरहन न करो।
२ कयोंकी जदी एक मनुष्य सोने की अंगुठी और भड़कीला वसतर
से और एक कंगाल भी मलीन वसतर से तुमहारी मंडली में
३ आवे। और तुमलोग उस भड़कीले वसतर के पहीननेवाले का
आदरभाव करो और उसे कहो की यहां इस परतीसठीत सथान
में बैठ और उस कंगाल को कहो की तु वहां प्षड़ा रह अथवा
४ यहां मेरे पावं तले के पीढ़े के नीचे बैठ। तो कया तुम लोग
५ अपने मन में पक्ष नहीं करते और कुबीचारी नहीं हो। हे
मेरे पीआरे भाइयो सुनो कया इसर ने इस जगत के कंगालें
को नहीं चुना की वीसवास में धनी होवें और उस राज के
जीसका बाचा उसने अपने परेमीयों से कीया है अधीकारी
६ होवें। परंतु तुमहों ने कंगाल का अपमान कीया कया धनमान
तुमहों पर अंधेर नहीं करते और तुमहें धरम सभा में नहीं
७ षींचते। और कया वे उस उतम नाम की जीसके तुम कहावते हो
८ अपनींदा नहीं करते। सो जो तुम राजनीत को संपुरन करोगे
जैसा गरंथ में है तु अपने परोसी को अपने समान पीआर कर
९ तो भला करते हो। परंतु जो मनुष्यत पर दीनीसटी करते हो तो
पाप करते हो और सासतर तुमको अपराधीयों के समान दोष्पी
१० ठहरावता है। इस लीये की जो कोइ समसत सासतर को माने
११ और एक बात में चुक करे तो वह समसत का दोष्पी है। कयों-

की जीसने कहा की व़ेभीयान मत कन उसने य़ह भी कहा
की घात न कन से जे तु व़ेभीयान न कने पनंतु घात कन
१२ ते तु सासतन का ऋपनाधी ज्ञया। तुम उनके समान जीन
पन मोष्य के सासतन से ऋागय़ा कोइ जाय़गी कहो ऋान कने।
१३ कय़ोंकी जीसने दय़ा न कीइ उसका नय़ाय़ नीनदय़ा से होगा
ऋान दय़ा नय़ाय़ पन व़ड़ाइ कनती है। हे मेने भाइय़े जो कोइ
कहे की मैं व़ीसवासी ज्ञं ऋान कननी न नष्पे तो कय़ा लाभ है
१५ कय़ा व़ीसवास उसको व़यासकता है। य़दी कोइ भाइ ऋथवा
व़हीन नंगा होय़ ऋान पनती दीन का भोजन न नष्पती हो।
१६ ऋान तुम में से ऐक उनहें कहे की कुसल से जा संतुसट हो ऋान
तात नह तथापी तुम उनहें देह के पनय़ोजन की व़सतें न देउ तो
१७ कय़ा लाभ है। ऐसाही व़ीसवास जो वुह कननी न नष्पता हो तो
१८ ऋकेला होके मीनतक है। कय़ा जाने कोइ कहे की तुह में
व़ीसवास है ऋान मुह में कननी सो तु ऋपने व़ीसयास को कननी
से मुहे दीष्पा ऋान मैं ऋपनी कननी से ऋपना व़ीसवास तुहे
१९ दीष्पाउं। तु व़ीसवास कनता है की इसन ऐक है भला कनता है
२० सय़तान भी ते व़ीसवास कनते हैं ऋोर थनथनाते है। पनंतु
हे व़य़ानथ मनुष्प कय़ा कभी तुहे समुह पड़ेगा की व़ीसवास
२१ कननी व़ीना मीनतक है। कय़ा हमाना पीता इव़नाहीम ऋपने
पुतन इसहाक को जगव़ेदी पन लाके कननी से घनमी नहीं
२२ ठहना। सो तु देष्पता है की व़ीसवास ने उसकी कननी के संग
२३ कानज कीय़ा ऋान कननी से व़ीसवास पुना ज्ञया। ऋान गनंथ
जो कहता हैं की इव़नाहीम इसन पन व़ीसवास लाय़ा ऋान
वुह उसके लीय़े घनम ठहना ऋान वुह इसन का मीतन कह-
२४ लाय़ा पुना ज्ञया। सो तुमलोग देष्पते हो की मनुष्प कनना से
२५ घनमी ठहनाय़ा जाता है ऋान केवल व़ीसवास से नहीं। इसी
नीत से नाहाव़ व़ेसवा जव़ उसने भेदीय़ों को गनहन कीय़ा
ऋान उनहें दुसने मानग से व़ाहन कनदीय़ा कननी से घनमी

२६ नहीं ठहरी। क्योंकी जैसा देह प्रान बिना मिरतक है वैसा
ही बिसवास भी करनी बिना मिरतक है।

३ तीसरा पर्ब।

१ हे मेरे भाइयो बहुत से उपदेसक न बनो यह जान के की
२ हम अधीक दंड पावेंगे। क्योंकी बहुतसी बातों में हम सबके
सब चुक करते हैं जदी कोई बचन में चुक न करे वही सीध
३ पुरुष है और समसत देह को बस में भी रखसकता है। देखो
हम घोड़ों के मुंह में बाग देते हैं की हमारे बस में होवें और
४ उनके सारे देह को फेरते हैं। देखो नावें भी यदपी कैसी
कैसी बड़ी हैं और परचंड बयारों से उड़ी जाती हैं तथापी
बहुत छोटी पतवार से जीधर जीधर मांझी चाहता है उन्हें
५ फेरता है। वैसाही जीभ एक छोटासा अंग है पर बड़ाही
गपी है देखो थोड़ीसी आग बसतुन को बड़ी बड़ी ढेरों को
६ जला देती है। सो जीभ एक आग अनु पाप का एक जगत
सो जीभ हमारे अंगों में ऐसे सथापीत है की समसत देह को
असुध करती है और संसार के चकर को जलावती है और न-
७ रक से जलाई गई। क्योंकी हरएक परकार के बनैले पसु और
पंछी और कीड़े और जलजंतु मनुष्य से बस कीये जाते हैं और
८ बस कीये गये हैं। परंतु जीभ को कोई मनुष्य बस में नहीं कर
सकता वुह एक अजीत दुसट है मारु बीख से भरी हुई है।
९ उसी से हम ईसर अरथात पीता का धंन मानते हैं और उसी से
मनुष्यन को जो ईसर के सरुप में उतपंन हुए हैं स्राप देते हैं।
१० एकही मुंह से आसीस और स्राप नीकलते हैं हे मेरे भाइयो
११ यों होना उचीत नहीं। क्या सोता एकही मुंह से मीठा और
१२ खारा उबालता है। हे मेरे भाइयो क्या गुलर में जलपाई और
दाख में गुलर फलसकता है ऐसा कोई सोता से खारा और
१३ मीठा पानी नहीं नीकलता। तुम में से बुधमान और गयानी

कौन है सोइ सुयाल से चैान गयानी की कोमलता से अपनी
१४ कननी दीप्पावे। पन जो तुमलोग कड़वी जलम चैान झगड़ा
अपने मन में नप्पो तो व्रड़ाइ न कनो चैान सत के व्रीनुघ में
१५ झुठ न व्रोला। यह वुह व्रुघ नहीं जो उपन से उतनती है
१६ पनंतु पानथीव इंद्रीनीयैीक सय्रतानी है। कयोंकी जहां च्राड़ा
च्राड़ी चैान झगड़ा है तहां घव्रनाहट चैा हन एेक कुकनम
१७ है। पनंतु उपन की व्रुघ जो है सो पहीले पवीतन है फीन
मीलनसान कोमल सहज से समुझाइ जाय्र दय्रा चैान सुफल
१८ संपुनन नीसपप्य चैान नीषकपट। चैान घनम का फल मीलन
सानों के लीये मीलाप में व्रोय्रा जाता है।

४ यैाथा पनव्र।

१ तुमहाने मघ में जुघ चैान संगनाम कहां से हैं कय्रा तुमहानी
२ कामना से जो तुमहाने च्रंगों में जुघ कनती हैं नहीं है। तुमलोग
ललयाते हो चैान नहीं पावते हतय्रा कनते हो चैान च्रती लाल
सा कनते हो चैान पनापत नहीं कनते जुघ चैान संगनाम कनते
३ हो तथापी तुमहाने हाथ नहीं लगता कयोंकी मांगते नहीं। तुम
लोग मांगतो चैान नहीं पावते कयोंकी च्रननीत से मांगते हो
४ की च्रपनी कामना में उठान कनो। हे व्रैभीयानीयो चैान हे
व्रैभीयानीनीयो कय्रा तुम नहीं जानते की जगत की मीतनता
इसन की सतुनता है इसलीये जो कोइ जगत का मीतन हुच्रा
५ याहे सो इसन का सतनु ठहनाय्रा गय्रा है। तुम लोग कय्रा
समुझते हो की गनंथ व्रीनथा कहता है कय्रा च्रातमा जो हम में
व्रसता है डाह की लालसा कनता है। पनंतु वुह च्रघीक च्रनु-
गनह देता है जैसा की कहा है की इसन च्रभीमानीयों का
६ सामना कनता है पनंतु दीनों पन च्रनुगनह कनता है। इस
७ कानन च्रपने को इसन के व्रस में कनो सय्रतान का सामना कनो
८ चैान वुह तुमसों से भाग नीकलेगा। इसन के पास व्रढ़ो चैान

वुह तुमहारे पास बढ़ेगा हे पापीओ हाथों को पवीतर करो
९ ओर हे दोचीतो अपने अपने अंत:करन को सुघ करो। उदासीन
होओ वीलाप करो रोओ तुमहारा हंसना कुढ़ने से ओर तुम-
१० हारा आनंद सोक से बदल जाय। परभु के आगे अपने को
११ नमर करो ओर वुह तुमहों को उठायेगा। हे भाइयो ऐक
दुसरे की बुरी चरचा न करो जो कोइ अपने भाइ की बुरी
चरचा करता है ओर अपने भाइ को दोषी ठहरावता है सो
बेवसथा की बुरी चरचा करता है ओर बेवसथा को दोषी
ठहरावता है परंतु यदी तु बेवसथा को दोषी ठहरावता है
तो तु बेवसथा पर चलनेवाला नहीं परंतु उसका नयायी है।
१२ बेवसथाकरता ऐक है जो बचावने का ओर नसट करने का
सामरथ रखता है तु कौन है जो दुसरे को दोषी करता है।
१३ सो आओ तुम सब जो कहते हो की हम आज अथवा कल ऐसे
नगर में जायंगे ओर वहां ऐक बरस रहेंगे ओर बेपार करेंगे
१४ ओर कुछ परापत करेंगे। परंतु नहीं जानते की कल कया
होगा कयोंकी तुमहारा जीवन कया है वुह ऐक धुआं है जो
१५ थोड़े समय लों देखाइ देता है फेर बीनस जाता है। परंत
चाहीये की उसका उलटा कहो जो परभु की इछा होय ओर
१६ हम जीवें तो हम ऐसा अथवा जैसा करेंगे। परंतु अब तुम
अपनी गालफटाकी पर बड़ाइ करते हो ऐसी समसत बड़ाइ
१७ करना बुरा है। सो जो कोइ भला करने जानता है ओर
नहीं करता उसके लीये पाप है।

५ पांचवां परब।

१ अब आओ हे धनमानो उन बीपतीन के सोक से जो तुमहों
२ पर आवती हैं चीला चीला के रोओ। की तुमहारे धन नसट
३ हुऐ ओर तुमहारे बसतरों में कीड़े लगे। तुमहारे सोने रुपे में
काइ लगी ओर उनकी काइ तुमहों पर साखी देगी ओर आग

के समान तुमहाना मांस प्यायगो तुनहों ने पीछले दीनों के लीये
४ घन व्रटोना है। देप्पो उन व्रनीहानों की व्रनी जीनहों ने तुम-
हाने प्पेत काटे जीन से तुमहों ने छल कीया पुकानती है श्रोन
५ काटनेवालों के सव्रद सेना के पनभु के कान लों पहुंचे। तुमहों
ने भुम पन सुप्प से श्रोन कीनीड़ा से भोग कीया तुमहों ने श्रपने
श्रपने श्रंत:कनन को मोटा कीया जैसा व्रध क दीन के लीये
६ कनते हैं। तुमहों ने उस धनमी को दोप्पी ठहनाके घात कीया
७ श्रोन उसने तुमहाना सामना म कीया। सो श्रव्र हे भाइयो
पनभु के श्रावने लों संतोप्प कनो देप्पो कीसान भुम के श्रछे
फल के लीये ठहनता है श्रोन उसके व्रीप्पय में संतोप्प कनता है जव्र
८ लों की पहीला श्रोन पीछला मेंह न व्रनस जाय। सो तुम भी
संतोप्प कनो श्रोन श्रपने श्रपने मन को सथीन कनो कयोंकी
९ पनभु का श्रावना नीकट है। हे भाइयो ऐक दुसने पन डाह
न कनो जीस में तुम दोप्पी न व्रनो देप्पो नयायी दुवान पन है।
१० हे मेने भाइयो जो श्रागमगयानी पनभु का नाम लेके व्रोलते
थे उनहें दुप्प उठावने का श्रोन संतोप्प कनने का दीनीसटांत
११ समुझो देप्पो हम सहनेवालों को धंन जानते हैं तुमहों ने श्रयुव्र
का संतोप्प सुना है श्रोन पनभु का श्रंतीपनाय देप्पा है की पनभु
१२ मया से पुनन श्रोन श्रती दयाल है। पन सव्र से पहीले हे मेने
भाइयो कीनीया न प्पाश्रो न तो सनग की न पीनथीवी की न
तो श्रोन कीसी की कीनीया पनंतु तुमहाना हां हां हो श्रोन
१३ तुमहाना ना ना नहो की तुम दोप्प में पड़ो। तुमहों में कोइ
पीड़ीत है तो पनानथना कने हनप्पीत है तो भजन गावे।
१४ कोइ तुमहों में नोगी है तो मंडली के पनाचीनों को वुला वे
श्रोन वे पनभु का नाम लेके उसके देह पन तेल मलें श्रोन उस
१५ पन पनानथना कनें। श्रोन व्रीसवास की पनानथना नोगी को
व्रयायेगी श्रोन पनभु उसे उठावेगा श्रोन जो उसने पाप कीये
१६ हों तो वे छमा कीये जायेंगे। श्रापुस में पाप को मान लीया

करो और एक दूसरे के लिये प्रार्थना करो जिसतें तुम
चंगे हो जाओ धर्मी मनुष्य की प्रार्थना जो आत्मा के
१७ बल से की गई है अति गुणकारी है। इलीयास हमारी नाईं
दुर्बलता से युक्त मनुष्य था और उसने प्रार्थना करके चाहा
कि मेंह न बरसे और तीन बरस छः महीने लों भूम पर बरषा
१८ न हुई। उसने फेर प्रार्थना की और स्वर्ग ने मेंह दीया
१९ और भूम ने अपने फल उगाये। हे भाइयो यदि कोई तुमहों
२० में से सच्चाई से भटके और दूसरा उसे फेरलावे। तो वुह जाने
कि जो एक पापी को भ्रमण के मार्ग से फेरलावे सो एक प्राण
को मृत्यु से बचायेगा और पापों के समुदाय को ढांकेगा।

पतनस की पहीली पतनी सब के लीये।

---

१ पहीला पनब।

१ पतनस के ओन से जो यसु मसीह का पनेनीत है उन पन-
देसीयों को जो पनतस ओन गलतीयः ओन कपादोकीयः
२ ओन आसीया ओन बीतीनीयः में छीन भीन हैं। जो इसन
पीता के पनबगयान के समान आतमा की पवीतनता से अगया
पन यलने को ओन यसु मसीह के लोहु के छीड़कने से युने
हुए अनुगनह ओन कुसल तुमहाने लीये अधीक होता जाय।
३ धंन इसन ओन हमाने पनभु यसु मसीह के पीता को जीसने हम
को अपनी दया की अधीकाइ के समान यसु मसीह के जी उठने
४ के कानन से जीवती आसा के लीये फेन के उतपंन कीया। ओन
की अबीनास नीनमल अजन अधीकान के लीये जो तुमहाने
५ कानन सनग में धना है। जो बीसवास के कानन इसन के
सामनथ से उस उधान के लीये जो पीछले समय में पनगट होने
६ को धना है नछा कीये गये। उस में बड़तसा आनंद कनते हो
यदपी तुम अब थोड़े दीन लों जो अवेस होय ना ना पनकान
७ की पनीछा से सोकीत हो। जीसतें तुमहाने बीसवास की पनीछा
नासमान सोने से अती महंगमोली होके यदपी वुह आग में
ताया जाय यसु मसीह के पनगट होने के समय सतुत ओन
८ पनतीसठा ओन महीमा में पाइ जाय। जीसे बीन देखे तुम

पीआन कनते हो औन जीस पन यदपी तुम अब नहीं देष्पते
तथापी बीसवास लाके ऐसी अकथ आनंदता से आनंद कनते हो
९ औन महामाले भनी है। अपने बीसवास के अन्तोपनाय को
१० अनथात अपने पनानें का उधान पनापत कनते हो। उसी
उधान के बीष्पय में आगमगयानीयों ने जीनहों ने उस अनु-
गनह की जो तुमहाने लीये थी आगे से कही प्पोज कीया औन
११ जतन से ढुंढा। प्पोज कनते थे की मसीह के आतमा ने जो उन
में था कौस समय को अथवा कौस कौस नीत के समय का
बुहाया जब उसने मसीह के दुष्पों की औन महीमा को जो
१२ उसके पीछे होने पन थी आगे से साष्पी दी। जीन पन यह
पनगट ऊआ की उनहों ने अपने लीये नहीं पनंतु हमाने लीये
इन बातों की सेवा की जो अब तुमहो को उनके औन से दीया
गया जीनहों ने पनमातमा के सहाय से जो सनग से उतना तुमहें
मंगलसमाचान का संदेस दीया जीन बातों के धयान कनने को
१३ दुतगन अभीलासी हैं। इस कानन अपने मन की कमनें बांध
के औन संजमी होके अंतलों उस अनुगनह की आसा नष्पो जो
यसु मसीह के पनगट होने के समय में तुमहों पन पऊंचाया
१४ जावगा। आधीन पुतनों की नाई अपने को अगीली लालसा के
समान जो तुमहानी अगयानता के समय में थी मत बनाओ।
१५ पनंतु जैसा की तुमहाना बुलावनीहान पवीतन है तुम भी अपने
१६ समसत बीवहान में पवीतन बनो। कयोंकी लीष्पा है की पवीतन
१७ होओ की मैं पवीतन ऊं। औन जो तुम पीता को पुकानते हो
जो पनगट दसा पन दीनीसटी न कनके हनएक के कानज के
समान नयाय कनता है तो अपने बीदेस के समय को डनते
१८ ऊए काटो। यह जानके की तुमहों ने बीनासमान बसतुन से
अनथात नुपे सोने से अपने बयनथ चलाव से जो तुमहें पीत-
१९ नन के कहावत से मीला उधान नहीं पाया। पनंतु मसीह के
बऊमोल लोऊ से जैसा नीसकलंक औन नीनदोष्प मेमना का।

२० जो जगत की उतपती से आगे ठहराया गया परंतु इनहीं अंत
२१ समय्यन में तुमहारे लीये परगट हुआ। जो उसी के दुवारा
से ईसर पर बीसवास रख्खते हो की उसने उसको मीरतकन में
से उठाया और ऐसरय दीया की तुमहारा बीसवास और
आसा ईसर पर होवे। सत के आधीन होन के आतमा के
दुवारा से अपने मन को सुध कीया यहां लों की तुमहों में
भाइयों का सा नीसकपट परेम हुआ सो ऐक दुसरे को सुधं
२३ अंतःकरन से बहुतसा पीआर करो। तुम नासमान बीजों से नहीं
परंतु अबीनासी से अरथात ईसर के बचन से जो जीवता है
२४ और सरबदा रहता है फीर के उतपन हुए हो। कयोंकी
समसत मांस घास के तुल हैं और मनुष्य की समसत महीमा
घास के फुल के समान घास मुरझा जाती है और उसका फुल
२५ झड़ जाता है। परंतु ईसर का बचन सरबदा रहता है सो यह
वही बात है जीसका उपदेस मंगल समाचार में तुमहें दीया
गया है।

२ दुसरा पत्र।

१ इस कारन समसत दरोह और समसत छल और कपट और
२ डाह और बुरी बातचीत को अलग करके। नये जनमे बचों के
समान बचन के नीराले दुध के अभीलासी होओ की तुम उस से
३ बढ़ते जाओ। कयोंकी तुमहों ने सवाद पाया है की परभु दयाल
४ है। जीस करे जैसा जीते पतथर के पास आय जो मनुष्यन से तो
नीकमा जाना गया परंतु ईसर का चुना हुआ और पीरीय।
५ तुम लोग भी जीते पतथरों की नाईं आतमीक घर बने हो ऐक
पवीतर याजकता की आतमीक बलीदानों को चढ़ाओ जो यसु
६ मसीह के कारन से ईसर को भावते हैं। इस कारन गरंथ में
भी है की देख्य मैं ऐक सरेसट कोने का पतथर चुना हुआ और
बहुमुल सैहुन में धरता हुं और जो कोई उस पर बीसवास रख्खता

७ है बजीत न होगा। सो तुमहाने लीय़े जो व़ीसवास लाय़े हो व़ड़ा
मुल है पनंतु उनके लीय़े जो आगय़ा नहीं मानते वही पतथन
८ जीसे थवइय़ों ने नीकमा जाना कोने का सीना ऊआ। औन
ठेस दीलानेवाला पतथन औन ठोकन खीलानेवाली यटान जो
आगय़ा नहीं मान के व़यन से ठोकन खाते हैं जीसके लीय़े
९ ठहनाय़े भी गय़े थे। पनंतु तुमलोग चुने ऊय़े व़ंस औन नाजीय़
य़ाजकता य़ेक पवीतन व़नन औन नीज लोग हो जीसतें तुम उस
के गुनानुव़ादों को पनगट कनो जीसने तुमहें अंधकान से अपने
१० आसयनज के उंजीय़ाले में व़ुलाय़ा। जो आगे लोग न थे पनंतु
अव़ ईसन के लोग हो औन जो दय़ा न पाय़े थे पनंतु अव़ दय़ा
११ पाय़े हो। हे पीनीय़ मैं तुमहों से जैसे व़ीदेसीय़ों औन अती-
थीय़ों से व़ीनती कनता ऊं की तुम सानीनीक कामना से जो
१२ आतमा से जुध कनते हैं पने नहो। औन तुमहानी य़ालयाल
अनदेसीय़ों के मध में सयाई से होवे की जैसा तुमहें कुकनमी
जानके तुम पन व़ुना कहते हैं तुमहाने भले कानजन पन
१३ दीसीसट कनके कीनपा के दीन में ईसन की सतुत कनें। पनभु
के लीय़े मनुष्यन के हनय़ेक ठहनाय़े ऊय़े के आधीन होअेा याहे
१४ नाजा के जो सव़ से व़ड़ा है। अथवा अधक्षों के जैसा उसके
भेजे ऊय़े के समान की कुकनमीय़ों को दंड देवे पनंतु सुकनमी
१५ की सनत के लीय़े। कय़ोंकी ईसन की इछा य़ुं है की तुमलोग
सुकनम कनके मुढ़ मनुष्यन की मुनखता के मुंह को व़ंद कनो।
१६ नीनव़ंध के समान पनंतु अपनी नीनव़ंधता को दुसटता का आड़
मत कनो पनंतु ईसन के सेवकों के समान। समसत मनुष्यन
का आदन कनो भाईयाना को पीआन कनो ईसन से डनो नाजा
१८ को पनतीसठा देअेा। हे सेवको संकोय से अपने सामीय़ों के
व़सीभुत होअेा केवल अछे औन कोमल के नहीं पनंतु कुननो
१९ के भी। कय़ोंकी य़दी कोई ईसन के लीय़े व़ीवेक से अंधन में
२० पड़के दुख सहे तो य़ह सोभाजुकत है। कय़ोंकी य़दी पाप

कनके तुमलोग पीटे गये चैान सहीलीया तो कैानसी वडाइ है
पनंतु यदी भलाइ कनके दुष्प पाचो चैान उसे सहो तो यह
२१ सोभाजुकत है। कयोंकी इसी लीये तुम बुलाये गये हो मसीह
भी तुमहाने लीये दुष्प पाके येक दीनीसटांत तुमहाने लीये
दुष्प पाके येक दीनीसटांत तुमहाने लीये छोड गया है की उस
२२ के डग पन चले जाचो। उसने पाप न कीया चैान न उसके
२३ मुंह में छल पाया गया। उसने गालीयां प्पाके गाली न दी चैान
दुष्प पाके घनकाया नहीं पनतु चपने को उसको सैांप दीया जो
२४ धनम से नयाय कनता है। वह चाप हमाने पापों को चपनेही
देह में वीनीछ पन उठालीया जीसतें हम पापों से मोप्प पाके
धनम के लीये जीवें उसीके कोड़ों के कानन से तुम चंगे ऊये हो।
२५ कयोंकी तुम भटकी ऊइ भेड़ों के समान थे पन चव चपने
पनानों के गड़नीये चैान नप्पवान के पास फीन चाये हो।

३ तीसना पपव्र।

१ इसी नीत से हे पतनीयो चपने चपने पतीयों के वसीभुत
होचो की यदी कोइ वचन को न माने तो वे वीना वचन के
२ चपनी पतनीयों की चलन से प्पींचा जायं। की वे तुमहानी
३ पवीतन चलन को भय में देप्पें। तुमहाना सींगान वाहनी न
हो जैसे सीन गुंथना सोने का पहींना चथवा वसतन से वीभुसीत
४ होना। पनंतु चंतःकनन का गुपत मनुप्पत जो चवीनासी है
चैान सांत चैान कोमल चातमा जो इसन के चागे चती वड
५ मोल का है। कयोंकी पवीतन सतीनीयां भी जीनका भनोसा
इसन पन था चगीले समय में इसी नीत से चपना सींगान कनती
६ थीं चैान चपने चपने पतीयों के वस में नहती थीं। जैसा सानः
इवनाहीम को मान के उसको पनभु कहती थी सो जवलों तुम
लोग वीसमीत न होके भले कानज कनो तवलों उसकी पुतनीयां
७ हो। वैसाही हे पतीयो गयान की नीत पन उनके संग नीवाह

करो और इसतीरी को कोमल पातर समुझकर आदर देओ।
जैसा जीवन के अनुगरह के अधीकार में साझी हो जीसतें तुम-
८ हारी पराथना रोकी न जाय। सो अंत में सब के सब एक मन
हो आपुस में दया रक्खो भाइ कीसी पीरीत में पुरन होओ कीर-
९ पाल और दयाल होओ। बुराइ की संती बुराइ न करो। गाली
की संती गाली मत देओ परंतु उसके उलटे आसीस करो यह जान
१० के की तुम आसीस के अधीकारी होने को बुलाये गये हो। कयोंकी
जो जीवन को पीआर कीया चाहे और भले दीनों को देखा
चाहे सो अपनी जीभ को बुराइ से और अपने होठों को छल
११ की बात बोलने से परे रक्खे। बुराइ से फीरे और भला करे मी-
१२ लाप की खोज और पीछा करे। कयोंकी परभु की दीरीसट
धरमीयों पर और उसके कान उनकी पराथना पर है परंतु
१३ इसर का मुंह कुकरमीयों से बीरुध है। और जो तुमलोग
भलाइ का पीछा करनेवाले होओ तो कौन तुमहें दुख देगा।
१४ परंतु जो धरम के लीये दुख पाओ तो धन हो इस कारन उनके
१५ डराने से मत डरो और घबरा मत जाओ। परंतु परभु इसर
को अपने मन में पवीतर जानो और सदा चौकस रहो की हर
एक को जो तुम से उस आसा के बीसय में जो तुमहों में है पूछे
१६ कोमलता और भय से उतर देओ। अछे बीवेक को रक्खो के की
जीन में वे कुकरमी जान के तुमहारे बीसय में बुरा कहते हैं
जो तुमहारी अछी मसीही चलन को नींदा करते हैं सो लजीत
१७ होवें। कयोंकी यदी इसर की इछा होय तो भला करके दुख
१८ पावना अती उतम है की बुरा करकर। कयोंकी मसीह ने भी
एकबार पापों के कारन कसट पाया धरमी ने अधरमीयों के
कारन जीसतें वुह हम को इसर के पास पहुंचावे की सरीर में
१९ तो मारागया परंतु आतमा से जीलायागया। जीस से उसने
२० उन आतमाओं को जो बंधन में थे जाके उपदेस कीया। जो
बकत दीन से जब इसर के संतोख ने नुह के समय में धीरज

कीया जब नाव बन रही थी जीस में थोड़े से अरथात आठ
२१ परानी जल से बच गये। वैसाही यीह अरथात सनान प.वना
हम को अब बचावता है देह की मैल का छुड़ाना नहीं परंतु
उतम बीवेक से इसर को उतर देना हम को यसु मसीह के
२२ पुनरुतथान से बचावता है। वुह सरग बर जाके इसर के दहीने
और है और दुतगन और पराक्रम और परभुता उसके बस
में की गइ हैं।

४ चौथा पत्र।

१ सो जैसा की मसीह ने हमारे कारन सरीर में कसट पाया
इसी रीत से अपने को वैसाही मन से चौकस रष्पो। कयोंकी
२ जीसने देह में कसट पाया सो पाप से थमगया। की वुह आगे
को मनुष्यन के कामाभीलासों के समान नहीं परंतु इसर की
३ इछा के समान सरीर में अपना समय काटे। कयोंकी हमारे
जीवन से जो याल की अन देसीयों की इछा पर बीत गइ है
सो बस है जब की हमलोग लंपटता और बुरी लालसा और
अती मदपान और उतसव करने में और मतवालपन में और
४ मुरतीन की घीनीत पुजा में समय काटते थे। इन के बीष्पय
में वे अचंभा मानते हैं की तुम उनके संग अधीक धुम धाम में
५ नहीं बढ़ते तुमहारी बुराइ करते हैं। वे उसको लेष्पा देंगे
जो जीवतन और मीरतकन का नयाय करने पर सीध है।
६ कयोंकी मीरतकन को मंगल समाचार का उपदेस इस लीये
दीया गया की मनुष्यन के समान सरीर में उनका बीचार
७ कीया जाय पर इसर की रीत पर आतमा में जीवें। परंत
समसत बसतुन का अंत नीकट है इस लीये सगयान होओ
८ परारथना में चौकस रहो। बीसेष्प करके घनेरा परेम रष्पो
९ कयोंकी परेम पापों की बहुताइ को ढांप देता है। और
१० आपुस में बीना कीरपनता से अतीथ की सेवा करो। जैसा

हनपेक के दान मीला है वैसा इसन के अधीक अनुगनह के
११ उतम मंडनी के समान आपुस में व्रांटे। यदी कोइ व्रोले ते
वुह इसन की व्रानी के समान व्रोले यदी कोइ सेवा कने ते
इसन के दीये हुए सामनथ के समान कने जीसतें इसन समसत
व्रातें में यसु मसीह के दुवाना से महीमा पावे जीनके लीये
१२ सतुत और पनभुता नीत नीत होवे। हे पीनीय तुम उस
अगन की पनीछा से जो तुमहाने पनष्पने के लीये है यह
समुझ के आसयनज न कने की हम पन कोइ अनोष्पी व्रात
१३ व्रीत गइ है। पनतु जैसा की तुमलोग मसीह के दुष्पों में साझी
हो आनंद कने की जव्र उसका महीमा पनगट होवे तुम भी
१४ व्रड़ी आनंदता से मगन होओ। जो तुमलोग मसीह के नाम
के कानन से नींदीत हो तो धंन हो। कयोंकी महीमा का और
इसन का आतमा तुम पन नहता है वुह उनके ओन से व्रुना
१५ कहा गया है पतंतु तुमहाने ओन से महीमा पाइ है। पनंतु
तुम में से कोइ हतयाने अथवा चोन अथवा कुकनमी अथवा
औनें के व्रीष्पय में अजोग यनयक के समान संताया न जाय।
१६ पन यदी कीनीसटीआन होने के कानन कोइ दुष्प पावे ते
लजीत न होवे पनंतु इस व्रीष्पय में इसन की महीमा कने।
१७ कयोंकी समय है की इसन के घनाने पन दंड का आनंभ है
और यदी हम से आनंभ है ते उनका अंत कया होगा जो
१८ इसन के मंगल समाचान के नहीं मानते। और जो धनमी
कठीन से व्रचाया जावे तो अधनमी और पापी का ठीकाना
१९ कहां। इस लीये वे भी जो इसन की इछा के समान दुष्प पावते
हैं उसके व्रीसवसत कनता जानके भले कानज में अपने पनानें
के उसे सैांपें।

५ पांचवां पनव्र।

१ उन पनाचीनें के जो तुमहें में हैं मैं भी जो पनाचीन इ.

श्रीर मसीह के दुष्षों का साष्षी श्रीर उस महीमा का जो परगट
२ होगी साझी ऊं येतावता ऊं। की इसर के उस झुंड की जो
तुमहों में है रष्षवाली करके यर वें पर दवाव से नहीं परंतु
व्रांया से श्रीर मलीन लाभ के लीये नहीं परंतु सीघ मन से।
३ श्रीर परभु के अघीकार पर परभुता न करे। परंतु झुंड के लीये
४ दीनीसटांत व्रने। श्रीर जव्र परघान यरवाहा परगट होगा तव्र
५ तुम महीमा का अव्रीनसी मुकुट पाश्रोगे। ऐसा हे तरुनों तुम
सव्र पराय्यीनों के व्रस में होश्रो हां सव्र के सव्र ऐक दुसरे के
श्राघीन होवें श्रीर दीनताइ से पहीनाय़े जाश्रो कय़ोंकी इसर
अभीमानीय़ों का सामना करता है परंतु दीनों पर अनुगरह
६ करता है। सो इसर के पराकरमी हाथ के नीये दीन होश्रो
७ की वुह तुमहें समय्य पर उभारे। अपनी सारी यींता उस पर
८ डाल देश्रो कय़ोंकी वुह तुमहारे लीय़े यींता करता है। यैाकस
होश्रो जागते रहो कय़ोंकी तुमहारा सतरु सयतान गरजते
ऊए सींह के समान ढुंढता फीरता है की कीसको भछ कर डाले।
९ जीसका सामना व्रीसवास में दीढ़ होके करो य़ह जान के की
वही कलेस तुमहारे भाइय़ों पर जो जगत में हैं पड़ते जाते हैं।
१० परंतु समसत अनुगरह का इसर जीसने हमको अपनी अनंत
महीमा के लीय़े मसीह य़सु में व्रुलाय़ा है की तुमहारे थोड़ेलो
दुष्ष सहने के पीछे तुमहें सीघ श्रीर सथीर श्रीर दीढ़ करे
११ श्रीर ठहरावे। महीमा श्रीर राज सरव्रदा श्रीर सरव्रदा उसी
१२ का है श्रामीन। मैं ने तुमहें सलवानस के श्रोर से जो मेरी
समुझ में व्रुघमान भाइ है संछेप से लीष्ष के सीष्षा श्रीर साष्षी
दी की इसर का सया अनुगरह वही है जीस में तम दीढ़ हो।
१३ व्रावुल की मंडली जो तुमहारे संग युनी गइ श्रीर मेरा पुतर
१४ मरकस तुमहें नमसकार कहते हैं। परेम का युमा लेके श्रापस
में नमसकार करो तुम सभों पर जो मसीह य़सु में हो कुसल
होवे श्रामीन।

पतनस की दुसनी पतनी सन्न के चीयें।

---

१ पहीला पनव।

१ समउन पतनस के ओान से जो य़सु मसीह का दास ओान
पनेनीत है उनको जीनहों ने हमाने इसन ओान मोप्पदाता य़सु
मसीह के घनम से हमाने संग प्रेनीनाइं के व्रकसुव व्रीसवास
२ पाया। इसन के ओान हमाने पनभु य़सु मसीह के पहीयान का
३ अनुगनह ओान सांती तुमहाने लीये व्रढ़ता जाय़। जैसा की उसके
इसनीय़ पनाकनम ने हमें समसत व्रसतें दीइं जो जीवन ओान
भकतता के व्रीप्पय़ में है उभी के गय़ान के कानन से जीस ने हमें
४ प्रेसनय़ ओान घनम के लीये व्रुलाय़ा। जीस से हमें अतय़ंत व्रड़े
ओान अती मोल के व्रायदा दीये गये की इनके कानन तुमलोग
उस सड़ाव से जो जगत में व्रुनी इछा के कानन से है व्रयकन
५ इसनीय़ सभा में भागी हो जाओ। ओान इसके कानन समसत
जतन कनके अपने व्रीसवास पन घनम ओान घनम पन गय़ान।
६ ओान गय़ान पन व्रनाव ओान व्रनाव पन संतोप्प ओान संतोप्प पन
७ भकतता। ओान भकतता पन भाइ का सा सनेह ओान भाइ के से
८ सनेह पन पनेम व्रढ़ाओ। कय़ोंकी य़दी ये व्रातें तुम में हों
ओान भनपुन हों तो तुमको हमाने पनभु य़सु मसीह के गय़ान
९ में नीकमा ओान नीसफल होने न देंगी। पनंतु जीस कीसी में ये
व्रातें घटी हैं वुह अंघा है ओान आप्पें मुयता है ओान भुलगय़ा

१० है की वुह अगीले पापों से पवीतर कीया गया था। इस लीये
हे भाइयो अधीक जतन करो की तुमहारा वुलावा और युना
जाना दीढ़ होय कयोंकी जो तुम ऐसे कारज करो तो कभी
११ भ्रसट न होओगे। कयोंकी युं तुमहें हमारे परभु और
मुकतीदाता यसु मसीह के अनंत राज में ऊताइ से परवेस
१२ मीलेगा। इस लीये तुमहें इन वातों को सदा समरन करावने
में मैं न युकुंगा यदपी तुम उनहें जानते हो और इस सत पर
१३ सथीर हो। परंतु उयीत जानता हूं की जव लों मैं इस तंवु
१४ में हूं तुमहें उसका उसका के समरन कराउं। यह जान के की मैं
सीघर इस तंवु को छोडुंगा जैसा की हमारे परभु यसु मसीह
१५ ने मुझे वतलाया। परंतु मैं जतन करुंगा की तुम लोग मेरे
१६ मरने के पीछे इन वातों को नीत येत कीया करो। कयोंकी
जव हम ने अपने परभु यसु मसीह के सामरथ की और उसके
आवने की तुमहों को जनाया तव हम ने यतुराइ की वनाइ
हुइ कहानीयों का पीछा नहीं कीया परंतु उसकी महीमा के
१७ परतछ साछी थे। कयोंकी जव अतयंत तेज से उसके लीये
ऐसा सवद हुआ की यह मेरा परीय पुतर है जीस से मैं पर-
संन हूं तव उसने ईसर पीता से सनमान और महीमा पाइ।
१८ और जव हम उसके संग पवीतर पहाड़ पर थे यह सवद सरग
१९ से आवते सुना। और हम एक अधीक दीढ़ आगम की वात
रखते हैं जीसको यीकसी करने से तुमलोग अछा करते हो
जैसा की दीपक से जो अंधीयारे सथान में वरता है जवलों दीन
की पौ न फुटे और परात:काल को तारा तुमहारे अंत:करनों
२० में उदय न होवे। यह पहीले जान के की आगम की लीखी
२१ हुइ कोइ वात कीसी की अपनी ही कही हुइ नहीं है। कयोंकी
आगम की वात परायीन समय में मनुष्य की इछा से नहीं
आइ परंतु ईसर के पवीतर लोग धरमातमा के वुलवाये हुए
वोलते थे।

२ दुसना पनव्न।

१ पनंत् ह्रुठे आगम गयानी भी लोगों में थे जैसा की ह्रुठे
उपदेसक तुम में भी होगे जो छीप के नसट कननेवाले उपद्नव
लावेंगे अनथात उस पनभु से जीसने उनहें मोल लीया सुकनेंगे
२ श्रोन अपने पन सीघन नसटता लावेंगे। श्रोन व्रह्रुत से उनकी
व्रुनाइयों का पीछा कनेंगे जीनके कानन से सयाइ के मानग
३ की नींदा की जायगी। श्रोन लोभता से वे छल की व्रातों से
तुम को व्रय्र पान कनेंगे जीन पन दंड की अगया व्रह्रुत दीन से
आवने में व्रीलंव्र नहीं कनती श्रोन उनकी नसटता नहीं उंघती।
४ कयोंकी जव्र इसन ने पापी दुतों को न छोड़ा पनंतु ननक में
५ डाला की अंघकान के सीकनों में व्रीयान लों पडें नहें। श्रोन
पनायीन जगत को न छोड़ा तथापी जलमय को अघनमी जगत
पन लाके आठवें जन को व्रयाया अनथात नुह को जो घनम का
६ उपदेसक था। श्रोन उसने सदुम श्रोन गमनन: के ननगों पन
नसटता श्रोन भसम कनने के दंड की अगया देके उनहें आवने
७ वाले अघनमीयों के लीये यीनह व्रनाया। श्रोन घनमी लुत
को व्रयाया जो व्रुने लोगों की अपवीतन यलन से उदास था।
८ कयोंकी वुह घनमी पुनुप्प उन में नहीके उनकी अनयीत यलन
को देप्प देप्प श्रोन सुन सुन पनतीदीन अपने नीसकपट मन से
९ पीड़ीत था। पनभु भकतों को पनीछा से छुड़ाने श्रोन अघन-
मीयां को नयाय के दीन लों दंड पावने के लीये नप्प छोड़ने
१० जानता है। पनंतु व्रीसेप्प कनके उनको जो अपवीतन अभी-
लाप्पां से सनीन का पीछा कनते हैं श्रोन पनभुता की नींदा कनते
हैं वे मगने श्रोन सेछक श्रोन महत पद के व्रीप्पय में व्रुना कहने
११ को नहीं डनते। तथापी दुतमन जो पनाकनम श्रोन सामनथ
में उनसे व्रड़े हैं पनभु के आगे व्रुना कहीके उन पन दोप्प
१२ नहीं देते। पनंतु ये लोग अयेत पसुन के समान हैं जो नसट
होने के लीये व्रुलाये गये उन व्रसतुन की नींदा कनते हैं जीनहें

१३ वे नहीं समुझते श्रीन अपने सड़ाव में नसट होंगे। वे अधनमता
का फल पनापत कनते ऊए दीन में नाच नंग को सुख मानते
हैं कलंक श्रीन खोट श्रीन तुमहाने संग जेवनान कनते ऊए
१४ अपने छल से कीनीड़ा कनते हैं। कीनाला से भनी ऊई श्रांखें
नखते हैं श्रीन पाप से थम नहीं सकते वे असथीन पनानों
को फुसलावते हैं उनके मन लोभ के कानज से साधे ऊए हैं
१५ सनाप के संतान हैं। वे सीधे मानग को छोड़ के भटक गए हैं
श्रीन बोसन के पुतन बलश्राम के मानग का पीछा कीए हैं जीसने
१६ अधनमता की मजूनी को चाहा। पनंतु अपने अपनाध का
दंड पाया की गुंगे गदहे ने मनुष्य के सब्द से बोल के उस श्रागम
१७ गयानी की बौड़ाहापन को नोक नखा। वे जल हीन सोते हैं
श्रीन मेघ जीनहें बवंडन उड़ा ले जाता है उनके लीए सनबदा
१८ के अंधकान की कालीख धनी ऊई है। श्रीन वे घमंड की बयनथ
कही कहीके उनहें जो भटके ऊश्रों में से बच नीकले हैं सानी-
१९ नीक कामाभीलास में श्रीन लुचपने में फुसलावते हैं। मोख का
बाचा उनसे कनके श्राप बीनास के दास हैं कयोंकी जीस कीसी
२० से कोई जीता गया सो उसी के बंद में भी पड़ा। कयोंकी यदी
पनभु श्रीन मोखदाता यसु मसीह की पहीचान के कानन जगत
की मलीनता से बचकन उन में फीन के फसें श्रीन उनके बस में
होयं तो उनकी पीछली दसा पहीली से अधीक बुनी है। कयों-
की धनमता का मानग न जानना उनके लीए उस से अधीक
भला था की जान के उस पवीतन श्रागया से जो उनहें सौंपी गई
२२ थी फीन जावें। पनंतु उन पन सची कहावत के समान बीत
गई है की कुता अपने छांड़ के श्रोन श्रीन सुश्ननी जो धोई गई
थी चहले में लोटने को फीन गई है।

३ तीसना पतर्‌।

१ हे पीनीय मैं तुमहें अब दुसनी पतनी लीखता ऊं जीस में तुम-

१ ह्याने पवीतर मन को समरन कराके उसकावता हुं। जीसतें उन
बातें से जो पवीतर आगमगयानीओं से आगे कही गई थीं
औार हमारी अगया से जो परभु औार मोख्यदाता के परेरीत
२ हैं येतन हो जाओ। यह पहीले जान के की पीछले दीनों में
नींदक आवेंगे जो अपने कामाभीलाष की रीत पर यलेंगे।
४ औार कहेंगे की उसके आवने का वाचा कहां है कयोंकी जब से
पीतरगन सो गये सरीसट के आरंभ से अब लो सब कुछ वैसा
५ ही है। परंतु इसे जान बुझ के अगयान हैं की ईसर की बानी
से सरग आद में हुऐ औार भुम जल से औार जल में ठहरी
६ है। जीस से जगत जो तब था जल में डुब के नसट हुआ।
७ परंतु सरग औार पीरथीवी जो अब हैं उसी बचन से आगी
के लीये नयाय के दीन औार अधरमी मनुष्यन के नास लों धरी
८ हैं। परंतु हे पीरीय यह बात तुम पर छीपी न रहे की परभु
करे ऐक दीन सहसर बरस के तुल है औार सहसर बरस ऐक
९ दीन के। परभु अपने बाचा के बीख्य में बीलंब नहीं करता
जैसा की कई ऐक बीलंबता समुझते हैं परंतु हम पर संतोख्य
करता है औार नहीं याहता की कोई नसट होवें परंतु की सब
१० पसयाताप करें। सो परभु का दीन ऐसा आवेगा जैसा योर
रात को आवता है उसी में सरग बड़े सबद से जाते रहेंगे औार
समसत तत अती तपन से गलजायेंगे औार पीरथीवी उन की-
११ रीया समेत जो उस में हैं जल जायगी। सो जैसा की ये सब
बसतें गलजायंगी तो तुम को पवीतर यलन औार भकती में
१२ कैसा होना उयीत है। ईसर के दीन की बाट जोहते औार
पुरतीला होते जीस में समसत सरग परजलीत होके गल
१३ जायंगे औार तत अती तपन से पीघल जायंगे। परंतु उसके बाया
के समान हम नऐ सरग औार नई पीरथीवी की जीन में धरम
१४ बसता है बाट जोहते हैं। इस कारन हे पीरीय ऐसी बसतुन
की आसा रख्यते हुऐ जतन करो की तुम नीसकलंक औार नीर-

१५ दोष उस में कुसल से पाये जाओ। और हमारे परभु के संतोष
को अपना उधार जानो जैसा की हमारे पीरीय भाइ पुलुस ने
भी उस बुध के समान जो उसे दीइ गइ तुमहारे लीये लीषा
१६ है। जैसा की समसत पतरीयों में भी उन बातों के बीषय में
कहता है और उन में कइ बात हैं जीन का समुझना कठीन है
जीनहें सुरष और असथीर लोग अपनी नसटता के लीये फेर-
१७ ते हैं जैसा और और गरंथों को भी करते है। इस कारन
हे पीरीय आगे जानके चौकस रहो न होवे की तुम भी दुरा-
चारीयों की चुक में पड़के अपनी दीढ़ता से भ्रसट हो जाओ।
१८ परंतु अनुगरह में और हमारे परभु और मोषदाता यसु
मसीह के गयान में बढ़ते जाओ उसी को पेसरय अब और
नीत होवे आमीन।

य़ुहना की पहीली पतनी सत्र के लीय़े।

---

१ पहीला पनत्र।

१ जीवन के व्रयन के व्रीष्पय़ में जो आनंम्न से था जीसे हम ने
सुना है श्रौन अपनी आप्पों से देप्पा है श्रौन ताक नप्पा है श्रौन
२ हमाने हाथों ने छुत्रा है। अनथात जीवन पनगट ऊआ श्रौन
हम ने देप्पा श्रौन साप्पी देते हैं श्रौन उस अनंत जीवन को जो
पीता के संग था श्रौन हम पन पनगट ऊआ तुमहें जनावते हैं।
३ जो की हम ने देप्पा है श्रौन सुना है उसका संदेस तुमहें देते हैं
की तुम भी हमाने संग मेल नप्पो श्रौन नीसयय़ हमाना मेल
४ पीता से श्रौन उसके पुतन य़सु मसीह से है। श्रौन य़े व्रातें
हम तुमहें इस कानन लीप्पते हैं की तुमहाना आनंद संपुनन
५ हो जाय़। श्रौन य़ह वुह संदेस है जो हम ने उस से सुना है
श्रौन तुमहें देते हैं की ईसन जोत है श्रौन उस में अंधकान कुछ
६ भी नहीं। य़दी हम कहें की हम उस से मेल नप्पते हैं श्रौन
अंधकान में यलें तो झूठे हैं श्रौन सयाइ पन नहीं यलते।
७ पन य़दी हम जोत में यलें जैसा की वुह आप जोत में है तो हम
आपुस में मेल नप्पते हैं श्रौन उसके पुतन य़सु मसीह का लोऊ
८ हमको समसत पापों से पवीतन कनता है। य़दी हम कहें की
हम में पाप नहीं है तो हम अपने को छल देते हैं श्रौन सयाइ
९ हम में नहीं। य़दी हम अपने पापों को मान लेवें तो वुह हमाने

पापों को क्षमा करने को और समसत अधरमता से पवीतर
१० करने को सचा और नयाई है। यदी हम कहें की हम ने
पाप नहीं कीया तो हम उसे झुठावते हैं और उसका बचन
हम में नहीं है।

२ दुसरा पत्र।

१ हे मेरे बचो ये बातें मैं तुमहें लीखता हुं की तुम पाप न करो
परंतु यदी कोइ पाप करे तो पीता के पास हमारा एक पख
२ बादी धरमी यसु मसीह है। और सोइ हमारे पापों के लीये
परायसचीत है और केवल हमारे नहीं परंतु समसत संसार के
३ भी। यदी हम उसकी अगया को पालन करें तो हम इस से
४ जानते हैं की हम उस से परीचय रखते हैं। वुह जो कहता
है की मैं उसे जानता हुं और उसकी अगया को पालन नहीं
५ करता सो झुठा है और सचाइ उस में नहीं। परंतु वुह जो
उसका बचन पालन करता है उस में नीःसंदेह इसर का परेम
६ सीध हुआ है हम इस से जानते हैं की हम उस में हैं। वुह जो
कहता है की मैं उसमें रहता हुं चाहीये की आप ऐसा
७ चले जैसा वुह चलता था। हे भाइयो मैं तुमहारे कारन
कोइ नइ अगया नहीं लीखता परंतु पुरानी अगया जो तुम
आगे से रखते थे पुरानी अगया वुह बचन है जो तुम ने आरंभ
८ से सुना था। फेर एक नइ अगया मैं तुमहें लीखता हुं जो
उस में और तुम में सत है कयोंकी अंधकार बीत गया और
९ अब सचा उंजीयाला चमकता है। वुह जो कहता है की मैं
उंजीयाले में हुं और अपने भाइ से बैर करता है अबलों अंध-
१० कार में है। वुह जो अपने भाइ को पीआर करता है उंजी-
याले में रहता है और उस मे ठोकर का कारन नहीं है।
११ परंतु जो की अपने भाइ से बैर रखता है सो अंधकार में है
और अंधकार में चलता है और नहीं जानता की कीधर को

को जाता है क्योंकी अंधकार ने उसकी आंखें अंधी कीया है।
१२ हे बच्चो मैं तुम्हें लीखता हूं इस कारन की उसके नाम से तुम-
१३ हारे पाप छमा कीये गये हैं। हे पीतरो मैं तुम्हें लीखता हूं
इस कारन की जो आरंभ से है तुम ने उसे जाना है हे तरुनो
मैं तुम्हें लीखता हूं इस कारन की तुम ने उस सतरु को जीता
है हे बच्चो मैं तुम्हें लीखता हूं इस कारन की तुम ने पीता को
१४ जाना है। हे पीतरो मैं ने तुम्हें लीख्खा है इस कारन की जो
आरंभ से है तुम ने उसे जाना है तरुनो मैं ने तुम्हें लीख्खा है
इस कारन की तुम बलवान हो और इसर का बचन तुम में
१५ रहता है और उस सतरु को तुम ने जीता है। जगत को और
जगत की बसतुन को पीआर मत करो यदी कोइ जगत को
१६ पीआर करे तो पीता का पीआर उस में नहीं है। क्योंकी
सब कुछ जो जगत में है अरथात सरीर का अभीलास और
आंख्य का अभीलास और जीवन का अभीमान पीता से नहीं।
१७ परंतु जगत से है। और जगत और उसकी कामना बीती जाती
है परंतु जो इसर की इछा पर चलता है वही सरबदा रहता
१८ है। हे बच्चो यह पीछला समय है और जैसा तुम ने सुना है
की मसीह बीरुध आवता है सो अभी बहुत से मसीह बीरुध
१९ हैं जीस से हम जानते हैं की यह पीछला समय है। वे हम
में से नीकले पर हम में के न थे क्योंकी यदी वे हम में के होते
तो नीःसंदेह हमारे संग ठहरते परंतु यह इस लीये है जीसतें
२० परगट होवे की वे सब हम में के न थे। और तुम ने उस पवीतर
२१ मय के ओर से अभीसेक पाया और सब कुछ जानते हो। मैं
ने तुम्हें इस कारन नहीं लीख्खा है की तुम सत को नहीं जानते
परंतु इस लीये की तुम उसे जानते हो क्योंकी हर एक झूठ
२२ सत में से नहीं है। कौन झूठा है परंतु वुह जो यसु के मसीह
होने को मुकरता है जो पीता और पुतर को मुकरता है सो
२३ मसीह बीरुध है। जो कोइ पुतर को मुकरता है सो पीता को

नहीं नप्पता श्चैान जो कोइ पुतन को मानता है पीता को भी
२४ नप्पता है। इस लीये जे की तुमहों ने श्चानंभ से सुना है
सोइ तुम में नहे ग्रदी वुह जो तुम ने श्चानंभ से सुना है तुम में
२५ नहे तो तुम भी पुतन श्चैान पीता में नहोगें। श्चैान वुह व्राया
२६ श्चनंत जीवन है जो उसने हम से कीया है। मैं ने ये व्रातें तुम
२७ को उनके व्रीप्पय में जो तुमहें छल देते हैं लीप्पी हैं। श्चैान
श्चभीसेक जो तुम ने उस से पाया है तुम में नहता है श्चैान
श्चाचीन नहीं हो की कोइ तुमहें सीप्पावे पनंतु जैसा ग्रही
श्चभीसेक तुमहें सव्र व्रातों के व्रीप्पय में सीप्पावता है श्चैान सत
है श्चैान श्चसत नहीं है श्चनथात जैसा उसने तुमहें सीप्पाया है
२८ वैसा तुम उस में नहो। हां श्चव्र हे व्रयो तुम उस में नहो की
जव्र वुह पनगट होवे तो हम साहसी होवें श्चैान उसके श्चावने
२९ पन उसके श्चागे लजीत न होवें। सो जैसा की तुम जानते हो
की वुह धनमी है तो जानते हो की हन ग्रेक जो धनम पन
यलता है सो उसी से उतपन ऊश्चा है।

३ तीसना पत्र।

१ देप्पो पीता ने हम पन कीस नीत का पनेम कीया है की हम
इसन के पुतन कहावें इस कानन जगत हम को नहीं जानते
२ कयोंकी उसको नहीं जाना। हे पीनीय श्चव्र हम इसन के पुतन
हैं श्चैान श्चव्र नहीं दीप्पाइ देता की हम कया होंगे पनंतु हम
जानते हैं की जव्र वुह पनगट होगा हम उसके समान होंगे
३ कयोंकी जैसा वुह है वैसा उसे देप्पेंगे। श्चैान हन ग्रेक जो ग्रह
श्चासा उस पन नप्पता है श्चपने को उसके समान पवीतन कनता
४ है। हन ग्रेक जो पाप कनता है व्रेवसथा को भी भंग कनता है
५ कयोंकी पाप व्रेवसथा की भंगता है। श्चैान तुम ग्रह जानते हो
की वुह हमाने पाप दुन कनने के लीये पनगट ऊश्चा श्चैान उस में
६ कोइ पाप नहीं है। हन ग्रेक जो उस में नहता है पाप नहीं

करता और हर एक ने जो पाप करता है उसे न देखा है न
७ जाना है। हे बालको तुम्हें कोई छल न देवे जो कोई धरम करता
८ है सो धरमी है जैसा वुह आप धरमी है। जो पाप करता है सो
सैतान से है क्योंकी सैतान आरंभ से पाप करता है और
ईसर का पुतर परगट हुआ की सैतान के कारज को बीनास करे।
९ जो की ईसर से उतपन हुआ है सो पाप नहीं करता क्योंकी
उसका बीज उस में धरा है और वुह पाप नहीं कर सकता क्योंकी
१० वुह ईसर से उतपन हुआ है। इससे ईसर के पुतर और सैतान
के पुतर परगट हैं जो कोई धरम नहीं करता और जो अपने
११ भाई को पीआर नहीं करता सो ईसर से नहीं है। क्योंकी
यह वुह संदेस है जो तुम ने आरंभ से सुना है की हम
१२ एक दुसरे को पीआर करें। और कैन के समान नहीं जो उस
दुसट का था और अपने भाई को घात कीया और उसने उसे
कीस लीये घात कीया इस कारन की उसके अपने ही करम
१३ बुरे थे और उसके भाई के धरम के थे। हे मेरे भाईयो यदी
१४ जगत तुम से बीरोध करे आसचरज न करो। हम तो जानते
हैं की हम मीरतु से पार होके जीवन में आये क्योंकी हम
भाईयों को पीआर करते हैं जो भाई को नहीं पीआर करता
१५ सो मीरतु में रहता है। जो कोई अपने भाई से बैर रखता
है हतयारा है और तुम जानते हो की कीसी हतयारे में
१६ अनंत जीवन नहीं बसता। इस से हम उसके परेम को पही-
चानते हैं की उसने हमारे कारन अपना परान धर दीया
१७ और हमें चाहीये की भाईयों के कारन परान धर देवें। इस
कारन जीस कीसी के पास जगत की बसतु होय और अपने
भाई को दरीदरी देख के अपने हीरदय को उस से अलग
१८ रखे तो ईसर का परेम उस में क्योंकर बसता है। मेरे बालको
हम बचन से और जीभ से परेम न करें परंतु करनी और
१९ सचाई से। और हम इस से जानते हैं की हम सत के हैं और

२० अपने अंतःकरनों के उसके आगे सथीर कर रक्खेंगे। कयोंकी
यदी हमारा अंतःकरन हम पर दोप्प देवे तो इसर हमारे
२१ अंतःकरन से वड़ा है अैार सव कुछ जानता है। हे पीरीय
जो हमारा अंतःकरन हमें दोप्प न देवे तो हम इसर के आगे
२२ भरोसा रप्पते हैं। अैार जो कुछ हम मांगते हैं उस से पावते
हैं कयोंकी हम उसकी अगयाअेां को पालन करते हैं अैार जो
२३ कुछ उसको भावता है सो करते है। अैार उसकी अगया यह
है की हम उसके पुतर यसु मसीह के नाम पर वीसवास लावें
अैार जैसा उसने अगया की है एेक दुसरे को पीआर करें।
२४ अैार जो उसकी अगया को पालन करता है सो उस में रहता
है अैार वुह उस जन में रहता है अै। इस से हम जानते हैं की
वुह हम में रहता है अरथात उस आतमा से जीस को उसने हमें
दीया है।

४ चैाथा पत्र।

१ हे पीरीय हर एेक आतमा को परतीत न करो परंतु आतमा
को परप्पो की वे इसर के अैार से हैं की नहीं कयोंकी वहुत से
२ मीथया आगमगयानी जगत में नीकल गये हैं। तुम इस से
इसर के आतमा को जानते हो जो आतमा मानलेता है की
३ यसु मसीह देह में परगट हुआ सो इसर से है। अैार जो
आतमा नहीं मान लेता की यसु मसीह देह में आया इसर के
अैार से नहीं है अैार यह वही मसीह वीरुध है जीसका समा-
चार तुम ने सुना की आवता है अैार अव जगत में आ चुका
४ है। हे पीरीय वचो तुम तो इसर के हो अैार उन पर परवल
हुए हो कयोंकी वुह जो तुम में है उस से वड़ा है जो जगत में
५ है। वे जगत के हैं इस कारन जगत की वोलते हैं अैार जगत
६ उनकी सुनता है। हम इसर के हैं वुह जो इसर को पही-
चानता है हमारी सुनता है जो इसर से नहीं है सो हमारी

नहीं सुनता इस से हम सयाइ के आतमा और भनम के आतमा
७ को जान लेते हैं। हे पनीय हम प्रेक दुसने को पीआन कनें
कयोंकी पीआन इसन से है और हन प्रेक जो पीआन कनता
८ है इसन से उतपन ऊआ है और इसन को जानता है। जो की
पीआन नहीं कनता उसने इसन को नहीं जाना है कयोंकी
९ इसन पीआन है। इसन का पीआन जो हम से हैं इस से पनगट
ऊआ की इसन ने अपने प्रेक लौते पुतन को जगत में भेजा की
१० हम उसके कानन से जीवें। इस में पीआन है यह नहीं की
हम ने इसन को पीआन कीया पनंतु की उसने हमें पीआन
कीया और अपने पुतन को भेजा की हमाने पापों का पनायस-
११ यीत होवे। हे पीनीय यदी इसन ने हम से प्रेसा पीआन कीया
१२ तो हमें कैसा प्रेक दुसने को पीआन कीया याहीये। कीसी ने
इसन को कभी नहीं देष्पा यदी हम प्रेक दुसने को पीआन
कनें तो इसन हम में नहता है और उसका पीआन हम में
१३ सीध ऊआ है। हम इसी से जानते हैं की हम उस में नहते
हैं और वुह हम में की उसने अपने आतमा में से हमें
१४ दीया। और हम ने देष्पा है और साष्पी देते हैं की पीता
१५ ने पुतन को भेजा की संसान का मुकतदाता होवे। जो कोइ
मान लेवे की यसु इसन का पुतन है सो इसन में और इसन
१६ उस में नहता है। और इसन के पीआन को जो हम से है हम
ने जाना और उस पन वीसवास कीया इसन पीआन है और जो
कोइ पीआन में नहता है सो इसन में और इसन उस में नहता
१७ है। इस से हम में पनेम संपुनन होता है की हम नयाय के
दीन साहस नष्पें कयोंकी जैसा वुह है वैसा हम भी जगत में हैं।
१८ पनेम में भय नहीं है पनंतु संपुनन पनेम भय को दुन कनता है
कयोंकी भय में दुष्प है जो डनता है सो पनेम में संपुनन नहीं
१९ ऊआ। हम उसे पीआन कनते हैं कयोंकी पहीले उसने हम
२० को पीआन कीया। यदी कोइ कहे की मैं इसन को पीआन

करता हूं और अपने भाइ से बैर रखता है तो झुठा है क्योंकी जो
कोइ अपने भाइ को जीसे उसने देखा है पीआर नहीं करता
सो इसर को जीसे उसने नहीं देखा क्योंकर पीआर कर सकता
२१ है। और हम ने उस से यह अगया पाइ है की जो कोइ इसर
को पीआर करता है सो अपने भाइ को भी पीआर करे।

५ पांचवां पर्व।

१ जो कोइ बीसवास लावता है की यसु वही मसीह है सो इसर
से उतपन हुआ है और जो कोइ उतपादक को पीआर करता
है सो उसको भी पीआर करता है जो उस से उतपन हुआ है।
२ इस से हम जानते हैं की इसर के बालकों को पीआर
करते हैं जब की हम इसर को पीआर करके उसको अ-
३ गया को पालन करते हैं। क्योंकी इसर का पीआर यह
है की हम उसकी अगया को पालन करें और उसकी अगया
४ तो कठीन नहीं है। क्योंकी जो इसर से उतपन हुआ है सो
जगत पर परबल होता है और यही वुह जय है जो जगत पर
५ परबल होता है अरथात हमारा बीसवास। वुह कौन है जो
जगत पर परबल होता है केवल वही जो बीसवास रखता है
६ की यसु इसर का पुतर है। यह वही है जो पानी से और लोहु
से आया अरथात यसु वह मसीह केवल पानी से नहीं परंतु
पानी और लोहु से और आतमा है जो साखी देता है और
७ आतमा सत है। क्योंकी तीन हैं जो सरग में साखी देते हैं
८ पीता और बचन और धरमातमा और ये तीनों एक हैं। और
तीन हैं जो भुम पर साखी देते हैं आतमा और पानी और
९ लोहु और ये तीनों एक में मीलते हैं। यदी हम मनुष्यन की
साखी मानें तो इसर की साखी अधीक बड़ी है क्योंकी इसर
१० की साखी जो उसने अपने पुतर के कारन दीइ है यह है। जो
की इसर के पुतर पर बीसवास लावता है सो साखी अपने ही में

नप्पता है जो की इसन पन व्रीसवास नहीं लावता से उसको
झुठा कनता है कयोंकी उसने उस साप्पी पन जो इसन ने अपने
११ पुतन के बीप्पय में दी हे व्रीसवास नहीं कीया। औन साप्पी
यह है की इसन ने हमें अनंत जीवन दीया औन यह जीवन
१२ उसके पुतन में है। जो की पुतन को नप्पता है से जीवन को
नप्पता है जो की इसन के पुतन को नहीं नप्पता से जीवन
१३ नहीं नप्पता है। मैं तुमहों को जो इसन के पुतन के नाम पन
व्रीसवास लाये हे यह व्रातें लीप्पता हुं जीसतें तुम जानो की
अनंत जीवन नप्पते हे औन जीसतें तुम इसन के पुतन के नाम
१४ पन व्रीसवास लाओ। औन यह वुह भनोसा है जो हम उस
पन नप्पते हैं की यदी हम उसकी इछा के समान कुछ मांगे तो
१५ वुह हमानी सुनता है। औन यदी हम जानें की जो कुछ हम
उस से मांगते हैं वुह हमानी सुनता है तो हम जानते हैं की
१६ जो कुछ हम ने उस से मांगा है से हम पावेंगे। यदी कोइ
अपने भाइ को देप्पे की मीनतु के अजोग पाप कनता है तो वुह
मांगे औन उसे जीवन दीया जायगा यह उसके लीये है जो
मीनतु के अयोग पाप कनता है एक पाप मीनतु के योग है मैं
१७ नहीं कहता को वुह उसके व्रीप्पय में पनानथना कने। समसत
१८ अधनम पाप है पनंतु कोइ पाप मीनतु के अजोग है। हम
जानते हैं की जो कोइ इसन से उतपन हुआ है पाप नहीं
कनना पनंतु वुह जो इसन से उतपन हुआ है अपनी यौकसी
१९ कनता है औन वुह दुसट उसे नहीं छुता। हम जानते हैं की
हम इसन से हैं औन समसत संसान दुसटता में पड़ा है।
२० पनंतु हम जानते हैं की इसन का पुतन आया है औन हमें
समुझ दीया है की हम उसको जो सत है जानें औन हम उसमें
हैं जो सत है अनयात उसके पुतन यसु मसीह में वुह सत इसन
२१ औन अनंत जीवन है। हे नंहे व्रयो अपने को मुनतीन से व्रया
नप्पो आमीन।

युहना की दुसनी पतनी।

१ पनायीन के ओन से युनी ऊइ इुसतीनी को ओन उसके
पुतनों को जीनहें मैं सत में पीआन कनता ऊं ओन केवल मैं
२ नहीं पनंतु वे सव्र भी जो सत को जानते हैं। उस सत के कानन
३ जो हम में व्रसता है ओन हम में नीत नहेगा। अनुगनह ओन
दया ओन सांत पीता इसन क ओन से ओन पनभु यसु मसीह
पीता के पुतन के ओन से तुमहाने संग सत में ओन पनेम में नहें।
४ जव्र मैं ने तेने पुतनों में से कइ एक को उस अगया के समान
जो हम ने पीता से लीइ सयाइ पन यलते पाया मैं ने व्रऊत
५ आनंद कीया। ओन अव्र हे इुसतीनी मैं तेनी व्रीनती कनता
ऊं यह नहीं की तुझ को कोइ नइ अगया लीष्पता ऊं पनंतु वही
जो हम ने आनंभ से पाइ थी की हम एक दुसने को पीआन
६ कनें। ओन पीआन यही है की हम उसकी अगया की नीत पन
यलें यह वही अगया है जैसा तुम ने आनंभ से सुना है की तुम
७ उस पन यलो। कयोंकी व्रऊतेने छली जगत में नीकले हैं जो
नहीं मान लेते हैं की यसु मसीह देह में आया यही छली ओन
८ मसीह व्रीनुघ है। अपनेही को योकस नष्पो की जो कानज हम
९ ने कीया है उसे न ष्पोवें पनंतु पुना फल पनापत कनें। जो
कोइ अपनाघ कनता है ओन मसीह की सीष्पा में नहीं नहता

सो इूसन को नहीं नप्पता जो मसीह की सीप्पा में नहता है सो
१० पीता ग्रैान पुतन को भी नप्पता हैं। य़दी कोइ तुमाने पास
ग्रावे ग्रैान य़ह सीप्पा न लावे तों उसे घन में न बेड ग्रैान न
११ उसके कानज पन ग्रासीस याहो। कय़ोंकी जो कोइ उसके
कानज पन ग्रासीस यहना है सो उसके वुने कानजन में भागी
१२ होता है। तुमहें व़ऊत सी व़ातें सीप्पने को नप्पके मैं नहीं
याहता की पतन ग्रैान मसी से लीप्पुं पनंतु ग्रासा नप्पता ऊं
की तुमहाने पास ग्राग्रों ग्रैान सनमुप्प कहों जीसतें हमाना
ग्रानंद संपुनन हो जाय़। तेनी युनी ऊइ व़हीन के लड़के तुहे
नमसकान कहते हें ग्रामीन।

यूहना की तीसरी पतरी।

---

१ पराचीन के ओर से पीरीय गायस को जीसको मैं सत में पीआर
२ करता हूं। हे पीरीय मैं समसत रीत से चाहता हूं की जैसा तेरा
परान भागमान है तु भागमान होवे और कुसल में रहे।
३ कयोंकी जब भाइयों ने आके तेरी सचाई पर जैसा तु सचाई से
४ चलता है साषी दीई मैं ने नीपट आनंद कीया। इस से मेरा
काई बड़ा आनंद नहीं की मैं सुनुं की मेरे पुतर सचाई पर
५ चलते हैं। हे पीरीय तु जो कुछ भाइयों से और परदेसीयों से
६ करता है सो बीसवास के साथ करता है। उनहों ने मंडली के
आगे तेरे परेम के बीषय में साषी दी है उनहें तु जो इसर के
७ जोग जातरा में बढ़ाता है अछा करता है। कयोंकी वे अनदेसी-
यों से कुछ नहीं लेते हुए उसके नाम के कारन बाहर नीकले।
८ इस कारन उचीत है की हम ऐसों को गरहन करें की हम
९ सचाई में संगी सेवक होवें। मैं ने मंडली को लीषा है परंतु
दीयातरफीस ने जो उन में परधान हुआ चाहता है हमें गर-
१० हन न कीया। सो जब मैं आउंगा तो उसके कीए हुए कारजन
को समरन करुंगा की हीसका की बातों से हमारे बीरोध में
बुरा बकता चला जाता है और इस से संतोष नहीं करके
भाइयों को आप गरहन नहीं करता अरु औरों को जो उनहें
गरहन कीया चाहते हैं रोकता है और मंडली से बाहर

११ नीकालता है। हे पीनीय वुनाइ का पीछा न करो परंतु भलाइ
का जो की भला करता है सो इसर से है परंतु जो की वुना
१२ करता है उसने इसर को नहीं देष्पा। दीमीतनयुस समसत
मनुष्पन से और सयाइ से भी अछी साष्पी नष्पता है और हम
भी साष्पी देते हैं और तुम तो जानते हो की हमानी यह
१३ साष्पी सत है। लीष्पने को वुझत कुछ मेने पास है परंतु मैं
१४ मसी और लेष्पनी से तुहें न लीष्पुंगा। परंतु तुहें सीघन देष्पने
१५ को आसा नष्पता ज्ञं तव हम सनमुष्प कह लेंगे। तुह पन
सांत होवे मीतनगन तुहें नमसकान कहते हैं तु भी मीतनों के
नाम लेके नमसकान कह।

यहूदा की पत्री सब के लीये।

१ यसु मसीह का दास और याकुब का भाई यहूदा के ओर
से उन को जो पीता ईसर में पवीतर कीये गये और यसु मसीह
२ में बुलाये गये और रछा कीये गये हैं। दया और सांत और
३ परेम तुमहारे कारन बढ़ता जाय। हे पीरीय तुम को सामान
उघार के बीखय में लीखने को समसत जतन करते हुये
मैं ने उचीत जाना की उपदेस कर के तुम को लीखुं की
उस बीसवास के लीये जो आगे साधुन को सौंपा गया अतयंत
४ परीसरम करो। कयोंकी कीतने घुस गये हैं जो इस दंड की
अगया के लीये बहुत दीन से ठहराये गये हैं अघरमी लोग
जो हमारे ईसर के अनुगरह को लुचपने से पलटते हैं और
ईसर से जो केवल सवामी है और हमारे परभु यसु मसीह से
५ मुकरते हैं। परंतु मैं तुमहें चीतावता हुं यदपी तुम उसे
आगे जानते थे की परभु ने लोगों को मीसर की भुम से बचाके
६ फेर उनहें जो बीसवास न लाये नसट कीया। और उन दुतों
को भी जो अपनी पहीली दसा में न ठहरे परंतु अपने ठीक
नीवास को छोड़ दीया उसने सनबदा के सीकरों में अंधकार के
७ तले महा नयाय के दीन लों रख्खा। उसी रीत से सदुम और
गमररः और उन के आसपास के नगर जीनहों ने उन के समान
छीनाला कीया और पराये सरीर का पीछा कीया चीतावने

के लीये घरे हैं औार सरवदा के अगनी की पीड़ाका पलटा
८ पावते हैं। सो ये सपनदेखो भी सरीर को असुध करते हैं
औार परभुता को हलुक समुझते हैं औार महत पदों की नींदा
९ करते हैं। परंतु मीकाइल परधान दुत ने जब सैतान के संग
मुसा की लोथ के वीष्यय में वीवाद कीया तो साहस न कीया की
उस पर छोड़करने का अपवाद देवे परंतु कहा की परभु तुझको
१० दपटे। परंतु जीन वातों को ये नहीं जानते नींदा करते हैं
औार जीनहें सभाव से पसु के समान जानते हैं इन में वे अपने
११ को सतयानास करते हैं। धीक उन पर कयोंकी वे कीन के
मारग पर चलेगये हैं औार वलआम के से चुक में लोभके लीये
अपने को बहा दीया औार कुरह के वीपरीत में नसट हुए।
१२ तुमहारे परेम के जेवनार में वे कलंक हैं जब वे तुमहारे उतसव
में नीडर से अपने को खीलावते हैं वे नीरजल मेघ हैं जो पवन
उड़ाये जाते हैं वीरछ हैं जीनकी कोंपलें मुरझागइ हैं नीस-
१३ फल हैं दोवार मीरतक हैं जड़ से उखाड़े गये। समुदर की
परचंड लहरें हैं अपनी लजा का फेन फेन लावते हैं भरमते
हुए तारे हैं जीनके लीये सरवदा के अंधकार की कालीम्य
१४ धरी है। अख्नुख ने जो आदम से सातवां था उनके वीष्यय
में आगम कहा था की देख्य परभु अपने कड़ोरों साधुन के संग
१५ आता है। की सभों पर दंड वीचार करे औार उनहें जो उन
में से अधरमी हैं उनहों के समसत अधरम कारजन पर जो
उनहों ने अधरमता से कीये हैं औार सारी कठोर वातों पर
जोर अधरम पापीयों ने उसके वीरुध में कही हैं दोख्य देय।
१६ ये कुड़कुड़ानेवाले हैं नींदक हैं औार अपने कामाभीलास पर
चलते हैं औार मुंह से बड़ी वोली वोलते हैं मनुष्य की परगट
१७ को अपने लाभ के लीये बढ़ावते हैं। परंतु हे परीय तुम उन
वातों को जो हमारे परभु यसु मसीह के परेरीतों के औार से
१८ आगे कही गइं समरन करो। कयोंकी उनहों ने तुमहें कहा

दीया है की अंतय समय में यीढानेवाले आवेंगे जो अपने अ-
१९ धरम कामाभीलास पर यलेंगे। ये वे हैं जो अपने को अलग
२० करते हैं रसीया हैं और आतमा उनमें नहीं हैं। परंतु हे
पीरीय आप को अपने पवीतर वीसवास पर सुधारते हुऐ और
२१ धरमातमा से पराथना करते हुऐ। अपने को इसर के परेम
में रखो और अनंत जीवन के लीये हमारे परभु यसु मसीह की
२२ दया की वाट जोहो। और भेद करके कीतनो पर दया
२३ करो। और उनके साथ कीतनो को आग में से खींय बचाओ
और बसतर से भी जीस में देह का छींटा लगा बीरोध करो।
२४ अब उसके लीये जो तुमहें भरसट होने से बचासकता है और
अपने परताप के सनमुख अतयंत आनंद से नीरदोख खडा
२५ करसकता है। हमारे मुकतीदाता नीरकेवल बुधमान इसर
को महीमा और परताप और परभुता और पराकरम अब
और सरबदा होवे आमीन।

युहना देव का पनकासीत ।

---

१ पहीला पनव्र ।

१ युसु मसीह का पनकासीत जो इसन ने उसे दीया की उन
व्रातों को जो सीघन होनवाली हैं अपने सेवकों को दीप्पावे
औन उनहें अपने दुत के औान से भेज के अपने दास युहना को
२ जनाया। जीसने इसन के व्रयन की औान युसु मसीह की
३ साप्पी पन जो कुछ उसने देप्पा साप्पी दी। घन वुह जो
पढ़ता है औान वे जो इस भवीस व्रानी को सुनते हैं औान उन
व्रातों को जो इस में लीप्पी हैं पालन कनते हैं कयोंकी समय
४ नीकट है। युहना उन सात मंडलीयों को जो आसीया में हैं
उसके औान से जो है औान था औान आनेवाला है औान सात
आतमा से जो उसके सींहासन के आगे हैं अनुगनह औान सांत
५ तुमहाने लीये होवे। औान युसु मसीह से जो व्रीसवासी साप्पी है
औान मीनतकन में से पहीलौंठा औान पीनथीवी के नाजाओं का
महानाज है वुह जीसने हम सभों को पीआन कीया औान हमें
६ हमाने पापों से अपने लोहू में धो डाला। औान हमको नाजा
औान अपने पीता इसन का याजक व्रनाया महीमा औान पन-
७ भाव सनव्रदा उसीको आमीन। देप्पो वुह मेघो पन आता है
औान हनप्रेक की दीनीसट उस पन पड़ेगी हां जीनहों ने उसे
छेदा उसको देप्पेंगे औान भुम पन के समसत व्रनन उसके लीये

८ छाती पीटेंगे प्रैसा होवे आमीन। पनन्तु सुं कहता है की मैं
अलफरा श्रौन उमेगा ऊं आद श्रौन श्रंत जो है श्रौन था श्रौन
९ जो आनेवाला है सनव् सामनथी। मैं यूहना जो तुम्हाना भाइ
भी श्रौन यूसु मसीह के दुप्प में श्रौन नाज में श्रौन संतोप्प में
तुमहाना साह्री ऊं उस टापु में जो पतमस कहावता थे इसन के
१० व्रयन के श्रौन यूसु मसीह की साप्पी के कानन था। मैं पनन्तु
के दीन आतमा में ऊश्रा श्रौन अपने पीछे तुनही का सा महा-
११ सव्द सुना। जो कहता था की मैं अलफरा श्रौन उमेगा ऊं
आद श्रौन श्रंत श्रौन जो कुछ तु देप्पता है गनंथ में लीप्प
श्रौन आसीया की सात मंडलीयों को भेज अनथात अफसस
को श्रौन समनन: को श्रौन पनगमस को श्रौन थयातीन: को
श्रौन सानदीस को श्रौन फलादलफीय: को श्रौन लाउदी-
१२ कीय: को। मैं उस सव्द को जो मुह से कहता था देप्पने को
१३ फीना श्रौन फीनकन सोने की सात दीश्रट देप्पीं। उन सात
दीश्रटों के मध में प्रेक जन मनुप्प के पुतन सा देप्पा की प्रेक
लंवा पहीनावा पहीने ऊप्रे श्रौन सोने का पटुका छाती पन व्रंधा
१४ ऊश्रा। उसका सीन अनथात व्राल उंनके समान उजला श्रौन
१५ पाला सा सेत था श्रौन उसकी श्राप्पें जैसे श्राग की लवन। श्रौन
उसके पांव योप्पे पीतल के से जो भटी में नीनाला कीया गया हो
१६ श्रौन उसका सव्द व्रऊत से पानीयों का सा सव्द था। श्रौन उसकें
दहीने हाथ में सात ताने थे श्रौन उसके मुंह से योप्पा दोधाना
प्पड्ग नीकलता था श्रौन उसका सनुप सुनज के समान जव् वुह
१७ व्रड़े पनाकनम से यमकता है। श्रौन जव् मैं ने उसे देप्पा तव्
उसके यनन पन मीनतक सा गीनपड़ा तव् उसने अपना दहीना
हाथ मुह पन नप्पके कहा की मत डन मैं पहीला श्रौन पीछला
१८ ऊं। वही ऊं जो जीता ऊं श्रौर मुश्रा था श्रौन देप्पो मैं सनव्दा
लो जीवता ऊं आमीन श्रौन मुह पास पनलोक श्रौन मीनतु की
१९ कुंजीयां हैं। जो व्रसतें तु देप्पता है श्रौन वे जो हैं श्रौन जो

२० पीछे होनेवाली हैं उनहें लीप्प नप्प। उन सात तानों का जीनहें
तु मेने दहीने हाथ में देप्पता है ग्रोन उन सोने के सात दीग्रटों
का भेद यह है की सात ताने सात मंडलीयों के दुत हैं ग्रोन
सात दीग्रट जो तु देप्पता है सात मंडली हैं।

२ दुसना पनव।

१ वुह कहता है जीसके दहीने हाथ मे सात ताने हैं ग्रोन सोने
के सात दीग्रटों के मघ में फीनता है की ग्रफसस की मंडली
२ के दुत को ये वातें लीप्प। की तेने काम ग्रोन तेना पनीसनम
ग्रोन तेना संतोप्प ग्रोन की तु वुनों को नहीं सही सकता मैं
जानता ऊं ग्रोन तु ने उनको जो ग्रपने को पनेनीत कहते हैं
३ ग्रोन नहीं हैं ताड़ा ग्रोन झुठा पाया। ग्रोन तु ने सहलीया है
ग्रोन संतोप्प कीया है ग्रोन मेने नाम के कानन पनीसनम कीया
४ है ग्रोन उदास न ऊग्रा। तीसपन भी तुझ से यह ग्रपवाद
५ नप्पता ऊं की तु ने ग्रपना पहीला पनेम प्पो दीया। सो जीस से
तु गीना येत कन ग्रोन पसयाताप कन ग्रोन ग्रपने ग्रगीले
कानज कन नहीं तो मैं तुझ पास सीघन ग्राउंगा ग्रोन यदी तु
पसयाताप न कने तो तेनी दीग्रट को सथान से ग्रलग कनुंगा।
६ तीस पन भी तुझ में यह है की तु नीकलाइयों के कानजन से
७ वैन नप्पता है जीन से मैं भी वैन नप्पता ऊं जो कान नप्पता
है सो सुने की ग्रातमा मंडलीयों को कया कहता है की मैं उस
को जो जय पावता है जीवन के वीनीछ से जो ईसन के वैकुंठ के
८ वीयोंवीय है फल प्पाने को देउंगा। जो पहीला ग्रोन पीछला
है ग्रोन मुग्रा था ग्रोन जीवता है सो कहता है की समननां की
९ मंडली के दुत को ये वातें लीप्प। की मैं तेने कानज ग्रोन दुप्प
ग्रोन दनीदनता को जानता ऊं पनंतु तु तो घनवान है ग्रोन
उनका जो ग्रपने को यऊदी कहते हैं ग्रोन नहीं हैं पनंतु
१० सैतान की मंडली हैं पाप्पंड वकना जानता ऊं। जो जो वात तुझे

भोग कनने पड़ेगा उन में कीसी से मत डन देष्प सैतान तुम में
से कइ प्रेक को वंघन में डालेगा की तम पनष्पे जाओ औान दस
दीन लों पीड़ा पाओगे तु मीनतु लों वीसवासी नह औान मैं जीवन
११ का मुकुट तुहे देउंगा। जो कान नष्पता है सो सुने की आतमा
मंडलीयों को कया कहता है की जो जयमान है दुसनी मीनतु
१२ से संताया न जायगा। वुह जो योष्पा दोघाना ष्पड़ग नष्पता
है कहता है की पनगमस की मंडली के दुत को ये वातें लीष्प।
१३ की मैं तेने कानज औान तेने नीवास के जहां सैतान का सींहा-
सन है जानता ऊं औान तु मेने नाम को दीढ़ता से घनता है
औान उन दीनो में भी जव मेना वीसवासी साष्पी अंतपास तुमहें
में माना गया जहां सैतान नहता है मेने वीसवास से न मुकना।
१४ तीस पन भी मैं तुह से कुछ अपवाद नष्पता ऊं की तेने यहां
वे हैं जो वलआम कीसी सीष्पा को धानन कनते हैं जीसने वल-
आम को सीष्पाया की इसनाइल के संतान के आगे ठोकन
ष्पीलानेवाला पथन डाल नष्पे की उन वसतुन को ष्पावें जो मुन-
१५ तीन को वलीदान की गइ औान छीनाला कनें। औान इसी
नीत से उनहें भी नष्पते हो जो नीकलायओं की सीष्पा को
१६ गनहन कनते हैं जीसका मैं वीनोघी ऊं। पसयाताप कन नहीं
तो मैं तुह पास सीघन आउंगा औान मैं उनके संग अपने मुंह
१७ का ष्पड़ग लेके लडुंगा। जो कान नष्पता है सो सुने की आतमा
मंडलीयों को कया कहता है की जयमान को मैं गुपत मना
ष्पाने देउंगा औान मैं उसे प्रेक सेत पथन देउंगा औान उसी
पथन पन प्रेक नया नाम लीष्पा ऊआ की उसको छोड़ जीसने
१८ उसे पाया कोइ औान उसे नहीं जानता। इसन का पुतन जीस
की आष्पें अगीन की लवन के समान हैं औान पांव जैसे चोष्पे
पीतल के हैं कहता है की सवातीन: की मंडली के दुत को ये
१९ वातें लीष्प। की मैं तेने कानजन को औान पनेम को औान
सेवा को औान वीसवास को औान संतोष्प को जानता ऊं औान

२० ओान तेने पीछले कानज अगीले से अती अधीक हैं। तथापी
मैं तुह से कुछ कुछ अपवाद नष्पता ऊं की तु उस इसतीनी
यज़ावील को जो अपने को आगमगयानीनी कहती है सीप्पाव-
ने ओान मेने सेवकों को फुसलाने देता है की वे छीनाला कने
२१ ओान मुनतीन को व्रलीदान की ऊइ व्रसतुन को प्पावें। ओान
मैं ने उसको अवकास दीया की अपने छीनाला से पसयाताप
२२ कने ओान उसने पसयाताप न कीया। देप्प मैं उसको व्रीछौना
पन डालुंगा ओान उनहें जो उसके संग छीनाला कनते हैं यदी
वे अपने कानजन से पसयाताप न कनं व्रड़ी व्रीपत में डालुंगा।
२३ ओान उसके पुतनों को पनान से मानुंगा ओान समसत मंडली
जानेंगी की मैं वही ऊं जो हीनदयों ओान लंको का पानप्पी ऊं
ओान मैं तुम में से हन एक को तुमहाने कानजन के समान
२४ देउंगा। पनंत तुमहें अनथात सवातीनः के व्रचे ऊए लोगों को
जीन में यह सीप्पा नहीं ओान जो सैतान की गहीनाइ को जीस
को यनया कनते हैं नहीं जानते यह कहता ऊं की मैं तुम पन
२५ ओान व्रोझ न धनुंगा। तथापी जो नप्पते हो उसको मेने आवने
२६ लों दीढ़ता से धने नहो। ओान उसके लीये जो जयमान होता
है ओान मेने कानजन को अंत लों नप्पता है मैं जातीं पन पना-
२७ कनम देउंगा। ओान वुह लोहे के दंड से उन पन पनभुता
कनेगा ओान वे कुमहान के पातनों के समान यकनायुन होंगे
२८ जैसा की मैं ने अपने पीता से भी पाया है। ओान मैं उसे पनातः
२९ काल का तानां देउंगा। जो कान नप्पता है सो सुने की आतमा
मंडलीयों को वया कहता है।

३ तीसना पनव्र।

१ वुह जीस पास इसन के सात आतमा ओान सात तानें हैं यह
कहता है की सानदीस की मंडली के दुत को ये व्रातें लीप्प की मैं
तेने कानजन को ओान उस व्रात को जानता ऊं की तु जीवता

२ कहावता है पनंतु मीनतक है। यौकस हे। औन जो व्रसतें की
नह गई हैं औन जो मनने पन हैं उनहें नीमन कन कयोंकी
३ मैं ने तेने कानजन को ईसन के आगे संपुनन नहीं पाया। इस
कानन येत कन की तु ने कीस नीत से लीया औन सुना औन
होड़ता से थाम औन पसयाताप कन सो यदी तु यौकस न हो
तो मैं तुह पन योन के तुल आउंगा औन तु न जानेगा की मैं
४ कीस घड़ी तुह पन आउंगा। सानदीस में भी तु थोड़ासा नाम
नप्पता है जीनहों ने अपने पहीनावा को असुच न कीया औन
५ वे मेने संग सेत में फीनेंगे कयोंकी वे जोग हैं। औन जयमान
जो है सो सेत व्रसतन से पहीनाया जायगा औन मैं उसका
नाम जीवन के पुसतक से न मीटाउंगा पनंतु अपने पीता के औन
६ उसके दुतों के आगे उसके नाम को मान लेउंगा। जो कान
नप्पता है सो सुने की आतमा मंडलीयों से कया कहता है।
७ वुह जो पवीतन मय औन सतमय हैं जो दाउद की कुंजी नप्पता
है वुह जो प्पोलता है औन कोई व्रंद नहीं कनता औन व्रंद
कनता है औन कोई नहीं प्पोलता यह कहता है की फीला-
८ दलफीय: की मंडली के दुत को ये व्रातें लीप्प। की मैं तेने
कानजन को जानता हुं देप्प मैं ने तेने आगे येक प्पुला हुआ
दुवान नप्पा है औन कोई उसे व्रंद नहीं कनसकता कयोंकी तु
थोड़ा व्रल नप्पता है औन मेने व्रयन को धानन कीया है औन
९ मेने नाम से मुकन नहीं गया। देप्प मैं सैतान की मंडली के
लोगों को देउंगा की वे अपने को यहुदी कहते हैं औन नहीं
हैं पनंतु हुठ कहते हैं देप्प मैं येसा कनुंगा की वे आवें औन
तेने यनन के आगे डंडवत कनें औन वे जानेंगे की मैं ने तुहे
१० पीआन कीया है। इस कानन की तु ने मेने संतोप्प की व्रात
को धानन कीया है मैं भी उस पनीप्पा की घड़ी से जो समसत
संसान पन आवेगी की पीनथीवी के व्रासीयों को पनप्पे तेनी
११ नछा कनुंगा। देप्प मैं सीघन आवता हुं जो तुह पास है उसकी

१२ नक्षा कन की कोइ तेना मुकुट न लेले। जयमान जो है मैं उसे
अपने इसन के मंदीन का थंभा कनुंगा और वुह फेन वाहन
न जायगा और मैं अपने इसन का नाम और अपने इसन के
नगन का अनथात नये यौनोसलीम का नाम जो मेने इसन से
सनग से नीचे उतना है और अपना नया नाम उस पन लीष्पुंगा।
१३ जो कान नष्पता है सो सुने की आतमा मंडलीयों से कया
१४ कहता है। वुह जो आमीन और वीसवास के जोग और सया
साष्पी है और इसन के सीनीसट का आनंभ है युं कहता है
१५ की लाउदोकीय: की मंडली के दुत को ये वातें लीष्प। की मैं
तेने कानजन के जानता ऊं की तु न तो ठंढा न तपत है मैं
१६ याहता की तु ठंढा अथवा तपत होता। सो इस कानन की तु
सुसुम है और न ठंढा न तपत मैं तुहे अपने मुंह से उगील
१७ देउंगा। कयोंकी तु कहता है मैं घनी ऊं और अपने के घन
मान कीये ऊं और कीसी वसतु के अधीन नहीं ऊं और नहीं
जानता की तु दुनगत और दुष्पीत और कंगाल और अंधा और
१८ नंगा है। मैं तुहे मंतन देता ऊं की सोना जो आग में ताया गया
मुझ से मोल ले की तु घनमान होवे और सेत वसतन ले जीसतें
तु वीभुसीत होवे और तेने नंगापन की लाज दीष्पाइ न देय और
१९ अपनी आंष्पों में अंजन लगा की तु देष्पे। जीनको मैं पीआन
कनता ऊं उनहें दपटता ऊं और ताड़ना कनता ऊं इस कानन
२० जलीत हो और पसयाताप कन। देष्प मैं दुवान पन ष्पड़ा हो
के ष्पटष्पटाता ऊं यदी कोइ मेना सबद सुनके दुवान ष्पोले मैं
उसके घन के भीतन आउंगा और उसके संग भोजन कनुंगा
२१ और वुह मेने संग। जयमान जो है मैं उसे अपने सींहासन पन
अपने संग वैठने देउंगा जैसा की मैं भी जय पाके अपने पीता के
२२ संग उसके सींहासन पन वैठा ऊं। जीस कीसी के कान है सो
सुने की आतमा मंडलीयों के कया कहता है।

४ चौथा पर्ब्ब।

१ इन बातन के पीछे मैं ने दृष्टि की तो क्या देखता हूं कि
स्वर्ग में एक द्वार खुला हुआ और पहिला शब्द जो मैं ने
सुना तुरही का सा था जो मुझ से कहते हुए बोला कि इधर
ऊपर आ और मैं तुझे देखाऊंगा कि आगे को क्या होगा।
२ और तुरंत मैं आतमा में हुआ तो क्या देखता हूं कि स्वर्ग में
३ एक सिंहासन धरा हुआ और उस पर कोई बैठा था। और
वुह जो बैठा था दृष्टि में सूर्यकांत और माणिकमणि के
ऐसा था और एक बर्षिक धनुष्य जो मरकत की नाईं दिखाई
४ देता था उस सिंहासन के चारों ओर था। और उस सिंहासन
के चारों ओर चौबीस सिंहासन थे और उन सिंहासनों पर मैं
ने चौबीस प्राचीनों को श्वेत बस्तर पहिने हुए बैठे देखा और
५ उनके मस्तकों पर सोने के मुकुट थे। और उस सिंहासन से
बिजली और गर्जन और शब्द निकलते थे और अग्नि के
सात दीपक उस सिंहासन के आगे सदा बरते थे जो ईश्वर के
६ सात आतमा हैं। और उस सिंहासन के आगे कांच का समुद्र
स्फटिक के समान था और सिंहासन के मध में और सिंहासन
के आस पास चार जीवते जंतु थे जो आगे पीछे आंखों से भरे
७ थे। और पहिला जंतु सिंह सा था और दूसरा बछड़ा सा
और तीसरा मनुष्य का सा मुंह रखता था और चौथा जंतु उड़ते
८ गिद्ध सा था। और चारों जीवते जंतुन के छः छः पर चारों
ओर थे और उनके भीतर आंखें भरी थीं और वे रात दिन
इस कहने से चैन न करते थे कि पवित्र पवित्र पवित्र परभु
ईश्वर समस्त पराक्रमी जो था और है और आवने को है।
९ और जब वे जीवते जंतु उसका जो सिंहासन पर बैठा है और
सर्बदा जीवता है महातम और प्रतिष्ठा और धन्यबाद
१० करते हैं। वे चौबीस प्राचीन उसके सन्मुख जो सिंहासन पर
बैठा है गिरपड़ते हैं और उसको जो सर्बदा जीवता है पूजा

कनते हैं ग्रैान अपने मुकुट यूह कहते ऊगे उसके सींहासन के
११ ग्रागे डाल देते हैं। की हे पनभु तु जोग है की महीमा ग्रैान
पनतीसठा ग्रैान पनाकनम पावे कय्रोंकी तु ने समसत व्रसतें उत-
पंन कीय्रां ग्रैान वे तेनीही इछा के लीय्रे उतपंन की गइ हैं।

५ पांचवां पनव्र।

१ ग्रैान मैं ने उसके दहीने हाथ में जो सींहासन पन व्रैठा था
ग्रेक पोथी देष्पी जीस में भीतन व्राहन लीष्पा ऊग्रा था ग्रैान
२ सात छाप से छपी थी। ग्रैान मैं ने ग्रेक पनाकनमी दुत को
देष्पा की व्रड़े सव्रद से यूह पुकानता था की कैान जोग है की
३ इस पोथी को ष्पोले ग्रैान उसके छापों को ताेड़े। ग्रैान न तो
सनग में न पीनथीवी पन न पीनथीवी के तले कीसी को सामनथ
४ ऊग्रा की उस पोथी को ष्पोले ग्रथवा उस में देष्पे। तव्र मैं व्रऊत
नोय्रा इस कानन की कोइ जोग न ठहना की पोथी को ष्पोले
५ ग्रैान पढ़े ग्रथवा उस में देष्पे। तव्र उन पनाचीनों में से ग्रेक ने
मुझे कहा की मत नो देष्प उस सींह ने जय्र पाय्रा है जो यूऊदा
के घनाने का ग्रैान दाउद का मुल है की उस पोथी को लेवे
६ ग्रैान उसके सात छापों को ताेड़े। तव्र मैं ने दीनीसट की तो
काय्रा देष्पता ऊं की उस सींहासन के मध में ग्रैान चान जीवते
जंतुन के ग्रैान उन पनाचीनों के व्रीच में ग्रेक मेमना ष्पड़ा था
जो व्रधन कीय्रा गय्रा था जीस के सात सींगें ग्रैान सात ग्रांष्पें थीं
य्रे इसन के सात ग्रातमा हैं जो सानी पीनथीवी पन भेजे गय्रे
७ हैं। ग्रैान उसने ग्राके उसके दहीने हाथ से जो सींहासन पन
८ व्रैठा था उस पोथी को लीय्रा। ग्रैान जव्र उसने पोथी ली तव्र
वे चानों जीवते जंतु ग्रैान चैाव्रीस पनाचीन उस मेमना के ग्रागे
गीन पड़े ग्रैान हन ग्रेक के पास व्रीना ग्रैान सोने के पानन सु
९ गंध से भने ऊगे थे जो साधुन की पनानथना हैं। ग्रैान वे ग्रेक
नय्रा नाग गाने लगे की तु ही जोग है की उस पोथी को लेवे

औान उसके छापों को तोड़े कयोंकी तु मारा गया औान हमें हुन
ऐक कुल औान भाप्पा औान लोग औान जात से ईसन के लीये अ-
१० पने लुची नसे मोल लीया। औान हमको हमाने ईसन के लीये
नाज औान याजक वनाया औान हम पीनथीवी पन नाज कनेंगे।
११ औान मैंने दीनीसट की औान सींहासन के यानों औान से वुझत
से दुतों का औान जीवते जंतुन का औान उन पनायीनों का
सवद सुना जो अटकल में कोटीन पन कोटीन औान सहसनों
१२ पन सहसन थे। वड़े सवद से कहते थे की मेमना जो मारा
गया जोग है की पनाकनम औान धन औान वुध औान वल
१३ औान पनतीसठा औान महीमा औान आसीस पावे। औान मैं ने
हन ऐक जंतु को जो सनग में औान पीनथीवी पन औान पीनथीवी
के तले हैं औान उनको जो समुदन में हैं अनथात समसत
वसतुन को जो उन में हैं यह कहते सुना की उसके लीये जो
सींहासन पन वैठा है औान मेमना के लीये धंन औान पनतीसठा
१४ औान महीमा औान पनाकनम सनवदा है। औान यानों जीवते
जंतु वोले आमीन औान यौवीसों पनायीन ने गीन के उसकी जो
सनवदा जीवता है पुजा की।

६ छठवां पनब्र।

१ औान जव मेमना ने उन छापों में से ऐक को तोड़ा तव मैं ने
उन यानों जीवते जंतुन में से ऐक को सुना जीसने गनजन के
२ से सवद से कहा आ औान देप्प। औान मैं ने दीनीसट की तो
कया देप्पता ऊं की ऐक सेत घोड़ा औान उसका यढ़नेवाला
धनप्प नप्पता था औान ऐक मुकुट उसे दीयागया औान वुह जय
३ पाते ऊऐ औान जय कनने को नीकला। औान जव उसने दुसना
छाप तोड़ा तव मैं ने दुसने जीवते जंतु को यह कहते सुना
४ की आ औान देप्प। तव ऐक दुसना घोड़ा लाल नीकला औान
उसके यढ़नेवाले को यह दीया गया की कुसल को पीनथीवी

पर से उठा डाले और कि वे एक एक को मार डालें और एक
५ महा खड्ग उसे दीया गया। और जब उसने तीसरा छाप तोड़ा
तब मैं ने तीसरे जीवते जंतु को यह कहते सुना कि आ और
देख फिर मैंने दृष्टि की तो क्या देखता हूं कि एक काला
घोड़ा और उसका चढ़नेवाला अपने हाथ में तुला लिये था।
६ और मैं ने उन चारों जीवते जंतुन के मध में से यह कहते
एक सब्द सुना कि गोहूं सूकी सेर और जब सूकी का तीन
७ सेर दीसपर भी तू तेल और मदिरा मत घटाना। और
जब उसने चौथा छाप तोड़ा तब मैं ने चौथे जीवते जंतु के
८ सब्द को यह कहते सुना कि आ और देख। फिर मैं ने ताका
तो क्या देखता हूं कि पीला घोड़ा और उसके चढ़नेवाले का
नाम मिर्तु था और नरक उसके पीछे पीछे जाता था और उसे
चौथाई पिरथिवी पर परक्रम दीया गया कि वे खड्ग और
अकाल और मिर्तु से और पिरथिवी के बनैले पसुन से संसार
९ को बधन करें। और जब उसने पांचवां छाप तोड़ा तब मैं ने
उनके आतमा को जो ईसर के बचन के लिये और उस साक्षी
के लिये जो उन्हों ने दी थी मारे गये यज्ञवेदी के नीचे देखा।
१० और उन्हों ने बड़े सब्द से पुकार के कहा कि हे परभु पवित्र
और सत तू कबलों न्याय न करेगा और हमारे रुधिर का
११ पलटा पिरथिवी के बासियों से न लेगा। तब उन में से हर
एक को सेत बसन दीया गया और उन्हें कहा गया कि तुम
और थोड़े लों बिस्राम करो जब लों तुम्हारे संगी सेवक और
भाई जो चाहिये कि तुम्हारे समान मारे जावें संपूर्न होवें।
१२ और जब उसने छठवां छाप तोड़ा तब मैं ने दृष्टि की तो
क्या देखता हूं कि बड़ा भुइंडोल हुआ और सूरज बाल के
टाट की नाईं काला और चंद्रमा रुधिर के तुल्य हो गया।
१३ और आकास के तारे ऐसे पिरथिवी पर गिर पड़े जैसे गूलर
का बृक्ष अपने असमय के गूलरों को जो परचंड आंधी से

१४ छीलाया गया है गीनावता है। और आकास पत्न के समान
एकठे लपेटे गये और हन एक पहाड़ और हन एक टापु अपने
१५ अपने सथान से टल गया। और पीनथीवी के नाजाओं ने और
महत लोगों ने और धन मानों ने और सेनापतीयों ने और
सामनथी लोगों ने और हनएक वंधायमान ने और हन एक
नीनवंध पुनुष्य ने अपने को मांदों में और पहाड़ के पथनों की
१६ ओट में छीपाया। और पहाड़ों से और पथनों से कहने लगे
की हम पन गीनो और हमको उसके सनुप से जो सींहासन पन
१७ वैठा है और मेमना के कनोध से छीपा लेओ। कयोंकी उसके
महा कनोध का दीन आ पऊंया है और कौन ठहन सकता है।

७ सातवां पत्र्व।

१ और इन वसतुन के पीछे मैं ने पीनथीवी के यानों कोनों पन
यान दुतों को प्पड़े देप्पा की पीनथीवी के यानो पवन को थामते
थे ऐसा न हो की पवन पीनथीवी पन अथवा समुदन पन अथवा
२ वीनछों पन वहे। फीन मैं ने एक और दुत को सुनज के उदय
से उठते देप्पा जीसके पास जीवते इसन का छाप था उसने वड़े
सवद से उन यान दुतों को जीनहें यह दीया गया था की पीन-
३ थीवी और समुदन को सतावे यीला के कहा। जव लों हम
अपने इसन के दासों के ललाटों पन छाप न कन लें तुम पीनथीवी
४ को और समुदन को और वीनछों को न सताना। और जीन
पन छाप कीये गये थे मैं ने उनकी गीनती सुनी की इसनाइल
५ के संतानों में से एक सौ यवालीस सहसन छापे गये। यऊदा के
कुल में से वानह सहसन छापे गये नोवीन के कुल में से वानह
सहसन छापे गये जद के कुल में से वानह सहसन छापे गये।
६ असन के कुल में से वानह सहसन छापे गये नफतुली के कुल में
से वानह सहसन छापे गये मनससे के कुल में से वानह सहसन
७ छापे गये। समउन के कुल में से वानह सहसन छापे गये लुइ के

कुल में से बारह सहसन छापे गये युसाकर के कुल में से बारह
८ सहसन छापे गये। जबुलुन के कुल में से बारह सहसन छापे
गये युसफ के कुल में से बारह सहसन छापे गये बिनयमीन के
९ कुल में से बारह सहसन। इस के पीछे मैं ने ताका ता क्या
देष्पता हुं की बड़ी मंडली जीसे कोइ गीन न सका हर ऐक
जात में से और कुल और लोग और भाष्पा में से थे सेत बस-
तर पहीने हुऐ और ष्परुर को डारें हाथें में लीये हुऐ उस
१० सींहासन और मेमना के आगे ष्पड़ी थी। और बड़े सबद से
पुकार के कहती थी की नीसतार हमारे इसर से जो सींहासन
११ पर बैठा है और मेमना से। और समसत दुत जो उस सींहा-
सन के चारें ओर ष्पड़े थे और वे परायीन और वे चारें जीवते
जंतु उस सींहासन के आगे औंधे गीर पड़े और इसर की सतुत
१२ करके। कहने लगे की आमीन धनबाद और महीमा और
बुध और सतुत और परतीसठा और पराकरम और सामरथ
१३ सरवदा हमारे इसर के लीये आमीन। और उन परायीनें
में से ऐक उतर देके मुझ को कहने लगा की वे जो सेत बसतर
१४ पहीने हुऐ हैं कैान हैं और कहां से आये हैं। तब मैं ने कहा
की हे महासय तु जानता है तब उसने मुझे कहा की ये वे हैं
जो बहुत कसट से नीकल आये हैं और अपने बसतरें को
१५ धोया है और उनहें मेमना के लोहु से सेत कीया। इसी लीये
वे इसर के सींहासन के आगे हैं और उसके मंदीर में रात
दीन उसकी सेवा करते हैं और वुह जो सींहासन पर बैठा है
१६ उनहों के मध में रहता है। वे अब कभी भुष्पे न होंगे और
न पीआसे होंगे और सुरज और कीसी रीत का घाम उन पर
१७ न पड़ेगा। क्योंकी मेमना जो सींहासन के मध में है उनहें
चरावेगा और उनहें जल के जीते सोता लों ले जायगा और
इसर उनकी आंष्पों से समसत आंसुओं को पोंछेगा।

८ आठवां पनव् ।

१ औन जब उसने सातवां छाप तोड़ा तब सनग पन ऐक आधी
२ घड़ी मौनता ऊई। औन मैं ने उन सात दुतों को जो ईसन
३ के आगे खड़े थे देख्या की उनहें सात तुनही दी गई। फेन ऐक
औन दुत आया औन सोने की धुपाउनी लीये ऊऐ जगवेदी के
पास जा खड़ा ऊआ औन बऊत सा सुगंध उसे दीया गया की वुह
उसे सारे साधुन की पनानथना के संग उस सोने की जगवेदी पन
४ जो सींहासन के आगे थी चढ़ावे। औन उस सुगंध का धुआं
साधुन की पनानथना के संग दुत के हाथ से ईसन के आगे उपन
५ उठा। औन उस दुत ने धुपाउनी को लीया औन उसको जग
वेदी की आग से भनदीया औन पीनथीवी पन उंडेला तब सबद
६ औन गनजन औन बीजली औन भुंईडोल ऊऐ। औन सात
दुत जीन पास सात तुनही थी सबद कनने पन सीध ऊऐ।
७ औन पहीले दुत ने सबद कीया तो लोऊ से मीली ऊई ओला
औन आग ऊई औन पीनथीवी पन उंडेली गई औन बीनछों की
८ तीहाई जल गई औन समसत हनी घास जलगई। फेन दुसने
दुत ने सबद कीया औन ऐसा ऊआ जैसा महा पनवत अगीन से
जलता ऊआ समुदन में फेका गया औन समुदन की तीहाई लोऊ
९ हो गई। औन तीहाई जीवधानी जो समुदन में थे मन गये
१० औन तीहाई नावें नसट ऊईं। फेन तीसने दुत ने सबद कीया
तो सनग से ऐक बड़ा ताना दीपक सा जलता ऊआ गीना औन
११ नदीयों की तीहाई पन औन जल के सोतों पन गीना। औन
उस ताना का नाम नागदौना है औन तीहाई पानी नागदौना
हो गये औन बऊत से मनुष्य उन पानीयों से मन गये कयोंकी
१२ वे कड़वे हो गये थे। औन फेन चौथे दुत ने सबद कीया औन
तीहाई सुनज औन तीहाई चंदनमा औन तीहाई तानें मानें
पड़े यहां लों की उनकी तीहाई अंधेनी हो गई औन दीन की

१३ तीहाइ श्रोन नातनो की न्नी पनगट न ऊइ। श्रोन मैं ने देप्पा
श्रोन सनग के मच में प्रेक दुत को उड़ते श्रोन व़ड़े सव़द से यह
कहते सुना की तीन दुत जो तुनहो का सव़द कनने को नह
गये हैं उन के सव़द के लीये पौनथीवी के नीवासीयों पन संताप
संताप संताप है।

९ नवां पनव़।

१ फेन पांयवें दुत ने सव़द कीया श्रोन मैं ने देप्पा की सनग से
प्रेक ताना पौनथीवी पन गीना श्रोन उस अथाह गड़हे की कुंजी
२ उसे दीइ गइ। श्रोन उसने उस अथाह गड़हे को प्पोला
श्रोन उस गड़हे से व़ड़े भटे के धुश्रां सा धुश्रां उठा श्रोन उस
३ गड़हे के धुप्रें से सुनज श्रोन आकास अंधेने हो गये। श्रोन उस
धुप्रें में से पौनथीवो पन टीडीयां नीकलीं श्रोन उन्हें वैसाही
सामनथ दीया गया जैसा पौनथीवी के व़ीछु सामनथ नप्पते हैं।
४ श्रोन उनहें यह कहा गया की पौनथीवी की घास अथवा कोइ
हनीयाली अथवा कीसी व़ीनछ को न सतावें पनंतु केवल उन
५ मनुप्पन को जीनके ललाटों पन इसन का छाप नहीं है। श्रोन
उनहें दीया गया की वे उनको पनान से न मानें पनंतु की वे
पांय महीने लों कसट पावें श्रोन उनका कसट प्रैसा था जैसे के
६ व़ीछु के डंक मानने से मनप्प को कसट होता है। श्रोन उन दीनों
में मनुप्प मीनतु ढुंढेंगे श्रोन न पावेंगे श्रोन मीनतु के अभीलासी
७ होंगे श्रोन मीनतु उनसे भागेगी। श्रोन उन टीडीयों का सनुप
उन घोड़ों की नाइं था जो जुध के लीये लैस होवें श्रोन उनके
मसतकों पन सोने के मुकुट थे श्रोन उनके मुंह मनुप्प के मुंह
८ के से थे। श्रोन उनके व़ाल इसतीनीयों के व़ाल के से श्रोन उनके
९ दांत सींह के से थे। श्रोन वे लोहे की झीलीम सी झीलीम नप्पते थे
श्रोन उनके पंप्पों का सव़द गाडीयों का सा श्रोन व़ऊत से घोड़े
१० लड़ाइ में झपटे जाते हैं। श्रोन उनकी पुंछ व़ीछु की सी थीं

औान उन की पुंछों में डंक थे औान उनहें सामनथ था की पांय
११ महीने लों मनुष्पन को सतावें। औान उनका ऐक नाजा था वुह
उस अथाह गड़हे का दुत था जीसका नाम हीव्रनी भाप्पा में
१२ अव्रदुन औान युनानी में अपलुन है। ऐक संताप व्रीत गया
१३ औान देप्पो औान दो संताप आते हैं। फरेन छठवें दुत ने सव्रद
कीया औान मैं ने सोने की व्रेदी के जो इसन के आगे थी यानों
१४ कोनों में से ऐक सव्रद सुना। जो छठवें दुत को जीसके पास
तुनही थी यह कहता था की उन यान दुतों को जो फनुनात
१५ की व्रड़ी नदी में व्रंद हैं प्पोल दे। फरेन वे यानों दुत छुड़ाये
गये जो ऐक घड़ी औान ऐक दीन औान ऐक महीने औान ऐक
१६ व्रनस में लैस थे की तीहाइ मनुष्पन को मान डालें। औान घोड़
यढ़े गीनती में व्रीस कड़ोन थे औान मैं ने उनकी गीनती युं
१७ सुनी। औान मैं ने उन घोड़ों को औान उनके यढ़नेवालों को
युं देप्पा की अगीन औान नीलमन औान गंधक के हीलीम
नप्पते थे औान घोड़ों के सीन सींह के से थे औान उनके मुंह से
१८ आग औान घुऐं औान गंधक नीकलते थे। आग औान घुऐं औान
गंधक इनहीं तीनों से जो उनके मुंह से नीकलते थे तीहाइ
१९ मनुष्प मान गये। औान उनके सामनथ उनके मुंह में औान उनकी
पुछों में थे औान उनकी पुंछ नाग की नाइं हैं औान सीन नप्पते हैं
२० औान उनसे वे सतावते हैं। औान नहे हुऐ मनुष्पन ने जो इन
मनीयों से मानें न गये अपने हाथों के कानजन से पसयाताप न
कीया वे पीसायों की औान सोने नुपे औान पीतल औान पथन औान
लकड़ी की मुनतीन की जो न देप्प सकतीं न सुन सकतीं न यल
२१ सकतीं हैं पुजा कनते हैं। औान उनहों ने अपनी हतया औान
टोना औान छीनाला औान योनीयों से पसयाताप न कीया।

१० दसवां पनव्र।

१ फरेन मैं ने ऐक औान व्रलवान दुत मेघ को पहीने हुऐ सनग से

उतर ते देष्या उसके सीर पर वादलीक धनुष्य था और उसका
मुंह सुरज की नाई और उसके पांव आग के षंभे के तुल
२ थे। और उसके हाथ में ऐक छोटी पोथी षुली हुई थी और
उसने अपना दहीना पांव समुद्र पर और वांयां पीरथीवी पर
३ धरा। और उसने महा सब्द से जैसे सींह गरजता है पुकारा
और जब उसने पुकारा तब सात गरजन ने अपना अपना सब्द
४ कीया। और जब वे सात गरजन अपना अपना सब्द कर चुके
मैं लीषने पर था और सरग से मुझ से कहते हुऐ मैं ने ऐक
सब्द सुना जो की सात गरजन ने कहा थै उन पर छाप कर और
५ मत लीष। तब उस दुत ने जीसे मैं ने समुद्र और पीरथीवी
पर षड़ा देष्या अपने हाथ को सरग के ओर उठाया।
६ और उसकी जो सरवदा लो जीवता है जीसने सरग को और
सबको जो उस में हैं और पीरथीवी को और सब कुछ जो उस
में हैं वनाया कीरीया षाके कहा की फेर समय न होगा।
७ परंतु सातवें दुत के सब्द करने के दीनों में जो तुरंत सब्द करने
पर था ईसर का भेद जैसा उसने अपने दास आगमगयानीयों
८ पर मंगलसमाचार को परगट कीया पुरा होगा। और उस
सब्द ने जीसे मैं ने सरग से सुना फेर मुझ से कहीके बोला
की उस दुत के हात से जो समुद्र और पीरथीवी पर षड़ा है
९ षुली हुई छोटी पोथी ले ले। तब मैं ने उस दुत क पास जाके
उसे कहा की छोटी पोथी मुझे दीजीये तब उसने मुझे कहा की
ले और इसे षा जा और वुह तेरे ओदर को कड़वा कर देगी
१० परंतु तेरे मुंह में मधु के ऐसी मीठी होगी। तब मैं ने वुह
छोटी पोथी उस दुत के हाथ से ली और उसे षा गया और
वुह मेरे मुंह मे मधु के ऐसो मोठी थी परंतु जब मैं ने उसे षा
११ लीया मेरा ओदर कड़वा हो गया। और उसने मुझे कहा
अवस है की तु लोगों के और जात के और भाषाओं के और
राजाओं के आगे आगम फेर कहे।

११ गयानहवां पनव्व।

१ फेन छड़ी क समान ऐक नल मुझे दीया गया औन वुह दुत
खड़ा होके कहता था की उठ औन ईसन के मंदीन को औन
जगवेदी को औन उनको जो उस में पनानथना कनते हैं नाप।
२ पनंतु उस आंगन को जो मंदीन से वाहन है छोड़ दे औन
उसे मत नाप कयोंकी वुह अनदेसीयों को दीया गया है औन
३ वे उस पवीतन नगन को वयालीस महीने लों लताड़ेंगे। औन
मैं अपने दो साख्खीयों को सकती देउंगा औन वे टाट पहीन के
४ ऐक सहसन दो सौ साठ दीन लों आगम कहेंगे। ये वे दो
जलपाई के वीनछ औन दो दीवट हैं जो पीनथीवी के ईसन के
५ आगे खड़े हैं। औन यदी कोई उनहें संतावे तो उनके मुंह से
आग नीकलेगी औन उनके सतनुन को भछन कनलेगी औन
यदी कोई उनहें संतावे अवस है की वुह उस नीत से माना
६ जावे। ये सामनथ नख्ते हैं की सनग को वंद कनें यहां लों की
उनके आगम कहने के दीनों में पानी न वनसेगा औन पानीयों
पन सामनथ नख्ते हैं की उनहें लोहु वना डालें औन जव जव
याहें तव तव पीनथीवी को हन पनकान की मनी से मानें।
७ औन जव वे अपनी साख्खी पुनी कन युकेंगे वुह वनैला पसु जो उस
अथाह गड़हे से नीकलता है उनसे जुध कनेगा औन उनहें जीते
८ गा औन उनहें मानडालेगा। औन उनकी लोथें वड़े नगन की
हाट में पड़ी नहेंगी जो आतमीक से सदुम औन मीसन कहावता
९ है जीस में हमाना पनभु भी कुनुस पन खींचा गया। औन
लोग लोग औन कुल कुल औन भाख्खा भाख्खा औन जात जात
उनकी लोथों को साढ़े तीन दीन लों देखेंगे औन उनकी लोथों
१० को समाधीन में नख्ने न देंगे। औन पीनथीवी के वासी उन
पन मगन होंगे औन आनंद कनेंगे औन ऐक ऐक को वैना
भेजेंगे कयोंकी ये दो आगमगयानीयों ने पीनथीवी के वासीयों

११ को सनाया। ग्रोन साढ़े तीन दीन के पीछे छीवन का ग्रातमा
इसन के ग्रोन से फेन उन में पनवेस कीया ग्रोन वे ग्रपने पांग्रों
पन प्पड़े हो गये तव जीनहों ने उनहें देप्पा उन पन वड़ा ग्रय
१२ पड़ा। ग्रोन उनहों ने सनग से येक महा सवद उनहें कहते सुना
की इघन उपन ग्रोग्रे तव वे मेघ पन सनग को उठ गये ग्रोन
१३ उनके सतनुन ने उनहें देप्पा। फेन उसी घड़ी वड़ा ग्रुइडोल ऊग्रा
ग्रोन उस नगन का दसवां ग्राग गीन पया ग्रोन उस ग्रुइडोल
से सात सहसन मनुप्प मानें पडे ग्रोन वये ऊग्रे डन गये ग्रोन
१४ सनग के इसन की महीमा की। दुसना संताप वीत गया देप्पो की
१५ तीसना संताप तुनंत ग्रावता है। तव सातवें दुत ने सवद कीया
ग्रोन सनग में वडे वडे सवद कहने लगे की इस जगत के समसत
नाज हमाने पनग्रु ग्रोन उसके मसीह का ऊग्रा ग्रोन वुह सनवदा
१६ ग्रोन सनवदा नाज कनेगा। ग्रोन यैावीस पनायीन जो ग्रपने
सींहासन पन इसन के ग्रागे वैठे थे ग्रोंघे मुंह गीने ग्रोन यह
१७ कहके इसन की पुजा की। हे पनग्रु इसन सनव सामनघी जो
है ग्रोन था ग्रोन ग्रावने पन है हम तेनी सतुत कनते हैं की तु
१८ ने ग्रपना वड़ा सामनथ ले लीया ग्रोन नाज कीया है। ग्रोन
समसत जात कनोघी थीं ग्रोन ग्रव तेना कोप ग्राया ग्रोन समय
पऊंया की मीनतकन का नयाय कीया जाय ग्रोन तु ग्रपने दास
ग्रागमगयानीयों ग्रोन सीघों को ग्रोन उनको जो तेने नाम से
डनते हैं कया छोटे कया वड़े फल देवे ग्रोन उनको जो पीन-
१९ थीवी को नास कनते हैं नास कने। ग्रोन इसन का मंदीन सनग
में प्पुल गया ग्रोन उसके मंदीन में उसके नीयम की संदुक
दीप्पाइ दी ग्रोन वीजलीयां सवद ग्रोन गनजन ग्रोन ग्रुइडोल
ग्रोन वड़े ग्राेले ऊग्रे।

१२ वानहवां पनप।

१ ग्रोन सनग में येक वड़ा ग्रासयनज दीप्पाइ दीया की येक

इसतीनी सुनज से व्रीभ्सीत ब्रौन यंदनमा उसके पांवों तले
२ ब्रौन उसके सीन पन व्रानह तानों का मुकुट। ब्रौन वुह गनभीनी
होके जंने के कसट में पड़के यीलाइ ब्रौन उस पन जंने की
३ पीड़ा ऊइ। ब्रौन देष्यो की ब्रेक ब्रौन व्रड़ा ब्रासयनज की ब्रेक
व्रड़ा ब्रगीनी ब्रजगन जीसके सात सीन ब्रौन दस सींग ब्रौन सात
४ मुकुट उसके सीनों पन थे सनग में दीष्पाइ दीया। ब्रौन उसकी
पुंछ ने सनग के तीहाइ तानों को ष्पींयकीया ब्रौन उनहें पीन-
थीवी पन डाल दीया ब्रौन वुह ब्रजगन उस इसतीनी के ब्रागे
जो जंने पन थी जा ष्पड़ा ऊब्रा की जव्र वुह जने तो उसके
५ व्रये को भछन कने ब्रौन वुह पुनुष्प व्रालक जनी जो समसत
जातों पन लोहे की छड़ी लेके पनभुता कनने को था ब्रौन उस
का लड़का इसन के ब्रनथात उसके सींहासन के ब्रागे उठाया
६ गया। ब्रौन वुह इसतीनी व्रन में जहां इसन ने उसके लीये
सथान ठीक कीया था भाग गइ जीसतें वुह वहां व्रानह सै साठ
७ दीन लों पनतीपाल पावे। ब्रौन सनग में संगनाम ऊब्रा मीका-
इल ब्रौन उसके दुतों ने उस ब्रजगन से संगनाम कीया ब्रौन
८ ब्रजगन ने ब्रौन उसके दुतों ने उनहों से संगनाम कीया। तीस
पन भी वे जीत न सके ब्रौन उनके लीये सनग में ब्रागे को
९ सथान न नहा। ब्रौन यूं वुह व्रड़ा ब्रजगन नीकाला गया वही
पुनाना सांप जीसका नाम इव्रलीस ब्रौन सैतान है जो समसत
जगत को छल देता है पीनथीवी पन गीनाया गया ब्रौन उसके
१० दुत भी उसके संग गीनाये गये। फेन मैं ने सनग में ब्रेक व्रड़ा
सव्रद यह कहते सुना की ब्रव्र उधान ब्रौन पनाकनम ब्रौन
हमाने इसन का नाज ब्रौन उसके मसीह का सामनथ ब्राया
कयोंकी हमाने भाइयों का दोष्प दायक जो हमाने इसन के
११ ब्रागे नात दीन उन पन दोष्प देता था गीनाया गया। ब्रौन
उनहों ने मेमना के लोऊ से ब्रौन ब्रपनी साष्पी के व्रयन से उसे
जीता ब्रौन उनहों ने ब्रपने पनानों को मीनतु लों पीब्रान न

१२ कीग्रा। इस कानन तुम हे सनग ग्रैान तुम जो उन में नहते
हो ग्रानंद कनो संताप पीनथीवी के ग्रैान समुदन के व्रासीग्रों
पन इस लीग्रे की सैतान व्रड़े कनोघ से तुम पन उतना की वुह
१३ जानता है की मेना समय थोड़ा है। ग्रैान जव्र उस ग्रजगन
न देप्पा की पीनथीवी पन गीनाय्रा गय्रा तो उसने उस इसतीनी
१४ को जो पुनुप्प व्रालक जनी थी सताय्रा। ग्रैान उस इसतीनी
को व्रड़े गीघ के दो पंप्प दीय्रे गय्रे जीसतें वुह ग्रजगन के सन-
मुप्प से व्रन को ग्रपने सथान लों उड़ जाय्र जहां वुह ग्रेक समय्र
ग्रैान समय्रों ग्रैान ग्राघा समय्र लों उस नाग के सनमुप्प से पन-
१५ तीपाल पावे। फेन उस नाग ने ग्रपने मुंह से पानी नदी के
समान उस इसतीनी के पीछे व्रहाय्रा जीसतें वुह उसको घाना
१६ से लीवा जाय्र। ग्रैान पीनथीवी ने उस इसतीनी का सहाय्र
कीय्रा की पीनथीवी ने ग्रपना मुंह प्पोला ग्रैान उस व्राढ़ को
१७ जो ग्रजगन ने ग्रपने मुंह से व्रहाय्रा था पीलीय्रा। ग्रैान वुह
ग्रजगन इसतीनी पन कनोघीत ऊग्रा ग्रैान यला गय्रा की उसी
के नहे ऊग्रे व्रंस से जो इसन की ग्रगय्रा मानते हैं ग्रैान ग्रसु
मसीह की साप्पी नप्पते हैं जुघ कने।

१३ तेनहवां पनव्र।

१ ग्रैान मैं ने समुदन के व्रालु पन प्पड़ा होके ग्रेक व्रनैले पसु को
समुदन से नीकलते ऊग्रे देप्पा जीसके सात सीन ग्रैान दस सींग
थे ग्रैान उसके सींगों पन दस मुकुट ग्रैान उसके मसतकों पन
२ इसन की ग्रपनींदा का नाम। ग्रैान वुह पसु जो मैं ने देप्पा
यीता के समान था ग्रैान उसके पांव भालुक के से ग्रैान उसका
मुंह सींह के मुंह के समान ग्रैान उस ग्रजगन ने ग्रपना सामनथ
३ ग्रैान ग्रपना सींहासन ग्रैान महा पनाकनम उसे दीय्रा। ग्रैान
मैं ने उसके ग्रेक सीन पन मीनतु के घाव की नाइं देप्पा ग्रैान
तथापी उसका मानु घाव यंगा हो गय्रा ग्रैान समसत पीनथीवी

४ उस व्रनैले पसु के पीछे आसय्यनज कनती थी। और वे उस
अजगन की जीसने उस व्रनैले पसु को अपना पनाकनम दीया
पुजा कनके व्रोले कौन इस पसु के समान है कौन उस से लड़
५ सकता है। और उसे ग्रेक मुंह व्रड़ी व्रोली व्रोलने को और
इसन की अपनींदा कनने को दीया गया और उसे सामनथ
६ दीया गया की व्रयालीस महीने जुघ कने। और उसने अपने
मुंह को व्रीनोघ में इसन की अपनींदा में ष्पोला की उसके नाम
की और उसके सथान की और उनहों की जो सनग में नहते
७ हैं नींदा कने। और उसे दीया गया की सीधों से जुघ कने
और उनहें जीते और समसत कुल और भाष्पा और जात पन
८ उसे पनाकनम दीया गया। और पीनथीवी के समसत व्रासी
जीनके नाम उस मेमना के जो जगत के आनंभ से व्रलीदान
कीया गया जीवन की पोथी में लीष्पे नहीं गये उसकी पुजा
९।१० कनेंगे। यदी कीसी के कान होवें तो सुने। जो व्रंघुआइ
को लीये जाता है सो व्रंघुआइ में पड़ेगा और जो ष्पड़ग से
मानता है वही ष्पड़ग से माना जायगा सीधों का संतोष्प और
११ व्रीसवास यहां है। फेन मैं ने ग्रेक और पसु को पीनथीवी से
उठते देष्पा जो मेमना की नाइं दो सींग नष्पता था पनंतु
१२ अजगन की नाइं व्रोलता था। और वह पहीले पसु के समसत
पनाकनम को उसके आगे पनगट कनता है और पीनथीवी से
और उसके व्रासीयों से पहीले पसु की जीसका मानु घाव चंगा
१३ ऊआ पुजा कनावता है। और वुह व्रड़ा आसय्यनज दीष्पावता
है यहां लें की वुह मनुष्पन के आगे सनग से पीनथीवी पन
१४ आग व्रनसावता है। और उन आसयनजों से जो उसे दीये
गये की उस पसु के आगे दीष्पावे पीनथीवी के नीवासीयों को
छल देता है की पीनथीवी के नीवासीयों को अगया कनता है
की उस पसु की जीसको ष्पनग का घाव था और जीआ मुनत
१५ व्रनाओ। और उस में सामनथ था की उस पसु की मुनत को

सास देवे की उस पसु की मुनत वात यीत कने ग्रैान उन सभों
को जो उस पसु की मुनत को दंडवत न कनें घात कनवावे।
१६ ग्रैान कग्रा छोटे कग्रा व्रड़े कग्रा घनवान कग्रा कंगाल कग्रा
नीनव्रंघ कग्रा व्रंघापमान सव्रके दहीने हाथ ग्रैान कपालों पन
१७ ग्रेक यीनह लेने कनावता है। ग्रैान की कोइ मनुप्प न मोल
ले सके न व्रेय सके केवल वुही जीस में वुह यीनह ग्रथवा उस
१८ पसु का नाम ग्रथवा उसके नाम की गीनती हो। गय़ान य़हां
है वुह जो गय़ानमान है पसु की गीनती को गीने कय़ोंकी वुह
ग्रेक मनुप्प की गीनती है ग्रैान उसकी गीनती छः सै छौग्रा-
सठ है।

१४ यैादहवां पनव्र।

१ फरेन मैं ने दीनीसट की तो कग्रा देप्पना ऊं की ग्रेक मेमना
सीऊन के पहाड़ पन प्पड़ा था ग्रैान उसके संग ग्रेक लाप्प
यवालीस सहसन जीनके कपालों पन उसके पीता का नाम
२ लीप्पा था। ग्रैान मैं ने सनग में से ग्रेक सव्रद सुना जैसा व्रऊत
पानीग्रों का सव्रद ग्रैान जैसा महा गनजन का सव्रद ग्रैान मैं ने
३ व्रीना के व्रजानेवालों का सव्रद सुना। ग्रैान वे सींहासन के
ग्रागे ग्रैान उन यान जीवते जंतुन ग्रैान पनायीनों के ग्रागे
जैसा ग्रेक नय़े नाग गानहे थे ग्रैान कोइ उन ग्रेक लाप्प यवा-
लीस सहसन को छोड़ जो पीनथीवी से मोल लीय़े गय़े थे उस
४ गीत को नहीं सीप्प सकता था। ग्रे वे हैं जो इसतीनीग्रों के संग
ग्रसुघ न ऊग्रे की वे कुमान हैं ग्रे वे हैं जो मेमना के पीछे जहां
कहीं वुह जाता है जाते हैं ग्रे इसन के ग्रैान मेमना के लीग्रे
५ पहीले परल होके मनुप्पन में से मोल लीग्रे गय़े हैं। ग्रैान उनके
मुंह में छल न पाय़ा गय़ा कय़ोंकी वे इसन के सींहासन के ग्रागे
६ नीनदोप्प हैं। ग्रैान मैं ने दुसने दुत को सनग के मघ में से जो
सनव्रदा का मंगल समायान लीग्रे ऊग्रे उड़ नहा था देप्पा की

पीनथीवी के नीवासीयें के औन लेगों के वीचं उपदेस कनके।
७ व्रड़े सव्रद से कहता था की इसन से डनो औन उसकी महीमा
कनो क्योंकी उसके नयाय की घड़ी आइ औन जीसने सनग
औन पीनथीवी औन समुदन औन पानी के सोते उतपंन कीये
८ उसकी पुजा कनो। औन उसके पीछे ऐक दुसना दुत आके यूं
व्रोला की व्राव्रुन वृह व्रड़ी नगनी गीन पड़ी गीन पड़ी क्योंकी
उसने अपने व्रैभीचान के कनोध की मदीना सव्र जातीं को
९ पीलाइ। फीन ऐक तीसना दुत उनके पीछे ऐक व्रड़े सव्रद के
साथ आके व्रोला की जदी कोइ उस पसु औन उसकी मुनत की
पुजा कने औन उसके चीनह अपने कपाल में अथवा अपने हाथ
१० पन लेवे। वही इसन के कनोध की नीनाली मदीना जो उसके
कनोध के कटोने में भनी गइ पीयेगा औन वुह पवीतन दुतें के
११ औन मेमना के आगे अगीन औन गंधक में पीड़ा पावेगा। औन
उनकी पीड़ा का धुआं सनव्रदा उठता नहता है औन उनको जो
उस पसु औन उसकी मुनत की पुजा कनते हैं औन उनको जो
उसके नाम का चीनह लीये हैं नात दीन कभी व्रीसनाम नहीं
१२ पावते। सीधों का संतोख यहां है ये वे हैं जो इसन की अगया
१३ औन यसु के व्रीसवास को लीये नहते हैं। फीन मैं ने सनग
से ऐक सव्रद मुझ से कहते ऊए सुना की लीख धन वे मीनतक
जो अव्र से पनभु में मनते हैं आतमा कहता है हां की वे अपने
पनीसनमों से चैन पावते हैं औन उनके कानज उनके पीछे पीछे
१४ चले आवते हैं। फीन मैं ने दीनीसट की तो क्या देखता ऊं
की ऐक सेत मेघ औन उस मेघ पन कोइ मनुष्य के पुतन के
ऐसा व्रैठा था जीसके सीन पन सोने का मुकुट औन हाथ में ऐक
१५ चोखा हंसुआ था। औन ऐक औन दुत मंदीन से व्रड़े सव्रद
से उसको जो मेघ पन व्रैठा था पुकानते ऊए नीकला की
अपना हंसुआ लगा औन काट क्योंकी तेने लवने का समय
१६ आन पहुंचा की पीनथीवी की खेती पकी है। औन उसने जो

मेघ पन व्रैठा था ग्रपना हंसुग्रा पीनथीवी पन घना ग्रैान पीन-
थीवी लवी गइ। फीन प्रेक ग्रैान दुत मंदीन से जो सनग में
१८ है नीकला उस पास प्रेक चोप्पा हंसुग्रा था। ग्रैान प्रेक ग्रैान
दुत जीसका पनाकनम ग्राग पन था जगव्रेदी से नीकला उसने
उसको जीस पास योप्पा हंसुग्रा था व्रड़े सव्रद से पुकान के कहा
की ग्रपना योप्पा हंसुग्रा लगा ग्रैान पीनथीवी के दाप्प के गुछों
१९ को काट की उसके दाप्प पक युके। फीन उस दुत ने ग्रपना
हंसुग्रा पीनथीवी पन घना ग्रैान पीनथीवी के दाप्प को काटा
ग्रैान इसन के कनोघ के दाप्प के व्रड़े कोलङ्ग में डाल दीग्रा।
२० ग्रैान वुह दाप्प का कोलङ्ग नगन के व्राहन नैांदा गया ग्रैान
उस दाप्प के कोलङ्ग से लोहु प्रेक सहसन छः सै नल के घंट
कल प्रैसा व्रहा की घोड़ों के व्राग लों पहुंचा।

१५ पंदनहवां पनव्र।

१ फीन मैं ने प्रेक ग्रैान व्रड़ा ग्रासयनज लछन सनग में देप्पा की
सात दुत जीसके पास पीछली सात मनी थीं इस कानन की
२ उनहों में इसन का कनोघ संपुनन होने पन था। ग्रैान मैं ने
देप्पा जैसा की कांय का समुदन ग्राग से मीला हुग्रा ग्रैान वे
जो उस पसु ग्रैान उसके मुनत ग्रैान उसके चीनह ग्रैान उसके
नाम की गीनती पन जय पाये थे उस कांय के समुदन पन इसन
३ की व्रीनाग्रों को लीये हुप्रे प्पडे थे। ग्रैान वे इसन के सेवक
मुसा की गीत ग्रैान मेमना की गीत यह कहते हुप्रे गाते थे की
महान ग्रैान ग्रासयनज तेने कानज हे पनभु इसन सनव्र-
सामनथी तेने मानग सचे ग्रैान ठीक हैं हे साघुन के नाजा।
४ हे पनभु कैान तुझ से न डनेगा ग्रैान तेने नाम की महीमा न
कनेगा कयोंकी तु ग्रकेला पवीतन नीसचय समसत लोग ग्रावेंगे
ग्रैान तेने ग्रागे पुजा कनेंगे कयोंकी तेने जथानथ व्रीयान पन-
५ गट कीये गये हैं। ग्रैान इसके पीछे मैं ने दोनीसट की ता

वय्रा देप्पता ऊं की साप्पी के तंब्रु का मंदीन सनग में प्पोला
६ गय्रा। औान वे सात दुत जो उन सात मनी को लोय्रे ऊप्पे घे
पावन औान यमकता ऊआ ब्रसतन पहीने ऊप्पे औान सोने का
७ पटुका छाती पन लपेटे ऊप्पे मंदीन से नीकल आय्रे। औान उन
यान जंतुन में से प्रेक ने सोने की सात कटोनीय्रां नीत जीवते
८ इसन के कोप से भनी ऊइ उन सात दुतों को दीय्रा। औान
वुह मंदीन इसन के प्रैसनय्र औान उसके सामनथ के कानन घुप्पें
से भन गय्रा औान जब्र लों उन सात दुतों की सात मनी संपुनन
न ऊइ कोइ उस में पनवेस न कनसका।

१६ सोलहवां पनब्र।

१ फेन मैं ने मंदीन से प्रेक ब्रड़ा सब्रद सुना जो उन सात दुतों
से कहता था की जाओा औान इसन के कोप की उन कटोनीय्रों
२ को पीनथीवी पन उंडेलो। सो पहीला तो यला गय्रा औान
अपनी कटोनी को पीनथीवी पन उंडेला सो उन मनुप्पन पन
जो उस पसु का यीनह नप्पते घे औान उन पन जो उसकी मुनत
की पुजा कनते थे खती ब्रुना औान पीड़ादाय्रक घाव पड़ा।
३ फेन दुसने दुत ने अपनी कटोनी समुदन पन उंडेली औान वह
मने मनुप्प के लोऊ सा हो गय्रा औान हनप्रेक जीवता पनान
४ समुदन में का मनगय्रा। फेन तीसने दुत ने अपनी कटोनी
नदीय्रों में औान पानी के सोते में उंडेली औान वे लोऊ होगय्रे।
५ औान मैं ने सुना की पानीय्रों के दुत ने कहा हे पनभु जो है औान
था औान होगा तु जथानथ है कय्रोंकी तु ने य्रुं ब्रीयान कीय्रा
६ है। कय्रोंकी उनहों ने सीधों औान आगमगय्रानीय्रों का लोऊ
ब्रहाय्रा है सो तु ने उनहें लोऊ पीने को दीय्रा कय्रोंकी वे जोग
७ हैं। फेन मैं ने दुसने को ब्रगव्रेदी में से य्रह कहते सुना हां हे
पनभु इसन सनब्र सामनथी तेने ब्रीयान सये औान जथानथ हैं।
८ फेन योथे दुत ने अपनी कटोनी सुनज पन उंडेली औान उसे

९ सामरथ दीया गया की मनुष्यन को आग से झुलसावे। और
मनुष्य महाताप से झुलस गये और उनहों ने ईसर के नाम की
जो इन मरीओं पर सामरथ रष्पता है अपनींदा की और पस
१० याताप न कीया की उसकी महीमा करे। फेर पांचवें दुत ने
उस पसु के सींहासन पर अपनी कटोरी उंडेली और उसका
राज अंधकार हो गया और उनहोंने मारे पीड़ा के अपनी
११ जीभ चवाईं। और अपनी पीड़ा और घाओं के कारन सरग
के ईसर की अपनींदा की और अपने कारजन से पसयाताप
१२ न कीया। फेर छठवें दुत ने अपनी कटोरी महा नदी फुरात
में उंडेली और उसका पानी सुष्प गया जीसतें पुरव के राजाओं
१३ के लीये मारग बनाया जाय। फेर उस अजगर के मुंह से
और उस पसु के मुंह से और उस झुठे आगमगयानी के मुंह से
मेंढुकों की नाईं मैं ने तीन अपवीतर आतमा को नीकलते
१४ देष्पा। कयोंकी ये आसचरज दीष्पानेवाले पीसाचों के आतमा
हैं जो पीरथीवी के राजाओं के पास और समसत जगत में जाते
हैं की उनहें सरवसामरथी ईसर के महा दीन के जुध के लीये
१५ एकठा करें। देष्प मैं चोर की नाईं आवता हूं धंन वुह जो
जागता है और अपने वसतरों की चौकसी करता है न हो की
१६ वुह नंगा फीरा करे और लोग उसकी लजा देष्पें। फेर
एक सथान में जो ईबरी भाष्पा में अरमगदुन कहावता है उस
१७ ने उनको एकठा कीया। फेर सातवें दुत ने अपनी कटोरी
आकास में उंडेली तब सरग के मंदीर के सींहासन से एक महा
१८ सबद यह कहते हुए नीकला की हो चुका। तब सबद होने
लगे और गरजने लगे और चौकने लगे और महान और बड़ा
भुइंडोल हुआ की जब से मनुष्य पीरथीवी पर हुए ऐसा बड़ा
१९ भुइंडोल न हुआ था। और वुह बड़ी नगरी तीन भाग हो गई
और भीन देसीओं के नगर गीर गये और बड़ी बाबुल ईसर
के आगे समरन की गई की उसे अपने कोप के अतयंत जल

२० अवजलाहट की मदीना की कटोनी देवे। तब्र हन प्रेक टापु
२१ भाग गया औान फेरेन पहाड़ न पाप्रे गये। औान सनग से
मनुष्यन पन मन मन भन के ब्रोझ्ह के श्रोले पड़े औान मनुष्यन
ने श्रोलों की मनी से इसन की अपनींदा की कयोंकी उसकी
मनी अतयंत ब्रड़ी थी।

१७ सतनहवां पनब्र।

१ औान उन सात दुतें में से जीन पास सात कटोनीयां थीं प्रेक
आके मुझ्ह से ब्रातचीत कनके कहने लगा की आ मैं तुझ्हे उस
ब्रड़ी ब्रेसवा का जो ब्रझ्हुत से पानीयों पन ब्रैठी है दंड दीप्पा
२ उंगा। जीसके संग पीनथीवी के नाजाओं ने ब्रेभीयान कीया है
औान जीसके ब्रैभीयान की मदीना से पीनथीवी के ब्रासी मतवाले
३ झुप्रे हैं। सो वुह मुझ्हे आतमीक नीत से ब्रन में ले गया औान
मैं ने प्रेक इसतीनी को लाल ब्रनैला पसु पन ब्रैठी देप्पा जो
इसनापनींदक नामें से भना था उसके सात सीन औान दस सींग
४ थे। औान वुह इसतीनी ब्रैंजनी औान लाल ब्रसतन पहीने थी
औान सोने औान नतन औान मोतीयों से ब्रीभुसीत थी औान प्रेक
सोने का कटोना घीन से औान अपने ब्रैभीयान की अपवीतनता
५ से भना झुआ अपने हाथ में लीये थी। उसके कपाल पन प्रेक
नाम लीया था नीगुढ़ भेद ब्रड़ी ब्राब्रलुन ब्रेसवाओं की औान
६ पीनथीवी की घीनहटों की माता। औान मैं ने देप्पा की वुह
इसतीनी साधुन के लोझ्ह से औान य्रसु के साप्पीयों के लोझ्ह से
मतवाली हो नही थी औान उसका देप्पकन मैं ब्रड़े ब्रीसमय्र से
७ ब्रीसमीत हो गया। तब्र उस दुत ने मुझ्हे कहा तु कयों अयंभा
कनता है मैं उस इसतीनी का औान उस पसु का भेद जीसके सात
८ सीन औान दस सींग हैं तुझ्ह से कझ्हुंगा। वुह पसु जो तु ने देप्पा
सो था औान अब्र नहीं है औान उस अथाह गड़हे से नीकलेगा
औान ब्रीनासता में जायगा औान पीनथीवी के ब्रासी जीनके नाम

जगत के आरंभ से जीवन के पुसतक में नहीं लीष्पे हैं उस पसु
को देष्पकर जो था और नहीं है तथापी है अचंभा करेंगे।
९ जो बुध की गयान रष्पती है यह है वे सात सीर सात पहाड़
१० हैं जीन पर वुह इसतीरी बैठी है। और सात राजा हैं पांच तो
गीर गये एक है और दुसरा अबलों नहीं आया और ज. वुह
११ आवेगा तब थोड़े समय लों उसका रहना होगा। और वुह
पसु जो था और अब नहीं वही आठवां है और उन सातों में
१२ से है परंतु नासता में जाता है। और दस सींग जो तु ने देष्पे
दस राजा हैं जीनसों ने राज अबलों न पाया परंतु उस पसु के
१३ संग एक घड़ी भर राजाओं के ऐसा पराकरम पावते हैं। इन
सभों का एकही मन है ये अपने पराकरम और सामरथ उस
१४ पसु को देंगे। वे मेमना से जुध करेंगे और मेमना उनहें जीतेगा
कयोंकी वुह परभुओं का परभु और राजाओं का राजा है
और वे जो उसके संग हैं सब बुलाये गये और चुने गये और
१५ बीसवास से भरे ऊए हैं। फेर उसने मुझे कहा वे पानी जीनहें
तु ने देष्पा जीन पर वुह बेसवा बैठी है लोग और मंडली और
१६ जात और भाष्पा हैं। और उस पसु के दस सींग जो तु ने देष्पे
उस बेसवा से बीरोध करेंगे और उसे उजाड़ और नंगी करेंगे
१७ और उसका मांस ष्पायेंगे और उसे आग से जलावेंगे। कयोंकी
ईसर ने उनके अंतःकरनों में डाला की उसकी आगया को बजा
लावें अरथात एकही बीचार को पुरा करें और अपने राज
उस पसु को देवें जब लों की ईसर के बचन संपुरन न होवें।
१८ और वुह इसतीरी जीसे तु ने देष्पा वुह बड़ी नगरी है जो
पीरथीवी के राजाओं पर राज करती है।

१८ अठारहवां परब।

१ इसके पीछे मैं ने एक दुत को बड़े पराकरम के संग सरग से
उतरते देष्पा और पीरथीवी उसकी महीमा से परकास होगई।

२ और उसने पराक्रम के बड़े शब्द से पुकार के कहा की बड़ी
ब बबुल गीरपड़ी गीरपड़ी और अब पीसाचों का नीवास और
अपवीत्र आतमा का गढ़ और हर ऐक अपवीत्र और नींदीत
३ पछीयों का पींजरा ज़ज़। क्योंकी उसने सब जातों को अपने
बेभीचार के क्रोध की मदीरा पीलवाइ और पीरथीवी के राजा-
ओं ने उसके संग बेभीचार कीया और पीरथीवी क बेपारी
४ उसके भोगबीलास की अधीकाइ से धनी ज़ए। फेर मैं ने ऐक
और आकासबानी यह कहते सुनी की हे मेरे लोगो उस में से
बाहर आओ जीसतें तुम उसके पापों के भागी न होओ और
५ उसकी मरीयों में से कुछ न पाओ। क्योंकी उसके पाप सरग लों
पज़ंच गये हैं और उसके अधम करम इसर के आगे समरन के
६ लीये आये हैं। जैसा उसने तुम से बेवहार कीया तुम भी उस से
वैसाही बेवहार करो और उसे उसके करम के समान दुना
पलटा देओ उस कटोरे में जीसे उसने मीलाया है दुना मीला
७ देओ। जीतना उसने अपने को बढ़ाया है और भोग बीलास में
रही है उतनाही उसको पीड़ा और सोक देओ क्योंकी वुह
अपने मन में कहती है की मैं रानी की नाइं बैठी ज़ं और
८ बीधवा नहीं ज़ं और सोक को न देष्युंगी। सो उसकी मरी
ऐक दीन आवेगी अरथात मीरतु और बीलाप और काल
और वुह आग से जलाइ जायगी क्योंकी परभु इसर जो उसका
९ बीचार करता है सामरथी है। और पीरथीवी के राजा
जीनहों ने उसके संग बेभीचार और भोगबीलास कीया है
उसके जलने का धुआं देष के रोवेंगे और बीलाप करेंगे।
१० और उसके कलेस के डरके मारे दुर खड़े ज़ए कहेंगे हाय हाय
वुह बड़ी नगरी बाबुल बलवंती नगरी क्योंकी घड़ी भर में
११ तेरा दंड बीचार आ पज़ंचा है। और पीरथीवी के बेपारी
उसके लीये बीलाप और सोक करेंगे क्योंकी अब कोइ उनका
१२ बेपार मोल नहीं लेता। सोना और रुपा और बज़मोल की

मनी और मोती और महीन कपड़ा और बैंजनी और चीकनी
और लाल बसतर और हर एक सुगंध कासठ और हाथीदांत
के पातर और समसत प्रकार के बहुमोल कासट के पातर
और पीतल और लोहे और मरमर के समसत प्रकार के
१३ पातर। और दार चीनी और सुगंध और मुर और लुबान
और मदीरा और तेल और चोखा पीसान और गोहूं और
पसु और भेड़ें और घोड़े और रथ और दास और मनुष्यन
१४ के प्रान हैं। और तेरे मन के अभीलास के फल तुझ से अलग
हो गये हैं और सारी अछी अछी और भड़कीली बसतें तुझे
१५ छोड़ गई और तु उनको फेर कभी न पायेगी। इन बसतुन
के बेपारी लोग जो उसके कारन धनी बने थे उसके कसट के डर
१६ के मारे दुर खड़े रहीके रोयेंगे और बीलाप करेंगे। और
कहेंगे की हाय हाय वुह बड़ी नगरी जो महीन बसतर और
बैंजनी और लाल बसतर से बीभुसीत थी और सोने और बहु
१७ मोल के मनी और मोतीयों से सवांरी गई थी। कयोंकी यह
समसत धन घड़ी भर में नसट हो गये हैं और हर एक मांझी
और सारे जहाज के हर एक लोग और डांडी और जीतने की
१८ समुदर पर बेपार करते हैं दुर खड़े रहे। और उसके जलने
का धुआं उठते देखकर पुकारा की उस बड़ी नगरी के समान
१९ कौनसी है। और उनहों ने अपने सीरों पर धुल उड़ाई और
रोते पीटते और बीलाप करते युं पुकार उठे हाय हाय ऐसी
बड़ी नगरी जीस की उठान की बहुताई से सब जो समुदर में
जहाज रखते थे धनी हो गये कयोंकी घड़ी भर में वुह उजड़
२० गई। हे सरग और पवीतर प्रेरीतो और आगमगयानीयो
उस पर आनंद करो कयोंकी तुमहारे लीये ईसर ने उस पर
२१ दंड को आगया दीई हैं। फेर एक बलवान दुत ने एक पथर
बड़ी चकी के पाट की नाई उठाया और समुदर में यह कहीके
फेंका की बाबलुन वुह बड़ी नगरी युं परबल से फेंकी जायगी

२२ श्रैान फेरेन कभी पाइ न जायगी। श्रैान व्रीना व्रजानेवालें का
श्रैान व्राजेवालें का श्रैान व्रांसनीवालें का श्रैान सींगानीयें का
सव्द तुह्र में फेरेन सुना न जायगा श्रैान हन श्रेक व्रैपान का
कानजकानी तुह्र में फेरेन पाया न जायगा श्रैान चकी का सव्द
२३ तुह्र में फेरेन न सुना जायगा। श्रैान दीपक का पनकास तुह्र में
फेरेन न होगा श्रैान तुह्र में दुलहा दुलहीन का सव्द कभी सुना
न जायगा कयोंकी तेने व्रैपानी पीनथीवी के महाजन थे कयोंकी
२४ तेने टोना से समसत जात ठगे गये। श्रैान श्रागमगयानीयें
श्रैान सीघों का श्रैान जीतने पीनथीवी पन मानें गये थे उनका
लोऊ उसी में पाया गया।

१९ उनीसवां पनव्।

१ इन व्रसतुन के पीछे मैं ने सनग में व्रड़ी मंडली का सा सव्द
ग्रह कहते सुना की इसन का धंन मानो मुकत श्रैान महीमा
श्रैान पनतीसठा श्रैान पनाकनम हमानें पनभु इसन के लीये।
२ कयोंकी उसके नयाय सत श्रैान जथानथ हैं इस लीये की उसने
उस व्रड़ी व्रेसवा का जीसने श्रपने छीनाला से पीनथीवी को सड़ा
दीया नयाय कीया श्रैान श्रपने दासें के लोऊ का पलटा उसके
३ हाथ से लीया। फेरेन उनहें ने दुसनी व्रान कहा की इसन का
४ धंन मानो श्रैान उसका धुत्रां सनव्रदा के लीये उठता है। श्रैान
वे चैाव्रीस पनाचीन श्रैान चान जंतु श्रैांधे गीन पड़े श्रैान इसन
की जो सींहासन पन व्रैठा है यूं कहीके पुजा की की श्रामीन
५ इसन का धंन मानो। श्रैान सींहासन से ग्रह कहते ऊश्रे श्रेक
सव्द नीकला की तुम जो उसके दास हो श्रैान तुम जो उस से
डनते हो कया छोटे श्रैान कया व्रड़े सव्र हमानें इसन का धंन
६ मानो। श्रैान मैं ने व्रड़ी मंडली का सा सव्द श्रैान व्रऊत से
पानीयें का सा सव्द श्रैान महा गनजने का सा सव्द ग्रह कहते
सुना की इसन का धंन मानो कयोंकी सनव्रसामनथी पनभु इसन

७ नाज कनता है। हम आनंद और हुलास कनें और उसको
महीमा देवें कयोंकी मेमना का बीवाह आ पहुंचा और उसकी
८ पतनी ने अपने को सीध कीया है। और उसे दीया गया की
वुह मेहीन और सुध और जगमगी बसतन से पहीनाइ जाय
९ और मेहीन बसतन धनमीयों का कनम है। और उसने मुझ से
कहा की लीप्प धंन वे हैं जीनका नेउता मेमना के बीवाह की
बीयानी में कीया गया है और उसने मुझे कहा की ये इसन के
१० सत बचन हैं। और उसकी पुजा के लीये मैं उसके चनन पन
गीन पड़ा और उसने मुझे कहा की देप्प ऐसा नकन की मैं तेना
और तेने भाइयों का जीन पास यसु की साप्पी है संगी सेवक
हुं इसन की सतुत कन कयोंकी आगमगयान का आतमा यसु
११ की साप्पी है। फेन मैं ने सनग को प्पुला देप्पा और कया
देप्पता हुं की एक सेत घोड़ा और वुह जो उस पन चढ़ा था
बीसवासी और सत कहावता था और वुह धनम से नयाय और
१२ जुध कनता है। उसकी आंप्पें अगीन के लवन कीसी थीं और
बहुत से मुकुट उसके सीन पन थे जीस पन एक नाम लीप्पा था
१३ की उसको छोड़ कोइ न जानता था। और वुह लोहु में बोने
हुए बसतन से बीभुसीत था और उसका नाम इसन का बचन
१४ कहावता था। और सेना जो सनग में हैं मेहीन और सेत और
सुध बसतन पहीने हुए सेत घोड़ों पन उसके पीछे पीछे होलीयां।
१५ और उसके मुंह से चोप्पा प्पड़ग नीकला की वुह उस से आन
देसीयों को मानें वुह लोहे के दंड से उन पन पनभुता कनेगा
और वुह सनबसामनथी इसन के कोप और जलजलाहट के
१६ कनोध की मदीना के कोलहु को लताड़ता है। और उसके
बसतन और जांघ पन यह नाम लीप्पा था नाजाओं का नाजा
१७ और पनभुन का पनभु। फेन मैं ने एक दुत को सुनज में प्पड़ा
हुआ देप्पा उसने सानें पंछीयों को जो आकास के मध में उड़ते
हैं यह कहीके बड़े सबद से पुकारा आओ और अनी महान

१८ इसन की व्रीय्रानी में ग्रेकठा होत्र्ा। की तुम नाजात्र्ों का मास
त्र्ेान सेनापतीय्रों का मांस त्र्ेान पनाकनमोय्रें का मांस त्र्ेान
घोड़े का त्र्ेान उनके यढ़नेवालें का त्र्ेान नीनव्रंघों का त्र्ेान
व्रंघापमानें का कय्रा छोटें का कय्रा व्रड़ें का मांस प्पात्र्ेा।
१९ फेन मैं ने उस पसु को देप्पा त्र्ेान पीनथीवी के नाजा त्र्ेान उन
की सेना ग्रेकठे ऊइ की उस से जो घोड़े पन यड़ा था त्र्ेा उसकी
२० सेना से लड़े। त्र्ेान वुह पसु त्र्ेान उसके संग वुह ह्रुठा त्र्ागम
गय्रानी जीसने उसके त्र्ागे त्र्ासयनज दीप्पाय्रे जीस से उसने
उनको जीनहों ने उस पसु के यीनह को लीय्रा त्र्ेान उनको
जो उसकी मुनत को पुजते थे छल दीय्रा दोनो के दोनो उस
उस त्र्ाग की ह्रील में जो गंघक से जल नही है जीते डालेगय्रे।
२१ त्र्ेान व्रये ऊग्रे लोग उस प्पड़ग से माने गय्रे जो उस घोड़े के
यढ़नेवाले के मुंह से नीकलता था त्र्ेान सानें पछी उनके मांस से
त्र्घा गय्रे।

२० व्रीसवां पनव्र।

१ फेन मैं ने ग्रेक दुत को उस त्र्थाह गड़हे की कुंजी त्र्ेान
ग्रेक व्रड़ा सीकन हाथ में लीय्रे ऊग्रे सनग से उतनते देप्पा।
२ त्र्ेान उसने उस त्र्जगन को उस पुनाने सांप को जो इव्रलीस
त्र्ेान सैतान है पकड़ा त्र्ेान सहसन व्रनस लों जकड़ नप्पा।
३ त्र्ेान उसको उस त्र्थाह गड़हे में डाल दीय्रा त्र्ेान व्रंद कनके
उस पन छाप कीय्रा जीसतें वुह त्र्ागे लोग को छल न देवे
जव्र लों ग्रेक सहसन व्रनस पुने न होवें तव्र त्र्व्रस है की वुह
४ थोड़े समय्र के लीय्रे छुट जाय्र। फेन सींहासनों को त्र्ेान उन
पन के व्रैठनेवालों को मैं ने देप्पा त्र्ेान नय्राय्र उनहें दीय्रा गय्रा
त्र्ेान उनके त्र्ातमात्र्ेां के जोनऊ सोन य्रसु की साप्पी त्र्ेान
इसन के व्रयन के लीय्रे काटे गय्रे त्र्ेान जीनहों ने न तो उस पसु
को त्र्ेान न उसकी मुनत को पुजा त्र्ेान न उसका यीनह त्र्पने

कपालों पर और अपने हाथों पर लीया और वे जीये और
५ मसीह के संग सहसर वरस लों राज कीये। परंतु रहे ऊऐ
लोग न जीये जव लों सहसर वरस पुरे न ऊऐ यह पहीला
६ पुनरुथान है। धंन और पवीतर वुह जो पहीले पुनरुथान
में भाग रष्पता है ऐसों पर दुसरे मौरतु का पराकरम नहीं परंतु
वे इसर और मसीह के याजक होंगे और उसके संग सहसर
७ वरस लों राज करेंगे। और जव सहसर वरस हो चुकेंगे
८ सैतान अपने वंधन से छुटेगा। और वुह उन जातों को जो
पीरथीवी के चारो ष्पुंट में हैं अरथात जुज और माजुज को
जुध के लीये ऐकठे करके नीकलेगा जीनकी गीनती समुद्र के
९ वाल के तुल है। वे पीरथीवी की चौड़ा पर चड़गये और सीधों
की छावनी को और पीरीय नगर को घेरलीये तव सरग से
१० इसर के पास से आग उतरी और उनको भछ कीया। और
सैतान जीसने उनको छल दीया आग और गंधक की झील में
डाला गया जहां वुह पसु और वुह झुठा भागमगयानी है और
११ रात दीन सरवदा सरवकाल पीड़ा में रहेंगे। फेर मैं ने ऐक
वड़ा सेत सींहासन को और उसको जो उस पर वैठा था देष्पा
जीसके सनमुष्प से पीरथीवी और सरग भाग गये और उनके
१२ लीये कहीं सथान न मीला। फेर मैं ने देष्पा की मीरतक
कया छोटे कया वड़े इसर के आगे ष्पड़े हैं और पोथीयां ष्पोली
गई और ऐक दुसरी पोथी जो जीवन की है ष्पोली गई और उन
पोथीयों में लीष्पे के समान जैसी उनकी करनी थी मीरतकन
१३ का वीचार कीया गया। और समुद्र ने उन मीरतकन को
जो उस में थे और मीरतु और परलोक ने उन मीरतकन को जो
उनमें थे सौंप दीया और हर ऐक का उसकी करनी के समान
१४ वीचार कीया गया। फेर मीरतु और परलोक आग की झील
१५ में डाले गये यह दुसरी मीरतु है। और जो जीवन के पुसतक
में लीष्पा न था वुह आग की झील में डाला गया।

२१ इकीसवां पत्र।

१ फेर मैं ने एक नये सरग और एक नई पीरथीवी को देखा
क्योंकी अगीले सरग और अगीली पीरथीवी जाती रही और
२ कोई समुद्र न था। और दुलहीन की नाईं जो अपने पती
के लीये सीघ और वीभुसीत होवे मैं युहना ने पवीतर नगरी
नई यीरोसलीम को ईसर के और से सरग से उतरते देखा।
३ और यह कहते मैं ने सरग से एक बड़ा सबद सुना की देख
ईसर का तंबु मनुष्यन के संग है और वुह उनके संग बास करेगा
और वे उसके लोग होंगे और ईसर उनका ईसर उनके बीच
४ में। और ईसर उनकी आंखों से आंसु पोंछेगा और फेर
मीरतु और सोक और रोना पीटना और पीड़ा न होगी
५ क्योंकी अगीली बसतें जाती रहीं। और वुह जो सींहासन
पर बैठा था बोला देख मैं समसत बसतुन को नई बनाता ऊं
और उसने मुझ से कहा की लीख क्योंकी ये बातें सत और
६ परतीत के जोग हैं। और उसने मुझे कहा की हो चुका मैं
अलफा और उमगा आद और अंत ऊं मैं उसको जो पीआसा
है अमीरत जल के सोते से सेंत देउंगा। जयमान समसत
बसतुन का अधीकारी होगा और मैं उसका ईसर ऊंगा और
८ वुह मेरा पुतर होगा। परंतु भयमान और अबीसवासी और
घीनौना और हतयारा और बेभीचारी और टोनहा और
मुरत पुजक और सारे झुठे उसी झील में जो आग और
गंधक से जलती है अपना अपना भाग पावेंगे यह दुसरी मीरतु
९ है। अब एक उन सात दुतों में से जीन पास सात कटोरीयां
पीछली सात मरी से भरी ऊई थीं मुझ पास आया और मुझ से
युं कहीके बोला की ईधर आ मैं तुझे मेमना की पतनी दुल-
१० हीन को दीखाउंगा और वुह मुझे आतमा में एक बड़े और
उंचे पहाड़ पर ले गया और उसने उस बड़े नगर पवीतर यीरो-

सभीम को सनग पन से इसन के पास से उतनते मुहे दीप्पाया।
११ उस में इसन का तेज था औान उसका परकास अती मोल के
मनी का सा उस सुनजकांत के समान था जो फटीक के ऐसा
१२ नीनमल हो। औान उसकी भीत व़ड़ी औान उंची थी औान
उसके व़ानह फाटक थे औान फाटकों के उपन व़ानह दुत औान
उन पन इसनाइल के संतानों के व़ानह घनानों के नाम लीप्पे
१३ छपे थे। पुनव़ को तीन फाटक उतन को तीन फाटक दप्पीन
१४ को तीन फाटक औान पसयीम को तीन फाटक थे। औान उस
नगन की भीत की व़ानह नेवें थीं औान उनमें मेमना के व़ानह
१५ पनेनीतों के नाम। औान जो मुझ से व़ोल नहा था उसके हाथ
में सोने का ऐक नल था जीस से वुह उस नगन औान उसके
१६ फाटक औान उसकी भीत को नापे। औान वुह नगन यौकोन
था औान उस की लंव़ाइ उसकी यौड़ाइ के समान थी उसने उस
नगन को उस नल से नाप कन व़ानह सहसन व़ान पाया औान
१७ उसकी लंव़ाइ औान यौड़ाइ औान उंयाइ समान थी। फेन
उसने भीत को नापा तो उस मनुप्प के हाथ से जो वुह दुत है
१८ ऐक सौ यवालीस हाथ पाया। औान उस भीत की जोड़ाइ
सुनजकांत की थी औान वुह नगन योप्पे सोने का था नीनमल
१९ कांय के समान। औान उस नगन की भीत की नेवें अनेक पन-
कान के मनी से व़ीभुसीत थें पहीली नेंव सुनजकांत की दुसनी
२० नीलकांत की तीसनी लालड़ी की यौथी गानुतमत की। औान
पांयवीं व़ैदुनज की औान छठवीं यंदनकांत की औान सातवीं
सुनहले की औान आठवीं लसुनीय़ की औान नवीं पदमनाग की
औान दसवीं गोदंत की औान गयानहवी फीनोजा की औान
२१ व़ानहवीं मनतीसे की। व़ानह फाटक व़ानह मोती थे हन
फाटक ऐक ऐक मोती का औान उस नगन की सड़क योप्पे सोने
२२ की नीनमल कांय के समान थी। पनंतु मैं ने उस में कोइ
मंदीन न देप्पा कयोंकी परभु इसन सनव़सकतीमान औान

२३ मेमना उसके मंदीन हैं। ग्रौन वुह नगन सुनज ग्रौन चंदनमा
से कुछ पनयोजन नहीं नप्पता था की उनसे पनकासीत हो
क्योंकी इसन के तेज ने उसे पनकास कन नप्पा ग्रौन मेमना
२४ उसका पनकास है। ग्रौन उन जातें के लोग जीनहों ने मुकत
पाइ है उसके पनकास में फीनेंगे ग्रौन पीनथीवी के नाजा ग्रपनी
२५ महीमा ग्रौन ग्रपना पनतीसठा उस में लाते हैं। ग्रौन उसके
फाटक दीन के कभी व्रंद नहीं होंगे क्योंकी वहां नात नहीं
२६ होगी। ग्रौन वे लोगें की महीमा ग्रौन पनतीसठा के उस में
२७ लावेंगे। ग्रौन कोइ ग्रपवीतन ग्रौन घीन कानज कननेवाली
ग्रौन झुट उस में कीसी नीत से पनवेस न कनेगी पनंतु केवल वे
ही जो मेमना के जीवन के पुसतक में लीप्पे हैं।

२२ व्राइसवां पनव्र।

१ ग्रौन उसने मुझे ग्रमीनत जल की ग्रेक सुध नदी नीनमल
फटीक के समान इसन के ग्रौन मेमना के सींहासन से नीकलती
२ हुइ दीप्पाइ। ग्रौन उसके सड़क के मध में ग्रौन उस नदी के
वान पान जीवन का व्रीनछ था जो व्रानह फल लावता था हन
ग्रेक महीने में ग्रेक फल ग्रौन उस व्रीनछ के पते लोगें के चंगा
३ कनने के लीये थे। फेन कोइ सनाप न होगा ग्रौन इसन ग्रौन
मेमना का सींहासन उस में होगा ग्रौन उसके सेवक उसकी सेवा
४ कनेंगे। ग्रौन वे उसका सनप देप्पेंगे ग्रौन उसका नाम उनके
५ कपालें पन होगा। वहां नात न होगी ग्रौन उनको दीपक
ग्रौन सुनज के पनकास का पनयोजन नहीं क्योंकी पनभु
इसन उनको पनकासीत कनेगा ग्रौन वे सनव्रदा के लीये नाज
६ कनेंगे। फेन उसने मुझे कहा की ये व्रातें सत ग्रौन व्रीस-
वास के जोग हैं ग्रौन पवीतन ग्रागमग्यानीयों के पनभु इसन
ने ग्रपने दुत के भेजा है की उन व्रसतुन के जो सीघन होवेंगी

७ अपने दासों पन पनगठ कने। देष्प मैं सीघन आवता ऊं धंन
वुह जो इस गनंथ के आगम की वातों को गनहन कनता है।
८ ओन मैं युहना ने उन वसतुन को देष्पा ओन सुना ओन जव मैं
ने सुना ओन देष्पा मैं उस दुत के यनन पन जोसने ये वसतें
९ मुहे दीष्पाइं पुजा के कानन गीन पड़ा। तव उसने मुहे कहा
योकस नह ऐसा न कन कयोंकी मैं तेना ओन आगमगयानीयों
का जो तेने ञाइ हैं ओन उनका जो इस गनंथ की वातों को
१० गनहन कनते हैं संगी सेवक ऊं इसन को ञज। फेन उसने
मुह से कहा की तु इस गनंथ के आगम की वातों पन छाप मत
११ कन कयोंकी समय नीकट है। जो अनयायी है सो अनयायी
ही नहे ओन जो मलीन है सो मलीन हो नहे जो घनमी है सो
१२ घनमी ही नहे ओन जो पवीतन है सो पवीतन ही नहे। ओन
देष्प मैं सीघन आवता ऊं ओन मेना फल मेने संग है की हन
१३ एक को उसके कानज के समान पलटा देउं। मैं अलफा ओन
१४ उमगा आद ओन अंत आनंभ ओन समापत ऊं। घंन वे हैं जो
उसकी अगया पन यलते हैं की वे जीवन के वीनछ के जोग होवें
१५ ओन वे उन फाटकों से नगन में पनवेस कनें। कयोंकी कुते ओन
टोनहा ओन छीनने ओन हतयाना ओन सुनतपुजक ओन जो
कोइ झुठ वोलता है ओन उसे पीआन कनता है सव वाहन हैं।
१६ मैं यसु ने अपने दुत को ञेजा है की इन वातों की साष्पी तुहे
मंडलीयों में देवे मैं दाउद का मुल ओन वंस ओन पनातःकाल
१७ का तेजसी तानाऊं। ओन आतमा ओन दुलहीन कहतीं हैं
आ ओन वुह जो सुनता है कहे आ ओन जो पीआसा है सो
१८ आवे ओन जो कोइ याहे सो अमीनत जल सेंत से लेवे। ओन
मैं हन एक जन के लीये जो उन आगम की वातों को जो इस
गनंथ में हैं सुनता है यह साष्पी देता ऊं की यदी कोइ इन
वातों में कुछ मीलावेगा तो इसन उन मनीयों को जो इस
१९ गनंथ में लीष्पी ऊइ हैं उस में मीलावेगा। ओन यदी कोइ

इस गनंथ के आगम की व़ातें में से कुछ नोकाल डाले ते इसन
उसका भाग जीवन के पुसतक औान पवीतन नगन से औान उन
२० व़सतुन से जो इस गनंथ में लीख्यी हैं दुन कनेगा। जो इन
व़सतुन की साख्यी देता है य़ह कहता है की मैं नीसयय़ सीघन
आवता ऊं आमीन हां हे पनभु य़सु आ हमाने पनभु य़सु मसीह
का अनुगनह तुम सभों पन होवे आमीन।